

संख्या 3

नई विल्ली, तानिबार जनवरी 15, 1983 (पौष 25, 1904)

No. 3]

NEW DELHI, SATURDAY, JANUARY 15, 1983 (PAUSA 25, 1904)

इस भाग में भिन्त पृष्ठ संख्या ही जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके (Separate paging is given to tais Part in order that it may be filed as a separate compilation)

भाग III-**स**ण्ड 1

[PART III—SECTION 1]

उच्च न्यापात्रयों, तियन्त्र ह और पहालेखा परीक्षक, संघ लोक सेवा आयोग, रेल विभाग और भारत सरकार के संलग्न और अधीन कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं

[Notifications issued by the High Courts, the Comptroller and Auditor General, the Union Public Service Commission, the Indian Government Railways and by Attached and Subordinate Offices of the Government of India

प्रवर्तन निदेशालय

विदेशी मुद्रा विनियमन आंधनियम

नई दिल्ली-110003, दिनांक 27 दिगम्बर 1982

सं० ए-11/10/82--श्री ए १० ए४० विचाठी, हिन्दी अधि-कारी, केन्द्रीय उत्पाद-श्रुक समाहर्तालय, कानपूर को दिनांक 1 सितम्बर, 19.82 से अगले आदेशों तक इस निदेशालय के मुख्यालय, नई दिल्ली में प्रतिनियुक्ति पर हिन्दी ग्रधिकारी के पद पर नियुक्त किया जाता है। हर अपउनीय

म्ध्य प्रवर्तन प्रश्चिकारी (प्रशासन)

गह मंतालय

(अा० एवं प्र० मु० विभाग)

केन्द्रीय ग्रन्वेपण ब्यगो

नई दिल्ली, दिनांक 22 दियम्बर 1982

सं० ए-12025/1/81-प्रणा०-5---निदेशक, छेन्द्रीय ग्रन्वेषण ब्यूरो एवं पुलित महानिरीक्षक, विणेध पुलिस स्थापना, एतद्द्वारा श्री विजय कुमार शर्मा को दिनांक 2 दिसम्बर, 1982 के पूर्वीह्न से 1-416GI/82

लोक ग्रभियोजक, केन्द्रीय ग्रन्वेषण ब्युरो के रूप में नियुक्त करते हैं ।

> ग्रार० एम० नागपाल प्रशासनिक ग्रधिकारी (स्था०) केन्द्रीय स्नन्वेषण ब्युरो

महानिदेशालय के० रि० पू० बल नई दिल्ली-110003, दिनांक 23 दिसम्बर 1982

सं० ग्रो० दो०-152/77-स्थापना-- लै० कर्नल एस० एस० माथुर ने अपनी पुनर्नियक्ति की अविध समाप्त होने के फलस्वरूप केन्द्रीय रिजर्व पुलिस वल में उप सहायक निदेशक (कम्युनिकेशन) का कार्यभार दिनांक 14-12-82 प्रपराह्न को छोड़ दिया।

ए० के० सुरी, सहायक निदेशक (स्थापना)

भारत के महापजीकार का कार्यालय

नई दिल्ली-110011, दिनांक 23 दिसम्बर 1982

सं 11/20/81 प्रशा - I - इस कार्यालय की तारीख 28-5-1981 की समसंख्यांक ग्रधिसूचना के ग्रनुकम में राष्ट्रपति

(927)

कर्णाटक सांख्यिकी सेवा के अधिकारी श्री जी० नानधाता की, कर्णाटक, बंगलीर, में जनगणना कार्य निदेशक के कार्यालय में प्रतिनिधु-क्ति पर सहायक निदेशक जनगणना कार्य के पद पर नदर्थ आधार पर नियुक्ति की अवधि को, नारीख 28-2-1983 तक या जब तक पद नियमित आधार पर भरा जाए, जो भी अवधि पहले हो, भहर्ष और बढ़ाते हैं।

2. श्री वासवाना का मुख्यालय बंगलीर में होगा।

दिनांक 27 दिसम्बर 1982

सं० 10/28/81-प्रगा०-1—इस कार्यात्य की तारीख 19 तबस्वर, 1981 की गमपंष्रांक अधिम्ताः के प्रणक्षम में राष्ट्र गति, नई दिल्ली में भारत के महायंकीकार के कार्यालय के महायंक महापंजीकार (मातन्त्रित्र) जॉंग् गोंग के गांव की उपो कार्यात्व में उपमहापंजीकार (मातन्त्रित्र) के पद पर पदोक्षति हारा पूर्णत. अस्थायी रूप में तदर्थ ग्राधार पर नियुन्ति की सर्वात्र को तारीख 28 फरवरी, 1983 तक पा जगति पद नियुन्ति साधार पर भरा जाए, जो भी प्रविध गत्ने हो, सहर्थ ग्रीर बहाते हैं।

2. डाँ० राय का मुख्यालग नई दिल्ली में होगा।

दिनांक 28 दिसम्बर 1982

मं० 10/29/80-प्रणा०-1—इन कार्यालय की तारीख 26-4-1982 की समसंख्यांक अधिसूचना के भ्रतुक्रम में राष्ट्रपति, निम्नेलिखित अधिकारियों को, उनके नामों के सामने दिशित कार्यालयों में, सहायक निदेशक (डाटा प्रोसीयग) के पद पर पतिनियुक्ति पर, पूर्णत: अस्थायी रूप से, तदर्थ आधार पर, नियुक्ति की अविधि को तारीख 28-2-1983 तक या जब तक पद नियमित आधार पर भरा जाए, जो भी प्रपृथ्वि पर्दते हो, सहर्ष और बढाते हैं .---

ऋ० सं०	अधिकारी का नाम	जिम कार्यातय में कार्यरत है	मुख्यालय
1	2	3	4
1.	श्री ग्रो० पी० ग्राह्जा	भारत के महा-	नई दिल्ली
		पंजोकार का	
		कार्यालय	
2.	श्री एस० ग्रार० गर्ग	**	नई दिल्ली
3.	श्री के० बी० रोहनगी	1)	नई दिल्लो
4.	श्री पी० एन० बवेजा	13	नई दिल्ली
5.	श्री स्नार० एन० वोंगुर-	जनगणना कार्य	बम्बर्ड
	लेकर	निदेशक, महाराष्ट्र	
6.	श्री ए० बी० वल्लिनायन्	जनगणना कार्य	मद्रास
	·	निदेशक, तमिलनाङ्	
7	श्री जी० धी० ग्रग्नवाल	जनगणना कार्य	जयपुर
		निदेशकः, राजस्थान	-
8.	श्री जी० डी० सिगला	जनगणना कार्य	चण्डीगढ्
		निदेशक, संघ राज्य	
		क्षेव चण्डीगढ़	
9.	श्री जी० सी० मिश्रा	जनगणना कार्य	पटना
		निदेशक, बिहार	

1	2	3		4 :
10. श्री एम० एम	० ए० बेग	जनगणना निदेणक, प्रदेश	कार्य, उत्तर	न् ख नऊ
11. श्रीबी० एमः	[,] पटेल	जनगणना निदेशक, गृ		भ्रहमदाबाद
12. श्री ए० जी०	भ्रोक	जनगणना निदेशक, मध	कार्य	भोपाल
13. श्रीश्रीर० वा	ह्	जनगणना नातोर निः		
रेब्बाशेट्टी		कर्णाटक		

सं० 11/2/80-प्रणा०-१--हम कार्यालय की तारीख 20-1-1982 की समसंख्यांक अधिसूचना के अनुअम में राष्ट्रपति बिहार, पटना में जनगणना कार्य निदेशक के कार्यालय में बिहार मिविल सेवा के अधिकारी श्री नागेण्यर प्रमाद की उपनिदेशक जनगणना कार्य के पद पर प्रतिनियुक्ति पर स्थानान्नरण द्वारा तदर्थ आधार पर नियुक्ति की अवधि को तारीख 28-2-1983 तक या जब तक पद नियमित आधार पर भरा जाए, जो भी अवधि पहले हो, सहर्ष और बढाते हैं।

2. श्री प्रसाद का मुख्यालय हजारीबाग में होगा।

सं० 11/19/81-प्रणा०-1---राष्ट्रपति, भारतीय प्रणानिक सेवा के महाराष्ट्र संवर्ग के ग्रिधिकारी ग्रौर महाराष्ट्र-बम्बई में निदेशक, जनगणना कार्य के पद पर कार्यरत, श्री पी० पी० महाना को तारीख 14 दिसम्बर, 1982 के ग्रपराह्न में महाराष्ट्र, बम्बई सरकार को प्रत्यावर्तित करते हैं।

गी० पद्मनाभ भारत के महापंजीकार

भारत के नियंत्रक महालेखापरीक्षक का कार्यालय नई दिल्ली-110002, दिनांक 22 दिसम्बर 1982

सं० 3% वा० ने० प्र०/सिः० ए०। / 32-74— अपर उप नियंत्रक-महालेखापरीक्षक (वाणिज्यिक) ने श्री बी० बैंकटारमन लेखा परीक्षा ग्रीधिकारी (बा०) (सदस्य लेखा परीक्षा बोर्ष एवं पदेन निदेशक वाणिज्यिक लेखा परीक्षा बस्बई में कार्यरत) को भारत सरकार गृह मंतालय के कार्यालय ज्ञापन संख्या 25013/7/7-स्थापना (ए) दिनांक 26-8-77 के उपबंध के अधीन तारीख 25-11-82 पूर्वाह्म से सरकारी सेवा मे स्वेच्छा पूर्वक सेवा निवृत्त होने की ग्रन्मति दे दी है।

एम० ए० सोमेक्वरराव संयुक्त निदेशक (वाणिज्यिक)

वाणिज्य मंत्रालय (वस्त्र विभाग)

हथकरघा विकास स्रायुक्त का कार्यालय

नई दिल्ली, दिनांक 11 दिसम्बर 1982

स० ए-12025 (ii)/3/80-प्रभासन-II(a)----राष्ट्रपति, श्री लालू टोपू को 20 श्रक्तूबर 1982 से श्रागामी ग्रादेणों तक के

लिए बुनकर मेवा केन्द्र गोहाटी में सहायक निदेशक ग्रेष्ठ I^{1} (गैर-तकनीकी) के पद पर नियक्त करते हैं।

विनय झा ग्रपर विकास ग्रायुक्त (हथकरणा)

विस्फोटक विभाग

नागपुर, दिनाक 7 दिसम्बर 1982

स० ई-ा (7)—-इम विभाग के दिनांक 11-7-69 में (श्रेणी-2) नायट्रेट मिश्रण के अधीन प्रविष्ट ''इनरजेल'' के पश्चात ''इए.म-1'' विनिर्दिष्ट स्थलों में क्षेत्र अभिप्रयोग हेतु 31-10-83 पर्यन्त जोड़ा जाये।

दिनांक 20 दिसम्बर 1982

मं० ई-II(7)—इस विभाग के 11 जुलाई, 1969 के श्रिधसूचना सं० ई-II(7) में श्रेणी 3 वर्ग 2 के श्रधीन प्रविष्टि ''नायट्रोब्लास्ट'' 31-12-82 में श्रंको के स्थान पर विनिर्दिष्ट स्थलों में विनिर्माण एवं क्षेत्र श्रिभप्रयोग हेतू ''31-12-82" श्रंक प्रनिस्थापित किये जायेंगे।

मं० ई-II(7)—इस विभाग के दिनांक 11 जुलाई, 1969 के श्रिधसूचना स० ई-II(7) में श्रेणी 2 नायट्रेट मिश्रण के ग्रधीन प्रविष्ट "साल्वाजीपाक" विनिर्दिष्ट स्थलों में विनिर्माण एवं क्षेत्र श्रीभप्रयोग हेतु 31-3-82 पर्यन्त दिनाक 31-3-82 को 31-12-83 तक प्रतिस्थापित किया जायेगा।

चरणजीत नाल मुख्य विस्फोटक नियंत्रक

पूर्ति तथा निपटान महानिदेशालय

(प्रणासन अनुभाग-I)

नई दिल्ली, दिनांक 21 दिसम्बर 1982

सं० प्र-1/1(986)—-राष्ट्रपति, निदेशक पूर्ति तथा निपटान मदास के कार्यालय में सहायक निदेशक पूर्ति (भारतीय पूर्ति सेवा, ग्रुप ए के ग्रेड-III) श्री एस० श्रार० चन्द्रसेखरन को दिनाक 15-12-82 के पूर्वाह्म से 31-12-82 श्रथवा नियमित श्रिधकारी के उपलब्ध होने तक जो भी पहले हो मुख्यालय नई दिल्ली में तदर्थ ग्राधार पर स्थानापन्न उप निदेशक पूर्ति (भारतीय पूर्ति सेवा के ग्रुप ए के ग्रेड-II) के पद पर स्थाना-पन्न रूप से नियुक्त करते हैं।

2. श्री चन्द्रसेश्वरन ने निदेशक पूर्ति तथा निपटान, मद्रास के कार्यालय में दिनांक 6-12-82 (श्रपराह्न) से सहायक निदेशक पूर्ति के पद का कार्यभार छोड़ दिया श्रौर दिनांक 15-12-82 के पूर्वाह्न से पूर्ति तथा निपटान महा - निदेशालय, नई दिल्ली मे उप निदेशक पूर्ति का पद का कार्यभार संभाल लिया है।

दिनांक 22 दिसम्बर 1982

मं० प्र-1/1(1166)—ित्रिक्षण निदेशक, बम्बई के कार्यालय में स्थायी ग्रधीक्षक (स्तर-II) तथा तदर्थ सहायक निदेशक (प्रणासन) (ग्रेष्ड-II) श्री बी० डब्स्यू० शाहदादपुरी

निवृतनान आयु प्राप्त कर लेने पर दिनाक 30-11-1982 के अपराह्म में सरकारी सेवा से निवत्त हो गए।

सं० प्र-1/1(1201)—महानिदेशक, पूर्ति तथा निपटान एत् दृढ़ारा निर्धाण निवेशक, बम्बई के नार्यालल में अधिकार श्रं ई० पी० टालवेन्हा को दिनाक 4-12-1982 के पूर्वाह्म से उसी कार्यालय में पूर्णत स्थानीय तदर्थ आधार पर स्थानापन्न सहायक निदेशक (प्रशासन) (ग्रेड-II) के पद पर नियुक्त करते हैं। यह नियुक्ति शी बी० एन० शाहदादपुरी, सहायक निदेशक (प्रशासन) (ग्रेड-II) जो निवृतमान आयु होने पर दिनांक 30-11-1982 (अपराह्म) में सरकारी सेवा में निवृत्त हो गए हैं, के स्थान पर की गई है

(प्रशासन अनुभाग 6)

दिनांक 23 दिसम्बर 1982

सं० ए-17011/213/82-प्र०-6—महानिदेशक, पूर्ति तथा निपटान ने जमशेदपुर निरीक्षण मण्डल में भण्डार परीक्षक (ग्रसंइंग) श्री सी० उन्निकृष्णन को दिनाक 29-11-1982 के पूर्वाह्न से ग्रागमी प्रादेशो तक उभी निरीक्षणालय में तद्वर्य प्राधार पर स्थानापन्न रूप स महायक निरीक्षण प्रधिकारी (धातु-रमायन) के रूप में नियुक्त किया है।

एस० वालामु**म्रमं णयन** उप निदेशक (प्रशासन)

इस्पात श्रीर खान मंत्रालय

(खान विभाग)

भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण

कलकना-700016, दिनांक दिनम्बर 1982

स० 9074 बी/ए-19012 (1-के० एस० जी०)/81-19ए— र्थ्य:भती के० एस० गोदावरी को सहायक भूवैज्ञानिक के रूप में भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण में 650 रु० प्रति माह के प्रारम्भिक वेतन पर 650-30-740-35-810-द० रो०-35-880-40-1000-द० रो०-40-12000 रु० के वेतनमान में, स्थानापन्न क्षमता में, आगामी आदेण होने तक 4-10-1982 के पूर्वाह्म से नियक्त किया जा रहा है।

सं० 9087बी/ए-19012(1-डी॰एस॰)/81-19ए- भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण के वरिष्ठ तकनीकी सहायक (भूविज्ञान) श्री डी॰ सुन्दरावनन को सहायक भूवैज्ञानिक के स्प में, भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण में 650 रु० प्रति माह के प्रारम्भिक वेतन पर 650-30-740-35-810-द॰ रो॰-35-880-40-1000-द॰ रो॰-40-1200 रु० के वेतनमान में, स्थानापन्न क्षमना में, श्रागामी श्रादेण होने तक 10-9-1982 के पूर्वाह्म से नियुवन किया जा रहा है।

एस के॰ मुखर्जी महानिवेशक

स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय

नई दिल्ली, दिनांक 22 दिसम्बर 1982

सं० ए० 32013/1/80-(एच० क्यू०) प्रशासन-1--राष्ट्रपति ने श्री एम० जी० श्रीमवाल को 5 जून, 1981 में 4 दिसम्बर, 1982 तक केन्द्रीय स्वास्थ्य शिक्षा ब्यूरो, में उप सहायक महानिदेशक (श्रनुसंधान) के पद पर पूर्णतः तदर्थ श्राधार पर नियुक्त किया है।

> न्निलोक चन्द जैन, उप निवेशक (प्रशासन)

ग्रामीण विकास मंत्रालय विपणन एवं निरीक्षण निदेशालय फरीदाबाद, दिनांक 20 दिसम्बर 1982

सं० ए० 39013/1/81-प्रा-III—इस निदेशालय के ध्रधीन सहायक विपणन श्रधिकारी के पद से श्री ए० के० गर्भ द्वारा प्रस्तुत त्याग-पत्र दिनांक 26/4/82 (अपराह्म) से स्वीकृत किया गया है।

डा० जी०श्चार० भाटिया, संयुक्त कृषि विषणन सलाहकार

भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र

(कार्मिक प्रभाग)

द्राम्बे-5, दिनांक 15 दिसम्बर 1982

मं० पी०ए०/79(4)/80-ग्रार-—ाािनयंत्रक, भाभा परमाणु श्रनुसंधान केंद्र, श्री गोविन्दस्वामी दक्षिणमूर्ति, सहायक सुरक्षा श्रधिकारी (एस० जी०) को सुरक्षा श्रधिकारी (650-960 रुपय) के पद पर कार्य करने हेमु इस ग्रन्संधान केन्द्र में 25-10-1982 (पूर्वाह्न) से 26-11-1982 (श्रपराह्न) तक की समयावधि के लिए नदर्थ रूप में नियुक्त करते है।

> बी० सी० पाल उप स्थापना श्रधिकारी

परमाणु ऊर्जा विभाग (सम्पदा प्रबन्ध निदेणालय)

बम्बई-400094, दिनांक 15 दिसम्बर 1982

आदेश

सं० 20/280/72-प्रणा०—चृंकि श्री आर० एस० वास्मिकि, हैल्पर 'ए', जो कि सम्पदा प्रबन्ध निदेशालय के कार्यप्रभारित-स्थापना में नियोजित हैं, दिनांक 11-5-79 में अपने कार्यभार से अनिधिकृत रूप से अनुपस्थित हैं।

और चूिक श्री बार्ल्मिक का र्राजस्ट्री-पावती द्वारा भेजे गये दिनांक 15-1-80 के ज्ञापन क्रमांक 10/280/72-प्रणाठ द्वारा सूचित किया गया था कि उनके विरुद्ध णासकीय जाच कराने का प्रस्ताव है, अतः वे चाहे तो उक्त ज्ञापन की पावती से 10 दिन के अन्दर अपना अभिवेदन कर सकते हैं। और वृक्ति श्री किल्माक का उत्त प्राप्तन दिलांक 22-1-80 को प्राप्त हो चुक, था, त्रमणि उन्होंने प्रस्तावित कार्यवाही के विरुद्ध कोई अभिवेदन गरी किया।

और चुकि कथिन था पालियां के विश्व शासकीय जांच कराने का जरनाम किया गर सा नथा उनके अन्तिम इप में ज्ञान पने पर र्वाण्य-मानतो हारा भेजे गये निम्न-लिखित पन्न पत्रालय आह्रकारमां हारा इस टिप्पणी के साथ वापस भेज दिये गये थे कि 'ब्रेजिनो नही मिला/निवास छोड़ चुका है':——

- 1 श्री वाल्मिकि को दिनाक 29-9-80 को जांच हिनु उपस्थित होने के लिये निर्देशित करते हुए दिनांक 15-9-80 का पत्रांक ए० एत० ए० /डी० ई० पी०/ आई० एत० क्यू०/1/मं० प० ति०/8011।
- 2. श्री वाल्मिकि को दिनां है 4-5-81 की जांच हेतु उपस्थित होने के जिये निर्देशित करने हुए दिनांक 20-4-81 का पशांह ए० एन० ए० ही० ई० पी०/ आई० एन० क्यू०/1/डो० ई० एम०/4469।
- 3. श्री वाल्मिक को दिनांक 8-5-81 को जांच हेतु उमस्थित होने के लिये निर्देशित करते हुए दिनांक 8-5-81 का पत्राह ए० एम० ए०/डी० ई० पी०/ आई० एन० न्यू०/115062।
- 4. श्री वाल्मिक को दिनाक 30-8-82 की जांच हेतु उपस्थित होने के लिये निर्देशित करते हुए दिनांक 13-8-82 का पत्रांक पी०/111671।

और चूिक श्री वाल्मिक अभी भी अपने कार्मभार से अनुपस्थित है तथा उन्होंने सम्पदा प्रयन्य निदेशालय को अपने वर्गमान निवास के बार में सूर्वित नहीं किया है।

और चूकि श्री वांएमिकि अपने कार्यभार से अनुपस्थित रहने तथा उसका स्वैच्छा में पारित्यान करने के दोबी हैं।

और चूकि भी वालिमाक ने प्रम्पदा प्रबन्ध निदेशालय को अपना वर्तमान निवासाय पना सूचिन किये बिना अपनी सेवा का परित्याग किया है, फनस्वचन अपोहस्वाक्षरी इस बात से सन्तुष्ट है कि श्री वालिमांक के विरुद्ध गासकीय जांच करना नाकिक रूप से व्यवहारिक नहीं है।

अतः अधोहस्ताक्षरा एतद्द्वारा श्री वार्त्मिक के ऊपर पदच्युति का दण्ड अधिरागित करता है।

> ह्० वि० आवतरामाणी, प्रशासन अधिकारी

श्री आर. एस. बाल्मिक गांव : केदावा डाकसाना : बिनोली तुलका : सरदाना जिला : मेरठ

> विद्युत परियानना जॉनवात्त्रकी प्रभाग वस्वई-5, दिनाएं 7 दिसम्बर 1982

सं० वि० व० अ० प्र०/3(283)/82-स्थापना-1/16565---निदेशक, विद्युत परियोजना अभियाक्षिकी प्रभाग, बस्बई एतद्शारा इस प्रभाग के स्थान उच्च श्रेणी निपिक और स्थानापन सहायक लेखाकार श्री डी० एल० गवाणकर को जुलाई 12, 1982 के पूर्वाह्म में अगस्न 20, 1982 के अपराह्म तक उसी प्रभाग में महायक लेखा अधिकारी के पद पर अस्थायी रूप से नियुक्त करते हैं। यह नियुक्त सहायक लेखा अधिकारी श्री व्हि० बी० व्यापारी के स्थान पर की जा रही है, जिन्हें लेखा अधिकारी-नि के पद पर पदोन्नति मिली है।

आर० व्हि० वाजपेयी सामान्य प्रशासन अधिकारी

नाभिकीय इँधन सम्मिश्र

हैदराबाद-500762, दिनाक 16 दिसम्बर 1982

्रेस० ना० ई० स० का० : प्र० भ० 1603 8845—नाभिकीय ईधन सम्मिश्र के मुख्य कार्यपालक जी निम्निलिखित वैज्ञानिक सहायको (ग) तथा आरेखकार (ग) को नाभिकीय ईधन सम्मिश्र में (एस बी) श्रेणी में रू० 650-30-740-35-810-द० रो०-35-880-40-1000-द० रो०-40-1200 के वेतनमान मे उन के नामों के सम्मुख दर्शाये गये प्रारम्भिक वेतन पर दिनांक 01 मितम्बर, 1982 में प्रभावी अस्थानी हपेण स्थानापम्न वैज्ञानिक अधिकारी के पद पर अगले आदेशों पर्यन्त नियुक्त करते हैं:—

क्रमांक	नाम	वर्तमान पदनाम	एस की श्रेणी मे प्रोन्नत होने पर वेतन रुपयों मे
2 श्री 3 श्री 4 श्री 5 श्री	एन० एम० सराफ डी० उमा महेण्यर राव वी० विण्य नाथम् डी० काताचारी टी चन्द्र मौलय्या डी० चेशा कृष्णा रेड्डी	आरेखकार 'ग' वैज्ञानिक सहायक 'ग'	960/- 810/- 775/- 775/- 740/-

जी० जी० कुलकर्णी प्रबन्धक कार्मिक व प्रशासन

रिएक्टर अनुसन्धान केन्द्र

कलपाक्कम, दिनांक 15 दिसम्बर 1982

सं० आर० कुँआर० सी०/ए 32023/1/77-आर/16601----रिएक्टर अनुसन्धान केन्द्र के निदेशक, मद्रास परमाणु विद्युल परियोजना के स्थाबी उच्च श्रेणी लिपिक तथा रिएक्टर अनु-सन्धान केन्द्र के स्थानापन्न प्रवरण कोटि लिपिक श्री वाडिवेल वेम्बियन का उसी केम्द्र में 1-12-82 से 31-12-82 तक .की अवधि के लिये स्थानापन्न रूप से तदर्थ आधार पर सहायक प्रमासन अधिकारी नियुक्त करते हैं। यह नियुक्ति श्री ए० सेतुमाध्यवन, सहायक प्रशासन अधिकारी के स्थान पर की गई है, जो छुट्टी पर गये हैं।

एस० पद्मनाभन प्रशासन अधिकारी

अन्तरिक्ष विभाग

शार केन्द्र

र्ज-524124,

श्री हरिकोटा, दिनांक 2 दिसम्बर 1982

सं० एस० सी० एफ० का० और सा० प्र०/स्था०/1/72--निम्नांकित कर्मचारियों/अधिकारियों को अंकित पद तथा
निथियों से प्दोन्नित के रूप में शार केन्द्र में स्थानापन्न क्षमता
के हैसियत से काम करने के लिये शार केन्द्र के निदेशक ने
अपनी सहमति दे दी है।

नाम	पदोक्षत किया गया प पद	 दोन्नत होने की तारीख
पी० केणवराव बी० सुक्रमण्येष्वर राव के० विजय कुमार	सहायक प्रशासन अधिकारी सहायक ऋय अधिकारी सहायक भण्डार अधिकारी	14-10-82
	ব৹	विश्वनाथम

प्रधान कार्मिक और सामान्य प्रशासन विभाग कृते निवेशक

नागर विमानन मंत्रालय भारत मौसम विज्ञान विभाग नई दिल्ली-3, दिनांक 21 दिसम्बर 1982

सं० ए० 32013 (मौ० वि० उ० म० नि०)/1/80-स्था० I—-राष्ट्रपति डा० बी० एन० दसा, निदेशक, भारत मौसम विज्ञान विभाग को दिनांक 5-10-1982 से 31 दिसम्बर, 1982 तक या डा० श्रार० पी० सरकार, मौसम विज्ञान के उप महानिदेशक के प्रतिनियुक्ति में भारत वापिस ग्राने, जो भी पहले हो, तक के लिये स्थापक्ष मौसम विज्ञान के उप महानिदेशक के पद पर नियुक्त करते हैं।

एस० के० दास मौसम विज्ञान के श्रपर महानिदेशक महानिदेशक नागर विमानन का कार्यालय

नई दिल्ली, दिनोक 14 दिसम्बर 1982

सं० ए० 32013/12/82-ई०-I---इस कार्यालय की दिनांक 14-5-1982 की श्रिधसूचना सं० ए० 32013/12/82-ई०-I का श्रिधकमण करते हुए, राष्ट्रपति ने श्री कुलदीप सिह, बरिष्ट तकनीकी सहायक (बैमानिकी) को दिनांक 11-5-1982 से 29-7-1982 तक की श्रविध के लिये तवर्थ श्राधार पर वैज्ञानिक श्रिधकारी के ग्रेड में नियुक्त किया है।

सं० ए० 38013/1/82-ई० ए०---- श्रेतीय निदेशक, बम्बई के कार्यालय के श्री एल० बी० टिर्मिस, उप निदेशक, निर्वतन श्रायु प्राप्त कर लेने पर दिनांक 30-11-1982 से सरकारी सेवा से निवृत्त हो गये हैं।

सं० ए० 38013/1/82-ई० ए०—क्षेत्रीय निदेशक, कलकत्ता के कार्यालय के श्री जी० सी० लोहार, क्षेत्रीय विमान क्षेत्र नियंत्रक निवर्तन श्रायु प्राप्त कर लेने पर दिनांक 30-11-82 से सरकारी संवा से निवृत्त हो गये हैं।

सं० ए० 38013/1/82-ई० ए०--- अेत्रीय निदेशक, बम्बई के कार्यालय के श्री जी० के० घरट, विमान क्षेत्र अधिकारी निर्वतन श्रायु प्राप्त कर लेने पर दिनांक 30-11-82 से सरकारी सेवा से निवृत्त हो गये हैं।

श्रोम प्रकाश जैन सहायक निदेशक (प्रशासन)

नई दिल्ली, दिनांक 22 दिसम्बर 1982

सं० ए० 32014/1/80-ई० एस०—महानिदेशक नागर विमानन ने श्री डी० एस० धुर्वे, भण्डार सहायक की भण्डार श्रधिकारी (समूह "ख" पद) के पद पर तदर्थ श्राधार पर की गई नियुक्ति को सामान्य शर्तों के श्रधीन दिनांक 10-10-82 से छः मास की अवधि के लिये या पद के नियमित श्राधार पर भरे जाने तक, इनमें से जो भी पहले हो, जारी रखने की स्वीकृति प्रदान की है।

जगदीश चन्द्र गर्ग सहायक निदेशक प्रशासन

विदेश संचार सेवा

बम्बई, दिनांक 18 दिसम्बर 1982

सं० 1/335/82-स्था०—विदेश संचार सेवा के महा-निदेशक एतद्द्वारा श्री जग्गा राम को श्रस्थार्यः रूप में 13 दिसम्बर, 1982 के पूर्वाह्न से ग्रागामी श्रादेशों तक स्विचन समूह, बम्बई में सहायक श्रीभयन्ता नियुक्त करते हैं।

> पी० के० जी० नायर निदेशक (प्रशा०) कृते महानिदेशक

केन्द्रीय जल ग्रायोग

नई दिल्ली-110066, दिनांक 21 दिसम्बर 1982

मं० ए० 19012/1(15)/82-स्थापना-I---ग्रध्यक्ष, केन्द्रीय जल श्रायोग श्री हरभजन सिंह, तकनीकी सहायक (पुस्तकाल्य)/पुन्तकाध्यक्ष, ग्रेड-2, केन्द्रीय जल श्रायोग को श्रायोग में मुख्य पुन्तकाल्याध्यक्ष के पद पर ६० 650-30-740-35-810-द० रो०-35-880-40-1000-द० रो०-40-1200 के वेतनमान में स्थानापत्र स्प में पूर्णत्या ग्रस्थार्य आधार पर 14-12-1982 (पूर्जाह्म) से 6 महीने की श्रवधि के लिये नियुक्त करते हैं।

के० एल**० भण्डू**ला ग्रवर सचिव **कृते** ग्रध्यक्ष, केन्द्रीय जल आयोग

नई दिल्ली, दिनांक 21 दिसम्बर 1982

मं० ए० 19012/1023/82-स्था० पांच--ग्रध्यक्ष, केन्द्रीय जल श्रायोग श्री गंगा धर राय, पर्यवेश्वक को रु० 650-30-740-35-810-द०रो०-35-880-40-1000-द०रो०-40-1200 के वेतनमान में ग्रातिरिक्त सहायक निदेशक/महायक रंजीनियर (दंजीनियरिंग) के ग्रेड में 25 श्रक्त्वर, 1982 की पूर्वीह्न से एक वर्ष तक की श्रविध श्रथवापद को नियमित श्राधार पर भरे जाने तक, जो भी पहले हो, नितान श्रम्थायी एवं तदर्थ श्राधार पर नियुक्त करते हैं।

ए० भट्टाचार्य प्रश्नर सचिव केर्न्द्रध्य जल आयोग

केन्द्रीय विद्युत प्राधिकरण

नई दिल्ली-110066, दिनांक 20 दिसम्बर 1982

सं० 2/45/82-प्रणासन-1(त) → -ग्रष्ट्यक्ष, केन्द्रीय विद्युत प्राधिकरण एतद्द्वारा श्री ग्रार० के० नव्यर-II को केन्द्रीय विद्युत प्राधिकरण में केन्द्रीय विद्युत इंजीनियरं (ग्रुप ख) सेवा के ग्रातिरिक्त सहायक निदेशक/महायक उजीनियर के ग्रेड में 13 नवस्बर, 1982 के प्रतिह्न से स्थानापन्न क्षमता में नियुक्त करने हैं।

> एस० **बि**स्वास श्रवर सचिव

निर्माण महानिदेशालय केन्द्रीय लोक निर्भाण विभाग नई दिल्लो, दिनांक 21 दिसम्बर 1982

सं० 33/1/81-ई० सी०-9--राष्ट्रपित सहर्थ संव लोक सेवा स्रायोग के श्री टी० एस० रेहगी को उप वास्तुको के श्रम्थायी पदों पर (मामान्य मिविल सेवा ग्रुप "क") के० लो० नि० विभाग में रुपये 700/प्रति माह वेतन पर रुपये 700-10-900-द० रो०-40-1100-50-1300 के वेतनमान मे श्रतिरिक्त (सहित) साधान्य नियमो एव णर्था पर 15-10-8.2 से निय्कत करन है ---

- (2) श्री रेह्रशी का वेतन नियमानुसार निर्धारित किया जायेगा।
- (3) श्री रहणी वो नियुक्ति तिथियो रो 2 वर्ष की स्नविध के लिये परिवोक्षा पर रखा जाता है।

ए० के० नारंग प्रशासन उपनिदेशक

विधि, न्याभ तथा कम्पनी कार्य मंत्रालय

(कम्पनं; कार्य विभाग)

म्पर्नः विधि वोर्ड

कम्पनियो के अजिस्ट्राए का कार्यालय . कम्पनी श्राधानयम, 1956 श्रौर गैजेसटी कम्पनी प्राह्मवेट लिमिटेड (पमापन श्रन्तर्गत) के विषय में।

कलकत्ता, दिनाक 17 दिशम्बर 1982

मं० एल/24861-एज/डी/1935 --- कम्पनी म्रधिनियम, 1956 की प्रारा 445 की उपधारा 2 के अनुसरण में एनद्हारा यह सूचना दी जाती है कि भ्रादरणीय उच्च न्यायालय कलकत्ता ने दिनांक 22-7-1979 के भ्रादेणानुपार उपगेक्त कम्पनी के समापन का ग्रादेण दिवा है गौर राजकीय समापक उच्च न्यायालय, कनकत्ता की उपका राजकीय समापक नियुक्त किया है।

कस्पनी अधिनियम, 1956 श्रीर एम० एम० पि० नाधन्य पाइतेट निमिटेड (पमापन अन्तर्गत) के विषय में।

कुलकत्ता, दिनांक 17 दिसम्बर 1982

मं० एल/28655-mन/डी/2030---कस्पनी अधिनियम, 1956 की धारा <math>445 की उपभारा 2 के अनुभरण में एनद्हारा यह

सूचना दी जाती है कि ग्रादरणीय उच्च न्यायालय कलकत्ता ने दिनांक 3-8-82 के श्रादेणानुभार उपरोक्त कम्पनी के समापन का श्रादेण दिया है ग्रीर राजकीय समापक, उच्च न्यायालय कलकत्ता को उसका राजकीय सभापक नियक्त किया है।

कम्पनी अधिनियम 1956 और फुटकोम्थाक्स (इण्डिया) प्राझ्वेट लिमिटेड (समापन ग्रन्तर्गत) के विषय में ।

कलकत्ता, दिनाक 17 दिसम्बर 1982

मं० एल/30269-एच/डी/2029---कम्पनी ग्रिधिनियम, 1956 की धारा 445 की उपधारा 2 के श्रनुसरण में एनव्द्वारा यह सूचना दी जाती है कि श्रादरणीय उच्च न्यायालय कलकत्ता ने दिनाक 1-9-82 के श्रादेशानुमार उपरोक्त कम्पनी के समापन का श्रादेश दिया है ग्रोर राजकीय समापक, उच्च न्यायालय, कलकत्ता को उसका राजकीय समापक नियुक्त किया है।

ह/० अपठनीय कम्पनियों का सहायक रजिस्ट्रार पण्चिम बंगाल, कलकत्ता

कम्पनी श्रधिनियम, 1956 ग्रीर धींग फार्मर्स एसोपिएणन प्राइवेट लिमिटेड के विषय में । णिलौंग, दिनांक 20 दिसम्बर 1982

सं० 1018/560(5)/3548—कम्पनी श्रिधिनियम— 1956 की धारा 560 की उपधारा (5) के श्रनुसरण में एनद्द्वारा सूचना दो जाती है कि धीग फार्मर्स एसोसिएशन प्राइवेट लिमिटेड का नाम श्राज रिजस्टर मे काट दिया गया है श्रीर उक्त कम्पनी विश्वदित हो गई है।

> ू्रिस० श्रार० कोम कम्पनी का रजिस्ट्रोर आसाम, मेघालय मणिपुर, स्निपुरा, नागार्लेड, अष्ठणाचल प्रदेश श्रीर मिजोरम शिक्षाण

प्रारूप आहर्.टी.एन.एस.------

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-ष (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यासम, सहायक आयकर आयुक्स (निरीक्षण)

म्रजैन रेंज जालन्धर

जालन्धर, दिनांक 10 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० ए० पी० नं० 3655---यत: मुझे जे० एल० गिरधर,

नायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे हममें इसके पहचात् 'उन्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-स के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर संपत्ति, जिसका उचित वाजार मृल्य 25,000/-, इंट. से अधिक है

ग्रौर जिसकी मं० जैसा कि नीचे की ग्रनुसूची में लिखा है तथा जो भटिन्डा में स्थित हैं (ग्रौर इससे उपाद्ध ग्रनु-सूची में ग्रौर पूर्ण रूप से विणित हैं), रिजस्ट्रीकर्त्ता श्रिधकारी के कार्यालय भटिन्डा में रिजस्ट्रीकरण श्रिधनियम 1908 (1908 का 16) के श्रिधीन तारीख मई 1982

को पूर्वोक्त संपरित का उचित बाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुफ्ते यह विश्वाम करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त संपत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से, एसे दृश्यमान प्रतिफल के क्ष्मह प्रतिशत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरको) और अन्तरिती (अन्तरितियाँ) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नसितित उच्चेश्य से उच्च अन्तरण सित्तियाँ के स्थान नहीं किया गया है :---

- (क) अन्तरण से हुई किसी आध की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्व में कभी करमें या उससे बचने में सूविधा के लिए; और/या
- (क) एसी किसी आय या किसी अन या अन्य आस्तियों को जिन्हें भारतीय आयक,र अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती व्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना वाहिए था, छिपाने में स्विधा के लिए।

जतः अज्ञ, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के, अनुसरण में, में, उक्त अधिनियम की धारा 269-घ की उपधारा (1) के अधीन, निम्निलिश्वित स्पिक्तियों, अर्थात् :---

(1) श्री दरबारा मिंह पृत्व श्री प्रीतम सिंह वासी भटिन्डा।

(भ्रन्तरक)

- (2) श्रीमनी श्रपरजीत कौर पुत्री श्री सूरज वाला श्री बलदेव सिह मेहना मोहला नजदीक बगा हाऊस पुराना बस श्रड्डा श्रीर श्रव 2642, कोई रोड नजदीक रण्जीत प्रैस, भन्टिडा। (श्रन्तरती)
- (3) जैसा नं० 2 में लिखा है (वह व्यक्ति, जिसके ग्रधिभोग में सम्पति है)
- (4) गो व्यक्ति सम्पति में रुचि रखता है (बह व्यक्ति जिसके बारे में श्रधोहस्ताक्षरी जनाता है कि वह सम्पति में हितब के हैं)
- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के सिए; और/या
- (स) इस सूजना के राजपत्र में प्रकाशन की तारी से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर संपत्ति में हिसबब्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिसित में किए जा सकी।

स्वष्टीकरण:--इसमे प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं, वही अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

भन्स्ची

व्यक्ति तथा सम्पति जैमा कि विलेख नं 1164 की रजिस्ट्रीं-कर्त्ता भ्रधिकारी भटिण्डा ने लिखा

> जे० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी सहायक स्रायकर श्रायुक्त (निरीक्षण) श्रर्जन रेंज जालन्धर

तारीख 10-12-82 मोहर: प्ररूप आर्च टी. एन. एस. ----

कायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-च (1) के अधीन सुचना

भारत संरकार

कार्यालय, सहायक श्रायकर भायुक्त (निरीक्षण)

अर्जन रैंज जालन्धर जालन्धर, दिनांक 10 दिसम्बर 1982

निदेश सं० ए० पी० नं० 3656—यनः मुझे औ० एल० गिरधर

श्रीर जिसकी सं० जैसा कि श्रनुसूची में लिखा है तथा जो गुरुद्वारा चौक मानसा में स्थित है (श्रीर इससे उपाबद श्रनुसूची में श्रीर पूर्ण एप में वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्त्ता श्रीधकारी के कार्यालय मानसा में रजिस्ट्रीकरण श्रीधिनयम 1908 (1908 का 16) के श्रीधन श्रुप्रैस 1982

को पूर्वेक्ति सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के दश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुझे यह विश्वाम करने का कारण है कि सथापूर्वेक्ति सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य उसके दृष्णमान आका म, ऐप दृष्णमान प्रतिकल का पन्त ह प्रतिभाग से अधिक है और अन्तरक (अन्तरिकों) और अन्तरिती (अन्तरितियों) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखिन उद्देष्य से उक्त अन्तरण लिखित में बास्तविक क्य में कथित नहीं किया गया है: --

- (क) रन्तरन संपुर किन्त आण की बावत, उबन अधिन नया क अधीन कर दने के अन्तरक के दायित्व में कभी करने या उसा बचने में सुविधा के लिए; और/या
- (मा) एसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों की, जिन्हें भारतीय आय-कर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, य धन-कर अधिनियम, य धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सिवा के लिए;

जतः असं, उक्त अधिनियम की भारा 269-ग के अनुसरण में, में उक्त अधिनियम की भारा 269-घ की उपभारा (1) के अधीन, निम्मिसिखत व्यक्तियों, अर्थान —— 2—416GI/82

- (1) श्री लेख राज पुत्र सैन दास गारशियन श्राफ माईनर राजिन्द्र कुमार जोग राज, रघुनंदन दास पुत्र लेख राज, वासी गुरुसाग्ररा चौक मानसा । (श्रन्तरक)
- (2) श्री तरसेम चंद पुद्ध बुलबंत राए मार्फत मैर्मज किसान सैसज एजैसी, गुरूष्ठारा चौक, श्रावास (ग्रन्तरिती)
- (3) जैसा कि ऊपर न० 2 में लिखा है। (वह व्यक्ति, जिसके श्रिधिभोग में सम्पति है)
- (4) जो ध्यक्ति सम्पति में रुचि रुखता हो।
- (वह व्यक्ति जिसके बारे में ग्रियोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पत्ति में हिनबद्ध है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वीक्त सम्परित के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हूं।

उक्त सम्पत्ति के वर्षन के सम्बन्ध में कोई भी माक्षेप :---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारील से 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वों कत व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति व्वारा;
- (व) इस स्वना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीच सं 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबव्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अथोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकोंगे।

स्पक्तीकरणः — इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का जो उक्त अधिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं, बही अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गुया है।

अनुसूची

व्यक्ति तथा सम्पति ज़ैसा कि विलेख नं० 73 दिनांक भग्नेल 1982 को रजिस्ट्रीकर्सा ग्रधिकारी मानसा ने लिखा है।

> जे० एल० गिरधर, सक्षम ग्रधिकारी सहायक भायकर भायुक्त (निरीक्षण) भ्रजैन रेंज जालन्बर

तारी**व** 10-12-82 मोहर: प्ररूप आहें.टी.एन.एस.-----

आयकार अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-ध (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर वायुक्त (निरीक्षण) अर्जन रेंज जालन्धर

जालन्धर, दिनांक 10 दिसम्बर 1982

निदेश सं० ए० पी० नं० 3657—यतः मुझे जे० एस० गिरधर,

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-ख के अधीन सक्षम प्रधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- रा. से अधिक है

धौर जिसकी सं० जैसा नीचे की धनुसूची में लिखा है तथा जो साबो में स्थित है (धौर इससे उपाबद्ध में धनुसूची में धौर पूर्ण रूप में वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्सा ध्रधिकारी के कार्यालय तलबंडी साबों में रजिस्ट्रीकरण ध्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के ध्रधीन तारीख मई 1982

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुक्ते यह विद्यास करने का कारण है कि मथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उजित बाजार मूल्य, इसके दृश्यमान प्रतिफल से, एसे दृश्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अंतरक (अंतरकों) और अंतरिती (अन्तरितियों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अंतरण लिखित में वास्तविक रूप से कथित नहीं किया गया है:---

- (क) अंतरण से हुई किसी आय की बाबत, उकत अधिनियम के अधीन कार दोने के अंतरक के दामित्व में कमी कारने या उससे बचने में सुविधा के लिए; और/या
- (क) एसी किसी जाय या किसी धन या अन्य आस्तियों को, जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धनकर अधिनियम, वा धनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अंतरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था छिपाने में सुविधा के लिए;

तः शव, उक्त अधिनियम कौ धारा 269-ग के अनुसरण में, उक्त अधिनियम की धारा 269-व की उपधारा (1) धीन, निम्निसिंस व्यक्तियों, अर्थात् :---

(1) श्री जगसप सिंह स्पुत्न श्री रण्जीत सिंह वासी तलबंडी साबो

(अन्तरक)

(2) श्री गुरवेब सिंह पुत श्री जोगिन्द्र सिंह बासी मोगा महिला सिंह

(भ्रन्सरिती)

(3) जैसा नं० 2 में लिखा है घौर श्रीमती बनकौर पुत्री चुहारसिंह, काकासिंह सपुत्र धूला सिंह वासी सलयंडी साबो

(वह व्यक्ति, जिसके बारे में श्रधिभोग में सम्पति है)

(4) जो व्यक्ति सम्पति में रुचि रखता है (वह व्यक्ति, जिसके बारे में अधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पति में हिसबज़ है)

को यह सूचना जारी कारके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां कारता हूं।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन के संबंध में कोई भी आक्षेप :---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविध, जो भी अविध बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशत की तारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हिस-बद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकोंगे।

स्पष्टिकरण:---इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम के अध्याय 20-क में परिभाषित ही, वही अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया ही।

अनुस्ची

व्यक्ति तथा सम्पति जैसा कि विलेख नं० 442 विमांक मई 1982 रजिस्ट्रीकर्ता अधिकारी तलवंडी साबो में लिखा है।

> जे० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी सहायक भ्रायकर भ्रायुक्त (निरीक्षण) सर्जन रेंज, जालन्धर

तारीख: 10-12-1982

प्रकथु बाह्रै.दी.एन.एस.-----

नायकर अभिनियम, 1961 (1961 का 43) की भारा 269-ष (1) के अभीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकार आयकत (निरीक्षण)

भ्रजंन रेंज, जालन्धर

जालन्धर, दिनांक 10 विसम्बर 1982

निर्देश सं० ए० पी० नं० 3658—यतः मुझे जै० एल० गिरधर,

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-स के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्मित, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- रु. से अधिक है

भौर जिसकी सं० जैसा कि नीचे भ्रनुसूची में लिखा है तथा जो तलवण्डी साबी में क्थित है (भौर इससे उपाबद्ध में भ्रनूसूची में भौर पूर्ण रूप में विणित है), रिजस्ट्रीकर्ता भ्रधिकारी के कार्यालय तलवण्डी साबो में, रिजस्ट्रीकरण भ्रधिनियम,

1908 (1908 का 16) के प्रधीन तारीख मई 1982 को पूर्वोक्त सम्पत्ति के जियत बाजार मृत्य से कम के स्वयमान प्रतिफल के लिए अंतरिती की गई है और मुक्ते यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का जित्र बाजार मृत्य, उसके स्वयमान प्रतिफल से, एसे स्वयमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अंतरक (अंतरकों) और अंतरिती (अंतरितियों) के बीच एसे अंतरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल मैं नास्तिक मैंनिनिस्ति उद्देश्य से उक्त अंतरण लिखित में नास्तिक कप से किथत नहीं किया ग्या है :--

- (क) अंतरण से हुई किसी जाय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कार दोनें के अंतरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए; और/या
- (क) ऐसी किसी बाय या किसी धन या अन्य आस्तियों का. जिन्हों भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अंतरिती ब्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा के लिए;

अतः अव, एक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण में, मैं उक्त अधिनियम की धारा 269-म की स्पधारा (1) के अधीन, निम्मनिष्क स्यक्तियों, अर्थात् :--- (1) श्री गुरदयाल सिंह पुत्र गण्जन सिंह वासी तलबंडी साखो

(ग्रन्तरक)

(2) श्री सुरजीत सिंह पुत्र प्रताप सिंह वासी तलबंडी साबो

(भ्रन्तरिती)

(3) जैसा उपरोक्त नं० 2 में लिखा है। (वह व्यक्ति, जिसके ग्रधिभोग में सम्पति है)

(4) जो व्यक्ति सम्पति में रूचि रखता है, (बह व्यक्ति, जिनके बारें में अधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पति में हितबद्ध है

को यह स्वना जारी करके पूर्वीक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां शुरू करता हुं।

उक्त सम्पत्ति को अर्जन को संबंध में कोई भी आक्षेप :----

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारील से 45 दिन की अविध या तत्संबंधी व्यक्तियाँ पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविध, जो भी अविध बाद में समाप्त होती हो,, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबद्ध किसी अन्य व्यक्ति स्वारा, अधोहस्ताक्षरी के पास किये जा सकोंगे।

स्पच्छीकरण: — इसमें प्रयूक्त शब्दों और पर्दों का, जो उक्त अधिनियम के अध्याय 20-क में परिभाषित हाँ, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गुमा हैं।

वन्स्ची

व्यक्ति तथा सम्पति जैसा कि विलेख नं० 649 दिनांक मई 1982 को रजिस्ट्रीकर्ता भ्रधिकारी तलबंडी साबो में लिखा।

> जे० एल० गिरधर सक्षम श्रधिकारी सहायक ग्रायकर श्रायुक्त (निरीक्षण) श्रर्जन रेंज, जालन्धर

तारीक: 10-12-82

प्ररूप आहें.. टी. एन्. एस..-----

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-घ (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकार आयुक्त (निरीक्षण) ग्रर्जन रेज, जालन्धर

जालन्धर, दिनांक 10 दिसम्बर 1982

निर्देण सं० ए० पी० नं० 3659—यतः मुझे, जे० एल० गिरधर,

भायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिले इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया हैं), की धारा 269- घ के अधीन स्क्षम प्राधिकारी को, यह विद्धास करने का कारण हैं कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/-रु. से अधिक हैं

स्रोर जिसकी मं० जैसा कि स्रनुसूची में लिखा है तथा जो भिटिन्डा में स्थित है (स्रोर इससे उपाबढ़ स्रनुसूची में स्रोर पूर्णरूप वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्त्ता स्रिधकारी के कार्यालय भिटिन्डा मे रजिस्ट्रीकरण अितिस्म, 1908 (1908 का 16) के स्रिधीन स्रोतेल 1982

को पूर्वोक्त संपत्ति के जीवत बाजार मूल्य से कम के रहममान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुभ्ने यह विश्वास करने का कारण है कि यथाप्वोंक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दश्यमान प्रतिफल से एसे रहयमान प्रतिफल का पंद्रह प्रतिशत से अधिक है और अंतरक (अंतरका) और अंतरिती (अन्तरितियाँ) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया नया प्रति-फल, निम्निलीकत उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिक्ति में शास्तिक रूप से कथित नहीं किया गया है:---

- (क) अन्तरण से हुई किसी आयुकी नायत्र, उच्छ अधिनियम के अधीन कर दोने के अवस्थ के दायित्व में कमी करने या उत्तर्ख व्यूने में सुविधा के सिक्ट; अहैंद्र/या
- (का) ऐसी किसी जाय या किसी धन या अन्य आस्तियों को, जिन्हों भारतीय आक्ष्कार अधिनियन, 1922 (1922 का 11) या उक्क अधिनियस, या धनकर अधिनियस, 1957 (1957 का 27) के प्रसोधनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था छिपाने में सुविधा के निए;

अतः अज्ञ उनतः अभिनियमं की भाष 269-ए के अनुकरण में, में, उकत अधिनियमं की भारा 269-ए की उपभारा (1) के अभीन, निम्मलिक्ति व्यक्तियों, अर्थुत् :— (1) श्री गुरमीत कौर पुत्र गुरनाम सिंह भ्रौर श्रीमित जसबीर कौर वासी गांव बुरज महमा

(भ्रन्तरक)

- (2) श्री जगजीन सिंह पुत्न श्री इन्द्रसिंह ग्रींगर श्रीमिन निरंजन कौर पुत्न श्रीग्रमरसिंह वासी भटिन्डा (श्रन्तरिती)
- (3) जैसा उपरोक्त नं० 2 में लिखा है (वह व्यक्ति जिसके ग्रिधभोग में सम्पति है
- (4) जो व्यक्ति सम्पति नें रुचि रखता है (वह व्यक्ति जिसके बारें में प्रधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पति में हितबद्ध है

को यह सूचना जारी करके पूर्वाक्त सम्पत्ति के अर्थन के लिए कार्यवाहियां करता हुं।

उक्त सम्मीत के वर्जन के सम्बन्ध में कोई भी जाक्षेप :---

- (क) इस सृचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीच से 45 दिन की अविधि या तत्संबंधी व्यक्तियों पर सृचना की तामील से 30 दिन की अविधि, को भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पृवांकित व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति हा
- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की सारीब सं 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हिस-बब्ध किसी अन्य व्यक्ति ब्लारा, अधोहस्ताक्षरी के पास जिकित में किए जा सकोंगे।

स्थाबीकरणः --- इसमें प्रयुक्त शन्दों जार पदों का, जो उक्त जिथिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाषिक ह⁵, बही अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनुसूची

व्यक्ति तथा सम्पति जैसा कि विलेख न० 166 दिनांक अप्रैल 1982 को रजिस्ट्रीकर्ता प्रधिकारी भटिन्डा में लिखा है

> जै० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) श्रर्जन रेंज, जालन्धर

तारी**ख**: 10-12-82

प्ररूप बार्च. टी. एन. एस. -----

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-घ (1) के अधीन स्वना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) ग्रर्जन रेंज जालन्धर

जालन्धर, विनांक 10 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० ए० पी० नं० 3660---यतः मुझे जे० एल० गिरधर,

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके परचात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-स के अधीन सक्षम प्राधिकारी को, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/-रु. से अधिक है

ग्रीर जिसकी सं० जैसा कि नीचे की श्रनुसूची में लिखा है तथा जो भटिन्डा में स्थित है (श्रीर इससे उपावद्ध में श्रन्सूची में ग्रीर पूर्ण रूप में वर्णित है), रजिस्ट्रोकर्त्ता ग्रधिकारी के कार्यालय भटिन्डा में रजिस्ट्रीकरण ग्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के ग्रधीन नारीख ग्रप्रैल 1982

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के स्रथमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुभ्ने यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त संपत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके स्रथमान प्रतिफल से एसे स्रथमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितीयों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्वेश्य से उक्त अन्तरण लिखित में वास्तिक रूप से किथत नहीं किया गया है:---

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में स्विधा के लिए; और/या
- (ख) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को, जिन्हों भारतीय आय-कर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तिरती ब्वास प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था छिपाने में सुविधा के लिए;

अतः अब, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण में, मैं, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग की उपभारा (1) के अधीन विकासित व्यक्तियों, अर्थात् :--

- (1) डा॰ पाल पुत्र धारमा राम डा॰ रमेश पत्नी डा॰ श्री पाल राधे श्याम पुत्र मंगत राम श्रशा रानी पत्नी साध् राम वासी भटिन्डा (श्रन्तरक)
- (2) श्री सुरजीत कौर पत्नी श्री सुखदशन सिंह महेद्र कौर पत्नी ग्रनेल सिंह वासी रामपुराफूल श्री सुखदर्शन सिंह सिकयू ग्रोरिटी ग्राफीसर, (ग्रन्तरिती)
- (3) जैसा नं 2 में लिखां है (वह व्यक्ति जिसके श्रिधभोग में सम्पति है)
- (4) जो व्यक्ति सम्पति में रुचि रखता है (वह व्यक्ति जिसके बारे में ध्रधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पति में हितबद्ध है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हुं।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप :---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अविधिया तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधिबाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (स) इस स्चना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकोंगे।

स्वकाकरण: ---इसमें प्रयुक्त शब्दों और पद्यों का, जो उक्त अधिनियम, के अधीन 20-क में परिभाषित हाँ, वहीं अर्थ होगा, जो उस अध्याय में दिया गया हाँ।

अनुसूची

व्यक्ति तथा सम्पति औसा कि विलेख नं० 578 दिनांक भग्नैल 1982 को रजिस्ट्रीकर्त्ता श्रधिकारी भटिन्डा ने लिखा

> जे० एस० गिरधर सक्षम प्रधिकारी सहायक आयकर प्रायुक्त (निरीक्षण) प्रजैन रेंज, जालन्द्रार

तारी**य** : 10-12-82

प्रकृप बार्च, टी. एन. एस. ------

आयक्तर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-घ (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण)

ग्रर्जन रेंज जालन्धर जालन्धर, दिनांक 10 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० ए० पी० नं० 3661, यत: मुझे जे० एल० गिरधर,

नायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-स के अधीन सक्षम प्राधिकारी को, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर संपत्ति, जिसका उचित वाजार मूल्य 25,000/- रा. से अधिक है।

भौर जिसकी सं० जैसा अनुसूची में लिखा है तथा जो भटिन्डा में स्थित है (और इससे उपाबद्ध अनुसूची में श्रोर पूर्ण रूप में वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्ता श्रधिकारी के कार्यालय भटिन्डा में रजिस्ट्रीकरण श्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन तारीख श्रप्रैल 1982।

को पूर्वोक्त संपत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम दश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई हैं और मूझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से एसे दृश्यमान प्रतिफल के पन्तह प्रतिष्ठात से अधिक हैं और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरित (अन्तरितियों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्निलिखित उद्यंश्य से उक्त अन्तरण लिखिन में वास्तविक रूप से कथित नहीं किया गया है .--

- (का) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के बायित्व में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए; और/या
- (स) एसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, खिपाने में सुविधा के लिए।

अतः अस, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण मं, मैं, उक्त अधिनियम की धारा 269-स की उपभारा (1) के अधीन, निम्नलिसित व्यक्तियों, अधीत् :— (1) श्री श्री पाल पुत्र ग्रात्म राम डा० रमेश पत्नी श्रीपाल मंजू पत्नी राजगोपाल राधे ध्याम पुत मंगत राय

(धन्तरक)

(1) स्राशा रानी पत्नी साधू राम, डा॰ श्रीपाल श्रम्पताल बजार भटिन्डा

(ग्रन्तरिती)

- (2) श्री सुरजीत कौर पत्नी सुखदर्शन सिंह मोहिन्द्र कौर पत्नी गुरमेल सिंह वासी रामपुराफूल, श्री सुखदर्शन सिंह क्वियोरिटी श्राफीसर श्रमेल पलाट भटिन्डा (श्रन्तरिती)
- (3) जैसा नं० 2 में लिखा है।(वह व्यक्ति जिसके ग्रिधिभोग में सम्पति है)
- (4) व्यक्ति सम्पति में रुचि रखता है (बह व्यक्ति जिसके बारे में ग्रधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पति में हितबद्ध है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पक्ति के अर्जन के लिए कार्यधाहियां करता हुं।

जक्त सम्परित के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप :---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारी का से 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वीकत व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (स) इस स्वना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिसित में किए जा सकोंगे।

स्वव्यक्तिरणः—इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम के अध्याय 20-कं में परिभाषित हैं, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनुसूची

व्यक्ति तथा सम्पति जैसा कि विलेख नं० 579 विनांक श्रप्रैल 1982 को रजिस्ट्रीकर्त्ता ग्रिधकारी भटिन्डा में लिखा

> जं० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) ग्रजैन रेंज, जालन्धर

तारीख: 10-12-1982

प्ररूप बाई. टी. एन. एस -----

भायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-म (1) के अधीन सुमना

भारत सरकार

कार्याच्य, सहायक ब्रायकर ब्रायक्त (निरीक्षण)

ग्रर्जन रेंज जालन्धर

जालन्धर, दिनांक 10 दिसम्बर 1982 निर्देश सं० ए० पी० नं० 3662-—यतः मुझे जे० एस० गिरधर,

कायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके परचात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- रा. से अधिक है

धीर जिसकी सं० जैसा कि अनुसूची में लिखा है सथा जो भिटिन्डा में स्थित हैं (और इससे उपावक अनूसूची में धौर पूर्ण रूप से वर्णित हैं), रजिस्ट्रीवर्त्ता अधिकारी के कार्याक्षय भिटिन्डा में रजिस्ट्रीवरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन तारीख अप्रैल 1982।

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मूम्में यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित्त बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से एसे दृश्यमान प्रतिफल का पन्त्रह प्रतिशत अधिक है और अन्तरिक (अन्तरकार्ने) और अन्तरिती (अन्तरितियाँ) के बीच एसे बन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल निम्निलिखत उद्वेष्य से उसत अन्तरण लिखित में बास्तविक रूप से कथित नहीं किया गया है:---

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत उक्त जिथ-जियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दाधित्य में कमी करने था उससे बचने में सुविधा के सिए; और/या
- (ख) एसी किसी आय या किसी धन था अन्य आस्तियों को, जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, कियाने में सुनिधा के लिए:

अतः, अब, उक्त अधिनियम की धारा 269-च के अनुसरण मं, में, उक्त अधिनियम की धारा 269-च की उपधारा (1) के अधीन, निम्निमिश्वत व्यक्तित्यों, अर्थात— (1) श्री डा० श्री पास पुत्र झारमा राम डा० रमेश परनी श्रापाल मंजू परनी राज गोपाल राधे स्थाम पुत मगंत राय आणा रानी परनी साधू राम डा० श्री पाल श्रस्पताल बजार, भटिन्डा

(ग्रन्तरक)

(2) श्रीमती सुरजीत कौर पत्नी श्री सुखवर्शन सिंह मोहिन्द्र कौर पत्नी गुर्मात सिंह वासा रामपुरा कल श्री सुखदर्शन सिंह मिन्योरिटी ग्राफीसर कर्नल पनाट भटिन्डा

(अन्तरिती)

3. जैसा नं० 2 में लिखा है।

(वह व्यक्ति, जिसके अधिभाग में सम्पत्ति हैं)

श्रीर कोई।

(वह व्यक्ति, जिनके बारे में अधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पत्ति में हितबद्ध हैं)

को यह स्वना जारी करके पृत्रों क्स संपत्ति के अर्थन के लिए कार्यवाहियां करता हुं।

उक्त सम्पत्ति के वर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप :---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीब से 45 विन की सबिध या तत्सम्बन्धी स्विक्तयों पर सूचना की तामील से 30 दिन की सबिध, जो भी सबिध बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति ब्वारा;
- (व) इस स्वाग के राजपत्र के प्रकाशन की तारीब से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर संपत्ति में हित- बद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकोंने।

स्थव्यक्तिरणः — इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम् के अध्याय 20 क में परिभाषित हैं, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में विया गया है।

अनुसुची

व्यक्ति तथा सम्पति जैसा कि विलेख नं ० 586 दिनांक ग्रंप्रैल 1982 के रजिस्ट्रीकर्सा प्रधिकारी भटिन्डा में लिखा।

> जे० एल० गिरधर सक्षम मधिकारी सहायक म्रायकर म्रायुक्त (निरीक्षण) म्रजन रेंज, जालन्धर

तारी**ख**: 10-12-82

प्ररूप आई. टी. एन. एस.--

भावकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की भारा 269-च (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयक्त (निरीक्षण)

ग्रजन रेंज जालन्धर

जालन्धर, दिनांक 10 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० ए० पी० नं० 3663—यतः मुझे जे० एस० गिरघर,

भायक्र प्रवित्यम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पण्यात् 'उनत प्रवित्यम' कड्डा मया है), की धारा 269-ख के अभीन सक्षम प्राधिकारी को, यह विषयस करने का कारण है कि स्थायर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मृश्य 25,000/-रुपए से अधिक है

श्रीर जिसकी सं० जैसा कि श्रनूसूची म लिखा है तथा जो भटिन्डा में स्थित है (श्रीर इससे उपाबद्ध श्रनूसूची में श्रीर पूर्ण रूप से बर्णित है), रिजर्स्ट्राकर्त्ता श्रधिकारी के कार्यालय भटिन्डा में रिजर्स्ट्राकरण श्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के श्रधीन तारीख श्रप्रैल 1982।

को पूर्वोक्त संपरित के उचित बाजार मूल्य से कम के ख्रयमान प्रतिफल के लिए घन्तरित की वर्ष है बोर मुझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त संपत्ति का उचित बाजार मूल्य उसके वृश्यमान प्रतिफल से, ऐसे बृश्यमान प्रतिकल का पन्द्रह् प्रतिगत प्रधिक है और घन्तरक (घन्तरकों) भौर अन्तरिती (खन्तरितिमों) के श्रीच ऐसे घन्तरण के लिए तम पाया गमा प्रतिकन, निम्नलिं अन उद्देश्य से उनत घन्तरण लिखित में वास्त-णिक कप से कवित नहीं विद्या गया है:——

- (क) अन्तरण से हुई किसी साथ की बाबत उक्त अक्षि-नियम के सकीन करदेने के स्थापक के बाबित्व में कमी करने या उक्तसे बचने में सुविधा के बिए; घौर/या
- (क) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों का, जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अंतरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा के लिए;

ज्तः अब, उक्त अधिनियम की भारा 269-ग के अनुसरण में, में, उक्त अधिनियम की भारा 269-भ की उपभारा (1) के अधीन, निम्नलिखित व्यक्तियों, अर्थात् :--- (1) भी डा० श्रीपाल पुत्त भ्रात्मा राम रमध पत्र्म। श्री पाल मंजू पत्ना राज गोपाल राधेण्याम पुत मंगत राम भ्राधारानी पत्नी साधू राम डा० श्रीपाल अस्पताल बजार भटिन्डा

(भ्रन्तरक)

(2) श्रीमती सुरजीत कौर पत्नी सुखदर्शन सिंह मीहिन्द्र कौर पत्नी गुरमीत सिंह वासी रामपुरा कुरता सुखदर्शन सिंह सिन्धीरिट। श्राफ!सर धरमल पलीट भटिन्डा

(भ्रन्तिरते।)

3. जैसा कि ऊपर सं० 2 में लिखा है। (वह ध्यक्ति जिसके श्रिधिभोग में सम्पत्ति है)

4. श्रीर कोई।

(वह व्यक्ति, जिनके बारे में भ्रधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पत्ति में हितबद्ध है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोंक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हुं।

जक्त सम्परित के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप:---

- (क) इस सूचना के राज्यत में त्रकाशन की तारी के से 45 दिन के मीतर उनत स्थावर सम्पत्ति हैं हिसब स्थावर सम्पत्ति हैं हिसब स्थावर सम्पत्ति हैं हिसब स्थावर सम्पत्ति के पास निवास में किए जा सकेंगे।
- (स) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन के भीतर जनत स्थायर संपरित में हितवब्ध किसी अन्य स्थायत ब्वारा ज्थोहस्ताक्ष्री के पास् लिखित में किए जा सकी।

स्वक्रीकरणः --- इसमें प्रयुक्त शब्दों और प्रवांका, जो उक्त अधिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित है, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में विया गया है।

नगुसुची

व्यक्ति तथा सम्पति जैसा की विलेख नं० 587 विनांक ग्राप्रैन 1982 को रजिस्ट्रंकर्ता ग्राधिकार्र। भटिन्डा ने लिखा है

> जे० एल० गिरधर सक्षम श्रधिकारी सहायक श्रायकर ग्रायुक्त (निरीक्षण) ग्रर्जन रेंज, जालन्छर

तारी**व** 10-12-1982 मोहर:

प्ररूप धाई०टी०एन०एस०------

भायकर पश्चितियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-घ(1) के ब्रधीन सुचना

भारत मरकार

कार्यालय, सहायक श्रायकर श्रायुक्त (निरीक्षण) श्रर्जन रेज जालन्धर

जालन्धर, दिनांक 10 दिसम्बर 1982 निर्देश स० ए० पं ० ने० 3664—यतः मुझे जे० एल० गिरधर,

जाबकर प्रधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इतमें इसके पश्चात् 'सक्त प्रधिनियम' कहा गया है), की घारा 268-च के स्थीन बद्धम प्राधिकारी की, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थाय संपत्ति जिसका उपित बाजार मूल्य 25,000/- व॰ से स्थिक है

श्रीर जिसको स० जैसा कि श्रनुसूच। में लिखा है तथा जो भटिन्डा में स्थित है (श्रीर इससे उपाबद्ध श्रनूसूची में श्रीर पूर्ण रूप में वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्सा श्रीधकारी के कार्यालय भटिन्डा में रजिस्ट्रीकरण श्रीधनियम, 1908 (1908 का 16) के श्रधान तारीख श्रप्रैल 1982।

कों पूर्वोक्त संपत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के क्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुफ्ते यह विद्वास करने का कारण है कि यवापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य. उसके दृश्यमान प्रतिफल से, ऐसे दृश्यमान प्रतिफल का पन्त्रह प्रतिभत्त अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितियों) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए, तय पाया गया प्रतिफल किन्यखिक्त उद्देश्य से उच्त अन्तरण लिखित में बास्तविक रूप से कवित नहीं किया गया है:—

- (क) प्रम्तरण ने हुई किसी आय की बाबत उक्त प्रक्षि-नियम के ब्रधीन कर देने के घ्रस्तरक के दायिस्व में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए; धौर/या
- (ख) ऐसी किसी श्राय या किसी धन या श्रन्य श्रास्तियों की, जिन्हें भारतीय आयकर श्रिधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उकत अखिनियम, या धन कर श्रीधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनायं श्रन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में स्विचा के लिए;

अतः अब, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण में, मैं,, उक्त अधिनियम की धारा 269-घ की उपधारा (1) के अधीन, निम्निलिखत व्यक्तियों, अर्थात् :---3--416G1/82

- (1) श्री नरिन्द्रसिंह पुत्र गुरमख सिंह वासी भटिन्डा । (प्रकारक)
- (2) श्र. उजागर सिंह पुत्र श्र. सन्पूर्ण सिंह वासी। भटिन्छा।

(अन्सरिती)

- जैसा कि ऊपर नं० 2 में लिखा है।
 (वह व्यक्ति, जिसके अधिभोग में सम्पत्ति है)
- जो व्यक्ति सम्पत्तिमें रुचि रखता है ।
 (वह भ्यक्ति, जिनके बारे में अधोहस्ताक्षरी
 जानता है कि वह सम्पत्तिमें हितबद्ध है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोका सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्वेवाहियां करता है।

उक्त सम्पति के धर्जन के सम्बन्ध में कोई भी प्रार्क्ष :--

- (क) इस सूचना के राजपंत्र में प्रकाशन की तारी कसे 45 दिन की श्रविध मा तत्त्वस्थाधी स्पक्तियों पर सूचना की तामी ज से 30 दिन की श्रविध, जो भी श्रविध बाद में समाध्य होती हो, के जीतर पूर्वोक्त स्पक्तियों में से किसी स्वक्ति दारा;
- (बा) इस सूचना के राजपल में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में दितबढ़ किसीं सम्य व्यक्ति द्वारा, प्रम्नोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकेंगे।

स्पर्धीकरण: --इतमें प्रमुक्त शब्दों प्रौर पदों का, जो उक्त प्रक्रितियम के प्रक्राय 20-क में परिभाषित है, वही श्रर्ण होगा, जो उम अध्याय में दिया गया है।

अमृत्यी

व्यक्ति तथा सम्पति जैसा कि विलेख न ० 482 दिनाक अप्रैल 1982 कीं रजिस्ट्रीकर्त्ता प्रधिकारी भटिन्डा में लिखा

> जे० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) श्रजन रंज जालन्धर

तारीख: 10-12-82

प्ररूप आहर्र. टी. एन. एस. ------

भायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-घ (1) के अधीन सुखना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक श्रायकर श्रायुक्त (निरीक्षण)

ग्रर्जन रेज, जालन्धर

जालन्धर, दिनांक 10 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० ए० पी० नं० 3065—यतः मुझे, जे० एल० गिरधर.

शायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके परचात् 'उकत अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-श के अधीन सक्ष्म प्राधिकारी को, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूस्य 25,000/- रु. से अधिक है

श्रीर जिसकी सं० जैमा श्रनुसूची में लिखा है तथा जो भटिन्डा में स्थित है (ग्रीर इससे उपाबद्ध श्रनूसूची में ग्रीर पूर्ण रूप में वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्ता ग्राधिकारी के कार्यालय भटिन्डा में रजिस्ट्रीकरण श्रिधिनियम, 1908 (1908 का 16) के श्रधीन तारीख श्राप्रैस 1982

को पृथितित सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रितिफ न के लिए अन्तरिती की गई है और मुझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथाप्टेंक्ति सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य उसके दृश्यमान प्रतिफल से एसे दृश्यमान प्रतिफल का पन्दृष्ट प्रतिकृत से अधिक है और अंतरक (अंतरकों) और अंतरिती (अंतिरितियों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिकृत का , निम्नलिक्षित उद्देश्य से उक्त अन्तरण सिचित में वास्तिक क्य से किथा नहीं किया गया है:---

- (क) अन्तरण से हुई िकसी आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में सूविभा के लिए; और/या
- (खं) ऐती किसी आय या किसी भन या अन्य आस्तियों का, जिन्हें भारतीय आयक र अधिनियम, 1922 (1922 का 11) वा उन्त अधिनियम, या धनक र अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तिरती दुवारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था छिपाने में सियधा के लिए;

अतः अब, उक्त अधिनियम भी भारा 269-ग के अनुसरण मं, में उक्त अधिनियम की धारा 269-घ की उपधारा (1) क्रें अधीन, निम्नलिलित व्यक्तियों, अर्थात्:---

- (1) श्रा नरेन्द्र सिंह पुत्र श्री गुरख सिंह वासी भटिन्डा (धन्तरक)
- (2) श्रो केंबल कृष्ण पुत्न श्री जयपाल कालरा भटिन्डा ग्रीर श्री। भगत राय पुत्र श्री। परमानन्द सुखेजा वासी मुक्तसर

(मन्तरिती)

- 3. जैसा ऊपर सं० 2 में कोई किरायेदार हो। (वह व्यक्ति जिसके ग्रिधिभोग में सम्पत्ति है)
- 4 भीर कोई।

(वह व्यक्ति, जिनके बारे में भ्रघोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पत्ति में हितबद्ध है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वों क्लूसम्पृत्ति के वर्णन के सिए कार्यवाहियां करता हुँ।

उक्स सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप :---

- (क) इस स्थान के राजपण में प्रकाशन की तारीं से 45 दिन को अवधि या तत्सवधी व्यक्तियों पर स्थान की तामिल से 30 दिन की जवधि, जो भी अवधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (क) इस स्थान के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 चिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हित- शब्ध किसी अन्य व्यक्ति व्यारा, अभोहस्ताक्षरी के पास सिक्षित में किए जा सकेंगे।

स्पद्धीकरणः -- इसमें प्रयुक्त शब्दों और पर्दों का, को उक्त जिभिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित है, बही अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गुया है।

धन्स्पी

व्यक्ति तथा सस्पति जैसा किं विलेख मं ० 525 दिनांक ग्राप्रैल 1982 को 'रिजिस्ट्रीकर्ता श्रीधकारी भटिन्डा ने लिखा है।

> जे० एल० गिरधर सक्षम श्रधिकारी सहायक श्रायकर घायुक्त (निरीक्षण) ग्रर्जन रेंज, जालन्धर

तारीख : 10-12-82

मोहरः

प्ररूप आहूरं टी. एन्. एस्.-----

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-ज् (1) के अजीन सूचना भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निर्धिण)

भ्रर्जन रेंज, जालन्धर जालन्धर, धिनांक 20 दिसम्बर 1982 निर्देश सं० ए० पी०न० 3666—यतः मुझे जे० एल० गिरधर,

शायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्परित, जिसका उचित बाजार मृल्य 25,000/- रु. से अधिक है

श्रीर जिसकी सं० जैसा कि अनुसूची में लिखा है तथा जो बस्ती पीरदाद खान जालन्धर में स्थित है (श्रीर इससे उपाबद अनुसूची में श्रीर पूर्ण रूप में वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्ता श्रधिकारी के कार्यालय जालन्धर में रजिस्ट्रीकरण श्रधिनियम 1908 (1908 का 16) के श्रधीन तारीख श्रश्रें 1982। को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मून्य से कम के स्थमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मूझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मून्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से एसे दृश्यमान प्रतिफल का पंद्रह प्रतिशत से अधिक है और अंतरक (अंतरकों) और अंतरिती (अन्तरितियाँ) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखित में वास्तविक रूप से कथित नहीं किया गया है।

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्य में कभी करने या उत्तसे बचने में सुविधा के सिए; और/या
- (क) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियाँ को, जिन्हें भारतीय आय-कर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था किया जाना चाहिये था छिपाने में सुविधा के लिए;

अतः अवं, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण में, में, उक्त अधिनियम की धारा 269-य की उपधारा (1) के अधीन, निम्निलिखित व्यक्तियों, अर्थात् — (1) श्री मोहन सिंह पुत्र श्री श्रच्छर सिंह द्वीरा श्रीमति सवर्ण कौर जनरल श्रदोरनी ।

(भ्रन्तरक)

(2) श्रो ग्रघोत सिंह पुत्त ईन्दर सिंह वासः। गांव रर्भ दो जिला कपूरथला ग्रौर हरजात सिंह पुत्त राजा सिंह गांव वरनदलः। जिला होशियारपुरः।

(भ्रन्तरितः)

(3) जैसा कि ऊपर नं० 2 में लिखा है। (बह ध्यक्ति, जिसके अधिभोग में सम्पत्ति है)

(4) जो व्यक्ति सम्पति में किच रखता है (वह व्यक्ति जिनके बारे में श्रधोहस्ताक्षरों जानता है कि वह सम्पत्ति में हितबद्ध है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वीक्त संस्पत्ति के वर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हूं।

उक्त संपर्तित के अर्जन संबंध में कोई भी आक्षेप :--

- (क) इस स्चना के राजपत्र में प्रकाशन की सारीख से 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वीक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति इतार;
- (का) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकरें।

स्मब्दीकरेण: -- इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं, वहीं अर्थ होगा, जो उस अध्याय में दिया गया

अनुस्ची

सम्पति तथा व्यक्ति जैसा कि विलेख न० 285 विनांक श्रप्रैल 1982 को रजिस्ट्रोकर्ता श्रधिकारी जालन्धर में लिखा गया है।

> जे० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकरी सहायक भ्रायकर श्रायुक्त (निरीक्षण) भ्रजन रेंज, जालन्धर

नारीख: 10 दिसम्बर 1982

प्ररूप आर्ष: टी. एन. एस. - - - ----गायकर अभिनियम: 1961 (1961 का 43) की

जायकर अभिनियम, 1961 (1961 का 43) की भारा 269-म (1) के अभीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण)

ग्रर्जन रेंज, जालन्धर

जालन्धर, दिनांक 10 दिसम्बर 1982

निदेश मं० ए० पं।० 3667---यतः मुझे, जे० एल० गिरधर,

आयंकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके परकात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-क के अधीन सक्षम प्राधिकारी को, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/-रु. से अधिक है

श्रीर जिसकी सं० जैसा कि श्रन्सूची में लिखा है तथा जो जालन्धर में स्थित है (श्रीर इससे उपाबत श्रन्सूची में और पूर्ण रूप में वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्सा श्रिधकारों के कार्यालय जालन्धर में रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के श्रधान तारीख श्रप्रैल 1982।

को पूर्वेक्टि सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के द्रश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुओ यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वेक्ट संपत्ति का उचित बाजार बूल्य, उसके द्रश्यमान प्रतिफल से एसे द्रश्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितयों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्य से उक्ट अन्तरण लिखित में वास्तिवक रूप से किथत नहीं किया गया है:----

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के वायित्व में कमी करने या उससे बचने में सूबिधा के लिए और/या
- (क) एसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियां को, जिन्हें भारतीय आय-कर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती ब्वारा प्रकट नहीं किया गया भा या किया जाना चाहिए था किपाने में सुनिधा के लिए;

अतः अब, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण मे, मैं, उक्त अधिनियम की भारा 269-म की उपधारा (1) के अधीन निम्निस्थित व्यक्तियों, अधीत :--- (1) श्री पुढप राज वस्त्री पुत्र गनशाम दास वासी श्रोपसाईट, स्विल होसपिटल जालन्धर।

(श्रन्तरक)

- (2) श्री हरजिन्दसिंह, बलराज सिंह सुत्र प्रजीत सिंह श्रीर श्रीमित तरसेम कौर पत्नी हरजिन्द्र सिंह श्रीर बलबिन्द्र कौर पन्नी बलराज सिंह वासी गांव श्रीर पोस्ट श्राफिस सरैन नहसीक्ष जालन्धर। (श्रन्तरिती)
- (3) जैसा कि ऊपर न० 2 में लिखा है और मैंसर्स रेशम स्टूडियो और मैंसर्ज नरेंग लैंबर स्टोर BXIII/1/15 यू० विजय नगर जालन्धर (वह व्यक्ति जिसके श्रिधिभोग में सम्पति है)
- (4) जो व्यक्ति सम्पति में रुच रखता है। (वह व्यक्ति, जिसके बारे में श्रधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पति में हितबद्ध है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वीक्त संपत्ति के अर्जन के लिए कार्वनाहियां करता हुं।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन के संबंध में कोई भी आक्षेप :--

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अविधिया तत्सम्बन्धी व्यक्तियों कर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (स) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस है 45 विन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हित-बद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकोंगे।

स्पव्यक्तिरण ---इसमें प्रयुक्त शब्दों और पत्नों का, जो उक्त अभिनियम, के अध्याय 20-क में परिभावित हैं, वहीं अर्थ होगा, जो उस अध्याव में विमा गया है।

अनुसूची

सम्पति तथा व्यक्ति जैसा कि विशेख नं० 22 दिनांक श्रप्रैल, 1982 को रजिस्ट्रोकर्त्ता श्रिधिकारी जालन्धर में लिखा गया है।

> जे० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी सहायक श्रायकर श्रायुक्त (निरीक्षण) ग्रर्जन रोंज, जालन्धर

तारीख 10-12-82 मोहर: प्ररूप बार्षः की. एन. एस्.-----

जायकर जिभिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-ज (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण)

श्चर्जन रेज जालन्धर जालन्धर, दिनाक 10 दिसम्बर 1982 निर्देश सं० ए० पी० न० 3668---यतः मुझे जे०एल० गिरधर,

कायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमे इसके परचात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-च के अधीन सक्षम प्राधिकारी को, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सुम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- रा. से अधिक है

श्रौर जिसका स० जैसा कि श्रनुसूची में लिखा है। तथा जो जालन्धर में स्थित है (श्रौर इससे उपाबद्ध श्रनुसूची में श्रौर पूर्ण रूप से विणित है), रिजस्ट्रे वर्षा अधिकारी के कार्यालय जालन्धर में रिजस्ट्रे करण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के श्रधान तारीख श्रप्रेल 1982

को पृक्षों कर सम्पत्ति को उणित बाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल को लिए जन्ति रित की गृह है और मूझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वों कत संपत्ति का उणित बाजार मूल्य, जसके दृश्यमान प्रतिफल का पंद्रह प्रतिक्षत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरित (अन्तरितकों) के बीच एसे अन्तरक के लिए तथ पाया गया प्रतिफल, निम्नलिवित उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखित को बास्तिक रूप से किश्त नहीं किया गया है:--

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में सूत्रिक्षा के सिए; अर्रि/या
- (च) ऐसी किसी बाय या किसी धन या अन्य आस्तियों को, जिन्हें भारतीय आय-कर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजना किया जाना चाहिए था छिपाने में स्विधा के लिए;

अतः अवः, अवत बाधिनियम की भारा 269-ग के बनुसरण मो, मी, अवत अधिनियम की भारा 269-श की अपनारा (1) के अभीन, निम्मसिनियत व्यक्तियों, अभीत्:——

- (1) श्री पुठप राज बर्छशी पुत्र गनशाम दाम वासी उक्टयू० जी० 136 सामने स्थित हस्पताल जालन्धर। (स्नन्तरक)
- (2) श्री हर्राजन्त्र 'सिह बलराज सिह सपुत्र अर्जात सिह ग्रीर श्रीमती तरसेम नौर पत्नी हर्राजन्दर सिह ग्रीर श्रीमती बलविन्दर कौर पत्नी बलराज सिह बासो गांव ग्रीर पोस्ट ग्राफिस सर्रेन तहसील जालन्धर (ग्रन्तरिती)
- (3) जैसा कि ऊपर न० 2 में लिखा है। ग्रांर मैंसर्ज रोणम म्टूडियो ग्रीर मैंसर्स नरेण लैंदर स्टोर, BXIII 1/15, न्यू बिजय नगर जालन्धर।

(वह व्यक्ति जिसके प्रधिभोग में सम्पति है)

(4) जो व्यक्ति सम्पति से रुचि रखता है। (बह व्यक्ति, जिनके बारे से श्रधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पत्ति से हितबद्ध है)।

को बह सूचना जारी करके पूर्वांक्त संपरित के अर्थन के लिए कार्यवाहियां शुरु करता हुं।

उक्त संपरित के अर्जन के संबंध में कोई भी आक्षेप :--

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अविधिया तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वों क्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पर्तित में हितबद्ध किसी जन्य व्यक्ति द्वारा अधाहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकोंगे।

स्पष्टीकरण: -- इसमे प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम, के अध्याय 20 क में परिभाषित है, बही अर्थ होगा, जो उस अध्याय में दिया गया है।

अन्सूची

सम्पत्ति तथा व्यक्ति जैमा कि विलेख न० 116, दिनांक ग्रप्रैल, 1982 को रजिस्ट्रीकर्मा ग्रधिकारी, जालन्धर में लिखा गया है।

> जे० एल० गिरधर सक्षम ग्रधिकारी महायक श्रायकर ग्रायुक्त (निरीक्षण) श्रर्जन रेंज, जालन्धर

तारीखा 10-12-82 मोहर. प्ररूप आहरै. टी. एन. एस.-----

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की भारा 269-ष (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण)

म्पर्जन रेंज, जालन्धर

जालन्धर, दिनांक 10 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० ए० पी० नं० 3669—यतः <mark>मुक्षे जे० ए</mark>ल० गिरधर,

ग्रायकर भिष्ठितियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उन्त भिष्ठितियम' कहा गया है), की धारा 269-ख के भिष्ठीन मक्षम प्राधिकारी की, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर संपत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- रु० से अधिक है

श्रौर जिसकी सं० जैसा कि श्रनुसूची में लिखा है तथा जो जालन्धर में स्थित है (श्रौर इससे उपायद्ध श्रनुसूची में श्रौर पूर्ण रूप में वर्णित है), रजिस्टीकर्त्ता श्रिधकारी के कार्यालय जालन्धर में रजिस्ट्रीकरण श्रिधनियम, 1908 (1908 का 16) के श्रिधीन तारीख श्रप्रैंल 1982।

(1908का 16) क अधान ताराख अपल 1982।
को पूर्वोक्त संपत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के
दूष्यमान प्रतिफल के लिए प्रन्तरित की गई
है और मुझे यह विश्वास करने का कारण है कि
यथापूर्योक्त संपत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके
दृष्यमान प्रतिफल से, ऐसे दृश्यमान प्रतिफल का पखाह
प्रतिशत से प्रधिक है और प्रन्तरक (अन्नरकों) और प्रम्तरिती
(प्रन्तरितियो) के बीच ऐसे प्रन्तरण के लिए, तय पाया गया प्रतिफल निम्नलिखित उद्देश्य से उभत प्रन्तरण लिखित में वास्तिक
का से कथिन नहीं किया गया है:--

- (क) अन्तरण से हुई किसी भाय की बाबत उक्त भिध-नियम के भ्रधीन कर देने के भन्तरक के दायिस्व में कमी करने या उससे अचने में सुविधा के लिए; भीर/मा
- (ख) ऐसी किसी प्राय या किसी घन या अन्य पास्तियों को, जिम्हें भारतीय घायकर निर्धानयम, 1922 (1922 का 11) या उक्त घिनियम, या बनकर घिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा के किए;

कतः अव, उकत अधिनियम् की धारा 269-ग के अनुसरण भी, भी, उकत् अधिनियम की धारा 269-च की उपधारा (1) के अधीन, निम्निलिसित व्यक्तियों, अर्थात् :---

- (1) श्री पुष्प राज बख्या पुत्र गणशाम दास वासी डब्ल्यू० जैंड 136 समाने सिविल हस्पताल, जालन्धर (श्रन्तरक)
- (2) श्री हरजिन्दर सिंह, बलराज सिंह पुत्र श्रजीत सिंह श्रीमती तरसेम कौर परनी हरजिन्दर सिंह भौर श्रीमति बलविन्दर कौर पर्नी बलराजसिंह वासी गाव भौर पोस्ट भ्राफिस सरैन तहसील जालन्धर।

(अन्तरिती)

- (3) श्री जैसा कि ऊपर नं० 2 में लिखा गया है और मैसर्स रेशम स्टूडियो श्रीर मैसर्स नरेण लैंबर स्टोर BXIII/1/15 न्यू विजय नगर जालन्धर (वह व्यक्ति जिसके श्रिधभोग में सम्पत्ति है
- (4) जो व्यक्ति सम्पत्ति में घिच रखता है। (वह व्यक्ति जिसके बारे में अधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पति में हितबद है)।

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त संपरित के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हुं।

उन्त सम्पत्ति के श्रर्जन के सम्बन्ध में कोई भी श्राक्षेप :---

- (क) इस सूचना के राजपक्ष में प्रकाशन की तारीख से 45 विन की प्रविध या तस्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की प्रविध, जो भी प्रविध बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
 - (ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारींच सैं 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हित-बब्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी कैं पास लिखित में किए जा सकेंगे।

स्पष्टीकरण: — इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं बही अर्थ होगा, जो उस अध्याय में दिया गया है।

वनृत्यी

सम्पत्ति तथा व्यक्ति जैसा कि विलेख नं० 140 दिनांक प्रप्रैल 1982 को रजिस्ट्रीकर्त्ती घधिकारी जालन्धर में लिखा गया है।

> जे० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) ग्रजन रेंज, जालक्षर

तारी**ख** 10-12-82 मोहर:

प्ररूप बाई॰ टी॰ एव॰ एस॰--

भायकर प्रधिवियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-च (1) के अधीन सूचना भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण)

अर्जन रेंज, जालन्धर जालन्धर दिनांक 10 दिसम्बर 1982

निर्दे**ई** सं० ए० पी० नं० 3670--यतः मुझे जे० एल० गिरधर,

मायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके परवात् 'जन्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269 के प्रधीन सजम प्राधिकारी को, यह विश्वास करने का श्रारण है कि स्थावर सम्मति, जिसका उचित बाजार मृष्य 25,000/- रुपये से अधिक है

और जिसकी सं० जैसा कि अनुसूची में लिखा है तथा जो वहोगरी में स्थित है (और इससे उपाबद्ध में अनूसूची में और पुर्ण रूप में वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्त्ता अधिकारी के कार्यालय जालन्धर में रजिस्ट्रीकरण अधिनियम 1908 (1908 का 16) के अधीन तारीख अप्रैल 1982।

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के जिलत बाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए प्रस्तरित को गई है पोर मुझे यह विश्वास करने का कारण है कि यवापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से, ऐसे दृश्यमान प्रतिफल का पन्त्रक्ष प्रतिशत प्रधिक है और प्रस्तरक (अन्तरकों) और अन्तरित्ती (धन्तरितियों) के बीच ऐसे अन्तरक के लिए ठय पाया गया प्रतिकल, निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण जिखत में वास्तविक कप से कथित नहीं किया गया है।—

- (क) धन्तरण से हुई किनी भाग की बाबत उपत अधिनियम के सभीन कर देवें के भन्तरक के दासित्व में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के सिए; और/
- (ख) ऐसी किसी प्राय या किसी घन या घन्य आर्थितयों की जिन्हें भारतीय आयकर प्रधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उन्त प्रधिनियम, या घन-कर ग्रिधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनाथं अन्तरिती द्वारा शकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा के लिए;

ग्रतः अव, उक्त अधिनियम की धारा 269-म के अनुसरण में, में, उक्त प्रजितियम की धारा 269-च की उपजारा (1) के भ्रामीन, निम्नलिखित व्यक्तियों, अर्थात्।---- (1) श्री कश्मीर सिंह पुत्र मन्ना सिंह वासी गांव दहोगरी नहसील जालन्धर

(अन्तरक)

(2) श्री गुरतेग सिंह पुत्र भोगा सिंह गारडीयन तजिन्द्र पाल सिंह वासी 81 गारडन कालोनी माडल टाऊन

(अन्तरिती)

(3) जैसा कि ऊपर नं० 2 में लिखा है। (वह व्यक्ति जिसके अधिभोग में सम्पति है)

(4) जो व्यक्ति सम्पति में रुचि रखता है। (वह व्यक्ति, जिसके बारे में अधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पति में हितकह है)

को यह सूचना जारी कर के पूर्वीक्स संपत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हुं।

उन्त सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी बाक्षेप :---

- (क) इस सुबना के राजपत में प्रकासन की तारीख से 45 दिन की भवति था तस्सम्बन्धी स्थितियों पर सूचमा की तामील से 30 दिन की धविष, को भी भविष बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी स्थिक्त द्वारा,
- (ख) इस सूजना के राजपत में प्रकाशन भी तारीच से 45 दिन के भीतर उक्त स्वावर सम्पत्ति में हित-बद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा, ग्रधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकेंगे।

स्पष्टोकरण:---इसमे प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जी उनत अधिनियम के अध्याय 20-क में परिचाणित हैं, बही अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनुसूची

सम्पति तथा व्यक्ति जैसा कि विलेख नं० 112 दिनांक अप्रैल, 1982 को रजिस्ट्री कर्त्ता अधिकारी जालन्घर में लिखा गया है।

> (जे० एल० गिरधर) सक्षम ग्रधिकारी ग्रर्जन रेंज-2, नई दिल्ली सहायक ग्रायकर ग्रायुक्त (निरीक्षण)

तारीख: 10-12-82

प्ररूप आर्ह टी.एन एम - - ----

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-घ (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

धार्यालय, महायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) अर्जन रोज, जालन्थर

जालन्धर, दिनाक 10 दिसम्बर1982

निर्देस म० ए० पी० न० 3671—यन मुझे जे० एल० गिरधर,

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चाह् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-ल के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- रु. से अधिक है

और जिसकी म० जैमा कि अनुसूची में लिखा है। तथा जो वहोगरी में स्थित है (और इसमें उपाबद्ध में अनुसूची में और पूर्ण रूप में वर्णित है), रिजस्ट्रीकर्त्ता अधिकारी के कार्यालय जालन्धर में रिजस्ट्रीकरण अधिनियम 1908 (1908 का 16) के अधीन तारीख अप्रैल 1982।

को पूर्वोक्स सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के दश्यमान प्रतिफल के लिए अंतरिती की गई है और मुक्ते यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उाचित बाजार मूल्य, उसके दश्यमान प्रतिफल से, एसे दश्यमान प्रतिफल का पन्त्रह प्रतिशत से अधिक है और अंतरक (अंतरकों) और अंतरिती (अंतरितियों) के बीच एसे अंतरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अंतरण लिखित मे बास्तिक रूप से किथत नहीं किया गया है ----

- '(क) अंतरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अंतरक के दायित्व में कभी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए; और/या
- (ख) एसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को, जिन्हीं भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अंतरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सविधा के लिए;

अतः अब, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण मों, मों, उक्त अधिनियम की धारा 269-ध की उपधारा (1) को अधीन, निम्नलिखित व्यक्तियों, अर्थात् —— (1) श्री प्रेम सिंह पृष मन्ना सिंह बासी गांन दहोगरी तहसीय जालन्धर ।

(अन्तरक)

(2) श्री गुरतेग सिह पुत्र भोला सिह गारंडीयन ओकर सिह नासी 81 गार्डन कलोनी, माइल टाऊन, जालन्धर।

(अन्तरिती)

- (3) जैसा कि ऊपरं नं० 2 में लिखा है। (वह व्यक्ति, जिसके अधिभोग में सम्पति है)
- (4) जो व्यक्ति सम्पित मे रुचि रखता है। (वह व्यक्ति, जिनके बारे मे अद्योहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पित मे हितबद्ध है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वेक्ति सम्पत्ति के बर्जन के लिए कार्यवाहियां शुरू करता हुं।

उक्त सम्पत्ति के अर्थन के संबंध में कोई भी बाक्षेप :--

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारी से 45 दिन की अविध या तत्संबंधी व्यक्तियाँ पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविध जो भी अविध बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियाँ में से किसी व्यक्ति व्वारा;
- (ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारी ख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितब व्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा, अधोहस्ताक्षरी के पास निवित में किये जा सकेंगे।

स्पष्टीकरण: — इसमे प्रयुक्त शब्दों और पर्यो का, जो उक्त अधिनियम के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में विया गया है।

मनुसूची

सम्पति तथा व्यक्ति जैसा कि विलेख न० 113 दिनांक अप्रैल, 1982 को रजिस्ट्री कर्ला अधिकारी जालन्धर में लिखा गया है।

> जे० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) अर्जन रेज जालन्धर

तारोख 10-12-82 मोहर शाक्य आई.टी.एन एस. ------

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-घ (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक श्रायकर श्रायुक्त (निरीक्षण)

अर्जन रेंज, जालन्धर जालन्धर, दिनांक 10 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० ए० पी० नं० 3672—यतः मुझे जे० एल० गिरधर,

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके परुषात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर संपति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- रा. से अधिक है

और जिसकी सं० जैसा कि अनूसूची में लिखा है तथा जो धहोगरी में स्थित है (और इससे उपाबद्ध में अनूसूची में और पूर्ण रूप में वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्त्ता अधिकारी के कार्यालय जालन्धर में रजिस्ट्रीकरण अधिनियम 1908 (1908 का 16) के अधीन तारीख अप्रैल 1982।

को पूर्वोक्त संपत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के इश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुक्ते यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त संपत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दश्यमान प्रतिफल से, एसे दश्यमान प्रतिफल के पन्त्रह प्रतिशत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितियों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्निलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखित मे वास्तविक रूप से कथित नहीं किया गयः है :--

- (क) अन्तरण से हुई िकसी आय को बाबत, अक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्व मे कमी करने या उससे बचने में सूबिधा के लिए; और/
- (स) एमी किसी आय या किसी धन अन्य आस्तियों को जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, ष्टिपाने में स्विधा के लिए।

(1) श्री प्रेम सिंह पुत्र मन्ना सिंह वासी गाँव दहोगरी तहसील जालन्धर।

(अन्तरक)

(2) श्री गुरतेग सिंह पुत्र भोगसिंह गारडीयन ओंकर सिंह वासी 81 गारडन कलोनी, मांडल टाऊन, जालन्धर।

(अतरिती)

(3) जैसा कि ऊपर नं० 2 में लिखा है। (वह व्यक्ति जिसके अधिभोग में सम्पति है)

(4) जो व्यक्ति सम्पति में रुचि रखता है। (वह व्यक्ति जिसके बारें में अधीहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पति में हितबद्ध है)

को <mark>यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त संपत्ति के अर्जन के लिए</mark> कार्यवाहियां करता ह**ूं**।

उक्त संपरित के अर्जन के संबंध में कोई आक्षोप :--

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अविधि या तत्संबंधी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वीक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (ध) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावाा संपत्ति में हितबद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिसित में किए जा सकरेंगे।

स्पब्दीकरण:--इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त बिधिनयम, के अध्याय 20-क में परिभाषित है, वही अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनुसूची

सम्पति तथा व्यक्ति जैसा कि विलेख नं० 154 विनांक अप्रैल 1982 को रजिस्ट्री कर्त्ता अधिकारी जालन्धर में लिखा गया है।

> जे० एल० गिरधर सक्षम ग्रिधिकारी स**हायक ग्रायक**र श्रायुक्त (^{दि}नरीक्षण) ग्रर्जन रेज, जालन्धर

तारीख: 10-12-82

प्ररूप आर्फ्. टी. एन. एस. ----

जायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-च (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आस्कर आयुक्त (निरक्षिण) अर्जन रेज, जन्नन्धर

जालन्धर, दिनांक 10 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० ए० पी० नं० 3673—यतः मुझे जे० एल० गिरधर

आय-कर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पहचात् 'ज़क्त अधिनियम' कहा गया ही), की धारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/-रा. से अधिक है

और जिसकी सं जैसा कि अनुसूची में लिखा है तथा जो वहोगरी में स्थित है (और इससे उपाबद अनुसूची में और पूर्ण रूप में वर्णित है), रिजस्ट्रीकर्सा अधिकारी के कार्यालय जालन्धर में रिजस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन तारीख अप्रैल 1982।

को पूर्वोक्त संपत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के इस्यमान प्रतिफल के लिए अंतरित की गई है और मूक्ते यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त संपत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके इस्यमान प्रतिफल से, ऐसे इस्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरित्यों) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्यों से उक्त अन्तरण निवित्त के बास्तरित कर सम्तरित कर समिति कर सम्तरित कर सम्तरित कर सम्मानित कर सम्तरित कर सम्मानित कर सम्मानित कर समिति कर समानित कर सम्मानित कर समानित कर स

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए; और/या
- (क) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को जिन्हें भारतीय आय-कर अधिनयम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती ब्वारा प्रकट नही किया गया धा या किया जाना चाहिए था, छिपाने में स्विधा के सिए।

जतः अब उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण मी, भी, उक्त अधिनियम की धारा 200-च की उपधारा (1) के श्रधीन, निस्नलिखित व्यक्तियों, अर्थातु:--- (1) श्री प्रेम सिंह पुत्र मन्ना सिंह वासी गांव दहोगरी तहसील जालन्धर ।

(अन्तरक)

(2) श्री गुरतेग सिंह पुत्र भोगा सिंह वासी 81 गारडन कलोनी माडल टाऊन जालन्धर।

(अन्तरिती)

(3) जैसा कि ऊपर मं० 2 में लिखा है। (वह व्यक्ति जिसके अधिभोग में सम्पति है)

(4) जो व्यक्ति सम्पति में रुचि रखताहै। (वह व्यक्ति जिसके बारे मे अधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पति में हितबद्ध है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन् के लिए कार्यवाहियां करता हुं।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन् के सम्बन्ध में कोई भी अक्षेप :---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी स्मक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वीक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति व्वारा;
- (ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकों ने।

स्थष्टीकरण:---इसमें प्रयुक्त शब्दों और पर्दों का, जो उक्त अधिनिय के के अध्याय 20-क में परिभाषित ही, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनुसूची

सम्पति तथा व्यक्ति जैसा कि विलेख नं० 155 दिनांक अप्रैल, 1982 को रजिस्ट्रीकर्ता अधिकारी जालन्धर में लिखा गया है।

> जे० एल० गिरधर सक्षम ग्रधिकारी सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) अर्जंन रेंज, जालन्धर

तारीख: 10-12-82

प्ररूप बाई.टी.एन.एस.-----

भायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-च (1) के अधीन सुचना

भारत सरकार

कार्यात्तम, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) अर्जन रेंज, जालन्धर

जालन्धर, दिनांक 10 विसम्बर 1982

निर्वेश सं० ए० पी० नं० 3674—यत: मुझे, जे० एक्ष शिरधर, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पहचात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-स के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्मत्ति, जिसका उचित बाजार मृल्य 25,000/- रु. से अधिक है

भ्रीर जिसकी सं० जैसा कि अनस्वां में लिखा है तथा जो प्रहोगरी में स्थित है (और इससे उपाबद्ध अनुसूची में और पूर्ण रूप से वर्णित है), र्राजस्ट्रीकर्त्ता अधिकारी के कार्यालय जालन्धर में रिजस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन तारीख अप्रैल 1982

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से काम के इश्यमान प्रतिफल के लिए अंतरिती की गई है और मुक्ते यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से, एसे दृश्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अंतरक (अंतरकों) और अंतरिती (अंतरितियों) के बीच एसे अंतरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल निम्नलिखत उद्देश्य से उक्त अंतरण लिखित में बास्तिक रूप से कथित नहीं किया गया है:—

- (क) अंतरण से हुई किसी आय की वाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अंतरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए; और/या
- (क) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य अस्तियों को, जिन्हों भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) को प्रयोजनार्थ अंतरिती ब्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा को लिए;

जतः अस, उक्त अधिनियम की भारा 269-ए के अनुस्रहण में, में, उक्त अधिनियम की भारा 269-ए की उपभारा (4) के सभीन, निम्निलिखित स्थितियों, अधीन :---

(1) श्री प्रेम सिंह पुत्र मन्ना सिंह वासी गांव दहोगरी तहसील जालन्धर।

(अन्तर्क)

(2) श्री गुरतेम् सिंह पुत्र भोगा सिंह वासी 81-गारजन क्लोनी, माडल टाऊन, जालन्धर।

(अन्तरिती)

(3) जैसा कि ऊपर नं० 2 में लिखा है। (वह व्यक्ति जिसके अधिभोग में सम्पति है)

(4) जो व्यक्ति सम्पत्ति में रुचि रखता है। (वह क्यक्ति जिसके बारे में अधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पत्ति में द्वितवद्ध है)

को ग्रह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सस्प्रित के अर्थक के लिए कार्यवाहियों करता हूं।

उक्त सम्पत्ति के अर्थन के संबंध में कोई भी आक्षोप :--

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की ब्राइमेश से 45 दिन की अविधि या तत्संबंधी व्यक्तियों पर सूचना की तामिल से 30 दिन की अविधि, जो भी व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति ब्वारा;
- (ख) इस सूचना के राजपृत्र में प्रकाशन की हारी मूझ हो 45. 'दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हित्बद्ध किसी जन्य व्यक्ति ब्वारा, अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किये जा सकेंगे।

स्पच्छीकरण :--इसमें प्रयुक्त शब्दों और पर्दों का, जो जक्कत अधिनियम के अध्याय 20-क में परिशाधिक ही, वही अधि होगा जो उस अध्याय में द्विया गया ही।

मन्त्र्यी

सम्पति तथा व्यक्ति जैसा कि विलेख नं० 257 दिनांक अप्रैल 1982 को रजिस्ट्रीकर्ता अधिकारी जालन्धर में लिखा गमा है।

> जे० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी सहायक ग्रायकर ग्रायुक्त (निरीक्षण) अर्जन रजे, सुपियाना

तारीख 10-12-82 मोहर: प्ररूप भाई० टी० एन० एस●---

भायकर प्रधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269- म (1) के प्रधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयक र आयुक्त (निरीक्षण) अर्जन रेंज जालन्धर जालन्धर, दिनांक 10 दिसम्बर 1982

निर्वेश सं० ए० पी० नं० 3675—यतः मुझे, जे० एल० गिरधर,

मायकर अभिनियम, 1961 (1961 का 43) (असे इसमें इसके प्रश्नात् 'खन्त अधिनियम' कहा गया है), की घारा 26% ख के अधीन सभाम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिनका उचित बाजार मूल्य 25,000/- क॰ से अधिक है

और जिसकी सं० जैसा कि अनूसूची में लिखा है तथा जो दहोगरी में स्थित है (और इससे उपाबद्ध अनूसूची में और पूर्ण रूप से विणत है), रिजस्ट्रीकर्सा अधिकारी के कार्यालय जालन्धर में रिजस्ट्रीकरण अधिनियम 1908 (1908 का 16) के अधीन तारीख अप्रैल 1982.

को पूर्शक्त समान के जीवन बाजार मूस्य में कम के पृष्यमान प्रतिकल के लिए बन्दरित को गई है मीर मुझे यह विश्वास करने का कारण है कि सथापूर्वक्त सम्पत्ति का उधित बाजार मून्य, उसके दृश्यमान प्रतिष्ठन से ऐसे दृश्यमान प्रतिष्ठल का पश्चह प्रतिशत स्रविक है और मन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (प्रस्तरिनियों) के बीच ऐसे धरारण के लिए सम पाया गया प्रतिष्ठण निम्नलिखित छहें पर स उधा अन्तरण निधिन में बास्तविक बा से काथित नहीं किया गमा है :--

- (क) अन्तरण संतुर्द किसा आय का बाबत, उक्त बाधिनियम के अधीन कर वेने के अन्तरक क वायित्व में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए; और/या
- (६) एसी किया आर या किसी धन या अन्य आस्तियों की, जिम्हें भारतीय प्रायकर श्रीवित्यम, 1922 (1922 का 11) या उत्तर श्रीवित्यम, या धन-कर मिश्रिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया यया था या किया जाना चाहिए वा, छिपान में सुविधा के सिए;

श्रतः अतः, उस्तं श्रधिनियमं की भारा 269-गं के भनुसरण में, में, उक्तं अधिनियमं की घारा 269-घं की उपधारा (1) के संधीन, निक्निधियात स्थितियों भर्षात् :—

- (1) श्री प्रेम सिंह पुत्र मन्ना सिंह वासी गांव बहोगरी तहसील जालन्धर।
 - (अन्तरक)
- (2) श्री गुरतेग सिंह पुत्र भोगा सिंह वासी 81- गारडन क्लोनी माडल टाउन, जालन्धर।

(अन्तरिती)

- (3) जसा कि ऊपर नं० 2 में लिखा है। (वह व्यक्ति जिसके अधिभोग में सम्पति है)
- (4) जो व्यक्ति सम्पति में रुचि रखता हो (वह व्यक्ति जिस के बारे में अधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पति में हितबद्ध है)

को यह भूचना जारी करक पूर्वीका अस्पति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता है।

अन्त सम्पत्ति के अर्जन के संबंध में कोई भी आक्षेप :---

- (क) इस मूचना के राजाज में प्रकाशन का नारीख सं 45 दिन की अवधि या नत्सम्बन्धी क्यक्तियों पर सूचना की तामीन से 30 दिन की सर्वात्र, जो भी सर्वात्र बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वीत क्यक्तियों में से किसी क्यक्ति बारा;
- (ख) इस सूबना के रानपत्र में प्रकाशन का तारोप्त से 45 दिन के भोतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबद किसी प्रम्य व्यक्ति द्वारा, प्रश्लोहरूताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकेंगे।

स्वस्टोकरण --इसनें प्रयुक्त गन्दों भीर पदों का, जो जनन अधिनियम के अध्याय 20-क में परिभाषित है,वही धर्ष होगा, को उस खाउँयाय में दिया गया है।

अनुसूची

सम्पति तथा व्यक्ति जैसा कि विलेख नं० 258 दिनांक अप्रैल 1982 को रजिस्ट्रीकर्त्ता अधिकारी जालन्धर में लिखा गया है।

> जे० एल० गिर**धर** सक्षम प्राधिकारी सहायक भायकर ग्रायुक्त (निरीक्षण) अर्जन रेंज, जालन्धर

तारीख: 10-12-82

प्ररूप आई. टी. एन. एस. -----

आयंकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-घ (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) अर्जन रेंज, जालन्धर जालन्धर, दिनांक 10 दिसम्बर 1982

निर्देस सं० ए० पी० नं० 3676--यतः मुझे जे० एल० गिरधर,

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की भारा 269-स के अधीन सक्षम प्राधिकारी को, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/-रु. से अधिक है

भोर जिसकी सं 0 जैसाकि अनुसूचि में लिखा है तथा जो दहोगरी में हिथत है (और इससे उपाबद्ध में अनूसूची में और पूर्ण रूप में वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्सा अधिकारी के कार्यालय जालन्धर में रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन तारीख अप्रैल 1982।

को पूर्वोक्त सम्पति के उधित बाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और म्भे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उधित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से ऐसे दृश्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत अधिक है और अन्तरक (अन्तरको) और अन्तरिती (अन्तरितियो) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखित में वास्तीवक रूप से किथत नहीं किया गया:——

- (का) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के वायित्य में कमी करने या उससे बचने में सृविधा के लिए; और/या
- (स) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्यं आस्तियों कों, जिन्हें भारतीय आय-कर अधिनियम, 1922 (1922 को 11) या उक्त अधिनियम, या धनकर अधिनियम, या धनकर अधिनियम, 1957 (1957 को 27) के प्रयोज-नार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था छिपाने में सूविधा के लिए;

(1) श्री प्रेम सिंह पुत्र मन्ना सिंह वासी गांव वहोगरी तहसील जालन्धर।

(अन्सरक)

(2) श्री गुरतेग सिंह लिगल गारडीयन गुरनाम सिंह ओंकार सिंह सुपुत्र गुरनेग सिंह वासी 81 गारडन क्लोनी माडल टाऊन, जालन्धर।

(अन्तरिती)

(3) जैसा कि ऊपर नं० 2 में लिखा है। (वह व्यक्ति जिसके अधिभोग में सम्पति है)

(4) जो व्यक्ति सम्पति में रुचि रखता है।
(वह व्यक्ति जिसके बारें में अधोस्स्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पति में हितवद्ध है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हूं।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन के संबंध में कोई भी आक्षेप :--

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वीक्स व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (स) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन के भीतर उक्त स्थापर सम्पत्ति में हितसद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्यारा अधोहस्ताक्षरों के पास लिसित में किए जा सकेंगे।

ह्पव्योकरण:—-इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जा उक्त अधिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित ही, वहीं अर्थ होगा, जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनुसुची

सम्पति तथा व्यक्ति जैसा कि वि<mark>लेख नं० 561 दिनांक अप्रैल,</mark> 1982 को रजिस्ट्रीकर्त्ता अधिकारी जालन्धर में लिखा गया है।

> जे. एल. गिरधर सक्षम प्राधिकारी सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) अर्जन रेंज, जालन्धर

अतः अत्र, उक्त अधिनियम की धारा 269-म की अन्सरण मे, मैं, उक्त अधिनियम की धारा 269-च की उपधारा (1) के अधीन, निम्नलिखित व्यक्तियों, अर्थात् :---

तारीच : 10-12-82

मोहर

प्रस्पु भार्दे,टी.एन्.एस्.-----

नामकर अभिनियम, 1961 (1961 का 43) की भारा 269-म (1) के अभीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) अर्जम रेंज, जालन्धर जालन्धर, दिनांक 10 विसम्बर 1982

निर्धेश सं० ए० पी० तं० 3677—यतः मुसे, जे० एल० गिरधर,

जायकर अधिनियम्, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम्' कहा गया हैं), की भारा 269-च के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह जिस्तास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाबार मूक्व 25,000/-रु. से बिधिक हैं

और जिसकी सं० जैसा कि अनुसूची में लिखा है तथा जो माडल टाऊन जालन्धर में स्थित है (और इससे उपाबद्ध में अनुसूची में और पूर्ण रूप में वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्ता अधिकारी के कार्यालय जालन्धर में रजिस्ट्रीकरण अधिनयम 1908 (1908 का 16) के अधीन तारीख अप्रैल 1982

को पूर्वों कत सम्पत्ति को उणित बाजार मृत्य से कम के स्रयमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गृष्टें हैं और मृभ्ने यह विश्वास करने का कारण हैं कि यथापूर्वों कर संपत्ति का उणित बाजार मृत्य, उसके स्रयमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत से अधिक हैं और अंतरक (अंतरकों) और अंतरिती (अन्तरितियों) के बीच एसे अन्तरण के निए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखित में बास्तविक क्य से कथित नहीं किया गया हैं:—

- (क) अन्तरण से हुई किसी भागकी नावत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्व में कभी करने या उससे दक्ते में सुविधा के सिए; और/वा
- (व) एंसी किसी आय या किसी भन या जन्य आस्तियों को, जिन्हों भारतीय आय-कर अभिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अभिनियम, या भन-कर अभिनियम, या भन-कर अभिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ जन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया भा या किया जाना चाहिए था, क्रियाने में सुविधा के सिए;

अतः अव, उक्त अधिनियम की भारा 269-ग के अनुस्तान में, में, उक्त अधिनियम की भारा 269-ग की उपभारा (1) के मुभीन निमन्तिविद व्यक्तियों, जुनित है—

(1) श्री मनमोहन सिंह रामा पुत्र गुलाब सिंह वासी 568, माडल टाऊन, जालन्घर।

(अन्तरक)

(2) श्री सोहन सिंह और मोहन सिंह सपुत्र केवल सिंह वासी 404- आर॰ माण्डल टाऊन जालन्धर।

(अन्सरिती)

(3) जैसा कि ऊपर नं० 2 में लिखा है। (बहु व्यक्ति जिसके अभिभोग में सम्पति है)

(4) जो॰ व्यक्ति सम्पति में रुचि रखता है। (वह व्यक्ति जिनके बारे में अधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पति में हितबद्ध है)

को यह सुचना भारी करके पूर्वोक्त संपत्ति के वर्जन के लिए कार्यवाहियां शुरू करता हुं।

उनत् संपरित के वर्णन के संबंध में कोई भी बाक्षेप :--

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारील से 45 दिन की अवधि या तत्संबंधी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अवधि, जो भी अवधि बाद में समाप्त होती हो, के भीदार पूर्वोक्स व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति ब्वारा;
- (क) इस सृघ्ना के राजपत्र में प्रकाशन की तारी के सै 45 दिन के भीतर उक्त स्थातर संपत्ति में हितबद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के फास सिवित में किए जा सकोंगे।

स्यव्यक्तिस्यः — इसमें प्रयुक्त क्ष्यों और पद्यांका, को उक्द्र किष्नियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित है, वहीं कुर्यहोगा को उस कुध्याय में दिया यस है।

मनुसुची

सम्पत्ति दया व्यक्ति जैसा कि विशेख नं ० 546 दिनांक अप्रैल 1982 को रजिस्ट्रीकर्त्ता अधिकारी जालन्धर में लिखा गया है।

> जे० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी सहायक ग्रायकर ग्रायुक्त (निरीक्षण) अर्जन रेंज, जालन्धर

तारीख: 10-12-82

प्रकथ भाई। टी॰ एन॰ एस॰---

मायकर मिथिनियम, 1961 (1961 का 43) की भारा 269-घ (1) के अभीन सूचना

बारत परकार

कार्यालय सहायक आयकर आयक्त (निरोक्षण)

अर्जन रेंज, जालन्धर

जालन्धर, दिनांक 10 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० ए० पी० नं० 3678— यतः मुझे, जे० एल० गिरधर.

कायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269- क के अधीन सक्षम प्राधिकारी को, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर संपरित जिसका उचित वाजार मृल्य 25,000/- रू. से अधिक है

और जिसकी सं० जैसा कि अनूसूची में लिखा है तथा जो पंजपीर जालन्धर में स्थित है (और इससे उपाबद्ध में अनू-सूची में और पूर्ण रूप से विणित है) रजिस्ट्रीकर्ता अधिकारी के कार्यालय जालन्धर में रजिस्ट्रीकरण अधिनियम 1908 (1908 का 16) के अधीन तारीख अप्रैल 1982

को प्वेंक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मृत्य से कम के द्रियमान प्रसिक्तल के लिए अन्तरित की गई है और मुभे यह विद्यास करने का कारण है कि यथाप्योंक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मृत्य, उसके दश्यमान प्रतिफल से, एसे दश्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितियों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रति-कल निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखित में बास्तविक कम से किथित नहीं किया गया है: --

- (क) प्रन्तरण से हुई किसी भाग की बाबत, उक्त प्रधिनियम के प्रधीन कर देने के भन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए; और√या
- (च) ऐसी कि रा भ्राय या किसी धन या भ्रम्य आस्तियों की, जिम्हें भारतीय आयंकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्ण अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, खिपाने में सुविधा के लिए।

मत: प्रत, उक्त श्रिष्टिनयम की धारा 269-च के अनुसरक में, में, उक्त अधिनियम की धारा 269-च की उपधारा (1) के अधीन, निम्निसिश्चत व्यक्तियों, अर्थात् :--- (1) श्री हरभजन सिंह पुत्र मीहिन्द्र सिंह द्वारा श्री मोहिन्द्र सिंह पुत्र जगार सिंह वासी 31 चेलवे रोड ईस्ट स्टोफ नेरक शाईर इंगलैंड।

(अस्तरक)

- (2) श्री हरिन्द्रजीत कौर पत्नी सुखवंत सिंह कैमिकल्स बाक्षा होस्पिटल पंजपीर, जालन्धर
 - (3) जैसा कि ऊपर नं० 2 में लिखा है। (वह व्यक्ति जिसके अधिभोग में सम्पति है)
 - (4) जो व्यक्ति सम्पति में रुचि रखता हो (वह व्यक्ति जिसके बारे में अक्षोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पपि में हितबद्ध है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पस्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हुं।

डक्स सम्पत्ति को अर्जन को सम्बन्ध में कोई भी नाक्षेप:---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविध, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर प्रविक्त व्यक्तियों में से जिसी व्यक्ति व्यक्ति
- (ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 विन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हिंत- बद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधीहस्ताक्षरी के पास जिवित में किए वा सकोंगे।

स्पष्टीकरण: --- इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदी का, जो उक्त अधिनियम के अध्याय 20-क में परिभाधित है, वही अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनुसूची

सम्पति 1/4 सिस बी-बी-1140 जो पंजपीर जालन्धर में स्थित हैं। जैसा कि त्रिलेख नं० 663 विनांक अत्रैल 1982 को रिजस्ट्री-कर्त्ता अधिकारी जालन्धर में सिखा गया है।

> जै० एस० गिरधर सक्षम प्राधिकारी सहायक श्रायकर भ्रायुक्त निरीक्षण भर्जन रेंज, जालन्बर

सारीख: 10-12-82

मीहरं:

प्ररूप आही. दी. एन. एस.-----

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-घ (1) के अधीन स्चना

भारत सरकार

कार्यालयः, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) ग्रर्जन रेंज, जालन्धर जालन्धर, विनांक 10 दिसम्बर 1982

निर्देश नं ए० पी० नं 3679—यतः मुझे, जे० एल० गिरधर.

बायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके परभात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-स के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बांजार मूल्य 25,000/- रु. से अधिक है

श्रौर जिसकी सं० जैसा कि श्रनुसूची में तथा जो पंजपीर जालन्धर में स्थित है (श्रौर इससे उपाबद्ध में श्रनुसूची में श्रौर पृणं रूप से वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्त्ता श्रधिकारी के कार्यालय जालन्धर में रजिस्ट्रीकरण श्रधिनियम 1908 (1908 का 16) के श्रधीन मई 1982

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मृल्य से कम के ध्रयमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मूझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मृल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल को एसे दृश्यमान प्रतिफल का पद्रह प्रतिकात से अधिक है और अंतरक (अंतरकों) और अंतरिती (अंतरितियों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्यों से उक्त अन्तरण लिखित में बास्तविक रूप से किथत नहीं किया गया है:---

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे अचने में सूविधा के लिए; और/या
- (ख) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों की जिन्हों भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन- कर अधिनियम, या धन- कर अधिनियम, या धन- कर अधिनियम, 1957 (1957 को 27) के प्रवोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चा हिए था, छिपाने में स्विथा के लिए।

अतः अब, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण मो, मी, उक्त अधिनियम की धारा 269-म की उपधारा (1) को अधीन, निम्नसिखित व्यक्तियों, अर्थात् :--- (1) श्री जगजीत सिंह पुत्र मोहिन्द्र सिंह द्वासा श्री मोहिन्द्र सिंह पुत्र जगार सिंह बासी 31 बेलबे रोड हिन्दे स्टोफबेकर गाईर इगलैंड।

(भ्रन्तरक)

(2) डा० गुरबन्त सिंह पुन्न द्वा० हरभजन सिंह कैमि-कल्म वाला होस्पिटल पंजपीर जालन्धर।

(भन्ति रती)

(3) जैसा कि ऊपर नं० 2 में लिखा है। (बह व्यक्ति जिसके म्निधिभोग में सम्पति है)

(4) जो व्यक्ति सम्पित में हांच रखता है। (वह व्यक्ति, जिसके बारे में श्रधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पित जें हितबक्क है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हुं।

उक्स सम्परित के वर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप :---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अविध या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविध , को भी अविध बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पित्स में हितबद्ध किसी जन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सर्वोगे।

स्थव्यक्तिरणः — इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदौं का, जो उक्त अधिनियम के अध्याय 20 क में परिभाषित हैं, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

वन्सूची

1/4 सम्पत्ति जो B-V 1140 पंजपीर जालन्धर में स्थित है जैसा कि विलेख नं० 704 दिनांक मई, 1982 को रजिस्टीकर्ता ग्रिधिकारी जालन्धर में लिखा गया है।

> जै० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी सहायक प्रायकर श्रायुक्त (निरीक्षण) भर्जन रेंज, जालन्धर

तारी**ख** 10-12-82 मोहर: प्रारूप आई.टो.एन.एस.------

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-ष (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय , सहायक आयकर आयुक्त (निरक्षिण) श्रर्जन रेंज जालन्धर

जालन्धर, दिनांक 10 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० ए० पी० नं० 3680---यन: मुझे, जे० एस० गिरधर,

बायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके परवात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269- के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर संपति, जिसका उचित वाजार मूल्य 25,000/- रु. से अधिक हैं

श्रौर जिसकी सं० जैसा कि श्रनुसूची में लिखा है तथा जो जालन्धर में स्थित है (श्रौर इससे उपाबद्ध ग्रनसूची में श्रौर पूर्ण रूप से वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्त्ता अधिकारी के कार्यालय जालन्धर में रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के श्रधीन तारीख मई 1982

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मूम्से यह विद्यास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से, एसे दृश्यमान प्रतिफल के पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितियों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखित में बास्तविक रूप से कथित नहीं किया गया है:——

- (क) अन्तरण से हुई किसी आप की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के वायित्व में कमी करने या उससे अधने में सूबिधा के लिए; और/या
- (स) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को जिन्हों भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, खिपाने में सूविधा के लिए।

अतः अव, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के, अनुसरण में, मैं, उक्त अधिनियम की धारा 269-घ की उपधारा(1) के अधीन, निम्नलिखित व्यक्तियों, अर्थात् :--5---416 GI/82

(1) मोहन सिंह पुत्र मोहिन्द्र सिंह द्वारा श्रो मोहिन्द्र सिंह पुत्र जगार सिंह वासी 31 चेलवे रोड ईस्ट स्टाफ बेकर शार्चर इंगलैंड।

(ग्रन्तरक)

(2) श्री मुरवक्त सिंह पुत्र डा॰हरभजन सिंह कैमि ल्स बाबा होस्पिटल पंजपीर जालन्धर ।

(ग्रन्तरिती)

- (3) जैसा कि ऊपर नं० 2 में लिखा है। (वह व्यक्ति, जिसके ऋधिभोग में सम्पति हैं
- (4) जो व्यक्ति सम्पति में रुचि रखता है। (वह व्यक्ति जिसके बारे में प्रधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पति में हितबद्ध है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वीक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हूं।

उक्त संपति के अर्जन के संबंध मे कोई भी आक्षेप :---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारी का से 45 दिन की अविधिया तत्सं वंधी व्यक्तियाँ पर सूचना की तामिल से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन के भौतर उक्त स्थावर संपत्ति में हितबस्थ किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकरेंगे।

स्पष्टीकरण:--इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याम में विमा गया है।

अनुसूची

1/4 सम्पति नं० BV 1140 जो पंजपीर जालन्धर में स्थित है जैसा कि विलेख नं०831 दिनांक मई 1982 को रजिस्ट्री-कर्त्ता ग्रिधिकारी जालन्धर में लिखा है।

> जे० एल० गिरधर सक्षम प्रधिकारी सहायक भ्रायकर भ्रायुक्त (निरीक्षण) श्रर्जन रेंज, जालन्घर

तारीख 10-12-82 मोहर : प्ररूप बाइं.टी.एन्.एस.------

मायकर मिधनियम, 1961 (1961 का 43) की भारा 269-च (1) के मधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण)

श्रर्जन रेंज जालन्धर

जालन्धर, दिनांक 10 दिसम्बर 1982

निर्देई सं० ए० पी० नं० 3681—यत: मुझे ओ० एस० गिरधर,

नायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269- इस ने अधीन सक्षम प्राधिकारी को, यह निश्नास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित शाजार मृत्य 25,000/-रा. से अधिक है

श्रौर जिसकी सं० जैसा कि श्रनुसूची में लिखा है तथा जो जालन्धर में स्थित है (श्रौर इससे उपाबद्ध में श्रनुसूची में श्रौर पूर्ण रूप में वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्ता श्रधिकारी के कार्यालय जालन्धर में रजिस्ट्रीकरण श्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के श्रधीन तारीख मई 1982

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उणित बाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की नई हैं और मुफे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति को उणित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से, एसे दृश्यमान प्रतिफल का पन्त्रह प्रतिकात से अधिक हैं और अंतरक (अंतरकों) और अंतरिती (अन्तरितियों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिकल किल निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण सिखित में बास्तविक रूप से कथित नहीं किया गया है:--

- (क) अन्तरण से हुई किसी नाय की वाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरण को दासित्य में कमी करने या उससे अवने में सुविधा के निए; और/या
- (ख) एसी किसी बाय या किसी धन या अन्य आस्तियों स्त्रो, जिन्हां भारतीय आय-कर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती ध्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना आहिए था, खिपाने में स्विभा के तिए;

जक्क: जब, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के जनसरण में, मैं, उक्त अधिनियम की धारा 269-व की उपधारा (1) के अधीन निम्नुलिखित व्यक्तियों, अधीत् ;—— (1) श्री सुरिन्द्रर सिंह पुत्र मोहिन्द्र सिंह द्वारा मोहिन्द्र सिंह पुत्र जगार सिंह वासी 31 चेलवे रोड ईस्ट स्टाफ बेरक गार्डर इंगलैंड !

(ग्रन्तरक)

(2) श्रमरजीत कौर पत्नी डा० गुरवन्त सिह कैमिकर्स बावा होटल, पंजपीर, जालन्धर ।

(भ्रन्सरिती)

(3) जैसा कि ऊपर नं० 8 में लिखा है। (वह व्यक्ति, जिसके प्रधिभोग में सम्पति है)

(4) जो व्यक्ति सम्पित में रुचि रखता है। (बह व्यक्ति जिनके बारे म ग्रधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पित में हितबद्ध है)

को यह सूचना चारी करके पूर्वोंक्त सम्पत्ति के अर्थन के लिए कार्यवाहियां करता हूं।

उक्त सम्पत्ति के कर्जन के सम्बन्ध में कोई भी काक्षेप :--

- (क) इस स्चना के राजपत्र में प्रकाशन की तारी से 45 दिन की अविध या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर स्चना की तामील से 30 दिन की अविध, जो भी अविध बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्व के व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति दवारा;
- (य) इस सूचना को राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन को भीतर उक्त स्थावर सम्परित में हितबक्ष किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकोंगे।

स्यक्टीकरणः--इसमें प्रयुक्त कक्टों और पदों का, अगे उक्त अधिनियम के अध्याय 20-क मे परिभाषित ही, वहीं अर्थहोगाओं उस अध्याय में दिया गया है।

अन्स्ची

व्यक्ति तथा सम्पति 1/4 नं 0 BV 1140 जो पंजपीर जालन्धर में स्थित नं 0 है जैसा कि विलेख नं 0 914 दिनांक मई, 1982 को रजिस्ट्रीकर्री श्रधिकारी जालन्धर में लिखा गया है।

जे० एस० गिरधर सक्षम प्राधिकारी सहायक श्रायकर श्रायुक्त (निरीक्षण) श्रजंन रेंज जालन्धर

तारीख: 10-12-82

मोहरः

भारत सरकार

कार्यालय, महायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) श्रर्जन रेंज जालन्धर

जालन्धर, दिनाक 10 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० ए० पी० नं० 3682--यतः मुझे, ज० एल० गिरधर,

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमे इसके परचात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को, यह विष्वास करने का कारण है कि स्थावर संपरित, जिसका उचित बाजार मृल्य 25,000/- रह. से अधिक है

श्रौर जिसकी सं० जैसा कि अनुसूची में लिखा है सथा जो मोगा मेहला शिंह में स्थित है (श्रौर इसमें उपाबद श्रनुसूची में श्रौर पर्णे रूप में वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्ता श्रधिकारी के कार्यालय मोगा में रजिस्ट्रीकरण श्रधिनियम, 1908 (1908 को 16) के श्रधीन तारीख श्रशैल 1982

को पूर्वीक्त संपरित के उचित बाजार मूल्य से कम के स्वयमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मूफे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वीक्त संपरित का उचित बाजार मूल्य, उसके द्वयमान प्रतिफल से एसे द्वयमान प्रतिफल के पन्द्रह प्रतिवात में अधिक है और अन्तरक (अन्तरका) और अन्तरिती (अन्तरिता) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्निलिखत उद्देश्य में उद्धा अन्तरण लिखित में वास्तविक रूप से कथित नहीं किया गया है .—

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उन्तर अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में सूविधा के लिए; और/या
- (स) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों की जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, खिपाने में सुविधा के लिए।

अत अब, उक्त अधिनियम भी धारा 269-ग के अनूसरण मं, मं, उक्त अधिनियम की धारा 269-व की उपधारा (1) के अधीन, निम्निलिखित व्यक्तियों, अर्थात् :---

- (1) श्री मुक्तयार सिंह पुत्र नन्थू सिंह वासी बीबी जी गुरुद्वारा वाली सड़क मोगा मेहला सिंह मोगा (ग्रन्तरक)
- (2) श्री श्रमर सिंह गुरचरण सिंह पुत्र हाकम सिंह वासी धुरकोट तहसील मोगा।

(भन्तरिती)

(3) जैसा उपरोक्त नं० 2 में लिखा है (वह व्यक्ति जिसके श्रिधभोग में सम्पिक्त

(4) जो व्यक्ति सम्पत्ति में धनि रखता है (वह व्यक्ति जिनके बारे में ग्रधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पत्ति में हितबद्ध है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हुं।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप :---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविध , जो भी अविध बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबव्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अशहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकोंगे।

स्पृष्ठीकरणः — इसमे प्रयुक्त शब्दों और पवों का, जो उक्त अधिनियम के अध्याय 20-क में परिभाषित हौं, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अन्स्ची

व्यक्ति तथा सम्पति जैसा कि विलेख नं० 245 दिनांक ग्राप्रैल 1982 को रिजस्ट्रीकर्ता श्रधिकारी मोगा ने लिखा है।

> जे० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी सहायक आयकर आयुक्त (निरक्षिण) मजैन रेंज, जालन्धर,

तारीख: 10-12-82

ALTERNATION AND THE REAL PROPERTY AND THE

प्रकथ बाइ. टी. एन्. एस.-----

भागकर भीभिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-घ (1) के अधीन स्चना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण)

अर्जन रेज, जालन्धर

जालन्धर, दिनांक 10 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० ए० पी० नं० ३६८३—यत. मुझे जे० एल० गिरधर,

शायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया हैं), की धारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को, यह विश्वास करने का कारण हैं कि स्थायर संपत्ति जिसका उचित बाजार मूस्य 25,000/- रह. में अधिक हैं

स्रौर जिसकी सं० जैसा कि श्रन्यूनी में लिखा है तथा जो मोगा मेहला सिंह में स्थित है (श्रीर इससे उपाबढ़ स्रनु-सूची में श्रौर पूर्ण रूप में वर्णित है), रिजस्ट्रीकर्त्ता श्रधिकारी के कार्यालय मोगा में रिजस्ट्रीकरण श्रधिनियम 1908 (1908 का 16) के श्रधीन तारीख श्रप्रैन 1982

को पूर्विकत सम्पत्ति के उचित बाजार मृत्य से कम के दश्यमान प्रतिफल को लिए अन्तरित की गई है और मृभ्ने यह निश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्मत्ति का उचित बाजार मृत्य, उसके दश्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अतारितियों) के बीच एस अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिन फल, निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखित में वास्त- विक क्षेप से किथित नहीं किया गया हैं:——

- (क) अन्तरण संहुई किली आय की बाबत उक्त अभि-नियम के वधीन कर दोने के बन्तरक के दामित्व कें कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिये; बीर/या
- (स) एंसी किसी बाय या किसी धन या अन्य आस्तियों को, जिन्हें भारतीय बायकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-एकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तिरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा के लिए;

अतः अतः, उक्त अधिनियमः, की धारा 269-ग के अनुसरण भौ, भौ, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग की उपधारा (1) के अधीन निम्नुलिखित व्यक्तियों, जुर्थात्:--- (1) श्री हरी सिह पुत्र कृष्ण सिह वासी मोहल्ला सोडिया मेहला सिह मोगा।

(अन्तरक)

(2) श्री मकन्द लाल पुत्र लाल चन्द ग्रदि वासी बस्ती श्रलीपुर, मोगा ।

(भ्रन्तरिती)

(3) जैसा नं० 2 में लिखा है

(वह व्यक्ति, जिसके ग्रधिभोग में सम्प है)

(4) जो व्यक्ति सम्पत्ति में रुचि रखता है। (बह् व्यक्ति जिनके बारे में स्रधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पति में हितबद्ध है

को यह सूचना पारी करके पूर्वोक्त संपत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहिया करता हु।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप:---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की बविध, जो भी अविधि नाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (क) इस त्वना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 विन के भीतर उक्त स्थावर संपित्त में हित-बद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा, अधोहस्ताक्षरी के शस लिक्ति में किए जा सकेगे।

स्वक्टीकरण: --- इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनुसूची

व्यक्ति तथा सम्पत्ति जैसा कि विलेख नं० 167 अप्रैल 1982 को रजिस्ट्रीकर्त्ता श्रधिकारी मोगा ने लिखा है।

> जे० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी स**हायक** आयकर आयुक्त (निरीक्षण) मर्जन रेंज, जालन्धर

नारीखा: 10-12-82

प्रारूप आई.टी.एन.एस. ------

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की भारा 269-घ (1) के अधीन सूचना भारत सरकार

कार्यालय, सहायक ग्रायकर भ्रायुक्त (निरीक्षण)

ग्रर्जन रेंज, जालन्धर जालन्धर, दिनांक 10 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० ए० पी० नं० 3684—यतः मुझे जे० एल० गिरधर,

शायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके परचात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया हैं), की धारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण हैं कि स्थावर संपति, जिसका उचित बाजार मृल्य 25,000/- रु. से अधिक हैं

धौर जिसकी सं० जैसा कि ध्रनुसूची में लिखा है तथा जो मोगा मेहला सिंह में स्थित है (श्रौर इससे उपाबद्ध में ध्रनु-सूची में श्रौर पूर्ण रूप में वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्ता ग्रिधिकारी के कार्यालय मोगा में रजिस्ट्रीकरण श्रिधिनियम, 1908 (1908 का 16) के श्रिधीन तारीख ध्रप्रैल 1982

को पूर्वोक्त संपरित के उचित बाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रितिफल के लिए अन्तरित की गई है और मूक्ते यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त संपरित का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से, एसे दृश्यमान प्रतिफल के पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितियों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्य से उयत अन्तरण लिखित में वास्तविक रूप से कथित नहीं किया गया है:---

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबस, उक्स अभिनियम के अभीन कर दोने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने मे सृविधा के लिए; अरि/या
- (स) ऐसी किसी आय या किसी धन अन्य अस्तियों को जिन्हें भारतीय आयक,र अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, गा धन-कर अधिनियम, गा धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा के लिए;

जतः अस, उक्त अधिनियम को धारा 269-ग के, अनुसरण भों, भीं, उक्त अधिनियम की धारा 269-च की उपधारा (1) के अधीन, निम्नलिखित स्यक्तियों, अधीत् :--- (1) श्री बजीर सिंह पुत्र गुरिदत सिंह वासी मोगा मोहला सिंह नजदीक जी० रोड बस्ती गोबिन्दगड़ मोगा।

(भन्तरक)

(2) निर्मल सिंह मचंजीत सिंह पृत्न सूच्चा सिंह ग्रौर केवल सिंह पृत्न श्रमरजीत सिंह वासी गांव लोहारा तहसील मोगा।

(मन्तरिती)

(3) जैसा उपरोक्त नं० 2 में लिखा है। (वह व्यक्ति जिसके श्रिधिभोग में सम्पत्ति है)

(4) जो व्यक्ति सम्पत्ति में रुचि रखता है। (वह व्यक्ति, जिनके बारें में ग्रधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पत्ति में हितबद्ध है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त संपत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हूं।

उक्त सम्परित के अर्जन के संबंध में कोई आक्षेप :---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन की अविधिया तत्संबंधी व्यक्तियां पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वीवत व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति व्यक्तियां;
- (क्ष) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की नारीस से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावाा संपरित में हितबद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास निस्ति में किए जा सकरें।

स्पष्टीकरण:--इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उनत अधिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित है, वही अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनुसूची

व्यक्ति तथा सम्पत्ति जैसा कि विलेख नं० 136 दिनांक अप्रैल 1982 को रजिस्ट्रीकर्त्ता श्रधिकारी मोगा ने लिखा है।

> जे० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी स**हायक ग्रा**यकर ग्रायुक्त (निरीक्षण) ग्रर्जन रेंज, जालन्धर

तारीख: 10-12-82

प्ररूप आई. टी. एन. एस. ----

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-व (1) के अधीन सूचना

भारत् सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) श्रर्जन रेंज जालन्धर

जालन्धर, दिनांक 10 दिसम्बर 1982

निर्देई सं० ए० पी० नं० 3685-- यतः मुझे जे० एल० गिरधर,

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है). की भारा 269-स के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विद्यास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/-रा. से अधिक है

ग्रौर जिसकी सं० जैंसा कि ग्रानुसूची में लिखा है तथा जो मोगा मेहला सिंह में स्थित है (ग्रौर इससे उपाबद में ग्रानु-सूची में पूर्ण रूप में वर्णित है) रजिस्ट्रीकर्ता ग्रधिकारी के कार्यालय मोगा में रजिस्ट्रीकरण ग्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के ग्रधीन तारीख ग्राप्रैल 1982

को पूर्वोक्त संपत्ति के उचित बाजार मृत्य से कम के रूपमान प्रतिफल के लिए अंतरित की गई है और म्भे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मृत्य उसके दृश्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरित (अन्तरितयों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तथ् पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्यों से उक्त अन्तरण मिसित में वास्तिक रूप से कथित नहीं किया गया है:---

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अभीन कर दोने के अन्तरक के दायित्व में कभी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए; और/या
- (का) एसे किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों का, जिन्हों भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अंतरिती ब्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा के लिए:

जनः अब, उक्त अधिनियम की भारा 269-ग के अनुसरण को, से उक्त अधिनियम की धारा 269-घ की उपभारा (1) को अधीन, निम्नलिखित व्यक्तियों, अर्थात् ः—

- (1) श्री मुक्तयार सिह पुत्र नत्थासिंह वासी बीबी जी गुरुद्वारा वाली सड़क, मोगा मेहला सिंह मोगा। (श्रन्सरक)
- (2) श्रीमती मरोज रानी पत्नी पवन कुमार पुत्र जगदीश राम वासी मरहना तहसील मोगा। (श्रन्तरिती)
 - (3) जैसा कि नं० 2 में लिखा है। (वह व्यक्ति जिसके ग्रिधिभोग में सम्पति है)
- (4) जो व्यक्ति सम्पति में रुचि रखता है। (बह व्यक्ति जिसके बारे में भ्रधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पति में हितबग्र है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाही शुरू करता हुं।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन के संबंध में कोई भी आक्षेप :--

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारोख से 45 दिन की अविध या तत्संबंधी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविध, जो भी अविध बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वीक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (स) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस सं 45 विन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हित-बक्ध किसी व्यक्ति द्वारा, अथोहस्ताक्षरी के पास लिसित में किए का सकेंगे।

स्पटीकरण: --- इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं, बही अर्थ होगा, जो उस अध्याय में दिया गया

अनुसूची

व्यक्ति तथा सम्पति जैसा कि विलेख नं० 447 दिनांक अप्रैल 1982 को रजिस्ट्रीकर्त्ता अधिकारी मोगा में लिखा है।

> जे० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी स**हायक आयकर आयुक्त** (निरीक्षण) **प्रा**र्जन रेंज जालन्धर

तारी**व** : 10-12-82

प्ररूप आई. टी. एन. एस. -----

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की भारा 269-घ (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण)
ग्रर्जन रेंज जालन्धर
जालन्धर दिनांक 10 विसम्बर 1983

निर्देश सं० एस पी० ने० 3686---यतः मुझे जे० एल० गिरधर,

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके परचात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, . जिसका उचित बाजार मृत्य 25,000/-रु. से अधिक है

श्रीर जिसकी सं० जैसा कि अनुसूची में लिखा है तथा जो मोगा मेहला सिंह में स्थित है (श्रीर इससे उपाबद्ध में श्रनुसूची में श्रीर पूर्ण रूप में विणित है) रिजस्ट्रीकर्ता श्रिधकारों के कार्यालय मोगा में रिजस्ट्रीकरण श्रिधिनयम 1908 (1908 का 16) के श्रधीन तारीख श्रत्रैल 1982

को पूर्वोक्त संपरित के उचित बाजार मृल्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुक्ते यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मृल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से एसे दृश्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत अधिक है और अन्तर्क (अन्तरकार्ग) और अन्तरिती (अन्तरितियों) के बीच एसे अन्तरण के निए तय पामा गमा प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखित में वास्तिवक रूप से कथिस नहीं किया गमा:——

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर देने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में सृविधा के लिए; और/या
- (ख) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को, जिन्हों भारतीय आय-कर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोज-नार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था छिपाने में सुविधा के लिए;

अतः अव, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण में, मैं, उक्त अधिनियम की धारा 269-घ की उपधारा (1) के अधीन, निम्निलिखित व्यक्तियों, अर्थात् :—

- (1) श्री मुख्तथार सिंह पुत्र नत्था सिंह वासी बीबी जी गुरूद्वारा वाली सङ्क मोगा मेहला सिंह मोगा। (भ्रन्सरक)
- (2) श्रीमती तरसेन रानी परनी मंगत राम पुत्र लाल सिंह वासी गाव नत्थूवाला जगदीश सहसील भोगा।

(भ्रन्तरिती)

- (3) जैसा उपरोक्त नं० 2 में लिखा है। (वह व्यक्ति जिसके ग्रिधिभोग में सम्पति है)
- (4) जो व्यक्ति सम्पत्ति में किन रखता है। (बह व्यक्ति जिनके बारें में अधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पत्ति में हितबढ़ है।

को यह सूचना जारी करके पूर्वीक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हुं।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन के संबंध में कोई भी आक्षेप :--

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अविध या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविध बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वीक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पाम लिखित में किए जा सकेंगे।

स्थाकीकरण: -- इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम, के अध्याय 20-क में परिशाणित हैं, वहीं अर्थ होगा, जो उस अध्याय में दिया गया हैं।

अनुसूची

क्यक्ति तथा सम्पति जैसा कि विलेख नं० 449 दिनांक अप्रैल 1982 को रिजस्ट्रीकर्ता श्रिधकारी मोगा में लिखा है।

> जे० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी सहायक ग्रायकर ग्रायुक्त (निरीक्षण) ग्रजैन रेंज, जालन्धर

तारीख: 10-12-82

मोहर 🖫

प्ररूप आई. टी. एन. एस.-----

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-घ (1) के अधीन स्चना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण)

म्रर्जन रेंज, जालन्धर

जालन्धर, दिनांक 10 दिसम्बर 1982

ानर्देश सं० ए० पी० नं० 3687—यतः मुझे, जे० एल० गिरधर,

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- रु. से अधिक है

श्रौर जिसकी सं० जैसा कि श्रन्सूची में लिखा है तथा जो मोगा मोहला सिंह में स्थित है (श्रौर इससे उपाबद्ध श्रनुसूची में श्रौर पूर्ण व्यासे विणित है), रिजस्ट्रीकर्सा श्रिधकारी के कार्यालय मोगा में रिजस्ट्रीकरण श्रिधिनियम 1908 (1908 का 16) के श्रधीन तारीख श्रप्रैंल 1982

को प्वंक्ति सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के स्थमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वेक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके ख्यमान प्रतिफल से, एसे दृश्यमान प्रतिफल का पंद्रह प्रतिशत से अधिक है और अंतरक (अंतरकों) और अंतरिती (अन्तरितियों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्यों से उक्त अन्तरण लिखित मे वास्तियक रूप से कथित नहीं किया गया है:---

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के वायित्व में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए; और/या
- (क) एसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को, जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धनकर अधिनियम, या धनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अंतरिती ब्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था छिपाने में सिवधा के लिए;

जतः जन, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के जनसरण में, मैं, इक्त अधिनियम की धारा 269-घ की उपधारा (1) के जधीन, निम्नलिखिल व्यक्तियों, अर्थास्:--

- (1) श्रो मुख्तार मिह पुत्र नत्था सिह वासी दीबी जी गुरद्वारा वाली सड़क मोगा मोहला सिंह मोगा। (ग्रन्तरक)
- (2) श्री रणजोध सिंह पुत्र ग्रान्मा सिंह वामी गाव लाले तहसील मोगा।

(भ्रन्तरिती)

- (3) जैसा कि न० 2 में लिखा है। (वह व्यक्ति, जिसके ग्रिधिभोग में सम्पति है)
- (4) जो व्यक्ति सम्पत्ति में रुचि रखता है। (बह व्यक्ति जिसके बारे में श्रक्षोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पत्ति में हितबद्ध है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हूं:।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन के संबंध में कोई भी आक्षेप ---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति ख्वारा;
- (स) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हित- बद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकेंगे।

स्पच्छीकरण: ---इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम के अध्याय 20-क में परिभाषित है, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनुसूची

व्यक्ति तथा सम्पत्ति जैसा कि विलेख नं० 55 दिनांक प्रप्रैल 1982 को रजिस्ट्रीकर्त्वा प्रधिकारी मोगा ने लिखा है।

> जे० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी स**हायक आयकर आयुक्त** (निरक्षिण) **ग्रजै**न रेंज, जालन्धर

तारीख: 10-12-82

प्रकर बाई • टी • एन • एस •----

आयकर अधिगियम, 1961 (1961 का 43) की भारा 269 घ (1) के अधीन सुचना

भारत सरकार

कार्यालय, महायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण)

धर्जन रेज, जालन्धर

जालन्ध्र दिना ह 10 दिसम्बर 1982

निर्दश स० ४० पी० न० ४०४८— यत मुझ जे० एल० गिरार

आधकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) जिसे इसमें इसके परवाह 'उक्त अधिनियम' कहा गया है, की धार 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सपित, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- रु में अधिक है

ग्गैर जिसती स० जैसा ति प्रत्मुची म लिखा ह तथा जो भोगा मोहला िट में सि त ै (प्रौर तपर उपावद्ध म अन्सूची में सौर पर्ण ६ ० विणत हो), रजिस्ट्रीतक्ती प्रतिकारी के कार्यालय मागा । राजस्ट्रीकरण प्रधिनियम 1908 (1908 का 16) ो श्रिपी तारील प्रप्रैल 1982

को पर्वाक्त संपर्ति । उचित बाजार मूल्य संकम के एक्यमान प्रतिपन्न को लिए अन्तरित को गई हैं और मुक्के यह विश्वास करने का कारण ही कि यथापूर्वाक्त सम्पर्ति का उचित बाजार मूल्य । उसके दश्यमान प्रतिफल से , एसे दश्यमान प्रतिफल का पत्रह प्रतिक्त से अधिक ही अर अन्तरक (अन्तरको) और अत्रिती (अन्तरितियों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रति-फल निग्नलिक्त उद्देष्य सं उक्त अन्तरण लिक्षित में बाग्तिक स्प सं अभि नहीं किया गया है ——

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दने के अन्तरक के दायित्व ये कमी करने या उससे बचने में स्विधा के लिए; और/या
- (स) एसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को, जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उदान अधिनियम, या धनकर अधिनियम, या धनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा के लिए,

अत , अब , उक्त अधिनियम , की धारा 269-ग के अन्सरण में , में , उक्त अधिनियम की धारा 269-घ की उपधारा (1) क अधीन , निम्नलिखित व्यक्तिमों, अधीत 6-416GI'82 (1) श्री मुद्धतार सिंह पुद्र नत्या सिंह वासी बीबी जी गुरुद्वारा वाली संडक मोगा मोहला सिंह मोगा

(ग्रन्तरक)

(2) श्रीमती सन्तित्र कौर पन्नी रणजोध सिह वासी गाव लाले तहसील फिरोजपुर

(श्रन्तरिती)

(3) जैसा उपरोक्त 2 में लिखा है। (वह व्यक्ति जिसके ग्रिधिभोग में सम्पति है)

(4) जो व्यक्ति सम्पति में रिच रखता है। (वह व्यक्ति जिसके वारे में अधोहस्ताक्षरी जानना है कि वह सम्पति में हिनबद्ध है)

का यह सूचना जारी कार के पूर्वाक्त सपरित के अर्जन के लिए एतदुद्वारा कार्यवाहिया करता हु।

उना नम्मिकं प्रान समय्य में काई मा आक्षी :---

- (क) इस स्वता ने राजपत में प्रकाशन को तारीख से 45 दिन की अवधिया नत्सबंधी अविश्वयों पर सूचना को तामील से 30 दिन की धविद्या, जो ग धार्म बाद में सभाष्त होती भा, ज धानगार्मकर व्यक्तियों भा में किया व्यक्ति ज्ञारा;
- (ख) इस स्वता र रावन्त्र स प्रधानन का तारीख से
 45 दिन के भीनर जकत स्थावर सपति में
 हिनबद्ध किसा मन्त्र स्पक्ति प्रारा, प्रधोहस्ताक्षरी
 के पास लखित में प्रारा स महेसे।

स्मज्दीकरण :----इनने नयुक्त गच्दा और पदो का जा खिक्त अधिनिनम' क अध्यान 20-क में परिभाषित है, वही अर्थ होगा, जो उस प्रक्रमाय में दिया गय है।

वन्त्रची

व्यक्ति तथा सम्पति जमा कि जिलेख न० 56 दिनाक अप्रैल 1982 को रजिस्ट्रीकर्त्ता अधिकारी मोगा जो लिखा है।

> जे० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी सहायक ग्रायकर ग्रायुक्त (निरीक्षण) ग्रर्जन रेज जालन्धर

्तारीख . 10-12-82

मोहर

प्ररूप आहूँ. टी. एन्. एस. - -- -

भायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-घ (1) के अधीर सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरक्षिण)

श्चर्जन रंज, जालन्धर

जालन्धर, दिनांक 10 दिसम्बर 1982

निर्वेश सं० ए० पी नं० 3689---यतः मुझे, जे० एल० गिरक्षर ,

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके परचात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर संपरित जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- रु. से अधिक है

ग्रौर जिसकी स० जैसा कि ग्रनुसूची में लिखा है तथा जो मोगा मेहला सिंह में स्थित है (ग्रौर इससे उपाबद्ध में ग्रनु-सूची में ग्रौर पूर्ण रूप से वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्ता ग्रिधिकारी के कार्यालय मोगा में रजिस्ट्रीकरण ग्रिधिनयम 1908 (1908 का 16) के ग्रधीन तारीख ग्रप्रैल 1982

को पूर्वोक्त संपरित के उचित बाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुक्ते यह विद्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त संपत्ति का उचित बाजार मूल्य उसके दृश्यमान प्रतिफल से एसे दृश्यमान प्रतिफल का पन्त्रह प्रतिशत अधिक है और अन्तरण (अन्तरकों) और अंतरिती (अंतरितियों) के बीच एसे अंतरण के लिए तय पाया गया प्रति-फल निम्निलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखित में वास्त-विक रूप में किथत नहीं किया गया है:---

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बम्बत उक्त अधि-नियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए; और/या
- (क) एंसी किसी बाय या किसी पन या अन्य बास्तियों को, जिन्हों भारतीय बायकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती स्वारा प्रतट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में स्विधा के लिए;

असः अस, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण में, में, उक्त अधिनियम की धारा 269-म की उपधारा (1) के अधीन निम्नितिसित व्यक्तियों, अर्थात् :-- (1) श्री बलवन्त सिंह पुत हीरा सिंह श्रौर गुरदेव सिंह हरवन्स सिंह पुत्र जगीर सिंह वासी मोगा मण्डी, मोगा।

(अन्तरक)

(2) श्री सतीश कुमार पुत सूरज प्रकाश वासी मोगा मण्डी, मोगा।

(भ्रन्तरिती)

- (3) जैंसा उपरोक्त नं० 2 में लिखा है। (वह व्यक्ति, जिसके अधिभोग में सम्पति है)
- (4) जो व्यक्ति सम्पति में रुचि रखता है। (वह व्यक्ति जिसके बारें में श्रश्रोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पत्ति में हितबद्ध है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अजन के लिए कार्यवाहियां करता हु।

उक्त सम्परित के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप:---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अविध् या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविध, जो भी अविध बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूनों कत् व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (स) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर संपत्ति में हित-बद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा, अधोहस्ताक्षरी के पास निस्ति में किए जा सकती।

स्पष्टीकरण:--इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदौं का, जो उत्कल अधिनियम, के अध्याय 20 क में परिभाषित हैं, वहीं अर्थ हीगा जो उस अध्याय में विया नमा हैं।

अनुस्ची

व्यक्ति तथा सम्पत्ति जैसा कि विलेख नं० 169 श्रप्रैल 1982 को रजिस्ट्रीकर्सा ग्रधिकारी मोगा ने लिखा है।

> जे० एस० गिरधर सक्षम प्राधिकारी सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) ग्रर्जन रेंज, जालन्धर

तारीख: 10-12-82

मोहर

प्रकप भाई० टी० एन० एस०-

भायकर घिषिनियम, 1961 (1961 का 43) की छारा 269 व (1) के मधीन सुचना

भारत सरकारु

कार्यालय, सहायक आयकर आयक्त (निरीक्षण) श्रर्जन रेंज, जालन्धर

जालन्धर, दिनांक 10 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० एस० पी० नं० 3690---यतः मुझे जे० एल० गिरधर,

भायकर श्रिव्रितियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उकत श्रिवित्यम' कहा गया है), की श्रारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी की खह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूख्य 25,000/-क से श्रिष्ठक है

स्रीर जिसकी संज्ञ जैसा कि स्रनुसूची में लिखा है तथा जो गिरुल पट्टी भटिन्डा में स्थित है (स्रीर इससे उपाबद्ध में प्रनूसूची में स्रीर पूर्ण रूप से वणित है), रजिस्ट्रीकर्ता स्रिधबारी के कार्यालय भटिन्डा में रजिस्ट्रीकरण श्रिधिनियम 1908 (1908 का 16) के स्रिधीन तारीख स्रिपेल 1982

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के दृष्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुझे यह विष्वास करने का कारण है कि जशापुर्वोक्त नम्मति का उचित बाजार भूल्य, उसके दृष्यमान प्रतिफल न ऐसे दृश्यमान प्रतिफल का पण्यह प्रतिगत से अधिक है और अन्तरक (भन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितियों) के जीच ऐसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखित में वास्तविक रूप से कथित नहीं। कया गया है:—

- (क) प्रस्तरण में हुई किभी आय को बाबत, इक्त अक्षितियम के भ्रष्टीन कर देने के भ्रन्तरक के वर्ष्यस्य में कमी करते काउससे दखने में सुविधा के लिए; भीर/या
- (बा) ऐसी किसी प्रायं या किसी धन या प्रस्य धारितयों की, जिन्हें भारतीय प्रायकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उकत अधिनियम, या धनकर अधिनियम, या धनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया वा या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा के लिए।

सक्ष: ज्ञा, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण. में, में, उफ्त अधिनियम की धारा 269-व की स्वयंशरा (1) को अधीन, निम्निसिधित व्यक्तियों, जर्मात क्र--- (1) श्री जीन सिंह पुत्र श्री चुहरिया सिंह गांव गिल्ल पट्टी

(अन्तरक)

2. श्री वलविन्द्र सिह् ग्रौर सबजीत सिंह पुत्र गुरद्रेल सिंह ग्रौर सतनाम सिंह ग्रौर नछतर सिंह पुत्र प्रताप सिंह भटिन्डा।

(ग्रन्तरिती)

(3) जैसा उपरोक्त नं० 2 में लिखा है। (बह व्यक्ति जिसके फ्रिंडिगोग में सम्पति है)

(4) जो व्यक्ति सम्पति में रुचि रखता है।
(वह व्यक्ति जिसके बारे में श्रक्षोहस्ताक्षरी
जानता है कि वह सम्पति में हितवद्ध है)

को यह मूचना जारी करके पूर्वीक्त सम्मति के मजैन के लिए कार्यवाहियां करता हूं।

उपन सम्पत्ति के प्रार्जन के सम्बन्ध में कोई भी ग्राक्षेप :---

- (क) इस सूचना के राजपत में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की प्रविध या तरसम्बन्धी क्यक्तियों पर सूचना को नामीन से 30 दिन को अविधि, जो भी प्रविध बाद में सप्ताप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (ख) इस सूचना के राजाब में प्रकाशन को तारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबद किसी अन्य व्यक्ति द्वारा श्रद्वोहस्ताक्षरों के पास लिखित में किए जा सर्कोंगे।

स्पष्टीकरण:---इसमें प्रयुक्त शब्धों और पदों का, ओ उक्त अधिनियम के श्रष्टयाय-20क में परिभाषित है, यही प्रयंहीगा को छत सध्याय में दिया क्या है।

वन्सूची

व्यक्ति तथा सम्पत्ति जैसा कि विलेख नं० 111 दिनाक भ्रप्रैल 1982 को रजिस्ट्रीकर्त्ता भ्रधिकारो भटिन्डा ने लिखा है।

> जें० ए ल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी महायक भ्रायकर भ्रायुक्त (निरीक्षण), श्रर्जन रेंज जालन्धर

तारीख: 10-12-82

मोहर ः

प्ररूप आक्षे टी. एन. एस.-----

मायकर मिथिनियम, 1961 (1961 का 43) की भारा 269-भ(1) के सभीन सभाग

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण)

श्चर्जन रेज, जालन्धर

जालन्धर दिनाक 10 दिसम्बर 1982

निर्देश मं० ए० पी० न० 3691—यत भुझे जे० एल० गिरधर,

नायकर अधिनियम, 1961 (1061 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'जनत निभिनियम' कहा गया है), की भारा 269 के का अधीन सक्षम प्राधिकारी क्ये यह विदेवास करने का कारण है कि स्थावर सम्मित्त, जिसका उचित वाजार मृत्य 25,000/- रा. से अधिक है

ग्रौर जिसकी मं० जैसा कि श्रनुसूची में लिखा गया है तथा जो गिलपर्थ भटिन्डा में स्थित है (श्रौर इससे उपाबद्ध श्रनुसूची में ग्रौर पृर्ण रूप से विणित है), रिजस्तीकर्त्ता श्रदि-कारी के कार्यालय भटिन्डा में रिजस्त्रीकरण श्रद्धिनियम 1908 (1908 का 16) के ग्रधीन तारीख श्रप्रैल 1982

को पूर्वेक्ति संपरित के उचित बाजार मूल्य से कम के दश्यमान प्रतिफल के लिए अंतरित की गई है और मूक्ते यह विश्वास करने का कारण है कि यथापृर्वेक्ति संपत्ति का उचित बाजार मूल्य, उनके दश्यमान प्रतिफल से, एसे दश्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिश्वत से अभिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितयों) के भीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिचित उद्देश्यों से उक्त अन्तरण निचित में नास्तिक रूप से किथत नहीं किया गया है ---

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बायत, उक्त जिथिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्व में कभी करने मा उससे वचने में सुविधा के सिए, जौर/या
- (स) एसी किसी बाय या किसी धन या जन्य आस्तियों को., जिन्हों भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कार अधिनियम, 1957 (1957 का 27) की प्रयोजनार्थ अन्तिरती ब्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना आहिए था, छिपाने हों सरिवन के लिए।

नतः शब उक्त अधिनियम की धारा 269-ग की अनमरण मों, मीं, उक्त अधिनियम की धारा 269-य की उपधारा (1) को अधीन निम्नलिसित व्यक्तियों, अधीत —

- (1) श्री राम कृमार पुत्र सूरज भान भटिन्डा (अन्तरक)
- (2) श्री कृष्ण कुनार पुत्र वेद प्रकाश (2) स्नेहलका पत्नी सोहन लाल (3) ग्रणोक कुमार पुत्र श्री देम राज पता मेरज धालीरी राम सोहन लाल कला मर्चेन्टस सदर बजार भटिन्हा

(भ्रन्तरिती)

- (3) जसा उपरोक्त न० 2 में लिखा है। (वह व्यक्ति जिसक श्रिधिंग में सम्पत्ति है)
- (4) जो व्यक्ति सम्पत्ति में रिच रखता है। (यह व्यक्ति जिसके बारे में ग्राधोहस्ताक्षरी जासता है कि वह सम्पत्ति में हिनबद्ध है)

का यह सुचना चारी करके पूर्वोंक्त सम्पत्ति के अर्जन के तिए कार्यवाहिया करता हा।

उक्त सम्पत्ति को अर्जन के पम्बन्ध मो कोई भी आक्षेप -

- (क) इस स्चना क राजपत्र में प्रकाशन को तारीक्ष से 45 दिन की अवधि या तत्यम्बन्धी व्यक्तियों पर स्चना को तामीन से 30 दिन की अवधि, ते भी अवधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्विकत व्यक्तियों मा से फिटी क्यांवर तामन,
- (ल) इस सूचना के राजपत्र मा प्रकाशन की तारील से 45 दिन के भीतर उक्त स्थायर सम्प्रित मे हिनबद्ध किसी अन्य व्यक्ति दवारा अधाष्ट्रसाध्यरी वे पास निलित मा किए रासकींगे।

स्पष्टोकरण --इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम के अध्याय २०-क में परिभाषित हैं, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में विया गया हैं।

वन्स्ची

व्यक्ति तथा सम्पत्ति जैमा कि विलख में २० 143 दिनाक अप्रैन 1982 को रिजस्टोकर्ता अधिकारी भटिन्डा ने लिखा है।

> जे० एल० गिरधर मक्षम प्राधिकारी सहायक भ्रायकर श्रायुक्त (निरीक्षण), श्रर्जन रेज, जालन्धर

तारीख : 19-1?-82 मोहर प्ररूप आई.टी.एन.एस.-----

शायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की भारा 269-व (1) के अभीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक वायकर वायकत (निरक्षिण)

श्रर्जन रेंज, जालन्धर

जालन्बर, दिनांक 10 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० ए० पी० न० 3692—यतः मुझे, जे० एल० गिण्धर,

आयकर प्रधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इस के पश्चात् 'उन्त अधिनियम' कहा गया है), की बारा 269-ख के प्रधीन सकाम प्राधिकारी को, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्यन्ति, जिसका उचित बाजार मूख्य 25,000/- कपए से अधिक है

ग्रौर जिसकी सं० जैसा कि भ्रनुसूची में लिखा है तथा जो गिल पट्टी भटिन्डा में स्थित है (ग्रोर इससे उपाबद्ध ग्रनुसूची में ग्रौर पूर्ण रूप से विगत है), रिजस्ट्रीकर्ता ग्रिश्वारी के कार्यालय भटिन्डा में रिजस्ट्रीकरण ग्रिधिनियम, 1908 (1908 का 16) के ग्रधीन तारीख ग्रगैल 1982

को पूर्विकत सम्पत्ति के उणित बाजार मूल्य से कम के छायमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई हैं और मूफे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्विकत सम्पत्ति का उणित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से, एसे दृश्यमान प्रतिफल का पदह प्रतिशत अधिक हैं और अतरक (अंतरकों) और अतरिती (अन्तरितियों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल किम्नलिखित उचदिश्य में उक्त अंतरण लिखित में वास्तिवक रूप से किम्नलिखित उचदिश्य में उक्त अंतरण लिखित में वास्तिवक

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की शायत उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्व में किमी करने या उपसे अचने में मृतिका के लिए; और/या
- (क) ऐसी किसी बाय या किसी धन या बन्य आसित्वों को, जिन्हों भारतीय आय-कर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) ना उत्तर अधिनियम, या धनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) ये, प्रशाबनार्थ अन्तरिती ब्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, खियाने में सविधा कि लिए,

अतः अब, उक्त अधिनियम की धारा 269-म के अनुसरण मे, मैं, उक्त अधिनियम की धारा 269-म की उपधारा (1) के अधीन, निम्नलिक्ति व्यक्तियों, अधीत :--

- (1) श्री राम कुमार पृत्र सूरज मल भटिन्डा (ग्रन्तरक)
- (2) श्री कृष्ण कुमार पृत्र वेद प्रकाण (2) स्नेह सता गत्नी सोहन लाल (3) ग्रशोक कुमार प० देसराज नासी पता मैसर्ज वलौरी राम मोहन ताल कलाथ मर्चोटस सदर बजार भटिन्डा

(श्रन्तरिती)

- (3) जैसा कि उपरोक्त नं० 2 में लिखा है। (वह व्यक्ति जिसके श्रिधिभोग में सम्पर्ति है)
- (4) जो व्यक्ति सम्पति में रुचि रखता है। (वह व्यक्ति जिनके बारें में प्रधोहताक्षरी जानता है कि वह सम्पति में हितबद्ध है।

को यह भूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्परित के अर्जन के लिए कार्यवाहिया करता हूं।

उन्त संपरित के अर्जन के संबंध में कोई भी आक्षेप :---

- (क) इस सूचना के राजपत्र मं प्रकाशन की तारीस से 45 दिन की अविभ या तत्सम्बन्धी व्यक्तियाँ पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविभ, जो भी ज्विध बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पृत्रीकत व्यक्ति में से किसी व्यक्ति ब्रवारा:
- (स) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हित-बद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरों के पास लिखित में किए जा सकेगे।

स्पष्टीकरण: --इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम के अध्याय 20-क में परिभाषित है, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में विसा गया है।

अनुसूची

व्यक्ति तथा सम्पति जैसा कि विशेख नं ० 146 विनाक अप्रैल 1982 को रिजिस्ट्रीकर्त्ता अधिकारी भटिन्डा ने लिखा हैं।

> जे० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी सहायक ग्रायकर भायुक्त (निरीक्षण) श्रर्जन रेंज, जालन्धर

तारीख: 10-12-82

मोहर

प्ररूप आर्ध. टी. एन. एस. -----

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-घ (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय , महायक आयकर आयक्त (निरीक्षण) श्रर्जन रेंज, जालन्धर

जालन्धर, दिनांक 10 दिसम्बर 1982

निर्देई सं० ए० पी० नं० 3693—यतः मुझे, जे०एल० गिरधर,

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/-रा. से अधिक है

ग्रीर जिसकी सं० जैसा कि ग्रन्सूची में लिखा है तथा जो भिटिन्डा में स्थित है (ग्रीर ट्यमें उपाबद्ध ग्रन्सूची में ग्रीर पूर्ण रूप से विणत है), र्राजस्ट्रीकर्चा प्रधिकारी के कार्यालय भिटिन्डा में रिजस्ट्रीकरण ग्रिधिनियम 1908 (1908 का 16) के ग्रिधीन तारीख ग्राप्त 1982

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और भूभे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित टाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से एसे दृश्यमान प्रतिफल का पन्त्रह प्रतिशत अधिक है और अन्तरक (अन्तरको) और अन्तरित (अन्तरितयों) के बीच अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्निलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखित में वास्तियक रूप में कथिन नहीं किया गया है ----

- (क) अन्तारण से हुई किसी आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में सर्विधा के लिए; और/या
- (ख) एसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को, जिन्ही भारतीय आय-कर अधिनियम; 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपान में सुविधा के लिए;

अत. अब, उधरा जीधीनयम की थारा 269-ग के अनुसरण में, मैं, उक्त अधिनियम की धारा 269-घ की उपधारा (1) के अधीन निम्नलिखित व्यक्तियों, अर्थात् ५--- (1) श्री अलबन्त सिंह पुत्र श्री लाभसिंह भ्यूनिसिपल कमेटी, भटिन्डा

(प्रन्तरक)

(2) श्री ग्राजायम सिंह पुत्र शेर सिंह गांव जोधपुर रोजना।

(भ्रन्तरिती)

- (3) जैसा कि उपरोक्त नं० 2 में लिखा है। (वह व्यक्ति जिसके ऋिभाग में सम्पत्ति है)
- (4) जो व्यक्ति सम्पत्ति में रुचि रखता है। (वह व्यक्ति जिनके बारे में श्रधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पति में हितबद्ध है

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हूं।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन के संबंध में कोई भी आक्षेप :---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अविध या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविध, जो भी अविध बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किमी व्यक्ति इतान;
- (ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबब्ध किसी अन्य ध्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकेंगे।

स्पष्टीकरण:---इसमे प्रयुक्त शब्दो और पर्यों का, जो उक्त अधिनियम के अध्याय 20-क में परिभाषित है वही अर्थ होगा, जो उस अध्याय में विया गया है ।

अनुसुची

ब्यक्ति तथा सम्पति जैसा कि विलेख न० 147 दिनांक भ्रप्रैल 1982 को रजिस्ट्रीकर्त्ता श्रश्निकारी भटिन्डा ने लिखा है।

> जै० एल० गिरघर सक्षम प्राधिकारी महायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) ग्रर्जन रैंज, जालन्धर

तारीख: 10-12-82

मोहर 🕆

प्ररूप आई. टी. एन. एस - - - ----

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-घ (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निर्शक्षण)

ग्रर्जन रेज जालन्धर

जालन्धर, दिनाक 10 दिसम्बर 1982

निर्देश स० ए० पी० न० 3694—यन मुझे जे० एल० गिरधर,

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिम इसमें इसके पश्चात 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269 के के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/-रु. से अधिक है

ग्रौर जिसकी स० जैंगा कि प्रनुसूची में लिखा गया है तथा जो बीबी वाला घोक भटिन्डा में स्थित हैं (आर इसमें उपाबंद्ध प्रनूसूची में ग्रौर पूर्ण रूप वर्णित है), रजि-कर्त्ता ग्रिधिकारी के कार्यालय भटिन्डा में रजिस्ट्रीकरण ग्रिधि-नियम, 1908 (1908 वा 16) के श्रधीन तारीख श्रप्रैल 1982

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित वाजार मूल्य स कम के दृश्यमान प्रतिफल को लिए अन्तरित की गई है और मूफ्ते यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित वाजार मूल्य,, उसके दृश्यमान प्रतिफल से, एसे दृश्यमान प्रतिफल का पद्रह प्रतिशत अधिक है और अन्तरक (अतरको) और अर्वारनी (अन्तरितीयों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण निस्तित मा वास्तिवक रूप से कथित नहीं किया गया है ---

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्त दायित्य में कमी करने या उसस बचने में सुविधा के लिए, और/या
- (स) एसं िकसी आय या िकसी धन या अन्य आस्तिया को जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्दरिती द्वारा प्रकट नहीं िकया गया था या िकया जाना धाहिए था, छिपाने में मृविधा के लिए।

अप्त. अब उक्त आधिनियम का वारा 269-ग के अन्सरण में, मैं, उक्त अधिनियम की बाग 269-घ की उपधारा (1) के अधीन निम्नलिखित व्यक्तियों, अर्थात — (1) श्री राम दास पुत्न श्री चमन रनन मार्ज परस राम हक्ष्मचन्द सदर बाजार भटिन्डा।

(भ्रन्तरक)

(2) श्री चेत सिंह पुत्र श्री बखतार सिंह बी० के० ग्री० महना मोहल्ला भटिन्डा मधु पत्नी जगदीश राम वासी बैक स्ट्रोट भटिडा सुषमा रानी पुत्री रमेश चन्द, परस राम हक्ष्म चन्द्र सदर बजार भटिन्डा

(ग्रन्तरिती)

- (3) जैसा उपरोक्त न० 2 में लिखा गया है। (वह व्यक्ति जिसके अधिभोग में सम्पर्ति हैं)
- (3) जा व्यक्ति सम्पति में रिच रखता है। (वह व्यक्ति जिसके बारे में भ्रधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पति में हितबद्ध है।

का यह सूचना जारी करके पूर्वाक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहिया करता हू।

उथत सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध म काई भी आक्षेप ---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख स 45 दिन की अविध या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविध बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वीक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा,
- (ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पृत्ति में हितबद्ध किमी अन्य व्यक्ति इवारा अधोहस्ताक्षरी वे पास लिखित में किए जा सकेगे।

स्पष्टीकरण: -- इसमे प्रयुक्त शब्दो और पदो का, जो उक्त अधिनियम के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया हैं।

अनुसूचा

व्यक्ति तथा सम्पति जैसा कि विलेख न० 219 दिनाक अप्रैल 1982 को रजिस्ट्रीकर्सा ग्रिधिकारी भटिन्छा ने लिखा है।

> ज० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी सहायक आयकर आयक्त (निरीक्षण) ग्रर्जन रेंज, जालन्धर

नारीख .1*0*-1*2*-82

माहर

प्ररूप आर्द. टी. एन. एस.------

आयकर अभिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-च (1) के अभीन सचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकार आय्क्त (निरीक्षण) अर्जन रेंज, जालन्धर

जालन्धर, दिनांक 10 दिसम्बर 1982

निदण स॰ ए॰ पी॰ ने॰ 3695--यतः मुझे, जे॰ एल॰ गिरधर,

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिस इसमं इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी की यह विश्वास करने का कारण है कि स्थायर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार म्ल्य 25,000/- रा. सं अधिक है

और जिसकी सं० जैसा कि अनुसूची में लिखा गया है तथा जो भटिन्डा में स्थित हैं (और इसमें उपापद अनसूची में और पूर्ण रूप से विणत हैं), रिजस्ट्रीकर्ता अधिकारी के कार्यालय भटिन्डा में र्राजस्ट्रीकरण अधिनियम 1908 (1908 का 16) के अधीन अप्रैल 1982

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के रूपमान प्रतिफल के लिए अंतरिती की गई है और मुक्ते यहिवश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से, एसे रूपमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अंतरक (अंतरकों) और अंतरिती (अंतरितियों) के बीच एसे अंतरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अंतरण लिखित में बास्तिबक रूप से कथित नहीं किया गया है:---

- (क) अंतरण सं हुई किसी आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अंतरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए; और/या
- (का) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को जिन्हों भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा के लिए।

कतः अब, उत्त विधिनियम की धारा 269-ग के वनुसरण म, मैं, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग की उपधारा (1) के अधीन, निम्निलिक्ति व्यक्तियों, अर्थात् :— (1) श्री माल सिंह पुत्र श्री शेर सिंह गांव गिल्ल पट्टी, भटिन्डा।

(अन्सरक)

(2) श्री निरक्ष गिह पुत्र श्री निहाल भिंह, शंकुंतला देवी पत्नी निरन्द्र सिंह और राज कुमार पुत्र बनारसी दास गांव पट्टी गिल्ल, भटिन्डा ।

(अन्तरिती)

- (3) जैसा उपरोक्त नं० 2 में लिखा है। (वह व्यक्ति जिसके अधिभोग में सम्पत्ति है)
- (4) जो व्यक्ति सम्पत्ति में रुचि रखता है। (वह व्यक्ति, जिनके बारे में अधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पत्ति में हितबद्ध है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वीक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हो।

उक्त सम्परित के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप :--

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख सें 45 दिन की अविध या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविध, जो भी अविध बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (क्ष) इस सूचना के राजपत्र मं प्रकाशन की तारीख सं 45 दिन के मीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकेंगे।

रूपक्टीकरणः -- इसमें प्रयुक्त शब्दो और पदों का, जा उक्त अधिनियम के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

मनुस्ची

व्यक्ति क्षया सम्पत्ति जैसा कि विलेख नं० 296 दिनाक अप्रैल 1982 को रजिस्ट्रीकर्ता अधिकारी भटिन्डा ने लिखा है।

> जे० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी सहायक ग्रायकर भ्रायुक्त (निरीक्षण) अर्जन रेंज, जालन्धर

नारीख 10-12-1982 मोहर पक्ष ग्राई० टी • एन • एस •----

बायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-घ (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आय्क्त (निरीक्षण)

अर्जन रेंज, जालन्धर

जालन्धर, दिनांक 10 दिसम्बर 1982

निर्देई सं० ए० पी० नं० 3696--यतः मुझे, जे० एल० गिरधर,

क्रायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके परचात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया हैं), की धारा 269 ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर संपरित जिसका उचित बाजार मृत्यु 25,000/- रु. से अधिक हैं

और जिसकी सं० जैसा कि अनुसूची में लिखा है तथा जो भिटिन्डा में स्थित है (और इससे उपाबद्ध अनुसूची में और पूर्ण रूप में वर्णित है), रिजस्ट्रीकर्त्ता अधिकारी के कार्यालय भिटिन्डा में रिजस्ट्रीकरण अधिनियम 1908 (1908 का 16) के अधीन तारीख अप्रैल 1982

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मृत्य से कम के इश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुक्ते यह विश्वास करने का कारण है कि बथापूर्वोक्त संपत्ति का उचित बाजार मृत्य, उसके इश्यमान प्रतिफल से, ऐसे इश्यमान प्रतिफल का पन्त्रह प्रतिकात से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अंतरिती (अंतरितियों) के बीच ऐसे अंतरण के लिए तय पाया गया प्रति-फल, निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अंतरण लिखित में वास्तिक रूप से किथत नहीं किया ग्या है है—

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत उक्त अधि-नियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्य में कमी करने या उससे अचने में सुविधा के लिए; के लिए;
- (स) ऐसी किसी आय या किसी धन या जन्य आस्तियों की, जिन्हों भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या जन्म अधिनियम, या धन-अल अधिनियम, या धन-अल अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के व्योजनार्थ अन्तरिती द्यारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुनिधा के लिए;

बतः अब, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अन्सरण में, मे, उक्त अधिनियम की धारा 269-घ उपधारा (1) के अधीन, निम्निलिसित व्यक्तियों अर्थात :——
7—416GI/82

- (1) श्री भगवान सिंह पुत्र श्री बीर सिंह भटिन्डा मुखत्यारे ग्राम आफ करनैलिसिंह वासी पट्टी गिल्ल (अन्तरक)
- (2) श्री गुरमैल सिंह पुत श्री विश्न सिंह गाव शेखू तहसील तलवंडी साबी ।

(भ्रन्तरिती)

- (3) जैसा उपरोक्त नं० 2 में लिखा है। (वह व्यक्त जिसके अधिभोग में सम्पति है)
- (4) जो व्यक्ति सम्पति में रुचि रखता है। (वह व्यक्ति जिनके बारे में अधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पति में हितबद्ध है)

का वह सूचना जारी कारके पूर्वा वत सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हुं।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप:---

- (क) इस स्चना के राजपन में प्रकाशन की तारी खसे 4.5 दिन की अवधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर स्चना की तामील से 30 दिन की अवधि, जो भी बवधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वों कर ध्यक्तियों में से किसी व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति रहा,
- (ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर संपरित में हित- बव्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पार के लिए में विका जा सकी।

स्पच्डीकरणः — इसमें प्रयुक्त शब्दों और पर्वो का, ओ उक्त अधिनियम के अध्याय 20 क में परिभाषित है, वही अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया। गया है।

ननस्ची

व्यक्ति तथा सम्पति जैसा कि विलेख नं० 351 दिनांक अप्रैल 1982 को रिजम्ट्रीकर्त्ता अधिकारी, भटिन्टा ने लिखा है।

> जे० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी सहायक ग्रायकर ग्रायुक्त (निरीक्षण) अर्जन रेंज, जालन्धर

तारीख: 10-12-82

मोहरः

प्रकृप बाई. टी. एन. एस.-----

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की भारा 269-व (1) के अधीन स्वना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक भ्रायकर भ्रायक्त (निरीक्षण)

अर्जन रेंज, जालन्ध

जालन्धर, दिनांक 10 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० ए० पी० नं० 3697—यतः मुझे, जे० एल०। राष्ट्रार

कायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-क के अधीन सक्षम प्राधिकारी को, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित काजार मृत्य 25,000/- रह. से अधिक है

और जिसकी सं० जैमा कि अनुसूत्री में लिखा है तथा जो मुलतानी रोड भटिन्डा में स्थित है (और इससे उपायद्ध अनुसूत्री में और पूर्ण रूप में वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्त्ता अधिकारी के कार्यालय भटिन्डा में रजिस्ट्रीकरण अधिनियम 1908 (1908 का 16) के अधीन तारीख अप्रैल 1982

को प्रवेक्ति संपरित के उचित बाजार मृत्य से कम के दश्यमान प्रतिफल के लिए अंतरित की गई । श्री मिन्ने यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त संपर्ति का उचित बाजार मृत्य, उसके दश्यमान प्रतिफल से, ऐसे दश्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिकात से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितयों) के बीच ऐसे अन्तरफ के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्निलिखत उद्देश्यों से उक्त अन्तरण लिखित में वास्तिवक रूप से कथित नहीं किक। गया है :---

- (क) अन्तरण से हुई फिली आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के वायित्य में कमी करने या उससे अचने से सुविधा के किए; बॉर/मा
- (ब) एसी किसी जाय या किसी भन या अन्य आस्तियों कारे, जिन्हों भारतीय अयय-कर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, धा धनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती क्यारा प्रकट नहीं किया ज्या था या किया जाना चाहिए था कियाने में स्विधा के किए;

मतः अव, उत्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण कों, मीं, उक्त अधिनियम की धारा 269-च की उपधारा (1) को अधीन, निम्निलिखित व्यक्तियों., अर्थात् :--- (1) श्री चतर राम पुत हीरमल, हीरामल चौक सिरकी भजार, भटिन्डा

(अन्तरक)

- (2) (1) श्री लाल सिंह पुक्ष मल निंह, (1) राजीव कुमार पुत्र अयोघ्या प्रसाद (3) प्रदीप गोयल पुत्र मुलराज (4) कृष्णा वाँसल पत्नी चन्द्र प्रकाश (5) ओम प्रकाश पत्न देवकी नंदन (6) मूर्ती देवी पत्नी प्रकाशचन्द्र (7) चिन्ता मनी पुत्र उदत नरायन (8) कृष्ण कुमार पुत्र चिरंजी लाल (9) शशी अग्रवाल पत्नी अनिल कुमार धासी भटिन्डा (10) गुरवचनसिंह और कपूर सिंह पुक्ष कृपाल सिंह वासी भटिन्डा। (अन्तरिती)
- (3) जैसा उपरोक्त नं० 2 में लिखा है। (वह व्यक्ति जिसके अधिभोग में सम्पति है)
- (4) ओ व्यक्ति सम्पति में रुचि रखता है। (वह व्यक्ति जिनके बारे में अधोहस्ताक्षरी जानता हैं कि वह सम्पति में हितबद्ध है।)

को यह सूचना जारी करके पृवाकत संपरित के अर्जन के लिए कार्यवाहिया करता हु।

उक्त संपरित के अर्जन के संबंध में कोई भी आक्षंप :--

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की कारीख के 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियाँ पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में में किसी व्यक्ति द्वारा;
- (ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारी खंसे 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधीहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा मर्केंगे।

स्पष्टीकरणः - इसमे प्रयुक्त शब्दों और पर्दों का, जो उस्त अधिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित है, बही अर्थहोगा, जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनुसूची

व्यक्ति तथा सम्पति जैसा कि विलेख नं० 360 विनांक अप्रैल 1982 को रजिस्ट्रीकर्त्ता अधिकारी भटिन्डा ने लिखा है।

जे० एस० गिरधर सक्षम प्राधिकारी सहायक ग्रायकर ग्रायुक्त (निरीक्षण) अर्जन रेंज, जालन्धर

तारीख 10-12-82 मोहर: प्रकृप जाईं. दी, एन. एस.-----

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-म् (1) के अधीन सूचना

भारत तरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) अर्जन रेंज, जालन्धर

जालन्धर, दिनांक 10 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० ए० पी० नं० 3698—यतः मुझे जे० एल० गिरधर

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिस इसमें इसके पश्चात 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की भारा 269-स के अधीन सक्षम प्राधिकारी को, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्परित, जिसका उचित बाजार मृल्य 25.,000/- रा. से अधिक है

और जिसकी सं० जैसा कि अनुसूची में लिखा है तथा जो भिटिन्डा में स्थित है (और इससे उपाबद्ध अनुसूची में और पूर्ण रूप में विणत है), रिजस्ट्रीकर्ता अधिकारी के कार्यालय भिटिन्डा में रिजस्ट्रीकरण अधिनियम 1908 (1908 का 16) के अधीन तारीख अप्रैल 1982

को पूर्वोक्त संपरित के उचित बाजार मृत्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मृभे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त संपरित का उचित बाजार मृत्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से एसे दृश्यमान प्रतिफल का पंद्रह प्रतिशत अधिक है और अन्तरक (अन्तरका) और अन्तरिती (अन्तरितयों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखित में वास्तविक रूप से कथित नहीं किया गया है:---

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर देने के अन्तरक के वायित्व में कमी करने या उससे अ्चने में सुविधा के लिए; और/या
- (का) एेसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को, जिने भारतीय आय-कर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धनकर अधिनियम, या धनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती व्वारा प्रकट नहीं किया गया था किया जाना आहिये था छिपाने में स्विधा के लिए;

अतः अब, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण में, मैं, उक्त अधिनियम की धारा 269-घ की उपधारा (1) के अधीन, निम्निलिखित व्यक्तियों, अधीत्ः—

- (1) श्री वर्णन कुमार पुत्र श्री जमना वास, भटिन्डा। (अन्तरक)
- (2) श्री राकेश पुत्र, सतदेव और श्रीमित कम्पनी पत्नी श्रीचन्द्र वासी फरीदकोट ।

(अन्तरिती)

- (3) जैसा उपरोक्त नं० 2 में लिखा है। (वह व्यक्ति जिसके अधिभोग में सम्पति है)
- (4) जो व्यक्ति सम्पति में रुचि रखता है।
 (वह व्यक्ति जिसके बारे में अघोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पति में हितबद्ध) है।

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त संम्पत्ति के कर्जन के लिए कार्यवाहियां शुरु करता हुं।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप :---

- (क) इस स्वना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर स्वना की तामील से 30 दिन की अविध, जो भी अविध बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वीक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (क) इस मूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 विन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबब्ध किसी अन्य व्यक्ति बुवारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकरेंगे।

स्वव्यों करणः -- इसमें प्रयुक्त शब्दों और पर्वो का, जो उक्त अधिनियम के अध्याय 20-क में परिभाषित ही, वहीं अर्थ होगा, जो उस अध्याय में विया गया ही।

असमची

व्यक्ति तथा सम्पति जैसा कि विलेख नं० 463 दिनांक अप्रैल 1982 को रजिस्ट्रीकर्त्ता अधिकारी भटिन्डा ने लिखा है।

> जे० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी सहायक स्नायकर ग्रायुक्त (निरीक्षण) अर्जन रेंज जालन्धर

सारीख: 10-12-82

मोहर 🛭

प्ररूप आई.टी एन एस -----

भावकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-घ (1) ज अधीन सूचनाः

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) अर्जन रेज, जालन्धर

जालन्धर, दिनाक 10 दिसम्बर 1982

निदश स० ए० पी० न० 3699—यत मुझे, जे० एल० गिरधर

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात 'उक्त अधिनियम' कहा गया ह"), की धारा 269-का के अधीन सक्षम प्राधिकारों को यह निश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- रु. से अधिक है

और जिसकी स० जैंसा कि अनूसूची में लिखा है तथा जो भटिन्डा में स्थित है (और इससे उपापद्ध में अनूसूची में और पूर्ण रूप में वर्णित है), र्राजस्ट्रीकर्त्ता अधिकारी के कार्यालय भटिन्डा में रजिस्ट्रीकरण अधिनियम 1908 (1908 का 16) के अधीन तारीख अप्रैल 1982

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मृख्य से कम के दृश्यमान प्रतिकल के लिए अन्तरित की गई है और मृक्षे यह विद्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सपत्ति का उचित बाजार मृख्य, उसके दृश्यमान प्रतिकल से, एसे दृश्यमान प्रतिकल का पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितियो) के बीच एस अतरण के लिए तय पाया गया प्रतिकल किल निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखित में वास्तिविक रूप से कथित नहीं किया गया है ——

- (क) अभ्यारण से हुई किसी जाग की बाबत, उक्स अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दारित्व के कभी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए; और/था
- (व) एसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियां को, एक कुंभारतीय आय-कर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती व्यारा प्रकट नहीं किया गया भा या किया जाना चाहिए था, छिपाने में स्विभा के लिए;

अत. अब, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण में, में, उक्त अधिनियम की धारा 269-थ की उपधा<u>रा</u> (1) के अधीन में निम्नतिक्ति व्यक्तियों, अर्थात् ह

- (1) श्री सुखदेब सिंह पुत्र श्री बसन्त सिंह भटिन्डा। (अन्तरक)
- (2) श्री मोहिन्द्र सिंह पुत्र श्री रणजीत सिंह वासी दलवान जिला सगरूर।

(अन्तरिती)

- (3) जैसा उपरोक्त न० 2 में लिखा है। (वह व्यक्ति जिसके अधिभोग में सम्पति है)
- (4) जो व्यक्ति सम्पति मे रुचि रखता है। (वह व्यक्ति जिसके बारे मे अधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पति में हितबद्ध है)।

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहिया शुरू करता हुं।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन के सबध में कोई भी आक्षेप --

- (क) इस स्वना के राजपत्र मं प्रकाशन की तारी खरी 45 दिन की अविधिया तत्र म्बन्धी व्यक्तियों पर स्वना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविध बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पृथा कि व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा,
- (ख) इस यूबना के राजपत्न में प्रकाशन की तारीय से 45 दिन के मोतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितवद्ध किसी भ्राप्य व्यक्ति द्वारा, प्रधातस्ताक्षरों के पास लिखित में किए जा सकेंगे।

स्पथ्यीकरणः -- इसमे प्रयुक्त शब्दों शीर पदों का, को उक्त अभिनियन, के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया भूगा है।

अनस्ची

व्यक्ति तथा सम्पति जैसा कि विलेख न० 708 दिनाक अप्रैल 1982 को रजिस्ट्रीकर्ना अधिकारी भटिन्डा ने लिखा है।

> जे० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी सहायक श्रायकर श्रायुक्त (निरीक्षण) अर्जन रेंज, जालन्धर

तारीख 10-12-82 मोहर: प्ररूप आर्थ: टी. एस. एस.----

प्राप्तकर प्रतिनियम, 1981 (1981 का 43)की धारा 289व(1) के संबीत सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, महायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण)

अर्जन रेंज, जालन्धर जालन्धर, दिनांक 10 दिसम्बर 1982

निदश सं० ए० पी० नं० 3700--यत:, मुझे जे० एल० गिरधर,

आयकर अिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके प्रकात 'उकत प्रधिनियम' कहा गया है), की बारा 249 व के अधीन सक्षम प्राधिकारी की, यह विक्राम करने का आरच है कि स्वावर सम्पत्ति, जिसका उवित बाजार मून्य 25,000/- ६० से अधिक है और जिसकी मं० जैसा कि अनुसूची में लिखा है तथा जो भटिन्डा में स्थित है (और इससे उपावद अनुसूची में और पूर्ण रूप में वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्त्ता अधिकारी के कार्यालय भटिन्डा में रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन तारीख अप्रैल 1982

को पूर्वोजन अस्पानि के उचित बाबार मूस्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है बौर मुझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मृख्य, उनके दृश्यमान प्रतिफल से ऐसे दृश्यमान प्रतिफल का पश्च ह प्रविश्वास से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्वरिती (अन्तरितियों) के बीच ऐसे अन्वरण के सिए तय पाया गया प्रांतर्ण का निम्निचित जेशेश्य से उक्त अन्तरण किखित में वास्तिविक रूप से किखित नहीं किया स्था है क्या

- (क) ध्रन्तरण सं हुई किसो ध्राय की बाबत जक्त ध्राध-नियम के अधीन कर दने के अन्तरक के दायका में कमी करने या उससे बचने में भुविधा के लिए; धौर/या
- (ख) ऐसी किसी आय या किसी धन या अध्य प्रास्तियों की, जिन्हें भारतीय अध्यक्तर प्रश्निमयम, 1922 (1922 का 11) या उन्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ प्रश्वरिती द्वारा प्रकट नहीं किया क्या या या किया जाना चाहिए चा, जिनाने में सुविधा के सिए;

भतः, अन, उन्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण में, में, उन्त अधिनियम की धारा 268-व की उपधारा (1) के अधीन, निम्नलिखित व्यक्तियों, अधित:---

- (1) श्री सुखदेव सिंह पुत्र श्री बसन्त सिंह, भटिन्डा। (अन्तरक)
- (2) श्री जसविन्त्र सिंह पुत्र श्री रणजीत सिंह वासी दलवान जिला मंगरूर।

(अन्तरिती)

- (3) जैसा उपरोक्त नं० 2 में लिखा है। (वह व्यक्ति, जिसके अधिभोग में सम्पति है)
- (4) जो व्यक्ति सम्पति मे रुचि रखता है। (वह व्यक्ति जिनके बारे में अधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पति में हितबद्ध है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन के खिए कार्यवाहियां करता हूं।

उबत सम्पत्ति के श्रजेन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षोप .--

- (क) इस युचना के राजनत में प्रकारत की तारोख से 45 विन की श्रविध या तस्सम्बन्धी व्यक्तियों पर यूचनं की तामीत मे 30 दिन का श्रविध, जो भी प्रविध बाद में समाध्य होती हो, के मौतर पूर्वीका व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति बारा;
- (ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन को तारीख से '45 दिन के भोतर उथन स्थावर संपत्ति में हितबद्ध किसी प्रन्य व्यक्ति द्वारा प्रयोहस्ताक्षरी के पास निखित में किए जा सकाँगे।

स्ववेदीकरण:---इसमें प्रयुक्त गक्दों भीर पर्दा हा, जा उक्त श्रविनियम के श्रव्याय 20-क में परिमाषित है, वहीं श्रयं होगा जो उस श्रद्ध्याय में दिया गया है।

अनुसूची

व्यक्ति तथा सम्पति जैसा कि विलेख नं० 703 दिनांक अप्रैल 1982 को रजिस्ट्रीकर्सा अधिकारी भटिन्छा ने लिखा है।

> भै० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी सहायक ग्रायकर ग्रायुक्त (निरीक्षण) अर्जन रेंज, जालन्धर

तारीख: 10-12-82

प्रक्रम आर्ड्ड. टी. एन. एस.-----

मायकार अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-च् (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकार आय्यत (निरीक्षण) अर्जन रेंज, जालन्धर

जालन्धर, दिनांक 10 दिसम्बर 1982

निर्देश स०ए० पी० नं० 3701—यतः मुझे, जे० एल० गिरधर,

कायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) जिसे इसमें इसके पद्देशत् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार म्ल्य .25,000/- रठ. से अधिक है

और जिसकी सं० जैसा कि अनुसूची में लिखा है तथा जो गिलपट्टी भटिन्छा में स्थित है (और इससे उपाबड़ अनुसूची में और पूर्ण मे वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्त्ता अधिकारी के कार्यालय भटिन्डा में रजिस्ट्रीकरण अधिनियम 1908 (1908 का 16) के अधीन तारीख अप्रैल 1982

को पूर्विक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के दश्यमान प्रतिफल के लिए अंतरित की गई हैं और मूक्ते यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्विक्त सम्पत्ति का उाचित बाजार मूल्य, उसके दश्यमान प्रतिफल से, एसे दश्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत से अधिक हैं और अंतरक (अंतरकों) और अंतरिती (अंतरितियों) के बीच एसे अंतरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल निम्नलिखित उद्देष्य से उक्त अंतरण लिखित में वास्तविक रूप से कथित नहीं किया गया हैं:---

- (क) अंतरण से हुई किसी आग की बाबत, उक्त अधिन्यम के अधीन कर देने के अंत्रक के वायित्व में कमी करने या उससे अचने में सुविधा के लिए; और/या
- (क) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को, जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अंतरिती ब्वारा प्रकट नहीं किया गया या या किया जाना चाहिए था, छिपाने में स्विधा के लिए;

अतः अर्ज, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनूसरण मी, मी, उक्त अधिनियम की धारा 269-घ की उपधारा (1) को अधीन, निम्नलिखित व्यक्तियों, अर्थात :--- श्री ह्रूरमेल सिंह पुत्र श्री नेहर सिंह वासी गिल्ल पट्टी।

(अन्तरक)

- (2) श्री नैब सिंह पुत्र जुगराज सिंह भटिन्डा। (ग्रन्तरिती)
- (3) जैसा कि उपरोक्त नं० 2 में लिखा है। (वह व्यक्ति जिसके अधिभोग में सम्पति है)
- (4) जो ध्यक्ति सम्पति में रुचि रखता है। (बह व्यक्ति जिनके बारे में अधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पति में हितबद्ध है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हुं ।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप :---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की सारीख से 45 दिन की अविधिया तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वित्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (स) इस मूजना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हित- बद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में अन्य किए जा सकेंगे।

स्पष्टीकरण: --इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त जिथिनियम के अध्याय 20-क में परिभाषित है, वही अर्थ होगा, जो उस अध्याय में दिया गया है।

वनसूची

व्यक्ति तथा सम्पति जैमा कि विशेख नं० 751 दिनांक 1982 को रजिस्ट्रीकर्ता अधिकारी भटिन्डा में लिखा है।

> जै० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी सहायक भ्रायकर म्रायुक्त (निरीक्षण) अर्जन रेंज, जालधर

तारीख: 10-12-82

प्रस्प भाई० टी॰ एम० एस॰--

प्रायंकर **प्रीविनियम, 1961 (1961 का 43) की** धारा 269-घ (1) के मधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण)

अर्जन रेंज, जालन्धर

जालन्धर दिनांक 10 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० ए० पी० नं० 3702--यतः मुझे, जे० एल० गिरधर,

पायकर भिधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-ख के प्रधीन सक्षम प्राधिकारी को, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूह्य 25,000/- मु विश्वास है,

और जिसकी सं० जैसा कि अनुसूची में लिखा गया है तथा जो गिल्ल पट्टी भिडन्डा में स्थित है (और इससे उपाबद्ध अनुसूची में और पूर्ण रूप से विणित है), रिजस्ट्रीकर्ता अधिकारी के कार्यालय भिन्डा में रिजस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन तारीख अप्रैल 1982 को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रितिफल के लिए यन्तरित की गई है भौर मुझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल के एसे दृश्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिणत अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) भौर अन्तरिती (अन्तरितियों) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए तय पाया गया पनिफल, निम्नलिखित उद्देश्य में उक्त अन्तरण लिखन में वास्तविक रूप से कथित नहीं किया गया है:—

- (क) धन्तरण में हुई किमो आय की बाबन, उका प्रधिनियम, के प्रधीन कर देने के प्रन्तरक के वायित्व में कमी करने या उससे बचने में मुविधा के लिए; ग्रीर/या
- (ख) ऐया किसी घाय या किसी घत या प्रता पास्तियों को, जिन्हें भारतीय आयकर श्रिष्ठितियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त प्रवित्यम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ धन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में श्रीवधा है सिए;

अत: ग्रव, उक्त ग्रधिनियम की धारा 269-ग के प्रमुसरण में, में, उक्त ग्रीधिनियम की धारा 269-ग की उपधारा (1) के ग्रधीन, निम्निनिवित व्यक्तियों, ग्रधीन:-- (1) श्री मोहिन्द्र सिंह पुत्र श्री नाहर सिंह वासी गिस पट्टी भटिन्डा।

(अन्तरक)

- (2) श्री जगमीर सिंह पुत्र श्री जुगराज सिंह, भटिन्डा (अन्तरिती)
- (3) जैसा उपरोक्त नं० 2 में लिखा है। (बह व्यक्ति जिसके अधिभोग में सम्पति है)
- (4) जो व्यक्ति सम्पति में रुचि रखता है। (वह व्यक्ति जिनके बारे में अधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पति में हितबद्ध है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोंक्त सम्पत्ति के अर्थन के लिए कार्यवाहियां करता हुं।

उका समाति के बर्जन के संबंध में कोई भी बाक्षेत :---

- (क) इस मूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की श्रवधि या तस्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील में 30 दिन की श्रवधि, जो भी श्रवधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वो नि न्यक्तियों में से किसो व्यक्ति द्वारा;
- (ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रकासन की तारी त्र में 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबब किसी अन्य व्यक्ति द्वारा, अधोहस्ताक्षरी के पान लिखिन में किए जा सकेंगे।

स्पव्यक्तिकरण: --इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त श्रिधिनियम के श्रव्याय 20-क में परिभाषित हैं, वही धर्ष होगा जो उस शब्दाय में विधा गया है।

अनुसूची

व्यक्ति तथा सम्पति जैसा दि विलेख नं० 762 दिनांक अप्रैल 1982 को रजिस्ट्रीकर्त्ता अधिकारी भटिन्डा में लिखा है।

> जे० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी सहायक भ्रायकर भ्रायुक्त (निरीक्षण) अर्जन रेंज, जानन्धर

नारीखं: 10-12-82

प्रकष धाई॰ टी॰ एन॰ एस॰----

भायकर प्रवित्यम, 1981 (1961 का 43) की धारा 269-च (1) के अधीन सुचना

भारत मरकार

कार्यालय, सहायक आयकर ग्रायुक्त (निरीक्षण)

अर्जन रेंज, जालन्धर जालन्धर, दिनांक 10 विसम्बर 1982

निर्देश मं० ए० पी० नं० 3703---यतः मुझे, जे० एल० गिरधरः

शायकर प्रिविनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त प्रिविनियम' कहा गया है), की घारा 269 ख के प्रधीन सकम प्राधिकारी को, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पृति, जिसका उचित बाजार मूह्य 25,000/- रुपए से प्रधिक है, और जिसकी सं० जैसा कि अनुसूची में लिखा है तथा जो गिहल पट्टी भटिन्डा में स्थित है (और इससे उपाबद अनुसूची में और पूर्ण रूप से विणित है), रजिस्ट्रीकर्सा अधिकारी के कार्यालय भटिन्डा में रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन तारीख अप्रैल 1982

को पूर्वोक्त सम्पति के उचित बाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रति कस के लिए अन्तरित की गई है और मुखेयह दिश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का अधिन बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से, ऐसे दृश्यमान प्रतिफल का पण्डह प्रतिशत अधिक है और धण्तरक (प्रान्तरकों) और अन्तरिती (प्रन्तरितीं) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त प्रन्तरण निखित में वास्तिक रूप में कथिन नहीं किया गया है:---

- (क) अन्तरण से हुई फिला भाय का बावत उक्त प्रधिनियम के अक्षीन कर देन के अन्तरक के दायिस्य में कमी करने या अससे बचने में सुविधा के लिये; और/या
- (ख) ऐसी किसी श्राय या किसी धा या अन्य आस्तियों की, जिन्हें भारतीय धायकर धिवनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त धिवनियम, या अन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया वा या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा रु लिए;

बतः अब, उक्त अधिनियम की धारा 269-म के. अनुसरण में, मैं, उक्त बिधिनियम की धारा 269-म की उपधारा (1) के बधीन निम्नलिखित व्यक्तियाँ अर्थात् :---

- (1) श्री मित गुरदयाल कौर विधवा श्री नेहरसिंह गिल्ल पट्टी (अन्तरक)
- (2) श्रीमति अंगराजर कौर पत्मी श्री जुगराज सिंह, भटिन्डा (अन्तरिती)
- (3) जैसा उपरोक्त न० 2 में लिखा है। (वह व्यक्ति जिसके प्रधिभोग में सम्पति है)
- (4) जो व्यक्ति सम्पति में रुचि रखता है। (वह व्यक्ति जिनके बारे में अधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पति में हितबद्ध है।

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के झर्जन के चिए कार्यवाहियां करता हूं।

उनत सम्पति के धर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आधीप :--

- (क) इस सूबता के राजपत्र में प्रकाशन को तारीज से 15 दिन की अविधि या तस्तंबंधी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की ध्विष्ठि, जो भी ध्विधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोंका व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (ख) इस सूचना के राजपत्न में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन के भीतर उनत स्वावर सम्पत्ति में दित्वक किसी धन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास विकास में किये जा सकेंगे।

श्वव्हीकरण्य इसमें प्रमुक्त शब्दों और पर्वो का, जो उक्त अधिनियम के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं, वही अर्थ होगा, जो उस अध्याय में विया गया है।

वनस्ची

व्यक्ति तथा सम्पति जैमा कि विलेख न०753 दिनाँक अप्रैल 1982 को रजिस्ट्रीकर्ता अधिकारी भटिन्डा ने लिखा है।

> जे० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी सहायक भ्रायकर श्रायुक्त (निरीक्षण) अर्जन रेज, जालन्धर

तारीख: 10-12-82

प्रकप बाहे. टी. एन. एस. ------

भायकर अभिनिशम, 1961 (1961 का 43) की भारा 269-म् (1) के स्भीन स्मृना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक श्रीयकर भायुक्त (निरीक्षण)

श्चर्जन रेंज जालन्धर

जालन्धर, दिनांक 10 विसम्बर 1982

निर्देश सं० ए० पो० नं० 3704—यतः मुझे, जो० एल० गिरदार,

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके परचाए 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269- घ के अधीन सक्षम प्राधिकारी को, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर संपरित जिसका उचित बाजार मृत्य 25,000/- रा सं यधिक है

भ्रौर जिसकी सं० जैसा कि भ्रनुसूची में लिखा गया है तथा जो भटिन्डा में स्थित है (श्रौर इससे उपाबद श्रनुसूची में श्रौर पूर्ण रूप से वर्णित है), रजिस्ट्राकर्सा ग्रधिकारी के कार्यालय भटिन्डा में रजिस्ट्रीकरण श्रधिनियम 1908 (1908 का 16) के तारीख अप्रैल 1982

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उपित बाजार मूल्य से कम के ध्रमान् प्रतिफन के लिए बन्तरित की नहीं है बौर मुक्ते यह विक्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त संपत्ति का उपित बाजार हुन्थ उसके ध्रममान प्रतिफल से, एसे व्यममान प्रतिफल का पेड्र प्रतिकात से जिधक है और अंतरक (वंतरकों) और अंतरिती (अन्तरितियों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रति-फन निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त बन्तरण निम्नलिखित में बास्तिबक रूप से किंशत नहीं किया नया है:---

- क्लिंग के हुई किसी नाम की नागत उक्त अधि-नियम के वधीन कर दोने के बन्तरक के वामित्य में २०० अपनं २। उससे बजने में स्विधा के लिए। बीद/का
- (स) एसी किसी जाब वा किसी भन या अन्य आस्तियों को, जिन्हों भारतीय आयकर अभिनियम, 1922 (1422 का 11) पा उक्त अधिनियम, या धनकर अधिनियम, या धनकर अधिनियम, या धनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) से प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना जाहिए था, कियान में सूब्धा के सिए;

जत: अब, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण में, मैं उक्त अधिनियम की धारा 269-व की उपधारा (1) के अधीन, निम्नितिखित व्यक्तियों, अर्थात् :----8---416 GI/82 (1) श्री रामजी लाल श्री सन्त राम पुत श्री रोणत बन्द वासी गांव गिल्ला पट्टी मंगे राय पृत्व श्री भगत राम वासी रामांमन्डी

(ग्रन्तरक)

(2) श्रो तवलोक चन्द पुत्न बनारसी दास जालन्धर मुरिन्द्र कुमार पुत्न साहिब लाल, भटिन्डा जगननाथ पुत्न गोंडो राम, पता जे० के० खुराना वकील डिस्ट्रक कोर्ट भटिन्डा

(भ्रन्तरिती)

(3) जैसा उपरोक्त नं० 2 म लिखा है। (वह व्यक्ति जिसके श्रिधभोग में सम्पति है)

(4) जो व्यक्ति सम्पति म रुचि रखता है।
(वह व्यक्ति जिसके बारे में श्रधोस्ताक्षरी
जानता है कि वह सम्पति में हितबद्ध है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोंक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हूं।

उक्त सम्पत्ति के वर्जन के सम्बन्ध में कोंद भी बाक्षप:--

- (क) इस स्वता के राजपत्र में प्रकाशन की तारी ख से 45 दिन की अवधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर स्वना की तामील से 30 दिन की अवधि, जो भी अवधि बाद में समाप्त होती हो, के भौतर पृत्तों कर स्विक्तयों में से किसी स्वस्ति द्वारा;
- (क) इस स्वना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर संपत्ति में हित-बद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पाम लिखित में किए जा सकरें।

स्मादिकारणः --- इसमें प्रयुक्त शब्दों और पर्दों का, ओ उन्हरू बिधिनियम के अध्याय 2'0-क में परिभावित है, वही अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया नया है।

धनुसूची ।

व्यक्ति तथा सम्पति जैसा कि विलेख नं० 775 दिनांक ग्रप्नैल 1982 को रजिस्ट्राकर्त्ता ग्रधिकारी भटिन्डा ने लिखा है।

> जे० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी सहायक ग्राधकर श्रायुक्त (निरीक्षण) ग्रर्जन रेंज जालन्धर

तारीख: 10-12-82

मोहरः

शरूप आई.टी.एन.एस.----

भायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की भारा 269-म (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) श्रर्जन रेंज जालन्धर

जालन्धर, विनांक 10 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० ए० पो० नं० 3705—यतः मुझ, ज० एल० गिरधर,

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- रु. से अधिक है

भौर जिसकी सं० जैसा कि अनुसूची में लिखा है तथा जो जेतू में स्थित है (और इससे उपाबद्ध अनुसूची में और पूर्ण रूप में वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्सा अधिकारी के कार्यालय जेतू में रजिस्ट्रीकरण अधिनियम 1908 (1908 का 16) के मधीन तारीख अप्रैल 1982

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के रूपमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मूफे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, इसके रूपमान प्रतिफल से, एसे दूरयमान प्रतिफल का पन्त्रह प्रतिशत अधिक है और अंतरक अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितियों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया ग्या प्रतिफल निम्नलिखित उद्वदेश्य से उक्त अंतरण लिखित में वास्तविक रूप से कथित नहीं किया गया है:——

- (क) अंतरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अंतरक के दायित्व मों कमी करने या उससे बचने में स्विधा के लिए; और/या
- (स) एसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को, जिन्हों भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अंतरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था छिपाने में स्विधा के लिए;

अतः अम, अमत अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण में , मैं , उक्त अधिनियम की धारा 269-घ की उपधारा (1) के अधीन, निम्नलिखित व्यक्तियों. अर्थात् :---

(1) श्रा सुरेग कुमार विश्वय कुमार पुत्र मदन लाल पुत्र हुक्मचन्द वासी जेतू श्रीमित शान्ति देवी विधवा मदन लाल नासी जेतू (3) दर्शन देवी पतनी लाजपतराय पुत्र कौर सैन वासी धुरी (4) श्री मित राजकुमारी पुत्री प्रेमचन्द पुत्र मित्री राम वासी धरनाला (5) विनोद कुमारी पतनी प्रेमचन्द पुत्र राजीर चन्द वासी अवलवाला हिसार (6) रेखारानी पत्नी विजय कुमार पुत्र मंगल सेन रामपुरा कुल (7) निर्मल लता पत्नी बी० के० गर्ग आक्र प्रसाम वासो जेतू

(म्रन्तरक)

(2) श्री जगर्दाश चन्द पुत्र श्री मुकदी लाल उत्तरिसी जेबता कलाम हाउस न्यू मार्किट जेतू

(ग्रन्तरिती)

(3) जसा उपरोक्त नं० 2 में लिखा है । (बह व्यक्ति जिसके श्रिधभाग में सम्पति है,

(4) जो व्यक्ति सम्पति में रिश्व रखता है। (बह व्यक्ति जिसके बारे में अधोहस्ताक्षरी जानता है कि बह सम्पति में हितबद्ध है

को यह स्पाना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हूं।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन के संबंध में कोई भी आक्षेप :--

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविध, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति दुवारा;
- (स) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशत की तारीस से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हित- बद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिसित में किए जा सकोंगे।

स्पष्टिक रण: -- इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम के अध्याय 20-क में परिभाषित है, वही अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनसची

व्यक्ति तथा सम्पति जैसा कि विलेख नं० 180 दिनांक ग्रग्नैल 1982 की रिजस्ट्रीकर्सा ग्रधिकारी जेतू ने लिखा है।

जे० एल० गिरधर ॄसक्षम प्राधिकारी सहायक स्नायकर श्रायुक्त (निरीक्षण) स्नर्जन रेंज जालन्धर

तारीख ः ी 10-12-82 । मोहरः प्ररूप० धाई • टी • एत • एस • -----

पायकर प्रधिनियम, 1961 (1961 का 43) की घार। 269-व (1) के प्रधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक बायकार आयुक्त (निरीक्षण) ग्रर्जन रेंज, जालन्धर

जालन्धर, विनांक 10 विसम्बर 1982

निर्देश सं० ए० पी० नं० 3706—यतः मुक्के जे० एल० गिरधर,

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात 'उक्त अधिनियम' कहा गया हैं), की धारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मृल्य 25,000/- रा. से अधिक हैं

ग्रौर जिसको सं० जैसा कि श्रनुसूची में लिखा है तथा जो मुक्तसर में स्थित है (ग्रौर इससे उपाबद्ध में श्रनुसूची में श्रौर पूर्ण रूप में वर्णित है), रजिस्ट्रोकर्त्ता ग्रधिकारों के कार्यालय मुक्तसर में रजिस्ट्रीकरण श्रधिनियम 1908 (1908 का 16) के श्रधीन तारीख श्रप्रैल 1982

क अक्षान ताराख अप्रल 1982 को पूर्वोक्त सम्पक्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के वृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पक्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से, ऐसे दृश्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत से धिषक है और शस्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितियों) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्य से उन्त अन्तरण लिखित में बास्तविक रूप से कथित नहीं किया यया है:—

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत उक्त अधि-नियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्य में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए; और/या
- (ख) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को, जिन्हों भारतीय आय-कर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम या धन-कर क्षिणियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती व्यारा प्रकट नहीं किया गया भा या किया जाना चाहिए था, कियाने में सुनिधा के लिए;

जतः जब उनत् विधिनियम की भाग 269-ग के ननुसरण में, में, उनत निधिनियम की भाग 269-ण की उपभाग (1) के अधीन, निम्निलिसित व्यक्तियों, अधीत ह——

- (1) श्रो लाभ सिंह ग्राहमा सिंह भीर सोहन सिंह पृत लाल सिंह वासी गांव उदयकरण तहसील मुम्तसर (ग्रन्रक)
- (2) श्री सुरजीत सिंह पुत्र श्रवतार सिंह, वासी चक्क पालीवाला तहसील फिजलका

(ग्रन्तरिती)

- (3) जैसा कि उपरोक्त नं० 2 में लिखा है। (वह गक्ति जिसके ग्रिधिभोग में सम्पति है)
- (4) जो व्यक्ति सम्पत्ति में रुचि रखता है। (वह व्यक्ति जिसके बारे में प्रधोहस्ताझरी जानता है कि वह सम्पति में हितबद्ध है

को पह सूचना कारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के प्रर्जन के लि**ए कार्यवादियां** शुरू करता हूं।

जनत सम्पत्ति के धर्मन के सम्बन्ध में कोई भी प्राक्षेप :---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारी वा से 45 बिन की अविध या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की जबिध, जो भी जबिध बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वीकत व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (अ) इस सूचना के राजपूज में प्रकाशन की तारी अ से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर संपत्ति में हित-बद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधाहस्ताकरी के पास लिखित में किए जा सकेंगे।

स्यव्यक्तिरणः --इसमें प्रयुक्त कव्यों और पर्यों का, जो उक्त किंध-नियम के अध्याय 20-के में परिशायिक हैं, वहीं वर्ष होगा, जो उस अध्याय में ब्रिया प्या है।

वनवर्षा

व्यक्ति तथा सम्मति जसा कि विलेख नं 10 दिनांक ग्रप्नैल 1982 को रजिस्ट्रीकर्त्ता ग्रधिकारी मुक्तसर में लिखा है।

> जे० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी सहायक ग्रायकर श्रायुक्त (निरीक्षण) ग्रर्जन रज, जालन्धर

तारीख 10-12-82 मोहर: प्रकप आई० दी• एन• एस•---

गायुकर विभिनियमा, 1961 (1961 का 43) की भारा

269- घ (1) के अधीन स्चना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक श्रायकर श्रायुक्त (निरीक्षण)

श्रर्जन रेंजे जालन्धर

जालन्धर, दिनांक 10 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० ए० पो० नं० 3708—यतः मुझे जे० एल० गिरधर,

भायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके परवात् 'उक्त मधिनियम' कहा गया हैं), की धारा 269- ख के अधीन सक्षम प्रधिकारी को, यह विद्यास करने का कारण हैं कि स्थावर सम्पत्ति जिसका उचित बाजार मूल्य, 25,000/- कि. से अधिक हैं

ग्रौर जिसकी सं० जैसा कि अनुसूची में लिखा है तथा जो मुक्तसर में स्थित है (ग्रौर इससे उपाबद्ध में अनुसूची में और पूर्ण रूप में विणत है), रजिस्ट्राकरर्ती ग्रिधिकारी के कार्यालय मुस्तसर में रजिस्ट्राकरण ग्रिधिनियम 1908 (1908 का 16) के श्रधीन तारीख श्रप्रैल 1982

को पूर्वा क्ल संपत्ति के उचित बाजार मृल्य से कम के दर्यकान अतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुक्ते यह विद्वास करने का कारण है कि यथापूर्वा कते संपत्ति का उचित बाजार मृल्य, उसके दर्यमान प्रतिफल से एसे दर्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिकात से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकां) और अन्तरिती (अन्तरितियों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तथ पाया गया प्रतिफल, निम्निलिखत उद्वेष्य से उक्त अन्तरण लिखित में वास्तिक रूप से कथित नहीं किया गया है:——

- (क) जन्तरण से हुइं किसी जाय की बाबत उक्त जीध-नियम के अधीन कर दोने के अन्तरक की दायित्व में कभी करने ना उससे बचने में सुविधा के लिए; और/या
- (क) एसी किसी भाग या किसी भन या अन्य आस्तियों क्यो, जिन्हें भारतीय भागकर निभिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धनकर अधिनियम, या धनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती ब्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुनिधा के लिए;

अतः अव, उक्त अभिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण में, मैं, उक्त अभिनियम की धारा 269-घ की उपभारा (1) के अभीन, निम्नलिखित व्यक्तियों, अर्थात् :----

- (1) श्रा चन्द कोर श्रोर जगीर कौर पुत्री काला सिंह पुत्र हरी मिंह वासी मलौट रोड़, मुम्तसर
 - (भ्रन्तरक)
- (2) श्री बलराज सिंह पुत्र गुरबख्श सिंह वासी गांव नन्दगड मुम्तसर
 - (भ्रन्तरिती)
- (3) जैसा उपरोक्त नं० 2 में लिखा है। (वह व्यक्ति जिसके श्रिथभोग में सम्पित है)
- (4) जो व्यक्ति सम्पति में हिच रखता है। (वह व्यक्ति जिसके बारे में प्रधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पति में हितबद्ध है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करक्षा हुं।

उक्त सम्पृतित के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप :---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारी वासे 45 विन की अविधिया तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीत्र पूर्वाक्त
- (क) इस सूचना को राजपत्र मो प्रकाशन की तारीं से 45 दिन को भीतर जक्त स्थावर संपरित मो हित-बयुध किया असर त्याकित द्यारा अश्वीदरनाक्षरी को पास लिखिस मो किए जा सकरेंगे।

स्वकारिकरण्ड्--इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम के अध्याय 20-क में परिभाषित है, वहीं अर्थ होना जो उस अध्याय में दिया ग्या है।

अनुसूची

व्यक्ति तथा सम्पति जैसा कि विलेख नं० 197 दिनांक श्रप्रैल 1981 को रिजस्ट्रीकर्त्ता ग्रधिकारी मुक्तसर में लिखा है।

जे० एस० गिरधर स**क्षम प्राधिकारीं** सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) धर्जन रोंज जालस्घर

तारी**च** 10-12-82 मोहर: प्रकृप बाई. टी. एन. एस.-----

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-घ (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, महायक आयकर आयक्त (निरीक्षण)

ग्रर्जन रेज, जालन्धर

जालन्धर, दिनांक 10 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० ए० पी० नं० 3709—यत. मुझे, जे० एल० गिरधर.

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-स के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- रु. से अधिक है

ग्नौर जिसकी सं० जैसा कि ग्रनुसूची में लिखा है तथा जो मुक्तसर में स्थित है (भ्रौर इसमें उपाबद्ध में ग्रनुसूची में ग्रौर पूर्ण रूप में वर्णित है), रिजस्ट्रीकर्ता श्रिधकारी के कार्यालय मुक्तसर में, रिजस्ट्रीकरण ग्रिधिनियम 1908 (1908 का 16) के श्रिधीन तारीख श्रीत 1982

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के द्रश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके द्रश्यमान प्रतिफल से, ऐसे द्रश्यमान प्रतिफल का पंद्रह प्रतिशत अधिक है और अंतरक (अंतरकों) और अंतरिती (अन्तरितियों) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखित में वास्तिक रूप से किथत नहीं किया गया है:——

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे अवने में सुविधा के लिए; बीर/या
- (ख) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य बास्तियों को, जिन्हों भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम या धनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती ब्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था छिपाने में सुविधा के लिए;

अतः अब, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण में, मैं, उक्त अधिनियम की धारा 269-घ की उपधारा (1) के अधीन, निम्नलिक्ति व्यक्तियों, अर्थात् :-- (1) श्री उजागर सिंह पुत्र गुरमख सिंह पुत्र उजागर सिंह, वासी बंदा, मुक्तसर ।

(भ्रन्तरक)

- (2) श्री नछतर मिह मिन्द्र सिह श्रवतार सिंह सुपुत्र करनैल सिह वासी नजदीक छोटा तालाब, मुक्तसर (श्रन्तरिसी)
- (3) जैसा उपरोक्त न० 2 में लिखा है। (वह व्यक्ति जिसके ग्रिधिभोग में सम्पति हैं)
- (4) जो व्यक्ति सम्पति में मिल रखता है। (वह व्यक्ति जिनके बारे में प्रघोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पति में हितबद्ध है।

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां श्रुक करता हूं।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षोप .--

- (क) इस सूचना के राजपक्ष में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अविध या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविध, जो भी अविध बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वीकत व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (ख) इस मूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हित- बद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहरताक्षरी के पास लिखित में अन्य किए जा सकींगे।

स्पष्टीकरण: ---इसमें प्रयुक्त बन्दों और पदों का, जो उनते अधिनियम के अध्याय 20-क में परिभाषित है, वहीं अर्थ होगा, जो उस अध्याय में दिया गया है।

अम्सूची

व्यक्ति तथा सम्पति जैसा कि विलेख नं० 194 विनांक ग्रप्रल 1982 को रजिस्ट्रीकर्त्ता ग्रधिकारी मुक्तसर ने लिखा है।

> जे० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) ग्रर्जन रेंज, जालन्धर

तारी**ख**: 10-12-82

मोहर 🕄

प्रारूप आई.टी.एन.एस. ------

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-घ (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण)

श्रर्जन रेंज, जालन्धर

जालन्धर, दिनांक 10 दिसम्बर 1982

निर्देश स्० ए० पी० नं० 3710--यतः मुझी, जे० एल० गिरधर,

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके परवात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-ल के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर मंपित, जिसका उचित बाजार मृल्य 25,000/- रु. से अधिक है

श्रौर जिसकी मं० जैसा कि नीचे की श्रनुसूची में लिखा है तथा जो मुक्तसर में स्थित है (श्रौर इससे उपाबद्ध श्रनु-सूची में श्रार पूर्ण ग्प से बर्णित है), रजिस्ट्रीकर्ता श्रिधकारी के कार्यालय मुक्तसर में रजिस्ट्रीकरण श्रीधनियम, 1908 (1908 का 16) के श्रधीन नारीख श्रप्रैल 1982

(1903 पर 16) पर अवान नाराख अप्रण 1932
को पूर्वोक्त संपित के उचित बाजार मूल्य से कम के दृश्यमान
प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मूफे यह विश्वाम
करने का कारण है नि यथापूर्वोक्त संपित्त का उचित बाजार
मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल मे, एसे दृश्यमान प्रतिफल का
पन्द्रह प्रतिशत अधिक है और अन्तरक (अन्तरको) और
अन्तरिती (अन्तरितियों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय
पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण
लिखित में वास्तविक रूप से किथत नहीं किया गया है:--

- (क) अन्तरण से हुई किसी आथ की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में स्विधा के लिए; और/या
- (स) ऐसी किसी आय या किसी धन अन्य आस्तियों को जिन्हों भारतीय आयक,र अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उन्तत अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा के लिए।

अतः अब, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के, अन्सरण में, मैं, उक्त अधिनियम की धारा 269-घ की उपधारा (1) के अधीन, निम्निलिखित व्यक्तियाँ, अर्थत् :---

- (1) श्री हरगोबिन्द सिंह ग्रीर करनैल सिंह सुपुल गुलाब सिंह, वासी गांव जानीसर, तहसील मुक्तसर। (ग्रन्तरक)
- (2) श्री विनोद कुमार नरिन्द्र कृमार सुमृत नथु राम, वासी गली धनसिंह, मुक्तसर।

(भ्रन्तरिती)

- (3) जैसा उपरोक्त नं० 2 में लिखा है। (वह व्यक्ति, जिसके ग्रिधिभोग में सम्पति है।)
- (4) जो व्यक्ति सम्पति में रुचि रखता है। (बह व्यक्ति, जिनके बारे में ग्रधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पत्ति में हितबद्ध है,)

को यह सूचना जारी करके पूर्वेक्ति संपित्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हूं।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप .:--

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की जबिध या तत्संबंधी व्यक्तित्यां पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में में किसी व्यक्ति ब्वारा;
- (ब) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हित- बद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहम्ताक्षरी के पास निश्वित में किए जा सकेगे।

स्पद्धीकरण:--इसमे प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं, बही अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनुसूची

व्यक्ति तथा सम्पति जैसा कि विलेख नं० 89 दिनांक श्रप्रैल 1982 को रजिस्ट्रीकर्ता श्रिधकारी मृक्तसर ने लिखा है।

> जे० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी सहायक ग्राथकर ग्रायुक्त (निरीक्षण) ग्रर्जन रेंज, जालन्धर

नारीख: 10-12-82

प्ररूप आर्दे टीं एन एस ----

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-घ (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण)

भ्रर्जन रेंज, जालन्धर

जालन्धर, दिनांक 10 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० ए० पी० नं० 3711—यतः मुझे, ज० एल० गिरक्षर,

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात 'उक्त अधिनियम' कहा गया हैं),, की आरा 269- स के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण हैं कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मृल्य 25,000 र. से अधिक हैं

ग्रौर जिसकी सं० जैसा कि श्रनुसूची में लिखा है तथा जो मुक्तमर में स्थित है (ग्रौर इससे उपाबद्ध श्रनुसूची में ग्रौर पूर्ण रूप से वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्त्ता श्रिधकारी के कार्यालय मुक्तसर में रजिस्ट्रीकरण ग्रिधिनयम 1908 (1908 का 16) के श्रधीन तारीख श्रप्रैल 1982

को पूर्वों क्त सम्पत्ति के उचित बाजार मृख्य से कम के रूपमान प्रतिफल के लिए अंतरित की गई है और मुक्ते यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वों क्त संपर्तित का उचित बाजार मृख्य, उसके रूपमान प्रतिफल से, एसे रूपमान प्रतिफल का पन्त्रह प्रतिकात अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तर-रिती (अन्तरित्यों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल निम्नलिखित उद्देश्य से उक्ट अन्तरण लिखित मे वास्तिक रूप से कथित नहीं किया गया है हि—

- (क) अन्तरण से हुइ किसी आय की बाबस, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्य यो अभी करने या अक्षसे बचने में सुविधा के लिए; और√या
- (क) ऐसी किसी बाय या किसी धन या अन्य बास्तियों को, जिन्हों भारतीय आय-कर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या भन-कर अधिनियम, या भन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में मृतिधा के लिए;

- (1) श्री जुगराल सिंह श्रीर गुरदयाल सिंह सुपुन गुलाव सिंह, वामी गाव जानीसर तहसील मुक्तसर। (ग्रन्तरक)
- (2) श्री निरन्द्र कुमार ितोद तमार सपुत्र नश्राम वासी गली धन् सिह, म्क्तसर । (ग्रन्तरिती)
- (3) जैसा उपरोक्त नं० 2 में लिखा है। वह व्यक्ति जिसके श्रिधभोग में सम्पति है)
- (4) जो व्यक्ति सम्पति में र्गाच रखता है। (वह व्यक्ति जिनके बारे में श्रधोहस्ताक्षरी जानता है कि यह मम्पति में हितबद्ध है)

को यह सूचना जारी करके पृक्षोंकत सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हुं।

उक्त सम्परित के जर्जन के सम्बन्ध में कोई भी धार्कपः--

- (क) इस सूचना को राजपत्र में प्रकाशन की तारीब से 45 दिन की जबधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अवधि, जो भी अवधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वाक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की सारीस से 45 दिन के भीतर उत्तर स्थावर सम्पत्ति में हिनबव्य किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधाहस्ताक्षरी के पास सिखित में किए टा सकेंगे।

स्पक्तीकरणः — इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित है, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनुसूची

व्यक्ति तथा सम्पति जैसा कि विलेख न० 88 दिनांक अप्रेल 1982 को रजिस्ट्रीकर्त्ता भ्रधिवारी मुक्तसर ने लिखा है।

> जे० एल० गिरधर मक्षम प्राधिकारी महायक ग्रापकर ग्रायुक्त (निरीक्षण) श्रर्जन रेज, जालन्धर

अतः अब, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अन्सरण में, मैं, उक्त अधिनियम की धारा 269-घ की उपधारा (1) के बुधीन, निम्नुलिहित व्यक्तियों, बुधित :---

तारीख: 10-12-82

प्ररूप आहर्. टी. एन. एक.,-----

शायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269- घ (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण)

अर्जन रोज, जालन्धर

आलन्धर, दिनांक 10 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० ए० पी० नं० 3712---यतः मुझे, जे० एल० गिरधर,

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें 269-स को अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विख्यास करने का कारण हैं कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- रुट. से अधिक हैं

ग्रीर जिसकी सं० जैसा कि ग्रनुसूची में लिखा है तथा जो मुक्तसर में स्थित है (श्रीर इससे उपाबत श्रनुसूची में पूर्ण रूप से विणित है), रिजस्टीकर्सा भ्रधिकारी के कार्यालय मुक्तसर, में रिजस्ट्रीकरण श्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के श्रधीन तारीख श्रप्रैल 1982

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के स्थ्यमान प्रतिफल के लिए अंतरिती की गई है और मुक्के यहिवस्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके स्थ्यमान प्रतिफल से, एसे स्थ्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अंतरक (अंतरकों) और अंत-रिती (अंतरितियाँ) के बीच एसे अंतरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल निम्नलिखित उद्योध्य से उक्त अंतरण लिखित में वास्तिविक रूप से किथित नहीं किया गया है:----

- (क) अंतरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्स अधिनियम के अधीन कर देने के अंतरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में सूविधा के लिए; और/या
- (ख) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सूबिधा के लिए।

(1) श्री मजायथ सिंह श्रीर श्रंग्रेज का सिंह पुत्र हरगोबिन्द सिंह श्रिंग्वयासिंह गुरदेव सिंह उरेफ कलदेव सिंह श्रीर हाकम सिंह श्रीर नाथव सिंह पुत्र जुगराज सिंह श्रीर श्रमित नन्दकौर माता डैपुदी सिंह श्रीर मुखदेव सिंह पुत्र गुरदयाल सिंह वासी जानीसर तहसील मक्तसर

(श्रन्तरक)

- (१) श्री नोरन्द्र कुमार ग्रौर विनोद कुमार पुत्र नत्थू राम वासी धनृ सिंह गली, मुक्तसर। (ग्रन्सरिती)
- (3) जैसा उपरोक्त नं० 2 में लिखा है। (वह व्यक्ति जिसके ग्रिधिभोग में सम्पति है)
- (4) जो व्यक्ति सम्पति में रुचि रखता है। (वह व्यक्ति, जिनके बारे में भ्रधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पति में हितबद्ध है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हुं।

उक्त सम्पत्ति के मर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप :----

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारील से 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविध, जो भी अविध बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति व्वारा;
- (ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखिस में किए जा सकोंगे।

स्थव्यक्तिरणः -- इसमें प्रयुक्त शब्दों और पवाँका, जो उक्त अभिनियम के अध्याय 20-क में परिभाषित हौं, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अमृस्**ची**

ि व्यक्तियों तथा सम्पति जैसा कि विलेख[ा]न० 87 दिनांक श्रप्रैल 1982 को रजिस्ट्रीकर्त्ता श्रधिकारी मक्तसर ने लिखा है।

> जै० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी | सहाय : श्रायकर् ग्रायुक्त (निरीक्षण) श्रर्जन रेज, जालन्धर्

अतः अब, उत्त अधिनियम की भारा 269-ग के अनुसरण में, मैं, उत्त अधिनियम की भारा 269-म की उपभारा (1) के अभीन, निम्नीलिसित व्यक्तियों, अर्थात् :---

़ैतारीख: 10-12-82

प्ररूप आर्हेटी एन एस - -----कर अधिनियस . 1961 (1961 का 43) की भारा

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-घ (1) के अधीन मूचना

भारत सरकार

कार्यालयः, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण)

धर्जन ^{हे} ज, जालन्धर

जालन्ध्रर, दिनाक 10 दिसम्बर 1982

निर्देश स०ए० पी० न० 3713——यन , मुझे, जे० एल० गिरधर,

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके परचात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-म के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मृल्य 25,000/- रह से अधिक है

ग्रौर जिसकी स० जैंसा कि प्रनुसूची में लिखा है तथा जो मुक्तसर में स्थित है (ग्रौर इसमें उपाबद्ध ग्रनूसूची में ग्रौर पूर्ण स्प सं विजित है), रिजिस्ट्रीकर्ता ग्रीधिकारी के कार्यालय मुक्तसर में रिजिस्ट्रीकरण प्रिधिनियम 1908 (1908 का 16) के ग्रिधीन नारीख ग्रिप्रैल 1982

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मूझे यह विद्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से, एसे दृश्यमान प्रतिफल का पद्रह प्रतिशत अधिक है और अन्तरक (अतरको) और अतरिती (अंतरितियो) के बीच एस अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्यों से उक्त अतरण लिखित में भास्तिक रूप से कथित नहीं किया गया है ——

- (क) अन्तरण में हुई किसी आय की बाबता, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्व में कभी करने या उससे बचने में स्वि**धा** के लिए, और/या
- (ल) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को जिन्हों भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ जन्मी रनी दनारा पकट नहीं किया गया था एन किया जाना चाहिए था, छिपाने में सविधा के लिए।

अत अव, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग **के अनसरण** मा, मी, उक्त अभिनियम की धारा 269-**घ की उपधारा** (1) के प्रतिन निम्नलिखिन व्यक्तियों, अर्थात् --- 9--416GI/82

(।) अजायय सिह भार क्रग्रेज सिह पुत्र गोबिन्द सिह श्रौर वृटा सिह नाथब सिह, वलद्द सिह उर्फ गरदेव सिह पुत्र, करनेल सिह श्रौर नायब सिह हाकम सिह पुत्र जुगराज सिह श्रौर श्रीमित नन्द बौर माता नैपुटी सिह श्रौर सुखदव सिह पुत्र गरदयाल सिह, वासी गाव जानीसर मुक्तसर।

(श्रन्तरक)

(2) श्री द्र्यभोक कुमार रविन्द्र कुमार पुत्र नत्थ् राम, वासी धनू सिंह गली मक्तासर।

(ग्रन्तरिती)

(3) जैसा उपरोक्त स० 2 मं लिखा है) (वह व्यक्ति, जिसके ऋधिमोग में सम्पत्ति है)

(4) जो व्यक्ति सम्पति में रुचि रखता है।
(वह व्यक्ति, जिनके बारे में ग्रधोहस्ताक्षरी
जानता है कि वह सम्पत्ति में हितबद्ध है)

को यह संचाना जारी करके पूर्वीक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हुं।

उक्त सम्परित के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप ---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीक्ष से 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वीक्स व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा.
- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबद्ध किसी अन्य ध्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकेंगे।

स्थळीकरणः --इसमा प्रयुक्त शब्दो और पदो का, जो उक्त अधिनियम के अध्याय 20-क मो परिभाषित हौ, बही अर्थ होगा जो उस अध्याय मो दिया गया है।

अनुसूची

र्य्यक्ति तथा सम्पति जैसा कि विलेख न० 74 दिनाक श्रप्रैल 1982 को रजिस्ट्रीकर्त्ता अधिकारी सक्तसर ने लिखा है।

> जे० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी सहायक श्रायकर श्रायुक्त (निरीक्षण) स्रर्जन रेज, जालन्धर

नारीख 10-12-82 मोहर: प्ररूप आइ. टी. एन. एस.-------

नायकर अधिनिय्म, 1961 (1961 का 43) की धारा २००६ (त्र वः अधार सूचना

भारत सरकार

कार्यालयः, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) ग्रजन रेज, जालन्धर

जालन्धर, दिनाक 10 दिसम्बर 1982

निर्देश स० ए० पी० न० 3714—यतः, मुझे, जे० एल० गिरधर,

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-स के अधीन सक्षम प्राधिकारी को, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पति, जिसका उचित बाजार मृल्यू 25,000/--रु. से अधिक है

यौर जिसकी स० जैसा कि नीचे की श्रनुसूची में लिखा है तथा जो मुक्तसर में स्थित है (ग्रौर इससे उपाबद्ध श्रनूसूची में ग्रौर पूर्ण रूप से वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्त्ता ग्रिधिकारी के कार्यालय मुक्तसर में रजिस्ट्रीकरण ग्रिधिनियम 1908 (1908 का 16) के भ्रधीन तारीख भ्रप्रैल 1982

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के दश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मूफे यह विश्वास करन का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य उसके दश्यमान प्रतिफल से, एसे दश्यमान प्रतिफल का पन्देह प्रतिशत से अधिक है और अन्तरक (अंतरका) और अंतरिती (अन्तरितियों) के बीच एसे अन्तरण के लिएत य पाया मया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्वेश्य से उक्त अन्तरण लिखित में वास्त-विक स्प से कथित नहीं किया गया हैं:—

- (क) अन्तरण से हाई किसी अपस की बाबत, उच्च अधिनियम के अधीन कर दाने के ब्लारक के दायत्व में कामी कारन या उसस बचन में सृविधा के लिए; जुड़/पा
- (ख) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धनकर अधिनियम, या धनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती व्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, डिपाने में सुविधा के लिए;

अतः अब, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण में, मैं, उक्त अधिनियम की धारा 269-व की उपधारा (1) के अधीन निम्नलिखित व्यक्तिक्रें, अर्थात् क्रिक् (1) ग्रजायब सिंह श्रौर श्रंग्रेज सिंह पुत्र हरगोबिन्द सिंह श्रौर बूटा सिंह गुरूदेव सिंह उरफ बलदेव सिंह पुत्र करनैल सिंह श्रौर नायब सिंह हाकम सिंह पुत्र जुगराज सिंह श्रौर नन्द श्रौर माता उपटी सिंह ग्रौर सुखदेव सिंह पुत्र गुरदयाल सिंह वासी जानीसर तहसील मुक्तसर।

(अन्तरक)

- (2) श्री श्रशोक कुमार श्रौर रिवन्द्र कुमार पुत्र नत्थू राम, वासी धनू सिंह गली, मुक्तसर । (श्रन्तरिती)
- (3) जँसा उपरोक्त नं० 2 में लिखा है। (वह व्यक्ति जिसके श्रिधभोग में सम्पति है)
- (4) जो व्यक्ति सम्पत्ति में रुचि रखता है। (वह व्यक्ति जिनके बारे में ग्रधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पति में हितबद्ध है)

को यह सूचना जारी कारके पूर्वों क्स सम्पत्ति को अर्थन को लिए कार्यवाहियां कारता हु।

उनत सम्पत्ति के वर्जन के सम्बन्ध में कोई वाकोप:--

- (क) इस तृषना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीबा से 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी बाबिध बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वों कर व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति व्वारा;
- (च) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबब्ध किसी अन्य व्यक्ति ब्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा मकोंगे।

ल्क्ष्यकिरणः - इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, षो उक्द अधिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं। वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनुसूची

ग्यक्ति तथा सम्पति जैसा कि विलेख नं० 86 दिनांक अप्रैल 1982 को रजिस्ट्रीकर्ता ग्रधिकारी मुक्तसर ने लिखा है।

> जे० ग्ल० **गिरधर** सक्षम प्राधिकारी सहायक आयक र आयुक्त (निरीक्षण) भ्रजैन रेंज, जालन्धर

तारीख: 10-12-82

प्ररूप आई. टी. एन. एस.-----

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-घ (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयक्त (निरीक्षण)

म्रर्जन रेंज, जालन्धर

जालन्धर, दिनांक 10 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० ए० पी० नं० 3715—यतः, मुझे, जे० एल० गिरधर,

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके परवात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-स के अधीन सक्षम प्राधिकारी की यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- रह. से अधिक है

ग्रौर जिसकी सं० जैसा कि श्रनुसूची में लिखा है तथा जो मलौट में स्थित है (ग्रौर इससे उपाबद्ध अनूसूची में श्रौर पूर्ण रूप से वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्त्ता ग्रिधिकारी के कार्यालय मलौट में रजिस्ट्रीकरण श्रिधिनियम, 1908 (1908 का 16) के श्रिधीन तारीख श्रिप्रैल 1982

को पूर्वोक्त सम्परित के उचित बाजार मूल्य से कम के रूथमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मूम यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्परित का उचित बाजार मूल्य, उसके दूरयमान प्रतिफल से, एसे दूरयमान प्रतिफल का पंत्रह प्रतिशत अधिक है और अंतरक (अंतरकों) और अंतरिती (अन्तरितियों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देष्य से उक्त अन्तरण लिखित में बास्तिवक रूप से कथित नहीं किया गया है:---

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्य में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए; और्/या
- (क) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को, जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम या धनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, खिपाने में सुविधा के लिए;

अतः अबं, उक्त अधिनियमं की धारा 269-ग के अनुसरण में, में, उक्त अधिनियम की धारा 269-घ की उपधारा (1) के अधीन, निम्निक्षित व्यक्तियों, अर्थात्:— (1) श्री जगराज सिंह पुत्र श्रर्जन सिंह वासी गांव मलौट, तहसील मलौट

(ग्रन्तरक)

(2) श्री राकेश कुमार पुत्र प्रशोतम लाल, वासी हरजी राम मण्डी, मलौट ।

(ग्रन्तरिती)

- (3) जैसा कि उपरोक्त नं० 2 में लिखा है। (वह व्यक्ति जिसके श्रिधिभोग में सम्पति है)
- (4) जो व्यक्ति सम्पति में रुचि रखता है। (वह व्यक्ति जिनके बारे में ग्रधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पति में हितकदा है)

को यह स्चना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हूं।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध मं कोई भी आक्षंप :~~

- (क) इस सूचना के राजपक में प्रकाशन की तारीख सं
 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर
 सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी
 अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वीवत
 व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (स) इस स्चना के राजपत्र में प्रकाशन की तारील में 45 दिन के भीतर उक्त स्थात्रर सम्पत्ति में हित-बद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधांहरताक्षरी के पास लिसित में किए जा सकींगे।

स्पष्टीकरण: ---इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उदत अधिनियम के अध्याय 20-क में परिभाषिक है, वहीं अर्थ होगा, जो उस अध्याय में विया गया है।

अनुसूची

च्यक्ति तथा सम्पति जैसा कि विलेख नं० 246 दिनांक अप्रैल 1982 को रजिस्ट्रीकर्ता ग्रिधिकारी मलौट में लिखा है।

> जे० एत० गिरधर सक्षम प्राधिकारी सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) प्रजैन रेंज जालन्घर

तारीख:10-12-82

प्ररूप आई .टी. एन . एस . -----

अभ्यकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की भारा 269-भ (1) के अभीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालयः, महायक आयकर आय्क्त (निरीक्षण) श्रर्जन रेज, जालन्धर

जानन्धर, दिनाक 10 दिसस्बर 1982

निर्देश स० ए०पी०न० 3616—यत, मुझे,

जे०एल० गिरधर,

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके परचात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-स के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- रा. से अधिक है

श्रौर जिसकी म० जैसा कि अनुसूची में लिखा है तथा जो सलौट में स्थित है (श्रीर इसस उपाबद्ध श्रनूसूची में श्रौर पूर्ण रूप में वींगत है), रजिस्ट्रीकर्ता श्रीधकारी के कार्यालय मलौट में रजिस्ट्रीकरण ग्रीधिनयम 1908 (1908 का 16) के श्रीशन तारीख श्रीम 1982

को पूर्वाक्त मपित क उचित बाजार मृत्य में कम के दश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मृभ्ते यह विश्वाम करन का कारण है कि यथापूर्वाक्त मम्पित का उचित बाजार मृत्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल मं, एमें दश्यमान प्रतिफल का पद्गह प्रतिशत अधिक है और अन्तरक (अनरको) और अत्रिती (अन्तरितिया) के दीच एस अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल निम्नलिखित उद्देश्य सं उक्त अन्तरण लिखित में वाम्तिसक रूप सं श्रीधन नहीं किया गया है।

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उन्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में सुविधा केलिए; आर/या
- (क्) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियाँ को, जिन्हें भारतीय आय-कर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सूविधा के लिए;

अतः अब, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनूसरण में, मैं उक्त अधिनियम की धारा 269-घ की उपधारा (1) के अधीन, निम्निलिखिन व्यक्तियों, अर्थात् ---

(1) श्री बृटा सिंह पुत्र भीर सिंह द्वारा गितान सिंह पुत्र बूटा सिंह मुख्तयारे श्राम वासी मलौट, तहसील मलौट।

(भ्रन्तरक)

(2) श्रीमती सरोज मिगलानी पत्नी डा० ग्रवनाण मिगलानी, वासी वार्ड न० 9, ग्रबोहर।

(भ्रन्तरिती)

उ जैसाकि उपरोक्त न 6 में लिखा है। (वह व्यक्ति, जिसके अधिभाग में सम्पत्ति हैं)

4 जो व्यक्ति सम्पत्ति में रूचि रखता है।
(वह व्यक्ति, जिनके बारों मा अधाहम्ताक्षरी
जानता है कि वह सम्पत्ति मा हितबद्ध है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्स सपित के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हुं।

उक्त सपत्ति के बर्जन के सबंध में कोई भी आक्षेप :---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारी से 45 दिन की अविध या तत्सबंधी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविध, जो भी अविध बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा,
- (स) इस सृचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस सं 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर मपत्ति में हितबद्ध किसी बन्य व्यक्ति व्वारा अथोहस्ताक्षरी के पाम लिसित में किए जा सकोंगे।

स्पष्टीकरण:--इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित हु⁴, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनुसुची

व्यक्ति तथा सम्पति जैसा कि विलेख न० 234 दिनाक अप्रैल 1982 को रजिस्ट्रीकर्ना अधिकारी मलौट ने लिखा है।

> जे० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी सहायक आयकर आयुक्त (निरक्षिण) ग्रर्जन रेज, जालन्धर

नारीख 10-12-82 मोहर प्ररूप आहर . टी. एन. एस. -----

नायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की भारा 269-व (1) के ब्रधीन सूचना

भारत सरकार

कार्याल्य, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण)

ग्रर्जन रेज, जालन्धर

जालन्धर, दिनाक 10 दिसम्बर 1982

निर्देश म० ए० पी० नं० 3717—यतः मुझे, जे० एन० गिरधर,

स्रायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके परणात 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-ख के मंत्रीन सक्षम पाक्षिकारी की, यह विक्वास करने का सारण है कि स्थाबर संगति, जिसका छविष्य बाजार मूख्य 25,000/- रा. से अधिक है

भ्रीर जिसकी मं० जैस। कि भ्रनुसूवी में लिखा है तथा जो मलौट में स्थित है (भ्रीर इससे उपावद्व में भ्रनुसूवी में भ्रीर पूर्ण रूप से विणित है), रिजस्ट्रीकर्ता भ्रधिकारी के कार्यालय मलौट में रिजस्ट्रीकरण भ्रधिनियम 1908 (1908 का 16) के भ्रधीन तारीख भ्रभैल 1982

को पूर्वोक्त संपरित् के उधित बाजार मृत्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मृभ्ने यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उधित बाजार मृत्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से, एसे दृश्यमान प्रतिफल का पंद्रह प्रतिशत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अंतरिती (अन्तरितियों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रति-फल निम्नलिख्त उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखित में वास्तिक रूप से कथित नहीं किया गया है:——

- (क) अन्तरग संदुई िकता आय की बाबन खका ब्राध-नियम के प्रधीन कर देने के अक्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के सिए; ग्रीर/या
- (ख) ऐसी किसी आयं या किसी धार्या अन्य आस्तियों की, जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम या धनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के अयोजनायं अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया वा या किया जाना वाहिए वा, खियाने में सुविधा के लिए;

अतः अनं, उक्त अभिनियम की भारा 269-ग के अनुसरण में, में उक्त अभिनियम की भारा 269-च की उपभारा (1) के अभीन, निम्नलिखित व्यक्तियों, अर्थात् :--- (1) श्री सुशील कुमार पुत्र कुन्दन लाल द्वारा कुन्दन लाल, मुख्तयारे याम पुत्र लाल चन्द वासी गाव मलौट, तहसील मलौट

(ग्रन्तरक)

(2) श्री दर्शन सिंह वासी मलौट

(भ्रन्तरिती)

(3) जैसा कि उपरोक्त नं० 2 में लिखा। (वह व्यक्ति जिसके ग्रिधिभोग में सम्पति है)

(4) जो व्यक्ति सम्पति में रूचि रखता है। (वह व्यक्ति जिनके, बारे में प्रबोहस्ताक्षरी जानना है कि वह सम्पति में हितबद्ध है)

को यह सूचना जारी करके पृत्रों कत सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हुं।

उन्त सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप्:--

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविध, जां भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (स) इस सूचना के राजपत्र मो प्रकाशन की तार्राख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हित्बस्थ किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिसित में किए जा सकोंगे।

स्पव्यक्तिरण:—इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, तो उक्त अधिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं, वहीं अर्थ होंगा जो उस अध्याय में दिया गया हैं।

अनुसूची

व्यक्ति तथा सम्पति जैसा कि विलेख नं० 171 दिनाक भ्रप्रैल 1982 की रजिस्ट्रीकर्ता भ्रधिकारी मलौट ने लिखा है।

> जे० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी सहायक ग्रायकर ग्रायुक्त (निरीक्षण) श्रर्जन रेंज, जालन्धर

मारी**ख**: 10-12-82

प्ररूप आई.टी.एन.एस.-----

भायकर अभिनियम, 1961 (1961 का 43) की भारा 269-भ (1) के अधीन सुचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयक र आयक्त (निरक्षिण)

श्रर्जन रेंज, जालन्धर जालन्धर, दिनांक 10 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० ए० पी० नं० 3718—यतः मुझे, जे० एल० गिरधर,

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पदचात 'उकत अधिनियम' कहा गया है), की भारा 269 के अधीन स्थाम प्राधिकारी को यह विद्यास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मृत्यु 25,000/- रु. से अधिक है

भौर जिसकी सं० जैसा कि ध्रनुसूची में लिखा है तथा जो मलीट में स्थित है (भौर इससे उपाबद्ध में ध्रनूसूची में भौर पूर्ण रूप से वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्ता श्रधिकारी के कार्यालय मलौट में रजिस्ट्रीकरण श्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के भ्रधीन तारीख भरील 1982

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के वृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुक्ते यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त संपत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके इश्यमान प्रतिफल से, एसे दश्यमान प्रतिफल का पंत्रह प्रतिशत से अधिक है और अंतरक (अंतरकों) और अंतरिती (अन्तरित्यों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण निस्ति में बास्तविक रूप से कथित नहीं किया गया है

- (क) अन्तरण से हुई किसी भाग की भागत, उक्त बिधिनियम के अभीन कर दोने के अन्तरक के दाबित्व में कभी करने या उसते कुचने में सुमिधा के लिए; और/मा
- (क) ऐसी किसी आय या किसी धन या जन्य अस्तियों को, जिन्हों भारतीय आय-कर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उन्तर अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया धा या किया जाना वाहिए था, कियाने में स्विधा के निए;

(1) श्री अगदीश राय, नन्द लाल, मोहन लाल सुपुत्र हाकम राम वासी वार्ड नं० 3 श्रबोहर

(मन्तरक)

(2) श्री नन्दराम पुत्र भगवान राम वासी हरजी रामा मण्डी, मलौट।

(भ्रन्तिरती)

- (3) जैसा कि उपरोक्त नं० 2 में लिखा (वह व्यक्ति जिसके ग्रिधिभोग में सम्पति है)
- (4) जो व्यक्ति सम्पति में रुचि रखता है। (बह व्यक्ति जिनके बारे में घ्रधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पति में हितबद्ध है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त संपत्ति के अर्जन के लिए कार्यनाहियां करता हुं।

उन्त संपत्ति के अर्थन के संबंध में कोई भी आक्षेप :---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारील से 45 विन की अविधि या तत्संबंधी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में स्माप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्स व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर संपत्ति में हितबक्ष किसी अन्य व्यक्तिकों क्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास सिसित में किए जा सकारी।

स्पष्टीकरण:—-इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित ह¹, वही अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

धनुसूची

व्यक्ति तथा सम्पति जैसा कि विलेख नं० 156 दिनांक ग्रप्रैल 1982 को रजिस्ट्रीकर्ता ग्रधिकारी ने लिखा है।

> जं० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी सहायक भ्रायकर भ्रायुक्त (निरीक्षण) भ्रजीन रेंज, जालन्धर

अतः अब, उस अधिनियम, की धारा 269-ग के अनुसरण में, में, उस जिधिनियम की धारा 269-घ की उपवारा (1) के अधीन, निम्निलिखित व्यक्तियों, अर्थात् .——

तारीख : 10-12-82

प्ररूप बार्च. टी. एन्. एस., ----

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की भारा 269-घ (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण)

ग्रर्जन रेंज, जालन्धर

जालन्धर, दिनांक 10 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० ए० पी० नं० 3719—यतः मुझे, जे० एल० गिरधर,

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया हु"), की धारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी की यह विश्वास करने का कारण हुँ कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मृल्य 25,000/- रुपये से अधिक हुँ

ग्रौर जिसकी सं० जैसा कि श्रनुसूची में लिखा गया है तथा जो मलौट में स्थित है (ग्रौर इससे उपाबद्ध श्रनुसूची में ग्रौर पूर्ण रूप से विणित है), रिजस्ट्रीकर्त्ता श्रधिकारी के कार्यालय मलौट में रिजस्ट्रीकरण श्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के ग्रधीन तारीख श्रप्रैल 1982

को पूर्वा नित संपत्ति के उचित बाजार मृत्य से कम के इत्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुक्ते यह विश्वास करने का कारण है कि यथापृवींक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मृत्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से, एसे दृश्यमान प्रतिफल का पन्त्रह प्रतिशत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितियों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय शवा गया प्रतिफल, निम्नलिचित उद्युष्ट य से उक्त अन्तरण लिचित में वास्तविक रूप से कथित नहीं किया गया है:----

- (क) अन्तरण से हुई किसी क्षाय की बाबत, उक्त अधिनियम के अभीन कर दोने के अन्तरक के वायित्व में कभी करने या उससे स्थने में सुविधा के लिए; और/या
- (का) ऐसा किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को, जिन्हें भारतीय जायकर अधिनियम 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया धा या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सविधा के लिए;

अतः अब उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण मं, में उक्त अधिनियम की धारा 269-व की उपधारा (1) के अधीन निम्निल्खित व्यक्तियों अर्थातु:--

- (1) श्री जगराज सिंह पुत्र प्रर्जन सिंह वासी मलौट। (श्रन्तरक)
- (2) श्री श्रशोक कुमार पुत्र श्रमर नाथ नासी मलौट तहसील मलौट।

(ग्रन्तरिती)

- (3) जैसा उपरोक्त नं० 2 में लिखा है। (वह व्यक्ति जिसके ग्रिधिभोग में सम्पति है)
- (4) जो व्यक्ति सम्पति में रुचि रखता है। (बहु व्यक्ति जिसके बारे में श्रधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पति में हितबद्ध है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वीक्त सम्पर्तित के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हुं।

जनत सम्परित के अर्जन के सम्बन्ध में को**इं** भी नाक्षेप:--

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख सै 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियाँ पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविध बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त, व्यक्तियों में से किसी ध्यक्ति द्वारा;
- (स) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हित-बद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा, अधोह स्ताक्षणी के पाम निस्ति में किए जा सकरेंगे।

स्पष्टीकरण: --- इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का जो उक्त अधिनियम, के अध्याय 20-क में परि-भाषित हैं, वही अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनुसुची

व्यक्ति तथा सम्पति जैसा कि विलेख नं० 54 विनांक श्रप्रैल 1982 को रजिस्ट्रीकर्ता ग्रिधिकारी ने लिखा है।

> जे० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी सहायक श्रायकर श्रायुक्त (निरीक्षण) श्रर्जन रेंज, जालन्धर

तारीखा 10-12-82 मोहर: प्रकृप आई. टी. एन. एस.----

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-भ(1) को अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक भायकर भायकर (निरीक्षण)

अर्जन रेज, जालन्धर जालन्धर, दिनाक 10 दिसम्बर 1982

निर्देश म० ए० पी० २० 3720—यन मुझे, जे०एल० जिस्सर

भायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को, यह विश्वाम करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- रु. से अधिक है

श्रीर जिसकी सं० जैसा कि अनुसूची में लिखा गया है तथा जो मलौट में स्थित है (और इससे उपाबद्ध में अनुसूची में और पूर्ण रूप से विणित है), रजिस्ट्रीकर्सा अधिकारी के कार्यालय मलौट में रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन तारीख अप्रैल 1982

को पूर्वोक्त संपरित के उचित बाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मूक्ते यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त संपति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से, एसे दृश्यमान प्रतिफल के पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अंतरक (अंतरकों) और अंतरिती (अंतरितयों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखित में वास्तिवक रूप से किथत नहीं किया गया है:—

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत उक्त अधिनियम के अधीन फद दोने के जन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में सृविधा के लिए; और/या
- (ख) एसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों की जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा के लिए;

अत: अब उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण में, में, उक्त अधिनियम की धारा 269-घ की उपधारा (1) के अधीन, निम्निलिखित व्यक्तियों, अर्थात् —

(।) श्री कभमीरं लाल सुपृत्र दण्याण्चन्द वासी मलौट नहमील मुक्तसर।

(ग्रन्तरक)

(2) श्री मुरजीत सिंह, साजन सिंह, सुख मिन्द्र सिंह सपुत्र बगा सिंह वासी गांव मलौट मुक्तसर

(ग्रन्तरिती)

- (3) जैसा उपरोक्त न० 2 में लिखा है। (वह व्यक्ति जिसके अधिभोग में सम्पित है)
- (4) जो व्यक्ति सम्पति मे र्हाच रखता है। (वह व्यक्ति जिनके वारे मे ग्रधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पति मे हितबद्ध है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त संपरित के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हुं।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप:--

- (क) इस स्चान के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अविधि या तत्संबंधी व्यक्तियों पर स्चान की शामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तिया में स किसी व्यक्ति द्वारा,
- (च) इस सूचना की राजपत्र में प्रकाशन की तारी करें 45 विन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबब्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिकित में किए जा सकोंगे।

स्कटीकरण.—इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित वही प्रयं होगा जो उस ग्रध्याय में दिया मया है।

अनुसूची

व्यक्ति तथा सम्पति जैसा कि विलेख नं० 297 दिनाक प्रप्रैल 1982 के रिजम्ट्रीकर्ना प्रधिकारी मलौट ने लिखा है।

> जे० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी महायक आयकर आयक्त (निरीक्षण) श्रर्जन रेज, जालन्धर

नारीख 10-12-82 मोहर प्ररूप आई.टी.एन.एस. ------

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-ध (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक श्रायकर ग्रायुक्त (निरीक्षण)

म्पर्जन रेंज जालन्धर

जालन्धर, दिनाक 10 दिसम्बर 1982

निर्देश मं० ए० पी० नं० 3721—यत: मुझे, जे० एल० गिरधर,

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके परचात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-स के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- रु. से अधिक है

ग्रौर शिसकी सं० जैसा कि ग्रनुसूची में लिखा गया है तथा जो भलौट में स्थित है (ग्रौर इससे उपाबद्ध में ग्रनूसूची में ग्रौर पूर्ण रूप से विणित है) रिजस्ट्रीकर्त्ता ग्रिधकारी के कार्यालय मलौट में रिजस्ट्रीकरण ग्रिधिनियम, 1908 (1908 का 16) के ग्रिथीन तारीख ग्रुप्यैल 1982

को पूर्वोक्त संपत्ति के उषित बाजार मूल्य से कम के छ्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुक्ते यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पर्ति का उचित बाजार मूल्य उसके छ्यमान प्रतिफल से, एसे छ्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितियों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल निम्नलिखित उद्वेष्य से उक्त अन्तरण लिखित में वास्तिक छप से कथित नहीं किया गया है:——

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्स अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए, और/या
- (ख) एसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को, जिन्हें भारतीय आय-कर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अंतरिती ख्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सविधा के लिए;

अतः अब, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अन्सरण में, मैं, उक्त पिधिनयम की धारा 269-घ की उपधारा (1) के अधीन निम्निस्मित व्यक्तियों, अर्थीत् :---

(1) श्रःमती शान्त विधवा मेवा सिंह वासी गांव मलौट तहसील मुक्तसर।

(ग्रन्तरक)

(2) श्री जसपाल मिह, गुरपाल सिह सुपुत्र श्रूहरसिंह विकं खेरा, मुक्तसर।

(ग्रन्तरिती)

(3) जैसा उपरोक्त नं० 2 में लिखा है। (वह व्यक्ति, जिसके अधिभाग में संपत्ति हैं)

(4) जैसा उपरोक्त नैं० 2 मे लिखा है (वह व्यक्ति जिसके बारे में ग्रधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पति में हितबद्ध है।)

को यह सूचना आरी करके पूर्वों क्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हुं।

उक्त सम्पत्ति के वर्जन के सम्बन्ध में कोई भी वाक्षेप: --

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 विन की अविध या तत्संबंधी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविध, जो भी अविध बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पृषांकित व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा,
- (ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकोंगे।

स्याद्धीकरण: — इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं, वही अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

जनसची

व्यक्ति तथा सम्पति जैसा कि विलेख नं० 78 दिनाक भ्रम्नैल 1982 के रजिस्ट्रीकर्त्ता श्रधिकारी मुक्तसर के लिखा है।

> जे० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी सहायक आयकर साय्क्त (निरीक्षण) ग्रर्जन रेंज, जालन्धर

तारीख : 10-12-82

प्ररूप आई.टी.एन.एस.-----

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-घ(1) के अधीत सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) श्रजीन रेज, जालंधर

जालन्धर, दिनांक 10 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० ए० पी० नं० 3722-यतः मुझे जे० एल० गिरधर,

शायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके परचात् 'उकत अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25000/- र 0 से प्रधिक है और जिसकी संख्या जैंगा कि प्रत्मुची में लिखा है। तथा जो मालोट में स्थित है (ग्रीर इससे उपाबड श्रन्सूची में प्रौर पूर्ण रूप में वर्णित है), रिजस्ट्रीकर्ता श्रधिकारी के कार्यातय मालोट में र्जिस्ट्रीकरण श्रधितियम 1908 (1908 का 16) के श्रधीन तारीख श्रप्रैल 1982।

का पूर्वों कत सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मूक्ते यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वों कत संपत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से, एसे दृश्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अंतरिती (अन्तरितयों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखित में वास्तविक रूप से किथत नहीं किया गया है:--

- (क) अन्तरण से हुइ किसी आय की बाबत, उकत अधिनियम अते अधीन कर धने के अन्तरक के दायित्व में कभी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए; और/या
- (स) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्ध अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिये था, खिपाने में सृविधा के लिए;

जतः अब, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण कों, कों, उक्त अधिनियम की धारा 269-घ की उपधारा (1) को अधीन, निक्निलिखित व्यक्तियों, अर्थात् :---

- (1) श्रीमती संतो विधवा सेवार्सिह वासी मलोट (श्रन्तरक)
 - (2) श्रीमात चन्द कौर पत्नी भाग सिह, बासी गांव श्रसपाल तहसील मालोट।

(ग्रन्तरिती)

- (3) जैसा कि ऊपर नं० 2 में लिखा है। (बह ध्यक्ति जिसके श्रिधभोग में सम्पति है)
- (4) जो व्यक्ति सम्पति में रुचि रखता हो। (वह व्यक्ति जिसके बारे मे श्रधोहस्ताक्षेरी जानता है कि वह सम्पति में हितबद्ध है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वीक्त सम्परित के अर्जन के लिए आयवाहिया करता हु।

उक्त संपरित के अर्जन के संबंध मं कोई भी आक्षेप :---

- (क) इस म्चना के राजपत में प्रकाशन की तारीस रू 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर मूचना की तामील स 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर प्रविक् व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति ब्वारा,
- (स) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारोध में 45 विन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हित-बद्ध किसी अन्य व्यक्ति व्वारा, अधोह्स्ताक्षरी कें पास लिखित में किए जा सर्कोंगे।

स्पष्टोकरण: — इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधि-नियम के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं, वहीं अर्थ होगा, जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनुसुधी

सम्पति तथा व्यक्ति जैसा कि विलेख नं० 80, दिनांक श्रप्रैल 1982 को रजिस्ट्रीकर्त्ता अधिकारी मलोट ने लिखा है।

> भे० एतः गिरधर मक्षम प्राधिकारी महायक ग्रायकर श्रायुक्त (निरीक्षण) श्रजेन रेंज, जालन्धर

तारीख: 10-12-82

माहर:

प्ररूप आहु^{*}. टी. एन. एस. - - - ----

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-घ (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण)

श्रजन रेज, जालन्धर

जानन्धर, दिनांक 10 दिसम्तर 1982

निर्देश स० ए० पी० न० 3723--यत मुझे, जे० एल० गिरधर,

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके परचात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-ल के अधीन सक्षम प्राधिकारी को, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/-रु से अधिक है

भीर जिसकी संव जैसा कि श्रानम्ची में लिखा है तथा जो आलन्धर में स्थित है (श्रांर उसमें उपाबद्ध श्रानुसूची में और पूर्ण रूप में वींग्त है), रजिस्ट्रीकर्ता श्रिधकारी के कार्यालय आलन्धर में रिलस्ट्रीकरण प्रश्लितम्म 1908 (1908 ज्यांति) के श्राधीन नारीख अप्रैल 1982

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के दश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मूक्ते यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त संपत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दश्यमान प्रतिफल से एमे दश्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत मे अधिक है और अन्तरक (अन्तरको) और अन्तरिती (अन्तरितियो) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखित में वास्तिक हुए से किथत नहीं किया गया है :---

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्व में कभी करने या उससे बचने में सूविधा के लिए और/या
- (ख) एसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को, जिन्हों भारतीय आय-कर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था छिपाने में स्विधा के लिए;

जतः अब, उक्त अधिनियम की धारा 260 ग के अन्सरण मे, मैं, उक्त अधिनियम की धारा 269-ध की उपधारा (1) के अधीन निम्नलिखित व्यक्तियों, अर्थातु :——

- (1) श्री गुरचरन सिंह पुत्र जसवन्त सिंह वासी 13, गुरुनातक पुरा (गुरु तेग बहादुर नगर,) जालन्धर (ग्रन्तरक)
- (1) श्री ध्रजीत सिंह पुत्र खरक सिंह गांव व डाकखाना पलाही, तहसील फगवाड़ा ।

(भ्रन्तरिती)

- (3) जैसा उपरोक्त न० 2 में लिखा है। (वह व्यक्ति जिसके ग्रीधभोग में सम्पति है)
- (4) जो व्यक्ति सम्पति में रुचि रखता है। (यह व्यक्ति जिसके बारे में अधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पति में हितबद्ध हैं)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सपित्त के अर्जन के लिए कार्यवाहिया करता हू ।

उक्त सम्परित के अर्जन के संबंध में कोई भी आक्ष्म :---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी त्यिक्सयों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अनिधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्स व्यक्तियों में से किमी व्यक्ति द्वारा;
- (स) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हित- बद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधाहस्ताक्षरी के पास लिसित में किए जा सकेगे।

स्पष्टीकरण — इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम, के अध्यक्ष्य 20-क में परिभाषित है, वहीं अर्थ होगा, जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनुसूची

व्यक्ति तथा सम्पति जैसा कि विलेख नं० 314 दिनाक अप्रैल 1982 को रजिस्ट्रीकर्ता स्रधिकारी जालन्धर ने लिखा है।

> जे० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी सहायक भ्रायकर भ्रायुक्त (निरीक्षण) भ्रजेन रेंज, जालन्धर

तारीख 10-12-82 मोहार प्ररूप आई. टी. एन. एस. -----

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-घ (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण)

अर्जन रेंज जालन्धर

जालन्धर, दिनांक 10 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० ए० सी० नं० 3724—यतः मुझे, जे० एल० गिरधर.

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्यास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मृत्य 25,000/- रु. से अधिक है

और जिसकी सं० जैसा कि अनुसूची में लिखा है तथा जी जालन्धर में स्थित है (और इससे उपाबद्ध अनुसूची में और पूर्ण रुप से वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्त्ता अधिकारी के कार्यालय जालन्धर में रस्जिट्रीकरण अधिनियम 1908 (1908 का 16) के अधीन तारीख अप्रैल 1982

को पूर्वीक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मृत्य से कम के दश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मृझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वीक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मृत्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से ऐसे दृश्यमान प्रतिफल का पंद्रह प्रतिशत से अधिक है और अंतरक (अंतरकों) और अंतरिती (अंतरितियों) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्निलिखित उद्दोश्यों से उक्त अन्तरण लिखित में वास्तिक रूप से कथित नहीं किया गया है:—

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक की दायित्व में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के क्षिए; और/या
- (क) ऐसी किसी बाय या किसी धन या अन्य आस्तियों को जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिसी व्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा के लिए।

अतः अब उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण में, मैं, उक्त अधिनियम की धारा 269-घ की उपधारा (1) के अधीन, निम्नलिखित व्यक्तियों, अर्थात :-- (1) श्री उजागर सिंह पुत्र मंत सिंह वासी गांव ल**छ**वाली तहसील जालन्धर

(अन्तरक)

(2) श्री बख्शीण सिंह पुत्र मगत राम और श्रीमित करम कौर पत्नी बख्शीश सिंह वासी मंकान नं० 5 गुरुनानक नगर, जालन्धर ।

(अन्तरिती)

(3) जैसा उपरोक्त नं० 2 में लिखा है। (वह व्यक्ति जिसके अयधभोग में सम्पति है)

(4) जो व्यक्ति सम्पति में रुचि रखता है। (बह व्यक्ति जिनके बारे में अधोहस्ताक्षरी जानाता जानत है कि वह म्सपति में हितबद्ध है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हुं।

उक्त सम्परित के अर्जन के संबंध में कोई भी नाक्षेप :---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 विन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 विन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वीक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति बुवारा;
- (ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितंबद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकोंगे।

स्पष्टीकरण:--इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम के अध्याय 20-क में परिभाषित है, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनुसूची

व्यक्ति तथा सम्पति जैसा कि विलेख नं० 66 दिनांक अप्रैल 1982 के रिजस्ट्रीकर्त्ता अधिकारी जालन्धर में लिखा है।

> जे० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी सहायक ग्रायकर भ्रायुक्त (निरीक्षण) अर्जन रेंज, जालन्धर

तारी**ख** 10-12-82 मोहर: प्ररूप आई. टी. एव. एस.-----

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की भारा 269-श (1) के अधीन सुचना

भारत सरकार

कार्याल्य, सहायक आयकर आयुक्त (निरक्षिण)

अर्जन रेंज, जालन्धर

जालन्धर, दिनांक 14 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० ए० सी० नं० 3725—यतः मुझे, जे० एल० गिरधर,

कायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की भारा 269-स के अधीन सक्षम प्राधिकारी को, यह निश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- रह. से अधिक है

और जिसकी स० जैंसा कि अनुसूची में लिखा है तथा जो जालन्धर में स्थित है (और इससे उपाबद्ध अनुसूची में और पूर्ण रूप से वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्ता अधिकारी के कार्यालय जालन्धर में रजिस्ट्रीकरण अधिनियम 1908 (1908 का 16) के अधीन तारीख अप्रैल 1982

को पूर्णेक्त संस्पत्ति के अभित बाजार मूश्य में कम के दृश्यमान प्रतिक्ष्ण के लिए अस्तरित की गई है ग्रौर मुझे यह विश्वाम करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूह्य, उसके दृश्यमान प्रतिकल में, ऐसे दृश्यमान प्रतिकल का पन्द्रत् प्रतिशत अधिक है ग्रौर भन्तरक (भन्तरकों) और भन्तरिती (अन्तरितिमों) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए तथ पाया गया प्रतिकल, निम्नलिखित महीं किया गया है:——

- (क) अन्तरण से हुई किसी भाग की बाबत उक्त अफ़्रिनियम के भ्रधीन कर देने के भ्रन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए; भीर/या
- (ख) ऐसी किसी आय या किसी घन या घन्य ग्रास्तियों की, जिन्हें भारतीय आयकर ग्रिविनियम 1922 (1922 का 11) या उन्त अधिनियम, या धनकर अधिनियम 1937 (1957 का 27) के अयोजनार्थ घन्तिरंती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था छिपाने में सुविधा के लिए;

अतः प्रव, उका प्रविनियम की धारा 269-ग के अनु-सरण में, में, उक्त प्रधिनियम की धारा 269-घ की उपधारा (1) के प्रधीम निक्निसित व्यक्तियो प्रणीत:— (1) श्री मुलख राज पुत्र नानकचन्द वासी B/M759, मण्डी पैटनगंज जालन्धर।

(अन्तरक)

(2) श्री कुंज लाल पुत्र शाम दास वासी B/M759, मण्डी पैटन गंज जालन्धर।

(अन्तरिती)

(3) जैसा उपरोक्त नं 2 में लिखा है। (वह व्यक्ति जिसके अधिमोग में सम्पति है)

(4) जो व्यक्ति सम्पति मे रुचि रखता है। (बह व्यक्ति, जिनक बारे मे अप्रादुनाक्षर जानता है कि बह सम्पत्ति में हितबद्ध है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वीक्त संपक्ति के अर्जन के लिए कार्यजाहिया करता हुं।

उक्त सम्परित के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप :--

- (क) इस स्चना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अविध या तरसम्बन्धी व्यक्तियों पर स्चना की तामील से 30 दिन की अविध, जो भी अविध बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (ख) इस स्वना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से
 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर संपत्ति में
 हितवद्ध किसी भन्य व्यक्ति द्वारा, भक्षीहस्ताक्षरी
 के पास लिखिन में किए जा सकेंगे।

स्पक्कीकरण: -- इसमें प्रयुक्त शक्कों भीर पर्कों का, को उक्त सिमियम के सम्याव 20-क में परिभाषित हैं, नहीं सर्च होगा को उस सम्याय में दिया गया है।

अमुसूची

व्यक्ति तथा सम्भित जमा कि विलख नं० 214 दिनांक अप्रैल 1982 को रिजस्ट्रीकर्त्ता अधिकारी जालन्धर ने लिखा है।

> जे० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी सहायक श्रायकर ग्रायुक्त (निरीक्षण) अर्ज रेंज, जालन्धर

तारी**ख** 10-1**2-8**2 मोहर: प्ररूप आई. टी. एन. एस. - - - ----

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-घ (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय सहायक भ्रायकर श्रायुक्त (निरीक्षीण) अर्जन रेंज, जालन्धर

ं जालन्धर, दिनांक 14 दिसम्बर 1982

निर्देश स० ए० पी० नं० 3726—यतः मुझे, जे० एल० गिरधर

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त' अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-ख़ के अधीन सक्षम प्राधिकारी को, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/-रु. से अधिक है

और जिसकी ये जैरा कि अनुसूची में लिखा है तथा जो जालन्धर में स्थित है (ओर इसमें उपाबद्ध अनूसूची में और पूर्ण रूप से विणित है), रिजिस्ट्रीकर्सा अधिकारी के कार्यालय जालन्धर में रिस्जिट्रीजरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन नारीख अप्रैल 1982

को पूर्वीक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के द्रियमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मूक्षे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वीक्त संपित्त का उचित बाजार मूल्य, उसके द्रियमान प्रतिफल से एसे द्रियमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशल अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितियों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्धेश्य से उक्त अन्तरण लिखित में वास्तिक रूप से कथित नहीं किया गया है :---

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्य में कमी करने या उससे बचने में स्विधा के लिए और/या
- (ल) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों की, जिन्हों भारतीय आय-कर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था छिपाने में स्विधा के लिए;

अतः अब, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण मं, मंं, उक्त अधिनियम की धारा 269-घ की उपधारा (1) के अभीन निम्निसित व्यक्तियों, अर्थात :---- (1) श्री राम लाल पुत करमचन्द वासी इ० क्यू० 391 वजार पीर बोदला, जालन्धर।

(अन्तरक)

(2) श्री सुभाष चन्द्र पुत्रं दरिया दित्ता वासी ६० क्य० 153 मोहल्ला मुफतिया जालन्धर।

(अन्तरिती)

- (3) जैसा उपरोक्त नं० 2 में दिया गया है। (बह व्यक्ति जिसके अधिभोग में सम्पति है)
- (4) जो व्यक्ति सम्पति में र्गाच रखता है। (वह व्यक्ति जिसके बारे में अधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पति में हितबद्ध है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त संपत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां शुरू करता हूं।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षंप :---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वीक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (स) इस सूचना के राजपत में प्रकाशत की नारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर नम्भित्स में हित-वद्ध किसी अन्य व्यक्तित द्वारा अवाहरताक्षरी के पास विस्तित में किए जा सकेगे।

स्पष्टोकरण ---इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जां उक्त अधिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित ह⁴, वही अर्थ होगा, जो उस अध्याय में दिया गया ह²।

अनुसूची

व्यक्ति तथा सम्पति जैपा कि विलेख नं० 74 दिनांक अप्रैल 1982 को रजिस्ट्रीकत्ती श्रधिकारी जालन्धर में लिखा है।

> जे० एल० (गरधर सक्षम प्राधिकारी सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) अर्जन रेंज जालन्धर

तारीख 14-12-82 मोहर . प्रारूप काई.टी.एन.एस.-----

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की भाग 269-ध (1) को अधीन स्थना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयक्त (निरौक्षण) अर्जन रेंज, जालन्धर

जालन्धर, दिनांक 14 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० ए० पी० नं० 3727--यनः मुझे, जे० एल० गिरधर,

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्बीत, जिसका उचित बाजार मृन्य 25,000/रु. से अधिक है

और जिसकी सं० जैंगा कि अनुस्ती में लिखा है तथा जो जालन्धर में स्थित है (और इससे उपाबद्ध अनूसूची में और पूर्ण रूप से विणित है), रिजस्ट्रीकर्सा अधिकारी के कार्यालय जालन्धर में रिजस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन तारीख अप्रैल 1982

को प्वोंक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मृत्य से कम के दश्मान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मृके यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोंक्त संपत्ति का उचित बाजार मृत्य, उनके दश्मान प्रतिफल से, एसे दश्मान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितियां) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्मिलियित उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखित में वास्तविक रूप से किथत नहीं किया गया है:—

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबते. उक्त जिनियम के जभीन कर दोने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे बयने में सृविधा के लिए और/या
- (ख) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उत्रत अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 2⁻⁷) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था छिपाने में स्विधा की निए।

अतः अय, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण में, मैं, उक्त अधिनियम की धारा 269-थ की उपधारा (1) के सभीन निम्नतिस्ति स्यक्तियों, अर्थात् अल्ले (1) श्री राम लाल पुत्र करम चन्द वासी ई० क्यू० 391, बजार पीर बोदला जालन्धर

(अन्तरक)

(2) श्री सुरिन्द्र कुमार पुत्र दिग्या दित्ता बाकी ई० क्यू० 153, मोहल्ला मकतिया जालन्धर।

(अन्तरिती)

- (3) जैसा उपरोक्त नं० 2 में लिखा है। (वह व्यक्ति जिसके अधिभोग में सम्पति है)
- (4) जो व्यक्ति सम्पिति में रुचि रखता है। (बह् व्यक्ति, जिनके बारे में अधोस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पित में हितश्रद्ध है)

का यह सूचना जारी करके पृवास्ति सम्पत्ति को अर्थन को लिए कार्यनाहियां शुरू कारता हां।

उक्त सम्परित के वर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप: --

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन की अविध या तत्संबंधी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविध, जो भी अविध बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वीवत व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (स) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन के भीतर उक्त स्थातर सम्पत्ति मे हितबद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अश्रोहस्ताक्षरी के पास लिसित में किए जा सकेंगे।

स्पष्टीकरणः--इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्ल अधिनियम के अध्याय 20-क में परिभाषित है, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनुसूची

व्यक्ति तथा सम्पति जैसा कि विलेख नं० 310 दिनांक अप्रैल 1982 को रजिस्ट्रीकर्त्ता ऋधिकारी जालन्धर ने लिखा है।

> जे० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी सहायक <mark>श्रायकर श्रायुक्त (निरीक्षण</mark>) अर्जन रेंज, जालन्धर

तारीख: 14-12-1982

माहर :

प्ररूप आई. टी. एन. एस. -----

म्रायकर मधिनियम, 1961 (1961 का 43) की बारा 269-च (1) के मधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयक्त (निरीक्षण)

अर्जन रेंज, जालन्धर

जालन्धर, दिनांक 15 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० ए० सी० नं० 3728—यतः मुझे, जै० एल० गिरधर,

मायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके परचात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मृत्य 25,000/-रा. से अधिक है

और जिसकी स० जैसा कि अनुसूची में लिखा है तथा जो कपूरथला में स्थित है (और इससे उपाबद्ध अनूसूची में और पूर्ण रुप से वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्त्ता अधिकारी के कार्यालय कपूरथला में रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन तारीख अप्रैल 1982

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य में कम के दृष्यभान प्रशिक्त के लिए भन्तरित की गई है भीर मुझे एड विश्वाम करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृष्यमान प्रतिफल में, ऐस दृष्यमान प्रतिफल का पंत्रह प्रतिशत से भिष्ठक है भीर भन्तरक (अन्तरकों) और मन्तरिती (भन्तरितियों) के नीच ऐसे अन्तरण के निए तय पाया गया प्रतिफल, निम्निचित उत्तरण में उक्त अन्तरण लिखित में बास्तविक का से किथा वदी किया गया है।—

- (क) अन्तरण ये हुई किसी आय की बाबत, उनन श्रिक्षिक नियम, के अधीन कर देने के अग्लरक के वायित्य में कभी करने या उससे अवसे में सुविधा के लिए धौर/या
- (म) ऐसी किसी आय या किसी घर या मन्य मास्तियों को, जिन्हें भारतीय आयक्तर मिवित्यम, 1922 (1922 का 11) या उन्त मिवित्यम, या मन-कर मिवित्यम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ भन्तरिती द्वारा भकट नहीं किया गया या या किया जाना चाहिए था छिपाने में मुविधा के लिए।

भ्रतः भ्रव, उक्त भ्रधिनियमं की धारा 269-ग के अनुसरण में, मैं, उक्त भ्रधिनियमं की भ्रारा 269-व की उपचारा (1) के सचीन निम्नतिविदा व्यक्तियों, अर्थात्:— (1) श्री बशम्बर दास पुद्ध बनारसी दास वासी कपूरथला पता मैसर्ज जगतजीत इण्डस्ट्रीयल कारपीरेशन कपूरथला।

(अन्सरक)

- (2) श्री चन्दू लाल पुन्न श्री कृष्ण लाल कपूरथला। (अन्तरिती)
- (3) जैसा नं० 2 में लिखा है। (वह व्यक्ति, जिसके अधिभोग में सम्पति है)
- (4) जो व्यक्ति सम्पति में रुचि रखता है। (वह व्यक्ति, जिनके बारे में अधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पति में हितबद्ध है)

को यह सूचना आरी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हुं।

उक्त समालि के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी बाक्षोर: ---

- (क) इस द्वरा के राजरव र प्रकाणत को तारीख से 45 दिन की प्रविध्या तत्वंबंधी व्यक्तियों पर सूचना को नामीत न 30 दित को प्रविध्न जो भा प्रविध्व बाद में समाप्त होती हो, के भीतर प्रवेक्ति व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा:
- (ख) इस सूत्रता के राजात में प्रकाशन की नारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबद किसी प्रत्य व्यक्ति द्वारा, प्रयोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा नकींगे।

स्रः टाहरगः ---इनमे प्रयुक्त शब्दों और पढ़ां हा, जो उक्त स्रधि-नियम के प्रध्याय 20-क में परिभाषित हैं बही प्रश्नेहागा, जो उप पड़ारा में दिया गरा है।

मन्त्रची

व्यक्ति तथा सम्पति जैमा कि विलेख न० 247 दिनांक अप्रैल 1982 के रजिस्ट्रीकर्ता अधिकारी कपूरथला में लिखा है।

> ने० एल० गिरघर सक्षम प्राधिकारी महायक ग्रायकर श्रायुक्त (निरीक्षण) श्रुचेन रेंज, मदास

तारीख: 15-12-82

प्ररूप आई० टी० एन० एस०-

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-ष् (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) अर्जन रेंज, जालंधर

जालंधर, विनांक 14 विसम्बर 1982

निर्देश सं० ए० पी० नं० 3729—यत:, मुझे, खे० एल० गिरघर प्रायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके परवान् 'उना प्रधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-ख के अधीन सक्षम मधिकारी को, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर मंगत्ति, जिमका उचिन बाजार मृख्य 25,000/- द० से ध्रायक के

और जिसकी संख्या जैसा कि अनुसूची में लिखा है तथा जो मिट्टापुर में स्थित है (और इससे उपाबद्ध अनुसूची में और पूर्ण रूप से वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्ता अधिकारी के कार्यालय जालंधर में रजिस्ट्रीकरण अधिनियम 1908 (1908 का 16) के अधीन, तारीख अप्रैल, 1982

को पूर्वोक्षा सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रतिकान के लिए अन्तरित की गई है और मुझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त संपत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके कृष्यमान प्रतिकत्त से, एसे दृश्यमान प्रतिकत का पखह प्रतिकात अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितियों) के बीच ऐते अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिकत निम्निविज्ञत उद्देश्य से उक्त अन्तरण निखित में वास्तविक खण से किथान नहीं किया गया है।—

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर देने के अन्तरक के दायित्य में कभी करने या उससे बचने में सूविधा के लिए; और/या
- (ख) ऐसी किसी भ्राय या किसी धन या भ्रन्य मास्तियों की, जिन्हें भारतीय भ्रायकर भ्रधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त भ्रधितियम, या धन-कर भ्रधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ भ्रन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया थया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा के लिए;

अतः अध उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण में में, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग की उपभारा (1) के अधीन, निम्नतिस्ति व्यक्तियों, अर्थातः :---11--416GI/82 (1) श्री गुरुमुख सिंह पुत्र श्री ठाकुर सिंह, वासी मिट्ठापुर, जालंधर।

(अन्तरक)

- (2) निमरीत पाल समरीत पाल पुत्री कवरजीत सिह वासी 9, गुरुनानक नगर, जालंधर। (अन्तरिती)
- (3) जैसा उपरोक्त नं० 2 में लिखा है। (वह व्यक्ति जिसके अधिभोग में सम्पत्ति है)
- (4) जो व्यक्ति सम्पत्ति में रुचि रखता है। (वह व्यक्ति जिनके बारे में अधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पत्ति में हितबद्ध है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्मति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हूं।

उक्त सम्पत्ति के ब्राजैन के सम्बन्ध में कोई भी ब्राक्षेप .

- (क) इस मूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की ग्रंबिंग या त सम्बन्धी व्यक्तियां पर सूचना की तामील से 30 दिन की ग्रंबिंग, को भी ग्रंबिंग बाद में समाप्त होती हो, के भीता पूर्वीक व्यक्तियों में से किसो व्यक्ति ग्रारा;
- (ख) इस सूचना के राजपन में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्वावुर सम्पत्ति में हितबढ़ किसी अस्य व्यक्ति द्वारा, अधोहस्ताक्षरी के पास विश्वित में किए जा सकेंगे।

स्परशक्तरण:-इसमें प्रयुक्त शब्दों और पर्वो का, जो उक्त प्रधिनियम के प्रध्याय 20-क में परिभाषित हैं, वही धर्ष होगा, जो उस प्रध्याय में दिया गया है।

बन्स्ची

क्यक्ति तथा संपत्ति जैसा कि विलेख नं॰ 121 दिनांक अप्रैल, 1982 को रजिस्ट्रीकर्ता अधिकारी, जालंधर ने लिखा है।

> जे० एल० गिरधर सक्षम [प्राधिकारी सहायक आयुक्त (निरीक्षण) अर्जन रेंज, जालंधर

तारीख: 14-12-82

प्ररूप बाइं.टी.एन.एस.-----

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-ष (1) के अधीन स्चना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण)

अर्जन रेंज जालंघर जालंघर दिनांक 14 दिसम्बर, 1982 निर्देश सं० ए० पी० नं० 3730—अतः मुझे, जे० एल० गिरधर,

बायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें रिसके पश्चात 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-स के अधीन सक्षम प्राधिकारी को, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पित, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/रु. में अधिक है

और जिसकी संख्या जैसा कि अनुसूची में लिखा है तथा जो लाभापिण्ड चक्र हुरोना में स्थित है (और इससे उपाबद्ध अनुसूची में और पूर्ण क्ष्प में विणत है), रिजस्ट्रीकर्त्ता अधिकारी के कार्यालय जालंधर में रिजस्ट्री-करण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन तारीख अप्रैल, 1982 ।

को पूर्वों वत सम्पत्ति के उचित बाजार मृत्य से कम के इत्यमान प्रतिफल के लिए अंतरित क्यों गई है और मुम्ने यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वों क्स संपत्ति का उचित बाजार मृत्य, उसके दश्यमान प्रतिफल से, ऐसे दश्यमान प्रतिफल का पन्त्रह प्रतिशत अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितयों) के वीच ऐसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्निलिखत उद्वेश्य से उक्त अन्तरण लिखित मे वास्तविक परूसे किथा नहीं किया गया है:—

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे अवने में सुविधा के लिए; और/या
- (ख) ऐसी किसी आप या किसी धन या अन्य आस्तियों का, जिन्हें भारतीय आय-कर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती व्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किसी जाना चाहिए था, छिपाने में स्विधा के लिए;

अतः अबः, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण में, मैं, उक्त अधिनियम की धारा 269-म की उपधारा (1) के अधीन, निम्नलिखित व्यक्तियों, अर्थातः— (1) ज्वाला सिंह दसोदा सिंह और उजागर सिंहें, पुत्र जनवा सिंह वासी लाल पिण्ड हुसैना तहसील जालंधर।

(अन्तरिती)

(2) श्री संतोख सिंह अवतार सिंह पुत्र श्री शिवसिंह और प्यारा सिंह पुत्र मोता सिंह वासी, 9, हरगोविन्द पुरा जालंधर।

(अन्तरिती)

(3) जैसा कि उपरोक्त नं० 2 में लिखा है। (वह व्यक्ति, जिसके अधिभोग में सम्पत्ति है

(4) जो व्यक्ति सम्पत्ति में रुचि रखता है। (वह व्यक्ति, जिनके बारे में अधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्मति में हितबद्ध है)

को यह सूचना जारी करको पूर्वीक्त सम्पत्ति को अर्जन को लिए कार्यवाहियां करता हुं।

उन्त सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप:---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारी खरी 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वों क्ल व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (स) इस सूचना के राज्यत्र में प्रकाशन की तारील से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अभोहस्ताक्षरी के पाम सिलित में किए जा सके थे।

स्पष्टीकरण:---इसमें प्रयुक्त शब्दों और पर्दो का, जो उक्त अधिनियम के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में विया गया है।

अनुसूची

व्यक्ति तथा सम्पत्ति जैसा कि विलेख नं० 141 दिनांक अप्रैल, 1982 को रजिस्ट्रीकर्त्ता अधिकारी जालंघर ने लिखा है ।

> जे० एल० गिरधर, सक्षम अधिकारी सहायक आयकर आयुक्त निरीक्षण अर्जन रेंज जालंधर,

तारीख: 14-2-1982

प्ररूप. आई. टी. एन्. एस. ----

आयकर अधिनियम्, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-च (1) के बुधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) अर्जन रेंज जालंधर

जालंधर दिनांक 14 दिसम्बर, 1982

निर्देश सं० ए० पी नं० 3731—अतः मुझे, जे० एल० गिरधर, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-क के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/-रु. से अधिक हैं और जिसकी संख्या जैसा कि अनुसूची में लिखा है तथा जो मिट्ठापुर में स्थित है (और इससे उपाबद्ध अनुसूची में और पूर्ण क्ष्प में वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्त्ता अधिकारी के

कार्यालय, जालंधर में रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन तारीख अप्रैल, 1982। को पूर्विक्त संपत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के ध्रयमान प्रतिफल के लिए अंतरित की गई है और मुभे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वीक्त संम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य उसके दश्यमान प्रतिफल से, ऐसे दश्यमान प्रतिफल का पन्न्रह प्रतिशत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरित (अन्तरितयों) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्निलिखत उत्देश्य से उक्त अन्तरण निष्कत में बास्तिक रूप से कृथित नहीं किया गया है:—

- (क) अन्तरण से हुई िकसी आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे ब्यने में सुविधा के लिए; और/या
- (स) एसे किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को, जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अंतरिती व्यारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा के लिए;

अतः अब्, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण में, में, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग की उपधारा (1) के अधीन, निम्नलिखित व्यक्तियों, अर्थात् ः—

- (1) मखन सिंह, अमर सिंह, आला सिंह, और साधु सिंह और श्रीमती अमर कौर पुत्र सुरैन सिंह वासी गांव मिट्ठापुर
 - (अन्तरक)
- (2) रछपाल सिंह पुत्र लाल सिंह पुत्र भरत सिंह वासी माडल टाउन, जासंधरें ।

(अन्तरिती)

- (3) जैसा उपरोक्त नं० 2 में लिखा है। (वह व्यक्ति, जिसके अधिभोग में सम्पत्ति है)
- (4) जो व्यक्ति संम्पत्ति में रुचि रखता है। (वह व्यक्ति, जिनके बारे में अधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पत्ति में हितबद्ध है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वीक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां शुरू करता हूं।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन के संबंध में कोई भी आक्षेप :---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अविध या तत्संबंधी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविध, जो भी अविध बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति व्वारा;
- (स) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हित-बद्ध किसी व्यक्ति द्वारा, अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकोंगे।

स्पष्टीकरण:---इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनुसुची

व्यक्ति तथा सम्पत्ति जैसा कि विलेख नं० 185 दिनांक अप्रैल, 1982 को रजिस्ट्रीकर्त्ता अधिकारी जालंधर ने लिखा है ।

> जे० एस० गिरधर, सक्षम अधिकारी सहायक आयकर आयुक्त (रीक्षण) अर्जम रेंज, जालंधर,

तारी**ख**: 14-12-1982

प्ररूप बार्च . थी . एन . एस . ------

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-च (1) के अधीन सूचना भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त निरीक्षण अर्जन रेंज जालंघर जालंघर दिनांक 14 विसम्बर, 1982 निर्देश सं० ए० पी० नं० 3732 अते: मुँझे, जें. एल० गिरधर,

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) जिसे इसमें इसके पश्चात 'उक्त अधिनियम' कहा गया है, की भारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य, 25,000/- रु. से अधिक है

और जिसकी संख्या जैसा कि अनुसूची में लिखा है तथा जो जसवन्त नगर गड़ा में स्थित है (और इससे उपाबद अनुसूची में और पूर्ण रूप में वर्णित है), रिजस्ट्रीकर्ता अधिकारी के कार्यालय, जालंधर मे रिजस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन तारीख अप्रैल, 1982

को पूर्वेक्स सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अंतरित की गई है और मूक्षे यह विश्वास करनें का कारण है कि यथापूर्वोक्त संपत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से, ऐसे दृश्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अन्तरक (अन्त्यकों) और अंतरिती (अंतरितियों) के बीच ऐसे अंतरण के लिय नय पाया गया प्रतिफल निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण निस्तित में बास्तिबक रूप से किथत नहीं किया गया है:--

- (क) अन्तरण से हुंद किसी आगय की बाबस, उक्स अधिनियम के अभीन कर दिनें के अन्तरण के दायित्य में कनी करने या उससे बचने में सुनिधा के लिए; और्/या
- (स) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को, जिन्हों भारतीय आय-कर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती ब्वारा प्रकट नहीं किया नया था या किया जाना जाहिए था, जियाने में स्विभा के निए;

अतः अव, उक्त अधिनियम की भारा 269-ग के अनुसरण में, में, उक्त अधिनियम की भारा 269-ग की उपधारा (1) के अधीन, निम्नलिखित व्यक्तियों, अर्थात् :— (1) श्री राजेण विवान पुत्र विवान चन्द, सिविल लाईन्स जालंधर,

(अन्तरक)

(2) तारकेल सिंह पुत्र मोहन सिंह, वासी गांव पारुला तहसील जालंधर, व हरभजन कौर पत्नी तरसेम सिंह,

(अन्तरिती)

- (3) जैसा उपरोक्त नं० 2 में लिखा है। (वह व्यक्ति जिसके अधिभोग में सम्पत्ति है)
- (4) जो व्यक्ति सम्पत्ति में रुचि रखता है। (वह व्यक्ति, जिनके बारे मे अधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पत्ति में हितबद्ध है)

का यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां शुरू करता हूं।

उक्त संस्पृतितं के वर्णन के सम्बन्ध में कोई भी बाक्षेप्:---

- (क) इंस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अविध मा तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील सं 30 दिन का अविध, जो भी अविध बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा.
- (ख) इस स्वान के राजपंत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन के भीतर डक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबस्थ किसी अन्य व्यक्ति व्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास् लिखित में किए था सकींगे।

स्वध्वीकरणः--इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अमुसूची

व्यक्ति तथा सम्पत्ति जैसा कि विखेल नं० 293 दिनांक अप्रैल, 1982 को रजिस्ट्रीकर्त्ता अधिकारी जालंधर ने लिखा है।

> जे० एल० गिरधर मक्षम अधिकारी सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) अर्जन रेंज, जालंधर,

तारीच : 14-12-1982

प्ररूप आइ⁵. टी. एन. एस.-----

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-घ (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण)

अर्जन रेंज जालंधर जालंधर दिनांक 14 दिसम्बर, 1982 निर्देश सं० ए० पी० नं० 3733—अतः मुझे, जे० एल० गिरधर,

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसको उचित बाजार मुल्य 25,000/- फ. से अधिक है^{*} और जिसकी संख्या जैमा कि अनुसूची मे लिखा है तथा जो लालपिण्ड चक हुसैन में स्थित है (और इससे उपाबद्ध अनुसूची में और पूर्ण रूप में वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्त्ता अधि-कारी के कार्यालय, जालंधर में रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1008 का 16) के अधीन तारीख अप्रैल, 1982 को पर्वोक्त संपत्ति के उचित बाजार मुख्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्परित का उचित बाजार मूल्य, उसके दश्यमान प्रतिफल से, एसे दश्यमान प्रतिफल का पंद्रह प्रतिशत से अधिक है और अंतरक (अंतरकों) और अंतरिती (अंतरितियों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उदव देयों से उक्त अन्तरण लिखित में वास्तविक रूप से कथित नहीं किया गया है:--

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर देने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में स्विधा के लिए; और/या
- (स) एसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों की जिन्हों भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धनकर अधिनियम (या धनकर अधिनियम (या धनकर अधिनियम (या धनकर अधिनियम (या प्रकट कही किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सूविधा के लिए।

अतः अब उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण में,, में, उक्त अधिनियम की धारा 269-घ की उपधारा (1) के अधीन, निम्निलिसित व्यक्तियां, अर्थात् :--- (1) ज्वाला सिंह, उद्धम सिंह पुत्र दमोदा सिंह और उजागर सिंह, पाखर सिंह पुत्र चरन सिंह वासी गांव लामा पिण्ड चक्र हुसैना द्वैतहमील जालंधर ।

(अन्तरक)

(2) साधु राम पुत्र गुरुदत्त राम और बलवन्त, सिह, पुत्र कान्त सिह और चरन सिह पुत्र बलवन्त सिह वासी गांव अजीत नगर जालंधर

(अन्तरिती)

(3) जैसा कि उपरोक्त नं० 2 में लिखा है। (वह व्यक्ति जिसके अधिभोग में सम्पत्ति है

(4) जो व्यक्ति सम्पत्ति में रुचि रखता है। (वह व्यक्ति जिनके बारे में अधोहस्ताक्षरी . जानता है कि वह सम्पत्ति में हितबद्ध है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्स सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हूं।

उक्त सम्परित के अर्जन के संबंध में कोई भी आक्षेप :--

- (क) इस स्चान के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वीक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकेंगे।

स्पष्टीकरणः — इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनुसुची

व्यक्ति तथा सम्पत्ति जैसा कि विलेख नं० 300 दिनांक अप्रैल, 1982 को रिजस्ट्रीकर्त्ता अधिकारी जालंधर ने लिखा है।

> जे० एल० गिरधर, सक्षम अधिकारी, सहायक आयकर आयुक्त निरीक्षण, अर्जन रेंज, जालंघर

तारीख: 14-12-1982

प्रकृप आई • टी • एन • एस • ----

आपकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-घ (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण)

अर्जन रेज जालधर

जालधर दिनांक 14 दिसम्बर, 1982

निर्देश सं० ए० पी० न० 3739—यत. मुझे, जे० एल० गिरधर,

भाषकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 264- व के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/ रु. संवीधिक है

और जिसकी संख्या जैसा कि अनुसूची में लिखा है है तथा जो गांव किगरा में स्थित है (और इसमें उपाबद्ध अनुसूची में और पूर्ण रूप से वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्ता अधिकारी के कार्या-लय जालंधर में रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन तारीख अप्रैल, 1982

को पूर्वोक्त संपित्त के उचित बाजार मूल्य से कम के स्वयमान प्रितिफल के लिए अन्तरित की गई है और मूक्ते यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सपित्त का उचित बाजार मूल्य, उसके स्वयमान प्रतिफल में, एसे स्वयमान प्रतिफल का पन्त्रह प्रतिशत से अधिक है और अंतरक (अंतरकों) और अन्तरिती (अन्तरितियो) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल निम्निलिखत उद्देश्य से उक्त अन्तरण में लिखित वास्तिवक रूप से किथिश नहीं किया गया है:--

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्य में कमी करने या उससे बचने में सुविधा कालए; और/या
- (स) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को, जिन्हों भारतीय आय-कर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, ख्याने में सूबि्धा के लिए;

. अत. अब, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनूसरण मे, मैं, उक्त अधिनियम की धारा 269-च की उपधारा (1) के अधीन, निम्नसिधित व्यक्तियों, अधीत:--- (1) अमर सिंह पुत्र करतार सिंह द्वारा जनरल अटोरिनी जोगिन्द्र सिंह नजदीक रास्ता आयरन स्टोर, नकोदर रोड, जालंधर,

(अन्तरक)

(2) रिमन्द्र सिंह पुत्र लाल सिंह व सवरम कौर पत्नी जगिमंदर सिंह, वासी, 23-एल० माडल टाउन जालंधर,

(अन्सरिती)

- (3) जैसा उपरोक्त नं० 2 में लिखा है। (वह व्यक्ति जिसके अधिभोग में सम्पत्ति है)
- (4) जो व्यक्ति सम्पत्ति मे रुचि रखता है। (बह व्यक्ति जिनके बारे मे अधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पत्ति में हितबद्ध है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वों कर सम्पृत्ति को अर्जन के सिए कार्यवाहियां करता हूं।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप :--

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन की अविधिया तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामिल से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वों कर व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबय्भ किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकोंगे।

स्थल्डीकरण:--इसमें प्रयुक्त शब्धों और पदों का, जो उक्त अधिनियम के अध्याय 20-क में परिभाषित है, बही अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

वनस्ची

व्यक्ति तथा सम्पत्ति जसा कि विलेख नं० 541 दिनाक अप्रैल, 1982 को रजिस्ट्रीकर्त्ता अधिकारी जालंघर ने लिखा है।

> जे० एल० गिरधर, सक्षम अधिकारी सहायक आयकर आयुक्त निरीक्षण अर्जन रेंज, जालंधर

तारीख: 14-12-1982

मोहर 🛭

प्ररूप आहे. टी. एम्. एस.-----

आयकर अधिनियम्, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-व (1) के अधीन सुचना

भारत सरकार

कार्याल्य, सहायक आयकर आयक्त (निरीक्षण) अर्जन रेंज जालंधर जालंधर दिनांक 14 दिसम्बर, 1982

निर्देश सं० ए० पी० नं० 3735--अतः मुझे, जे० एल० गिरधर,

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की आरा 269-स के अधीन सक्षम प्राधिकारी को, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उजित बाजार मृल्य 25,000/- रुपए से अधिक है

जौर जिसकी संख्या जैसा कि अनुसूची में लिखा है तथा जो चक हुसैना जालंधर में स्थित है (और उससे उपाबद्ध अनुसूची में और पूर्ण रूप में विणित है), रिजस्ट्रींकर्ता अधिकारी के कार्यालय, जालंधर में रिजस्ट्रींकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन तारीख अप्रैल, 1982

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अंतरित की गई है और मूफे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से, एसे दृश्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितियों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तब पागा गया प्रतिफल, निम्नलिचित उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखित मे वास्तविक रूप से किश्त नहीं किया गया है:——

- (क) अन्तरण से इर्ष्ट्र किसी जाय को बाबत, उन्तर अधिनियम के अधीन कर दोने के जन्तरक के दायित्व में कभी करने या उससे व्यने में तृविधा के लिए; और/या
- (ख) ऐसी किसी जाय या किसी धन या अन्य आस्तियों की, जिन्हीं भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उन्त अधिनियम, या धन-कार अधिनियम, या धन-कार अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिये था, छिपाने में स्विधा के लिए;

बतः अव, उक्त अभिनियम की भारा 269-ग के अनुसरण मों, मों, उक्त अधिनियम की भारा 269-भ की उपभारा (1) के अधीन, निम्निलिखित व्यक्तियों, अर्थास् :--- (1) प्यारा सिंह पुत्र कूपन सिंह वासी लाल पिण्ड चक्र हुसैना, जालंधर

(अन्तरक)

(2) श्री सुरिन्द्रा कुमारी पत्नी कुलदीप राम वासी सूची पिण्ड जालंधर

(अन्तरिती)

- (3) जैसा उपरोक्त नं० 2 में लिखा है। (बह व्यक्ति जिसके अधिभोग में सस्पत्ति है)
- (4) जो व्यक्ति सम्पत्ति में रुचि रखता है (वह व्यक्ति, जिनके बारे में श्रधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पत्ति में हिनबढ़ है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हूं।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन के संबंध में कोई आक्षेप:--

- (क) इस स्चना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर स्चना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (ख) इस स्थान के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हित-बद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा, अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकरेंगे।

स्पच्छीकरणः — इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो 'उक्त अधिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं, बहुति अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनुसूची

व्यक्ति तथा सम्पत्ति जैसा कि विलेख नं० 644 दिनांक अप्रैल, 1982 को रजिस्ट्रीकर्त्ता अधिकारी जालंधर ने लिखा है।

> जे० एल० गिरधर, सक्षम अधिकारी सहायक आयकर आयुक्त निरीक्षण अर्जन रेंज, जालंधर

तारीख: 14-12-1982

प्ररूप आई. टी. एन. एस. ----

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की भारा 269-ध (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) अर्जन रेंज जालंधर

जालंधर विनांक 14 दिसम्बर, 1982

निर्देश सं० ए० पी० नं० 3736—अतः मुझे, जे० एल० गिरधर,

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके परचात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मृल्य 25,000/-रा. से अधिक है

और जिसकी संख्या जैसा कि अनुमूची में लिखा है तथा जो चक्र हुसैना में स्थित है (और इससे उपाबद्ध अनुसूची में और पूर्ण रूप में विणत है), रजिस्ट्रीकर्त्ता अधिकारी के कार्यालय जालंधर में रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन नारीख, अप्रैल, 1982

को पूर्वोक्त संपत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के ख्रियमान प्रतिफल के लिए अंतरित को गई है और मूक्ते यह विद्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त संपत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके द्रियमान प्रतिफल को पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितियों) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्यों से उक्त अन्तरण लिखित में वास्तिव रूप से किथ्त नहीं किया गया है:——

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर देने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे वचने में सुविधा के लिए; और/या
- (ख) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को जिन्हें भारतीय आय-कर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तिरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में स्विधा के लिए:

अतः अब उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण में, में, उक्त अधिनियम की धारा 269-घ की उपधारा (1) के अधीम निम्नुलिखित व्यक्तियों, अर्थातु:-- (1) श्री कूपन मिह पुत्र हुकम सिह वासी चक्र हुसैना तहसील जालंधर,

(अन्तरक)

(2) प्रषोत्तम लाल पुत्र राम प्रकाण वासी गांव सूची पिण्ड तहसील जालंधर।

(अन्तरिती)

- (3) जैसा उपरोक्त नं० 2 में लिखा है। (वह व्यक्ति, जिसके अधिभोग में सम्पत्ति है)
- (4) जो व्यक्ति सम्पत्ति में रुचि रखता है। (वह व्यक्ति, जिनके बारे में अद्योहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पत्ति में हितबद्ध है)

को यह स्वना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन् के लिए कार्यवाहियां करता हूं।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन् के सम्बन्ध में कोई भी अक्षेप :---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में पकाशन की तारीस से 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्विकत व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति व्वारा;
- (ख) इस स्चना के राजपत्र में प्रकाशन की सारीख से 45 दिन के भीसर उक्त स्थावर सम्मति में हिसबद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकोंगे।

स्यख्दीकरण: ---इसमें प्रयुक्त शब्दों और पर्दों का, जो उक्त अधिनियम के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं, वहीं अर्थ होंगा जो उस अध्याय में विया गया हैं।

जनसंची

व्यक्ति तथा सम्पत्ति जैसा कि विलेख नं० 645 दिनांक अप्रैल, 1982 को रजिस्ट्रीकर्त्ता अधिकारी जालंधर ने लिखा है ।

> जे० एल० गिरधर, मक्षम अधिकारी सहायक आयकर आयुक्त निरीक्षण अर्जन रेंज, जालंधर

तारीख: 14-12-1982

मोहर 🖰

प्ररूप आइ टी. एन. एस. ------

अधिकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की भारा 269-घ (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) श्रर्जन रेज, जालधर

जालन्धर, दिनाक 15 दिसम्बर 1982

निर्देश म० ए० पी० नं० 3737--- ग्रत मुझे, जे. एल० गिरधर.

आयळर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (इसके परचात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-स के अधीन मक्रम प्राध्कारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- रु. से अधिक है

ग्रीर जिसकी सख्या जैपा कि ग्रनुसूची में लिखा है तथा जो भटिण्डा में स्थित है (ग्रीर इससे उपाबद्ध ग्रनुसूची में ग्रीर पूर्ण रूप में विणत है), रिजस्ट्रीकर्त्ता ग्रिधिकारी के कार्यालय, भटिण्डा में रिजस्ट्रीकरण ग्रिधिनियम, 1908 (1908 का 16) के ग्रिधीन, ग्रप्रैल, 1982

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उिचत बाजार मूल्य से कम के ध्रमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मूझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापर्जांक्त संपत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल सो, एसे दृश्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अतरक (अंतरकों) और अंतरिती (अन्तरितियों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिकार में निश्मिति होने किया गया है...

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्त अधिनयम के अधीन कर दोने के अन्तरक की दर्शियत्व में असी अपने ए उससे बचने में स्विधा के लिए; कोर/या
- (स) एमी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों की, जिन्हें भारतीय आय-कर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) । उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) कें प्रयाजनार्थ जन्दरिती दवारा प्रकट नहीं किया गया था या जिया जाना चाहिए था, छिपाने में याचिशा के लिए,

यत अब. ाइन किंशनियम की गरा १०००-ग की, **अन्सरण** में, मैं, अक्त अभिनियम की धारा 269-इ की उपधारा (1) के अभीन, निम्नलिखित व्यक्तियों, अर्थात '── 12—416 GI/82

(1) श्री साधू सिंह, मिट्ठू सिंह श्रीर गुरुवेव सिंह, उर्फ सुखरेव सिंह पुत्र पूर्ण सिंह भटिण्डा।

(ग्रन्तरक)

(2) श्री गुलाब सिंह पृत्र श्री गण्डा सिंह गाव जोधपुर रोमाना

(भ्रन्तरिती)

(3) जैसा कि उपर न० 2 में लिखा है। (वह व्यक्ति, जिसके ग्रिधिभोग में सम्पत्ति है)

(4) जो व्यक्ति सम्पत्ति में रुचि रखता है। (वह व्यक्ति, जिनके बारे में श्रधोहस्ताक्षरी, जानता है कि वह सम्पत्ति में हितबद्ध है)

को यह सूचना जारों करके पृवाँक्त सम्पत्ति के अर्जन के निए कार्यवाहिया करता हुं।

जनत सम्परित के वर्जन के सम्बन्ध में कोई भी वाक्षेप:--

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारी स सं 45 दिन की अवधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामिल से 30 दिन की अवधि, शो भी अवधि बाव में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वों कर व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति व्यक्ति !
- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारील से 45 विम के भीतर उक्त स्थावर सम्परित में हितबबुध किसी अन्य व्यक्ति ब्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकोंगे ।

स्पद्धीकरणः -- इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, थी उन्त मिनियम, के मध्याय 20-क में परिभाषित है, बही अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अमुस्ची

व्यक्ति तथा सम्पत्ति जैसा कि विलेख नं० 257 दिनांक अप्रैल, 1982 को रजिस्ट्रीकर्त्ता ग्रिधकारी भटिण्डा ने लिखा है।

> जे० एल० गिरधर मक्षम प्राधिकारी महायक श्रायकर श्रायुक्त निरीक्षण, श्रर्जन रेंज, जालंधर,

तारीख: 1<-12-1982 मोहर: प्ररूप आई. 'टी. एन. एस.------

आयफर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की भारा 269-घ (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयक्त (निरीक्षण)

ग्रर्जन रेंज जालंघर जालंधर, दिनांक 15 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० ए० पी० नं० 3738—श्रतः मुझे, जे० एल० गिरधर,

कायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके परवात 'उकत अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-स के अधीन सक्षम प्राधिकारी को, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित वाजार मूल्य 25,000/- रा. से अधिक है

ग्रौर जिसकी संख्या जैसा कि ग्रनुसूची में लिखा है तथा जो भटिण्डा में स्थित है (ग्रौर इससे उपावद्ध श्रनुसूची में ग्रौर पूर्ण रूप में वर्णित है), रिजस्ट्रीकर्त्ता ग्रिधकारी के कार्यालय, भटिण्डा में रिजस्ट्रीकरण श्रिधिनियम, 1908 (1908 का 16) के ग्रधीन ग्रप्रैल, 1982

में पृथेषित सम्पत्ति के उपित बाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित को गई हैं और मूफे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्विकत संपत्ति का उपित आजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से एसे दृश्यमान प्रतिफल का पंद्रह प्रतिशत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितयों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पामा गया प्रतिफल, रिम्निलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण कि बित में नास्त्रीवक रूप से कथित नहीं किया गया है:---

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में स्विधा के सिए; और/या
- (वा) एसी किसी जाय या किसी धन या अन्य आस्तियों को, जिन्हें भारतीय आय-कर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तिरिती व्वारा प्रकट नहीं किया गया था किया जाना चाहिये था छिपाने में सविधा के लिए;

मत: अब, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण में, में. उक्त अधिनियम की धारा 269-घ की उपधारा (1) के अधीन, निम्नलिखित व्यक्तियों, अर्थात् :---

(1) गुरुदयाल सिंह मुपुत श्री इन्द्र सिंह भटिण्डा ।

(भ्रन्तरक)

(2) कौर चन्द पुत्र श्री भगवान दास भटिण्डा।

(अन्तरिती)

(3) जैसा उपरोक्त नं० 2 में लिखा है। (वह व्यक्ति, जिसके श्रिधिभोग में सम्पत्ति है)

(4) जो व्यक्ति सम्पत्ति में रुचि रखता है। (वह यक्ति जिनके बारे में अबोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पत्ति में हिलबद्ध है)

का यह स्थाना जारी करके पूर्वोक्त संम्मति के अर्जन के लिए कार्यशाहियां करता हुं।

उक्त संपर्ति के वर्जन संबंध में कोई भी आक्षेप :---

- (क) इस सूजना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की जबिध या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूजना की तामील से 30 दिन की अविध, जो भी जबिध बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वीक्त व्यक्तियों में से किसी ध्यक्ति द्वारा;
- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीक से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबस्थ किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधाहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकरें।

स्पस्टीकरणः — इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम, के अध्याय 20 क में परिभाषित है, वही अर्थ होगा, जो उस अध्याय में दिया गया है।

वन्स्वी

व्यक्ति तथा सम्पत्ति जैसा कि विलेख नं० 251 दिनांक भ्रम्भैल, 1982 को रजिस्ट्रीकर्त्ता भ्रधिकारी भटिण्डा ने लिखा है।

> जे० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी महायक भ्रायकर श्रीयुक्त निरीक्षण श्रर्जन रेंज, जालंधर

तारीखा: 15—12—1982

प्रारूप आई. टी. एन. एस. -----

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की भारा 269-च (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) अर्जन रेंज, जालंधर

जालंधर, दिनांक 15 दिसम्बर 2982

निर्देश सं० ए० पी० नं० 3739—ग्रतः मुझे, जे० एस० गिरधर,

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उन्कर अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-सं के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर संपति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- रु. से अधिक है

ग्रीर जिसकी संख्या जैसा कि ग्रनुसूधी में लिखा है तथा जो भटिण्डा में स्थित है ग्रीर इससे उपाबद्ध ग्रनुसूधी में ग्रीर पूर्ण रूप में वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्सा ग्रधिकारी के कार्यालय, भटिण्डा में रजिस्ट्रीकरण ग्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के ग्रधीन अर्जैन 1982

को पूर्वोक्त संपरित के उचित बाजार मूल्य से कम के इष्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मूफे यह विष्यास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त संपरित का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से, ऐसे दृश्यमान प्रतिफल के पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितियों) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखित में वास्तविक रूप से कथित नहीं किया गया है:—

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत उक्त अधिनियम की अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्य में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के सिए; और्/या
- (ख) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को जिन्हों भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उन्तर अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में स्विधा के लिए।

अतः अब, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के, अनुसरण में, मैं, उक्त अधिनियम की धारा 269-घ की उपधारा (1) के अधीन, निम्निलिसित व्यक्तियों, अर्थात् :----

- (1) भगवान सिंह पुत्र मदन सिंह मुख्तयारे पुत्र भाफ श्री० भूपिन्दर सिंह कोठी श्रमर पुरा भटिण्डा श्राफ जी० एन० डी० टी० पी० कलोनी भटिण्डा।
- (2) गुरुप्रीति सिंह पुत्र श्री करतार सिंह श्रध्यापक जी० एच० एस० जेत्, श्रीमती हरमनजीत कौर, पुत्र प्रीतम सिंह ब्रार वासी हरीनों तहसील तथा जिला फरीदकोट ग्रौर सुखदीप कौर पुत्री सुखदेव सिंह गांव नाथपुरा तहसील नथाना। (ग्रन्तरिती)
- (3) जैसा ऊपर नं० 2 में भी लिखा है। (वह व्यक्ति जिसके ग्रिक्षिभोग में सम्पत्ति है)
- (4) जो व्यक्ति सम्पत्ति में रुचि रखता है। (वह व्यक्ति, जिनके बारे में ग्रधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पत्ति में हितबद्ध है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वाक्त संपत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हू।

उक्त संपति के अर्जन के संबंध में कोई भी आक्षेप :---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन की अविधिया तत्संबंधी व्यक्तियों पर सूचना की तामिल से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्स व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (स) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर संपरित में हितसद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकरेंगे।

स्पष्टीकरणः--इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित है, वही अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनुसूची

व्यक्ति तथा सम्पत्ति जैसा कि विलेख नं० 235 **दिनांक** भ्रप्रैल, 1982 को रजिस्ट्रीकर्त्ता श्रधिकारी भटिण्डा ने लिखा है।

> जे० एल० गिरधर, सक्षम प्राधिकारी सहायक ग्रायकर ग्रायुक्त (निरीक्षण) भ्रजैंन रेंज जालंधर,

तारीख: 15-12-1982

मोष्ठर:

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकार आयुक्त (निरीक्षण)

भ्रजीन रेज, जालधर

जालधर, दिनाक 15 दिसम्बर 1982

निर्देश नं० ए० पी० न० 3740—-श्रत. मुझे, जे० एल० गिरधर,

शायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इंसके क्रवान 'उक्त अधिनियम' कहा गया है, की धारा 269-क के अवीन नक्षम प्रशाबकारी की, यह विश्वास करने का कारण है कि स्वावर नपत्ति जिसका छनित बाजार मूख्य 25,000/ र• से अधिक ह

भ्रौर जिसकी संख्या जैसा कि श्रनुसूची में लिखा है तथा जो भटिण्डा में स्थित है (श्रौर इससे उपाबद्ध श्रनुसूची में श्रौर पूर्ण रूप से वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्त्ता श्रधि-कारी के कार्यालय भटिण्डा में रजिस्ट्रीकरण श्रधिनियम,

1908 (1908 का 16) के मधीन अप्रैल, 1982

को पूर्वोक्त सम्मत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के इश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मूम्में यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोवत सपत्ति का उचित बाजार मूल्य; उसके दश्यमान प्रतिफल स, एमें दश्यमान प्रतिफल का पम्द्रह प्रतिकत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरक) और अन्तरिती (अन्तरितियों) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्मितीबत उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखित में बास्तबिक रूप में कथित नहीं किया गया है:---

- (क) बल्तरणा से हुई किसी आय को बाबत उक्त बाधि-नियम: के अधीन कर देने के धन्तरक के बाबित में कमी करने या छक्तरे बचने में सुविधा के लिए: धीर्ण्या
- (क) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों की, जिन्हें भारतीय धाय-जर सिंधिनियस, 192. (1922 का 11) या अन्त अधिनियस, या अन-कर अधिनियस, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया या या किया जाना चाहिए था, क्रिपाने में सुविधा के लिए;

अ्तः, अव, उक्त अधिनियमं, की धारा 269-ग के अनुसरण मं, मं, अक्त अधिनियमं की धारा 269-ण की उपधारा (1) के अधील, निम्निसिसिस व्यक्तियों, अधिस् ं--- (1) भगवान सिंह पुत्र मदन सिंह मुख्तयार सन आफ निरन्दर सिंह पुत्र कोटी प्रमर पुरा नजदीक थरमल कालोनी भटिण्डा।

(भ्रन्तरक)

- (2) वि श्रकाल महाय कापरेटिय हाउस बिल्डिंग सोसायटी लि० भटिण्डा द्वारा इट्म सैनरेट्री श्रौर बार्डस प्रैजीडेंट श्री बलटेव सिंह मोगा (डिस्ट्रक फूड लेबोरेटरी श्रोल्ड सिवित श्रम्पनाल भटिण्डा। (अन्तरिती)
- (3) जैसा कि उपरोक्त २०2 में लिखा है।
- (4) जो व्यक्ति सम्पत्ति मं रुचि रखता है। (वह व्यक्ति, जिनके बारे में अधाहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पत्ति में हितबद्ध ही)

को यह सूचना जारी करके पूर्वीक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हुं।

उक्त संपत्ति के अर्जन के संबंध में कोई भी आक्षेप :--

- (क) इस स्चना के राजपत्र मा प्रकाशन को तारास स 45 बिन की वित्ति ना तन्सम्बन्बी गाजित्यों पर स्चना की तामील से 30 दिन को अविधि, जो भी अतिथि बाद मा समाप्त हाती हा, के भीतर प्रविद्या व्यक्तिया मा भागित हाती हा, के भीतर प्रविद्या
- (६) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन का तारीस स ,15 दिन के भीतर उवत स्कावर सम्पत्ति में हित-बद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा, अधोहस्ताक्षरी के पास सिस्ति में किए जा सकने ।

स्यव्यक्तिरण :— इसमें प्रमुक्त शक्यों और पदों का जो उन्त अधिनियम के अध्याय 20-क में परि-भाषित हैं, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय कें दिया गया है।

अनुसूची

व्यक्ति तथा सम्पत्ति

जैसा कि विलेख न० 181 दिनाक श्रप्रैल 1982 को रजिस्ट्रीकर्ता अधिकारी भटिण्डा ने लिखा है।

> जे० एत० गिरधर सक्षम प्राघिकारी सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) श्रजेन रेज, जालन्धर

नारी**ख** 15-12-82 मोहर प्ररूप. आर्द्द. टी. एन. एस. ----

आयकर अभिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-घ (1) के अभीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, महायक आयकार आय्क्त (निरीक्षण)

श्चर्यन रेज, जालन्धर जालन्यर, दिनांछ 15 दिसम्बर 1982 निर्देश नं० ए० पी० न० 3741—यन मुझे, जे०एल० गिरधर,

आपकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमे इसके पश्चात् 'उकन अधिनियम' कहा गया हैं), की धारा 269-ल के अधीन मक्षम प्राविज्ञारी को यह विश्वाम करने का कारण हैं कि स्थावर संपत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- क से अधिवा हैं

श्रौर जिसकी मंद जैसा कि श्रनुसूची में लिखा है तथा जो भटिन्डा में स्थित है (श्रौर इनचे उपायद्ध श्रनुग्ची में श्रौर जो पूर्ण रूप में विणित है) रिजस्ट्री कर्या श्रीधनारी के कार्यालय भटिन्डा में रिजस्ट्रीकरण श्रीविचयम, 1908 (1908 का 16) के अधीन दिनाक श्रील, 1982

को पूर्विकत सपरित के जियन बाजार सूल्य से कम के दश्यमान प्रतिफल के लिए अल्लिश्त का गई हैं और मुक्ते यह विश्वास करने का कारण हैं कि सथापूर्वित सपत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके हर्यमान लिक्स स, एसे इस मान प्रतिफल के पन्द्रह प्रतिशा से जिया है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (क्लिसिन्स) के दीख एसे अन्तरण के लिए तस पास गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखित में वास्तीयक रूप में किया गहा किया गया है --

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्व में कमी कारन या उससे बजाने में मुविधा के लिए, और/या
- (ख) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को जिन्हों भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, दा धनकर अधिनियम, दा धनकर अधिनियम, दा धनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ जन्तरियों द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जात काहिए था, छिपाने में सूर्विधा के लिए।

अतः अब, उक्त अधिनियम की धारा 260-ग के, अनुसरण मे, मैं, उक्त अधिनियम की धारा 269-घ की उपधारा (1) के अधीत, निम्मतिस्थित व्यक्तियो, अधार —-- भगवान सिंह पुत्र मवन सिंह मुक्तयारे सन भाफ नरिन्दर सिंह पुत्र कोठो भ्रमर पुरा नजदीक थर्मल कालोनी, भटिन्डा

(भ्रन्तरक)

2. दि श्रकाल महाय कोआपरेटिय हार्जीसग बिल्डिंग सोसायटी लि० भटिन्डा द्वारा सैकेटरी व वार्डस प्रेसीडेंट श्रीर बलदेव सिंह योग मिल फूड लैक्नोरेटरी श्रील्ड सिविल अस्पताल ।

(म्रन्तरिती)

3 जैसानं० 2 में लिखा है।

(वह व्यक्ति जिसके अभिधोग में सम्पत्ति है)

 को व्यक्ति सम्पत्ति में इचि रखता है।
 (वह व्यक्ति, जिनके बारे में श्रधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पत्ति में हितबद्ध है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वेक्सि संपत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हूं

उक्त संपत्ति के जर्जन के संबंध में कोई भी आक्षेप :--

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन की अविधि या तत्संबंधी व्यक्तियों पर सूचना की नामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की हारी से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर संपत्ति में हितबक्ध किसी बन्य व्यक्ति क्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिसिस में किए का सकारी।

स्वक्कीकरण:--इसमे प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उन्त अधिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं, वहीं अर्थ होगा, जो उस अध्याय में दिया गया हैं।

अनुसुची

व्यक्ति तथा सम्पत्ति, जैसा कि विलेख नं० 478 दिनांक अप्रैल, 1982 को रजिस्ट्रीकर्ता ग्रधिकारी भटिन्डा में लिखा है।

> जे० एस० गिरधर सक्षम प्राधिकारी सहायक ग्रायकर ग्रायुक्त (निरीक्षण) ग्रर्जन रेंज, जालन्धर

तारीख 15-12-1982 मोहर प्ररूप भाइ . टी. एन . एस . -----

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की भारा 269-घ (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक वायकर आयुक्त (निरीक्षण)

ग्रर्जन रेज, जालन्धर

जालन्धर, दिनाक 15 दिसम्बर 1982

निर्देश स० ए० पी० नं० 3742---यतः मुझे, जे० एस० शिरधरः

बायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) जिसे इसमें इसके पश्चात 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- रु. से अधिक है

श्रौर जिसकी सं० जैसा कि अनुसूची में लिखा है तथा जो भटिन्डा में स्थित हैं (श्रौर इससे उपाबद्ध अनुसूची में ग्रौर जो पूर्ण रूप से वर्णित हैं) रजिस्ट्रीकर्ता श्रधिकारी के कार्यालय भटिन्डा में रजिस्ट्रीकरण श्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के श्रधीन श्रप्रैल, 1982

को पूर्वेक्ति सपित के उचित बाजार मूल्य से कम के उत्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुभे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वाक्त सपित का उचित बाजार मूल्य, उसके रश्यमान प्रतिफल से एसे दश्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरको) और (अन्तरिती) (अन्तरितियों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रशिषत , निम्निलिसन उत्दर्ध से उक्त अन्तरण लिखित में बास्तविक रूप से कथित नहीं किया गया है .——

- (क) अन्तरण संहुई किसी आय की बाबस, उक्त अधिनियम के अधीन कर दने के अन्तरक के वायित्य में कमी करने या उससे अचने में सुविधा के तिए; बीर/या
- (क) एसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को, जिन्हों भारतीय आय-कर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती व्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सृविधा के लिए;

क्षतः वस, उन्तः अधिनियम की धारा 269-ए के अनुसरण में, में, उन्त अधिनियम की धारा 269-ए की उपधारा (1) के सभीन, निम्नसिचित व्यक्तियों, अर्थातः— 1. सुरजीत सिंह पुत्र निहाल सिंह, चन्वसार, बस्ती भटिन्डा

(ब्रन्तरक)

 श्री सुभाष चन्द पुत्र चिरजीलाल रामपुरा फूल ।

(अन्तरिती)

- (3) जैसा कि ऊपर नं० 2 में लिखा है। (वह व्यक्ति, जिसके श्रिधभोग में सम्पति है)
- (4) जो व्यक्ति सम्पत्ति में रूचि रखता है (वह व्यक्ति जिनके बारे में श्रधोहस्तक्षरी जानता है कि वह सम्पत्ति में हितबद्ध है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अजंन के लिए कार्यवाहियां करता हूं।

उस्त सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप .--

- (क) इस गुचना के राजगर का सकाशन को ताराख से 45 दिन की अविधिया तत्सवंधी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पृष्टोंकत व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (स) इस स्थान के राजपत्र में पकाञन की तारीय में 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हित-स्यूभ किसी अन्य व्यक्ति द्वारा, अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकेंगे।

स्पद्धीकरण:--इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं, बही अर्थ होगा जो उस अध्याय में विद्या गया है।

अगृतुकी

व्यक्ति तथा सम्पत्ति जैमा कि विलेख न० 315 दिनांक अप्रैल 1982 को रजिस्ट्री-कर्ता अधिकारी भटिन्डा में लिखा है।

> जे० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी सहायक ग्रायकर श्रायुक्त (निरीक्षण) भ्रजीन रेंज, जालन्धर

तारीख 14-12-1982

प्ररूप आर्ड टी एन एस. ------

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) कीं धारा 269 घ (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यानयः, सहायक आयन्त्रर आयुक्त (निरक्षिण) भ्रर्जन रज, जालन्धर

जालन्धर दिनाक 15 विसम्बर 1982

निर्देश स० ए० पी० न० 3743—यत मुझे, जै० एल० गिरधर,

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिस इसम इसके पश्चात 'उटत अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-सं के अधीन सक्षम प्रधिकारी का यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मृल्य 25,000/- रास्ते अधिक है

जैसा कि धनुसची में लिखा है तथा जो भटिन्डा में स्थित है (और इससे उपाबढ़ अनुस्ची में जीर जो पूर्ण रूप से वर्णित है) रिजस्ट्री-कर्ता अधिकारी के कार्याचय भटिन्डा में रिजस्ट्रीकरण अधिनियम 1908 (1908 का 16) के अधीन दिनाक अप्रैल, 1982 को पूर्वोक्त सर्पात है रिचित आजार मल्य से म ठ दृष्ट्यमान प्रतिफल के तिए अारित को गई है और मुक्ते यह विश्वास करने का कारण है कि यथापर्वादत सम्पत्ति का उचित वाजार मृत्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से, एसे दृश्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अतरक (अतरकों) और अंतरिती (अतरितियों) के बौच एसे अत्रण के लिए तय पाया गया प्रतिफल निम्निलियत उद्यद्घ्य में उक्त अतरण लिखित में वास्तिक रूप से कथित नहीं किया गया है ——

- (क) अतरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर देने के अंसरक के दायित्य में कभी करने या उससे बचने में स्विधा के लिए और/या
- (ख) एसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को, जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 को को को किसी था उन्त अधिनियम, या क्व-क्वर किपनियम, 1957 (1957 को 27) के प्रयाजनार्थ अहिरिती क्वाप्त एकट नहीं किया गया या या जिया जाना चाहिए था छिपाने में मिविधा के लिए,

अत अब, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनसरण मं, मं पा िनियम पीना १६९ घनी उपधारा (1) के अधीन, निम्निलिखन न्याप्तियों, अर्थात - श्री बूटा सिह पुत्र श्री श्रर्जन सिंह वासी चन्दसर, बस्ती, भटिन्डा ।

(भ्रन्तरक)

- 2 मेगराज अग्रवाल पुत दौलत राम, सिवल कोर्ट, मिटन्डा श्री चिरजीलाल, पुत्न बन्सीराम एडवोकेट, भिटन्डा। (श्रन्तरिती)
- 3 जैसा कि ऊपर न० 2 में लिखा है। (बह व्यक्ति, जिसके ग्रिधिभोग में सम्पित्त है)
- 4 जो व्यक्ति सम्पत्ति में रुचि रखता है।
 (वह व्यक्ति, जिनके बारे में स्रधोहस्ताक्षरी
 जनाता है कि वह सम्पत्ति में हितबढ़ है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्परित के अर्जन के लिए कार्यवाहिया करता हूं।

उक्त सम्पत्ति के अर्थन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप :---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीं से 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियां पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वीक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति व्वतरा,
- (का) इस स्थाना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीक से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबक्ष किसी अन्य व्यक्ति द्वारा, अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किये जा सकेंगे

स्वक्रीकरण: ---इसमें प्रयुक्त शब्दों और पर्धों का, जो उक्स अधिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में विवा गया है।

अनुसूची

व्यक्ति, तथा सम्पत्ति जैसाकि विलेख न० 322 दिनांक ग्रप्रैल, 1982 को रिजस्ट्रीकर्ना श्रिधिकारी भटिन्डा में लिखा है।

> जे० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी सहायक श्रायकर श्रायुक्त (निरीक्षण) श्रर्जन रेज, जालन्धर

तारीख 15-12-1982 मोहर प्ररूप आहर्र. टी. एन. एस.-----

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-घ (1) के अधीन सुधना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) श्रर्जन रेंज, जालन्धर जालन्धर, दिनांक 15 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० ए० पी० नं० 3744—यत: मुझे, जे० एल०

गिरधर,

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- रह. से अधिक है

श्रौर जिसकी सं० जैसा कि श्रनुसूची में लिखा गया है तथा जो भटिन्डा में स्थित है (श्रौर इससे उपाबद्ध श्रनसूची में श्रौर जो पूर्ण रूप से विणत है) रजिस्ट्रीकर्ला श्रीधकारी के कार्यालय भटिन्डा में रजिस्ट्रीकरण श्रीधनियम 1908 (1908 का 16) के श्रिधीन दिनांक श्रप्रैल, 1982

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के द्रश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मूक्ते यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके द्रश्यमान प्रतिफल से, एसे द्रश्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अंतरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितियाँ) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल निम्नलिखित उच्च देय से उक्त अन्तरण लिखित में वास्तिक रूप किया नहीं किया गया है:-

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्त अभिनियम के अभीन कर दोने के अन्तरक के धायित्व में कसी करने या उससे बचने में सृतिधा के लिए; और/या
- (क) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्त्यों की जिन्हें भारतीय आय-कर अधिनियम, 1922 (1922 को 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना था, छिपाने में स्विधा के निए;

कतः अब, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अन्सरण में, में, उक्त अधिनियम की धारा 269-घ की उपधारा (1) के अधीन, निम्मीसिक्त व्यक्तियों, अधीत् :---

 अंग्रेज सिंह पृत्र अर्जन सिंह चन्द सर वस्ती, शटिन्डा

(अन्तरक)

 तरसेम लाल महेण कृमार श्रीर सुभाष चन्द्र पृत्र मदन गोपाल, भटिन्डा , भाग सिह, शिवराज सिह पृत्र नत्था सिंह गांव सूहला तहसील सी निधाना, सुकिन्दर कीर पत्नी बृटा सिह गुरुसर, भटिन्डा ।

(श्रन्तरिती)

- जैसा कि ऊपर नं० 2 में लिखा है।
 (वह व्यक्ति जिसके अधिभोग में सम्पत्तिहै)
- जो व्यक्ति सम्पत्ति में क्षि रखना है।
 (वह व्यक्ति, जिनके बारे में अधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पत्ति में हिनबद्ध है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वेक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाही शुरू कारता हु।

जक्त सम्पत्ति के अर्जन के संबंध में कांई भी आक्षंप .--

- (क) इस स्चना के राजपक्ष में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अविधि या तत्राग्वन्धी व्यक्तियां पर स्चना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (ल) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हित-बद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा, अधोहस्ताक्षरी के पास निस्ति में किए जा सकेंगे।

स्पष्टीकरण — इसमें प्रयुक्त शब्दों और पर्वों का, जो उक्त अधिनयम, के अध्याय 20-क में एरिभाषित हैं, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अम्सूखो

व्यक्ति श्रौर सम्पत्ति जैसा कि विलेख नं० 325 दिनांक श्रप्रैल, 1982 को रजिस्टीकर्ला श्रविकार भटिन्डा में लिखा है।

> जेंे । लें गिरधर सक्षम प्राधिकारी महायक श्रायकर प्रायुक्त (निरीक्षण) श्रर्जन रेंज, जालन्धर

नारीख: 15-12-82

परूप आहें टी एन एस

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की भारा 269-घ (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आय्क्त (निरीक्षण) प्रर्जन रेज, जालन्धर,

जालन्धर दिनाक 15 दिसम्बर 1982

निर्देश में ०० प्राची नव 3745---श्रतः मुझे जेव एलव गिरधर,

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमे इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-ल के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- रा. से अधिक है

ग्रौर जिसकी स० जैसा कि ग्रनुसूची में लिखा हं तथा जो भटिन्डा में स्थित है (ग्रौर इससे उपाबद्ध ग्रनुसूची में ग्रौर जो पूर्ण रूप से वर्णित हैं) रजिस्ट्रीकर्ता ग्रधिकारी के कार्यालय भटिन्डा में रजिस्ट्रीकरण ग्रधिनयम 1908 (1908 का 16) के ग्रधीन दिनाक ग्राप्तैल, 1982

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मूझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, इसके दृश्यमान प्रतिफल से, एसे दृश्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अंतरक (अंतरकों) और अंत-रिती (अंतरितियों) के बीच एसे अंतरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल निम्नलिखित उद्वेश्य से उक्त अंतरण लिखित में वास्तविक रूप से किथत नहीं किया गया हैं:—~

- (क) अंतरण से हुई किसी आयु की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अंतरक के दायित्व में कभी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए; और/या
- (स) एसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को, जिन्हों भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धनकर अधिनियम, या धनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अंतरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था छिपाने में सविधा के लिए;

अत. अब, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण मं, मं, उक्त अधिनियम की धारा 269-घ की उपधारा (1) के अधीन, निम्निलिखित व्यक्तियों, अर्थात् :--- श्री प्रोमप्रकाण गर्ग पुत्र श्री देसराज पता . कैलाश काटन फैक्टरी, हाजी रतन, भटिन्डा।

(भ्रन्तरक)

 श्री रमन बाला पत्नी श्री सुरेण क्मार वामी रामपुरा, फ्ल ।

(श्रन्तरिती)

3 जैसा कि नं०2 में लिखा है।

(वह व्यक्ति जिसके यधिभाग में सम्पत्ति है)

 जो व्यक्ति सम्पत्ति में र्गच रखता है।
 (वह व्यक्ति, जिनके बारे में प्रधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पत्ति में हितवद है)

को यह स्थाना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हू ।

उक्त संपरित के सम्बन्ध में कोई आक्षेप :--

- (क) इस स्वना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वीक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (ख) इस स्थाना के राजपत्र मं प्रकाशत की तारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्यक्ति में हित-बद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहम्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकेंगे।

स्पव्यक्तिरण: ---इसमे प्रयक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम के अध्याय 20-क मे परिभाषित है, वहीं अर्थ होगा जो उसा अध्याया मे विया गया है।

अन्स्ची

त्र्यक्ति तथा सम्पत्ति जैया कि विलेख न० 342 दिनाक अप्रैल, 1982 को रजिस्ट्रीकर्ता श्रधिकारी भटिन्डा मे लखा है।

> जे० एल० गिरधर सक्षम ग्रधिकारी सहायक भ्रायकर भ्रायुक्त (निरीक्षण) ग्रर्जन रेंज, जालन्धर

तारीख 15-12-1982 मोहर : प्ररूप आर्ष .टी . एन . एस . ------

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-ध (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) भ्रजन रेंज, जालन्धर

जालन्धर, दिनांक 15 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० ए० पी० नं० 3746—ग्रतः मुझे जे० एल० गिरधर,

आगकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'अकत अधिनियम' कहा गया हैं), की धारा 269-स के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विद्यास करने का कारण हैं कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मृल्य 25,000/- रु. से अधिक हैं

ग्रौर जिसकी मं० जैसािक श्रनुसूची में लिखा है तथा जो भटिन्डा में स्थित है (ग्रौर इसमे उपाबद्ध श्रनुसूची में ग्रौर जो पूर्ण रूप से विणत है) रिजस्ट्रीकर्ता श्रिधकारी के कार्यालय भटिन्डा में रिजस्ट्रीकरण श्रिधितयम 1908 (1908 का 16) के श्रिधीन दिनाक ग्राप्रैल, 1982

को पूर्वेक्ति सम्पिति के उचित बाजार मूल्य से कम के स्रथमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मूओ यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वेक्त संपित्त का उचित बाजार मूल्य, उसके दश्यमान प्रतिफल से एसे दश्यमान प्रतिफल के पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरको) और अंतरिती (अंतरितियो) के बीच के ऐसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण जिखित मे वास्तियक रूप से कथित नहीं किया गया है:---

- (क) अन्तरण से हुर्न िकसी आग की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए; और/या
- (ख) एंकि निसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को जिन्हों भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती व्धारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा के लिए।

अतः अब, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के, अनुसरण में, मैं, उक्त अधिनियम की धारा 269-घ की उपभारा (1) के अधीन, निम्निनियत व्यक्तियों, अर्थात् .~~ श्री श्रोमप्रकाण गर्ग पुत्न देसराज पता: कैलाश काटन फैक्क्टरी, हाजी रतन, भटिन्डा।

(भ्रन्तरक)

 श्रीमती रमन बाला पत्नी सुरेश कुमार रामपुरा फूल ।

(ब्रन्तरिती

औसो कि ऊपर नं० 2 में लिखा है।
 (वह व्यक्ति जिसके श्रिधभोग में सम्पत्ति है)

 जो व्यक्ति सम्पत्तिमें रिच रखता है।
 (वह व्यक्ति, जिनके बारे में ग्रधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पत्ति में हितबद्ध है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त संपत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हूं।

उक्त संपति के अर्जन के संबंध में कोई भी आक्षेप :--

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन की अविधि या तत्संबंधी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वीक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति स्वारा;
- (स) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर संपतित में हितबद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्साक्षरी के पास लिखित में किए जा सकी।

स्पद्धीकरणः--इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उत्कल्त अधिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं, वही अर्थ होगा जो उस अधाय में दिया गया है।

अनसची

व्यक्ति तथा सम्पत्ति जैसा कि विलेख नं० 408 दिनांक ग्रप्रैल, 1982 को रजिस्ट्रीकर्ता अधिकारी भटिन्डा में लिखा है।

> जे० एल० गिरधर सक्षम श्रिधकारी सहायग श्रायकर श्रायुक्त (निरीक्षण) अर्जन रेंज, जालन्धर

तारीख 15-12-1982 मोहर: प्ररूप आर्इ.टी.एन.एस.-----

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की) धारा 269-घ (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरक्षिण) ग्रर्जन रेंज, जालन्धर जालन्धर, दिनांक 15 दिसम्बर 1982 निर्देश सं० ए०पी० नं० 3747—श्वतः मुझे जे० एल०

भायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269- ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- रु. से अधिक है

भौर जिसकी सं० जैसाकि भनुसूची में लिखा है तथा जो भटिन्डा में स्थित है (भौर इससे उपाबद्ध श्रनुसूची में श्रौर जो पूर्ण रूप से वर्णित है) रजिस्ट्रीकर्ता अधिकारी के कार्यालय भटिन्डा में रजिस्ट्रीकरण अधिनयम 1908 (1908 का 16) के अधीन दिनांक अप्रल, 1982

को पूर्वेक्स सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मूक्षे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल सो, एसे दृश्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितियों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखित मे बास्तिक रूप से किथत नहीं किया गया है:——

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में सूविधा के लिए; और/या
- (अ) एसे किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा के लिए।

अतः सब उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण में, मैं, उक्त अधिनियम की धारा 269-च की उप्धारा (1) के अधीन मिम्निसिक व्यक्तियों, अर्थात के—

 श्री विजयकुमार पुत्न श्री हंसराज करियाना डीलर नजवीक: पुराना पुलिस स्टेशन भटिन्डा।

(ग्रन्तरक)

2. श्री बलबीर सिंह पुत्र श्री तारा सिंह, मुरजीत कौर पत्नी रनबीर सिंह मनजीत सिंह रघुबीर सिंह, मिरनजीत कौर पत्नी मनजीत सिंह विजय कुमार करियाना डीलर नजदीक पुराना पुलिस स्टेशन, भटिन्छा ।

(भ्रन्तरिती)

3. जैसा कि ऊपर नं० 2 में लिखा है।

(वह व्यक्ति, जिसके श्रिधिभोग में सम्पत्ति है)

4. जो व्यक्ति सम्पत्तिमे रुचि रखता हो।
(वह व्यक्ति, जिनके बारे मे श्रधोहस्ताक्षरी
जानता है कि वह सम्पत्ति मे हितबद्ध है।)
को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए
कार्यवाहियां शुरू करता हुं।

उक्त सम्पत्ति के वर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप :--

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविध, जो भी अविधि बात में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वीक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (स) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी वे पास लिखित में किए जा सकेंगे।

स्यव्हीकरण :--इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदो का, जो उकत अधिनियम के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं, बही अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अम्सूची

व्यक्ति भ्रौर सम्पत्ति जैसाकि विलेखनं० 353, दिनांक भ्रप्नैल, 1982 को रजिस्ट्रीकर्ता श्रधिकारी भटिन्डा में लिखा है।

> जे० एस० गिरधर सक्षम श्रधिकारी सहायक भ्रायकर म्रायुक्त (निरीक्षण) श्रर्जन रेंज, जालन्धर

तारीख 15-12-1982 मोहर प्ररूप आई. टी. एन्. एस. ----

आधकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-च (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) श्रर्जन रेंज, जालन्धर

जालन्धर, दिनांक 15 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० ए० पी० नं० 3748—यतः मुझे जे० एल० गिरधर,

जायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमे इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राविधकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/-रु. से अधिक है

श्रौर जिसकी सं० जैसा कि श्रनुसूची में लिखा है तथा जो भटिन्डा में स्थित है (श्रौर इगसे उपाबद्ध श्रनुसूची में श्रौर जो पूर्ण रूप से वर्णित है) रजिस्ट्रीकर्ता अधिकारी के कार्यालय भटिन्डा में रजिस्ट्रीकरण अधिनियम 1908 (1908 का 16) के श्रधीन दिनांक श्रशैल, 1982

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के दश्यमान प्रतिफल के लिए अंतरित की गई है और मुक्ते यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त संपत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दश्यमान प्रतिफल से, एसे दश्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिकृत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितियों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्यों से उक्त अन्तरण लिखत में वास्तविक रूप से किथ्त नहीं किया गया हैं:---

- (क) अन्तरण संहुई किसी आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्व में कभी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए; और/या
- (क) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को जिन्हों भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धनकर अधिनियम, या धनकर अधिनियम, या धनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती व्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में स्विधा के लिए।

अतः अब उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण में, मैं, उक्त अधिनियम की धारा 269-घ की उपधारा (1) के आपि. भिम्मिलिंग व्यक्तियों, अर्थात् .—

- श्री विजय कुमार पुत्र श्री हंसराज, मुख्तयारे ग्राम ग्राफ श्रीमती राज रानी उसकी बहिन करियाना डीलर नजदीक पुराना पुलिस स्टेशन, सदर थाना भटिन्डा (ग्रन्तरक)
- 2. श्री रघुबीर सिंह पुत्र श्री नराता सिंह बूटा सिंह पुत्र बखतार सिंह, श्री हरचन्द सिंह पुत्र गुरनाम सिंह, रक्षपाल कौर पत्नी हरचन्द पता सुपुत्र प्रिथीपाल सिंह डिपार्टमेंट, डबवाली रोड, भटिन्डा। (श्रन्तरिती)
- जैसा कि उपरोक्त न० 2 में लिखा है।
 (बह व्यक्ति, जिनके श्रिधिभोग में सम्पत्ति है)
- 4. जो व्यक्ति सम्पत्तिमें रुचि रखता है। (बहु व्यक्ति, जिसके बारे में अधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पत्ति में हितबद्ध है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां शुरू करता हुं।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन् के सम्बन्ध में कोई भी अक्षेप :--

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वीकत व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति स्वारा;
- (स) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस .से 45 विन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिसित में किए जा सर्कोंगे।

स्पद्धीकरण: -- इसमें प्रयुक्त शब्दों और पद्दों का, जो उक्त अधिनियम के अध्याय 20 क में परिभाषित है, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनुसूची

व्यक्ति तथा सम्पत्ति जैसाकि विलेख नं० 354 दिनांक भ्राप्रैल, 1982 को रजिस्ट्रीकर्ता श्रिधकारी भटिन्डा में लिखा है।

> जे० एख० गिरंधर सक्षम ग्रिधिकारी सहायक ग्रायकर ग्रायुक्त (निरीक्षण) ग्रर्जन रेज, जालन्धर

नारीख 15-12-1982 मोहर :

प्रकप बाई॰ टी॰ एन॰ एस॰--

श्रायकर प्रधिनियम, 1961 (1961 का 43) की बारा 269 क (1) के प्रधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक भ्रायकर भ्रायुक्त (निरीक्षण) ग्रर्जन रेंज, जालन्धर

जालन्धर, दिनांक 15 दिसम्बर 1982

निर्देश मं० ए० पो० नं० 3749— यतः, मुझे, जे० एल० गिरधर

शायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी की, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर संपरित जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- रु. से अधिक है

* श्रौर जिसको सं० जैसा कि अनुसूची में लिखा है तथा जो भटिन्डा में स्थित है (श्रौर इससे उपाबस अनुसूचा में श्रौर पूर्ण रूप से वर्णित है) रजिस्ट्रीकर्ता अधिकारी के कार्यालय भटिन्डा में रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन दिनांक अभैल, 1982

को पूर्वोक्त संपर्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के ध्रथमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मूफ्ने यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से एसे दृश्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितयों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल. निम्नलिखित उद्देश्य में उक्त अन्तरण लिखित में वास्तिक रूप से किथत नहीं किया गया है:---

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उन्स अधिनियम के अधीन कर देने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में सुविद्या के लिए और/या
- (ख) ऐसी किसी आयया किसी धन या अन्य श्रास्त्यों की, जिन्हें भारतीय श्रायकर प्रधित्यम, 1922 (1922 का 11) या उक्त श्रधित्यम, या धनकर श्रधित्यम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था खियाने में मुक्किया के लिए;

अंतः जन, उक्त जीभीनयम की भारा 269-ग के अनुसरण मे, में उक्त अभिनियम की धारा 269-घ की उपधारा (1) के बभीन, निम्मलिखित व्यक्तियों, अर्थात् :--- श्री बानूराम पुत्रश्री चैतराम, वासी बन बम्बू शाप, सिरकी बाजार, भटिन्डा।

(भ्रन्तरक)

2. श्रो शमशेर मिह जोगिन्द्र सिंह बलवन्त सिंह और पृथी सिंह पुत्र पूरण सिंह, स्वर्णजीत सिंह पुत्र शमशेर सिंह पता—पृथी सिंह हरटा कल्चर डिपार्टमेंट, डबवाली रोड, भटिन्डा ।

(अन्तरिती)

3. जैसाकि उपरोक्त नं० 2 में लिखा है।

(वह ध्यक्ति, जिसके ग्रधिभोग में सम्पत्ति है)
4. जो व्यक्ति सम्पत्ति में रिच रखता है।

(वह व्यक्ति, जिनके बारे में प्रधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पत्ति में (इतबद्ध है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्परित के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हुं।

उक्त सम्पत्ति के वर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप:---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकागन की तारीख से 45 दिन की भविध या तत्सम्बन्धी ज्यक्तियों पर सूचना की तामीन मे 30 दिन का भविध, जीभी श्रविध बाद में समाप्त होती हो, कभीतर पूर्वी। ब्यक्तियों में कियी ज्यक्ति द्वारा;
- (ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन को तारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में दित्तवद्व विसी भन्य व्यक्ति द्वारा प्रधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकेंगे।

हपकटीकरण:--इसमें प्रयुक्त शब्दों ग्रीर पदों का, जो उक्त श्रीवित्यम के श्रष्टयाय 20-क में परिभाषित है, वहीं प्रयं होगा, जो उस श्रष्टयाय में दिया गया है।

वगस्त्री

व्यक्ति तथा सम्पत्ति जैसाकि विलेख न० 355 दिनाक अप्रैल, 1982को रजिस्ट्रीकर्ता प्रधिकारो भटिन्डा ने लिखा है।

> जे० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी सहायक ग्रायकर ग्रायुक्त (निरीक्षण) अर्जन रेंज, जालन्धर

नारीख : 15-12-1982

मोहर

प्ररूप अर्काः टी. एन्. एस. ----

आयुकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-घ (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण)
श्रर्जन रेंज, जालन्धर

जालन्धर, दिनांक 15 दिसम्बर 1982

निर्देश मं० ए० पी० नं० 3750---यतः, मुझे, जे० एल० गिरधर,

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया हैं), की धारा 269-स के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण हैं कि स्थावर सम्पत्ति, जिस्का उचित बाजार मूल्य 25,000/-रु. से अधिक हैं

ग्रीर जिसकी सं० जैसा कि श्रनुसूर्चा में लिखा है तथा जो भटिन्डा में स्थित है (श्रीर इससे उपाबच ग्रनुसूची में ग्रीर पूर्ण रूप में वर्णित है) रजिस्ट्रीकर्ता ग्रधिकारी के कार्यालय भटिन्डा में रजिस्ट्रीकर्रा ग्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के श्रधीन दिनांक श्रप्रैल, 1982

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के दश्यमान प्रतिफल के लिए अंतरित की गई है और मुफ्ते यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त संपत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दश्यमान प्रतिफल से, एसे दश्यमान प्रतिफल का पन्द्रह् प्रतिशत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरित (अन्तरितयों) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नसिचित उद्वेद्यों से उक्त अन्तरण लिखित में वास्तविक रूप से किथत नहीं किया गया है:—

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्त अभिनियम के अभीन कर दोने के अन्तरक के दायित्य में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए; और/या
- (ख) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन- कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्सरिती इवारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, खिपाने में स्विधा के लिए;

अतः अब उक्त अधिनियम की धार 269-ग के अनुसरण में, में, उक्त अधिनियम की धारा 269-घ की उपधारा (1) के अधीन निम्नुसिचित व्यक्तियों, अर्थात् :--- श्रीमती द्वारकी देवी विधवा, हंस राज पता: विजय कुमार करियाना डीलर, सामने सामने पृराना पुलिस स्टेशन, भटिन्डा।

(ब्रन्तरक)

2. श्री राज पाल सिंह , पृथीपाल सिंह पुत्न गोबिन्द सिंह, मनजीत सिंह नारोता सिंह, सुरिन्द्र कौर पत्नी मनजीत सिंह पता : डा० पृथी सिंह हार्टीकल्चरल डिपार्टमेंट, डीबवाली रोड, भटिन्डा ।

(अन्तरितो)

जैसा कि ऊपर नं० 2 में लिखा है।
 (बह व्यक्ति जिसके ग्रिधिभोग में सम्पत्ति है)

4. जो व्यक्ति सम्पत्ति में रुचि रखता है।
(वह व्यक्ति जिनके बारे में प्रधोहस्ताक्षरी
जानता है कि वह सम्पत्ति में हितबद्ध है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के वर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हुं।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन् के सम्बन्ध में कोई भी अक्षेप :---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वार;
- (ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पृत्ति में हितबद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकेंगे।

ल्लाख्डीकरणः ---इसमें प्रयुक्त शबयों और पर्वो का, जो उक्त अधिनियम के अध्याय 20 को में परिभालित ह⁴, वहीं अर्थहोगा जो उक्त अध्याय में दिया गया है।

असरची

व्यक्ति ग्रौर सम्पत्ति जैसा कि विलेख नं० 356 दिनांक ग्रप्रैल, 1982 को रजिस्ट्रीकर्ता ग्रधिकारी भटिन्डा ने लिखा है।

> जे० एल० गिरघर सक्षम प्राधिकारी सहायक ग्रायकर ग्रायुक्त (निरीक्षण) ग्रजीन रेंज, जालन्धर

ता**रीख**: 15-12-1982

मोहरः

प्ररूप आहूर. टी. एन. एस. ------

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-ष (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण)

म्बर्जन रोंज, जालन्धर

जालन्धर, दिनांक 15 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० ए० पी० नं० 3751—यतः, मुझे जी० एल० गिरधर,

बायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की भारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मृल्य 25,000/-रा. से अधिक है

श्रीर जिसकी सं० जैसा कि अनुसूची में लिखा है तथा जो भटिन्डा में स्थित है (श्रीर इससे उपाबद्ध अनुसूची में श्रीर पूर्ण रूप से वर्णित है) रजिस्ट्रीकर्ता अधिकारी के कार्यालय भटिन्डा में रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के श्रधीन दिनांक श्रप्रैल, 1982

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मृल्य से कम के दश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुक्ते यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त संपत्ति का उचित बाजार मृल्य, उसके दश्यमान प्रतिफल से एसे दश्यमान प्रतिफल का पंद्रह प्रतिक्रत से पिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितियों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखित में वास्तविक रूप से किथा नहीं किया गया है:--

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में सूविधा के लिए; और/या
- (श) एसी किसी बाय या किसी धन या बन्य आस्तियों को, जिन्हों भारतीय आय-कर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धनकर अधिनियम, या धनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती व्वारा प्रकट नहीं किया गया था किया जाना चाहिये था छिपाने में सिवधा के लिए;

अतः अस, उक्त अधिनियम की भारा 269-ग के अन्सरण में, मैं, उक्त अधिनियम की भारा 269-ए की उपधारा (1) के अभीन निम्नलिखित व्यक्तियों, अर्थातः——

श्री पत्रन कुमार पुत्र श्री हंसराज पत्ताः विजय कुमार, करियाना श्रीलर, सामने श्रोल्ड पुलिस स्टेशन, भटिन्डा ।

(अन्तरक)

2. जसवीर सिंह अमरीक सिंह पुत्र रणबीर सिंह, जोगिन्द्र सिंह पुत्र चनन सिंह, सतवन्त कौर पन्नी जोगिन्द्र सिंह, पताः डा० पृथी सिंह, हार्टिकलचर डिपार्ट मेंट, डबवाली रोड, भटिन्डा।

(अन्तरिती)

3 जैसा उपरोक्त नं० 2 में लिखाहै।

(बह व्यक्ति, जिसके श्रधिभोग में सम्पत्ति हैं)

4 जो व्यक्ति सम्पत्ति में एचि रखता है।
(वह व्यक्ति, जिनके, बारे में प्रधोहस्ताक्षरी
जानता है कि वह सम्पत्ति में हिसबद्ध है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त संस्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां शुरु करता हु।

उक्त संपर्तित के कर्जन संबंध में क्योर्ड भी आक्षेप :---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविध, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति बुवारा;
- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीक्ष से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास सिकित में किए जा सकारी।

स्पष्टिकरणः—इसमे प्रयुक्तशब्दों और पदों का., जो उक्त अधिनियम के अध्याय 20-क मे परिभाषित है, वहीं अर्थ होगा, जो उस अध्याय में दिया गथा

जनुसूची

व्यक्ति तथा सम्पत्ति जैसा कि विलेख नं० 357, दिनांक श्रप्रैल, 1982 को रजिस्ट्रीकर्ता श्रधिकारी भटिन्डा ने लिखा है।

> जे० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी सहायक ग्रायकर ग्रायुक्त (निरीक्षण) ग्रर्जन रेंज, जालन्धर

तारीख: 15-12-1982

प्ररूप आई. टी. एन. एस. ------

मायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की घारा 269-घ (1) के अधीन सुचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक भ्रायकर भ्रायुक्त (निरीक्षण) अर्जन रोंज, जालन्धर

जालन्धर, दिनांक 15 दिसम्बर 1982

निर्देश मं० ए० पी० नं० 3752—यन मुझे जे० एल० गिरुधर.

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है"), की धारा 269-स के अधीन सक्षम प्राधिकारी को, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर संपित्ति, जिसका उचित्त बाजार मृल्य 25,000/- रा. से अधिक है

भौर जिसकी सं० जैसा कि श्रनुसूची में लिखा है तथा जो भटिन्डा में स्थित है (श्रौर इससे उपाबद श्रनुसूची में श्रौर जो पूर्ण रूप से विजित है) रिजस्ट्रीकर्ता श्रधिकारी के कार्यालय भटिन्डा मे रिजस्ट्रीकरण श्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के श्रधीन विनांक सर्प्रेल, 1982

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के रूपमान प्रितफल के लिए अन्सरित की गई है और मूम्में यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दश्यमान प्रतिफल से, एसे दश्यमान प्रतिफल का पंद्रह प्रतिशत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अंतरिती (अन्तरितियाँ) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल कित निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखित में वास्तिविक रूप से किथत नहीं किया गया है:——

- (क) अन्तरण सं हुई किसी आय की बाबत, उक्त प्रधिनियम के प्रधीन कर देने के प्रन्सरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के सिए; बार/या
- (ख) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को जिन्हों भारतीय आय्-कर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा के लिए;

अतः अभ, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण में, मैं, उक्त अधिनियम की धारा 269-घ की उपधारा (1) के अधीन, निम्नीलिखित व्यक्तियों, अर्थात:—— 1 श्री हरश्रोभिन्दर सिंह उर्फ हर्विन्दर मिह गुव मन्दर सिंह गांव, टंगवाली ।

(ग्रन्तरक)

2 श्री हेतराम पुत्र नन्द राम गाव धूनीको मोती सिह पुत्र बीर सिह, गुरदयाल सिह पुत्र इन्द्र सिह् भटिन्छा ।

(भ्रन्तरिती)

3. जैसा कि उपरोक्त नं० 2 में लिखा है। (वह व्यक्ति, जिसके (अधिभोग में संपत्ति है)

4. जो ध्यक्ति सम्भात्त मे रुचि रखता है। (वह ध्यक्ति, जिनके बारे मे प्रधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पत्ति में हितबढ़ है)

को यह सृचना जारी करके पूर्वीक्त सम्पत्ति के कर्जन के लिए कार्यवाहियां शुरू करता हूं।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन् के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप:---

- (क) इस स्वना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर स्वना की तामील से 30 दिन की अविध, को भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त, व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (क्ष) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारिक्ष से 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर किसी अन्य व्यक्ति व्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सुकोंगे।

स्पष्टीकरण:---इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम, क्रे अध्याय 20-क में परिभाषित हैं वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में विया गया है।

अनुसूची

व्यक्ति तथा सम्पत्ति जैसा कि विलेख नं० 480 दिनांक अप्रैल, 1982 को रजिस्ट्रीक्ती अधिकारी भटिन्डा में लिखा है।

> जे० एल० गिर^{घर} सक्षम प्राधिकारी महायक भ्रायकर भ्रायुक्त (निरीक्षण) श्रर्जन रेंज, जालन्धर

तारीख 15-2-1982 मोहरः प्ररूप भाई. टी. एन. एस.----

जायकर मिपिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-च (1) के मधीन स्पना

भारत सरकार

कार्यासयः, सहायक शायकर शायकत (निरीक्षण) प्रजंन रेंज, जालन्धर

जालन्धर, दिनांक 15 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० ए० पी० नं० 3753—यतः मुझे, जे० एल० भारधरः

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-क के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मृस्य 25,000/-रु. से अधिक है

श्रीर जिसकी सं० जैसा कि श्रनुसूष्टी में लिखा है तथा जो भटिन्डा में स्थित है (श्रीर इससे उपाबद्ध श्रनुसूर्वी में श्रीर जो पूर्ण रूप से विणत है) रिजस्ट्रीकर्ता श्रीधकारी के कार्यालय भटिन्डा में रिजस्ट्रीकरण श्रीधनियम, 1908 (1908 का 16) के श्राधीन दिनांक श्राप्त, 1982

को पूर्वोक्त संपत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के रहयमान प्रतिफल के लिए अंतरित की गई है और मूक्ते यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त संपत्ति का अधित बाजार मूल्य उसके रहयमान प्रतिफल से, एसे रहयमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरका) और बन्तरिती (अन्तरितियाँ) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्वेश्य से उक्त अन्तरण लिखित मे बास्तविक रूप से कथित नहीं किया गया है:——

- (क) अन्तरण से हुई किसी काय की बाबत, उक्त जिभिनियम के जभीन कर दोने के अन्तरक के दायित्व में कभी करने या उससे बचने में सूबिधा के लिए; और/या
- (ख) एसे किसी जाय या किसी धन या अन्य बास्तियों की, जिन्हों भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अंतरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सूविधा के लिए;

अतः अब, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनूसरण में, मैं, उक्त अधिनियम की धारा 269-ष कौ उपधारा (1) के अधीन. निम्निलिखित व्यक्तियों, अर्थीत् :--- 41—416GI/82

 श्री सुखमिन्दर सिंह पुत्र प्रजायब सिंह वास मन्तपुरा रोड, नजदीक राधा स्वामी (व्यास) मत्सग भवन, भटिन्डा ।

(अन्तरक)

- 2. दि बैंक स्टाफ कापरेटिव हाउस बिल्डिंग सोसायटी लि० द्वारा इसके कार्यकारिण के सदस्य गण
 - (1) प्रजाडँट श्रा ज ० एस० सबनेह,
 यून।इटड इंडिया इन्डस्ट्रांज कम्पर्न,
 दि माल भटिन्डा ।
 - (2) वाईस प्रैसिडैंट श्री जय पाल गरका, यूनियन बैंक आफ इन्डिया, धर्मपुरा, बाजार काच, पटियाला।

(भ्रन्तरिती)

- 3 जैसा उपरोक्त नं० 2 में लिखा है। (वह ब्यक्ति जिसके श्रिधभोग में सम्पत्तिहै)
- 4. जो क्वियंक्त सम्पति मे रूपि रखता है (वह व्यक्ति, जिनके बारे में ग्रधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पति में हितबद है

को यह सूचना जारी करके पूर्वीक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाही शृरू करता हूं।

उक्त सम्पत्ति को अर्जन को संबंध में कोई भी आक्षोप :---

- (क) इस सूचना के राजपत्र मे प्रकाशन की तारोच से 45 दिन की अविध या तत्संबंधी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविध, जो भी अविध बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वों कर व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीक से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हित-बद्ध किसी व्यक्ति द्वारा, अधोहस्ताक्षरी के पास लिक्ति में किए जा सकोंगे।

स्वकारण: --इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उपता बाधिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित है, दही अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अन्सूची

ध्यक्ति तथा सम्पत्ति जैसा कि विलेख नं० 754 विनोक ग्रप्रल, 1982 को रजिस्ट्रीकर्ती ग्रिधिकार भटिन्डा में लिखा है।

> जे० एस० गिरधर सक्षम प्राधिकारी महायक ग्रायकर ग्रायुक्त (निर्र[ा]क्षण) ग्रर्जन रेंज, जालन्धर

तारीख: 15-12-1982

प्ररूप आई. टी. एन. एस.

भायकर विधिनियम, 1961 (1961 का 43) की भारा 269-भ (1) के वभीन स्वना

भारत् सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) श्रर्जन रेंज, जालन्धर

जालन्धर, दिनांक 15 दिसम्बर 1982

निर्वेश सं० ए० पी० नं० 3754—यतः मुझे, जे० एल० गिरधर,

बायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है"), की भारा 269-च के बधीन सक्षम प्राधिकारी की यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/रा. से अधिक हैं

श्रीर जिसका संव जैसा कि अनुसूची में लिखा है तथा जो भटिन्डा में स्थित है (श्रीर इससे उपाबद्ध अनुसूची में श्रीर पूर्ण रूप से वर्णित है) रजिस्ट्रीकर्ता श्रधिकारी के कार्यालय भटिन्डा में रजिस्ट्रीकरण श्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के श्रधीन दिनांक अप्रैल, 1982

को प्यों क्त संपत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के दश्यमान प्रतिफल के लिए अंतरित की गई है और मूक्ते यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य उसके दश्यमान प्रतिफल से, एसे दश्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत अधिक है और अन्तरक (अंतरकों) और अंतरिती (अन्तरितियों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तथ पाया गया प्रतिफल निम्नलिखित उद्वेष्य से उक्त बन्तरण लिखित में बास्तविक रूप से कियत नहीं किया गया है:——

- (क) अन्तरण से हुई किसी नाय की बाबत, उक्त विभिन्नियम के अभीन कर दोने के जन्तरक के दायित्व में कभी करने या उससे बचने में सृतिधा के सिए; जार/वा
- (स) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को, जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा के लिए;

अतः अब, उक्त अधिनियम, की धारा 269-ग के बनुसरण में, मैं, उक्त अधिनियम की धारा 269-घ की उपधारा (1) के अधीन, निस्नलिखित व्यक्तियों अर्थात् :—

- श्रो घोषिन्दर सिंह पुत्र पोहला सिंह गांव जोधपुर, रोमाना तहसील, जिला भटिन्डा। (बन्तरक)
- 2. वि० बैंक स्टाफ कोझापरेटिय हाउस बिल्डिंग सोसायटी लि० भटिन्डा द्वारा इट्ज सैक्टरी श्री जयपाल गर्ग, यूनियन बैंक झाफ इंडिया, धर्मपुरा बाजार, पटियाला और प्रजीडेंट श्री जी० एस० साहनी, यूनाइटिड इंडिया इन्स्योरेन्स कम्पनी लिमिटेड, भटिन्डा।

(अन्तरिसी)

- 3. जैसा उपरोक्त नं० 2 में लिखा है। (बहु व्यक्ति जिसके ग्रधिभोग में सम्पत्ति है
- जो व्यक्ति सम्पत्ति में रुचि रखता है।
 (वह व्यक्ति जिनके बारे में श्रधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पत्ति में हितबद्ध है)

को यह सृचना जारी करके पूर्वोक्त संपक्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हूं।

उक्त सम्पत्ति के वर्षन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप:--

- (क) इस सुवना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीक से 45 दिन की जविश्या तत्संबंधी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविध जो भी जविश्व को साम में समाप्त होती हो, के मीतर पूर्वों कर व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति बुवारा;
- (च) इस सूचना को राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन को भीतर उक्त स्थावर संपत्ति में हितबद्ध किसी बन्द व्यक्ति द्वारा, अभोहस्ताक्षरी के पास निवित्त में किए जा सकोंगे।

स्पव्यक्तिकरणः -- इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियमः, के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनुसूची

व्यक्ति तथा सम्पत्तिजैसाकि विलेख नं० 755 दिनांक अर्प्रैल, 1982 को रजिस्ट्रीकर्ती अधिकारी भटिन्डा ने लिखः है।

> जे० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी सहायक ग्रायकर श्रायुक्त (निरीक्षण) श्रर्जन रेंज, भटिन्डा

तारीख: 15-12-82

प्रक्ष. बाई. टी. एन. एस. -----आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की भारा 269-म (1) के बभीन सुमना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयंकर आयुक्त (निरीक्षण)
अर्जन रेंज, जालन्धर

जालन्धर, विनांक 15 विसम्बर 1982]

निर्देश सं० ए० पी० नं० 3755—यतः मुझे, जे० एल०] गिरधर,

द्वायकर ग्रिधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त ग्रिधिनियम' कहा नया है), की बारा 269-ध के अधीन सक्षम प्रिष्ठिकारी को, यह विक्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पन्ति, जिसका उचित वाजार मूल्य 25,000/-क मे ग्रिधिक है

ग्रौर जिसकी सं० जसा कि श्रनुसूची में लिखा है तथा जो भटिण्डा में स्थित है (ग्रौर इससे उपाबद्ध श्रनुसूची में ग्रौर पूर्ण रूप से वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्ता श्रधिकारी के कार्यालय भटिण्डा में रजिस्ट्रीकरण ग्रिधिनियम, 1908 (1908 का 16) के ग्रधीन, तारीख ग्रगैंल, 1982

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाआर मूस्य से कम के दृश्यमान प्रति-फल के सिय अन्तरित की गई है प्रीर मुझे यह विश्वान करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्मति का उचित बाजार मूस्य, इसके दृश्यमान प्रतिफल से, ऐसे दृश्यमान प्रतिफल का पन्डक प्रतिशा से प्रधिक है और सम्तरफ (अन्तरकों) और अम्तरिती (अन्तरितियों) के बीच ऐसे अन्तरफ के निये तय पाया गया प्रतिफल निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अम्तरण विखित में वास्तिक इप से कियत नहीं फिया गया है:---

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्त अधिनयम के बधीन कर देने के अन्तरक के दाशित्व में कमी करने या अससे बचने में सुविधा. के सिए; धौर/या
- (त) एतर जिसो आय ना जिना धन या प्रत्य आस्तियों को जिन्हें भारताय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उनत अधिनियम, या धन-कर मित्रियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनायं अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जीना चाहिए था, छिपाने में सुविधा के लिए;

जतः जब, उक्त अधिनियम की भारा 269-ग के अनुपरण में, मैं उक्त अधिनियम की भारा 269-म की उपभारा (1) कैं अधीन, निम्नलिखिसव्यक्तियों, अर्थात् :--- (1) कुमारी ग्रमरवंती पुत्री श्री हंसराज, भटिन्डा, पता: विजय करियाना स्टोर, भटिण्डा।

(अन्तरक)

(2) श्री जसबीर सिंह भगवन्त सिंह पुत्र करतार सिंह श्रीमित हरिन्दर कौर परनी श्री ग्रमरजीत ग्रौर क्रुपाल सिंह पुत्र करम सिंह, वासी भटिन्डा।

(भन्तरिती)

(3) जैसा नं० 2 में दिया है। (वह व्यक्ति, जिसके श्रधिभोग में सम्पत्ति है)।

(4) जो व्यक्ति सम्पत्ति में रुचि रखता है।

वह व्यक्ति, जिनके बारे में झघोहस्ताक्ष री जानता है कि वह सम्पत्ति
में हितबद्ध है)।

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के ग्रर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हूं।

उन्त सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी बाक्षेप :---

- (क) इस सूबना के राजपत्र म प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की श्रविध या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की श्रविध, जो भो भवधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोकत व्यक्तियों मे से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (ख) इस मूचना के राजपन्न में प्रकाणन की तारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबढ़ किसी अन्य व्यक्ति द्वारा ग्रधीहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकीं।

स्पष्टी हरण: ---इनमें प्रयुक्त शब्दो गीर पदा का, जी उक्त श्रिष्ठित नियम के श्रव्याय 20-क में परिभाषित हैं, बही श्रय होगा, जो उस श्रव्याय में दिया गया है।

अनुसूची

व्यक्ति तथा सम्पत्ति जैसा कि विलेख नं० 116 दिनांक भागल, 1982 को रजिस्ट्रीकर्ता भ्रधिकारी भटिन्डा ने लिखा है।

> जे० एलं० गिरधर सक्षम प्राधिकारी सहायक भ्रायकर भायुक्त (निरीक्षण) श्रर्जन रेंज, जालन्धर

तारीख: 15-12-1982.

मोहर 🖫

प्रकप बाई० टी• एन॰ एस॰----

भाषकर प्रधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-च (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक ग्रायकर भ्रायुक्त (निरीक्षण)

श्रर्जन रेज, जालन्धर

जालनधर, दिनांक 15 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० ए० पी० न० 3756 — यत. मृझे, जे० एल० गिरंधर,

श्रीयंकर श्रिविनियंम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसम इसके पश्चात् 'उनत श्रिधिनियम' कहा गया है) की धारा 269-ख के अधीन सक्षम श्रीधिकारी को, यह विश्वास करने का कारण है कि स्वावर सम्पत्ति, जिसका उचिन बाजार मूख्य 25,000/-व्यये मे अधिक है

भौर जिसकी सं० जैसा कि श्रनुसूची में लिखा है तथा जो भटिण्डा में स्थित है (श्रौर इससे उपाबद्ध श्रनुसूची में श्रौर पूर्ण रूप से वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्त्ता श्रधिकारी के कार्यालय भटिन्डा में रजिस्ट्रीकरण श्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के श्रधीन, भन्नेल, 1982

को पूर्वोकत सम्क्रूनि के उचित वाजार मूल्य में कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्मति का उचित बाजार मूल्य, उसके रृश्यनान प्रतिफल से, ऐसे दृश्यमान प्रतिफल का पन्नाह प्रतिशत अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितियों) के बोच ऐसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल निम्नलिखित उद्देश्य में उक्त अन्तरण लिखित में वास्तविक कर से कथित नहीं किया गया है ——

- (क) प्रस्तरण में हुई किसा आय की बाबत, उक्त प्राधि-नियम के अधीन कर देने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उसमें 'बचन में युविधा के लिए; भौर/या
 - (य) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को जिन्हें भारतीय भाय-कर श्रिधिनियम 1922 (1922 का 11) या उक्त ग्रिधिनियम, या धन-कर श्रिधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनायं श्रन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गंथा या या किया जाना चाहिए था, ख्रिपाने में सुविधा के लिए;

नतः नव, उन्त अभिनियम की भारा 269-ग के, बनुसरण में, मैं, उन्त निभिनयम की भारा 269-म की उपभारा (1) के अभीन, निभ्नितिसित जनितयों, अर्थात :--- (1) श्री बांबू राम पुत्र चेत राम, भटिन्छा।

(कन्तरक)

(2) श्री बलजीत सिंह, जरजीत सिंह पुन्न बलवन्त सिंह, ग्रमरजीत सिंह श्रवतार सिंह पुन्न जोगिन्दर सिंह, गोविन्दर कौर पत्नी पृथी सिंह, भटिन्डा ।

(अन्तरिती)

- (3) जसा नं ० 2 में लिखा है। (वह व्यक्ति, जिसके ग्रिधिमोग में सम्पत्ति है)
- (4) जो व्यक्ति सम्पत्ति में रुचि रखता है। (वह व्यक्ति, जिनके बारे मे भ्रधो-हस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पत्ति में हितबद्ध है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वीक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियाँ करता हूं।

धक्त सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी श्राक्रेप : - -

- (का) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी क्यक्तियो पर सूचना की तामील पे 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त क्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा,
- (ख) इस सूजना के राजपत्र में प्रकाशन को तारीख में 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबद्ध किसी श्रन्य व्यक्ति द्वारा श्रधोहस्ताक्षरी के पाम खिखित में किए जा सकेंगे।

स्वव्हीकरण:—इसमें प्रयुक्त शब्दों क्रीर पक्षों का, जो उक्त श्रीव-नियम, के ब्रह्माय 20-क में परिभाषित हैं। जहीं अर्थ होगा, जो उम अध्याय में दिया गया है।

जन्सूची

व्यक्ति तथा सम्पत्ति जैसा कि विलेख नं ० 417 विनांक भ्रप्रैल 1982 के रजिस्ट्रीकर्ता भ्रधिकारी भटिन्डा ने लिखा है।

> जे० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) फ्रर्जन रेंज, जालन्धर

'तारीख : 15−12−1982 मो**हर**ः प्ररूप आई. टी. एत. एस.-----

मायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की भारा 269-च (1) में अधीन सूचता

भारत सरकार

कार्यालय , सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) श्रर्जन रेंज, जालन्धर जालन्धर, दिनांक 15 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० ए० पी० नं० 3757:—यतः मुझे, जे० एल० गिरधर,

क्रम्बकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिमका उचित बाजार मूल्य 25,000/- रा. से अधिक है

ग्रीर जिसकी सं० जैसा कि श्रनुसूची में लिखा है तथा जो भटिन्डा में स्थित है (श्रीर इससे उपाबद्ध श्रनुसूची में श्रीर पूर्ण रूप से विजत है), रिजस्ट्रीकर्ता ग्रधिकारी के कार्यालय भटिन्डा में रिजस्ट्रीकरण श्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के श्रधीन, ग्राप्रैल, 1982

को पूर्वीक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मूझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से, एसे दृश्यमान प्रतिफल का पन्त्रह प्रतिशत अधिक है और अन्तरक (अंतरकों) और अंतरिती (अन्तरितियों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्यों से उक्त अन्तरण लिखित में बास्तिक रूप से कथित नहीं किया गया है :——

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्य में कमी करने या उससे अपने में सुविधा के लिए; और/या
- (ख) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को, जिन्हों भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम या धनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था छिपाने में स्विधा के लिए;

अतः अव, उक्त अधिनियमं की धारा 269-ग के अनुसरण में, में, उक्त अधिनियमं की धारा 269-भ की उपभारा (1) के अभीन, निम्नलिखित व्यक्तिमों, अनित्:—— (1) श्री काका सिंह पुत्र भाग सिंह वासी भटिन्डा नुस्रितयारे ग्राम टेहल सिंह पुत्र काका सिंह

(अन्तरक)

(2) श्री प्रेम कुमार पुत्न बूजनाथ मुकन्द लाल पुत्न नत्थू राम ग्रमर कुमार पुत्न रमेश दास श्रीमित कृष्णा देवी पत्नी बीरबल दास वासी भटिन्डा।

(अन्तरिती)

(3) जैसा ऊपर नं० 2 में लिखा है। (वह व्यक्ति, जिसके श्रधिभोग में सम्पत्ति है)।

(4) जो व्यक्ति सम्पत्ति में रुचि रखता है। (वह व्यक्ति, जिनके बारे में ग्रधो-हस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पत्ति में हितबद्ध है)।

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हुं।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप :---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारील से 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वीक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (क्ष) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारील से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हिंत-बद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अथोहस्ताक्षरी के पास लिखित में अन्य किए जा सकोंगे।

स्पछ्कीकरण: -- इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम के अध्याय 20-क में परिभाषित है, वहीं अर्थ होगा, जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनुसूची

ब्यक्ति तथा सम्पत्ति जैसा कि विलेख नं० 633 दिनांक ग्राप्रैल, 1982 को रजिस्ट्रीकर्ता ग्राधिकारी भटिन्डा ने लिखा है।

> जे० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी सहायक अग्यकर आयुक्त (निरीक्षण) भ्रजीन रेंज, जालन्धर

तारीख: 15-12-82-

प्ररूप आर्दः ती. एन . एस . ------

बाथकर निधनियम, 1961 (1961 का 43) की भारा 269-च (1) के नभीन सूचना

भारत तरकार

कार्यालय, सहायक भ्रायकर भ्रायुक्त (निरीक्षण)

ग्रर्जन रेंज, जालन्धर

जालन्धर, दिनांक 15 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० ए० पी० नं० 3758:---यत: मुझे, जे० एल० गिरधर,

भावकर विभिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया हैं), की भारा 269-च के अधीन संक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण हैं कि स्थावर सम्पति, जिसका उचित बाबार मूस्य 25,000/- रह. सं अधिक हैं

भौर जिसकी सं० जैसा कि अनुसूची में लिखा है तथा जो भटिन्डा में स्थित है (भौर इससे उपाबद्ध अनुसूची में भौर पूर्ण रूप में वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्ता ग्रधिकारी के कार्यालय भटिन्डा में रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन, अप्रैल, 1982

को पूर्वेक्त सम्पत्ति के उचित वाजार मृत्य से कम के स्थमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुक्ते यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वेक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मृत्य, उसके स्थमान प्रतिफल से, एसे स्थमान प्रतिफल का पन्तह प्रतिशत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अंतरिती (बंदिरित्यों) के बीच एसे अंन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिकल, निम्नोलिंकत उददास्य स उच्या स्राम्य । लिकत में वास्तिवक रूप में किथत नहीं किया गया है:--

- (क) जन्तरण से हुई किसी जाय की वावत, अक्त अधिनियम के अधीन कर बोने के जन्तरक के दायित्व में कमी करने पा उससे बचने में सुविधा के लिए; और/या
- (क) क्सी जिल्ही आब वा किसी थन वा अन्य आस्तियों कार, विन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 की 11) या उक्त अधिनियम, या धनकर अधिनियम, या धनकर अधिनियम, 1957 (1957 की 27) के प्रयोचनार्व अन्त्रिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, कियाने में सुनिका के लिए;

अतः, जबः, जक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण हों, भीं, अक्त अधिनियम की धारा 269-न की उपधारा (1) के अभीन, निकलिशिक्त व्यक्तिस्तियों, नर्भात्:—

(1) श्री चन्द्र सिंह पुत्र दसोंदा सिंह गांव रामसरा तहसील तलवन्दी साथो।

(अन्तरक)

(2) श्री थ्रंग्रेज सिंह, बलवेब सिंह पुक्ष श्री जलौर सिंह पता गुरु नानक कालेज स्टोरेज श्रीर ग्राईस फैक्ट्री, बरनाला रोड़, टिनकोनी, भटिन्डा।

(अन्तरिती)

(3) जैसा उपरोक्त नं० 2 में लिखा है। (वह व्यक्ति, जिसके ग्रिधभोग में सम्पत्ति है)।

(4) जो व्यक्ति सम्पत्ति में रुचि रखता हो।
(वह व्यक्ति, जिनके बारे में ग्रधो-हस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पत्ति में हितबग्र है।)

का यह सुचना चारी करके पूर्वों कत सम्पत्ति के अर्थन के हिसह कार्यवाहियां करता हूं।

उक्त सम्पत्ति के वर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप:---

- (क) इस स्वता के राजपत्र में प्रकाशन की तारीच तं 45 दिन की जबीं या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर स्वता की तामील से 30 दिन की अवधि, जो भी जबींथ बाद में समाप्त होती हो, को भीतर प्रविक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (ख) इस स्थान के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबब्ध किती बन्ध स्थावत द्वारा बभाहस्ताक्षरी के पान सिचित में किए जा सकरेंगे।

स्पक्कीकारणः ----इसमें प्रमुक्त संक्यों और पद्यों का, जो उक्त अधिनियम, को अध्याय 20-क में परिभाषित है, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया विषा है।

वन्स्ची

व्यक्ति तथा सम्पत्ति जैसा कि विलेख नं ० 189 विनांक अप्रैल, 1982 को रजिस्ट्रीकर्ता अधिकारी भटिन्डा ने लिखा है।

> जे० एल० गिरष्टर सक्षम प्राधिकारी स**हाबक नायक**र जायुक्त (निरौक्षण) ग्रर्जन रेंज, जालन्धर ।

तारीच : 15-12-1982.

प्ररूप भाइ.टी. एन. एस. ------

कायकर किंपिनियम, 1961 (1961 का 43) की भारा 269-घ (1) के अभीन स्थाना

भारत सरकार

कार्यालय सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) अर्जन रेंज, जालन्धर

जालन्धर, दिनांक 15 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० ए० पी०नं० 3759 — यतः मुझे, जे० एस० गिरधर,

भागकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा नया है'), की भारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूख्य 25,000/रु. से बिधक है

और जिसकी सं० जैसा कि अनुसूची में लिखा है तथा जो भटिन्डा में स्थित है (और इससे उपाबद्ध अनुसूची में और पूर्ण रूप में वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्ता अधिकारी के कार्यालय भटिन्डा में रजिस्ट्री-करण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन, तारीख अप्रैल, 1982

को पूर्वोक्त संपित्त के उचित बाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मूओ यह विद्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पित्त का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल के एसे दृश्यमान प्रतिफल के पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अंतरक (अंतरकार) और अंतरिती (अंतिहितियों) के बीच एसे अंतरण के लिए तय पाया गया प्रति-फल, निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अंतरण लिखित में वास्तविक रूप से कथित नहीं किया गया है:---

- (क) अन्तरण से हुइ किसी जाय की गावत, उक्त अधिनियम के अधीन कर देने के अन्तरक के दायित्व में कभी करने या उससे बचने में सूर्विधा के लिए; और/या
- (स) एसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को, जिन्हें भारतीय आयक र अधिनियम 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सविधा के लिए;

अतः अब, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण मे, मैं उक्त अधिनियम की धारा 269-म की उपधारा (1) के अधीन, निम्नलिखित व्यक्तियों, अर्थातः :— (1) श्री छोटू राम पुत्र श्री हीरा मल, करियाना **गाप चौक** हीरा वाला नज़दीक सिरकी बजार, भटिन्डा ।

(अन्तरक)

(2) श्रीमती शाशी अग्रवाल पत्नी अनिल कुमार जिगिराओं गुरचरण सिह कपूर सिह पुत्र कुपाल सिह मियाना लाल सिंह पुत्र मल सिंह राजीव कुमार प्रदीप गोयल पुत्र मूल राज, कृष्णा बाकल पत्नी चन्द्र प्रकाश, ओम प्रकाश पुत्र देवकी नन्दन कृष्ण कुमार पुत्र चरंजीलाल भटिन्डा ।

(अन्तरिती)

(3) जैसा उपरोक्त न० 2 में लिखा है। (वह व्यक्ति, जिसके अधिभोग में सम्पत्ति हैं)

(4) जो व्यक्ति सम्पत्ति में रुचि रखता हो।
(वह व्यक्ति, जिनके बारे में अधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पत्ति में हितवदध् हैं)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोचित् सम्मिरित के अर्जन के निष् कार्यचाहिया करता हु।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध भी कोई भी बाक्षेप:--

- (क) इस सूचना के राजपत्र मं प्रकाशन की तारीस सं 45 दिन की अविध या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील में 30 दिन की अविध जो भी अविध बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वों कर व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति व्वारा;
- (स) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हित-बद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा, अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकोंगे।

स्यष्ट्यिकरण: — इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधि-नियम के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं, वहीं अर्थ होगा, जो उस अध्याय में दिया गया है।

श्रनुसूची

ब्यक्ति तथा सम्पत्ति जैसा कि विलेख नं० 359 रजिस्ट्रीकर्ता अधिकारी भटिन्डा ने लिखा है।

> जे० एल० गिरधर, सक्षम प्राधिकारी महायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण), अर्जन रेंज, जालन्धर

तारीख: 15-12-1982

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरोक्षण)

अर्जन रेंज, जालन्धर जालन्धर, दिनांक 14 दिसम्बर 1982 निदेश सं० ए० पी० नं० 3760—यतः **मुझे**, जे० एल० रिधर.

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को, यह जिस्तास करने का कारण है कि स्थावर संपत्ति, जिसका उचित बाजार मृत्य 25,000/- रु. से अधिक है

और जिसकी सं० जैसा कि अनुसूची में लिखा है तथा जो जालन्धर में स्थित है (और इससे उपाबद्ध अनुसूची में और पूर्ण रूप ो विणत है), रजिस्ट्रीकर्ता अधिकारी के कार्यालय दिल्ली में रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन, तारीख अप्रैल 1982

को पूर्वोक्त संपत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुक्ते यह विद्यास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त संपत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से एसे दृश्यमान प्रतिफल के पन्द्रह प्रतिष्ठत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितियों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्निलिखत उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखित मे वास्तविक रूप से कथित नहीं किया गया है ---

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की आबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए; और/या
- (ख) ऐसी किसी बाय या किसी धन या अन्य अस्तियों को जिन्हें भारतीय अयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तिरिती क्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में स्विधा के लिए।

अतः अव, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अंगुसरण में, में, उक्त अधिनियम की धारा 269-थ की उपधारा (1) के अभीन, निम्नक्तिश्वित क्यक्तियों, अर्थात् :--

- (1) श्रीमती शान्ति देवी पत्ति श्री लक्ष्मी नारायण वासी एम०-11, साऊथ एक्सटेणन पार्ट-1, नई दिल्ली। (अन्तरक)
- (2) मैसर्ज माडर्न पब्लिशर्ज अड्डा होशियारपुर जालन्धर द्वारा श्री अशोक कुमार मल्होला, प्रोपराइटर । (अन्तरिती)
- जैसा उत्पर स. 2 में लिखा है (वह व्यक्ति, जिसके अधिभाग में सम्पत्ति हैं)
- 4 जी व्यक्ति सम्पन्नि मे रुचि रखता है। (क्ह व्यक्ति, जिनके बार मे अभाहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पत्ति म हितबद्ध हैं)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन दे लिए कार्यवाहियां करता हुं।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप :--

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविध , जो भी अविध साद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वीकत व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति ब्रावरा;
- (क) इस स्वना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीत से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्परित में हितबद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पाल लिखित में किए जा सकोंगे।

स्पष्टीकरणः — इसमे प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं, वहीं अर्थ होना जो उस कथ्याय में विका गया है।

अनुसूची

व्यक्ति तथा सम्पत्ति जैसा कि विलेख नं० 575 दिनाक अप्रैल, 1982 को रजिस्ट्रीकर्ता अधिकारी दिल्ली में लिखा है।

> जे० एल० गिरधर, सक्षम प्राधिकारी सहायक आयकर आय्क्त (निरीक्षण) अर्जन रेज, जालन्धर

तारीख: 14-12-1982.

प्ररूप नार् दी. एग. एस. -----

मायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की भारा 269-च (1) के अभीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) अर्जन रेंज, जालन्घर

जालन्धर, दिनांक 14 दिसम्बर 1982 निर्देश सं० ए० पी० नं० 3761:—यत: मुझे, जे० एल० गिरधर.

बायकर अभिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विद्यास करने का कारण है कि स्थावर सम्मति, जिसका उचित बाजार मृल्य 25,000 ∕- रा. से अधिक है

और जिसकी सं० जैसा कि अनुसूची में लिखा है तथा जो जालन्धर में स्थित है (और इससे उपाबद्ध अनुसूची में और पूर्ण रूप में विणत है), रजिस्ट्रीकर्ता अधिकारी के कार्यालय दिल्ली में रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन, तारीख अप्रैस, 1982

को पूर्वेक्त सम्परित के उचित बाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मूओ यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वेक्त सम्पर्ति का उचित बाजार मूल्य, इसके दृश्यमान प्रतिफल से, एसे दृश्यमान प्रतिफल का पन्त्रह प्रतिचत से अधिक है और अंतरक (अंतरकों) और अंतरिती (अंतरितियों) के बीच ऐसे अंतरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अंतरण लिखित में वास्तविक रूप से कथित नहीं किया गया है:---

- (क) अंतरण से हुई िकसी नाय की वाबतः, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अंतरक के वायित्व में कभी करने या उससे नचने में सुविधा के लिए; और/या
- (क) ऐसी किसी जाय वा किसी भन या अन्य जास्तियों को, जिन्हें न्भारतीय जायकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अंतरिती व्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना भाहिए था छिपाने में सविधा के लिए;

.जल: जब, उक्त अधिनियम की भारा 269-ग के अनुसरण में, मैं, उक्त अधिनियम की भारा 269-घ की उपभारा (1) के अधीन, निम्नतिक्षित व्यक्तियों, अर्थात:——
15—416GI/82

(1) श्रीमती शान्ति देवी विश्ववा लक्षमी नरायण वासी ई-41, साऊय एक्सर्टेशन पार्ट-1, नई दिल्ली ।

(अन्तरक)

(2) मैसर्ज मलहोता बुक डिपोट, अड्डा होशियारपुर जालन्धर द्वारा पार्टनर श्री अशोक कुमार मलहोत्रा पुत्र बलबीर सिंह मलहोत्रा वासी 194—सी, शंकर भवन फतेहपुरा, जालन्धर।

(अन्तरिती)

(3) जैसा नं 2 यें लिखा है।

(वह व्यक्ति, जिसके अधिभाग में सम्पत्ति हैं)

(4) जो व्यक्ति सम्पत्ति में विच रखता हो। (वह व्यक्ति, जिनके बारे में अधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पत्ति में हितबख्ध है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वेक्ति सम्पक्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हुं।

उक्त संपत्ति के वर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षंप:---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 विन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 विन की अविध, जो भी अविध बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति बुवारा;
- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशत की तारी से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हिस-बद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिकित में किए जा सकेंगे।

स्पद्धिकरण :--इसमें प्रयुक्त शब्दों और पर्दों का, जो उन्तत अधिनियम के अध्याय 20-क में परिभाषित है, वहीं अर्थ होशा जो उस अध्याय में विया गया है।

अनुसूची

व्यक्ति तथा सम्पत्ति जैसा कि विशेख 576 दिनांक अप्रैल, 1982 को रजिस्ट्रीकर्ता अधिकारी दिल्ली ने लिखा है।

> जे० एस० गिरधर, सक्षम प्राधिकारी, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण), अर्जन रेंज, जालन्धर

सारीच : 14-12-1982.

प्ररूप आर्च. टी. एन. एस. -----

ं आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-घ (1) के अधीन सुचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक मायकर आयुक्त (निरीक्षण) अर्जन रेंज, जालन्धर जालन्धर, दिनांक 14 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० ए० पी० नं० 3762:--यतः मुझे, जे० एल० गिरधर.

बायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की भारा 269-च के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर संपरित, जिसका उचित बाजार मृल्य 25,000/ रु. से अधिक है

और जिसकी सं० जैसा कि अनुसूची में लिखा है तथा जो जालन्धर में स्थित है (और इससे उपावद्ध अनुसूची में और पूर्ण रूप में विणित है), रिजस्ट्रीकर्ता अधिकारी के कार्यालय दिल्ली में रिजस्ट्रीकरण अधिनयम, 1908 (1908 का 16) के अधीन, तारीख अप्रैल, 1982

को प्वांचित संपित के उिचत बाजार मृत्य से कम के क्रथमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुफे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पित का उचित बाजार मृत्य उसके रूपमान प्रतिफल से, ऐसे दृश्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अंतरक (अंतरकां) और बंतरिती (अंतरितयों) के बीच ऐसे अंतरण के लिए तय पाया गया प्रति-फल, निम्नलिखित उद्देश्य में उक्त अंतरण सिखित में बास्तिक रूप में किथत नहीं किया गया है:---

- (क) अन्तरण से हुई किसी अप की बाबस, उनस अधिनियम के अधीन कर धेने के बन्सरक के बायित्व में कमी करने या उससे बचने में सृविधा के लिए; जरि/या
- (स) ऐसी किसी जाय या किसी धन या अन्य आस्तियों को, जिन्हों भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 को 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 को 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया आना शाहिए था, छिपाने में स्विभा के लिए;

अतः अव, उक्त अधिनियम की धारा 269-ए के अनुस्रण वे, मैं. उक्त अधिनियम की धारा 269-ए की उपधारा (1) कुं अधीन निम्नलिखित व्यक्तियों, अर्थात् हि—— (1) श्रीमती शान्ति देशी विश्ववा सक्ष्मी नारायण और मदन मोहन यापर पुत्र दीवान डी० एस० शापर मुख्त्यारे आम आफ श्रीमति राज कुमारी पुत्र श्री लक्ष्मी नारायण वासी ई-41, माऊय एक्सटेंशन पार्ट-1, नई विल्ली।

(अन्तरक)

(2) श्री अशोक कुमार मलहोत्रा पुत्र श्री बलबीर सिंह मलहोत्रा वासी 194-सी शंकर भवन फतेह-पुर, जालन्धर।

(अन्तरिती)

(3) जैसा कि नं० 2 में लिखा है। (वह व्यक्ति, जिसके अधिभोग में सम्पत्ति है)।

(4) जो व्यक्ति सम्पत्ति में रुचि रखता हो।
(वह व्यक्ति, जिनके आरे में अधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पत्ति
में हितवद्ध है)।

को यह स्वमा जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन के जिए कार्यवाहियां करता हूं।

उन्त उम्बल्ति के प्रजेत के सम्बन्ध में मोई भी शामीप :---

- (क) इस सूचना के राजपण में प्रकाशन की तारी ह से 45 दिन की अविभ या तत्सम्बन्धी व्यक्तियाँ पर सूचना की तामील से 30 दिन की जविभ, जो भी अविभ बाद में समाप्त होती हो, के भीतर प्वार्वक व्यक्तियाँ में से किसी व्यक्ति बुवारा;
- (क) इस स्थान के राज्यन में प्रकाशन की तारीच के 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबब्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास तिचित में किए का सकेंगे।

स्पष्तिकरण :--इसमें प्रयुक्त कन्दों और पदों का, जो उच्त अभिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं, वहीं अर्थ होगा को उस अध्याय में दिखा नवा हैं।

मन्सूची

ज्यभित तथा सम्पत्ति जैसा कि विशेख नं० 577 दिनांक अप्रैस, 1982 को रजिस्ट्रीकर्ता अधिकारी दिल्ली में लिखा है।

> जे० एल० गिरधर, सक्षम प्राधिकारी सहामक आमकर आयुक्त (निरक्षिण) अर्जन रेंज, जालस्थर ।

तारीख : 14-12-1982. मोहर :

1941

प्ररूप जाइ. टी. एन एस. -----

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-ण (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, महायक नायकर आयुक्त (निरीक्षण) यर्जन रेंज, जासन्धर

जालन्धर, दिनांक 14 दिसम्बर 1982

निर्देश स॰ ए० पी० नं ॰ 3763:---यतः मुझे, जे ॰ एल० गिरधर,

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके परचात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धार 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- रा. में अधिक है

स्रोर जिसकी स॰ जैसा कि सनुसूची में लिखा है तथा जो जालन्धर में स्थित है (श्रीर दससे उपाबद्ध सनुसूची में स्रोर पूर्ण रूप में विणित है), रजिस्ट्रीकर्ता श्रधिकारी के कार्यालय दिल्ली में रजिस्ट्रीकरण श्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के स्रधीन, तारीख प्रप्रैल 1982

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के ख्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मूभे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त संपत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से एसे दृश्यमान प्रतिफल का पन्द्रह् प्रतिश्वत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरका) और अन्तरिती (अन्तरितिया) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्निलिखत उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखित में वास्तिबक रूप से कथित नहीं किया गया है:---

- (क) अन्तरण संहुई किसी आय की बाबस, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के बायित्व में कमी करने या उससे बचने में सृविधा के लिए; और/या
- (स) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्सियों को, जिन्हों भारतीय आयकार अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्सरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था छिपाने में सुविधा के लिए;

अतः अवः, उक्त अधिनियम की भारा 269-ग के अनुस्रेगः। में, में उक्त अधिनियम की भारा 269-म की उपभारा (1) के अधीन निम्नलिखित व्यक्तियों, अर्थात् क्रिक्त

- (1) कुमारी राजकुमारी पुत्री लक्ष्मी नारायण द्वारा मदन मोहन थापर पुत्र दीवान डी० एस० थापर वासी ई-41, साऊथ एक्सटेंशन पार्ट-।, नई दिल्ली। (श्रन्तरक)
- (2) श्रीमती सती बाला मलहोत्रा पत्नीश्री ग्रामोक कुमार मलहोक्षा वासी 194-सी, शंकर भवन फतेह पुर. जालन्धर ।

(ब्रन्तरिती)

- (3) जैसा कि ऊपर नं ० 2 में लिखा है। (बह व्यक्ति, जिसके ब्रिक्षिमोग में सम्पत्ति है)।
- (4) जो न्यक्ति सम्पत्ति में रुचि रखता है।
 (वह व्यक्ति, जिनके बारे में भ्रधो-हस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पत्ति में हितबद्ध है)।

को यह सूचना जारी करके पूर्वीक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां गुरू करता हुं।

उक्त सम्पत्ति के वर्जन के सम्बन्ध में कोई भी बाक्षेप :--

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 विन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि वाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वीक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति ब्वारा;
- (ख) इस सूचना के राजपन्न में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबद्ध किसी अन्य व्यक्ति व्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकेंगे।

स्पद्धिकरण: -- इसमे प्रयुक्त शब्दों और पतों का, जो उक्त अधिनियम, के अधीन अध्याय 20-क मे परि-भाषित हैं, वही अर्थ होगा, जो उस अध्याय में विया गया हैं।

अनुसूची

व्यक्ति तथा सम्पत्ति जैसा कि विलेख नं० 578 दिनांक श्रप्रैल 82 को रजिस्ट्रीकर्ता श्रधिकारी दिल्ली ने लिखा है।

> जै० एल० गिरधर, सक्षम ग्रधिकारी, सहायक ग्रायकर ग्रायुक्त (निरीक्षण); ग्रर्जन रेंज, जालन्यर

तारीख 14-12-1982 मोहर: प्रकृष् आहें . थी . एसे . एसे . ----

कायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-घ (1) के सभीत सुचना

भारत स्रकार

कार्मालय, सहायक झायकर झायुक्त (निरीक्षण)

म्रजॅन रेंज, जालन्धर

जालन्धर, विनांक 14 विसम्बर 1982

निर्देश सं० ए० पी० नं० 3764.—यतः मुझे, जे० एल० गिरधर,

भायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-ख के बधीन सक्षम प्राधिकारी को, यह विश्वास कारने का कारण है कि स्थावर संपत्ति, जिसका उचित ं सावार मूल्य 25,000/- रु. से अधिक है

धौर जिसकी सं जैसा कि धनुसूची में लिखा है तथा जो जालन्धर में स्थित है (धौर इससे उपाबद्ध अनुसूची में धौर पूर्ण रूप में वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्ता अधिकारी के कार्यालय दिल्ली में, रजिस्ट्रीकरण अधिनयम, 1908 (1908 का 16) के अधीन, तारीख अगस्त, 1982

को पूर्वोक्त सम्मत्ति के उचित बाजार मृत्य से कम के स्वयमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुक्ते यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्मत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके स्वयमान प्रतिफल से, ऐसे स्वयमान प्रतिफल का पंद्रह प्रतिशत से अधिक है और अंतरक (अंतरकों) और अंतरिती (अंतरितियों) के बीच ऐसे अंतरण के लिए तय पाया गया प्रति-फल निम्निसित उद्देश्य से उकत बन्तरण सिद्धित में बास्तिक रूप से किया नहीं किया नदा है :--

- (क) अन्तरण सं हुई कि बी काय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर बोने को अन्तरक के याजिएन में कमी करने या उसते अधने में मृविधा के लिए: बार/आ
- (क) ऐसी किसी जाय या किसी भन् या अन्य आस्तियों को जिन्हों भारतीय आय-कर अभिनियम, 1922 (1922 का 11) या जक्त अभिनियम, या भन्कर अभिनियम, या भन्कर अभिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वास् प्रकट नहीं विकया गया था या किया जाना साहिए आ, कियाने में स्विभा के लिए;

जतः अब, उक्त अभिनियम की भारा 269-ग के अनुसरण में, कीं, उक्त जिमित्रम की भारा 269-थ की उपभाषा (1) के अभीत, निम्निसिस्त व्यक्तियों, अर्थात्ः स्—--

- (1) श्रीमती राज कुमारी पुत्री लक्ष्मी मारायण द्वारा मदन मोहन थापर पुत्री दिवान जी० ए० थापर वासी ई-41, साऊथ एक्सटेंशन पार्ट-।, नई दिल्ली। (श्रन्तरक)
- (2) श्रीमती सतीण बाला मलहोक्षा पत्नी श्री ध्रणोक कुमार मलहोत्रा वासी 194—बी, शंकर भवन, फतेह-पुर, जालन्धर।

(भ्रन्तरिती)

- (3) जैसा कि नं ० 2 में लिखा है। (वंह व्यक्ति, जिसके श्रीधभोग में सम्पत्ति है)।
- (4) जो व्यक्ति सम्पत्ति में रुचि रखता हो । (वह व्यक्ति, जिनके बारे में ग्रधो-हस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पत्ति में हितबद्ध है) ।

को यह त्या बारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के वर्षन के शिए कार्यवाहियां करता हूं।

उक्त सम्पत्ति के वर्णन के सम्बन्ध में कोई भी वाक्षेप:--

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन को तारीश से 45 दिन की अविधि मा तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्विक्य व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हिसबद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास निश्चित में किए जा सकोंगे।

स्पव्यक्तिरण - इसमें प्रयुक्त शब्दों और प्रदों का, जो उक्त अधि-अधिनियम, के जध्याय 20-क में परिभाषित हैं, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिका गया है।

गन्त्रची

व्यक्ति तथा सम्पत्ति जैसा कि विलेख नं० 1312 दिमांकं ग्रगस्त 82 को रिजस्ट्रीकर्ता ग्रधिकारी दिल्ली में लिखा है। जे० एल० गिरधर, सक्षम ग्रधिकारी सहायक ग्रायकर ग्रायुक्त (निरीक्षण).

श्रर्जन रेंज, जालन्धर

तारी**ख** : 14—12—1982. मोहर : प्रकार बाह्न हों. एसं. एसं. ----

आमकर अधिनियम, 1961 (1961 को 43) की धारा 269-ष (1) के अधीन सूचेना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) श्रर्जन रेंज, जालन्धर

जालन्धर, दिनांक 14 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० ए० पी० नं० 3765:—यत: मुझे, जे० एल० गिरधर,

नायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमे इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-स के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर संपर्तितं, जिसका उचित नाजार मूल्य 25,000/- रा. मैं अधिक ही

श्रीर जिसकी सं जैसा कि श्रनुसूची में लिखा है तथा जो जालन्धर में स्थित है (ग्रीर इससे उपाबद्ध में अनुसूची में श्रीर पूर्ण रूप में विणत है), रजिस्ट्रीकर्ता ग्रधिकारी के कार्यालय दिल्ली में रजिस्ट्रीकरण ग्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के ग्रधीन, तारीख ग्रगस्त, 1982

को पूर्वोक्त संपित्त के उचित बाजार मूल्य से कम के ध्रमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मफ़ें यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त संपित्त का उचित बाजार मूल्य, उसके ध्रमान प्रतिफल से, एसे दृश्यमान प्रतिफल के पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितियों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त प्रन्तरण लिखित में वास्तविक रूप से कथित नहीं किया गया है ---

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत उक्त अधिनियम के अधीन कर दोनं के अन्तरक के दायित्य में कभी करने या उससे बचने में स्विधा के लिए; और/णा
- (स) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को जिन्हें भारतीय आयंकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उर्कत अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती व्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिनाने में स्विधा के लिए।

अतः अव, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के, अनुसरण में, मैं, उक्त अधिनियम की धारा 269-म की उपधारा (1) के अधीन, निम्निलिसित व्यक्तियों, अधीत्:---

- (1) श्रीमती राजकुमारी पूज लक्ष्मी नारामण द्वारी मर्चन मोहन थापर पुत्र विधान श्री० एस० थापर वासी ई-41, साऊथ एक्सटेंशन पार्ट-।, नई दिल्ली । (श्रन्तरक)
- (2) मैसर्ज मार्डन पिन्लिशर्ज अश्वा होशियारपुर जालन्धर द्वारा अशोक कुमार मलहोत्रा।

(भ्रन्तरिती)

- (3) जसा उपरोक्त नं 2 में लिखा है। (वह व्यक्ति, जिसके श्रिधिभोग में सम्पत्ति है)।
- (4) जो व्यक्ति सम्पत्ति में शिव रखता हो।
 (वह व्यक्ति, जिनके बारे में अधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पत्ति
 में हितबद्ध है)।

को यह सूचना जारी करके पर्वोक्स संपत्ति के अर्जन को लिए कार्यवाहिया केरता है

उक्त संपत्ति के वर्जन के संबंध में कार्ष्ट्र भी आक्षेप :---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की लारीबा से 45 दिन की अविधि या तत्संबंधी व्यक्तियाँ पर सूचना की तामील से 30 दिन की अबुधि, जो भी, अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोझते व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति ख्वारा;
- (स) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन के भीतर उच्क स्थावर सेंपेंद्रित में हितबस्थ किसी अन्य व्यक्ति देशारा अधाहरताक्षरी के पास लिखत में किए जा सकरेंगे।

स्पष्टीकरणः -- इसमे प्रयुक्त शब्दों और पर्दों का, आ उमल अधिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित ही, वहीं अर्थ होगा, ओ उस्स अध्याय में दिया गया है।

अनुसूची

व्यक्ति तथा सम्पत्ति जैसा कि विलेख नं 1313 दिनांक श्रगस्त, 82 को रजिस्ट्रीकर्ता ग्राधिकारी दिल्ली में शिखा है।

> जे० एल० गिरधरः सक्षम **प्राधिकारी**। सहायक भ्रायकर ग्रायुक्त, (निरीक्षण), श्रजैन रेंज, जालन्धर

वा**रीय :** 14-12-1982.

प्रकार बार्ड. टी. एन. एक..-----

आयकर अभिनियम, 1961 (1961 का 43) की भारा 269-भ (1) के अभीन स्चना

भारत तरकार

कार्यालय, सहाय्क कायकार जायुक्त (निरीक्षण)

म्रर्जन रेज, जालन्धर

जालन्धर, दिनांक 14 दिसम्बर, 1982

निर्देश सं० ए० पी० न० 3766—यतः मुझे, जे० एस० गिरधर

नायकर मिथिनियम, 1961 (1961 का 43) जिसे इसमें इसके पर्ववात् 'उक्त मिथिनियम' कहा गया है), की धारा 269-च के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह निरवास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मृल्य 25,000/- रा. से मिथिक हैं।

मीर जिसकी सं० जैसा कि अनुसूची में लिखा है तथा जो जालन्धर में स्थित है (भीर इससे उपाबद्ध अनुसूची में भीर पूर्ण रूप में विणित है), रिजस्ट्रीकर्ता अधिकारी के कार्यालय दिल्ली में रिजस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन, तारीख अप्रैल, 1982

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उषित बाजार मूल्य से कम के द्रायमान् प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मूर्भ यह विद्यास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उषित बाजार मूल्य, उसके द्रायमान प्रतिफल से, ऐसे द्रायमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिकृत से अधिक है और अंतरक (अन्तर्कों) और अम्तरिती (अन्तरित्यों) के बीच ऐसे बन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नितिचत उद्वदेश से उक्त अंतरण सिचित में नास्तिवक रूप से कायत नहीं किया गया है 4—

- (क) जन्तरण से हुई किसी जाय की बाबत, उक्त, अधिनयम् के अधीन कर दोने के अस्तरक के वायित्व में कमी करने या उससे अधने में सुनिधा के लिए; और/या
- (क) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को जिन्हों भारतीय आयु-कर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन्-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना था, डिजाने में सुविधा के सिए;

बतः बव, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरम में, में उक्त अधिनियम की धारा 269-भ की उपधारा (1) के अवीन, निम्नितिसित व्यक्तियों, अधित्:--

- (1) श्रीमती शान्ति देवी विधवा लक्ष्मी नारायण द्वारा श्री मदन मोहन पुत्र दीवान डी० एस० बापर वासी ई-41, साऊथ एक्सटेंशन पार्ट-।, नई दिल्ली। (अन्तरक)
- (2) मैसर्ज मल्होता बुक डिपोट द्वारा श्री अशोक कुमार पार्टनर वासी अड्डा होणियारपुर, जालन्धर । (अन्सरिखी)
- (3) जैसा कि उपरोक्त नं० 2 मे लिखा है। (वह व्यक्ति, जिसके प्रक्षिभोग में सम्मति है) ।
- (4) जो न्यक्ति सम्पत्ति में रुचि रखता हो।
 (वह ध्यक्ति, जिनके बारे में अधो-हस्ताऊरी जानता है कि वह सम्मत्ति में हितबद्ध है)।

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्स सम्पत्ति के वर्जन के लिए कार्यवाही शुरू करता हूं।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन के संबंध में कोई भी आक्षेप :--

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीक्ष से 45 दिन की अविध या तत्सम्बन्धी व्यक्तिसमों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविध, जो भी अविध बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्मिक्त में हित- बच्च किसी अन्य व्यक्ति द्वारा, अधोहस्ताक्षरी के पास निक्ति में किए आ सकेंगे।

स्थेष्ट्रीकरण: --- हसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित हुँ, वही अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

भन्सूची

व्यक्ति तथा सम्पत्ति जैसा कि विलेख नं० 1314 दिनांक भगस्त, 1982 के रजिस्टीकर्ता भ्रष्ठिकारी विल्ली ने लिखा।

> जि एल गिरधर, सक्षम प्राधिकारी सहायक भ्रायकर भ्रायुक्त (निरीक्षण), भर्जन रेंज, जासन्धर ।

तारी**य**: 14-12-1982.

प्रस्प आहै o ठी o एस o प्रस्क आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-व (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहास्क आयकर आयुक्त (निरीक्षण)

धर्जन रेंज, जालन्धर

जालन्धर, दिनांक 14 विसम्बर 1982

निर्देश सं० ए० पी० नं० 3767:—यतः मुसे, जे० एल० गिरप्रर,

बायकर अधिनियम 1961 (1961 का 43) (जिसं इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की भारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी का यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति जिसका उचित बाजार मूस्य 25,000/रा. से अधिक है

मीर जिसकी सं० जैसा कि अनुसूची में लिखा है तथा जो जालन्धर में स्थित है (भीर इससे उपाबद्ध अनुसूची में भीर पूर्ण रूप में वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्ता भिधकारी के कार्यालय दिल्ली में, रजिस्ट्री-करण भिधितयम, 1908 (1908 का 16) के अधीन, तारीख भगस्त, 1982

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित काजार मूल्य से कम के दश्यमान प्रतिफल के लिए अंतरित की गई है और मुफो यह विक्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त संपत्ति का उचित बाजार मुल्य उसके दश्यमान प्रतिफल से एसे दश्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अंतरक (अंतरकों और अंतरिती बन्तरितियों) के बीच एसे बन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त जन्तरण लिखित के गस्तिक रूप से किथा नहीं किया गया है:---

- (क) जन्तरफ से हुई किसी आय की बाबता, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरफ के दायित्व में कबी अपने या उससे अचने मा मृथिक्या के सिए; अरि/बा
- (च) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य नास्तियों को जिन्हों भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धनकर अधिनियम, या धनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिसी द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चीहिए था, क्रिपाने में स्विधा के लिए;

बतः अच, उच्त अधिनियम की धारा 269-म के अनुसरण में, मैं, उच्त अधिनियम की धारा 269-च की उपधारा (1) के अधीन, निम्निसिस व्यक्तियों, अर्थात् :--

- (1) भीमती शान्ति देवी विश्ववा नडमी नारायण द्वारा श्री मचन मोहन यापर पुश्व दीवान डी॰ एस॰ थापर वासी ई-41, साजथ एक्सटेंशन पार्ट-। नई दिल्ली। (श्रन्तरक)
- (2) श्री भागोक कुमार मलहोता पुल बलबीर सिंह वासी 194-बी, शंकर भवन फतेहपुर, जालन्धर। (अन्तरिती)
- (3) जैसा कि उपरोक्त नं० 2 में लिखा है। (वह व्यक्ति, जिसके ग्रधिभोग में सम्पत्ति है)।
- (4) जी व्यक्ति सम्पत्ति में रुचि रखता है।
 (वह व्यक्ति, जिनके बारे में ग्रधोहस्ताककारी जानता है कि वह
 सम्पत्ति में हितबद्ध है)।

को यह सूचना जारी करके पूर्वीक्त सम्पत्ति के वर्जन की कार्यवाहियां शुरु करता हुं।

उनत सम्परित के भवीन के सम्बन्ध में कोई भी नाओप:----

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अविधि या तरसम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि नाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वाकर व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीक से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हित-बृद्ध किसी जन्म व्यक्ति द्वारा, अभोहस्ताकरी के पास निविक्त में किए का सकेंगे।

स्पच्छीकरण:--इसमें प्रयुक्त सन्दों और पदों का, जो उक्त अधि-नियम के जभ्याय 20-क में परिभाषित हैं, सही अर्थ होगा, को उस अध्याय में दिया गया है।

अपृस्ची

न्यक्ति तथा सम्पत्ति जैसा विलेख नं 1315 विनांक अगस्त, 1982 को रिजस्ट्रीकर्ता श्रधिकारी दिल्ली में लिखा।

> जे० एल० गिरधर, सक्षम प्राधिकारी, महासक म्रायकर ग्रायुक्त (निरीक्षण), ग्रजैंन रेंज, जालन्धर ।

तारीख: 14-12-1982

प्रारूप आर्गे.टी.एन.एस.-----

मामकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-ष (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक भ्रायकर ग्रायुक्त (निरीक्षण)

श्रर्जन रेंज, जालन्धर

जॉलेंन्धर, दिनांक 14 विसम्बेर 1982

निर्देश नं ए० पी० न० 3768 — यस मुझे, जे० एस० गिरधर,

आयकर अभिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके प्रचात् 'उक्त अधिनियम' कहा गृया है), की धारा 269 के अधिने संर्काम प्रीधिकारी को यह विद्यास करने का कारण है कि स्थावर संपरित, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- एक से अधिक है

ग्रौर जिसकी सं० जैसा कि अनुसूची में लिखा है तथा जो मोगा जीत सिंह में स्थित है (ग्रौर इससे उपाबद्ध अनुसूची में ग्रौर पूर्ण रूप में वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्ता ग्रधिकारी के कार्यालय मोगा मे रजिस्ट्रीकरण ग्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के ग्रधीन, तारीख गर्मैल, 1982

को प्रविक्त संपर्ति का उंचित बाजोर मूल्य से कम के इश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मूक्ते यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त संपर्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दश्यमान प्रतिफल से, ऐसे इश्यमान प्रतिफल के पन्नह प्रतिकात, से अधिक है और जन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितियों) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नीली बुंत उद्वेश्य से उक्त अन्तरण सिचित में वास्तविक रूप से किथा नहीं किया गया है।——

- (क) अर्थें रंण सें हुं के किसी आय की शावत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अस्तरक के वायित्व में कभी करने या उससे अचने में सुविधा के लिए; अट्रिया
- (क) एसी किसी आया न्या किसी धन या अन्य आस्तियों की जिन्हें आरतीय आयकत् अधिनियम, 1,922 (1922 को 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती ख्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा के लिए।

कतः अर्थ, उच्त अधिनियम की भारा 269-पु के, क्रमुप्तरण में, में, उच्त अधिनियम की भारा 269-च की उपभारा (1) के अधीन, निम्नलिखित व्यक्तियों, अर्थात् ---

- (1) श्री मेहर सिंह पुत्र वालक सिंह बासी भोगा जीत सिंह नजदीक गहर पुलिस स्टेशन मोगा मेहला सिंह मोगा।
- (2) श्री बलदेव सिंह पूज़ हरबन्स सिंह वासी मोगा श्रजीत सिंह, श्रगवार हाकन का, मोगा।

(श्रन्तरिती)

- (3) जैसान० 2 में लिखा है। (यह व्यक्ति, जिसके ग्रिधिभोग में सम्पत्ति है)।
- (4) जो व्यक्ति सम्पत्ति में इचि रखता हो । (वह व्यक्ति, जिनके बारे में प्रश्लो-हस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पत्ति में हितबद्ध है ।

को सह इचना, आरी, करके पूर्वीक्त संपत्ति के वर्जन के लिए कार्यवाहियां शुरू करता हूं।

उबत संपरित के अर्जन के संबंध में कोई आक्षेप :--

- (क) इस बूभना के राजफन में प्रकासन की तारीब से 4.5 दिन की अविधिया तत्संबंधी अविदायों पर सूमना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोकत व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति स्वारा;
- (स) इस स्थान के राजपत्र में प्रकाशन की तारीत से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर संपत्ति में हितबद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिसित में किए जा सकेंगे।

स्यव्यक्तिरणः--इसमे प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया हैं।

अनुस्ची

व्यक्ति तथा सम्पत्ति जैसा कि विलेख न० 42 दिनाक ग्रप्निल, 1982 को रजिस्ट्रीकर्ता ग्रधिकारी मोगा ने लिखा है।

> जे० एल० गिरधर, संक्षम प्राधिकारी महायक श्रायकर श्रायुक्त (निरीक्षण) ग्रजन रेज, जालन्धर ।

तारीय 14-12-1982

मोहर

प्ररूप आहर . टी. एन. एस.-----

आथकर अभिनियम, 1961 (1961 का 43) की भारा 269-म (1) के अभीन स्भाना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण)

म्रर्जन रेंज, जालन्धर

जालन्धर, दिनांक 14 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० ए० पी० नं० 3169:—यतः मुझे, जे० एल० गिरधर,

बायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है, की भारा 269-स के अधीन सक्षम प्राधिकारी को, यह विद्वास करने का कारण है कि स्थावर सुम्पत्ति, जिसका उजित बाजार मूल्य 25,000/- रु. से अधिक है

भौर जिसकी सं० जैसा कि भ्रनुसूची में लिखा है तथा जो मोगा मेहला सिंह में स्थित है (श्रीर इसमें उपाबद्ध भ्रनुसूची में भ्रौर पूर्ण रूप में वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्ता श्रिधिकारी के कार्यालय मोगा मे, रजिस्ट्रीकरण श्रिधिनयम, 1908 (1908 का 16) के श्रिधीन, तारीख भ्रप्रैल, 1982।

को पूर्वोक्त सम्परित के उचित बाजार मूल्य से कम के इष्रयमान प्रतिफल के लिए जन्तरित की गई है और मृझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त संपर्तित का उचित बाजार मूल्य, उसके इष्रयमान प्रतिफल से, एसे इष्र्यमान प्रतिफल का पंत्रह प्रतिशत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितियों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखित में वास्तिवक रूप से कथित नहीं किया गया है:——

- (क) अन्तरण से हुई किसी आम की बाबत उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्य में कमी करने या उससे बचने में सृविधा केलिए; और/या
- (क) एसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों का, जिन्हें भारतीय आय-कर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धनकर अधिनियम, या धनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था छिपाने में सुविधा के लिए;

अतः अब, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण में, में, उक्त अधिनियम की धारा 269-घ की उपधारा (1) जै अधीन, निम्निसिश्वत स्थितियों, अर्थात .--- 16-416 GI/82

(1) श्री हरी सिंह पुत्र किष्ण सिंह वासी मोगा मेहला सिंह, मोगा ।

(ग्रन्तरक)

- (2) श्री डा० ग्ररोरा उदय उद्योग सोसाईटी, मोगा। (श्रन्तरिती)
- (3) जैसा कि ऊपर न० 2 में लिखा है। (बह व्यक्ति, जिसके भ्रधिभोग में सम्पत्ति है)।
- (4) जो व्यक्ति सम्पक्ति में रुचि रखता है।
 (बह व्यक्ति, जिनके बारे में
 ग्रधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह
 सम्पक्ति में हिसबद्ध है)।

को यह सूचना जारी करके पूर्वों क्त संपरित के अर्जन के लिए कार्यवाहियां शुरू करता हुं।

.उक्त सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप :--

- (क) इस स्थान के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अविधिया तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर स्थान की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वों कत व्यक्ति द्वारा;
- (च) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अथोहस्ताकारी के पास लिखित में किए जा सकोंगे।

स्पष्टीकरण: -- इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, ओ उक्त अधिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित है, वहीं अर्थ होगा, ओ उस अध्याय में दिया गया है।

जन्सूची

व्यक्ति तथा मम्पत्ति जैसा कि विलेख नं 84 दिनांक अप्रैल, 1982 को रजिस्ट्रीकर्ता श्रिधकारी मोगा में लिखा है।

> जे० एल० गिरधर, सक्षम प्राधिकारी सहायक ग्रायकर ग्रायुक्त (निर्रक्षण) अर्जन रेंज, जालन्धर

तारीख: 14-12-1982

प्रक्ष बाइ . टी . एन . एस . ------

बायकर बिधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-च (1) के बधीन सूचना

भारत सरकार

कार्जालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण)

म्रर्जन रेंज, जालन्धर

जालन्धर, दिनांक 14 दिसम्बर 1982

निदेश सं० ए० पी० नं० 3770:—यतः मुझे, जे० एल० गिरधर,

काथकर अधिनियम्, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके परचात 'उक्त अधिनियम' कहा गया हैं), की भारा 269-स के प्रधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मृस्य 25,000/ रहा संअधिक हैं

ग्रीर जिसकी सं० जैसा कि श्रनुसूची में लिखा है तथा जो मोगा महिला सिंह में स्थित है (ग्रीर इससे उपाबद्ध ग्रनुसूची में ग्रीर पूर्ण रूप में वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्ता ग्रधिकारी के कार्यालय मोगा में रजिस्ट्रीकरण ग्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के ग्रधीन, तारीख ग्रग्रैल, 1982

को पूर्वोंक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के क्रयमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मूफ्ते यह विश्वास कर्मे का कारण है कि यथापूर्वोंक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके क्रयमान प्रतिफल से ऐसे द्रयमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अंतरक (अंतरकों) और अंतरिती (अन्तरितियों) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिक का निम्नलिखित उद्देष्य से उक्त अन्तरण निख्ति में वास्तविक रूप से कथित नहीं किया गया है:—

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए; और/या
- (क) ऐसी किसी आय या किसी धन या जन्य आस्तियों की, जिन्हों भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया भारा किया जाना चाहिए था, कियाने में सुविधा के निए;

जत: अब, उक्त अधिनियम, की भारा 269-ग के जनुसरण मो, मो, उक्त अधिनियम की भारा 269-घ की उपधारा (1) के अभीन, निम्निसिवित व्यक्तियों जर्थातु:--

- (1) श्री मुख्तयार सिंह पुत्र नत्था सिंह वासी मोगा महिला सिंह, नजदीक बीबीजी वाला गुरुद्वारा, मोगा। (श्रन्तरक)
- (2) श्री बलदेव सिह पुत्र करतार मिह, वासी गांव चन्द नवां, तिह ० मोगा ।

(ग्रन्तरिती)

- (3) जैसा कि ऊपर नं० 2 में लिखा है। (वह व्यक्ति, जिसके प्रधिभोग में सम्पत्ति है)।
- (4) जो व्यक्ति सम्पत्ति में रुचि रखता हो।
 (वह व्यक्ति, जिनके बारे में भ्रधो-हस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पत्ति में हितबद्ध है)।

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हूं।

उक्त सम्परित के अर्जन के संबंध में कोई भी आक्षेप :--

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (क) इस् सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीब से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्मित्त में हितबद्ध किसी अन्य व्यक्ति इवारा जथाहस्ताक्षरी के पात सिवित में किए जा सकोंगें।

स्थळीकरण:—-इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उकत अधिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित है, वहीं अर्थ होगा, जो उस अध्याय में दिया गया है।

वन्सूची

व्यक्ति तथा सम्पत्ति जैसा कि विलेख नं० 104, दिनांक भ्रप्रैल, 1982 को रजिस्ट्रीकर्ती श्रधिकारी मोगा ने लिखा है।

> जे० एल० गिरधर, सक्षम प्राधिकारो सहायक ग्रायकर ग्रायुक्त (निरीक्षण) ग्रजैन रेंज, जालन्धर ।

तारीख: 14-12-1982.

प्ररूप आई • 'टी ० एत ० एस ० -

श्रायकर श्रिधिनियम, 1961 (1961 कां^र 43) की धारा 269-व (1) के ग्रिधीन सूर्वनां

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक ग्रायकर ग्रायुक्त (निरीक्षण)

म्रर्जन रेंज, जालन्धर

जालन्धर, दिनांक 14 दिसम्बर 1982

निदेश सं० ए० पी० नं० 3771:—यतः मुझे, जे० एल० गिरधर,
प्रायकर प्रधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उपन प्रधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-ख के प्रधीन सक्षम प्रधिकारी को यह विश्वाम करने का का रण है कि स्थावर संपत्ति जिमका उचित बाजार मृत्य 25,000/- २० से

प्रधिक है

श्रोर जिसकी सं० जैसा कि श्रनुसूची में लिखा है तथा जो मोगा महिला सिंह में स्थित है (श्रोर इससे उपाबद्ध श्रनुसूची में श्रोर पूर्ण रूप में विणित है), रजिस्ट्रीकर्ता श्रधिकारी के कार्यालय मोगा में रजिस्ट्रीकरण श्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के श्रधीन, तारीख श्रग्रैल, 1982

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए प्रस्तरित की गई है भीर मुझ यह विश्वाम करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल मे, ऐसे दृश्यमान प्रतिफल का प्रमूह प्रतिशत प्रिष्ठिक है भीर अन्तरक (अन्तरकों) भीर प्रस्तरिती (अन्तरितियों) के बीच ऐसे भन्तरण के लिए तय पाया गया प्रति-फल निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त प्रस्तरण सिचित में वास्तविक कप से कचित नहीं किया गया है:—

- (क) ध्रन्तरण में हुई किसी धाय की बाबत उक्त ध्रधिन नियम के घ्रधीन कर देने के घ्रम्तरक के दायिक्व में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए; और/या
- (ख) ऐसी किसी भाय या किसी धन या भ्रम्य वास्तियों को, जिन्हें भारतीय भ्रायकर भ्रधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त भ्रधिनियम, या धन-कर श्रधिनियम, 1957 (1957 का 27) के श्रयोजनार्थ भ्रन्तरिती द्वारा भकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, कियाने में सुविधा के लिए;

भतः शव, उनत अधिनियम की घारा 269-म के अनुसरण में, मैं, उनत अधिनियम की भारा 269-म की उपधारा (1) के जुनीन, निस्नुजिधिक कान्तियों, बर्जात हु--- (1) श्री जोगिन्द्र सिंह पुत्र फुमन सिंह, वासी मोगा महिला सिंह, मोगा।

(अन्तरक)

(2) श्रीमती कमला रानी पत्नी खुशहाल चन्द व वरिन्द्र कुमार पुत्र राम लाल, वासी, नानक नगरी, मोगा महिला सिंह, मोगा।

(भ्रन्तरिती)

- (3) जैसा कि ऊपर नं० 2 में लिखा है। (वह व्यक्ति, जिसके ध्रधिभोग में सम्मति है)।
- (4) जो व्यक्ति सम्पत्ति में रुचि रखता हो।
 (धह व्यक्ति, जिनके बारे में श्रधो-हस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पत्ति में हितबद्ध है)।

को यह सूचना जारी करके पूर्वों कत सम्पत्ति के वर्जन के लिख् कार्यवाहियां शुरु करता हुं।

उक्त सम्परित के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप :--

- (क) इस भूत्रता के राजपत्र में प्रकाशन की कारीज से 45 दिन की ध्रवधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की भवधि, जोभा भ्रवधि बाद में समान्त होती हो, के भीतर पूर्विकत व्यक्तियों के ने किसी व्यक्ति द्वारा;
- (ख) इस सूचना के राजपन में भनागन की तारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हित-वड़ किसी अस्य व्यक्ति द्वारा श्रष्टोहरूनाक्षरी के पास लिखा में किए जा सकते।

हरबद्दोत्तरण:--इसमं प्रयुक्त णव्दों ग्रीर पदीं का, जो छन्न अधिनियस के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं, वही अर्थ होगा, जो उन ग्राध्याय में दिया गया है।

अनुसूची

व्यक्ति तथा सम्पति जसा कि विलेख नं० 317, दिनांक ग्राप्त, 1982 को रजिस्ट्रीकर्ता ग्रधिकारी मोगा ने लिखा है।

> जे० एल० गिरधर, सक्षम प्राधिकारी सहायक ग्रायकर ग्रायुक्त (निरीक्षण) ग्रर्जन रेंज, जालन्त्रर ।

तारीख: 14-12-1982

प्ररूप बाइं. टी. एम. एस. -----

बायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-घ (1) के अधीन सुधना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक ग्रायकर ग्रायुक्त (निरीक्षण)

म्रर्जन रेंज, जालन्धर

जालन्धर, दिनांक 14 दिसम्बर, 1982

निदेश सं० ए० पी० नं० 3772.—यतः मुझे, जे० एल० गिरधर,

आयकर अभिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अभिनियम' कहा गया है), की धारा 269-स के अधीन प्राधिकारी को, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पति, जिसका उचित बाजार मृस्य 25,000/- रु. से अभिक है

श्रौर जिसकी सं० जैसा कि अनुसूची में लिखा है तथा जो मोगा महिला सिंह में स्थित है (श्रौर इससे उपाबद्ध अनुसूची में श्रौर पूर्ण रूप में विणित है), रिजस्ट्रीकर्ता अधिकारी के कार्यालय मोगा में रिजस्ट्रीकरण अधिनयम, 1908 (1908 का 16) के अधीन, तारीख अप्रैल, 1982

को पूर्वों क्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम् के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुफे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वों क्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से, एसे दृश्यमान प्रतिफल का पन्त्रह प्रतिशत से अभिक है और अंतरक (अंतरकों) और अंतरित (अन्तरितियों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल कल निम्नलिखित उद्दृश्य से उक्त अन्तरण लिखित में नास्तिक क्य से कथित नहीं किया गया है:---

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायिस्य में कमी करने या उससे बचने में सृषिधा के लिए; और/या
- (ख) ऐसी किसी बाय या किसी भन या अन्य बास्तियों को, जिन्हें भारतीय बाय-कर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम या भन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गवा था या किया जाना चाहिए था, खियाने में सुविभा के लिए;

बतः अव, उसत अभिनियम की भारा 269-म के अनुसरण मो, मो, उसत अधिनियम की भारा 269-क को उपभारा (1) को अधीन निम्नतिस्थित व्यक्तियों, अधीर्:--- (1) श्री हरी सिंह पुत्र विशान सिंह, वार्सः मोगा महिला सिंह मोगा।

(ग्रन्तरक)

(2) श्री गुरचरन सिंह व हरनाम सिंह पुत्र तारा सिंह वासी गोहल, तहसील, संगरूर ।

(ग्रन्तरिती)

(3) जैसा कि ऊपर नं० 2 में लिखा है। (वह व्यक्ति, जिसके ग्रिधिभोग में सम्मत्ति है)।

(4) जो व्यक्ति सम्पत्ति में रुचि रखता हो।
(वह व्यक्ति, जिनके बारे में मधो-हस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पत्ति में हितबद्ध है)।

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्स सम्पृत्ति के वर्जन के सिए कार्यवाहियां करता हुं।

उक्त सम्परित के वर्जन के सम्बन्ध में कोई भी वाक्षेप :---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीच सं 45 दिन की अविधिया तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (थ) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबबुध किसी जन्म व्यक्ति द्वारा अभोहस्ताकारी के पाछ सिखित में किए जा सकोंगे।

स्पव्यक्तिरणः—इसमें प्रयुक्त शब्दों और पक्षें का, जो उक्त भीधनियम के मध्याय 20-क में परिभाषित है, वहीं अर्थ होगा, जो उस अध्याय में विया गया है।

न्त्र्वी

व्यक्ति तथा सम्पत्ति जैसा कि विलेख नं० 1227, दिनांक सप्रैल, 1982 को रजिस्ट्रीकर्ता धिकारी मोगा ने लिखा है।

> जे० एक्ष० गिरधर, सक्षम प्राधिकारी सहायक द्यायकर ग्रायुक्त (निरीक्षण) भ्रजैन रेंज, जालन्धर ।

तारीख: 14-12-1982

प्ररूप् आर्थ. टी. एन. एस.-----

बायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-ज (1) के सुधीन सूचना

भारत सुरकार

कार्यास्य, सह्ययक आयकर आयुक्त (निर्धिकण्)

ग्रर्जन रेंज, जालन्धर

जालन्धर, दिनांक 14 विसम्बर 1982

निदेश सं० ए० पी० नं० 3773:—यतः मुझे, जे० एल० गिरधर,

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) जिसे इसमें इसके परचात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है, की धार 269-स के अधीन सक्म प्राधिकारी को, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्परित, जिसका उचित आजार मृत्य 25,000/-रा. से अधिक है

श्रीर जिसकी सं० जैसा कि अनुसूची में लिखा है तथा जो मोगा महिला सिंह में स्थित है (श्रीर इससे उपाबद्ध अनुसूची में श्रीर पूर्ण रूप में वर्णित है), रजिस्ट्रं कर्ता श्रिधकारी के कार्यालय मोगा में रजिस्ट्री-करण श्रिधनियम, 1908 (1908 का 16) के श्रिधीन, तारीख श्रील, 1982

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित् वाजार मूल्य से कम के दृश्यान प्रतिफल के लिए अन्तिरित की गई है और मूझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त संपत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से, एसे दृश्यमान प्रतिफल का पंद्रह प्रतिक्षत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरको) और अन्तरिती (अन्तिरितियों) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखित में वास्तिवक रूप से किथत नहीं किया गया है:——

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत उक्स अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में सूविधा के लिए; और/या
- (क) ऐसी किसी आय या किसी अन या अन्य आस्तियों को, जिन्हें भारतीय आय-कर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती व्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था छिपाने में सुविधा के सिए;

अतः, अव, उक्त अधिनियम, की धारा 269-ग के अन्सरण में, मैं, उक्त अधिनियम की धारा 269-थ की उपधारा (1) के अधीन, निम्नलिखित व्यक्तियों, अर्थात् :--

- (1) श्री हरी सिंह। पुत्र किशन सिंह वासी मोगा महिल सिंह तहि॰ मोगा (श्रन्तरक)
- (2) श्रीमती गुरनाम कौर पत्नी कृपाल सिंह व जसविन्त्र कौर पत्नी हरिन्द्र सिंह, वासी, मोगा महिला सिंह, मोगा।

(भ्रन्सरिती)

- (3) जैसा कि ऊपर नं 2 में लिखा है। (यह व्यक्ति, जिसके भ्रधिभोग में सम्पत्ति है)।
- (4) जो व्यक्ति सम्पत्ति में रुचि रखता हो । (वह व्यक्ति, जिनके बारे में ब्रधो-हस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पत्ति में हितबद्ध है) ।

को यह सूचना जारी करके पूर्वेक्त सम्मित्त के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हुं।

उक्त संपत्ति के अर्जन के संबंध में कोई भी आक्षेप :---

- (क) इस सूचना के राज्यपत्र में प्रकाशन की तारीब से 45 दिन की अविध या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविध , जो भी अविध बाद में समान्त होती हो, के भीतर पूर्वों कर व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्परित में हितबबुध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकाँगे।

स्पष्टीकरणः -- इसमें प्रयुक्त शब्दों आहि पदों का, जो उक्त अधिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित ही, वही अर्थ होगा, जो उस अध्याय में दिया गया ही।

अनुसूची

अपक्ति तथा सम्पत्ति जैसा कि विलेख नं० 275, विनांक अप्रैल, 1982 को रजिस्ट्रीकर्ता ग्रधिकारी मोगा ने लिखा है।

> जे० एल० गिरधर, सक्षम प्राधिकारी सहायक द्यायकर द्यायुक्त (निरीक्षण) श्रजैन रेंज, जालन्धर

तारीख: 14-12-1982.

मोह्नर ः

प्ररूप आई. टी एन. एस.,-----

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-व (1) के अधीन स्चना

भारत सरकार

कार्यांसय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण)

म्रर्जन रेंज, जालन्धर

जालनधर, दिनाक 10 दिसम्बर 1982

निदेश सं० ए० पी० न० 3774 — यत मुझे, जे० एल० गिरधर,

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमे इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया हैं), की धारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण हैं कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- रु से अधिक हैं

मौर जिसकी स० जैसा कि अनुसूची में लिखा है तथा जो कोट क्पूरा में स्थित है (ग्रौर इससे उपाबद्ध अनुसूची में ग्रौर पूर्ण रूप में वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्ता ग्रिधकारी के कार्यालय फरीदकोट में रजिस्ट्रीकरण ग्रिधिनियम, 1908 (1908 का 16) के ग्रिधीन, तारीख ग्राप्रैल, 1982

को पूर्वोक्त सम्परित के उचित बाजार मूल्य से कम के खरयमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मृझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्परित का उचित बाजार मूल्य, उसके खर्यमान प्रतिफल से, ऐसे दश्यमान प्रतिफल का पंद्रह प्रतिशत अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अंतरिती (अन्तरितियों) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखित में बास्तियक रूप से किथत नहीं किया गया है :--

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के वायित्व में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए; और/या
- (क) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को, जिन्हों भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम शा धनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती व्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था छिपाने में सुविभा के लिए;

अत अब, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण में, में, उक्त अधिनियम की धारा 269-च की उपधारा (1) को अधीन, निम्निलिखित व्यक्तियों, अर्थीत्:---

(1) श्री करतार सिंह पुत्र प्रताप सिंह वासी सिखनवाला गेड, कोट कपूरा।

(ग्रन्सरक)

(2) श्री मलकीत सिंह पुत्र हजुर सिंह, प्रेम चन्द पुत्र राम जी दास व गुरमेल सिंह पुत्र करतार सिंह व सरदुल सिंह पुत्र हरचन्द सिंह व दलीप सिंह पुत्र बचिन्न सिंह, वासी कोट कपूरा ।

(भ्रन्तरिती)

- (3) जैसा कि ऊपर न० 2 में लिखा है। (वह व्यक्ति, जिसके ग्रिधिभोग में सम्पत्ति है)।
- (4) जो व्यक्ति सम्पत्ति मे रुचि रखता हो।
 (वह व्यक्ति, जिनके बारे मे अधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पत्ति
 मे हितबद्ध है)।

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्स सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहिया करता हु।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप --

- (क) इस सूचना के राजपक्ष में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविध, जो भी अविध बाव में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वित व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा,
- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हित-बद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अथोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकेंगे।

स्पष्टीकरण --- इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम के अध्याय 20-क में परिभाष्टि है, वही अर्थ होगा, जो उस अध्याय में दिया गया है।

मनुसूची

व्यक्ति तथा सम्पत्ति जैसा कि विलेख न० 118, विनांक, धप्रैल, 1982 की रजिस्ट्रीकर्ता ध्रधिकारी फरीवकोट ने लिखा है।

> जे० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी सहायक अायकर आयुक्त (निरीक्षण) ग्रर्जन रेंज, जालन्धर ।

तारीख 14-12-1982 मोहरः

प्रकप आई॰ टी॰ एन॰ एस॰----

आमकर अभिनियम, 1961 (1961 का 43) की भारा 269-घ (1) के अभीन स्चना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक ग्रायकर ग्रायुक्त (निरीक्षण)

अर्जन रेंज, जालन्धर

जालन्धर, दिनांक 14 दिसम्बर 1982

निवेश सं० ए० पी० नं० 3775—अतः मुझे, जे० एल० गिरधर,

भायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है"), की धाय 269-ध के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्परित, जिसका उणित बाजार मूल्य 25,000/- रा. से अधिक हैं

धौर जिसकी मं० जैसा कि अनुसूर्या में लिखा है जो कौट कपूरा में स्थित है (और इससे उपाबद्ध अनुसूची में और पूर्ण रूप से वर्णित है), रिजिस्ट्रीकर्ता अधिकारी के कार्यालय फरीद-कोट में रिजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन, दिनांक अप्रैल, 1982

कोपूर्वोक्त सम्पति के उजित बाजार मूस्य से कम के यूक्समान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उजित बाजार मूस्य, उसके यूक्यमान प्रतिफल ने ऐसे यूक्यमान प्रतिफल का पश्चह प्रतिकृत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अतिरितियों) के बीज ऐसे अन्तरण के सिए सय पाया भया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखित में बास्तविक कप से किथत नहीं किया गया है।---

- (क) अन्तरण के हुई किसी बाय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए; बौट्र/बा
- (क) ऐसी किसी आय या धन या अन्य आस्तियों का, जिन्ह भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धनकार अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती ब्यारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा के लिए;

कतः जल, उक्त अभिनियम की भाग 269-ग के अनुसरण में, मैं, उक्त अभिनियम की भाग 269-म की उगभाग (1) के अभीन, निस्निजिस व्यक्तियों, अभीत्ः— 1 श्री गुरुदेव सिंह बलदेव सिंह व रणजीत सिंह बासी गांव सुरंगापुरी, (कोट कपूरा)

(अन्तरक)

 श्री नछत्तर सिंह पुत्र मोहिन्दर मिह बासी गाँव सुरंगापुरी (कोट कपूरा)

(अन्तरिती)

3. जैसा कि ऊपर नं० 2 में लिखा है (बह व्यक्ति, जिसके अधिभोग में सम्पत्ति है)

4. जो व्यक्ति सम्पति में रुची रखता है। (वह व्यक्ति, जिनके बारे में अधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पत्ति में हिसबद है)

का यह सूचना चारी कारको पृत्राँकत सम्मरित को अर्थन को जिल् कार्यवाहियां कारता हो।

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अविधि या तस्सम्बन्धी व्यक्तियों वर सूचना की तासील से 30 दिन की अविधि, को भी अविध बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति दुवारा;
- (क) इस स्वना के राजपत्र में प्रकाशन की तारील से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्मत्ति में हिल-बब्ध किसी जन्म व्यक्ति द्वारा, अभोहस्ताक्षरी के पास सिवित में किए जा सकेंगे।

स्वव्यक्तिरणः -- इसमें प्रयुक्त शब्दों और वर्षों का, जो उक्त विधिनयम, के वध्याव 20-क में परिभावित हैं, वहीं कर्य होगा, जो उस कथ्याय में दिया वया हैं।

अनुस्की

व्यक्ति तथा सम्पत्ति जैसा कि विलेख नं • 157, विनांक अप्रैल 1982 को रजिस्ट्रीकर्ता अधिकारी फरीदकोट ने लिखा है।

> जे० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी सङ्ख्यम प्रायकर प्रायुक्त (निरीक्षण) अर्जन रेंज, जालंधर।

विनाम: 14-12-1982

श्ररूप आई.टी.एन.एस. ------

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की भारा 269-ध (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण)

अर्जन रेंज, जालन्धर

जालन्धर, विनांक 14 विसम्बर, 1982

निवेश सं०ए० पी० नं० 3776---यतः मुझे, जे०एल० गिरधर

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-श्व के अधीन सक्षय प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर संपरित, जिसका उचित बाजार मृल्य 25,000/- रु. से अधिक है

और जिसकी सं० जैसा कि अनुसूची में लिखा है तथा जो कोट कपूरा में स्थित है (और इससे उपाबद्ध अनुसूची में ध्रीर पूर्ण रूप में बॉणत है), रिजस्ट्रीकर्ता अधिकारी के कार्यालय, फरीदकोट में रिजस्ट्रीकरण अधिधिकरण अधिनियम

(1908 (1908 का 16) के अधीन, विनांक अप्रैल, 1982 को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उिषत बाजार मूल्य से कम के द्वस्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुक्ते यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त संपित्त का उिषत बाजार मूल्य उसके द्वस्यमान प्रतिफल का पन्त्रह प्रतिशत अधिक है और अंतरक (अंतरकों) और अंत-अन्तरिती (अन्तरितियों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण सिखित में वास्तविक रूप से कथित नहीं किया गया है:--

- (क) अन्तरण से हुई िकसी आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर देने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए; और/या
- (क) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को जिन्हें भारतीय आयक र अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उन्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती ब्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में स्विधा के लिए।

अत अब, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के, अनुसरण में, मैं, उक्त अधिनियम की धारा 269-घ की उपधारा (1) के अधीन, निम्नलिखित व्यक्तियों, अर्थात् :---

- श्री गुरदेव सिंह, बलदेव सिंह व रणजीत सिंह पुत्र श्री केहर सिंह, वासी मुरंगापुरी, कोट कपूरा (अन्तरक)
- 2 श्री कुलदीप सिंह पुत्र मोहिन्दर सिंह गांव सुरंगा-पुरी, कोट कपूरा

(अन्तरिती)

- 3. जैसा कि उपर नं० 2 में लिखा है (वह ब्यक्ति, जिनके अधिभोग में सम्पत्ति है)
- 4. जो व्यक्ति सम्पत्ति में रुची रखता है (वह व्यक्ति, जिनके बारे में अधोहस्ताक्षरी जानता कि वह सम्पत्ति में हितवड है)।

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त संपत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियों करता हंू।

उक्त संपरित के अर्जन के संबंध में कोई भी आक्षेप :----

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्विक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर संपत्ति में हितबद्ध किसी जन्म व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकी।

स्पष्टीकरण:--इसमे प्रयुक्त कव्यों और पदौं का, जो उक्त अधिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

वन्स्ची

व्यक्ति तथा सम्पत्ति जैसा कि विलेख नं 158, विनोक अप्रैल, 1982 को रजिस्ट्रीकर्ती अधिकारी फरीवकोट ने लिखा है।

> त्रे० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी सहायक ग्रायकर ग्रायुक्त (निरीक्षण) अर्जन रेंज, जालन्धर

दिनांक: 14-12-1982

प्ररूप आइ. टी. एन. एस. -----

आयक्षर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) को धारा 269-ध (1) के उभीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर वायुक्त (निरीक्षण) अर्जन रेंज, जालन्धर जालन्धर, दिमांक 14 दिसम्बर 1982

निदेश सं० ए० पी० नं० 3777—यतः मुझे, जे० एल० गिरधर

शायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है'), की धारा 269 व के अधीन सक्षम प्राधिकारी को, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर संपत्ति जिसका उकित वाजार मूल्य 25,000/- रु. से अधिक है

और जिसकी संख्या जैंमा कि अनुसूची में लिखा है। तथा जो कोट कपूरा में स्थित है (और इसमे उपाबद्ध अनुसूची में और पूर्ण रूप रो वणित है), रजिस्ट्रीकर्ता अधिकारी के कार्यालय, फरीदकोट में रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन, दिनांक अप्रैल, 1982

को पूर्वो वित संप्रित के उत्तित बाजार मूल्य से कम के दश्यमान प्रतिफ ल के लिए अन्तरित की गई है और मुफ्ते यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वों कत सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य उसके दश्यमान प्रतिफल से, ऐसे दश्यमान प्रतिफल का प्रंद्रह प्रतिशत से अधिक है और अंतरक (अंतरकाँ) और अंतरिती (अंतरितियों) के बीच ऐसे अंतरण के लिए तय पाया गया प्रति-फल निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तुरण लिखित में वास्त्विक रूप से कथित नहीं किया गया है:—

- (क) अन्तरण म हुई किसी आय की बाबत, उक्त अधिनियम के बधीन कर दोने के अन्सरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए; और/बा
- (ख) ऐसी किसी आय या किसी अन या अन्य आस्तियों को, जिन्हों भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 1-1) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सूविधा के लिए;

श्रतः क्रज, उनत अधिनियम, की धारा ∡69-घ के श्रन्सरण मों, मों, उक्त अधिनियम की धारा 269-घ की उपधारा (1) के अधीन, निम्नलिखित व्यक्तियों, अर्थात् :—— 17—416GI/82 श्री चनण सिंह पुल्ल ध्यान सिंह वासी खोटे मीरा दी तहसील फरीदकोट

(अन्तरक)

2 श्री करनैत सिंह पुत्र गुरदीत सिंह, वासी गांव मोगा रोड, कोट कपूरा, तह्० फरीदकोट।

(अन्तरिती)

उ जैसा कि उपर नं० 2 में लिखा है। (वह व्यक्ति, जिसके अधिभोग में सम्पत्ति है)

4. जो व्यक्ति सम्पत्ति में रुची रखता है।
(वह व्यक्ति, जिनके बारे में अधोहस्ताक्षरी
जानता है कि वह सम्पत्ति में हिनबद्ध है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त संपरित के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हुं।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी बाक्षेप्:---

- (क) इस सूचना के राजपन्न में प्रकाशन की तारीय में 45 दिन की अवधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अवधि, जो भी अवधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर प्यक्ति व्यक्तियों में में किसी व्यक्ति दवारा;
- (च) इस स्वना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीच से 45 दिन के भीतर उक्त म्थावर संपित्त में हित- बद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकरी।

स्पद्धीकरणः ---इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनयम के अध्याय 20-क में परिभाषित है, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

वनस्वी

व्यक्ति तथा सम्पत्ति जैसा कि विलेख तं० 389 दिनांक अप्रैल 1982 को रजिस्ट्रीकर्ता अधिकारी फरीचकोट ने लिखा हैं।

> जे० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी महायक आयकर आग*स*न (निरीक्षण) अर्जन रेंज, जालन्धर

दिनांक: 14-12-1982

प्ररूप आई. टी. एन. एस. - - - - -

आयकर अधिनियम,, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-ष (1) के अधीन सृषना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आय्क्त (निरीक्षण) अर्जन रेंज, जालन्धर

जालन्धर, दिनांक 14 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० ए० पी० नं० 3778— यतः मुझे, जे० एल० गिरधर

मायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-स के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वाम करने का कारण है कि स्थावर संपत्ति, जिमका उचित बाजार मृल्य 25,000/- रा में अधिक है

और जिसकी सं० जैसा कि अनुसूची में लिखा है तथा जो दिलकुशा मार्किट, जालन्धर में स्थित है (और इससे उपा- बद्ध अनुसूची में और पूर्ण रूप से वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्ता अधिकारी के कार्यालय, जालन्धर में रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन, दिनांक अप्रैल, 1982

को पूर्वीक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मूफे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वीक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से, एसे दृश्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अंतरक (अंतरकों) और अंतरिती (अन्तरितियों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखित में वास्तिवक रूप में किथत नहीं किया गया है :---

- (क) अंतरण से हुई किसी आय की बाबत., उक्त अधिनियम् के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्व में कभी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए; और/या
- (स) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को, जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सृविधा के लिए;

अतः कब, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण में, मैं उक्त अधिनियम की धारा 269-घ की उपधारा (1) के अधीन, निम्नलिखित व्यक्तियों, अर्थात् :--- श्री स्वर्ण सिंह आहेल पुत्र लाभ सिंह वासी सिविल लाइन्ज, जालन्धर।

(अन्तरक)

 श्रीमती हरनाम कौर पित ज्वाला सिंह बासी बडाला कलां, जालन्धर

(अन्तरिती)

जैसा कि उपगोक्त नं० 2 में लिखा है
 (वह व्यक्ति, जिमके अधिभोग में सम्पत्ति है)

जो व्यक्ति सम्पत्ति में रुचि रखता है)
 (वह व्यक्ति, जिनके बारे में अधोहस्ताक्षरी
 जानता है कि वह सम्पत्ति में हितबख है) ।

को यह स्थाना जारी करके पूर्वोंक्त सम्परित के अर्जन के लिए कार्यवाही शुरू करता हूँ।

उक्त सम्मृतित् के वर्षन् के सम्बन्ध में कोई भी बाक्षेप:--

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारी स से 45 दिन की अविध या तत्संबंधी क्यक्तियाँ पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविध, जो भी अविध बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वीक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (ख) इस स्चना के राजपत्र में प्रकाशन की तारील से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितवद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अभाहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकी।

स्पष्टोकरणः — इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं, वहीं अर्थ होगा, जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनुसूची

व्यक्ति तथा सम्पत्ति जैसा कि विलेख नं० 133 दिनांक अप्रैल, 1982 को रजिस्ट्रीकर्ता अधिकारी जालन्धर में लिखा है।

> जे० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी सहायक भ्रायकर श्रायुक्त (निरीक्षण) अर्जन रैंज, जालन्धर

दिनांक: 14-12-1982

प्ररूप आई. टी. एन. एस्.-----

भायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की घारा 269-घ (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) ग्रर्जन रेंज, जालन्धर

जालन्धर, दिनांक 14 दिसम्बर 1982

निर्देश सं०ए० पी० नं० 3799—यतः मुझे, जे० एल० गिरधर,

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके परचात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया हैं), की धारा 269-स के अधीन सक्षम प्राधिकारों को, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर संपरित., जिसका उचित बाजार मृल्य 25,000/- रा. से अधिक हैं

श्रीर जिसकी सं० जैसा कि अनुसूची में लिखा है तथा ओ जालन्धर में स्थित है (ग्रीर इससे उपाबद्ध अनुसूची में ग्रीर पूर्ण रूप से विणित है), रिजस्ट्रीकर्ता श्रिधकारी के कार्यालय, जालन्धर में रिजस्ट्रीकरण श्रिधिनियम, 1908 (1908 का 16) के श्रिधीन, दिनांक श्रिप्रैंल, 1982

को पूर्वेक्ति सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रतिकान के लिए सम्बोन्स की गई है और मुझं यह विश्वास करने के कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्बन्धि का द्वित बाजार मूल्य, उसके दृश्यसान

प्रतिफल से एमे दृश्यमान प्रतिफल का पंद्रह प्रतिशत अधिक हैं और अन्तरक (धन्तरकों) और अन्तरिती (धन्तरिक्तियों)के बीच एस धन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्निक्षित उद्देश्य से खन्त अन्तरण लिखित में वास्तिक रूप से कथित नहीं किया गया है:——

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत उकत अधि-नियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्य में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए और/या
- (क्य) एसी किसी आय या किसी धून या अन्य आस्तियों का, जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती क्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना जी। हुए था, छिपाने में सुविधा के लिए;

अतः अब, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण में, में, उक्त अधिनियम की धारा 269-च की उपधारा (1) के अधीन, निम्नुनिधित अधिनतयों अर्थात् :--- श्री वीर सिंह पुत्र शंकर सिंह वासी 74, मार्डन कालोनी, जालन्धर।

(ग्रन्तरक)

 श्रीमती हरनाम कौर पित्न ज्वाला सिंह वासी थडाला कर्ला, तहसील, जालन्धर

(श्रन्तरिती)

 जैसा उपरोक्त नं० 2 में लिखा है।
 (वह व्यक्ति, जिसके श्रधिभोग में सम्पत्ति है)।

जो व्यक्ति सम्पत्ति में क्वी रखता है ।
 (वह व्यक्ति, जिनके बारे में अबोहस्ताक्षरी
 जानता है कि वह सम्पत्ति में हितबद्ध है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोंक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हूं।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन् के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप:--

- (क) इस स्चना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर स्चना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (क्ष) इस स्थान के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख़ से 45 विन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबक्ष किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकोंगे।

स्पव्धीकरण:—इसमें प्रयुक्त सब्दों और पृदों का, जो उक्त अधिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं, बही अर्थ होगा जो उस अध्याय में विया गया है।

अनुसूची

व्यक्ति तथा सम्पत्ति जैसा कि विलेख नं० 134 दिनांक भ्रमेल, 1982 को रजिस्ट्रीकर्ता श्रधिकारी जालन्धर में लिखा है।

> जे० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी सहायक द्यायकर श्रायुक्त (निरीक्षण) ग्रर्जन रेंज, जालन्धर

दिनांक: 14-12-1982

मोहर 🗄

प्ररूप आई. टी. एन. एस. ------

आएकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-थ (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक कायकर आयुक्त (निरीक्षण) श्रजीन रेंज, जालन्धर

जालन्धर, दिनांक 14 दिसम्बर 1982

िषदेश सं० ए० पी० नं० 3780---यतः मुझे, जे० एल० गिरधः

जायक र अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया हैं), की धारा 269- स के अधीन सक्षम प्राधिकारी को, यह विश्वास करने का कारण हैं कि स्थावर सम्पत्ति जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- हा. से अधिक हैं

श्रीर जिसकी सं० जैसा कि अनुसूची में लिखा है तथा जो जालन्धर में स्थित है (धीर इसरो उपावद्ध अनुसूची में श्रीर पूर्ण ज्य से विणित है), रिजस्ट्रीकर्ता श्रिधकारी के कार्यालय, जालन्धर में रिजस्ट्रीकरण श्रिधिनियम, 1908 (1908 का 16) के श्रिधीन, दिनांक श्रिप्तेल, 1982

को पूर्वोक्त सम्परित के उचित बाजार मृल्य से कम के क्रयमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मृझे यह विश्वास करने का कारण है कि अध्यापूर्वोक्त सम्पर्ति का उचित बाजार मृल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से एसे दृश्यमान प्रतिफल का बन्द्रह प्रतिष्ठत से अधिक है और अंतरक (अंतरकों) और अंतरिती (अंतरितियों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रति-फल निम्निलिस्त उद्देश्य से उक्त अंतरण सिवित में वास्तिक क्य से कथित नहीं किया गया है:—

- (क) जन्तरण से हुई किसी भाय की बाबत उक्त अधि-नियम के अधीन कर दोने के अंतरक के दायित्व में कभी कारने या उससे बचने में सृविधा के लिए शीर/या
- (का) एेसी किसी अाय या किसी धन या अन्य आस्तियों को, जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया ग्या भा या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा के लिए:

अत. अय, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण में, में, उक्त अधिनियम की धारा 269-घ की उपधारा (1) के अधीन, निम्नलिखित व्यक्तियों, अर्थात :-- श्री जागीर सिंह पुत्र प्रताप सिंह वासी गांव गङ्ग जालन्धर।

(भ्रन्तरक)

 श्रीमती हरनाम कौर पितन ज्वाला सिंह वासी गांव वडला कला तहसील जालन्धर

(ग्रन्तरिती)

जैसा कि उपरोक्त नं० 2 में लिखा है।
 (वह व्यक्ति, जिसके ग्रिधिभोग में सम्पत्ति है)

जो व्यक्ति सम्पत्ति में रुचि रखता है। (वह व्यक्ति, जिनके बारे में अधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह मम्पत्ति में हितबद्ध है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वीक्त संपत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियों करता हुं।

उक्त संपरित के अर्जन के मंबंध में कोई भी आक्षेप :---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अविधिया तत्संबंधी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्विक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति बुवारा;
- (ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर संपत्ति में हित-बद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकींगे।

स्पव्यक्तिरण:--इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनयम के अध्याय 20-क में परिभाषित है, वही अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनुसूची

व्यक्ति तथा सम्पत्ति शाप नं० 8-ई दिलकुशा मार्किट जैसा कि विलेख नं० 135 दिनांक ग्रप्रैल, 1982 को रिजस्ट्री-कर्ता श्रधिकारी जालन्धर में लिखा है।

> जे० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी सहायक श्रायकर श्रायुक्त (निरीक्षण) श्रर्जन रॅज, जालन्धर

नारीख: 14-12-19**8**2

मोहरः

प्ररूप थाई.टी.एन.एस.-----

जायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की भारा 269-घ (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय,, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) श्रर्जन रेज, जालन्धर जालन्धर, दिनाक 14 दिसम्बर 1982

निवेश स० ए० पी० न० 3781—यत मुझे, छे० एल० गिरधर,

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके परकात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है) की धारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्परित, जिसका उजित बाजार मृत्य 25,000/- रा. से अधिक है

श्रार जिसकी स० जैसा कि श्रन्सूची में लिखा है तथा जो जालन्धर में स्थित (श्रीर इससे उपाबद्ध श्रन्सूची में श्रीर पूर्ण रूप से विणित है) रिजस्ट्रीकर्ता श्रिधकारी के कार्यालय, जालन्धर में र्राजस्ट्रीकरण श्रिधिनियम, 1908 (1908 का 16) के श्रिधीन, दिनाक श्रिश्रेल, 1982

को पूर्वीक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य सं कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुम्ने यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से, एसे दृश्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिदात से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरित्यों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नोलिश्वत उद्धिय से उक्त अन्तरण लिश्वित में वास्तविक रूप से किथत नहीं किया गया है ----

- (क) जन्तरण से हुई किसी बाय की बाबस उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में सृविधा के लिए; और/या
- (क) ऐसी किसी आग या किसी भन या अन्य आस्तियों को जिन्हों भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या भन- कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना वाहिए था, छिपान में स्विधा के निए।

1 श्री ननपल सिंह पुत्र गुरपाल सिंह वासी गडा, जालन्धर

(भ्रन्तरक)

2 श्रीमती हरनाम भौर प्रान्त ज्वाला सिंह वासी बङ्गाला कला जालन्धर

(म्रन्तरिती)

- 3 जैसा कि उपरोक्त न० 2 में लिखा है। (त्रह व्यक्ति, जिसक व्यक्तिगो में सम्पत्ति है)।
- यां व्यक्ति सम्पात्ति में मिन्न रखना है)।
 (यह व्यक्ति, जिनके बारे में ग्रधोहस्ताक्षरी
 जानता है कि वह सम्पत्ति में हितब है हैं)।

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहिया करता हूं।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप :---

- (क) इस से बना के राजपत्र में प्रकाशन की तारी करें 45 दिन की अविधि मां तत्सम्बन्धी व्यक्तियाँ पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त स्थानता में से किसी स्थानत द्वारा;
- (ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस में 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हित-सद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा, अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकोंगे।

स्पष्टीकरणः -- इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त व्यक्तियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनुसूची

सम्पत्ति तथा व्यक्ति जैसा कि विलेख न० 136 दिनाक ग्रप्रैन, 1982 को रजिस्ट्रीकर्ता ग्रिधकारी जालन्धर मे लिखा है।

> जें० एल० गिरधर मक्षम प्राधिकारी सहायक ग्रायकर ग्रायुक्त (निरीक्षण) श्रर्जन रेंज, जालन्धर

बहः बन, उक्त अधिनियम की भारा 269-ग के अनुसरण भं, कं, उक्त अधिनियम की भारा 269-म की रूपभार (1) के अधीन निम्नलिखित व्यक्तियों, अर्थात् :---

तारीख: 14-12-82

मोहर .

प्ररूप बाइ². टी. एन. एस.-----

बायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-घ (1) के अधीन सुचना

भारत सरकार

कार्या तथ, सहायक ग्रायकर ग्रायुक्त (निरीक्षण)

म्प्रजीन रेंज, जालन्धर जालन्धर, दिनांक 14 दिसम्बर 1982 निवेश सं० ए० पी० नं० 3782—यतः मुझे जे० एल० गिरधर,

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके प्रवात 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-ब के अधीन सक्षम प्राधिकारी को, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर संपरित जिसका उचित बाजार मृत्य 25,000/-रु. से अधिक है

श्रौर जिसकी सं० जैसा कि अनुसूची में लिखा है तथा जो जालन्धर में स्थित (ग्रौर इससे उपाबद्ध अनुसूची में श्रौर पूर्ण रूप से विणित है), रिजस्ट्रीकर्ता प्रधिकारी के कार्यालय जालन्धर में रिजस्ट्रीकरण श्रिधिनियम, 1908 (1908 का 16) के ग्रिधीन, दिनांक श्रिपैल, 1982

को पूर्वोक्त संपरित के उचित बाजार मूल्य से कम के दश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुफे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त संपरित का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से, ऐसे दश्यमान प्रतिफल का पन्त्रह प्रतिशत से अधिक है और अन्तरक (अंतरकों) और अंतरिती (अन्तरितियों) के बीच एंसे अन्तरण के लिए तय गया गया प्रतिक्क का निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखित में वास्तिक क्य से किथित नहीं किया ग्या है :—

- (क) अन्तरण से हुई किसी बाय की बाबत उक्त अधि-नियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के वायित्व में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए; और/वा
- (इ) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य अस्तियों को, जिन्हों भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा के लिए;

जतः बद उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण में, मैं उक्त अधिनियम की धारा 269-घ की उपधारा (1) के अधीन, निम्नलिसित व्यक्तियों, अर्थात् :--- श्री करन सिंह मान पुत्र बसन्त सिंह वासी जनता कालोनी, जालन्धर

(भ्रन्तरक)

 श्रीमती हरनाम कौर पिंतन ज्वाला सिंह वासी गांव वडाला कलां, जालन्धर

(भ्रन्तरिती)

3. जैसा कि उपरोक्त नं० 2 में लिखा है (वह व्यक्ति, जिसके फ्रिधिभोग में सम्पत्ति है)

 जो व्यक्ति सम्पत्ति में रुचि रखाता है।
 (वह व्यक्ति जिनके बारे में श्रधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पत्ति में हितबद्ध है)।

को यह स्वना जारी करके प्वांक्त सम्पत्ति के वर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हूं।

उक्त सम्पति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप:---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 विन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन को अविध, जो भी अविध बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वों कत स्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (ज) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीं से 45 दिन के भीतर उक्त स्थाधर संपत्ति में हित-बद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकेंगे।

स्पच्छीकरण:--इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदौं का, जो उक्त अधिनियम के अध्याय 20-क में परिभाषित है, यही अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गुमा है।

अनुसूची

व्यक्ति तथा सम्पत्ति जैमा कि दिलेख नं 137 दिनांक ग्राप्रैल, 1982 में रजिस्ट्रीकर्ता ग्रधिकारी जालन्धर में लिखा है।

> जे० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी स**हा**यक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) श्रर्जन रेंज, जालन्धर

तारीख: 14-12-82

प्ररूप आई°.टी.एन.एस. ------

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-च (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, महायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण)
श्रर्जन रेंज, जालन्धर
जालन्धर, दिनांक 14 दिसम्बर 1982

निदेश सं० ए० पी० नं० 3783 ने 3785—-यतः मुझे जे० एस० गिरधर

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके परचात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-स के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वाम करने का कारण है कि स्थावर संपत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- रा. से अधिक है

ग्रौर जिसकी संख्या जैसा कि श्रनुसूची में लिखा है तथा जो जालन्धर में स्थित है (ग्रौर इससे उपाबद्ध श्रनुसूची में ग्रौर पूर्ण रूप से वर्णित है), रिजस्ट्रीकर्ता ग्रिधकारी के कार्यालय, जालन्धर में रिजस्ट्रीकरण प्रिधिनियम, 1908 (1908 का 16) के श्रधीन, दिनांक श्रप्रैल, 1982

को पूर्वोक्त संपत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मूभे यह विश्वाम करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त संपत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से एमे दृश्यमान प्रतिफल के पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अनतरक (अन्तरकों) और अनतरिती (अन्तरितियों) के बीन के एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखित में बास्तियक स्प से कथित नहीं किया गया है:—

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बावत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उमसे वचने में मृविधा के लिए; और/या
- (स) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को जिन्हें भाररतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धनकर अधिनियम, या धनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिसी द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, लियाने में स्विधा के लिए।

अतः अब, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के, अन्गरण में, में, उक्त अधिनियम की धारा 269-भ की उपधारा (1) के अधीन, निम्नलिखित व्यक्तियों, अर्थान्:---

- कुमारी वयाकौर सेटी पुत्री ध्रमरीक सिंह वासी III, ग्रीन पार्क, जालन्धर।
 - (म्रन्तरक)
- श्रीमती उद्यम कौर विधवा सन्तोख सिंह वासी गांव भ्रम्बाला जट्टा, होशियारपुर।

(भ्रन्तरिती)

- 3. जैसा उपरोक्त नं० 2 में लिखा है
 श्रीर महिन्दर सिंह सुपुत राजा सिंह एवं जगदीण
 सिंह मुपुत हरी सिंह वासी जालन्धर।
 (बह व्यक्ति, जिसके श्रिधभोग में सम्पत्ति है)
- 4. जो व्यक्ति सम्पत्ति में रुचि रखता है (वह व्यक्ति, जिनके बारे में श्रधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पत्ति में हितबद्ध है)।

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त संपरित के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हुं।

उक्त संपत्ति के अर्जन के संबंध में कोई भी आक्षेप :--

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अविधि या तत्संबंधी व्यक्तियों पर मूचना की तामील में 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन के भीतर उत्रत स्थावर संपतित में हितबद्ध किमी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पाम निस्ति में किए जा सकी।

स्पष्टिकरण:--इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उपस अधिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित है, वहीं अर्थ होगा जो उस अधाय भे दिया गया है।

अनुसूची

व्यक्ति तथा सम्पत्ति जैसा कि विलेख नं० 453 दिनांक ग्रप्रैल, 1982, 1232 दिनांक मई, 1982, 1834 दिनांक जून, 1982 की रजिस्ट्रीकर्ता ग्रधिकारी जालन्धर में लिखा है।

> जें० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी सहायक श्रायकर श्रायुक्त (निरीक्षण) श्रर्फन रेंज, जालन्धर।

तारीखा: 14-12-82

प्रकप नाह्, टी. एन. एस. - - - - --

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 16) की धारा 269-थ (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, महायक श्रायकर श्रायक्त (निरीक्षण) श्रर्जन रेंज, जालन्धर जालन्धर, दिनांक 15 दिसम्बर 1982

निर्देण सं० ए०पी०नं० 3786---यतः मुझे जे०एल०

गरधर

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पित्त, जिसका उचित बाजार मृल्य 25,000/-रु. से अधिक है

ग्रौर जिसकी स० जैंसा कि अनुसूची में लिखा है तथा जो भटिण्डा में स्थित है (ग्रौर इससे उपाबद्ध ग्रनुसूची में ग्रौर पूर्ण रूप से विणित है), रिजस्ट्रीकर्ता ग्रधिकारी के कार्यालय भटिण्डा में, रजस्ट्रीकरण ग्रिधिनियम, 1908 (1908 का 16) के ग्रिधीन, तारीखं ग्रीपेल 1982

को पृषों कत सम्परित के उचित बाजार मूल्य से कम के स्रयमान प्रतिफल के लिए अंतरित की गई है और मूम्से यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके स्रयमान प्रतिफल से, एसे दश्यमान प्रतिफल का पन्त्रह प्रतिअत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितियों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तम पाया गाया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्यों से उक्त अन्तरण लिखित में वास्तिवक रूप से किथत नही किया गया है:---

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के वायित्व में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए; और/या
- (म) एसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को जिन्हें भारतीय आयंकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में स्विधा के लिए।

अतः अब उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अन्सरण में, में, उक्त अधिनियम की धारा 269म की उपधारा (1) के अधीन गिम्नीलिखित व्यक्तियों, अर्थात् :--- श्री सुरजीत सिंह पुत्र निहाल सिंह चन्दसर बस्नी भटिण्डा।

(ग्रन्तरक)

2. श्री सुभाष चन्द पुत्र चरनजी लाल वासी रामपुरा फुल।

(भ्रन्तरिती)

3 जैसा कि उपरोक्त नं 2 में लिखा है। (वह व्यक्ति, र्जिमके ग्रिधिभोग में सम्पत्ति है)

4 जो व्यक्ति सम्पत्ति में रूचि रखता है।
(वह व्यक्ति, जिनके बारे में अधोहस्ताक्षरी
जानता है कि वह सम्पत्ति में हिनबद्ध है)

को यह सूचना जारों करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां शुरू करना हू ।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप :---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 विन की अविधि या तारसम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 विन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वीक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (स) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबब्ध किमी अन्य व्यक्ति ब्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकोंगे।

स्पष्टीकरण: --इसमें प्रयुक्त शब्दों और पर्दों का, जो जक्त् अधिनियम के अध्याय 20-क में प्रिभाषित है, तही अर्थ होगा जो उस अध्याय में विया गया है।

भनुसूची

व्यक्ति तथा सम्पत्ति जैसा कि विलेख नं० 315 दिनाक 1982 को रजिस्टीकर्ता अधिकारी भटिण्डा में लिखा है।

> जे० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी महायक भ्रायकर भ्रायुक्त (निरीक्षण) भ्रजैन रेज, जालन्धर

तारीख: 15-12-82

प्ररूप आहर्ष टी एन ऐस -----

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की भारा 269-च (1) के अभीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण)

म्रर्जन रेज, जालन्धर जालन्धर, दिनाक 15 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० ए० पी० न० 3787—यत मुझे जे० एल**०** गिरधर

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके परचात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की भारा 269-स के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- रु से अधिक है

श्रौर जिसकी स० जैसाकि अनुसूची में लिखा है तथा जो भटिण्डा में स्थित है (श्रौर इससे उपाबद्ध अनुसूची में भौर पूर्ण रूप में वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्ता श्रधिकारी के कार्यालय भटिण्डा में रजिस्ट्रीकरण श्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के श्रधीन, तारीख श्रश्रैल 1982

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मृत्य से कम के द्रियमान प्रतिफल के लिए अतिरिती की गई है और मृभ्ने यहिवहवास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मृत्य, उसके द्रियमान प्रतिफल से, ऐसे द्रियमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिकात से अधिक है और अतरक (अतरकों) और अंत-रिती (अंतिरितियों) के बीच ऐसे अंतरण के लिए तय पाया गमा प्रतिफल निम्नलिखित उद्देष्य से उक्त अंतरण लिखित में वास्तिक रूप से किथत नहीं किया गया है —

- (क) अंतरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर देने के अतरक के दायित्व में कभी करने या उससे अचने में सूविधा के लिए, और/या
- (क) ऐसी किसी आय या फिसी धन या अन्य आस्तियों को जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती व्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा के लिए।

अतः अब, उत्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण को, मैं, उत्त अधिनियम की धारा 269-च की उपधारा (1) के अधीन, निम्निलिखित व्यक्तियों, अर्थात् :--18--416GI/82

- श्रीमती जेगीर कौर पत्नी श्री बीरपाल सिंह भटिण्डा। (ग्रन्सरक)
- 2 श्री गुरचेत सिंह पुत्र जलौर सिंह पता गुरूनानक कोल्ड स्टोरेज (पी०) लि० भटिण्डा।

(भ्रन्सरिती)

- 3 जैसा उपरोक्त न० मे लिखा है। (बह व्यक्ति, जिसके ग्रिक्षिभोग मे सम्पत्ति है)
- 4 जो व्यक्ति सम्पत्ति मे रूचि रखता है।
 (वह व्यक्ति, जिनके बारे मे प्रधोहस्ताक्षरी
 जानता है कि वह सम्पत्ति मे हितवद्ध है)

को यह मृचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्ययाहिया करता हुं।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप ---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा,
- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबव्ध किसी अन्य व्यक्ति व्यारा अधीहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकेंगे।

स्माचिकरणः -- इसमे प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम के अध्याय 20-क में परिभाषित है, वहीं अर्थ होंगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

मनुसूची

व्यक्ति तथा सम्पत्ति जैसा कि विलेख नं ० 320 दिनाक प्रप्रैल 1982 को रजिस्ट्रीकर्ता प्रधिकारी भटिन्डा मे लिखा है।

> जे० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी स**हायक** आयकर आयुक्त (निरक्षिण) ' भ्रर्जन रेज, जालन्धर

तारीख 15-12-82

प्रकृष आर्दा. टी एन एम ------

भायकर भविनियम, 1961 (1961 का 43) की धार। 269-थ (1) के प्रधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहाय्क आयकर आयुक्त (निरीक्षण) अर्थन रोज, जालन्धर

जालन्धर, दिनांक 15 दिस∓बर 1982

निर्देश सं० ए० पी० नं० 3788---यतः 'मुझे, जे० एल० गिरधर

श्रायकर अश्विनियम 1961 (1961 का 43) (जिस इसमें इसके प्रश्नात् 'उरन अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-ख अ अधीन सजा पाजिकारों को, पह जिश्लाम करने का कारण दैकि स्थायर सम्पत्ति, जिनका उचिम बाजार मूख्य 25,000'- र • से अधिक है और जिसकी सं० जैसा कि अनुसूची में लिखा है तथा जो भटिन्डा में स्थित है (और इससे उपायद्ध अनुसूची में और पूर्ण रूप से विणित है), रिजस्ट्रीकर्ता अधिकारी के कार्यालय भटिन्डा में रिजस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन, तारीख अप्रैल 1982

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुझे यह बिश्वास करने का कारण है कि यवापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य उसके दृश्यमान प्रतिफल से, ऐसे दृश्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत स्विक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितियों) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्य से अन्त सन्तरण निल्लित में बास्तिवक रूप से कवित नहीं किया गया है:—

- (क) ग्रन्तरण से हुई किसा आय की बाबत उक्त भिन्न-नियम के भ्राप्तीन कर देने के भ्रस्तरक के दायित्य में कभी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए; भौर/या
- (ब) ऐसी किसी भाग मा किसी धन या भ्रम्य भ्रास्तियों को, जिन्हें भारतीय आयकर भ्रिष्ठिनियम, 1922 (1922 का 11) या उन्त भ्रिष्ठिनियम, या धन-कर भ्रिष्ठिनियम, 1957 (1957 का 27) के भ्रयोजनाथ भन्नरिती द्वारा भ्रकट नहीं किया गया या या किया आना बाहिए था, छिपाने में सुविधा के लिए;

अद: अब, उक्त क्रीयिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण में, मैं उक्त अधिनियम की धारा 269-म को उपधारा (1) के अधीन निम्नलिखित व्यक्तियों, अर्थात् :—

- श्री गुलाब सिंह पुत्र गण्डा सिंह जोधपुर रोमना (ग्रन्तरक)
- गुरवर्णन सिंह पुत्र कुलबीप सिंह मोहिन्दर कौर पत्नी गुदर्णन सिंह बलबीर सिंह पुत्र जुगराज सिंह धर्म कौर पश्नी जीवन दाय क्षेत्रल कृष्ण पुत्र बृजलाल जसपाल भारत भूषण पुत्र मनोहरलाल उर्मला रानी पत्नी प्रेम कुमार गांव बलियान वाली। (अन्तरिती)
- जैसा कि उपरोक्त नं० 2 में लिखा है।
 (वह व्यक्ति, जिसके श्रिधिभोग में सम्पत्ति है)
- 4. जो व्यक्ति सम्पत्ति में रुचि रखता है। (वह व्यक्ति, जिनके बारे में प्रधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पत्ति में हितबद्ध है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त संपत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हुं।

उक्त सम्पत्ति के अजन के सम्बन्ध में कोई भी बाक्षेप :--

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अविधि या तत्संबंधी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वीक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (क्) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबब्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा, अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकोंगे।

स्पष्टोकरण: ---इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदौं का, जो उक्त अधिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाष्टित हुँ, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनुसूची

व्यक्ति तथा सम्पत्ति जैसा कि विलेख नं० 259 दिनांक ग्रप्रैल 1982 को रजिस्ट्रीकर्ता ग्रधिकारी भटिन्डा में लिखा है।

> जे० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी सहायक आयकर ग्रायुक्त (निरीक्षण) ग्रर्जन रेंज, जालन्धर

तारीख: 15-12-1982

प्रकार आहे. टी. एन. एस ------

बायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-म (1) के अधीन स्चना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) म्रर्जन रेज, जालन्धर

जालन्धर, दिनाक 15 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० ए० पी० न० 3789--यतः मुझे, जे० एल०

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इतमें इसके परवात 'जुकत अधिनियम' कहा गया हैं), की धारा 269-स के अधीन सक्षम प्राधिकारी को, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर संपरित जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- एत. से खिंधक हैं

ग्रौर जिसकी सं० जैसा कि श्रनुसूची में लिखा है तथा जो फगवाडा में स्थित है (ग्रीर इससे उपावद्ध श्रनसूची में ग्रीर पूर्ण रूप से वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्ता श्रधिकारी के कार्यालय फगवाड़ा में रजिस्ट्रीकरण ग्रधिनियम,, 1908 (1908 का 16) के श्रधीन, तारीख श्रप्रैल 1982

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार भूल्य से कम के इष्यमान प्रिक्षिक के लिए अन्तरिती की गई है और मुक्ते यह विष्यास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति की उचित बाजार म्ल्य, उसके स्थ्यमान प्रतिफल से, एसे स्थ्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत से अधिक ही और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितियों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिकल निम्नलिखित उददेश्य से उक्त अन्तरण सिसित मे वास्तविक रूप से कथित नहीं किया गया है:---

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत उक्त अधि-नियम के अधीन कर दोनं के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए; और/या
- (स) ऐसी किसी जाय या किसी धन या अन्य आस्सियों का जिन्हों भारतीय आय-कर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त बिधनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती दुवारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा के लिए:

अतः अव, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण में, में, अक्ल अभिनियम की धारा 269- घकी उपधारा (1) के वधीन. निम्नलिखित व्यक्तियों, अर्थात् :--~

1. श्री सुरिन्दर सिंह पुत्र उद्यम सिंह गांव ब्रह्मजारा नवांगहर ।

(ग्रन्तरक)

2. श्री जोगा सिंह पूल श्री लक्ष्मण सिंह गांव मानक फगवाड़ा ।

(भन्तरिती)

3 जैसा कि उपरोक्त नं० 2 में लिखा है। (वह व्यक्ति, जिसके श्रधिभोग में सम्पत्ति है)

4 जो व्यक्ति सम्पत्ति में रुचि रखता है। (वह व्यक्ति, जिनके बारे मे भ्रधोहस्ताक्षरी जनाता है कि वह सम्पत्ति में हितवद्ध है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वीक्त सपित्त के अर्जन के लिए कार्यवाहियां **करता ह**ै।

उक्त सम्पत्ति को अर्जन को सम्बन्ध मों कोई भी आक्षेप :---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की सारीस से 4.5 दिन की अवधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सुधना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (ख) इस स्थाना को राजपत्र में प्रकाशन की तारीक स 45 विन के भीतर उक्त स्थालर संपत्ति में हित-बब्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधाहमताक्षरी के पास लिसित में किए जा सकोंगे।

स्पव्होकरण:--इसमें प्रयुक्त सब्दों और परों का, जो उच्त अभिनियम के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय मा दिया गया है ।

अनुसूची

व्यक्ति, तथा सम्पत्ति जैसा कि विलेख नं ० 108 दिनांक अप्रैल 1982 को रजिस्टीकर्ता श्रधिकारी फगवाड़ा में लिखा है।

> जे०एल० गिरधर सक्षम ग्रधिकारी भ्रायक्त (निरीक्षण) सहायक भ्रायकर श्चर्जन रेंज, जालम्**धर**

तारीख . 15-12-1982

प्ररूप आइटी एन एस . -----

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की भारा 269-भ (1) के अधीन सुभना

भारत सरकार

सहायक श्रायकर श्रायुक्त (निरीक्षण) श्रर्जन रेंज, जालन्धर

जालन्धर, दिनांक 15 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० ए० पी० न० 3791 से 3793---यत: मुझे, जे० एल० गिरधर,

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया हैं), की धारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण हैं कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- रा. से अधिक हैं

ग्रौर जिसकी स० जैसा कि श्रनुसूची में लिखा है तथा जो जालन्धर में स्थित है (श्रौर इससे उपावद्ध में श्रनुसूची में श्रौर पूर्ण रूप से बांणत है), रजिस्ट्रीकर्ता श्रधिकारी के कार्यालय जालन्धर में रजिस्ट्रीकरण श्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के श्रधीन तारीख श्रप्रैल 1982

को पूर्वोक्स सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अंतरिती की गई है और मुक्ते यहिवश्यास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से, एसं दृश्यमान प्रतिफल का पन्नह प्रतिशत से अधिक है और अंतरक (अंतरकों) और अंतरिती (अंतरितियों) के बीच एसे अंतरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल निम्नलिखित उद्दोष्य से उक्त अंतरण लिखित में वास्तविक रूप से कथित नहीं किया गया है:---

- (क) अंतरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अंतरक के वायित्व में कमी करने या उससे बचने में सूविधा के लिए; और/या
- (स) ऐसी किसी जाय या किसी धन या जन्य आस्तियों की जिन्हों भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा के लिए।

अतः अव, उत्त अभिनियमं की धारा 269-ण के जनूसरण मं, मैं., उक्त अधिनियमं की धारा 269-ण की उपधारा (1) के अधीन, निम्नलिश्चित व्यक्तियों, अर्थात् :--- श्री भोम प्रकाश पुत्र मूल चन्द भीर समून वेबी विधवा मूल चन्द वासी नजदीक रेलवे फाटक रामां मण्डी जालन्धर छावनी।

(ग्रन्तरक)

2. श्री दीपक सेठ पुत्र राम लुभाया भौर ग्रमिति सुकला सेठ पत्नी राम लुभाया वासी डब्ल्यू ए० 96, बाजार शेखा, जालन्धर।

(भ्रन्तरिती)

जैंसा कि उपरोक्त तं० 2 में लिखा है।
 (वह व्यक्ति, जिसके भ्रधिभोग में सम्पत्ति है)

4. जो व्यक्ति सम्पत्ति मे रुचि रखता है। (वह व्यक्ति, जिनके बारे में ग्रधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पत्ति में हितवद्ध है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हुं।

उक्त सम्पत्ति के अर्पन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप :--

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारी ह से 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वे कित व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (स) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबक्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास निस्ति में किए जा सकेंगे।

स्पर्काकरणः --- इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं, वही अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनसची

व्यक्ति तथा सम्पति जसा कि विलेख न० 159439 भ्रौर 712 दिनांक श्रप्रैल 1982 को रजिस्ट्रीकर्ता श्रधिकारी जालन्धर ने लिखा है।

> जे० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी सहायक स्रायकर ग्रायुक्त (निरीक्षण) श्रजेन रेंज, जालन्धर

तारीष: 15-12-1982

प्रस्प नाई . टी. ऍन. एस. ----

भायकर अभिनियम, 1961 (1961 का 43) की भारा 269-मु (1) के अभीन सूचना

नारत तरकार

सहायक भ्रायकर म्रायुक्त (निरीक्षण) भ्रर्जन रेज, जालन्धर

जॉलन्धरं, दिनांक 15 दिसम्बरं 1982

निर्विश सं० एँ० पी० नं० 3794—यत्त: मुझे, जे० एस० गिरधर,

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमे इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269- स के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिस्का उचित बाजार मृत्य 25,000/- रु. से अधिक है

ग्रोर जिसकी सं० जैसा कि भ्रनुसूची में लिखा है तथा जो जालन्धर में स्थित है (भ्रौर इससे उपायद्ध भ्रनुसूची में ग्रौर पूर्ण रूप से विणत है), रजिस्ट्रीकर्ता भ्रधिकारी के कार्यालय जालन्धर में र्राजस्ट्रीकरण श्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) भ्रधीन, तारीख अप्रैल 1982

को पूर्वोक्त संपत्ति के उचित वाजार मुख्य से कम के इच्यमान प्रतिफल के लिए अंतरित की गई है और मुक्ते यह विद्यास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त संपत्ति का उचित बाजार मृत्य, उसके दूरयमान प्रतिफल से, एसे दृश्यमान प्रतिफल का पन्द्रह् प्रतिक्त से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितयों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देष्यों से उक्त अन्तरण लिखित में नास्तिक रूप से किथ्त नहीं किया गया है:---

- (क) बन्तरण से हुई किसी बाय की बाबत, उक्त अभिनिय्म के अभीन कर दोने के अन्तरक के द्यायित्व मों कभी करने या उससे बचने मों सूर्विभा के लिए; और/या
- (च) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को जिन्ह भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तिरती द्वारा प्रकट नहीं किया गया भा या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सूबिधा के लिए।

जतः जब उक्त अधिनियम की भार 269-ग के अनुसरण में, में, उक्त अधिनियम की भारा 269-में की उपभारा (1) के अभीन निम्निविचित स्पिन्सों, जर्भात् :--- श्री मोहमं लाल, शाम लॉल श्रीर शुवर्शन लाल उरफ दर्शनं लाल वांसी एन० ए० 310, गोपॉल नगर जालन्धरे।

(मन्तरक)

 श्री कस्तूरी लाल पुत्र राजा राम वासी एन० एन० 1310, गोंपांलनगर , जालन्धरं।

(भ्रन्तरिती)

जैंसी कि उपरोक्त नं० 2 में लिखीं है।
 (वह व्यक्ति, जिसके बंधिभीग में सम्पत्ति है)

 अो व्यक्ति सम्पत्ति में रुचि रखता है।
 (बंह व्यक्ति, जिनके बारे में श्रेष्ठोहस्ताक्षरीं जानता है कि वह सम्पत्ति में हितवद्ध है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के वर्जन् के लिए कार्यवाहियां करता हुं।

उनंत सम्पत्ति के अर्जन् के सम्बन्ध में कोई भी अक्षेप :---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीलं सी 45 विन की अविध या तत्सम्बन्धी व्यक्तियाँ पर सूचना की तामील से 30 विन की अविध, जो भी अविध बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियाँ में से किसी व्यक्ति व्वारा;
- (स) इस सूचना के राजपन में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पृति में हितंबैंचे किसी जन्म व्यक्ति व्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास सिम्सित में किए जा सकेंगे।

स्पच्छीकरण: ----इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अन्सूची

व्यक्ति तथा सम्पत्ति जैसा कि विलेख नं० 436 दिनांक ग्रप्रैल 1982 को रजिस्ट्रीकर्ता ग्रधिकारी जानन्धर ने लिखा है।

> जे**ं** एल**० गिरक्षर** सक्षम प्रधिकारी स**हायक ग्रायकर ग्रायुक्त (निरीक्ष**ण) ग्रर्जन रेंज, जालन्छर

तारीख: 15-12-\$2

प्ररूप आई.टी.एन.एस.-----ग्रायकर अधिनियम 1961 (1961 का 43) की भारा 269-व (1) के भधीन सूचना

भारत सरकार

सहायक भायकर भायकत (निरीक्षण) भर्जन रेंज, जालन्खर जालन्धर, दिनांक 16 दिसम्बर 1982

निर्शे सं० ए० पी० 3796—यतः मुझे, जे० एल० गिरधर

प्रायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पहचात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-ख के अधीन मक्षम प्राधिकारी को, यह विष्वास करने का करण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- रुपये से प्रधिक है जिसकी सं० जैसा कि प्रमुस्ची में लिखा है तथा जो कोटकपुरा में स्थित है (श्रीर इससे उपाबद्ध श्रमुस्ची में श्रीर पूर्ण रूप में विणत है), रजिस्ट्रीकर्ता श्रधिकारी के कार्यालय फरीदकोट में रजिस्ट्रीकण श्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के श्रधीन, तारीख श्रप्रैल 1982

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है भीर मुझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से, ऐसे दृश्यमान प्रतिफल का उन्हर्स प्रतिमत अधिक है और प्रत्यर (अन्तरका) और अन्तरिती (अन्तरितियों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तम पामा गाम प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखित में बास्तविक रूप न कथित नहीं किया गया है :---

- (क) अन्तरण म हुई िकसी आय की बाबत उक्त अधि-नियम के अधीन कर देने के अन्तरक के शायित्व में कमी करने या छससे बचने में सुविधा के लिए; ग्रीर/या
- (ब) ऐसी कियी भाय या किसी घन या भन्य भास्तियों को, जिन्हें भारतीय आय-कर श्रिष्ठिनियम, 1922 (1922 का 11) या उन्त श्रिष्ठिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था छिपाने में मुविधा के लिए;

ग्रत: प्रव, उक्त प्रधिनियम की धारा 269-ग के प्रमुसरण में, में उक्त प्रधिनियम की धारा 269-थ की उपधारा (1) के अभीन जिम्निसिस व्यक्तियों, मर्थात्:— श्रीमती विमला सरैन पत्नी श्री रिजन्द्र कुमार वासी, मुक्तसर रोड, कोटकपुरा ।

(मन्तरक)

 श्री सन्दीप कुमार पुत्र धर्मवीर वासी नजदीक पुराना बस सटेड, कोटकपुरा।

(भ्रन्तरिती)

3. जैसा कि ऊपर नं० 2 में है। (वह व्यक्ति, जिसके अधिभोग में सम्पत्ति है)

 जो व्यक्ति सम्पत्ति में ६चि रखता है।
 (वह व्यक्ति, जिनके बारे में श्रधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पत्ति में हितबद्ध है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वों कर सम्परित के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हु।

उक्त सम्यन्ति ह अजा के प्रमुख्य में कोई भी बाक्षेप:--

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की ध्वति या तरसंत्रंधी व्यक्तियों पर सूचना की सामील से 30 दिन की धवित्र, जो भी धविध बाद में समाप्त होती हो, के भीतर प्रॉक्त व्यक्तियों में प्रक्रिसी व्यक्ति दारा;
- (ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रताशन की नारीख ने 4.4 वित के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबद किसी अन्य व्यक्ति द्वारा, प्रधोत्रस्ताक्षरी के पास लिखिन में किये जा सकेंगे।

स्वब्दीकरण: ----इसमें प्रयुक्त शब्दो और पटों का. जो उसर प्राप्त नियम के अध्याय १०-क में परिभाषित है, बहा स्रथ होगा, जो उस स्रज्याय ने दिया गया है।

अनुसूची

सम्पत्ति तथा व्यक्ति जैसा कि विलेख नं० 43 दिनोक ग्रप्रैल 1982 को रजिस्ट्रीकर्ता ग्रधिकारी फरीदकोट में लिखा है।

> जे० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी सहायक भ्रायकर भ्रायुक्त (निरीक्षण) श्रर्जन रेंज, जालन्धर

तारी**च** : 16-12-1982

प्रक्य बार्षं .टी<u>.</u>एन् .एत . ------

बायकर अभिनियम, 1961 (1961 का 43) की भारा 269-च (1) के अभीन सुचना

नारत तरकार

सहायक स्रायकर म्रायुक्त (निरीक्षण) म्रर्जन रेंज, जालन्धर

जालन्धर, दिनांक 16 दिसम्बर 1982 निर्देश मं० ए० पी० नं० 3797—यतः मुझे, जे० एल० गिरधर

बायकर बीधीनयम, 1961 (1961 का 43) (चिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त बीधीनयम,' कहा गया है), की बारा 269-च के बधीन सक्षम प्राधिकारों को यह विश्वास करने का कराण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- रु. से अधिक है

ग्नीर जिसकी सं० जैसा कि ग्रनुसूची में लिखा है तथा जो कोटकपूरा में स्थित है (ग्रीर इसमे उपायद्ध ग्रनुसूची में ग्रीर पूर्ण रूप से वत्णत है), रजिस्ट्रीकर्ता ग्रधिकारी के कार्यालय फरीदकोट में रजिस्ट्रीकरण ग्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के ग्रधीन, तारीख भन्नेल 1982

को प्वोंक्त संपत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के दश्यमान प्रितफल के लिए अन्तरित की गई है और मूक्ते यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त संपरित का उचित बाजार मूल्य, उसके दश्यमान प्रतिफल से, ऐसे दश्यमान प्रतिफल का पंद्रह प्रतिशत से अधिक है और अंतरक (अंतरकों) और अंतरिती अन्तरितियों के बीच ऐसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रति-फल निम्नतिचित उद्देश्य से उक्त अन्तरण निचित में बास्तिचक रूप से कथित नहीं किया गया है:——

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्क अभिनियम के अभीन कर दोने के अन्तरक के वायित्व में कमी करने था उससे अचने में सुविधा के लिए; और/या
- (ख) एसी किसी बाय या किसी धन या अन्य आस्तियों को, जिन्ह भारतीय आय-कर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयाजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था किया जाना चाहिए था, छिपाने में मृविधा के लिए;

 श्रीमती विमला सरेन पत्नी रिजन्द्र कुमार वासी मुकन्सर रोड, कोटकपूरा।

(अन्तरक)

 श्रीमती मुरती पूर्वी पत्नी धर्मवीर वासी मुकल्सर रोड कोटकपुरा।

(भ्रन्तरिती)

- 3. जैसा कि ऊपर नं० 2 में है। (बह व्यक्ति, जिसके श्रिधभोग में सम्पत्ति हैं
- जो व्यक्ति, सम्पत्ति में रूचि रखता है।
 (वह व्यक्ति, जिनके बारे में प्रधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पत्ति में हितवद्ध है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्स सम्परित के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हुं।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप :--

- (क) इस सूचना के राज्यत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अविधि या तत्सीबंधी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वेक्ति व्यक्तियों में से किसी क्यक्ति वुवारा;
- (क) इस सूचना को राजपत्र मों प्रकाशन की तारीस से 45 दिन को भीतर उक्त स्थावर संपत्ति मों हितबव्ध किसी अन्य व्यक्तियों द्वारा अधोहस्ताक्षरी को पास लिखित मों किए या सकींगे।

स्थल्यीकरण: — इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

धन्स्ची

सम्पत्ति तथा व्यक्ति जैसा कि विलेख नं० 75 दिनांक भ्रप्नैल 1982 की रजिस्ट्रीकर्त्ता ग्रधिकारी फरीवकोट में लिखा है।

> जे० एल० गिरधर सक्षम श्रीधकारी सहायक श्रायकर श्रायुक्त (निरीक्षण) श्रजैन रेंज, जालन्धर

अतः अवः, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण में, मैं, उक्त अधिनियम की धारा 269-थ की उपधारा (1) के अधीन, निम्निसिस स्थिकतथी, अधीन :—

तारीख: 16-12-1982

ोहर :

प्रकृत् भार्षं दी . एन . एस . -----

बायकर बिधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-च (1) के अधीन स्थना

भारत बरकाड

कार्याचय, बहामक बाक्कार बाक्का (निरीक्षण)

ग्रर्जन रेज-II, मद्रास

मद्रास, विनांक 7 दिसम्बर 1982

निर्देश स० 12057----यतः मुझे, श्रार० पी० पिल्लं, सायकर अधिनिमम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके परचात् 'उकत् विधिनियम' कहा क्या हु"), की धारा 269-च के वधीन सक्षम प्राधिकारों को यह विध्वास करने का कारण है कि स्थापर सम्पत्ति, विस्का उद्वित बाबार मृस्य 25,000/-रः. से अधिक है

ग्रौर जिसकी संव सर्वे नंव 771/4, क्लेयस्बेट्र है, जो कालपट्टी में स्थित है (ग्रौर इससे उपाबद अनूसूची में ग्रौर पूर्ण रूप से वर्णित है), रिजस्ट्रीकर्ती ग्रीधकारी के कार्यालय, गांधीपुरम (डाकुमेंट संव 1543/82) में भारतीय रिजस्ट्रीकरण ग्रीधनियम, 1908 (1908 का 16) के ग्रीधीन ग्राप्तेल 1982

को पूर्वोक्षत सम्परित को उचित बाजार मृत्य से कम के दश्यमान प्रतिफल के जिए अन्तरित की गई है और मुक्ते यह विश्वास करने का कारण है कि यथा पूर्वोक्षत सम्पत्ति का उचित बाजार मृत्य, उसके दश्यमान प्रतिफल सो, एसे दश्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितियों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल निम्निलिखित उद्वेश्य से उक्त अन्तरण लिखित में बास्तिवक रूप में किश्रत नहीं किया गया है:--

- (क) जंतरण से हुई किसी जाय की वाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के जन्तरक के दायित्व में कभी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए; और/का
- (का) एसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों का, जिन्हों भारतीय आय-कर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती ब्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा के लिए;

अतः अयः, उक्त अधिनियमं की धारा 269-ग के अनुसरण कों, मैं, उक्त अधिनियमं की धारा 269-म की उपधारा (1) को अधीन निम्निसिक्त व्यक्तियों अर्थात् :---

1 श्रः रामस्वामी धीकर भीर भदर्स।

(भ्रन्तरक)

2 श्री पी० वा० राजन।

(भ्रन्तरिती)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त संपत्ति के अर्थन के लिए कार्यवाहियां शुरू करता हुं।

उन्त सम्मत्ति के भूषन के सम्बन्ध में कोई भी बाहोप्:---

- (क) इस स्थान के राज्यक् में प्रकारन की तारीय ते 45 विक् की वनिष या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर स्वान की तामील से 30 विन की अवधि, जो भी नवीय बाद में समाप्त होती हो, के भीतर व्योक्त व्यक्तियों में से किसी करिन्द क्षाराः
- (व) इस स्थान के राजपण में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन के भीतर उक्त स्थानर संपरित में हितबद्ध किसी कर्क कर्षित दूगरा वधाहरताक्षरी के पास विचित में किस का संबंधि।

स्पष्टीकरण:—-इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, को जक्त अधिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं, कही अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गबा है।

नन्त्जी

भूमि सर्वे नं० ७१७/४, कालपट्टी कोयम्बेटूर। (डाकुर्मेट सं० 1543/82)

> भ्रार०पी० पिरुलै, सक्षम प्राधिकारी सहायक श्रायकर श्रायुक्त (निर्रक्षण) श्रर्जन रोज 11, मद्रास

तारी**ख: 7-**12-82

प्ररूप बाई.टी.एन.एस.-----

नायकर विभिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-प (1) के अधीन सचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक अध्यक्त आयुक्त (निरीक्षण) श्चर्जन रेंज II, मद्रास

मद्रास, विनांक 8 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० 12035—यतः मुझे, ग्रार० पी० पिल्लै, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पर्भात 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-म के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- रु. से अधिक है

भीर जिसकी मं० 73 पोभुरानगम रोड बेस्ट भ्रार० एस० पुरम है जो कोयम्बेट्र में स्थित है (श्रौर इससे उपायद्ध श्रनुसूच में श्रौर पूर्ण रूप से वणित है), रजिस्ट्री कर्ता श्रीधकारी के कार्यालय कोयम्बेट्र (डाकुमेंट सं० 1820/82) में भारतीय रजिस्ट्री करण श्रिधनियम, 1908 (1908 का 16) के भ्रधीन, तारीख भर्मेल 1982

को पूर्वोक्त संपत्ति के उचित बाजार मृत्य से कम के इच्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मृक्षे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त संपत्ति का उचित बाजार मृत्य, उसके दश्यमान प्रतिफल से, ऐसे दश्यमान प्रतिफल का बन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अन्तरक (अंतरकों) और अंतरिती (अंतरितियों) के बीच ऐसे अंतरण के लिए तय पाया गया प्रति-फल निम्नलिखित उद्वेष्य से उक्त अंतरण निक्ति में वास्तिक रूप से कथित नहीं किया गया है:——

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्व में कभी करने या उक्कसे क्यने में सुविधा के निष्ण और/मा
- (क) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों की, जिन्हों भारतीय आय-कर अधिनियम 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती व्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था छिषाने में स्विधा के लिए;

1 श्री नवयव राव

(भ्रन्तरक)

2 श्री वी० एस० पठमनाबन।

(ग्रन्सरिती)

की मह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करना

उन्त सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी भाषीप:---

- (क) इस सूचना के राजपत में प्रकाशन की तारीब से 45 विन की प्रविध या तत्मम्बस्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की प्रविध , जो भी प्रविध बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति धारा;
- (ख) इस पूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारी के में दिन-45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में दिन-बद्ध किसी अस्य व्यक्ति द्वारा प्रघोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकेंगे।

स्पष्टीकरण :--इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो सकत श्रिष्टिं नियम के श्रष्टयाय 20-क में परिभाषित हैं, बही अर्थ होगा जो सस अध्याय में विया गया : ।

अनुसूची

भूमि श्रीर निर्माण -73, वेस्ट पोन्नुरनगम रोड, श्रार० एस० पुरम कोयम्बेटूर। (डाकमट सं० 1820/82)

न्नार०पी०पिल्लें महायक ग्रायकर भ्रायुक्त (निरंक्षण) सक्षम श्रधिकारो ग्रजेंन रेंज II, मद्रास

नारीख : 8-12-82

प्रकार महारे, जी. एस. एस. - - - ----

नावसर निधानयन, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-न (1) के नभीन सूचना

भारत सरकार

कार्यासय, सहायक जायकर जायुक्त (निरीक्षण) अर्जन रेंज-II, मद्रास

मद्रास, दिनांकः 7 दिसम्बर 1982

ं कि ति वैशे ं सं ० 12034— यतः मुझे, आर० पी ० पिरुले आयकर अभिनियमं, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्तः अधिनियम' कहा गया है), की भार 269-च के अधीन समा प्राधिकारी को, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/-रु. से अधिक है

श्रीर जिसकी सं० 28/35, हैं, जो पोश्चरनगम र्ट्रट देश्ट श्रार० एस० पुरम, कोधम्बेट्र में स्थित हैं (श्रीच इससे उपावझ अनुसूची में श्रीर पूर्ण रूप से वर्णित हैं), रिजस्ट्रीकर्ता श्रीधकारी के कार्यालय कोधम्बेट्र (डाकुमेंट सं० 1822/82) में भार्त् य रिजस्ट्रीकरण श्रीधिनियम, 1908 (1908 वर 16) के श्रीचीन सासीख का 982 श्रील

को पूर्वा कत् संपत्ति के उपित बाजर मृत्य से कम के द्रियमान प्रतिफल को लिए अन्तरित की गई है और मृभ्ने यह निष्वास करने का कारण है कि यथापूर्वेक्त संपत्ति का उपित बाजार मृत्य, उसके द्रियमान प्रतिफल से एसे द्रियमान प्रतिफल का पन्त्रह प्रतिशत अभिके है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितियों) में बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नीलीबत उत्बेष्य से उक्त अन्तरण निम्ति में वास्तरिक रूप से किया गया है:----

- (क) जन्तरण ते हुन्दं चिन्ती जान की बाचता, उन्तर जीभीनयन के शभीन नार बोने के जन्तरक के बायित्व में कभी करने वा उससे बचने में तुनिभा के लिए जीर/या
- (व) एती किसी आय या किसी धन वा अन्य आस्तियों का, जिन्हें भारतीय आय-कर अधिनियम, 1922 -(1922 का 11) वा उक्त अधिनियम, वा अनकर अधिनियम, वा अनकर अधिनियम, वा अनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोज-नार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था मां किया जाना चाहिए था जिपाने में सुविधा के लिए;

1 श्री कृष्णामूर्ती।

(अन्तरक)

2 श्रो मुरेश चन्द्र बाफना।

(भ्रन्सरिती)

को यह स्थाना आरी करके पूर्वोक्त संपत्ति के अर्थन के लिए कार्यग्रहियां करता हूं।

उक्त सम्मत्ति के वर्षन के संबंध में कोई भी वाक्षेप :---

- (क) इस सूचनाः के अक्षपत्रः में अकाशनः की नकरीत से 4% दिक करे अविभ या तरसम्बद्धी व्यक्तियों पद्र सूचना की ताजील से 30 किन की जयिक को भी जनिक को सी समाप्तः हमेरी हो ; के भीतर प्योक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (क) इस स्कृता के राजपत्र में प्रकाशन की तारींच क से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्परित में हित-वद्भ किसी जन्म : ज्यक्ति द्वारा अभोज्ञस्ताक्षरी के पास लिकित में किए का सकेंगे।

स्वक्षीकरण ---इसमें प्रयुक्त कन्यों और प्रवों का, जो उक्त जिथितियम, के जिथ्याय 20-क में परिभाषित ही, नहीं जर्ब होगा, जो उस जभ्याम में विका गया ही।

अनुसूची

् भूमि श्रीर निर्माण—28/35, वेस्ट पोक्षुरंगम रोड; कोयम्बेट्र। = 25 (डाक्मेंट सं० 1822/82)

श्रार०पी०**पिल्लै** सक्षम श्राधकारो सहायक श्रायकर श्रायुक्त (निरीक्षण) श्रजैन रोज-II, मद्रास

जतः जब, उक्त अधिनियमं की धारा 269-गः के जनुतरण में, में, उक्त जीधीनयमं की धारा 269-च की उपधारा (1) के जधीन निकासिसित व्यक्तियां, अधित् :---

तारो**ख**: 7-12-82

मोहरः

प्रकार कार्य : ठी , एवं , एवं . -----

269-घ (1) के अभीन सूचना भारत सरकार

आयकर अभिनिमम, 1961 (1961 का 43) की भारा

कार्यालय, सहायक जायकर जायक '(गिरीक्षण)

मर्जन रेज-11, मदास

मद्रास, दिनाक 7 दिसम्बर 1982

निर्वेश स० 13020--यतः मझे, श्रार० पो० पिल्लै, कायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया हैं), की भारा 269-व के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उनितः बाजार मल्य 25,000/- एउ से विधिक हैं। ग्रौर जिसकी स० सर्वे नठ 99/54, 64, 98/140, 240, 1 है, जो अरखनकोर्ट्रे में स्थित है (और इससे उपायद अनुसूची मे और पूर्ण रूप से वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्ता ग्रधिकारी के कार्यासय, तुबनायखनापालयम (डाक्मेट स० 206/82) में भारताय रजिस्ट्राकरण ग्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के प्रधीन तारीख प्रप्रैल 1982 को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित काजार मृत्य से कम के दश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मृत्य, उसके दश्यमान प्रतिपाल सं, एसे दश्यमान प्रतिपाल का पंष्रह प्रतिशत से अधिक है और अंतरक (अंतरकाँ) और अंतरिती (अन्तरितियों) के बीच एंसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देव हेमों से उक्त अन्तरण लिखित मे बास्तविक रूप से किथत नहीं किया गया है ---

- (क) अन्तरण से हुई किसी बाय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे वचने में स्विधा के लिए; और/या १ "
- (ख) एसी किसी आय या किसी धन या बन्य जास्तियों को, जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अंतरिसी स्वारा प्रकट नहीं किया गया था या निया जानी आहिए था जिया सिमा के लिए,

अतः अस, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण में, मैं, उक्त अधिनियम की धारा 269-म की उपधारा (1) के अधीन, निम्नसिकित व्यक्तियों, अर्थीत् —

1 भी पी० लक्ष्मी और कस्वै ग्रम्माल।

(धन्तरक)

2 श्री के० वी० नल्लस्वामी।

(अन्तरिती)

को यह सूचना जारी करके पूर्वीक्स सम्पत्ति के अर्जन के निए कार्यवाहियां करता हु

उक्त सम्पत्ति के अर्जन के सब्ध में कोई भी आक्षेप --

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 विन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 विभ की अविधि; जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वित व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा,
- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारी से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हित- बद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकींगे।

स्पष्टीकरण: -- इसमे प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्तं अधिनयम के अध्याय 20-क में परिभाषित है, वही अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

वनुसूची

भूमि---सर्वे नं 99/5464; 98/1 पी ; 2 पी, 1 भ्ररखनकोट्टै।

(डाक्समेंट सं० 206/82)

भ्रार०पो०पिल्लै संक्षम प्राधिकारी सहायक आयकार बायूक्त (निरक्षिण) - श्रर्जन- रेंजI-II, मद्रास

तारीब: 7-12-1982

प्ररूप आई.टी.एन.एस. -----

ा श्री पी० के० जगन्नातन। (भन्तरक)

2 मैसर्स वि० लक्ष्मी मिलस कम्पनी।

(ग्रन्तरिती)

आयुकर अभिनियम, 1961 (1961 का 43) की) धारा 269-घ (1) के अधीन स्चना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) ग्रर्जन रेंज-II, मद्रास

मद्रास, दिनांक 7 दिसम्बर 1982

निर्वेश सं 12046--यतः मझे, ग्रार० पी० पिल्लै, नायकर अभिनियम, 1961 (1961 का 43) जिसे इसमें इसके पत्रचात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-ब के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- रु. से अधिक ह

भौर जिसकी सं० सर्वे नं० 482/1, 2, 3, 4, 488/2, 3, 4 है जो के तरीमनगलम में स्थित है (श्रीर इससे उपाद्यत अनुसूची मे श्रीर पूर्ण रूप से वर्णित है), रजिस्द्रीकर्ता श्रधिकारी के कार्यालय बवानी (डाकुमेंट सं० 759/82) में भारतीय रजिस्ट्राकरण भ्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के ग्रधान, तारीख अप्रैल 1982

को पूर्वीक्त सम्पत्ति के उभित बाजार मुल्य से कम के दश्यमान प्रतिफल के लिए अंतरित की गई है बार मुक्ते यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्विक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मृल्य, उसके रूपमान प्रतिफल से, एसे रूपमान प्रतिफल का पन्द्राह प्रतिशत से अधिक हैं और अंतरक (अंतरकों) और अंत-रिती (अंतरितियाँ) के बीच एसे अंतरण के लिए तय पागा गया प्रतिकाल निम्नलिखित उद्योदय से सक्त अंतुरण लिखित में बास्तविक रूप से कथित नहीं किया गया है:---

- (क) अन्तरण से हुई किसी भाय की बाबत, उक्त अभिनियम को अभीन कर दोनेको अप्तारक को वायित्व में कभी करने या उससे यचने में सुविधा के लिए; और/या
- (स) ए`से किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को जिन्हों भारतीय अधकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या अन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया भावा किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा के लिए।

अत: सब जक्त अधिनियम की भारा 269-ग के अनुसरण कों, कों, खबल कांधिनियम की भारा 269-भ की उपधारा (1) कॅ अधीन निस्तिसिति व्यक्तियों, अर्थात् .--

को यह सूचना भारी करके पूर्वोक्त सम्पृत्ति के अर्थन के लिए कार्यवाहियां घुरू करता हुं।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी वाक्षेप :--

- (क) इस सूचना को राज्यात्र में प्रकाशन की तारीय सं 4.5 दिन की अवधिया तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अवधि, जो भी अविध बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पर्वोक्त व्यक्तिमों में से किसी व्यक्ति दवारा;
- (स) इस सुचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 विन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबब्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी वे पास लिखित में किए जासकों गे।

स्पव्यक्तिरण: --इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम के अध्याय 20-क में परिभाषित है, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया ग्या 🗗 ।

अनुस्ची

भूमि-सर्वे नं० 482/1, 2, 3, 4, 488/2, 3, 4 केसरी-मनगलम बवानी।

> भार० पी० पिल्लै सक्षम प्राधिकारी सहायक आयकर भ्रायुक्त (निरीक्षण,) प्रजीन रेज-II, मद्रास

तारीख: 7-12-1982

मोहर 👙

श्रारूप आई.टी.एन.एस.-----

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-थ (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण)

श्चर्णन रेंज II, मद्रास मद्रास, दिनाक 7 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० 9750—यत मुझे श्राप्ट पी० पिल्ले आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया हैं), की धार 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करन का कारण है कि स्थावर संपित्त, जिसका उचित बाजार मृत्य 25,000/- रूट. से अधिक है

श्रीर जिसकी सं टी एस 1683/1 ए, हैं, जो मन्जाकुणम कललूर में स्थित है (श्रीर इतमें उपावद्ध श्रनुसूर्वा में श्रीर पुणं रूप से वर्णित है), रिजर्स्ट्रावर्ता श्रधिकारी के कार्यालय श्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के श्रधीन, तार्र ख श्रील 1982

को पूर्वोक्त संपरित का उचित बाजार मूल्य से कम के दश्यमान प्रितिफल के लिए अन्तरित की गई हैं और मुक्ते यह विक्वाम करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त संपरित का उचित बाजार मूल्य, उसके दश्यमान प्रितिफल के पन्द्रह प्रतिशत से अधिक हैं और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरित (अन्तरितियों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देष्य से उस्त अन्तरण कि लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देष्य से उस्त अन्तरण कि लिख से किया गया हैं:---

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत , उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के बायित्व में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के सिए; और/या
- (का) ऐसी किसी आम या किसी धन या अन्य आस्तियों को जिन्हें भारतीय आयक,र अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती ब्वारा प्रकट नहीं किया गण था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में मुनिधा के लिए।

अतः अब, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के, अनुसरण में, में, उक्त अधिनियम की धारा 269-थ की उपधारा (1) के जभीन, निस्तिसित व्यक्तियों, अर्थात् --- 1 श्रीमतः चित्रा श्रम्माल।

(अन्सरक)

2 श्री बी० एस० जगदीशन।

(अन्तरिती)

को यह सूचना जारी करके पूर्वीक्त संपत्ति के अर्जन के लिए कार्यशाहिया करता हु।

उनत संपरित के अर्जन के संबंध में कोई आक्रोप :--

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अविधि या तत्सबंधी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, को भीतर पूर्वीक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति वृवारा;
- (स) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर संपत्ति में हिसबद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिसित में किए जा सकीं।

स्पष्टीकरणः--इसमें प्रयूक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित ह⁵, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

जनसंची

भूमि , निर्माण मेशिनरी --- टे॰ एस॰ सं॰ 1683/1 रा॰, मन्जाकुष्पम कललूर। (डाकुमेंट सं॰ 391/82)

> भार०पी० पिल्लै सक्षम प्राधिकारी सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) ग्रर्जन रेंज 2, मद्राम

तारीच: 7-12-1982

अस्तु बार्ड ् टर्ड, एन, एस..- - - ----

जायकर निधितियस, 1961 (1961 का 43) की भारा 269-भ (1) के अधीन सुभना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) अर्जन रेंज-11, मद्रास

मद्रास, दिनांक 7 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० 12055—यतः मुझे, श्रार० पी० पिरुलै, जायकर अभिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके प्रभात 'उक्त अभिनियम' कहा गया है), की भारा 269-स के अभीन सक्षम प्राधिकारी की यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर संस्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/-रु. से अधिक है

श्रौर जिसकी सं० 88बी०, है, जो गांधीपुरम 11 स्ट्रीट कोयम्बेट्रर में स्थित है (ग्रौर इसमें उपावद्ध श्रनुसूची में श्रौर पुर्ण रूप से विणित है), रिजस्ट्रीकर्ता श्रिधकारी के कार्यालय गांधीपुरम (डाकुमेंट सं० 1622/82) में भारतीय रिजस्ट्रीकरण श्रिधिनियम, 1908 (1908 का 16) के श्रधीन, तारीख श्रप्रैल 1982

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य सं कम के ध्रयमान प्रतिफल् के लिए अन्तरित की गई है और मुभ्ने यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दश्यमान प्रतिफल सं, एसे ध्रयमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरित (अन्तरितीयों) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल निम्नलिकत उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखित में वास्तविक रूप से किशत नहीं किया ग्या है:—

- (क) अन्तरण से हुई किसी जाय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर देने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे वचने में सुविधा के तिए; और/या
- (स) एसे किसी जाय या किसी धन या जन्म आस्तियों को जिन्हों भारतीय आयुक्तर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर जिभिनियम, 1957 (1957 का 27) की प्रयोजनार्थ अन्तरिसी व्वाय् प्रकट महीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, खिपाने में स्थिभा के लिए।

1. श्री मार० गोपालकृष्ण।

(बनाइक)

श्री सोमसुन्दरम श्रौर मुरुभ्रप्पन।

(मन्तरिती)

को यह सूचना जारी करके पूर्वीचत् सम्पृत्ति के बर्जन के जिल् कार्यवाहियों शुरू करता हूं।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी जाक्षेप :---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की सारीक से 45 दिने की अविधि यां तर्सक्षेत्रिकी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि; जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, को भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति ब्वारा;
- (ब) इस सूचना के राजपुत्र में प्रकाशन की तारीच से 45 दिन के शीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबब्ध किसी अन्य व्यक्ति ब्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास सिचित में किए जा सकेंगे।

स्पक्कीकरण: -- इसमे प्रयुक्त कव्यों जीर पर्यों का, जो उक्त अधिनियम के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में विवा गया हूँ।

जन्त्वी

भूमि भौर निर्माण—88बी०, गांधीपुरम स्ट्रीट कोयम्बेटूर। (डाक्मेंट सं० 1622/82)

> भारः पी० पिल्लै सक्षम प्राधिकारी सहामक जायकार आयुक्त (निरक्षिण) प्रजीन रेंज II, मद्रास

अत: अब उच्चत अधिभिन्नक की भाषा 26**9**-ग के अभूकरण

मों, मों, उक्त ऑविनियम की भारा 269-में की 'उन्भारी'(1)

के अभीन निम्नलिकित कवित्रकों, कुर्मुत् :---

तारीच: 7-12-1982

प्ररूप बाह[°].टी.एन.एस. ------

जायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) को भारा 269-**ण** (1) **के अभी**न सू**च**ना

भारत तरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) श्रर्जन र्रेज-II, मद्रास

मद्रास, दिनांक 7 दिसम्बर 1982

निदेश सं० 9749—यत. मुझे, श्रार० पी० पिल्ले आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया हैं), की धारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विद्वास करने का कारण है कि स्थावर संपत्त, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- रु. से अधिक हैं

श्रौर जिसकी सं० टी० एस० 1683/1 एन० है, जो श्रनगालम्मन कोयिल स्ट्रीट, मन्जाकुर्यम, कललूर में स्थित है (ग्रौर इससे उपावद श्रनुसूची में ग्रौर पुर्ण रूप से वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्ता प्रधिकारी के कार्यालय कठलूर में (डाकुमेंट सं० 397/82) में भारतीय रजिस्ट्रीकरण श्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के श्रधीन, तारीख श्रौल 1982

को पूर्वोक्त संपित्त के उचित बाजार मूल्य से कम के इश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुक्ते यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त संपित्त का उचित बाजार मूल्य, उसके इश्यमान प्रतिफल से एसे इश्यमान प्रतिफल के पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अनतरक (अन्तरका) और अनतरिती (अन्तरितियाँ) के बीक हो ऐसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण जिल्ला निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण जिल्ला निम्नलिखत उद्देश्य से उक्त अन्तरण जिल्ला में वास्तिक रूप से कथित नहीं किया गया है :——

- (क) अन्तरण से हुई किसी आंग की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्व में कभी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए; और/या
- (स) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य अस्तियों को जिन्हों भाररतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में स्विधा के लिए।

अत: अब, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के, अनुसरण मे, मैं, उक्त अधिनियम की धारा 269-घ की उपधारा (1) के अधीन, निम्नलिखित व्यक्तियों, अर्थात् :--- 1. श्री पी० राजलक्ष्मी श्रम्मास।

(भ्रन्तरक)

2. श्री एस० लोकनातन चेट्टियार।

(भ्रन्तरिनी)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त संपित्त के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हू।

उक्त संपत्ति के अर्जन के संबंध में कोई भी आक्षेप :--

- (क) इस सूचना के राजपत्र मं प्रकाशन की तारीर्ख से 45 दिन की अवधि या तत्संबंधी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अवधि, जो भी अवधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वीक्स व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (ख) इस सूचना के राजपंत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर संपतित में हितबख्ध कि.सी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकारी।

स्पच्छीकरण:--इसमें प्रयुक्त शब्दों और प्रदों का, जो उक्त अधिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित ही, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया ही।

अनुसूची

भूमि निर्माण, भेशिनरीस, टी० एस० सं० 1683/1 एन०, ग्रनगालम्मन कोयिल स्ट्रीट भन्ज।क्षुप्पम कललूर । (डाक्मेंट सं० 397/82)

> म्रार०पी'० पिरूले सक्षम प्राधिकारी सहायक म्रायकर ्त्रायुक्त (निरीक्षण) म्रजैन रेंज-II, मद्रास

तारीख: 7-12-1982

मोहर: إ

प्रकृप कार्ड. टी. एन. एस.-----

भायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-ण (1) के अधीन सुचना

भारत सरकार

कार्यालय, सङ्घायक जायकार आयुक्त (जिरीक्षण) श्रर्जन रेंज-2, मद्रास

मद्रास, दिनांक 9 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० 17173— यत. मृझे श्रार० धी० पिरूलें आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात 'उकत अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-ख के अधीन सक्षम श्राधिकारी को यह निश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्मित्त, जिसका उचित बाजार मृत्य 25,000/- रु. से अधिक है

ग्रीर जिसकी सं० 40, ग्रारमस रोड है, जो मद्रास-10 में स्थित है (ग्रीर (इससे उपाबद्ध श्रनुसूची मे ग्रीर पूर्ण रूप से वर्णित) है), रजिस्ट्रीकर्ता श्रधिकारी के कार्यालय पुरसवायम (डाक्सेट स० 625/82) मे भारतीय रजिस्ट्रीकरण श्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के ग्रधीन, तारीख श्रप्रैल 1982

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के इश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मृझे यह निश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त संपत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दश्यमान प्रतिफल से, एसे दश्यमान प्रतिफल का पन्त्रह प्रतिशत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अंतरिती (अन्तरियों) के बीच एमे जन्तरण के लिए तब पावा गया प्रतिफल, निश्नितिश्वत उद्विष्य से उक्त अन्तरण शिक्तित में बास्तिक रूप से किथत नहीं किया गया है ——

- (क) जन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दानियम में कभी करने या उत्तसे अधने में सुविधा के सिए; और/या
- (क) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को, जिन्हों भारतीय आय-कर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती व्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, किया स्विचा के लिए;

 श्री सी० चेन्नकेसवलू चेट्टी, सी० बागयलकशमी। (श्रन्तरक)

2 श्रीमती हीरा देवी चृरारिया।

(श्रन्तरिती)

क्ये यह शृष्यना चारी करके पृथाँक्त कम्पत्ति के अर्थन के हिसए कार्यवाहियां करता हुं।

उक्त स्मारित के वर्जन के सम्बन्ध में कोई भी वाक्षेप:--

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारी से 45 दिन की अवधि या तत्सम्बन्धी ध्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अवधि, जो भी बवधि बाद में समाप्त होती हो, के भीत्र प्रविकत व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा.
- (ण) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीच से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितमक्भ किसी बन्य व्यक्ति व्वारा अभोहस्ताक्षरी के पास सिविस में किए जा सकींगे।

स्पन्दीकरणः ---इसमें प्रवृक्त सन्धी और पदों का, जो उक्त अधिनियम के अध्याय 20-क में परिभाषित है, बड़ी अर्थ होगा को उस अध्याय में दिवा न्वा है।

नमुज्ञी

भूमि और निर्माण --40 आरमस रोड, मद्रास-10। (डाकुमेंट सं० 625/82)

ग्रार० पी० पिल्लै सक्षम प्राधिकारी सहायक ग्रायकर ग्रायुक्त (निरीक्षण) श्रर्जन रेज-2, मद्रास

जत जब, उक्त जिधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण मो, मी, राक्त जिधिनियम की भारा 269-च की उपधारा (1) के जभीन, निम्निलिसित व्यक्तियों, अर्थात् '⊶—

तारीख 9-12-1982

प्रकृप बाही, टी. एन. एस.------

भायकर मिनियम, 1961 (1961 का 43) की भारा 269-म (1) के सुधीन सुचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयक्त (निरक्षिण)

श्रर्जन रेंज-2, मद्रास

मद्रास, दिनांक 9 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० 17136—यतः मुझे, श्रार० पी० पिल्लै

भायकर मिधनियम, 1961 (1961 का 43) जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है, की धारा 269 का के अधीन सक्षम प्राधिकारी को, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मृल्य 25,000/- रा. से मिधक है

ग्रीर जिसकी सं० टी० एस० 6637, है, जो नीलकनट मेता स्ट्रीट, मद्रास-17 में स्थित है (ग्रीर इससे उपाबढ़ ग्रनुसूची में ग्रीर पूर्ण रुप से वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्ता ग्रधिकारी के कार्यालय टी० नगर (डाकुमेंट सं० 827/82) में भारतीय रजिस्ट्रीकरण ग्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के ग्रधीन, तारीख ग्रग्रैल 1982

को पूर्णोक्त संपरित के उचित बाजार मृत्य से कम के दश्यमान प्रतिकाल के लिए अन्तरित की गई है और मुक्ते यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित वाजार मृत्य उसके दश्यमान प्रतिफल से, एसे दश्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितियों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखित में बास्तविक रूप से किथा गया है:——

- (क) जन्तरण से हुई किसी जाय की बाबस, उक्स अधिनियम के अधीन कर दोने में अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में सूविधा के लिए; और/या
- (का) एसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को, जिन्हों भारतीय आय-कर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती व्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था छिपाने में स्विधा के लिए:

अतः अव, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण में, मैं. उक्त अधिनियम की धारा 260-श की उपधारा (1) के अधीन, निम्निनिमत व्यक्तियों, अर्थातः :——
20—416GI/82

1. श्रीमती एन श्रार० जानकी श्रम्माल।

(ग्रन्तरक)

2. श्री एम० एस० एस० रामन।

(भ्रन्तरिती)

को यह सूचना जारी करके पूर्वांक्त संपरित के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हूं।

उक्त सम्पत्ति के कर्जन के संबंध में कोई भी बाक्षेप :---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 4.5 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पृथाँक्त व्यक्तियों में ये किसी व्यक्ति द्वारा;
- (ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिसित में किए जा सकोंगे।

स्वाचीकरण — इसमोप्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं, वहीं वृथि होगा, जो उस अध्याय में विया गया है।

अनुसुची

भूमि श्रौर निर्माण—टी० एस० सं० 6637, नीलकनट मेता स्ट्रीट , मद्रास 17।

(डाकुमेंट सं \circ 827/82)

ग्रार० पी० पिल्लै सक्षम प्राधिकारी सहायक ग्रायकर ग्रायुक्त (निरीक्षण) ग्रर्जन रेंज-2, मद्रास

तारीख: 9-12-1982

प्ररूप. आई. टी. एन. एस. -----

आयकर अधिनियम,, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-घ (1) के अभीन सचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयक्त (निरीक्षण)

अर्जन रंज-2, मद्रास

पतास, दिनाक । दिसम्बर 1982

निर्देश गं० 17160 ---याः म्झे प्यार० पी० पिल्लै

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके प्रचाल 'उक्त अधिनियम' कहा गया हुँ), की धारा 269-स के अधीन सक्षम अधिकारी को यह विश्वास करने का कारण हुँ कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- रु. से अधिक हुँ

श्रीर जिसकी सं० फ्लंट सं० 5, हे, जो 31. मिसम रोड सी० ए० टी० नगर, महास-35 से स्थित हैं (श्रीर इससे उपाबद्ध श्रमुयूची मे श्रार पूर्ण रूप में विणित हैं), रजिस्ट्रीकर्ता श्रिधिकारी के कार्यालय, सद्वास सीत (डाक्सेट सं० 1344/82) में भारतीय रजिस्ट्रीकरण श्रिधिनियम 1908 (1908 का 16) के ग्रधीन, नारीख ग्रग्रैल 1982

को पूर्वेदित सम्बन्धित के उचित बाजार मल्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मूक्षे यह दिश्दास कारने का कारण है कि एथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से, एसे दृश्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अंतरक (अंतरकों) और अंतरिती (अंतरितियों) के बीच एसे अंतरण के लिए तय पाया प्रतिफल निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अंतरण लिखित मे वास्तविक रूप में वाथित नहीं किया गया है :---

- (क) अंतरण में हुई किसी आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्व में कामी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए; और/या
- (ख) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों का, जिन्हों भारतीय आय-कर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तिस्ती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सविधा के लिए;

अतः जब उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण में, में, उक्त अधिनियम की धारा 269-ध की उपधारा (1) के अधीन, निम्मलिखित व्यक्तियो, अर्थात :---

1. श्रीमती भ्रार० सुशीला।

(ग्रन्तरक)

2. श्री के० भार० उपादयाया।

(श्रन्तरिती)

को यह सूचना जारी करके पूर्वीक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां शुरू करता हुं।

उक्त सम्पत्ति को अर्जन को संबंध में कोई भी आक्षेप :---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन की अविधि या तत्संबंधी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वित व्यक्तियों में में किसी व्यक्ति द्वारा;
- (स) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 विन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबब्ध किसी अन्य व्यक्ति ब्वागः; अधोहस्ताक्षरी के पास लिखिश में किए जा सकेंगे।

स्पष्टीकरण: --इसमें प्रयुक्त शब्दों और पवों का, जो उक्त अधिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाष्ति है, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में विया गया है।

अन्स्ची

फ्लेंट सं० 5, 31, I मेथन शेष्ठ सी० आई० टी० नगर, मद्रास-35।

(डाक्मेट मं० 1344/82)

आर० पी० पिल्लै सक्षम प्राधिकारी सहायक स्रायकर स्रायुक्त (निरीक्षण) स्रजैत रेंज-2, मद्रास

तारीख: 9-12-82 मोहर:

प्रकप बाही. टी. एन्., एस.

आयकर अधिनियम, 1961 (1,961 का 43) की धारा 269-घ (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यासय, सहायक भायकर आयक्त (निरीक्षण)

श्रर्जन रेज-2, महास

मद्रास, दिनाक 3 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० 12017-यत. मुझे भ्रार० पी० पिल्लै

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे हरसें इसके परचात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है) की धार 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर संपरित विसका उचित बाजार मृत्य 25,000/- रु. से अधिक है

ग्रीर जिसकी स० सर्वे स० 967/2 ग्रीर 968 हे, जो कालिया-पुरम में स्थित है (ग्रीर इससे उपाबद्ध ग्रीर पूर्ण व्य से वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्ता ग्रीधकारों के कार्यालय. यानमलें (डाकुमेंट सं० 447/82) में भारतीय रजिस्ट्रीकरण ग्रीधिनियम, 1908 (1908 का 16) के ग्रीधीन, तारीख ग्राग्रैल 1982 को पूर्वोक्त संपत्ति के उचित बाजार मूस्य से कम के दृश्यमान

को पूर्वोक्त संपत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गर्श है और मुक्ते यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके ख्रयमान प्रतिफल से, एसे ख्रयमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अंतरक (अंतरको) और अंतरिती (अंतरितियों) के बीच एसे अंतरण के लिए तय पाया गया प्रति-फल निम्निलिखत उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखित में बास्त-विक रूप से किथत नहीं किया मया है:--

- (क) अन्तरण से हुई किसी आम काँ बाबत उकत आँभ-नियम को अधीन कर दोने के अन्तरक को बाधित्व में कमी शरने या उससे ब्चने में सूविधा के लिये; और√श
- (क) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को, जिन्हों भारतीय आयंकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धनकार अधिनियम, या धनकार अधिनियम, 1957 (19 7 का 27) ह प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में स्विधा के सिए:

अतः अब, उक्त अधिनियमं की धारा 269-ग के अनुसरण में, में, उक्त अधिनियम् की धारा 269-घ की उपधारा (1) के अधीन, निम्निलिखित व्यक्तियों, अर्थात् —— 1. श्री श्रार० दौरेस्वामी ग्रीर ग्रदरस।

(अन्तरक)

__ _ ======

2 श्री नाज्जम्मान श्रीर ग्रदरस ।

(श्रन्तरिती)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सपित के अर्जन के लिए कार्यवाहिया करता हूं।

उक्त सम्परित के अर्जन के सम्बन्ध में काई भी आक्षेप :---

- (क) इस सृष्या के राजपत्र भी प्रकाशन की तारीख स 45 दिन को अवधि या तरस्ताची व्यक्तियों पर मूचना की तामील से 30 दिन की अवधि, जो भी अधिध बाद में समाप्त होते. हों, के भीतर प्रवोक्त व्यक्तियों में किसी व्यक्ति द्वारा ;
- (स) इस स्मना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन के भीतर उनत स्थावर सम्पत्ति में हित- बद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा, अधांहस्ताक्षरी के पास लिसित में किए जा सकेंगे।

स्पष्टीकरणः---इसमे प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम, के अध्याय 20-न्द्र में परिभाणित हैं, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया हैं।

अनुसूची

भूमि—सर्थे 967/2 ग्रौर 968 कालियापुरम। (डाकुमेंट सं० 447/82)

> स्रार० पी० पित्लैं सक्षम प्राधिकारी सहायक भ्रायकर श्रायुक्त (निरीक्षण) स्रजैन रेंज-2, मद्रास

नारील : 8-12-82 मोहर: प्रकृष् भार्षः दीः एत् , शुस्र ,-----

(1) श्री पी० ग्रालफेड

(ग्रन्तरक)

भायकार अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की भारा 269-ष् (1) के अभीन सुचना

(2) श्रीधरन् कम्पनी

(ग्रन्तरिती)

मारत सरकार

कार्यालय सहायक ग्रायकर श्रायुक्त (निरीक्षण)

म्रर्जन रेंज-II, मद्रास

मद्रास, दिनांक 7 दिसम्बर- 1982

निर्वेश सं० 17147---यतः मुझे, स्नार० पी० पिल्ल,

कायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है'), की भारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को, यह निवसास करने का कारण हैं कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000 राष्ट्र से अधिक हैं

ग्रीर जिसकी सं० 146, है तथा जो प्रीमस रोज मद्रास-6 में स्थित है (ग्रीर इसस उपाबद ग्रनुसूची में पूर्ण रूप से धर्णित है), रजिस्ट्राकर्त्ता ग्रधिकारी के कार्यालय, टी० नगर (डाकुमेंट सं० 513/82) में भारतीय रजिस्ट्रीकरण ग्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के ग्रधीन, ग्रप्रैल, 1982।

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के स्रयमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मूम्में यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त संपत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके स्रयमान प्रतिफल ते, एसे स्रयमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अंतरक (अंतरकों) और अंतरिती (जन्तरित्यों) के बीच एसे अन्तरण के निए तय पाया गया प्रति-फल निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण निखित में वास्तिक रूप से अधित नहीं किया गया है है—

- (क) जन्तरण से हुन्दें किसी जाय की बाबत, उक्त अधिनियम के जभीन कर दोने के जन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में सुविभा के लिए; और/मा
- (क) ऐसी किसी जाय या किसी भन या अन्य आस्तियों को, जिन्हों भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या भन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अंतरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा के निए;

अतः अव, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण में, में, उक्त अधिनियम की धारा 269-म की उपधारा (1) के अधीन, निम्निलिखित व्यक्तियों, अर्थात्:—

को यह सूचना भारी करको पृत्राँकत सम्पत्ति के अर्जनुको लिए कार्यवाहियां करता हुं।

उक्त संपुरित को अर्जन को संबंध में कोई भी आक्षेप :---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की सारीस से 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वों कर व्यक्तियों में से किसी व्यक्तिय द्वारा;
- (स) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर संपत्ति में हित-बद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधाहेस्ताक्ष्री के पास लिखित में किए जा सकरेंगे।

स्मृष्टिकि एणः — इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं, बही अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया समा हैं।

अनुसूची

भूमि घौर निर्माण-146, प्रीमस् रोड, मद्रास-6 (डाकुमेंट सं० 513/82)

> ग्रार० पी० पिल्ले, सक्षम प्राधिकारी सहायक ज्ञायकर श्रायुक्त (निरीक्षण), ग्रर्जन रेंज-II, मद्रास

दिनांक: 7-12-1982

मोहरः

प्ररूप आहें, टी. एन. एस्.-----

भायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-घ (1) के अधीन स्वना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक ग्रायकर ग्रायुक्त (निरीक्षण)

श्रर्जन रेंज-2, मद्राम

मद्रास, दिनांक 8 दिसम्बर 1982

निर्देश स० 17130—यतः मुझे, आर० पो० पिल्ले, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया हैं), की धारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मृल्य 25,000/- रु. से अधिक हैं और जिसका सं० 20, II मेन रोड गांधीनगर, मद्रास 20 में स्थित है (श्रीर इससे उपावद्ध अनुसूची में पूर्ण रूप से विणत है), रिजस्ट्रीकर्त्ता अधिकारी के कार्यालय, हदापेट (डाकुमेंट सं० 1369/82) में भारतीय रिजर्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन, दिनांक अप्रल

को पूर्वों कत संपरित के उचित बाजार मूल्य से कम के दरयमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुक्ते यह विद्यास करने का कारण है कि यथापूर्वों क्स संपरित का उचित बाजार मूल्य, उसके दरयमान प्रतिफल से एसे दरयमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अंतरिती (अन्तरितियों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रति-फल, निम्नलिखित उद्वेद्य से उक्त अन्तरण लिखित में वास्त-बिक रूप से कथित नहीं किया ग्या है:—

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत उक्त अधि-नियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के शायित्व में कमी करने या उससे अचने में सृविधा के लिये; और/या
- (ल) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों की, जिन्हों भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा के लिए;

अतः अब, उक्त अभिनियम की भारा 269-ग के अनुसरण में, मैं, उक्त अभिनियम की भारा 269-भ की उपधारा (1) के अभीन, निम्नुलिसित व्यक्तियों, अभित्:--- (1) श्री एन० श्रार० मुरेन्द्रा श्रौर एन० एस० जी० प्रसन्ना

(ग्रन्तरक)

(2) श्री डा॰ गायत्रो

(अन्तरिती)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हुं।

उक्त सम्परित के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी गाक्षेप :---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारील से 45 विन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामिल से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वेक्ति व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (स्व) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर संपरित में हित-स्व्य किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिक्षित में किए जा सकेंगे।

स्पष्टीकरणः — इसमें प्रयुक्त शब्दों और पवों का, जो उक्त अधिनियम के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अमसची

भूमि-20, Π मेन रोड गांधीनगर, मद्रास 20 (डाकुमेंट सं० 1369/82)

ग्रार० पी० पिल्ले, सक्षम प्राधिकारी महायक ग्रायकर ग्रायुक्त (निरोक्षण), ग्रर्जन रेंज-2, मन्नास

दिनांक: 8-12-1982

प्ररूप आर्द. टी. एन. एस. -----

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-घ (1) के अधीन सचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयक्त (निरीक्षण) श्रर्जन रेंज-11, मद्रास

मद्रास, दिनांक 8 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० 12022---यतः मुझे, श्रार० पी० पिल्ले, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/-रु. में अधिक ही

श्रौर जिसकी सं० श्रार० एस० सं० 522 श्रौर 533/3 है, तथा जो ऊट्टी में स्थित है (श्रौर इससे उपाबद्ध अनुसूची में श्रौर पूर्ण रूप से वर्णित है), रिजस्ट्रांकर्ता श्रिधकार। के कार्यालय, ऊर्ट्टा (डाकुमेंट स० 242/82) में भारताय रिजस्ट्री-करण श्रिधिनियम, 1908 (1908 का 16) के श्रधीन, दिनांक श्रम्नेल, 1982

को पूर्व क्त संपरित के उचित बाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुभ्ने यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से एसे दृश्यमान प्रतिफल का पन्नह प्रतिशत अधिक है और अन्तर्क (अन्तरकों) और अन्तरित (अन्तरितयों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्वेश्य से उक्त अन्तरण लिखित मूं अस्तिचक रूप से कथित नहीं किया गया:——

- (क्ष) अन्तरण से हुई िकसी जाय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के वायित्व में कमी करने या उससे बचने में सृविधा के लिए; और/या
- (स) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों का, जिन्हों भारतीय आय-कर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोज-नार्थ अन्तिरती व्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था ख्याने में सुविधा के लिए;

अतः अब, उक्त अधिनियम की धारा 269-म के अनुसरण में, मैं, उक्त अधिनियम की धारा 269-म की उपधारा (1) को अधीन, निम्नीलिखित व्यक्तियों, अर्थात् :--- (1) श्री टी० के० राजगीपाल

(ग्रन्तरक)

(2) श्री उसमान श्रली खान और जावट पाशा (श्रन्तरिती)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां शुरु करता हूं।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप :---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीं से 45 दिन की अविध या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविध, जो भी अविध बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (ब) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की धारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्मत्ति में हितबद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकेंगे।

स्पष्टीकरण: -- इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित हौ, वहीं अर्थ होगा, जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनुसूची

भूमि टी॰ एस॰ 522 और 533/3, ऊट्टी (डाकुमेंट सं॰ 242/82) ।

आर० पी० पिल्ले, सक्षम प्राधिकारी सहायक स्नायकर स्नायुक्त (निरीक्षण), श्चर्जन रेंज- , मद्रास

दिनांक: 8-12-1982

प्ररूप जाइं. दी. एम. एस. -----

नायकर निधिनियम, 1961 (1961 का 43) की भारा 269 प (1) के नधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण)

प्रजन रेंज-II, मद्रास

मद्रास, दिनांक 10 विसम्बर 1982

निर्देश सं० 17284—यतः मुझे, ग्रार० पी० पिल्लै, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मृत्य 25,000/-रा. से अधिक है

श्रीर जिसकी सं० 624, है, तथा जो मेन रोड़ मद्रास 6 में स्थित है (श्रीर इससे उपाबद्ध अनुसूची में पूर्ण रूप से वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्त्ता श्रिधकारी के कार्याक्ष्य, मद्राम नार्थ (डाक्मेट सं० 1266/82) में भारतीय रजिस्ट्रीकरण श्रिधनियम, 1908 (1908 का 16) के श्रिधीन श्रप्रैल, 1982

को पूर्वाक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मृत्य से कम के ध्रयमान प्रतिफल के लिए अन्तरित को गई है और मुक्ते यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वाक्त सम्बन्ति का उचित बाजार मृत्य, उसके ब्रथमान प्रतिफल से, ऐसे ध्रथमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरित (अन्तरितयों) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रति-फल, निम्निलिखित उद्देश्य में उक्त बंतरण निचित में वास्तिबक स्म में किथत नहीं किया गया है:--

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्य में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के सिए; और/या
- (क) एसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियाँ को, जिन्हुं भारतीय आय-कर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती व्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में संविधा के लिए;

अतः अव, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण में, मैं, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग की उपधारा (1) के अधीन निम्नलिखित व्यक्तियों, अर्थात् :--

(1) श्री एन० एम० मोहम्मद साहिद

(भ्रन्तरक)

(2) श्रः मोहम्भद रिजनान

(ग्रन्तिंग्तं।)

को यह स्वना जारी करके प्वांक्त सम्पत्ति के अर्थन के लिए कार्यवाहियां करता हुं।

जक्त सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप :---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन की अविधि या तत्मबंधी व्यक्तियों गर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्विक्स व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति बुबारा;
- (स) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हित- बद्ध किसी अन्य व्यक्ति इवारा, अधोहम्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकोंगे।

स्पष्योक्तरणः — इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अभि-निसम के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं, वहीं अर्थ होगा, जो उस अध्याय में विया गया है।

यम्सूचीं

भूमि श्रौर निर्माण (1/6 शेयर) 624, भौड़ रोड़, मद्रास-6 (डाकूमेंट सं० 1266/82)।

> ग्रार० पी० पिरुलै, सक्षम प्राधिकारी सहायक भ्रायकर भ्रायुक्त (निरक्षिण), भ्रजन रेंज-II, मद्रास

दिनांक: 10~12-1982

मोहरः

प्रारूप आई.टी.एन.एस.-----

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-घ (1) के अधीन मृचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) प्रर्जन रेंज-II, मद्रास

मद्रास, दिनांक 8 विसम्बर 1982

निर्देश स० 17141—यनः मुझे, श्रार० पी० पिल्ले, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके परचात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर संपति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- रु. से अधिक है

ग्रौर जिसकी मं० ग्रार० एस० मं० 133 है, तथा जो नागेण्वर ग्रथ्यर रोड मद्रास-34 में स्थित है (ग्रौर इससे उपाबद्ध अनुसूची में ग्रौर पूर्ण रूप से बिणत है), रिजस्ट्रीकर्त्ता ग्रधिकारी के कार्यालय, टी० नगर, मद्रास (डाकुमेंट सं० 596/82) में भारतीय रिजस्ट्रीकरण ग्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के ग्रधीन, विनांक ग्रग्रैंल, 1982।

को पूर्वोक्त संपित्त के उचित बाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मूक्ते यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से, एसे दृश्यमान प्रतिफल के पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितियों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्निलिखत उव्वदेश से उक्त अन्तरण निन्दित में वास्तिक रूप से किथत नहीं किया गया है:--

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उसने अधने में सृविधा के लिए; और/या,
- (स) एसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को जिन्हें भारतीय जायकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) वा उक्त जिधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा के लिए।

अतः अब, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के, अनुमरण में, मैं उक्त अधिनियम की धारा 269-च की उपधारा (1) के अधीन, निम्नीलिखित व्यक्तियों, अर्थात् :---

. एस . ----- (1) श्रीमती ग्रन्नपूर्णी ग्रम्माल

(भ्रन्तरक)

(2) दि चाइल्ड ट्रस्ट मेडिकल रिसर्च फींडेशन सोसाइटी (श्रन्तरिती)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त संपत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हूं।

उक्त संपति के अर्जन के संबंध में कोई भी आक्षेप :----

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अविधिया तत्संबंधी व्यक्तियों पर सूचना की तामिल से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त स्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (स) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 विन के भीतर उक्त स्थावर संपत्ति में हितबब्ध किसी अन्य व्यक्ति ब्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकी।

स्पष्टीकरण: ---इसमें प्रयुक्त शबदों प्रौर पदों का, जो जक्त अधिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं, वही अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया हैं।

ननसर्चीं

भूमि श्रार० एस० सं० 133, नागेश्वर झय्यर रोड, मद्रास∎ 34 (डाकुमेट सं० 596/82)।

> श्रार० पी० पिल्लै, सक्षम प्राधिकारी सहायक ग्रायकर श्रायुक्त (निरीक्षण) ग्रर्जन रेंज-II, मद्रास

दिनांक: 8-12-1982

मोहरः

प्ररूप आहर् . टी . एन . एस . ------

मायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की) धारा 269-ष (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक ग्रायकर ग्रायुक्त निरीक्षण अर्जन रेंज-II, मन्नास

मद्राम, दिनांक 8 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० 12031--यतः मुझे, आर० पी० पिल्लै,

ष्ठायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) जिसे इसके इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर पम्पत्ति, जिसका उचित नाजार मृत्य 25,000/- रह. से अधिक है

और जिसकी सं० कृष्णरायपुरम, कोयमबतूर है तथा जो कोयमबतूर में स्थित है (और इसमे उपाबद्ध अनुसूची में और पूर्ण रूप से वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्त्ता अधिकारी के कार्यालय, कोयमबतूर (डाकुमेट स० 1973/82) मे भारतीय रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन, दिनांक अप्रैल, 1982

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उजित बाजार मृत्य से कम के दश्यमान प्रतिफल के लिए अंतरित की गई है और मृक्षे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उजित बाजार मृत्य, उसके दश्यमान प्रतिफल से, एसे दश्यमान प्रतिफल का पन्तह प्रतिषत से अधिक है और अंतरक (अंतरकों) और अंतरिती (अंतरितियों) के बीच एसे अंतरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अंतरण लिखित में वास्तिवक रूप से कथित नहीं किया गया है :---

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के वायित्व में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए; और/या
- (ख) ऐसे किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को जिन्हों भारतीय आयुक्तर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धम-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में स्विधा के लिए;

अत: अब उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अन्सरण में, मैं, उक्त अधिनियम की धारा 269-व की उपधारा (1) के अधीन निम्नलिखित व्यक्तियों, अधीत्:—— 21—416GI/82 (1) श्री जी० गोविन्दास्वामी नायडू

(अन्तरक)

(2) श्री एस० एन० आर० मंस चेरिटबल द्रस्ट (अन्तरिती)

को यह सूचना जारी करके पूर्वीक्त सम्पत्ति के वृर्जन के किए कार्यवाहियां कारता हुं।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप :--

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविध, को भी जबिध बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वीक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीक से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबक्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास सिक्ति में किए जा सकोंगे।

स्वक्रीकरण: --इसमें प्रयुक्त शब्दों और पद्यों का, जो उक्त अधिन्यम के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में विया गया है।

अनुसूची

भूमि कृष्णरायपुरम, कोयबतूर (डाकुमेंट सं० 1973/82)।

आर० पी० पिल्लै, सक्षम प्राधिकारी सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण), अर्जन रेंज-2, मद्रास

विनांक: 8-12-1982

मोहरु 🗯

प्रका आई० टो॰ एन॰ एस०----

बायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की भारा 269-**ण** (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक बायकर बाय्क्त (निरीक्षण)

अर्जन रेज-2, मद्रास

मद्रास 2, दिनाक 7 दिसम्बर 1982

निर्देश स० 12073—यत मुझे, आर० पी० पिल्लै, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया हैं), की धारा 269- स के अधीन मक्षत्र प्राधिकारी को. यह विश्वाय करने का कारण हैं कि स्थावर सपित जिसका उचित बाजार मृत्य 25,000/- रा से अधिक हैं

और जिसकी से० टी० एस० से० 11/1295/2ए 1 है तथा जो कोयसबतूर में स्थित है (और इससे उपावज्ञ अनुसूची में पूर्ण स्प में वर्णित है), रिजिस्ट्रीकर्त्ता अधिकारी के कार्यालय, गांधीपुरम (जाकुमेट से० 1427/82) में भारतीय रिजिस्ट्री-करण अधिनयम 190९ (1908 का 16) के अधीन, दिनाक अप्रैल, 1982

को पृष्टिक्त सम्मित्त के उचित बाउ म मूल्य से कम के दश्यमान प्रातफाल के लिए जल रित को गर्म हैं और मूक्त यह विश्वास करने का कारण हैं कि यथापूर्विकत सपित का उचित बाजार मूह्य, उसके दश्यमान प्रतिफल से, एसे दश्यमान प्रतिफल का पद्रह पितश्वा अधिक हैं और अगरक (अतरकों) और अतरिती (अतिरितियों) के बीच एसे अतरण के लिए तय पाया गया प्रतिक्त कल निम्निलिखत उद्वरेय से उक्त अन्तरण में वास्तिवक रूप में कथिन नहीं किया गया हैं:--

- (क) अन्तरण से हुई किसी आप की बाबत उक्त आंध-नियम के अभीन कर दोने के अंतरक के दायित्व के कभी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए, शौर/या
- (ल) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियां को, जिन्हें भारतीय आयवर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धनकर अधिनियम, या धनकर अधिनियम, या धनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के अस्तिनार्थ अन्तिरोी द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था., छिपान में सूर्विधा के लिए,

अत अब, उनत अधिनियम की धारा 269-म के अनुसरण में, में, उक्त अधिनियम की धारा 269-ध की उपधारा (1) के अधीन, निम्नलिखित व्यक्तियों, अर्थात् — (1) श्री मी० एस० कृष्णमृति

(अन्तरक)

(2) एस० पेरा नायडू और कम्पनी

(अन्तरिती)

को यह सूचना जारी करके पूर्वीक्त संपत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करका हैं।

उक्त सम्परित के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप :---

- (क) इस स्वान के राजपत्र में प्रकाशन की तारीक्ष में 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियो पर मुचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में सभाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन के भीतर उक्त म्थावर सपन्ति में हित- बद्ध किसी तत्य व्यक्ति देवाग त्रधाहम्ताक्षरी के पार लिखित में चित्र का सकरों।

न्यक्टोकरणः — इसमें प्रयूवन भव्दों और पदौं वा, जा उक्त अधिनियम के अध्याय 20-क में परिभाषित ही, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

मन्स्ची

भूमि—टी० एम० स० 11/1295/2ए 1 कोयमबत्तूर (डाकुमेट म० 1427/82)

आर० पी० पिल्लै, सक्षम प्राधिकारी सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण), अर्जन रेज-2, मद्रास

दिनाक 7-12-1982 मोहर

पम्हप अर्हा. टी. एन. एस. -----

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-घ (1) के अधीन सचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयक्त (निरीक्षण)

अर्जन रेज-२, मद्रास

मद्रास, दिनांक 9 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० 17139--या . मझे श्राप्त० पी० पिटतै आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमे इसके परचात 'जकत अधिनियम' कहा गया है") की धारा 269-ल के अधीन सक्षम अधिकारी को, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मृल्य 25,000/-रः. से अधिक हैं

और जिसकी सं० 22, नारत केंपनट रोड है. जो महास 17 में स्थित है (और इससे उपाबद अनुसूची में और पूर्ण का से वर्णित है), रजिस्द्रीकर्त्ता अधिकारी के कार्यालय, टो० नगर (डाकुमेट स० 773/82) में भारतीय र्राजस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीत, दिनाक अप्रैन, 1982

को पूर्वांक्त सम्परित के उचित बाजार मूल्य से कम के दश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई हैं और मूक्ते यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित वाजार मृल्य, उसके दश्यमान प्रतिफल से, एसे दश्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत से अधिक ही और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितिया) के बीच एंसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रति-फल निम्नलिखित उद्देव रय से अवेद अन्तरण निखित मा वास्त्रिक रूप से कथित नहीं किया गया है:---

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उपन अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्व में कभी करन या उसमें बचने में भविधा के लिए: और/या
- (ख) एसी किसी आय या किसी थन या अन्य आस्तियाः को जिन्हां भारतीय आयक्षर अधिनियस,, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियभ या धन कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना जाहए था, छिपाने में सुविधा के लिए:

अतः अन, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग कं अनसरण में, मैं, उस्त अधिनियम की धारा 269-घ की उपधारा (1) के अधीन, निम्नलिखत व्यक्तियों, अर्थात :---

(1) श्री श्यामाला बाणा

(अन्तरक)

(2) श्री टी० प्रबीशकुमार रेड़ी

(अन्तरिती)

को यह सचना जारो करके प्यांक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां शरू करता हा।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध में कांग्रें भी आक्षेप ---

- (क) इस सूचना के राजपत्र मो प्रकाशन की तारीख स 45 दिन की अवधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियां ५र सुचना की तामील से 30 दिन की अवधि, जो भी अवधि बाद मों समाप्त होती हो, के भीतर पृत्रांक्त न्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (स) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन को सारीच स 45 विन के भीतर उक्त स्थावर संपत्ति मं हित-बद्ध किसी अन्य व्यक्ति ब्वारा अवाहस्ताक्षरी के पास लिखित मा किए वा सकीप।

स्पन्टीकरण. --इसभा प्रयुक्त शब्दा और पदा ा, जा उत्त अधिनियम के अध्याय 20-क में पारकापित हैं. बहरी चर्ल होगा का उस अध्याय में दिया गया ही।

अनसधी

भूमि और निर्माण--22, नार्थ कैसनट रोड़, मद्रास 17 (डाकुमेंट सं० 773/82)।

> आर० पी० पिल्लै, सक्षम प्राधिकारी सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण), अर्जन रेंज-2, मद्रास

दिनाक : 9-12-1982

प्ररूप आई. टी. एन. एस. ----

(1) श्री जेठानंद दौलतराम

(अन्तरक)

बावकर अधिनियम,, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-घ (1) के अधीन सुचना (2) कुमारराजा एनटरप्राइसेज

(अन्तरिती)

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयक्त (निर्धिकण)

अर्जन रेंज-2, मद्रास मद्रास, दिनांक 6 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० 17150—यतः मुझे, आर० पी० पिल्लै, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके परचात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/-रः से अधिक है

और जिसकी सं० टी० एस० स० 54/1 और 58 है तथा जो बेस्ट मामबलम मे स्थित है (और इससे उपाबद्ध अनुसूची में और पूर्ण रूप से बणित है), रजिस्ट्रीकर्ता अधिकारी के कार्यालय, टी० नगर (डाकुमेंट सं० 906/82) में भारतीय रजिस्ट्रीकरण अधिनयम, 1908 (1908 का 16) के अधीन, दिनांक, अप्रैल, 1982

को पूर्वोक्त संपत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के एश्यमान प्रतिफल के लिए अंतरित की गई है और मूओ यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त संपत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके रश्यमान प्रतिफल से, एसे रश्यमान प्रतिफल का पन्त्रह प्रतिशत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितियों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्यों से उक्त अन्तरण लिखित में वास्तविक रूप से कथित नहीं किया गया है:---

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाब्त, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे अचने में सुविधा के लिए; और/या
- (का) एंसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिसी द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, खिपाने में सूबिधा के लिए।

अतः अब उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अन्सरण में, मैं, उक्त अधिनियम की धारा 269-थ की उपधारा (1) के अधीन निम्नलिक्ति व्यक्तियों, अर्थातु:—— को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन् के लिए कार्यवाहियां करता हूं।

उक्त सम्पत्ति को अर्थन् को सम्बन्ध में कोई भी अक्षेप :--

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारी से 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वीक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हिसबब्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास सिमिस में किए जा सकोंगे।

स्वष्टिकरण: --इसमें प्रयुक्त शब्दों और पवीं का, जो उक्त अधिनियम के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में विया गया हैं।

प्रसम्ब

भूमि टी॰ एस॰ सं॰ 54/1, और 58, वेस्ट मामबलम (डाकुमेंट सं॰ 906/82) ।

आर० पी० पिल्लैं, सक्षम प्राधिकारी सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) अर्जन रेंज-2, मद्रास

दिनांक: 6-12-1982

प्रकृप भाई • टी • एन • एस • --

भावकर पश्चितियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269 व (1) के घंधीन सुचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक भ्रायकर भ्रायुक्त (निरीक्षण)

अर्जन रेंज-2, मद्रास

मद्रास, दिनांक 3 दिसम्बर 1982

निर्वेश सं० 17142—यतः, मुझे, आर० पी० पिल्लै, भायकर श्रिष्ठिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसम इस हे पश्चात् 'उन्न श्रीश्चित्यम' कहा गया है), की घारा 269-ख के ग्रिश्चीन संज्ञम पात्रि हारों को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्गत्ति जिसका उचित बाजार मूख्य 25,000/- रुपये से श्रीक है

और जिसकी स० 10, है तथा जो कोलमनि अम्मन कोयिल स्ट्रीट कनदिपल्छे है बाबली नार्थ टी० नगर मद्रास-17 में स्थित है (और इससे उपाबद्ध अनुसूची में और पूर्ण रूप से बिणत है), रजिस्ट्रीकर्त्ता अधिकारी के कार्यालय, टी० नगर, मद्रास (डाकुमेंट सं० 563/82) में भारतीय रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन, दिनाक अप्रैल, 1982।

को पूर्विन सम्पत्ति के उचित बाजार मृस्य से कमके दृश्यमान प्रतिफल के लिए पन्तरित की गई है प्रीर मुझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्विनत सम्पत्ति का उचित बाजार मृस्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से, ऐमे दृश्यमान प्रतिकत का पन्द्रह प्रतिशत से प्रधिक है और प्रन्तरित (अन्तरितयों) के बीच ऐसे प्रम्तर्य के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिश्वित छेदेश्य से उनत प्रन्तरण लिखित में वास्तविक रूप में कथित नहीं किया गया है।—

- (क) ग्रम्तरण मे हुई किसी ग्राय की बावन, उक्त ग्रधिक नियम के ग्रधीन कर देने के श्रन्तरक के दायिक्य में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए; बीए/या
- (बा) ऐसी किसी श्राय या किमी धन या श्रन्य श्रास्तियों को जिन्हें भारतीय श्राय-कर अधिनियम 1922 (1922 का 11) या उक्त श्रिधिनियम, या धन-कर श्रिधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ श्रन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा के लिए;

अतः अब, उक्त अधिनियम, की धारा 269-ग के अनुसरण मे, मै, उक्त अधिनियम की धारा 269-घ की उपधारा (1) के अधीन, निम्निलिखित व्यक्तियों, अर्थात् ——

- (1) श्री एस० कांतिमती अम्माल और कन्नप्पन। (अन्तरक)
- (2) श्री एस० आर० कृष्णमूर्ति।

(अन्तरिती)

को यह सूचना जारी करके पूर्वीक्त सम्प्राप्ति के ग्रर्जीन के लिए कार्यवाहियां गुरू करता हूं।

उत्त सम्पत्ति के प्रजैन के सम्बन्ध म कोई भी प्राक्षेप :--

- (क) इस सूचना के राजपत में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अवधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अवधि, जो भी अविश्व बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति बारा;
- (ख) इस सूचना के राजपत में प्रकाशन की तारीचा से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबद्ध किसी मन्य व्यक्ति द्वारा अघोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किये जा सकेंगे।

स्ववटीकरणः--इसमें प्रयुक्त शब्दों ग्रौर पदों का, जो उक्त प्रक्षि •
नियम के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं, वही
अर्थ होगा, जो छम ग्रध्याय में दिया गया है।

अनुसूची

भूमि और निर्माण-10, कोलमनि अम्मन कोयिल स्ट्रीट, कनद पिल्ले चावटी नार्थ टी० नगर, मद्रास-17 (डाकुमेंट सं० 563/82)।

आर० पी० पिल्लै, सक्षम प्राधिकारी, महायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण), अर्जन रेंज-2,मद्रास

दिनांक 3-12-1982

मोहर: .

प्ररूप आई . टी. एन. एस. ------

(1) श्री आर० सनतानम्

(अन्तरक)

आयकार अधिनियम, 1961 (1961 का 43) कीं धारा 269-ध (1) के अधीन सूचना (2) श्री एस० ए० ईसवरी

(अन्तरिती)

भारत सरकार

अर्जन रेज II, मद्रास

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण)

मद्रास, दिनाक ६ दिसम्बर, 1982

निर्देश स्व 17190—यत मुझे, आरव पीव पिल्लैं, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमे इसके पश्चात् 'अक्तु अधिनियम' कहा गया हैं), की धारा 269-अ के अधीन सुक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण हैं कि स्थावर मुम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- रु. से अधिक हैं

और जिसकी स० फलैट स० 2 है, तथा जा 162, मौबेस रोड मद्रास-18 में स्थित है (और इससे उपाबद्ध अनुसूची में और पूर्ण रूप से विणत है), रिजस्ट्रीकर्ना अधिकारी के कार्यालय. मैलापुर (डाक्मेंट सं० 613/82) में भारतीय रिज-स्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908का 16) के अधीन, दिनाक अप्रैल, 1982

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से क्म के दश्यमान प्रतिफल के लिए अंतरित को गई है और मूक्षे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दश्यमान प्रतिफल से, एमे दश्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अंतरक (अंतरकों) और अंतरिती (अंतरितियों) के बीच एम अंतरण के निण्तय पाया गया प्रतिफल निम्निलिखित उद्देश्य स उक्त अंतरण लिखित में वास्तविक रूप से विश्वत नहीं किया गया है:——

- (क) अंतरण से हुई किसी आय की बाबत्, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अंतरक के दायित्य में कमी करने या उससे बचने में स्विधा के लिए; और/या
- (ल) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों करें, जिन्हें भारतीय आयकार अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उन्नत अधिनियम, या धन-कार अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अंतरिती द्वारा प्रकट गही किया गया या किया जाना चाहिए था, छिपाने में राविधा के लिए;

अत अब अबन अधिनियम की धारा 260-ग के अनुसरण मों, पीं, ज्यत अधिनियम की धारा 269-प की उपधारा (1) के धहार, जिस्नियम पांत्रियों, अधीत — को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हुं।

उक्त सुम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप :--

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीक्ष से 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (ए) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 विन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा, अधाहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकोंगे।

स्पथ्दीकरण: --इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित हौ, वही अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनुसूची

फलैंट सं० 2, 162, मौब्रेस राइ, मद्रास-18 (डाक्मेंट स० 613/82)।

आरः पी० पिल्लै, गक्षम प्राधिकारी सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण), ृंअर्जन रेज-II, मद्रास

दिनाक : 6-12-1982 मोहर : प्ररूप आईं. टी. एन. एस.-----

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-घ (1) के अधीन स्चना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण)

अर्जन रेज-2, मद्रास

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण)

मद्रास, दिनांक 7 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० 17192-यतः मुझे, आर० पी० पिल्लै,

ध्यायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके परचात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-स के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मृत्य 25,000/- रा. से अधिक है

और जिसकी सं० सर्वे सं० 330, कटयनकुप्पम मादवरम, है, तथा जो तिरुवोदियूर में स्थित है (और इसमें उपाबद्ध अनुसूची में और पूर्ण रुप से विणत है), रजिस्ट्रीकर्त्ता अधिकारी के कार्यालय, तिरुवोदियूर (डाकुमेंट सं० 1143/82) में भारतीय रिजस्ट्रीकरण अधितियम, 7908 (1908 का 16) के अधीन, दिनांक, अप्रैल, 1982

करे पूर्विक्त सम्पत्ति के उचित वाजार मूल्य से कम के द्रश्यमान अतिफल के लिए अन्तरित की गई है और स्म्रो यह विश्वास करने का कारण है कि यथापृर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके द्रश्यमान प्रतिफल से, एसे द्रश्यमान प्रतिफल का पंद्रह प्रतिशत से अधिक है और अंतरक (अंतरकों) और अंतरिती (अन्तरितियों) के बीच एमें अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्निलिसित उद्देश्यों से उस्त अन्तरण लिखित में वास्तविक रूप में कथिन नहीं किया गया है :---

- (क) अन्तरण से हुई िकसी आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में सूविधा के लिए; और/या
- (स) एंसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को, जिन्हों भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अंतरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था छिपाने में सविधा के लिए;

अत अब, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अन्सरण में, मै, उक्त अधिनियम की धारा 269-घ की उपधारा (1) के अधीन, निग्नितिस्ति व्यक्तियो, अर्थात् :---

(1) श्री ए० बी० पट्टम्माल और अदर्भ

(अन्तरक)

(2) नासी मुन्निसा

(अर्त्तारनी)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन के विष कार्यवाहियां करता हूं।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन के संबंध में कोई भी आक्षेप ---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारील में 45 दिन की अवधि गा तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील में 30 दिन की अवधि, जो भी अवधि बाद में समाप्त होती हो, जो भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति युवारा,
- (ख) इस स्चना के राज्ञत्य में प्रकाशन की तारील से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हित-बद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अथोहस्ताधारी के पास लिखित में किए जा सकीगे।

स्पष्टीकरण:——इस्मे प्रयुक्त शब्दां और पदो का, जो उक्त अधिनियम के अध्याय 20-क भ परिभाषित है, वही अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनुसुची

भूमि सर्वे स० 330, कठयनकुष्पम मादवरम तिरुवोदियूर (डाक्मेंट सं० 1143/82)

आर० पी० पित्लै, गक्षम प्राधिकारी सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण), अर्जन रेंज-2, मद्रास

दिनांक: 7-12-1982

मोहर .

प्ररूप आइं. टी. एन. एस. -----

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की भारा 269-च (1) के अधीन सुचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक वायक र आयुक्त (निरीक्षण)

श्चर्जन रेंज-II, मद्रास

मद्रास, दिनांक 7 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० 17156—श्रतः मुझे, श्रार० पी० पिल्लै, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पक्ष्यात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है"), की भारा 269-ब के अभीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मृल्य 25,000/- रु. से बिधिक है ष्ट्रीर जिसकी संख्या 52, स्टर्रालग रोड है, जो मद्रास में स्थित है (ग्रौर इससे उपाबद्ध ग्रनुसूची में ग्रौर पूर्ण रूप से वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्सा ग्रधिकारी के कार्यालय टी० नगर (डाक् मेंट सं० 871/82) मे रजिस्ट्रीकरण ग्रिधिनियम, 1908 (1908 का 16) के प्रधीन दिनाक मप्रैल, 1982 का पर्वोक्त संपर्ति के उमित बाजार मृल्य से कम के दृश्यमान प्रतिकल के लिए अन्तरित की गई है और मुभ्ने यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उच्चित बाजार मूल्य, उसके रूपमान प्रतिफल से, ऐसे रूपमान प्रतिफल का पन्त्रह प्रतिशत अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (मन्तरितियाँ) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रति-फल, निम्नलिबित उद्वेषय से उक्त अन्तरण लिखित में वास्तविक रूप से कथित नहीं किया गया है:---

- (क) अन्तरण से हुई किसी वाच की वाचला कर किसी अधिनियम के अधीन कर दोने के अस्तरक की दायित्व में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए; और/या
- (का) एसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को जिन्हें भारतीय आय-कर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती ब्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में स्विधा के लिए;

अतः अव, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण में, मैं, उक्त अधिनियम की धारा 269-घ की उपधारा (1) के अधीन, निम्नलिखित व्यक्तियों, अर्थात्:--- (1) श्री बी० रान० कम्पनी

(ग्रन्तरक)

(2) ठी० राम० रानटरप्रैमम

(भ्रन्तरिती)

को मह सूचना जारी करके पूर्वोक्त संपत्ति के अर्थन के लिए कार्यवाहियां करता हो।

उक्त सम्पत्ति के वर्जन के सम्बन्ध में कोई भी वाक्षेपु:--

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीश से 45 दिन की अविधिया तत्स्वस्वन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, वो भी जनिध बाद में तमाप्त होती हो, के भीतर पृथांक्स व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति बुवारा;
- (क) इस सूचना के राजपत्र कें प्रकाशन की बारीय सं 45 विन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितक्ष्भ किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अभोहस्ताक्षरी के पास् निकित में किए जा सकोंगे।

स्पच्छीकरणः --- इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम के अध्याय 20-क में परिभाषित हाँ, वहीं अर्थ होगा, जो उस अध्याय में दिया गया हाँ।

अनुसूची

भूमि ग्रौर निर्माण—52, स्टर्लिंग रोड, मद्रास 34 (डामुमेंट संख्या 871/82)

ग्रार० पी० पिल्लै, सक्षम प्राधिकारी सहायक भ्रायकर श्रायुक्त निरीक्षण, भ्रजेंन रेंज-II, मद्रास

तारीख: 7-12-1982

प्रस्प आइं.टी.एन.एस.-----

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की भारा 269-घ (1) के अभीन स्चना

भारत सरकार

कार्यालय, महायक ग्रायकर ग्रायुक्त (निरीक्षण)

श्चर्जन रेंज-II, मदास

मद्रास, दिनांक 7 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० 17153—श्रतः मुझे, श्रार० पी० पिल्लै, शायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया हैं), को धारा 269-स के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर संपत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/रु. से अधिक हैं

श्रीर जिसकी संख्या 3, है जो, घिरि रोड, मद्रास 17 में स्थित है, (श्रीर इसमे उपाबद्ध अनुमूची में ग्रीर पूर्ण रूप से वर्णित हैं), रजिस्ट्रीकर्त्ता ग्रिधकारी के कार्यालय, टी० नगर, (डाकुमेट सं० 909/82 में भारतीय रजिस्ट्रीकरण श्रिधिनयम, 1908 (1908 का 16) के ग्रिधीन श्रुप्रैल, 1982। को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उधित बाजार मूल्य में कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गर्द हैं और मूफ्ने यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उधित बाजार मृत्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से एसे दृश्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत अधिक हैं और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरित्यों) के बीच एसे अन्तरण के लिए सय पाया गया प्रतिक कब, निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण जिष्कत में वास्त्रिक रूप से कथित नहीं किया गया हैं:--

- (क) बन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के धायित्व में कमी करने या उससे बचने में सृविधा के लिए; और/या
- (स) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को, जिन्हों भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर जीधिनियम, या धन-कर जीधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोधनार्थ जन्तरिती ब्यारा प्रकट नहीं किया थवा था या किया बाना थाहिए था, स्थिपाने में सविधा के लिए;

अतः अब, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के, अनूसरण में, में, उपत अधिनियम की भारा 269-घ की उपधारा (1) के अधीन, निम्नलिखित व्यक्तियों, अथित् :--- 22-416 G1/82

(1) कें पी० राव, श्रौर श्रदर्स

(ग्रन्तरक)

(2) जी० के० सत्यनारायना और एस० प्रसाद, (श्रन्तरिती)

को यह मूचना जारी करके पूर्वीक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां शुरू करता हूं।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप :---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अविधि या तत्संबंधी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्विक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति ख्वारा;
- (च) इस स्थान के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हित-बद्ध किसी अन्य क्यक्ति त्त्रारा, अधिहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए का सकेंगे।

स्पष्टीकरण:—इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधि-नियम के अध्याय 20-क में परिभाषित है, वही अर्थ होगा, जो उस अध्याय में दिया गया है।

मनुस्ची

भूमि श्रौर निर्माण 3. घिरि रोड, मद्रास 17 (डाकुमट सं० 909/82 ।

श्चार० पी० पिल्लै, सक्षम प्राधिकारी सहायक स्रायकर श्चायुक्त निरीक्षण धर्जन रेज-II, मद्रास,

नारीख: 7~12~1982

प्ररूप आहुर. टी. एन. एस. -----

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-च (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण)

ग्रर्जन रेंज-II भद्रास

मद्रास, विनांक 10 दिसम्बर 10982

निर्देश सं० 17132—श्रतः मुझे, ग्रार० पी० पिल्लै, आयकर अधिनियम 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियस' कहा गया हैं), की धारा 269-स के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मृल्य 25,000/- रह. से अधिक हैं

ग्रीर जिसकी सं० 13, है, जो VIII काम स्ट्रीट, शास्त्र नगर, मद्रास 20 में स्थित है (ग्रीर इस से उपाबद्ध अनुसूर्च: में ग्रीर पूर्ण रूप से वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्त्ता ग्रिधकारी के कार्यालय, सैदापेट (डाक्मेंट मं० 1319/82) में रजिस्ट्रीकरण ग्रिधिनयम, 1908 (1908 का 16) के ग्रिधीन तारीख ग्रिप्नेल, 1982।

कां प्वांकित सम्पित्त के उचित बाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुक्ते यह विश्वास करने का कारण है कि यथापृत्रों कि सम्पित्त का उचित बाजार मृल्य उसके दृश्यमान प्रतिफल से, एसे दृश्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिषत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकाँ) और अन्तरिती (अन्तरितियों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गणा प्रतिफल निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखित में बास्तिबक रूप से किथत नहीं किया गया है:——

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत जबत अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के वायित्व में कमी करने या उससे अचने में सुविधा के लिए; और/या
- (ल) एसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों करे, जिन्हें भारतीय आय-कर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, गर्भन-कर अधिनियम, गर्भन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती ब्वारा प्रकट नहीं किया भया था या किया जाना चाहिए था, क्रियाने में स्वित्या के लिए

अतः अव, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अन्यरण में, मैं उक्त अधिनियम की धारा 269-घ की उपधारा (1) के अधीन, निम्निलिसित व्यक्तियों, अर्थात्:--- (1) पदमा श्री निवासन

(अन्तरक)

(2) भ्रार० सनतानम

(भ्रन्तरिती)

को यह सुमना जारी करके पश्चित्त के वर्जन के तिए कार्यवाहियां शुरू करता हो।

अक्त सम्परित को अर्जन को सम्बन्ध मो कोई भी आक्षोप :--

- (क) इस सूचन के राजात्र में घनारात की नारीख से 45 दिन की अपित सा तत्रात्र की नारित पा पर सूचना की तामील से 30 दिन की अवधि, जो भी अवधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति वृवास,
- (स) इस ग्रामा के राजपत्र में प्रकाशन की नारीस से 45 दिन के गीतर उपल स्थावर सम्मानि में हिनाउद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अशाह्मसाक्षरी के पास निस्ति में किए जा शकीये।

स्पष्टीकरण:--धमम पर्यका शब्दो और पर्यो का, जो उक्त अधिनियम, के अध्याय 20-के में परिभाषित है, वही अर्थ होगा, जो उस अध्यास को पिया स्या है।

अमुसुची

भूमि श्रौर निर्माण 13, VIII कास स्ट्रीट, शास्त्री नगर, मद्रास 20 (डाकुमेंट सं० 1319/82)

> श्रार० पी० फिल्मै, सक्षम प्राधिकारी, सहायक श्रायकर श्रापुक्त (विरीक्षण) श्रर्जन रेज-II, मद्रास

तारीख: 10-12-1982

मोहर ::

प्ररूप. आई. टी. एन. एस. ----

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-घ (1) के अधीन सुचना

भारत सरकार

कार्यालय , सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) ग्रर्जन रेंज-II, मद्रास

मद्रास, दिनांक 7 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० 17140— स्रतः मुझे, ग्रार० पी० पिल्लै, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चाल 'उक्त अधिनियम' कहा गया हैं), की धारा 269- स के अधीन सक्षम अधिकारी को यह विश्वास करने का कारण हैं कि स्थावर सम्भित्त, जिलका उचित बाजार मूल्य 25,000/- रह. से अधिक हैं

श्रौर जिसकी मंख्या 29, है जो, सरका मुदलि स्ट्रीट मद्रास 17 में स्थित है (श्रोर इम्म उपाबद्ध अनुसुच: में श्रीर पूर्ण रूप से वर्णित

है) रजिस्ट्रीकर्त्ता प्रधिकारी के कार्यालय, टी० नगर, (डाकुमेंट सं० 615/82) में र्राजर्स्ट्राकरण ग्रिधिनियम, 1908 (1908 कि 16) के ग्रधीन तारीख ध्रप्रैल, 1982।

को पूर्वों ते श्रम्पत्ति के उवित बाबार मूल्य से कम के दश्यमान प्रतिफल के लिए जन्तीरत की गई है और मुक्ते यह विश्वास करने का कारण है कि व्यापुर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दश्यमान प्रतिफल से, एसे दश्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अंतरक (अंतरकों) और अंतरिती (अंतरितियों) के बीच एसे अंतरण के लिए तय पाया प्रतिफल निम्नलिखित उद्देष्य से उक्त अंतरण लिखित में वास्तिवक रूप से कथित नहीं किया गया है:——

- (क) जंदरण स हुई किसो आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दाधिस्त्र में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए; और/या
- (ख) एंसी किसी जाय या किसी धन या अन्य आस्तियों को, जिन्हों भारतीय आय-कर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सूविधा के लिए;

अतः अब उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण मों, भी, उक्त अधिनियस की धारा 269-प की उपधारा (1) के अधीन, निम्निसित व्यक्तियों, अर्थात् :-- (1) एन० एन० रामचन्द्रन,

(भ्रन्तरक)

(2) पठमासनि पारतसारती

(भ्रन्तरिती)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति को अर्जन के लिए कार्यवाहियां शुरू करता हूं।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन के संबंध में कोई भी आक्षेप :---

- (क) इस स्चना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अविध या तत्संबंधी व्यक्तियों पर स्चना की तामिल से 30 दिन की अविध, जो भी अविध बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वेक्ति व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा, अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकेंगे।

स्पष्टीकरण: — इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित ही, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनुसूची

भूमि श्रौर निर्माण 29, सखन मुदिल स्ट्रीट, मद्रास 17 (डाक् मेंट संख्या 615/82)

> ग्नार० पी० पिल्लै. सक्षम श्रधिकारी [सहायक ग्रायकर ग्रायुक्त (निरीक्षण) ग्रर्जन रेंज-II, मद्रास

तारीख: 7-12-1982

प्ररूप बाइ .टी. एन. एस. ------

आयकर अधिनियम,, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-व (1) के अधीन सुचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) श्रर्जन रेज-II, मद्रास

मद्रास, दिनांक 3 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० 17177—यतः मुझे, आर० पी० पिल्नै, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चान् 'उकत अधिनियम' कहा गया हैं), की धारा 269-स के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित दाजार मृल्य 25,000/ रा. से अधिक हैं

स्रोर जिसकी सं० 11 है, जो मनगेश स्ट्रीट मद्रास 17 में स्थित है (श्रीर इनसे उपाबद्ध अनुसूची में श्रीर पूर्ण रूप से विणित है), रिजस्ट्रीकर्ना श्रिधकारी के कार्यालय, टी० नगर, (डाक्मेंट सं० 603, 755, 757, 758, 759, 761, 762, 82 में रिजस्ट्रीकरण श्रिधिनियम, 1908 (1908 का 16) के स्रधीन नारीख अश्रैल, 1982।

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अंतरित की गई है और मूफे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त संपत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से, एसे दृश्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अंतरक (अंतरकों) और अंतरिती (अंतरितियों) के बीच एसे अंतरण के लिए स्थ पाया गया प्रति-फल निम्नलिखित उद्वेश्य से उदत अन्तरण लिखित में वास्तिवक रूप से किथत नहीं किया गया है:--

- (क) जन्तरण से हुईं किसी जाय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्व में कभी करने या उससे अधने में सुविधा के लिए; जॉर/या
- (ख) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को, जिन्हों भारतीय जाय-कर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या भनकर अधिनियम, या भनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिकों द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना भाहिए था, छिपाने में स्विधा के लिए;

अत: अक, उक्त अधिनियम, की धारा 269-ग के अनुसरण में, में, उक्त अधिनियम की धारा 269-म की उपधारा (1) के अधीन, निम्नलिखित व्यक्तियों अर्थात्:——

(1) विद्या पिकचर्स

(ग्रन्तरक)

(2) श्रीमती कें ग्रार० लिल्लदामबाल श्रौर श्रदर्स, (श्रन्तरिती)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हूं।

उक्त सम्परित के अर्थन के सम्बन्ध में कोई भी बाक्षेप :--

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारी स से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबव्ध किसी अन्य व्यक्ति किसा अधोहस्ताक्षरी के एस लिखित में किए जा सकी थे।
- (ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियां पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविध , जो भी अविध बाद में समाप्त होती हों, के भीतर पूर्वों क्त क्योंक्तयां में से किसी व्यक्ति ब्वारा;

स्पष्टीकरण: --- इसमें प्रयुक्त शब्दों और पक्षों का, जो उक्त अधिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अन्स्भी

भूमि-11 मनगेश स्ट्रीट मद्रास 17 (डाकुमेंट सं० 603, 755, 757, 757, 758, 759, 761 762/82)

> श्रार० पी० पिल्लैं सक्षम प्राधिकारी, सहायक श्रायकर श्रायुक्त निरीक्षण श्रर्जन रेंज-II मद्रास,

तारीख: 3-12-1982

(2) आर० कुमार

लिए कार्यवाहियां करता हुं।

प्ररूप आई. टी. एन. एस.------

(1) विद्या पिकचरस

(ग्रन्तरक)

(भ्रन्तरिती)

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की भारा 269-ध (1) के बधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण)

श्रर्जन रेंज, मद्रास-2

मद्रास, दिनांक 3 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० 17177---अत. मुझे, ऋार० पी० पिल्लै आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमे इसके पट्टल, 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269 के अधीन सक्षम प्राधिकारी को, यह विश्वास करने का कारर्णहे कि स्थावर सम्पत्ति जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000 / - रुपए से अधिक **ह**ै

श्रीर जिसकी सं० 11 है जो जो मंगेश स्ट्रीट मद्रास 17 में है जो मंगेश स्ट्रीट में स्थित है (श्रीर इससे उपाबद्ध में ग्रीर पूर्ण रूप मे वर्णित है) रिजस्ट्रीकर्त्ता ग्रधिकारी के कार्यालय टी॰ नगर (ड.कुमेंट सं॰ 749/82 में भारतीय रजिस्ट्रीकरण श्रिधिनियम 1908 (1908 का 16) के श्रधीन तारीख श्राप्रैल 1982

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मल्य से कम के दश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुक्ते यह विश्वास करनं का कारण है कि यथापूर्विक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दश्यमान प्रतिफल से, ऐसे दश्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत सं अधिक है और अन्तरक अन्तरको) और अन्तरिती (अन्तरितियाँ) के बीच एंसे अंतरण के लिए तय पाया गया प्रति-फल निम्नलिखित उद्वारेय से उक्त अन्तरण लिखित मे वास्तविक रूप से कथित नहीं किया गया है:--

- (क) अन्तरण से हुई किसी आयुकी बाबत उक्त अधि-नियम के अधीन कर दोने के अन्सरक के बायित्व में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिये थौर∕ या
- (स) एमी किसी आय या किसी धन या अन्य जास्तियों को, जिन्ही भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया थायाकियाजानाचाहिए था, छिपाने में सूविधा के लिए:

बतः बब, उक्त अधिनियम, की धारा 269-ग के अनुसरण में, मैं, उक्त अधिनियम की धारा 269-म की उपभारा (1) के अधीन, निम्नलिखित् व्यक्तियाँ, अर्थात:--

को यह सूचना जारी करके पूर्वीक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए

उक्त सम्पत्ति को अर्जन को सम्बन्ध में कोर्ड भी आक्षेप :---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 4.5 विन की अवधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन कि अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी ध्यक्ति क्वारा;
- (स) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिश्वित में किए जा सकोंगे।

स्पष्टीकरण:--इसमें प्रयुक्त कव्यों और पदो का, जो उक्त अधिनियम के अध्याय 20-क में परिभाषित है, बही अर्थ होगा जो उस अध्याय मे विया गया है।

अनुस्ची

भूमि 11, मनगेश स्ट्रीट मद्रास 17 (ड.कुमेंट सं० 749/82)

> ग्रार० पी० पिस्ली सक्षम प्राधिकारी सहायक भ्रायकर भ्रायुक्त (निरीक्षण) धर्जन रेंज-II मद्रास

तारीख: 3-12-1982

प्ररूप आई. टी. एन. एस.-----

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-च (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण)
प्रार्जन रेंज-2, मद्रास

मद्रास, दिनांक 3 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० 17177—अतः मुझे आर० गो० पिल्लं आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके परचात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की भारा 269-स के अभीन सक्षम श्रीधकारों को, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर संपत्ति जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/-रा. रो अधिक है

श्रीर जिसकी सं० 11 है जो मनगेण स्ट्रीट मद्रास 17 में स्थित है (श्रीर इसमें उपाबद में श्रीर पूर्ण रूप से वर्णित है) रजिस्ट्रीकर्ता श्रीधकारी के कार्यालय टी० नगर मद्रास 17 (डाक्मेंट सं० 756/82 में भारतीय रजिस्ट्रीकरण श्रीधनियम 1908 (1908 का 16) के अधीन तारीख श्रग्रैल 1982

को पूर्विकत सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के दश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और भूभ यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वों क्त संपत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दश्यमान प्रतिफल से, एसे दश्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिश्वत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरित (अन्तरितिया) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पामा गया प्रतिफल निम्निलिखत उब्देश्य से उक्त अन्तरण निष्ति में वास्त्विक रूप से कथित नहीं किया गया है दन्न

- (क) अन्तरण से हुई किसी आव की बाबत उक्त अधि-नियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के बायित्व में कमी करने या उससे बुचने में सृत्यिण के लिए; बौर्/या
- (स) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को जिन्हों भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, विश्वास , 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती ध्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था छिपाने में शुविधा के सिए;

अतः अब, उक्त अधिनियम, की धारा 269-ग के, बनुसरण में, मैं, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग की उपधारा (1) के अधीन निम्नलिखित व्यक्तियों, अर्थात्:—

(1) विद्या पिकचरस

(प्रनरक)

(2) श्रीमती एस० लक्ष्मी

(मन्तरिती)

को यह सूचना जारी करके पूर्वीक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्य-वाहियां शुरू करता हुं।

उपव सम्पत्ति के वर्णन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप :---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन को तारी छ स 45 विन की अवधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियो पर सूचना की तामील से 30 दिन की अवधि, जो भी अवधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वाक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति दुवारा;
- (ख) इस स्थान के राजपत्र मो प्रकाशन की तारीब स 45 विन के भीतर उक्त स्थावर संपत्ति मों हिस-बद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास निश्वित मों किए जा सकीये।

स्पष्टिकरणः -- इसमें प्रयुक्त शब्दो और पदो का, जा उक्त अधिनियम के अध्याय 20-क में परिभाषित है, वही अर्थ होगा, जो उस अध्याय में दिया गया है।

भग्स्ची

भूमि 11, मनगेण स्ट्रीट मद्रास-17 (डाक्सेंट सिं० 756/82)

आर० पा० पिल्लै सक्षम प्राधिकारी सहायक स्रायुक्तर (निरोक्षण) अर्जन रॅज-II, मद्रास

तारीख : 3-12-82

मोहार 🖫

प्ररूप आई. टी. एन. एस.-----

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-ध (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयक्त (निरीक्षण) भ्रर्जन रेंज-2, मद्रास

मद्रास, दिनांक 9 दिसम्बर 1982

निर्देश मं० 17285-- श्रत मुझे ग्रार० पी० पिल्लै, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात 'उत्तत अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269- के अधीन सक्षम पाधिकारी की यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मृत्य 25,000∕- रु. से अधिक हैं श्रीर जिसकी सं० 27, है, जो नरिसननगपूरम स्ट्रीट मद्रास 600002 में स्थित है (भीर इसने उपाबद्ध मे भीर पूर्ण रूप मे वर्णिन है), रिजिस्ट्रोकर्त्ता श्रधिकारी के कार्यालय. मद्रास नार्य (डाक्मेट सं० 1296/82 मे भारतीय रजिस्ट्रीकरण श्रिधिनियम, 1908 (1908 का 16) के प्राधीन तारीख श्रप्रैल

को प्वोंक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के रूपमान प्रतिकल के लिए अन्तरित की गुई है और मुझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापर्योक्त सम्पत्ति का उचित बाजार गृत्य, उसके दश्यमान प्रतिकल से, एसे दश्यमान प्रतिकल का पंद्रह प्रतिकात से अधिक ही और अंतरक (अंतरकों) और अंतरिती (अन्ति रितियों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्यों से उक्त अन्तरण लिखित में वास्तिविक रूप से किथत नहीं किया गया है :--:

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने भे स्विधा के लिए; और/या
- (स) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को, जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अंतरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था छिपाने में मविधाके लिए;

अतः अब, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण मे, मैं, उक्त अधिनियम की धारा 269-घ की उपधारा (1) के अधीन, निम्नलिखित व्यक्तियों, अर्थात्:---

(1) वनजाकसी कोतनठपानि भ्रौर श्रदर्स

(भ्रन्तरक)

(2) सबोश और स्दिर बन्ना

(भ्रन्तरिती)

को यह सचना जारी करके पूर्वेक्ति सम्पत्ति को अर्जन को लिए कार्यवाहियां करता हु।

उक्त सम्पत्ति को अर्जन को संबंध में कोई भी आक्षेप ---

- (क) इस स्वना के राजपत्र में प्रकाशन की नारील में 45 दिन की अवधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियो पर स्चना की तासील से 30 दिन की अवीत, जो भी अविधि बाद मों समाप्त हांती हो, के भंतर पर्दीन व्यक्तियों में म किसी व्यक्ति दक्तरा,
- (स) इस मूचना के राजपत्र में प्रकाशन की रागंख में 45 दिन के भीता उक्त रथातर सम्भीत में हिन-वद्ध कि.पी अन्य व्यक्ति एदारा अलोहरतामा स पार्य लिपिता में किए जा सकेश ।

स्पष्टोकरण:--इसमे प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो नक्त अधिरितम के अध्याय 20-क मा परिभाषित है, वही अर्थ होगा जा उस अध्याय मा विया गया है।

अनुसूची

भूमि स्रौर निर्माण-27 नरसिनगपुरम स्ट्रीट मद्रास 600002 (डाक्मेंट सं० 1296/82)।

> ग्रार० पी पिल्लै सक्षम प्राधिकारी सहायक भ्रायकर भ्रायुक्त (निरीक्षण) भ्रर्जन रेंज, मद्रास-2

तारीख: 9-12-1982

प्ररूप आई. टी. एन. एस.-----

(1) विद्या पिकचरस

(अन्रह)

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-घ (1) के अधीन सूचना (2) श्रीमती विद्या

(ग्रन्नरिती)

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण)

श्चर्जन रेंज-2, मद्रास

मद्रास, दिनांक 3 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० 17177—अतः मुझे श्रार० पी० पिल्लै आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित दाजार मूल्य 25,000/- रुपये से अधिक है

ग्रौर जिसकी स० 11 है जो मनगेश स्ट्रीट मद्रास 17 में स्थित है (ग्रौर इससे उपाबद मे ग्रौर पूर्ण रूप मे वर्णित है) रिजस्ट्रीकर्ता श्रिष्ठकारी के कार्यालय मद्रास 17 (डाकू-मेंट सं० 760/82 में भारतीय रिजस्ट्रीकरण श्रिष्ठिनियम 1908 (1908 का 16) के श्रिधीन नारीख ग्रप्रैल 1982

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के दश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मूभे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दश्यमान प्रतिफल से, ऐसे दश्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अंतरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितियों) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अंतरण लिखित मे वास्तविक रूप से किथत नहीं किया गया है:---

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के वायित्व में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए; और/या
- (स) ऐसी किसी जाय या किसी धन या अन्य अस्तियों को जिन्हें भारतीय आय-कर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना था, छिपाने में स्विधा के लिए;

अक्षः अब, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अन्सरण मों, मौ, उक्त अधिनियम की धारा 269-त्र की उपधारा (1) को अधीन, निम्नलिखित व्यक्तियों, अधीत् :— को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हु।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन के संबंध में कोई भी आक्षेप :---

- (क) इस सूचना के राजपण में प्रकाशन की तारील से 45 दिन की अवधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अवधि, जो भी अवधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (क) इस म्चना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीक्ष से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हित-बद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा, अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकेगे।

स्पष्टीकरण :--इनमें प्रयुक्त गड़्यों और पदों का; को उक्त प्रधिनियम के प्रध्याप 20-क में परिभाषित है, बही अब होगा, जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनुसुधी

भूमि सं० 11, मनगेश स्ट्रीट मद्रास 17 (डाकमेंट सं० 760/82)

श्रार० पी० पिरुषे सक्षम प्राधिकारी सहायक श्रायकर श्रायुक्त (निरीक्षण) श्रर्जन रेंज-2, मद्राय

ता**रीख** · 3-12-1982 मोहर : प्रकर नाइ . टी . एन् . एस . ------

भायकर भिक्षितियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269 प(1) के धर्मीन सुमना

मारत सरकार

कार्यालय, सहायक भ्रायकर भ्रायुक्त (निरीक्षण) भ्रजीन रेंज-2, मद्रास

मद्रास, विनांक 7 विसम्बर 1982

निर्देश सं० 17171---श्रतः मुझे भ्रार० पी० पिल्लै नायकर प्रधितियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके परवास् 'उक्स अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर संपत्ति, जिसका उचित बाजार मृत्य 25,000/- ए० से अधिक है भीर जिसकी स० सर्वे सं० 1526, 1527 है जो ब्रिक किलन रोड मद्रास में 7 स्थित है (भ्रीर इससे उपाबद्ध में भीर पूर्ण रूप से वर्णित है) रिजस्ट्रीकर्ता ग्रिधिकारी के कार्यालय पुरसवाख्रम (क्वाकुमेंट सं० 656/82 में भारतीय रजिस्ट्रीकरण भिधिनियम 1908 (1908 का 16) के अधीन अप्रैल 1982 को पर्वोक्त संपंत्रि के उचित बाजार मल्य से कम के दश्यमान प्रतिफल के लिए अंतरित कीं गई है और मुक्ते यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त संपत्ति का उचित नाजार मृस्य, उसके द्वयमान प्रतिफल से, एसे द्वयमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिकात से अधिक है और अस्तरक (अन्तरकारें) और अन्तरिती (अन्तरितियाँ) के बीच एसे दें अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफाल, निम्नलिखित उत्दर्धस से उत्तर अन्तरण लिखित में वास्तविक रूप से केथित नहीं किया गया है :----

- (क) जन्तरण से हुई किसी जाय की वाबता, उक्त ज्यिनियम के अधीन कर दोने के जन्तरक के बायित्व में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए; जौर/या
- (ख) ऐसी किसी भाय या किसी धन या घन्य भारितयों को, जिल्हें भारपतीय भायकर अधिनियन, 1922 (1922 का 11) या अक्त अधिनियन, वा धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्वे अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, खिपाने में सुविधा के लिए;

बत: अव, उक्त अभिनियम की भारा 269-ग के समृतरण में, में, उक्त अभिनियम की भारा 269-ग की उपभारा (1) के अभीम सिम्निलिबित अविकारों, बर्जात्:—— 23—416GI/82 (1) ए**स॰ रामकृ**ष्णनम श्रार॰ मनोहरन

(ग्रन्परक)

(2) श्री महावीर चन्द

(श्रन्तरितो)

को यह सूचना जारी करके पृथानित सम्मेरित के अर्जन के लिए कार्यनाहियां करता हुं।

उक्त सम्परित के वर्षन के सम्बन्ध में कोई भी वाक्षेप:--

- (क) इस सूचना के राजपन्न में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की मबिंच या तस्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की सामील से 30 दिन को मबिंध, जो भी मबिंच बाद में समाप्त होती हो, के मीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (बा) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन के धीतर उक्त स्थावर संपत्ति में हिन बढ़ किसी धन्य व्यक्ति द्वारा स्रधोहस्ताक्षरों के पास लिखित में किए जा सकेंगे।

स्वक्रीकरणः — इसमें प्रयुक्त शृक्षों और पदों का, जो ठक्त प्रिवित्यम के प्रष्ट्याय 20-क में परिकाषित हैं, वही प्रथं होगा जो उस प्रध्याय में विवा गवा है।

नगस्पी

भूमि सर्वे 1526 श्रौर 1527 त्रिक किलन रोड भद्रास-(डाक्मेंट सं० 656/82)।

> म्रार० पी० पिल्लै सक्षम प्राधिकारी सहायक भ्रायकर म्रायुक्त (निरीक्षण मर्जन रेंज-2, मद्रास

तारीच : 7-12-1982

प्ररूप आर्ड टी. एन एस. ------

जापकर बीधनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा

269-घ (1) के अधीन सुचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयक्त (निरीक्षण)

मर्जन रेंज-2, मद्रास मद्रास दिनांक 7 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० 17171—भ्रत: मुझे, ग्रार० पी० पिल्लै बावकार अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पण्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269- ब के अधीन सक्षम प्राधिकारी को, यह विख्यास करने का कारण **ह[®] कि** स्थावर संपत्ति जिसका उचित बाजार मृत्य 25,000/- रा से अधिक हैं

भौर जिसकी सं० सर्वे सं० 1526, 1527 है, जो बिक किलन रोड मद्रास 7 में स्थित है (ग्रीर इससे उपाबद अनुसूची में ग्रीर पूर्ण रूप से वर्णित है) रजिस्ट्रीकर्ता श्रधिकारी के कार्यालय कुरसवाश्रम (श्वाकुमेंट सं० 655/82) में भारतीय रजिस्ट्रीकरण श्रिधिनियम 1908 (1908 का 16) के श्रधीन तारीख श्रप्रैल 1982

को पूर्वोक्स सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के इत्यमान त्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुझंयह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त संपत्ति का उचित् बाजार मृल्य, उसके कावमान प्रतिफल से, एसे कायमान प्रतिफल का पन्त्रहप्रतिकात अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितियों) के भीच एसे अन्तरण के लिए तथ पाया गया प्रतिकत निम्नलिखित उद्दोश्य से उक्त बन्तरण लिखित में बास्तविक रूप से कथित नहीं किया गया है:---

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय को बादस उक्त अभि-नियम के अभीन कर दोने के अन्तरक के दायिहन में कभी करने वा उसके बचने में सुविधा के लिये; और/वा
- (अ) एसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तिया को, जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया भाया किया जाना चाहिए भा, छिपाने सें सविधा के लिए:

मत. अव, उसत अधिनियम, की धार 269-ग के बनुसारण में, मैं, उक्त अधिनियम की धार! 269-व की उपधारा (1) कं अधीन निम्नलिमित व्यक्तियां, अर्थात् :---

(1) राम रामकृष्णन भीर भार० मनोहरन

(ग्रस्तरक)

(2) लोनचन्द जेयन

(ग्रन्तरिती)

की बहु सुचना पारी करके पूर्वीक्त सम्मित्ति के अर्जन के सिक् कार्यवाहिया करता हो।

उक्त सम्परित के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप :--

- (क) इस स्थाना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख वाँ 45 दिन की नवधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर स्थना की तामिल से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, को भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा,
- (अ) इस स्थाना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर संपत्ति में हित-बब्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अभोहस्ताक्षरी के पास लि**सित में किए जा सकेंगे।**

स्वव्यक्तिरणः --- इसमें प्रयंक्त शब्दों और पवीं का, को उक्त अधिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित हीं, वही अर्थ होगा जो उस अध्यास में विका गया है।

भूमि सर्वे सं॰ 1526, 1527 क्रिक किलम रोड, मद्राख 7 (जाक्मेंट सं॰ 655/82)

> भार० पी० पिल्लै यक्षम प्राधिकारी सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) श्रर्जन रेंज-2, मद्रास

तारीख : 7—12—1982

मोद्दर:

प्ररूप बार्ड .टी, एन . एस . ------

श्रामंकर मिविनियम, 1961 (1961 का 43) की धार। 26\$-भ(1) के भ्रमीन क्चना

भारत यरकार

कार्यालय, सह्मयक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) श्रर्जन रेज-2, मन्नाम

मद्रास, विनांक 7 विसम्बर 1982

निर्देश स० 17171—श्रतः मुझे, श्रार० पा० पिस्ले भायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें स्थके पश्चात् 'उक्त विधिनियम' कहा गया है), की भारा 269-स के अनीन नक्षम प्रधिकारी का यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सपरित, जिसका उचित बाजार मृल्य 25,000/- रा से अधिक है

ग्रीर जिसकी स० सर्वे स० 1526, 1527 है जो बिकिलन रोड मद्रास 7 में स्थित है (श्रीर इससे उपाबद्ध में ग्रीर पूर्ण रूप से वर्णित है) रिजस्ट्राक्ता ग्रिधवार के वार्यालय फुरसवासम (डाक्मेट म० 654/82) में भारतीय रिजस्ट्राकरण ग्रिधिनयम 1908 (1908 का 16) के ग्रधीन नारीख श्रप्रैल 1982

को पूर्वाक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के दश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई हैं और मुक्ते यह विद्यास करने का कारण है कि यथापूर्वाक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत अधिक है और अन्तरिक (अन्तरिकों) और अन्तरिती (अन्तरितया) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पामा गया प्रतिक्तन, निम्निलिबत उद्युष्य स उक्त अन्तरण किनिबत में योस्तिक रूप से किथत नहीं किया गया है ——

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्त अधिनियंग, के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्व में कभी करने या उससे बचने में मृतिधा के जिल् आरे/या
- (क) ध्रेसी किसी आय या किसी भन या अन्य आस्तियों करे, जिन्हें भारतीय आय-कर अभिनियम, 1922 (1922 का 1) या उक्त अधिनियम, का भन-कर अभिनियम, का भन-कर अभिनियम, का भन-कर अभिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिसी व्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, खियाने में सुविधा के लिए;

अतः अअ, इक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण में, मैं, उक्त अधिनियम की धारा 269-च की उपधारा (1) के अधीन, निम्नसिक्ति व्यक्तियों, अधीत् रून

(1) राम रामकृष्णन श्राप्त मनोहरन

(मन्तरक)

(2) सानता देवी

(भ्रन्सरिता)

को यह सूचना जारी कर के पूर्वोक्स सम्पत्ति के अर्जन के लिए कायबाहिया करता हुं।

जन्स सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध मा कोई भी आक्षेप ---

- (क) इस मूजना के राजपत्र म प्रकाशन की तारी है से 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविध बाद म समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्स व्यक्तिया म से किसी व्यक्ति द्वारा,
- (स) इस सूचना के राजपण में प्रकाशन की तारीस दं 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबस्थ किमी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास् निस्ति में किए का सकेंगे!

स्पष्टीकरण --- इसमा प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उनेस अधिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित ही, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अरुस्ची

भूमि सर्वे 1526 1527 जिक किलन रोड मद्रास 7 (डाक्मेंट स॰ 654/82)

> ग्रार०पी० पिल्सै भक्षम प्राधिकारी सहायक भागकर ग्रायुक्त (निरीक्षण) ग्रर्जन रॉज-2, मद्रास

तराख 7-12-1982 मोहर प्ररूप बाई.टी.एन.एस. -----

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-ण (1) के अभीन सूचना

भारत सरकार

कार्मालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण)

ग्रर्जन रेज-2, मद्रास मद्रास, दिनांक 7 विसम्बर 1982

निदेश सं० 17172—श्रतः, मुझे, श्रार० पी० पिल्लै, आयकर मधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया हैं), की धारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण हैं कि स्थावर संपत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- रु. से अधिक हैं

भीर जिसकी सं० आर० एस० सं० 1526, 1527 है जो जिक क्लिन रोड, मद्रास में स्थित है (भीर इससे उपाबद्ध अनुसूची में और पूर्ण रूप से वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्त्ता श्रीधकारी के कार्यालय पुरसवाखम (आकूमेंट सं० 653/82) में रजिस्ट्रीकरण श्रीधनियम 1908 (1908 का 16) के अश्रीन तारीख अप्रैल, 1982

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के स्वयमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुक्ते यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त संपत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से एसे स्वयमान प्रतिफल के पन्त्रह प्रतिशत अधिक है और अन्तरक (अन्तरकार) और अन्तरिती (अन्तरितियों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखित मे वास्तविक रूप से किथत नहीं किया गया है:——

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्स अधिनियम के अभीन कर देने के अन्तरक के दायित्व में कमी अरने या उससे बचने में सुविधा के लिए; और/या
- (स) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या अन-कर अधिनियम, या अन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा के लिए।

अतः अब, उक्त अभिनियमं की भारा 269-ण के, अनुसरण में, में, उक्त अधिनियमं की भारा 269-मं की उपवादा (1) के अभीन, निम्निलिखित व्यक्तियों, अर्थात् :---

- (1) श्री एस० रामाध्रवण श्रीर श्रीर शार० मनोहरत । (श्रन्तरक)
- (2) श्री चमपालाल ।

(ग्रन्तरिती)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त संपरित के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हुं।

उक्त संपति के अजीन के संबंध में कोई भी आशोप :--

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की सारीख से 45 दिन की अविधि या तत्संबंधी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वीकत व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति व्यारा;
- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीक से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर संपत्ति में हितबक्ध किसी अन्य व्यक्ति व्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकींगे।

स्पष्किरणः -- इसमे प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उसल अधिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं, वहीं अर्थ होंगा जो उसे अध्याय में दिया गया हैं।

वनुसूची

भूमि सर्वे सं० 1526, 1527, विक विलन रोड, मद्रास (डाक्मेंट सं० 653/82)

ग्रार० पी० पिल्लै सक्षम प्राधिकारी सहायक ग्रायकर ग्रायुक्त (निरीक्षण) भ्रजेंन रेंज-2 मंद्रास,

तारीष : 7-12-82

त्रकम मार्च , ही , एनं , एस , -----

(1) और छ। वेनुगापासः।

(ग्रन्तरक)

(2) श्रोके० कलनिजया देवी।

(म्रन्तरिती)

भायकर अभिनियम, 1961 (1961 का 43) की भारा 269-भ (1) के नभीन सूचना

भारत सरकार

कार्यासय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण)

श्रर्जन रेंज-2, मद्रास

मद्रास, दिनांक 7 दिसम्बर, 1982

निर्देश सं० 12066----ग्रतः, मुझे, ग्रार० पा० पिल्ले, नायकर अभिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'जक्त अधिनियम' कहा गया 📢), की धारा 269-स के अभीन सक्षम प्राधिकारी की यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मृल्य 25,000/- एत. से अधिक है ग्रीर जिसका सर्वे सं० 272, है, जो सौरिपालयम में स्थित है (भीर इससे उपावब अनुसूची में भीर पूर्ण रूप से वर्णित है), रजिस्ट्राकर्ता अधिकार। के कार्यालय, कोयम्बटूर डाकुमेंट सं० 1565/82) में रजिस्ट्रीकरण श्रधिनियम 1908 (1908 का 16) के अर्थीन अप्रैल, 1982

को पर्वोक्स सम्पत्ति के उचित बाजार मृत्य से कम के पश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मूझे यह विश्वास करनं का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्परित का उचित बाजार म्ल्य,, उसके रूपमान प्रतिफल से, एसे रूपमान प्रतिफल का पंत्रह प्रतिकात अधिक ही और अंतरक (अन्तरकों) और अंतरिती (अंतरितियों) के बीच एसे जन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिकल, निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखित मे बास्तविक रूप से कथित नहीं किया गवा है:--

- (क) अन्तरण से हुव् किसी बाय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के वायित्य में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए; औद्ध/या
- (क्ष) एेसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को जिन्हें भारतीय जायकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अभिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ जन्तरिती वृवारा प्रकट नहीं किया गया भा या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा के लिए।

अतः अब उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण में, मैं, उक्त अधिनियम की धारा 269-म की उपभारा (1) के अभीत, मिन्नलिप्रियत स्वप्रियतकों,, अर्थात् ः--

को यह सुचना जारी कर्क पूर्वोक्त सम्पत्ति के भर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हुं।

उक्त सम्परित के अर्थन के संबंध में कोड़ भी नाओप :---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीच से 45 दिन की अवधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सुचना की तामील से 30 दिन की अवधि, जो भी अविध बाद में समान्त होती हो, के भींतर प्रविकत व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (स) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबबुध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास शिश्वित में किए जा सकेंगे।

स्पच्छीकरण:--इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदीं का., जो उक्त अभिनियम के अध्याम 20-क में परिभावित हैं, वही अर्थ होगा को उस अध्याय में दिया गया है।

मंगुहर्या

भूमि सर्वे सं० 272, सौरिपाजयम (खाकमेंट सं० 1565/82)1

> प्रार० पा० पिस्ले सक्षम प्राधिकारी सहायक आयकर आयु**क्त (निरीक्षण**) **श्रर्कन रेंज्-**2, मद्रास

तारी**ष** : **%-12-8**2-

नाइ र 🖟

्रंक्ल कार्यं वी. एमं ुएसं . - - - ----

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-च (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक भायकार आयुक्त (निरीक्षण)

स्रजंन रेज-2, मद्रास

मद्रास, दिनाक 7 विसम्बर 1982

निर्देश सं० 12066-प्रतः, मुझे, आर० पी० पिल्ले, नामकर मिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमे इसके परचात 'उक्त अधिनियम' कहा गया है"), की भारा 269-ख के अभीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/-रा से अधिक है श्रीर जिसकी सर्वे सं० 272 है, जो मौरिपालयम मे स्थित है (ग्रीर इससे उपाबद्ध ग्रनुसूची मे ग्रीर पूर्ण रूप से वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्ला ग्रधिकारी के कार्यालय कोयम्बट्टर (डाक्-मेट सं० 1564/82) मे रजिस्ट्रीकरण श्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के श्राधीन दिनाक श्राप्रैल, 1982 को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित् बाजार मूल्य से कम के दश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुक्ते यह विश्वास करने का कारण है कि सथापूर्वीक्त सम्पत्ति की उचित बाजार मुल्य, उसके स्रयमान प्रतिफाल सं, एसे स्रयमान प्रतिफाल का पंद्रह प्रतिक्षत से अधिक है और अंतरक (अंतरकों) और अंतरिती (अंतरितियों) के बीच एेसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्यों से उक्त अन्तरण लिखित में भास्तमिक रूप से कथित नहीं किया गया है:--

- (क) जन्तरम से हुई किसी जाय की बाबत, उक्त जिथिनियम के अभीन कर बेने के जन्तरक के वायित्व में कमी करने या उससे अचने में सुविधा के सिए; जीर/या
- (क) एसे किसी जाय या किसी धन या जन्य आस्तियों को जिन्हों भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती ब्वाय प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में स्विधा के लिए।

अतः अब उक्त अधिनियम की धार्य 269-ग के अनुसरण में, मैं, उक्त अधिनियम की धार्य 269-च की अपधार्य (1) के अधीन निभ्नतिसित अधिनतमों, अवृत् :--- (1) श्री डी॰ नेमुगोपाल ।

(अन्तरक)

(2) श्रीकी • सुन्धरावाय।

(अन्तरितः)

को यह सूचना जारी कर्क पूर्वोक्त सम्पृत्ति के अर्थन के लिए कार्यवाहियों करता हूं।

उनत सम्पत्ति के वर्षन के सम्बन्ध में काई भी वाक्षेप ---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारील से 45 दिन की जबिध मा तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की बबिध, जो भी जबिध बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति ब्वारा,
- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीक से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पृत्ति में हितबद्ध किसी जन्म व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकींगे।

स्पट्टीकरण: — इसमें प्रयुक्त सन्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं, वहीं अर्थ होंगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनुसूची

भूमि सर्वें सं० 272, सौरिपालयम (डाक्मेट स० 1564/82)।

श्चार० पी० पिल्लै, सक्षम श्राधिकारी सहायक आयकर आयुक्त (निरक्षिण) श्रजैन रेज-2, मद्दास

तारी**य** 7-12-82 मोहर . प्रस्य नाव .टी.एन.एस. ------

नावकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-भ (1) के मधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक अवकर आयुक्त (निरीक्षण)

श्रर्जन रेज-2. मद्रास

मद्रास, दिनांक 7 दिसम्बर 1982

निर्देश सं 12066—यत. मुझे, आर पी पिस्तै, नायकर अभिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके परवात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की भारा 269-स के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उपित वाजार मूल्य 25,000/- रा. से अधिक है

ग्रीर जिसकी सर्वे सं० 272 है जो सीरिपालयम मे स्थित हैं (भीर इससे उपाबद ग्रनुसूकी मे ग्रीर पूर्ण रूप से वर्णित है), रिजस्ट्रीकर्ता ग्रधिकारी के कार्यालय, कीयम्बट्र (डाक्सेंट सं० 1563/82) मे रिजस्ट्रीकरण ग्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के ग्रधीन ग्रग्नैल, 1982

को पूर्वो कत सम्परित के उचित बाजार मृस्य से कम के ध्यमान प्रतिफल के लिए बन्तरित की गई है और मुभे यह विषवास करने का कारण है कि सभापूर्वोक्त संपत्ति का उचित बाजार मृत्य, उसके दृदयमान प्रतिफल से, एते दृदयमान प्रतिफल का पन्तह प्रतिशत अधिक है और अन्तरक (बन्तरकों) और अन्तरिती (बन्तरितियों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल निम्नलिखित उद्वेष्य से उक्त अन्तरण लिखित मे बास्तिक स्प से किथित नहीं किया गया है:---

- (क) जन्तरण से ड्राइं किसी जाम की बागत, उचक जिमित्सम के अभीन कर दोने के जन्तरक के बामित्य में कमी करने या उससे बचने में स्विभा के लिए; और/या
- (क) ऐसी किसी बाय या किसी धन या अन्य अस्तियों को, जिन्हों भारतीय आय-कार विधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त विधिनियम, या धन-कार अधिनियम, 1957 (1957 का 27) को प्रयोजनाथें अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था. जिल्लाने में मृतिथा के किए;

अतः अव, उक्त अभिनियम, की भाष 269-ग के अनुसर्भ में, औं, उक्त अभिनियम की भाष 269-ग की उपभाग (1) के अभीन, निस्त्रसिचित व्यक्तियों, त्रर्थीन् :-- (1) डी० वेनुगोपान ।

(ग्रन्तरमा)

(2) सारदाबाय।

(ग्रन्तरिती)

को यह सूचना जारी करके पृथेकित संपत्ति के अर्थन के लिए कार्यवाहियां करता हूं।

उत्तर संपर्ति के अर्थन के संबंध में कोई भी आक्षेप :--

- (क) इस सूचना के रावपत्र में प्रकाशन की तारीबा से 45 दिन की अविधि या तत्संबंधी व्यक्तियों पर सूचना की टामीन से 30 दिन की अविधि, जो भी जविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पृथावक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (वा) इस सूचना के राज्यत्र में प्रकाशन की तारीब वी 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर संपक्ति में हितबब्ध किसी अन्य व्यक्ति ब्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकरेंगे।

स्वध्योकरणः -- इसमें प्रयुक्त कव्यों कीर पर्वो का, को उक्त अधिनियम, को अध्याय 20-क में परिभाविक्य हैं, वहीं अर्च होगा को उस अध्याय में विका गया है।

जनस्थी

भूमि सर्भे सं० 272, सौरिपालयम (आकृमेट सं० 1563/82)।

भाग० पी० पिस्लै, सक्षम प्राधिकारी सहायक भागकर भागुक्त (निरीक्षण) ग्रजैन रेंज-2, महास

तारी**ज**: 7-12-1982

मोहर .

प्रकप बार्च : टी : एम : एस :-----

ा. भी डी० नेनुगोपाल ।

(अन्तरक)

भासकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-च (1) के अधीन स्चना 2. श्री ए० मधामल।

(अन्तरिती)

भारत सरकार

कार्याक्य, सहायक मायकर मायुक्त (निरीक्षण) अर्जन रेंज-II, भद्रास

मद्रास, विनांक 7 दिसम्बर 1982

निदेश सं० 12066—यत मुझे, आर० पी० पिल्लै, जायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके अक्सार, 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269- क के अधीन सभाव शिवकरी को, वह विक्वास करने का कारण है कि स्वावर संपत्ति जिसका उचित क्षार कृष्य 25,000/- रु. से अधिक है

और जिसकी सर्वे सं० 272 है, जो सौरिपालयम में स्थित है (ग्रीर इससे उपाबद्ध अनुसूची में और पूर्ण रूप से वर्णित है), रिनस्ट्रीकर्ती अधिकारी के कार्यालय कोयम्बट्टर (डाक्मेंट सं० 1562/82) में

रिजस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन, अप्रैल, 1982

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के स्वयमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मूझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापर्वोक्त संपरित का उचित बाजार क्लेंका, उसके स्वयमान अभितक्त से, ऐसे स्वयमान अभितक्त का नक्तह प्रतिशत अविक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अंतरिती (अन्तरितियों) के बीच ऐसे अन्तरक के लिए तय पाया गया प्रतिकर्ण निम्मलितिन उद्देश्य में उकत बन्तरक निम्मलित में वास्तिवक रूप से अधित नहीं किया गया है:---

- (क) अन्तरण से हुई किसी भाग की बाबत उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के वायित्थ में कमी करने या उसने बचने में सुविधा के लिए; भौर/या
- (क) ऐसी किसी जाय या किसी भग या अच्य जास्तियों की, जिन्हों भारतीय जायकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या भनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा के जिए;

को यह सूचना जारी करके पृबेक्ति सम्पृत्ति के अर्थन के लिए कार्यवाहियां करता हुं।

इक्त सम्परित के अर्थन के सम्बन्ध में कोई भी नाक्षेप :---

- (क) इस मृचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीश से 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अवीध बाद में समाप्त होती है।, के भीतर पृष्णिक व्यक्तियों में से किश्री ध्यक्ति व्यक्ता;
- (का) इस स्कारत के कार पत्र में प्रकाशक की साथीय से .45 दिन के भीतर जकत स्थावर संपरित में हिस-बद्ध किसी अन्य भ्यक्ति द्वारा अथोहस्ताक्षरी की पास जिल्हा में किए जा सकरी।

स्वक्रमिकरणः -- इसमें प्रयुक्त कव्यों और पदों का, जो उक्त अभिनियम के अध्याय 20-क में परिभाषित हीं, कही अर्थ होना जो उस वध्याय में पिवा गया ही।

वस्त्र्ची

भूमि सर्वे सं० 272, सौरिपालयम (डाकूमेंट सं० 1562/82)।

> आर॰ पी० पिल्लै स्थान प्राधिकारी सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) अर्जन रेंज-ग्र, मद्रास

बतः बब, उक्त विधिनियम की धारा 269-ए के क्लूबरण वें, वें, उक्त विधिनियम की धारा 269-व की उपधारा (1) के ज्योग, निकासिकत व्यक्तियों, अर्थात् :---

तारीख: 7-12-1982

प्ररूप आर्इ..टी. एन. एस.-----

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की भारा 269-ष् (1) के अधीन स्चना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरक्षिण) अर्जन रेंज-II, मद्राल

मद्रास, दिनांक 7 दिसम्बर 1982

निदेश सं० 12066—यतः मुझे आर० पी० पिल्लै, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उकत अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर संपत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- रु. से अधिक है

और जिसकी सर्वे सं० 272, है, जो सौरिपालयम में स्थित है (और इससे उपाद्ध अनुसूची में और पूर्ण रूप से वर्णित है), रिजस्ट्रीकर्ता अधिकारी के कार्यालय, कोयस्बट्टर (डाकुमेंट सं० 1557/82) में रिजस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन, अप्रैल 1982

को पूर्वीक्त संपत्ति के उचित बाजार मृल्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और म्फे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वीक्स संपत्ति का उचित बाजार मृल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से, एसे दृश्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत अधिक है और अन्तरक (अन्तरको) और अन्तरिती (अन्तरितियों) के बीध एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखिस मे वास्तविक रूप से किथत नहीं किया गया है:—

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्य में कमी करने या उससे बचने में सृविधा के लिए, और/या
- (स) ऐसी किसी बाय या किसी धन या अन्य आस्तियों को जिन्हों भारतीय आय-कर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती व्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सूविधा के लिए।

नतः अब, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के, अन्सरण में, मैं, उक्त अधिनियम की धारा 269-घ की उपधारा (1) के अधीन, निम्नलिखित व्यक्तियों, अर्थात् :-- 24--416GI/82

1. श्रीमती डी० बेनुगोपाल ।

(अन्तरक)

2. श्री एम० किट्टूस्वामी।

(अन्तरिती)

को यह सूचना जारी करके पूर्वीक्त संपत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हुं।

उक्त संपत्ति के अर्जन के संबंध में कोई भी आक्षेप :--

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीक से 45 दिन की अविधि या तत्संबंधी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि. जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वीक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (स) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन के भीतर उत्कत स्थावर संपित्त में हितबस्थ किसी अन्य व्यक्ति व्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकरेंगे।

स्पष्टीकरणः--इसमे प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उन्तर अधिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित है, वहीं अर्थ होगा, जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनुसूची

भूमि सर्वे सं० 272, सौरिपालयम (डाकुमेंट सं० 1557/82)।

> आर० पी० पिल्लैं सक्षम प्राधिकारी सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) अर्जन रेंज-II, मब्रास

तारीख: 7-12-1982

प्ररूप आहर्र. टी. एन. एस. ****

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा

269-घ (1) के अधीन सूचना भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) अर्जन रेंज-II, मद्राम

मद्रास, दिनांक 7 दिसम्बर 1982

निदेश सं० 12066—यतः मुझे, आर० पी० पिल्लै, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- रु. से अधिक है

और जिसकी सर्वे मं० 266, है, जो मौरिपालयम में स्थित है (श्रीर इससे उपाबद्ध अनुसूची में और पूर्ण रूप से वर्णित है), रिजस्ट्रीकर्ता अधिकारी के कार्यालय कोयम्बट्टर (डाक्युमेंट सं० 1558/82) में रिजस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन, अप्रैल 1982

को पूर्वोक्त सन्परित के उचित बाजार मूल्य सं कम हे स्हयमान पितफल के लिए अन्तरित की गई है और मुझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके स्वयमान प्रतिफल से, ऐसे स्वयमान प्रतिफल का पंद्रह प्रतिशत अधिक है और अंतरक (अंतरकों) और अंतरिती (अन्तरितियों) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्निलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखित में शास्तिवक रूप से कथित नहीं किया गया है:---

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में सूविधा के लिए; और/या
- (ख) एंसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को, जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अंतरिती व्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था छिपाने में सुविधा के लिए;

अतः जब, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण में, में, उक्त अधिनियम की धारा 269-घ की उपधारा (1) के अधीन, निम्नलिखित व्यक्तियों, अर्थात् :--- 1. श्री डी० वेनुगोपाल ।

(अन्सरक)

2. श्री ए० अय्यास्वामी।

(अन्सरिती)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्स सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यमाहियां करता हुं।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन के संबंध में कोई भी आक्षेप --

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति व्यक्तियों,
- (ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की सारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हित- बद्ध किसी अन्य व्यक्ति व्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकेंगे।

स्पष्टीकरण: ---इसमें प्रयुक्त घट्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम के अध्याय 20-क में परिभाषित है, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में विया गया है।

अनुसूची

भूमि सर्वे सं० 266, सौरिपालयम । (डाकुमेंट सं० 1558/82)

> आर० पी० पिल्ली सक्षम प्राधिकारी सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) अर्जन रेंज-]I, मद्रास

तारीख: 7-12-1982

प्ररूप् आहु . टी. एन्. एस्. -----

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की भारा 269-च(1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यानय, सहायक मायकर आयुक्त (निरक्षिण) अर्जन रेंज-II, मद्रास

मब्रास, दिनांक 7 दिसम्बर 1892

निवेश सं० 12066—यतः, मुझे, आर० पी० पिल्लै, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पक्कात् 'उक्त अधिनियम' कहा गवा हैं), की भारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर संपरित जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- रा. से अधिक है

और जिसकी सर्वे सं० 272 है, जो सौरिपालयम में स्थित है (ग्रौर इससे उपाबद्ध अनुसूची में और पूर्ण रूप से विणित है), रिजस्ट्रीकर्ती अधिकारी के कार्यालय कोयम्बट्टर (डाकुमेंट सं० 1559/82) में रिजस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन, अप्रैल 1982

को पूर्वोक्त संपरित के उचित बाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल को लिए अन्तरित की गई है और मूम्में यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त संपत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से, एसे दृश्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत अधिक है और अन्तरक (अन्तरका) और अन्तरिती (अन्तरितिया) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल निम्नलिखित उद्देष्य से उक्त अन्तरण निचित् में बास्तविक रूप से किथत नहीं किया पया है:--

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत उक्त अधि-नियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्व में कभी करने या उससे अचने में सुविधा के लिए; और/या
- (क) ऐसी किसी जाय या किसी धन या अन्य आस्तियों को जिन्हों भारतीय भायकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उनत अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती धृजारा प्रकट नहीं किया गया भा या किया जाना जाहिए जा, कियाने में सुविधा के रिक्य;

बतः जब, उक्त अधिनियम, की भारा 269-ए के अनुसरण में, में, उक्त अधिनियम की भारा 269-थ की उपभारा (1) के अधीन, निस्तिसिक्त व्यक्तियों, अर्थात् :— 1. श्री डी० वेनुगोपाल।

(अन्तरक)

2. श्री सी० पालराज।

(अन्तरिती)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हुं।

उक्त सम्पत्ति के अर्थन के सम्बन्ध में कोई भी बाक्षेप :---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीब से 45 विन की बनिध मा तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामीस से 30 विन की बनिध, जो भी अविध बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति व्वारा;
- (ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीश से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर संपत्ति में हित-व्यूष किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के गास जिक्ति में किए जा सकोंगे।

स्पष्टीकरण :--इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो जक्त कश्चित्तमम् के अध्याय 20-कः में परिभाषित हैं, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गमा हैं प्र

अनुसूची

भूमि सर्वे सं० 272, सौरिपालयम (डाकुमेंट सं० 1559/82)।

आर**्पी० पिल्ल** सक्षम प्रधिकारी सहायक आयकर ब्रायुक्त (निरीक्षण) अर्जन रेंज-II, मधास

तारी**ख**ः 7-12-1982

मोहर 🛭

प्ररूप गाइं. टी. एन. एस. -----

आयक ए सिधिनयम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-थ (1) के अधीन सुचना

भारत सरकार

कार्याजय, सहायक भायकर आयुक्त (निरीक्षण)

अर्जन रेंज-II, मद्रास

मद्रास, विनांक 7 दिसम्बर 1982

निदेश स० 12066—यतः मुझे, आर० पी० पिल्लै, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पद्मात् 'उकत अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-च के अधीन सक्षम प्राधिकारी को, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- रा. से अधिक है और जिसकी सर्वे स० 272 है, जो सौरिपालयम में स्थित

और जिसकी सर्वे स० 272 है, जो सौरिपालयम में स्थित है (और इससे उपावड अनुसूची में और पूर्ण रूप से बर्णित है), रिजस्ट्रीकर्ता अधिकारी के कार्यालय कोयम्बदूर (डाकुमेंट सं० 1560/82) में रिजस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन, अप्रैल 1982

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के स्थमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गृह है और मृक्षे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मृल्य, उसके स्थमान प्रतिफल से, एसे स्थमान प्रतिफल का पन्त्रह प्रतिश्वत अधिक है और अतरक (अंतरको) और अंतरिती (अंतरितियों) के बीज एसे अंतरण के लिए तम पामा गया प्रतिफल, निम्नलिसित उद्देश्य से उस्त अन्तरण लिखित में वास्तिक रूप से कथित नहीं किया गया है :——

- (क) अन्तरण ये हुई किसी जाम की वायस, उक्स विधानसम्बंध अभीत कर दोने के जन्तरक के बायित्य में कभी करने या उससे बचने में सृविभा के लिए; और/या
- (क) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को जिन्हें भारतीय आय-कर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) को प्रयोजनार्थ अन्तरिती व्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में स्विधा के लिए;

अतः जव, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अन्सरण में, मैं, उक्त अधिनियम की धारा 269-घ की उपधारा (1) के अधीन', निम्नसिमित व्यक्तियों, अधितः :--- 1. श्री ही० वेनुगोपाल।

(अन्सरक)

2. श्री वी० बालकृष्ण।

(अन्तरिती)

को यह सूचना जारी करके पूर्वीक्त सम्पत्ति के अर्थन के लिए कार्यवाहियां करता हुं।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी बाक्षेप :--

- (क) इत्र स्चना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अविध या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर स्चना की तामील से 30 दिन की अविध, जो भी अविध बाद में समाप्त होती हो, के भीनर प्रवेतित व्यक्तियों में ने किसी व्यक्ति द्वारा;
- (क) इस सूचनः के राजपण में प्रकाशन की तारीच बें 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हित्बव्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सर्कोंगे।

स्यव्यक्तिरणः - इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, को अक्त अधिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित है, बही अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

वन्स्ची

भूमि सर्वे सं० 272, सौरिपालयम। (डाकुमेंट सं० 1560/82)

> म्रार०पी०पिल्लै सक्षम प्राधिकारी सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) अर्जन रैंज-I, मब्रास

तारीख: 7-12-1982

प्रस्प आई.टी.एन.एस.-----

लायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की भारा 269-व (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आध्वत (निरीक्षण) अर्जन रेंज-11, मद्रास

मद्रास, दिनांक 7 दिसम्बर 1982

निवेश सं० 12066—यतः मुझे, आर० पी० पिल्लै, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-स के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्परित, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- रु. से अधिक है

और जिसकी सर्वे सं० 272 है, जो मौरिपालयम में स्थित हैं (और इससे उपाबद्ध अनुसूची में और पूर्ण रूप से वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्ता अधिकारी के कार्यालय कोयम्बटूर (डाक् मेंट स० 1561/82) में रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन, अप्रैल 1982

को पूर्वोक्त सम्परित के उचित बाजार मूल्य से कम के दश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मूक्ते यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्परित का उचित बाजार मूल्य, उसके दश्यमान प्रतिफल से, एसे दश्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितियों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल निम्निलिखित उब्देश्य से उक्त अन्तरण लिखित में बास्तविक रूप से कथित नहीं किया गया है:---

- (क) जनसरण से हुई किसी जाय की बाबत, उपत अभिनियम के अभीन कर दोने के अन्तरक के वायित्व में कभी करने या उससे बचने में सूबिधा के लिए; और/या
- (च) ऐसी किसी जाय या किसी धन या कन्य आस्तियों की, जिन्हों भारतीय जाय-कर अधिनियम, 1922 (1922: का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती व्यारा प्रकट नहीं किया नया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा के लिए;

1. श्री डी० वेनुगोपाल।

(अन्तरक)

2. श्री डी० कृष्नवल्ली।

(अन्तरिती)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्थन के लिए कार्यवाहियां करता हूं।

उक्त संपत्ति के अर्जन के संबंध में कोई भी आक्षेप :--

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख त 45 विन की अविध या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामिल से 30 दिन की अनिधि, जो भी अविध बाद में समाप्त होती हो. के भीतर पूर्यीक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति ब्वारा;
- (ख) इस सूचना के राजपथ में प्रकाशन की तारीख से 45 विन के भीतर उक्त स्थावर संपत्ति में हितबद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधीहस्ताक्षरी के पास निस्ति में किए जा सकरें।

स्पष्टिकरण:—इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम के अध्याय 20-क में परिभाषित है, वहीं अर्थ होगा, जो उस अध्याय में विया गया है।

अनुसूची

भूमि सर्वे सं० 272, सौरिपालयम। (डाकुमेंट सं० 1561/82)

> आर० पी० पिस्लै सक्षम प्राधिकारी सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) अर्जन रेंज-II, मद्रास

अतः अव, उक्त विभिनियम की भारा 269-ग के अनुकरण में, मैं, उक्त अभिनियम की भारा 269-थ की उपभारा (1) के अभीन, निम्नलिखित व्यक्तियों, अर्थात् :---

तारीख: 7-12-1982

माहर:

प्ररूप आई. टी. एन. एस. -----

भायकर मधिनियम, 1961 (1961 का 43) की बारा 269-व (1) के अधीन मुचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरक्षिण) अर्जन रेंज-II, मद्रास मद्रास, विनांक 7 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० 12071—यतः मुझे, आर० पी० पिल्लै, आयकर प्रधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उन्त प्रधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-ख के अधीन सक्षम प्रधिकारी को, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्मत्ति, जिसका उचित बाजार मूच्य 25,000/— ६५ए से प्रधिक है

और जिसकी सर्वे सं० 266 है, जो सौरिपालयम में स्थित है (और इससे उपाश्रद्ध अनुसूची में और पूर्ण रूप से वर्णित है), रिजस्ट्रीकर्ता अधिकारी के कार्यालय कोयम्बट्टर (डाक्समेंट सं० 1723/82) में रिजस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन, अप्रैल 1982

को पूर्वोक्त सम्पद्भित के उचित बाजार मूल्य से कम के एवमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुक्ते यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य उसके दृश्यमान प्रतिफल से, ऐसे दृश्यमान प्रतिफल का पन्त्रह प्रतिगत प्रधिक है भीर प्रन्तरक (ध्रन्तरकों) भीर अन्तरिती (अन्तरिवियों) के बीच ऐसे ध्रन्तरण के लिए तय पाग गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त ध्रन्तरण लिखित में वास्तिविक रूप से कथित नहीं किया गया है:---

- (क) अन्तरण से हुई किसी माय की बाबत, उक्त श्रीविनयम के भ्रधीन कर देने के अन्तरक के दायिस्त्र में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए; धौर/या
- (ख) ऐसी किसी आय या किसी धन या भ्रन्य ग्रास्नियों को जिन्हें भारतीय श्राय-कर ग्रीधनियम, 1922 (1922 का 11) या उन्त अधिनियम, या धन-कर ग्रीधनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ श्रन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा के लिए;

अतः अव, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण मे, में, उक्त अधिनियम की धारा 269-थ की उप-धारा (1) के अधीत्, निम्नुलिखित व्यक्तियों, अर्थात् :--- 1. श्री डी० वेनुगोपाल ।

(अन्तरक)

2. श्री ए० अय्यास्वामी।

(अस्तरिती)

को यह सूचना क्रिं। करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के धर्जन के लिए कार्यवाहियां कर े हूं।

उनत सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आसेप :---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख हैं 45 दिन की भविष्ठ या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की भविष्ठ, जो भी सबिध बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (ख) इस सूचना के राजपत में प्रकाशन की तारीख से
 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबद्ध
 किसी ग्रन्य क्यक्ति द्वारा, ग्रधोहस्ताक्षरी के पास
 लिखित में किए जा सर्केंगे।

स्पक्कीकरण:---इसमें प्रयुक्त शब्दों ग्रीर पदों का, जो **उक्त** श्रिधिनियम के ग्राड्याय 20-क में परिभाषित है, बही ग्रायं होगा, जो उस ग्राड्याय में दिया गया है।

BARTA

भूमि सर्वे सं० 266, सौरिपालयम। (डाकुमेंट सं० 1723/82)

> आर**्रं**पी० पिस्**लै** सक्षम प्राधिकारी सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) अर्जन रेंज- , मद्रास

तारीखा : 7-12-1982

प्ररूप आई. टी. एन. एस.-----

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269- घ (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आय्क्त (निरीक्षण) अर्जन रेंज-2, मद्रास

मद्रास, दिनांक 7 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० 12071—यतः मुझे, आर० पी० पिल्लै, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) जिसे इसमें इसके परचात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-स के अधीन स्थम प्राधिकारी का यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर स्म्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- रु. से अधिक है

और जिसकी सं० सर्वे सं० 267 है, जो सौरिपालयम में स्थित है (और इससे उपाबद्ध अनुसूची में और पूर्ण रूप से वर्णित है), रिजस्ट्रीकर्ता अधिकारी के कार्यालय कोयम्बेट्र (डाक्स्मेंट सं० 1722/82) में भारतीय रिजस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन, तारीख अप्रैल 1982

को पूर्वोक्स सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के रश्यमान प्रतिकल के लिए अंतरित की गई है और मुक्ते यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उाचित वाजार मूल्य, उसके दश्यमान प्रतिफल से, एसे दश्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अंतरक (अंतरकों) और अंतरिती (अंतरितियों) के बीच एसे अंतरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल जिम्मिलिखत उद्देश्य से उक्त अंतरण लिखित में वास्तिवक रूप से कथित नहीं किया गया है:---

- (क) अंतरण से हुई किसी आय की बाबत्, उक्त अधिनियम के अधीन कर देने के अंतरक के दायित्य में कमी करने या उससे बचने में स्विधा के लिए; और/या
- (क) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को, जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अंतरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, ख्याने में सुविधा के लिए;

अतः अबं, उक्त अधिनियमं की धारा 269-ग के अनुसरण में, में, उक्त अधिनियमं की धारा 269-घ की उपधारा (1) के अधीन, निम्निलिखित व्यक्तियों, अर्थात्:—— 1. श्रीमती डी० वेनुगोपाल।

(अन्तरक)

2. श्रीमती के० कलनजिया देवी।

(अन्तरिती)

को यह सूचना जारी करके पूर्वीकत सम्पृतित के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हुं।

उक्त सम्परित के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप :--

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वीक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (स) इस स्वना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 विन् के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा, अधोहस्ताक्षरी के पास लिसित में किए जा सकेंगे।

स्पष्टीकरण: -- इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो जक्त अधिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित हौ, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में विया गया है।

अनसची

भूमि सर्वे सं० 267, सौरिपालयम। $(\mathbf{S}$ क्मेंट सं० 1722/82)

आर० पी० पिल्लैं सक्षम प्राधिकारी सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) अर्जन रेंज-2, मद्रास

तारीख: 7-12-82

प्ररूप स्नाई० टी• एन•एस•----

श्रायकर श्रधिनियम, 1961 (196। চা 43) চী আবা 269व(1) के श्रधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालयः, सहायक आयक्तर आयुक्त (निरीक्षण) अर्जन रेंज-2, मद्रास

मद्रास, दिनांक 7 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० 12071—यतः मुझे, आर० पी० पिल्लै आयकर अधिनियम, 1961 (1961 हा 43) (जिमे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त प्रधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-ख के प्रधीन सक्षम प्राधिकारी को, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पन्ति, जिनका उचित बाजार मूल्य 25,000/- रुपये से अधिक है

और जिसकी सं० सर्वे सं० 267 है, जो सौरिपालयम में स्थित है (और इससे उपाबद अनुसूची में और पूर्ण रूप से विणत है), रिजस्ट्रीकर्ता अधिकारी के कार्यालय कोयम्बेट्र (डाक्सेंट सं० 1721/82) में भारतीय रिजस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन, तारीख अप्रैल 1982

को पूर्विक्त सम्पित्त के उचित् बाजार मूल्य से कम के ख्रयमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्मित का उचित बाजार मूल्य उसके दृश्यमान प्रतिफल से, ऐसे दृश्यमान प्रतिफल का वन्द्रह प्रतिशत प्रधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) भौर अन्तरिती (अन्तरितियों) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखित में वास्तविक रूप में किया गया है:—

- क) अन्तरण मे हुई किसी श्राय की बाबत, उक्त भवि-नियम के श्रधीन कर देने के अन्तरक के दायित्व में कथी करन या उससे बचने में सुविधा के लिए, श्रीर/या
- (ख) ऐसी किसी श्राय या किसी धन या ग्रन्य श्रास्तियों को, जिन्हें भारतीय श्राय-कर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त श्रधिनियम, या धन-कर श्रधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ श्रन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया या गा किया जाना चाहिए था. छिपाने मे सुविधा के लिए;

अत. अब., उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अन्सरण में, में, उक्त अधिनियम की धारा 269-च की उपधारा (1) के अधीन, निम्नलिकित व्यक्तित्यों, अर्थात् :— श्रीमती डी० बेनुगोपाल।

(अन्तरक)

2. श्री एम० किट्टस्यामी।

(अन्तरिती)

को यह सूत्रता त्रारी करके पूर्वीस्त सम्पत्ति के मर्जन के खिए कार्यवाहियां करता हूं।

उन्त सम्वत्ति के प्रजैन के सम्बन्ध में कोई भी ग्राक्षेप :--

- (क) इस सूत्रता के राजपत्न में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की प्रविध या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तासील से 30 दिन की प्रविध, जो भी अवधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वीकत व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (ख) इस र्वता के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख सें 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितवड़ किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्तकारी के पास लिखित में किए जा सकेंगे।

स्पद्धीकरण:--इसमें प्रयुक्त मन्दौं और पर्वो का, जो उक्त मनि-नियम के प्रध्याय 20-क में परिमाणित हैं, वही अबं होगा, जो उस अध्याय में दिया गया है '

अनुसूची

भूमि—सर्वे सं० 267, सौरिपालयम। (टाकूमेंट सं० 1721/82)

> आर०पी० पिल्लै सक्षम प्राधिकारी सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) अर्जन रेंज-2, मद्रास

तारीख:7-12-1982

प्रारूप आई. टी. एन. एस. ------

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-घ (1) के अधीन सचना

भारत सरकार

कार्याल्य, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण)

अर्जन रेंज-2, मद्रास मद्रास, दिनांक 7 दिसम्बर 1982 निर्देण सं० 12071—यतः मुझे, आर०पी० पिल्लै,

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके परेचात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-स के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित वाजार मूल्य 25,000/- रू. से अधिक ही

और जिसकी सं० मर्वे सं० 266, जो सौरिपालयम में स्थित है (और इससे उपावद्ध अनुसूची में और पूर्ण रूप से विणत है), रिजस्ट्रीकर्ता अधिकारी के कार्यालय कोयम्बेट्टर (डाकुमेंट सं० 1720/82) में भारतीय रिजस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन, तारीख अप्रैल 1982

को पूर्वोक्त संपित्त का उचित बाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित को गई है और मूम्ने यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त संपित्त का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से, एसे दृश्यमान प्रतिफल के पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितियों) के बीच एसे अनत्रण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्निलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखत में वास्तविक रूप से कथित नहीं किया गया है:--

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर देने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में सूविधा के लिए; और/या
- (स) एसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को जिन्हें भारतीय आयकार अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती ब्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सूविधा के लिए।

अतः अब, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के, अन्सरण मं, मैं, उक्त अधिनियम की धारा 269-घ की उपधारा (1) के अधीन, निम्निलिखित व्यक्तियों, अर्थातः :--- श्रीमती डी० वेनुगोपाल ।

(अन्तरक)

· 2. श्री बी० बालकृष्णन।

(अन्तरिती)

को यह सूचना जारी करको पूर्वोक्त संगत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हुं।

उक्त संपरित के अर्जन के संबंध में कोई आक्षेप :--

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अविधि या तत्संबंधी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वीकत ध्यिक्तयों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (स) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकर्ष।

स्पष्टीकरण:--इसमे प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम, के अध्याय 20-क मे परिभाषित ह¹, वही अर्थ होगा जो उस अध्याय मे दिया गया है।

अनुसुधी

भूमि सर्वे सं० 266, सौरिपालयम । (डाक्मेट सं० 1720/82)

> आर०पी० पिल्लै सक्षम प्राधिकारी सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) अर्जन रेंज-2, मद्रास

तारीख: 7-12-1982

मोहर 🗧

प्ररूप आई. टी. एन. एस.------

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) कीं धारा 269-घ (1) के अधीन सुचना

श्रीमती डी० वेनगोपाल ।

(अन्तरक)

2. श्री डी० सुनदराबाय।

(भ्रन्तरिती)

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) अर्जन रेंज-2, मद्रास

मद्रास, दिनांक 7 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० 12071—यतः मुझे, आर० पी० पिल्ले आयकर अधिनियमः, 1961 (1961 का 43) जिसे इसमें इसके परचात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-स के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर स्थाति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- रूट. से अधिक है

और जिसकी सं० सर्वे सं० 266 है, जो सौरिपालयम में स्थित है (और इससे उपाध्यद्ध अनुसूची में और पूर्ण रूप से वर्णित है), रिजस्ट्रीकर्ता अधिकारी के कार्यालय कोयम्बेट्र (डाक्मेंट सं० 1719/82) में भारतीय रिजस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन, तारीख अप्रैल 1982

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के श्रथमान प्रतिफल के लिए अंतरित की गई है और म्भे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का जाचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से, एसे दृश्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अंतरितियों) के बीच एसे अंतरण के लिए सय पाया गया प्रतिफल निम्निल्खित उददेश्य से उक्त अंतरण लिखित में वास्त्विक रूप से कथिस नहीं किया गया है:——

- '(क) अंतरण से हुई किसी आयुकी बाबतु, उक्त अधिनियम को अधीन कार दोने को अंतरक के दायित्व में कामी कारने या उससे बचने में स्विधा के लिए; और/या
- (ख) एसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को, जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अंतरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया या या किया जाना चाहिए था, छिपाने में स्विधा के लिए;

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हूं।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप :---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारील से 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अव.ब, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (स) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हित- बद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में अन्य किए जा सकोंगे।

स्पष्टीकरण: --- इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं, वहीं अर्थ होगा, जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनुसूची

भूमि सर्वे सं० 266, सौरिपालयम। (डाक्मेंट सं० 1719/82)

> आर० पी० पिल्लै सक्षम प्राधिकारी सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) अर्जन रेंज-2, मद्रास

अतः अबः, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अन्सरण में, मैं, उक्त अधिनियम की धारा 269-घ की उपधारा (1) के अधीन, निम्नलिसित व्यक्तियों, अर्थात :—

तारीख: 7-12-1982

प्ररूप आर्ह्ः टी.ु एन.ु एस.ु-----

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) कीं भारा 269-ए (1) के अधीन सुचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण)
श्रर्जन रेंज-2, मद्रास
मद्रास, दिनांक 7 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० 12071—यतः मझे, ग्रार० पी० पिल्लै आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके परचात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-ख के अधीन सुक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर स्मपत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- र_ि. से अधिक **ह**ै ग्रौर जिसकी सं० सर्वे सं० 266, है, जो सौरिपालयम में स्थित है (ग्रौर क्ष्ममे उपाबद्ध भ्रनुसूची में ग्रौर पूर्ण रूप से वॉणत है), रिजस्ट्रीकर्ता भ्रधिकारी के कार्यालय कोयम्बेट्र (डाक्मेंट सं० 1718/82) में भारतीय रजिस्ट्रीकरण श्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के प्रधीन, तारीख ग्रप्रैल 1982 को पूर्वेक्ति सम्पत्ति के उचित बाजार मुल्य से कम के दश्यमान प्रतिफल के लिए अंतरित की गई है और मुक्ते यह विद्वास करने का कारण है कि यथापुर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मुल्य, उसके रूप्यमान प्रतिफल से, एसे दृश्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अंतरक (अंतरकों) और अंतरिती (अंतरितियाँ) के बीच एसे अंतरण के लिए तय पाया गया प्रति-फल निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अंतरण लिखित में वास्तविक रूप से कथित नहीं किया गया है:--

- (क) अंतरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अंतरक के वायित्य में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए; और/या
- (ख) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को, जिन्हें भारतीय आयकार अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कार अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में स्विभा के लिए;

अतः अबं, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अन्सरण में, मैं, उक्त अधिनियम की धारा 269-घ की उपधारा (1) के अधीन, निम्नलिखित व्यक्तियों₊ अर्थात्:—— 1. श्रीमती डी॰ वेन्गोपाल।

(ग्रन्तरक)

2. श्री ए० मथामल।

(भ्रन्तरिती)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सप्परित के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हुं।

उक्त सम्परित के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप :---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वीक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पृत्ति में हितबद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा, अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किये जा सकेंगे।

स्पष्टीकरण: --- इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित है, वही अर्थ होगा जो उस अध्याय में विया गया है।

अनुसूची

भूमि सर्वे सं० 266, सौरिपालयम। (डाकूमेंट सं० 1718/82)

> ग्रार[ं]पी० पिल्लै सक्षम प्राधिकारी सहायक श्रायकर ग्रायुक्त (निरीक्षण) श्रर्जन रेंज-2, मद्रास

नारीख: 7-12-1982

प्ररूप आर्दः दी. एन. एस.------

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-घ (1) के अधीन सूचना

(म्रन्तरक)

(भ्रन्तरिती)

भारत सरकार

कार्यालयः, महायक आयकर आय्क्त (निरीक्षण)

अर्जन रेंज-2, मद्रास

मद्रास, दिनांक 7 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० 12071—यतः मुझे, श्रार०पी० पिल्लै आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) जिसे इसमें इसके परचात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है, की धारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर संपरित, जिसका उचित बाजार मृत्य 25,000/- रह. से अधिक हैं। श्रीर जिसकी सं० सर्वे म० 266 है, जो सीरिपालयम में स्थित है (स्रीर इससे उपाब इ स्नन्युची मे स्रीर पूर्ण रूप से वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्ला अधिकारी के कार्यालय कोयम्बेट्र (डाकमेंट सं० 1717/82) में भारतीय रिजस्ट्रीकरण प्रधि-नियम 1908 (1908 का 16) के अधीन, तारीख अप्रैल

को पूर्वोक्त संपत्ति के उचित बाजार मृल्य से कम के बरयमान प्रतिफल के किए अन्तरित की गृह है और मुक्ते यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दश्यमान प्रतिफल से, एसे दश्यमान प्रतिफल का पंत्रह प्रतिकात से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अंतरिती (अन्तरितियों) के बीच एंसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रति-फल निम्नलिखित उब्देश्य से उक्त अन्तरण लिखित में वास्तित्रक रूप से कथित नहीं किया गया है:--

- (क) अन्तरण से हुई किसी आयुकी बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अंतरक के दायित्व में कभी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए; मौर/या
- (का) एेसी किसी जाय या किसी धन या अन्य आस्तियों को, जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती दुवारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में स्विधाके लिए;

अतः अव, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण में, मैं, उक्त अधिनियम की धारा 269-व की उपधारा (1) के अधीन, निम्नलिखित व्यक्तियों, अधीत् :---

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्सि के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हुं।

उक्स सम्पत्ति के वर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप:---

श्रीमती डी० वेनुगोपाल।

श्री टी० कुष्नवल्ली।

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीश से 45 विन की अविधिया तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर स्चना की तामील से 30 दिन की अवधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वीक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (स) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अभोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकेंगे।

स्वस्टीकरण:--इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित है, वही अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनुसूची

भूमि-सर्वे सं० 266, सौरिपालयम । (डाक्मेंट सं० 1717/82)

> श्रार० पी० पिल्लै सक्षम प्राधिकारी महायक स्नायकर स्नायुक्त (निरीक्षण) श्रर्जन रेंज-2. मद्रास

तारीख: **7-12-198**2

प्रकप आई• टी• प्र• एस०- -

मायकर मिशिनयम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-म (1) के मधीन सुचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक भ्रायकर भ्रायक्त (निरीक्षण)

ग्राजैन रेंज II, मझाम महास, दिनाक 7 दिसम्बर 1982 निर्देण सं० 12071--यतः गुझे, ग्रार०पी० पिल्लै

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है) की धारा 269- स के अधीन सक्षम प्राधिकारी को, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर संपत्ति जिसका उचित नाजार मूल्य 25,000/- रु. से अधिक है

श्रौर जिसकी सं० सर्वे स० 266 है, जो सौरिपालयम में स्थित है (श्रौर इससे उपाद्ध श्रनुस्ची से श्रौर पूर्ण व्यासे विणित है), रिजस्ट्रीकर्ता श्रीधकारी के कार्यालय कोयम्बेट्र (डाक्सेंट सं० 1716/82) में भारतीय रिजस्ट्रीकरण श्रिधिनियम, 1908 (1908 का 16) के श्रिधीन, तारीख श्रप्रैल 1982

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित वाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मूक्ते यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से, ऐसे दृश्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिग्रत से अधिक है और अन्तरक (अंतरकों) और अंतरिती (अंतरितियों) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिक्ष निम्निलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखित में वास्तिवक रूप से कियत नहीं किया गया है:—

- (क) जन्तरण से हुई किसी नाय की बाबत उक्त कि। नियम के अभीन कर दोने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए; जीर/या
- (क) ऐसी किसी जाय या किसी धन या अन्य आस्तियाँ को, जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तिरती इवारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में मुनिधा के लिए;

बत: बब, उक्त विधिनियम की भारा 269-ग के, बनुसरण कें, में, धक्त विधिनियम की भारा 269-व की उपधारा (1) के बधीन, निम्नलिकित व्यक्तियों, वर्धात :---

1. श्रीमती डी० वेनुगोपाल ।

(ग्रन्तरक)

2. श्रीमती टी॰ सारदावाच ।

(ग्रन्तरिती)

को यह सूचना जारी करके पूर्वांक्त सम्परित के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करला हुं।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप --

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन की अविध या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना. की तामील से 30 दिन की अविध, जो भी अविध साद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वीक्त, व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हिल-बद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिसित में किए जा सकीगे।

स्पष्टीकरण:---इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम के कथ्याय 20-क में परिभाषित है, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में विया गया है।

अनुस्ची

भूमि सर्वे सं० 266, सौरिपालयम। (**डाक्**मेंट सं० 1716/82)

> आर० पी० पिल्लै सक्षम प्राधिकारी सहायक भ्रायकर श्रायुक्त (निरीक्षण) भर्जन रेंज-II, मब्रास

तारीख: 7-12-82

प्ररूप भार्द, टी. एन्. एस.—

अ। यकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की भारा 269 (1) के अभीन सुचना

कार्यालय, सहायक भ्रायकर भ्रायुक्त (निरीक्षण)

ग्रर्जन रेंज-, मद्रास

मद्रास विनांक 7 दिसम्बर 1982

निर्वेश सं० 12071—यत: मुझे, श्रार० पी० पिल्ले आयकर मधिनियम 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया हैं), की धारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण हैं कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मृत्य 25,000/- रा. से अधिक हैं। श्रीर जिसकी सं० मर्वें स० 266 हैं, जो सौरिपालयम कोयम्बेटर

श्रीर जिसकी सं० मर्वे स० 266 है, जो सौरिपालयम कोयम्बेट्रर में स्थित है (श्रीर इससे उपाबद श्रनुसूची में श्रीर पूर्ण रूप से वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्ता श्रिष्ठकारी के कार्यालय कोयम्बेट्रर (डाक्समेंट सं० 1715/82) में भारतीय रजिस्ट्रीकरण श्रिष्टिनयम, 1908 (1908 का 16) के श्रिष्ठीन, तारीख श्रप्रैल 1982

को पूर्वेक्ति सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के दश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मूक्ते यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वेक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से, एसे दृश्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अंतरिती (अन्तरित्यों) के भीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रति-फल निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण निम्नलिखित में वास्तविक क्य से किथत नहीं किया ग्या है:---

- (क) नन्तरण् ते हुइ दिस्ती भाग की नावत , उक्छ अभिनियम् के अभीन कर दोने के बन्तरक के दारित्व में कमी करने या उससे बुचने में सुविभा के सिए; वीट/वा
- (ख) एसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों की, जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती व्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपान में सूविधा के लिए;

बतः जब, उक्त अधिनियम, की भारा 269-ग के अनुसरण कों, मीं, उक्त अधिनियम की भारा 269-थ की उपभारा (1) को अधीन, निम्नलिखित व्यक्तियों, अर्थात् :--- (1) श्रीमती डी॰ वेनुगोपाल।

(मन्तरक)

(2) श्री सी० पालराज।

(ग्रन्तरिती)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के वर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हुं।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप उ---

- (क) इस सचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारील से 45 दिन की अवधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन को अवधि, जो भी वर्षीध बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वीक्स व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर संपरित में हित-बद्ध किसी बन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकींगे।

स्पब्दीकरण:—इसमें प्रयुक्त शब्दों और पर्दों का, जो जक्त अधिनियम, के अध्याय 20-क में पर्दिभाषित हैं, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

मन्स्ची

भूमि सर्वे सं० 266, सौरिपालयम, कोयम्बेटूर। (डाक्सेंट सं० 1715/82)

> श्चार० पी० पिल्ले सक्षम प्राधिकारी सहायक श्रायकर श्चायुक्त (निरीक्षण) श्चर्जन रेंज-II, मद्रास

तारीख: 7-12-1982

प्ररूपु आर्ड.टी. एन. एस. ------

आयुकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-घ (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक बायकर बायुक्त (निरीक्षण)

श्चर्जन रेंज, हैदराबाद

हैंदराबाद, दिनांक 8 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० श्रार० एस सी० नं० 339/82-83--- यस: मुझे, एम० जेगन मोहन

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पहचात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-स को अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- रह. से अधिक है

श्रौर जिसकी सं० 90/1 श्रौर 90/2 है जो सोमावरपोड़ येलूरू में स्थित है (ग्रौर इससे उपाब इ श्रनुसूची में ग्रौर पूर्ण रूप से वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्त्ता श्रधिकारी के कार्यालय येलूर में भारतीय रजिस्ट्रीकरण श्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के श्रधीन दिनांक श्रप्रैल 1982

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के दश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुझे यह विद्यास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दश्यमान प्रतिफल से, एसे दश्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती रिती (अंतरितियों) के बीच एसे अंतरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल निम्नलिखित उद्वोदय से उक्त अंतरण लिखित में भारतिक रूप से कथित नहीं किया गया है:---

- (क) अंतरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अंतरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में सृतिधा के लिए; और/या
- (ख) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को, जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) को प्रयोजनार्थ अंतरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने मे सुविधा को लिए;

अतः अव, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण में, में, उक्त अधिनियम की धारा 269-य की उपधारा (1) के अधीन, निम्नलिखित व्यक्तियों, अर्थात् :---

- (1) श्री बीस कोडम्मा पति वेंकटरमना, येलूरू (ग्रन्तरक)
- (2) दि० युलूर को-म्रापरेटिश सिरुक्तिंग सोसाइटी लि० वेस्ट गोदावरी, कालनी स्कीम, बाइ ग्रध्यक्ष, येलूरू (भन्तरिती)

को यह सूचना जारी करके पूर्वीक्त सम्पत्ति के वर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हूं।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन के संबंध में कोई भी आक्षेप :---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 विन की अविध या तत्संबंधी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविध, जो भी अविध बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (ख) इस स्चना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीच से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा, अधोहस्ताक्षरी के पास किये जा सकींगे।

स्पष्टीकरण :--इसमें प्रयूक्त शब्दों और पर्वों का, जो उक्त अधिनियम के अध्याय 20-क में परिभाषित ह¹, वही अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया ग्या ह³।

मनुसूची

खुली जमीन सोमावरापाडू येलूरू भार० एस० नं० 90/1 भौर 90/2, विस्तीर्ण 1-14-1/2 सेंटस्, रजिस्ट्रीकृत विलेख नं० 2271/82, रजिस्ट्रीकर्ता श्रधिकारी येलूरु।

एम० जोगन मोहन सक्षम प्राधिकारी सहायक श्रायकर श्रायुक्त (निरीक्षण) श्रर्जन रेंज, हैवराबाद

विनांक: 8-12-1982

प्ररूप आर्ड . टी . एन . एस . ------

जायकर अधिनियम, 1961 (1961 कर 43) की भारा 269-घ (1) के अभीन सूचना

भारत् सरकार्

कार्यालय, सहायक प्रायकर प्रायुक्त (निरीक्षण) प्रर्जन रेंज, हैदराबाद

हैदराबाद, दिनांक 8 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० श्रार० ए० सी० नं० 340/82-83--यन: मुझे, एम० जेगन मोहन

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) जिसे इसमें इसके परचात 'उन्नत अधिनियम' कहा गया है। कि धारा 269-स के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्परित, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- रु. से अधिक है

श्रीर जिसकी सं० 90/1 है जो सोमावरपाइ येलूरू में स्थित है (ग्रीर इससे उपाबद्ध श्रनुसूची में ग्रीर पूर्ण रूप से वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्त्ता ग्रधिकारी के कार्यालय, येलूरू में भारतीय रजिस्ट्रीकरण ग्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के ग्रधीन, दिनांक ग्रग्रैल, 1982

को पूर्वेक्सि संपित्त के उचित बाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मूफे यह दिश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त संपित्त का उच्चित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से, एसे दृश्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अंतरक (अंतरक) और अंतरिती (अंतरितियों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रति-फल निम्नलिखित उद्वेश्य से उक्त अन्तरण लिखित में वास्तविक रूप से कथित नहीं किया गया है:--

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्व में कभी करने या उससे बचने में सूबिधा के सिए; और/या
- (स) एसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों की जिन्हें भारतीय आय-कर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ जन्तरिती व्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में स्विभा के लिए;

अतः अब, उक्त अधिनियम, की धारा 269-ग के अन्सरण में, में उक्त अधिनियम की धारा 269-व की उपधारा (1) के अधीन निम्निसिद्ध व्यक्तियों, अर्थात् :---

- (1) श्री के० सुब्बाराव पिता बंगारय्या, येलूरू। (ग्रन्तरक)
- (2) दि येलूरू को-ग्रापरेटिव विलंडिंग सोसाइटी लि० वेस्ट गोदावरी कालोनी स्कीम बाई ग्रध्यक्ष येलूरू।

(भ्रन्तरिती)

को यह सूचना जारी करके पूर्वों क्त सम्पृत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हूं।

उक्त सम्पत्ति के वर्जन के सम्बन्ध में कोई भी बाक्षेप:--

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियाँ पर सूचना की तामील स 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर प्रविक्त व्यक्तियाँ में से किसी व्यक्ति व्यक्ति व्यक्तियाँ में से किसी व्यक्ति व्याराः
- (स) इस सूचना के राजपत्र मो प्रकाशन की तारीस से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर संपत्ति मों हित्बक्ष किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पाल लिसित मों किए पर सकोंगे।

स्पष्टीकरण:---इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उकत अधिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित ह⁵, वही अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिवा भया है।

अनुसुधी

खुली जमीन सोमावरपाडू येलूरू, श्रार० एस० नं० 90/1, विस्तीर्ण 1.72 सेंटस् रजिस्ट्रीकृत विलेख नं० 2225/82, र्राजस्ट्रीकर्ता श्रधिकारी येलूरू ।

एम० जेगन मोहन सक्षम प्राधिकारी महायक स्रायकर स्रायुक्त (निरीक्षण) स्रर्जन रेंज, हैदराबाद

दिनांक: 8-12-1982

प्ररूप माई. टी. एन. एस.----

जायकर अधिनियम्, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-घ (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) श्रर्जन रेंज, हैदराबाद

हैंदराबाद, दिनांक 8 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० म्रार० ए० सी० नं० 341/82-83---यतः मुझे, एम० जेगन मोहन.

आयकर अधिनियम्, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके परवात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है'), की धार 269-च के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/-रा. से अधिक है

भौर जिसकी सं० भ्रार० एस० नं० 64 है, जो सोमा वरपाड़ू येलूरू में स्थित है (भ्रौर इससे उपायद्ध श्रनुसूची में भ्रौर पूर्ण रूप से वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्त्ता भ्रधिकारी के कार्यालय, येलूरू में भारतीय रजिस्ट्रीकरण श्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के श्रधीन दिनांक भ्रप्रैल, 1982

को पूर्वोक्त संपत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के देश्यमान प्रतिफल के लिए अंतरित की गई है और मुक्ते यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य उसके देश्यमान प्रतिफल से, एसे दश्यमान प्रतिफल का पन्तह प्रतिशत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितियों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्निलिख्त उद्देश्यों से उक्त अन्तरण लिखित में बास्तविक रूप से किथत नहीं किया गया है:--

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए; और/या
- (स) एसे किसी आय या किसी धन मा अन्य आस्तियों की, जिन्हों भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अंतरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा के लिए;

अतः अव, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण में, में, उक्त अधिनियम की धारा 269-थ की उपधारा (1) के अधीन. निम्निलिसित व्यक्तियों, अर्थात् :-26-416GI/82

- (1) भी पी० रगानायकुलू पिता लक्ष्मना, येलूक (स्रन्तरक)
- (2) वि येलूरू को-ग्रापरेटिय बिल्डिंग मोसाइटी लिल बेस्ट गोदायरी कालनी स्कीम बाई अध्यक्ष येलूरू (श्रन्तरिती)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाही शुरू करता हू।

उक्त सम्पत्ति को अर्थन को संबंध में कोई भी आक्षोप :----

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारील से 45 दिन की अविधि या तस्सवंधी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (का) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हित-बद्ध किसी व्यक्ति द्वारा, अधोहस्ताक्षरी के पार लिखित में किए जा सकोंगे।

स्पव्यक्तिरण: --इसमें प्रयुक्त कान्यों और पदों का, जो उस्त अभिनियम, के अध्याम 20-क में परिभाषित हैं, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याम में दिया गमा है।

बन्सूची

खुली जमीन सोमावरपाडू, येलूरू, ग्रार० एस० न० 64 विस्तीर्ण 1.20 सेंट रिजस्ट्रीकृत विलेख न० 2139/82, रिजस्ट्रीकर्त्ता ग्रिधकारी येंलूर ।

ण्म० जेंगन मोहन, सक्षम ग्रधिकारी, सहायक श्रायकर ग्रायुक्त निरीक्षण), ग्रर्जन रेंज, हैवराबाद

धिनांक: 8-12-1982

प्ररूप आई. टी. एन. एस. -----

आयकर जिथिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-घ (1) के अधीन सचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) ग्रर्जन रेंज, हैदराबाद

हैदराबाद, दिनांक 8 दिसम्बर1982

निर्देश सं० आर० ए० सी० नं० 34/82-83--यतः मुझे, एम० जेगन मोहन,

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-स के अधीन सक्षम प्राधिकारी को, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/-रु. से अधिक है

शौर जिसकी सं० श्रार० एस० नं० 89/1 है तथा जो 2 सो-ौमाबरपाडू येलूर में स्थित है (ग्रौर इससे उपाबद्ध श्रनुसूची में श्रर पूर्ण रूप से वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्त्ता श्रधिकारी के कार्यालय येलूरू में भारतीय रजिस्ट्रीकरण ग्रधिनियम 1908 (1908 का 16) के ग्रधीन दिनांक, श्रप्रैल, 1982

को पूर्वोक्त संपत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के रहयमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुफ्ते यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त संपत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके रहयमान प्रतिफल से एसे रहयमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितीयां) के बीच एमे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखित में वास्तविक रूप से कथित नहीं किया गया है:---

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के बायित्व में कमी करने था उससे बचने में सूविधा के लिए; और/पा
- (स) एसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को, जिन्हों भारतीय आय-कर अधिनियम, 1922 (1922 के 11) या उक्त अधिनियम, या धनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था छिपाने में सुविधा के लिए;

अतः अब, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण में, मैं, उक्त अधिनियम की धारा 269-व की उपधारा (1) के अधीन निम्नलियिन व्यक्तियों, अर्थात :---

- (1) के॰ महालक्ष्मी पति वेंकटेश्वर राव, येंलूर (ग्रन्तरक)
- (2) दि गेलूरू को-म्रापरेटिव बिल्डिंग सोसाइटी लि॰ वेस्ट गोदावरी कालोनी स्कीम वाई श्रद्ध्यक्ष येलूरू (श्रन्तरिती)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हूं।

उक्त सम्परित के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी बाक्षेप :--

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की सारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकोंगे।

स्पष्टीकरण: ---इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम, के अधीन 20-क में परिभाषित हैं, वहीं अर्थ होगा, जो उस अध्याय में दिया गया है।

वनुसूची

खुली जमीन सोमावरपाडू येलूरू, ग्रार० एस० नं० 89/1 श्रौर 89/2 विस्तीर्ण 1-10-1/2 सेंटस् रजिस्ट्रीऋत विलेख नं० 2110/82 रजिस्ट्रीकर्ता ग्रिधिकारी येंलूरू।

एम० जेगन मोहन, सक्षम ग्रधिकारी सहायक श्रायकर श्रायक्त (निरीक्षण) श्रर्जन रेंज, हैदराबाद

दिनांक: 8-12-1982

प्ररूप बार्ड. टी. एन. एस.-----

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-च (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरक्षिण) अर्जन रेंज, हैदराबाद

हैदराबाद, दिनांक 8 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० श्रार० एस सी० नं० 343/82-83--यतः मुझे, एम० जेगन मोहन,

भायकर अभिनियम., 1961 (1961 का 43) जिसे इसमें इसके परभात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारः 269-ख के अभीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- रा. से अधिक है

श्रीर जिसकी सं० डी० 3162 है, जो तन्कू में स्थित है (श्रीर इससे उपाबढ़ श्रनुस्ची में श्रीर पूर्ण रूप से वर्णित है) रिजस्ट्रीकर्त्ता श्रधिकारी के कार्यालय तन्कू में भारतीय रिजस्ट्री-करण श्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के श्रधीन, दिनांक श्रवीन 1982

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के स्त्यमान प्रतिफल के लिए अंतरित को गई है और मूफे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके स्त्यमान प्रतिफल से, एसे स्त्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अंतरक (अंतरकों) और अंतरिती (अंतरितियों) के बीच एसे अंतरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल निम्नलिखित उदवरिय से उक्त अंतरण लिखित में वास्त्यिक रूप से कथित नहीं किया गया है:---

- (क) अंतरण से हुई किसी आयुकी बाबस, उक्त अधिनियम के अधीन कर देने के अंतरक के बायित्व में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए; और/या
- (ख) एसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों कों, जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अंतरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया या या किया जाना चाहिए था, छिपाने में स्विधा के लिए;

अप्त. अर्ब, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसूरण भें, में, उक्त अधिनियम की धारा 269-घ की उपधारा (1) को अधीन, निम्मसिखित व्यक्तियों, अर्थासु .--

- (1) 1. श्री एस० रामाराव पिता गोपालम
 2. श्री एस० गोपालकृष्ण पिता रामारावे, तन्कृ
 (अन्तरक)
- (2) एम ० कोवरा राव पिता मत्यूज्यडू तनूकू (भ्रन्तरिती)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्स सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हुं।

उक्त सम्पत्ति के सम्बन्ध में कोर्ছ भी आक्षेप :---

- (क) इस सूचना के राजपक मे प्रकाशन की तारोख से 45 दिन की अविध या तत्मम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविध, जो भी अविध बाद में समाप्त होती हो, के भीतर प्रवेकित व्यक्तियों मे से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (स) इस सूचना के राजपत्र मं प्रकाशन की ताराय स 45 दिन के भीतर उक्त स्थात्रर सम्पत्ति में हित-बद्ध किमी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में अन्य किए जा सकेगे।

स्पष्टीकरण: -- इसमं प्रयक्त शब्दो और पदों का, जा अक्त अधिनियम के अध्याय 20-क में परिभाषित है, वही अर्थ होगा, जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनुसूची

घर संपत्ति, घर नं० 3162 विस्तीर्ण 199 1/2 सेटस्-तनूक्, रजिस्ट्रीकृत विलेख नं० 963/82 रजिस्ट्रीकर्ता ग्रिधिकारी तवूक्

> एम० जेगन मोहन, सक्षम श्रधिकारी महायक श्रायकर श्रायुक्त (निरीक्षण) ग्रजैन रेंज, हैदराबाद

दिनोंक: 8-12-1982

प्ररूपः आर्दाः टीः एनः एसः, -----

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की भारा 269-घ (1) के अभीन सुचना

भारत सुरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्स (निरीक्षण) श्रर्जन रेंज हैदराबाद

हैदराबाद, दिनांक 8 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० श्रार० ए० सी० नं० 344/82-83—यतः मुझे, एम० जोगन मोझन,

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की भारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मून्य 25,000/- रा. सं अधिक है

और जिसकी सं० धार० एस० नं० 6/1 है, जो ताडेपल्लीग्डम में स्थित है (श्रौर इससे उपाबद्ध धनुसूची में धौर पूर्ण रूप से विणत है), र्राजस्ट्रीकर्त्ता ग्रिधकारी के कार्यालय, ताडेपल्ली-गूडम में भारतीय रिजस्ट्रीकरण ग्रिधनियम, 1908 (1908 का 16) के ग्रधीन, दिनांक श्रप्रैल, 1982

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उण्यत बाजनर मूल्य से कम के इश्यमान प्रतिफाल के लिए अन्तरित की यह है और मुझा यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उण्यत बाजार मूल्य, उसके दश्यमान प्रतिफाल से, ऐसे दश्यमान प्रतिफाल का पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अंतरक (अंतरका) और अंतरिती (अंतरितियाँ) के बीच ऐसे अंतरण के लिए तय पाया प्रतिफाल निम्निलिखित उद्योदय से उक्त अंतरण लिखित मे वास्तिक रूप में कथित नहीं किया गया है:---

- (क) अन्तरण से हुई किसी आयं की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्व में कभी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए; और/या
- (स) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों की, जिन्हों भारतीय आय-कर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा के लिए;

जतः अब उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण में, में, उक्त अधिनियम की धारा 269-म की उपधारा (1) के अधीन निम्निजिखित व्यक्तियों, अर्थात :--- (1) श्री पी॰ बेंकटेशवर राव पिता नरसम्या, श्रीर श्र एक 10 वां वार्ड, ताडेपल्लीगुंडम ।

(भ्रन्तरक)

(2) श्री पी० सत्या महिनारायण पिता वेंकटा सुअवाराव, 10 वी वार्जा, ताडेपल्लीगूडम

(अन्तरिती)

का **यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त** सम्मक्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हुं।

उन्त सम्पत्ति के अर्थन के संबंध में कोई भी आक्षेप :--

- (क) इस स्वना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीब से 45 दिन की अविधि या तत्संबंधी व्यक्तियों पर सूपना की तामिल से 30 दिन की अविधि, जो भी क्विधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वीक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति सुवारा;
- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकानन की तारींच से 45 विन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में दितवव्ध किसी अन्य व्यक्ति द्यारा, अभोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकेंगे।

स्मक्दीकरमः:--इसमें प्रयुक्त कव्दों और पर्धों का, जो उक्त अधिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित ही, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में विया गया है।

मन्स्ची

खुली जमीन, ताडेपल्लीगूडम, श्रार० एस० नं० 6/1, विस्तीर्ण 525, चौ० गज रजिस्ट्रीकृत विलेख नं० 1466/82, रिबस्ट्रीकर्ला अधिकारी ताडेपल्लीगुंडम

एम० जेगन मोहन, सक्षम प्रधिकारी सहायक भ्रायकर भ्रायुक्त (निरीक्षण), श्रर्जन रेंज, हैदराबाद

विनांक: 8-12-1982

प्ररूप गाइँ. टी. एन. एस. -----

मायकर मिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारी 269-म (1) के मधीन सुचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक भायकर भायकत (निरीक्षण)

म्रर्जन रेंज हैदराबाद

हैदराबाद, दिनांक 8 दिसम्बर 1982

निर्वेश सं० प्रार० ए० सी० नं० 345/82-83--यतः मुझे, एम० जेगन मोहन,

ग्रायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात 'उक्त प्रधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-च के अधीन सभम प्रधिकारी को, यह विक्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/अध्यये से प्रधिक है

भौर जिसकी सं०एस० नं० 215 है, जो गोदारीगूंटा काकीनाडा में स्थित है (भौर इससे उपानदा अनुसूची में भौर पूर्ण रूप से वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्ता भिष्ठकारी के कार्यालय, काकीनाडा में भारतीय रजिस्ट्रीकरण प्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के भ्रधीन, दिनांक भन्नेल, 1982।

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मृह्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए धन्तरित की गई हैं धीर मृह्ये यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मृह्य, उतके दृश्यमान प्रतिफल से, ऐसे दृश्यमान प्रतिफल का पम्ब्रह प्रतिशत से प्रधिक है घोर धन्तरक (धन्तरकों) घोर अन्तरिती (धन्तरितियों) के बीच ऐसे धन्तरण के लिए तय पाथा गया प्रतिफल, निम्नविधित बहेश्य ने उक्त अन्तरण लिखित में बास्तविश्व कप से क्रियत मही किया बया है:——

- (क) प्रन्तरण से हुई किसी ग्राम की बाबत छवत प्रधि-वियम के प्रधीन कर देने के प्रन्तरक के दायिका म कमी करने या उससे बचने में सुविधा के किए। धौर/या
- (ख) ऐसी किसी घाय या किसी धन या अग्य घास्तियों को, जिन्हें भारतीय घायकर प्रधितियम, 1922 (1922 का 11) या उनत प्रधितियम, या धन-कर प्रधितियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थं ग्रन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया या या किया जाना काहिए या खिपाने में सुकिया के लिए;

अतः अबः उस्त प्रधिनियम की बाद्य 269-म के ध्रमुखरण में, में, उस्त प्रधिनियम की धारा 269-व की उपबाद्य (1) हो मुधीन,, मिन्नुसिहित स्मृतित्यों, स्वात् १---

- (1) श्री एम० बेंसं कृष्णा पिता श्री वेंकटेश पिता सरव-रायूडू, काकीनाडा, इस्ट गोधावरी जिला (ग्रन्तरक)
- (2) श्री के० वी० सत्यंद्रा मदन पिता श्री श्यामसुन्दर रंगाराव, काकीनाडा, इस्ट गोदावरी जिला। (श्रन्तरिती)

को यह मूचना जारी करके पूर्वोंकत सम्मति के शर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हूं।

उकत सम्पत्ति के अर्जन के सम्बद्धिय में कोई भी आक्षीप :---

- (स) इस सूचना के राजपक्ष में प्रकाशन की तारीख से 45 विन की अवधिया तस्संबंधी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अवधि, जो भी अवधि बाद में समाप्त होतो हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा ;
- (ख) इस मूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 विन के भीतर उन्त स्थावर सम्पत्ति में द्वितवस किसी अन्य स्थित द्वारा, अधोशस्ताकारी के पास निवित में किए जा सकेंगे।

स्पब्दीकरण:--इसमें प्रयुक्त शब्दों कौर पर्यों का, जो उनत क्रिक्ष-नियम के प्रक्याय 20-क में परिभाषित हैं, वहीं मर्थ होगा,जो उस शब्याय में दिया गया है।

anu di

1 एकड़ भूमि गोदारीगूंटा, गजिटेड आफिरस्सं कालोनी के पीछे एस० नं० 215 वार्ड नं० 2, ब्लाक नं० 2, काकीनाडा, रजिस्ट्रीकृत विलेख नं० 2983/82, रजिस्ट्रीकर्ता ग्रधिकारी काकीनाडा ।

> एम० जेगन मोहन, सक्षम ऋधिकारी सहायक ग्रायकर ग्रायुक्त (निरीक्षण), श्रर्जन रेंज, हैदराबाद

दिनांक: 8-12-1982

प्ररूप आहर्ष. टी एन एस.-----

भायकर मिपिनियम, 1961 (1961 का 43) की भारा 269-ए (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण)

ग्रर्जन रेज, हैदराबाद

हैधराबाध, दिनाक 8 दिसम्बर 1982

निर्वेश सं० धार० ए० सी० ने० 346/82-83-यतः मुझे, एम० जोगन मोहन,

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके परकात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है"), की धारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी की, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सपत्ति जिसका उचित बाजार मृत्य 25,000/-रा से अधिक है

श्रीर जिसकी स० एस० नं० 215 है, तथा जो गोधारीगूटा काकी-नाडा में स्थित है (श्रीर इससे उपाबद्ध श्रनुसूची में श्रीर पूर्ण रूप से वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्त्ता श्रधिकारी के कार्यालय, काकीनाडा में भारतीय रजिस्ट्रीकरण श्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के श्रधीन, दिनाक श्रप्रैल, 1982

को पूर्वेक्ति सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के दरयमान प्रितिफल के लिए अन्तरित की गई है और मूक्ते यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दरयमान प्रतिफल से, ऐसे दरयमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितयों) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल निम्निलिखित उद्देष्य से उक्त अन्तरण लिखित में वास्तविक रूप से कथित नहीं किया गया है:——

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत उक्त अधि-नियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए, और/या
- (ख) एसी किसी आय या किसी धन या अन्यं आस्तियों को, जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम या धन कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था किया जाना चाहिए था, छिपाने में सूविधा के लिए;

अत⁷ अब, उक्ते अधिनियम, की धारा 269-ग के अनुसरण में, मैं, उक्त अधिनियम की धारा 269-ज की उपधारा (1) के जधीन, निम्मिनिक्ति व्यायिनयों, अर्थात

- (1) श्री एम० वंसीकृष्णा पिता श्री वेंकटेश पिता सरवरायूडू, काकीनाडा, इस्ट गोदावरी जिला (श्रन्तरक)
- (2) श्री के० बी० मस्यंद्रा मदन पिता श्री प्रयामसुदर रगाराव, काकीनाडा, इस्ट गोधावरी जिला । (ग्रन्तरिती)

को यह सूचना आरी करके पूर्वोक्स सम्परित के अर्जन के तिए कार्यवाहिया करता हु।

उक्त सम्परित के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप :---

- (क) इस मुखना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन की अर्वाध या तत्सम्बन्धी व्यक्तिया पर स्थना की तामिल से 30 दिन की अविध, जो भी अविध नाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वीक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा,
- (ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीश्व से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर संपत्ति में हित- बव्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अभोहरताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकोंगे।

स्पष्टोकरण: --- इसमें प्रयुक्त कव्यों और पर्वो का जो उक्त अधिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित है, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

मनुसूची

1.00 एकड भूमि, गोदारीगूटा, गजेटेड भाकिसर्स कालोनी के पिछे, एम० नं० 215, वार्ड नं० 2 ब्लाक न० 2, काकीनाडा, रजिस्ट्रीकृत विलेख नं० 2971/82, रजिस्ट्रीकर्ला भ्रधिकारी काकीनाडा ।

> एम० जेगन मोहन, मक्षम प्रधिकारी, सहायक भ्रायकर भ्रायुक्त (निरीक्षण), श्रर्जन रेंज, हैदराबाद

दिनांक 8-12-1982 मोहर अरूप आहाँ, दी, एन, एस.- ------

भावकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की भारा 269-ष (1) ले अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक म्नायकर म्नायुक्त (निरीक्षण) मुर्जन रेंज, हैबराबाद

हैदराबाद, दिनांक 8 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० म्रार० ए० सी० नं० 347/82-83—यतः मुझे, एम० जेगन मोहन, न

भायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-स के अधीन सक्षम प्राधिकारी को, यह विश्वास करने का कारण है कि स्भावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- रुठ से अधिक है

भीर जिसकी सं० एस० नं० 215 है, तथा जो गोदारीगूंटा काकीनाडा में स्थित है (श्रौर इससे उपाबद्ध श्रनुसूची में श्रौर पूर्ण रूप से वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्सा श्रधिकारी के कार्यालय, काकीनाडा में भारतीय रजिस्ट्रीकरण श्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के श्रधीन, दिनांक श्रप्रैल, 1982

को पूर्वोक्त संपरित के उचित बाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मूम्मे यह विद्यास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार बृस्य, उसके दृश्यमान प्रतिकल से, एसे दृश्यमान प्रतिकल का पन्द्रह प्रतिवात अधिक है और अंतरक (अंतरकों) और अंतरिती (जन्तरितियाँ) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिकल, निम्निनिवात उव्योध्य से उक्त जन्तरण लिखित में बास्बिक रूप से कथित नहीं किया गया है:---

- (क) अन्तरण वे हुई किसी बाय की बाबत उक्त अधि-नियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्य में कमी करन या उससे बचने में सुविधा के लिए और/वा
- (ब) एंसी किसी भाग या किसी भन का बन्य आस्तियां की., जिन्हों भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम या भन कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया भा या किया जाना चाहिए था, छिपाने में स्विधा के निए;

कतः वस, उक्त अधिनियम, की धारा 269-ग के अन्यरण मो, मी, उक्त अधिनियम की धारा 269-घ की उपधारा (1) को अधीन निम्नलिकित ल्यक्तियों, अधीन:----

- (1) श्री एम० वनेसीकृष्णा पिता श्री वेंकटेश पिता भरवरायूडू, काकीनाडा, इस्ट गोदावरी जिला । (अन्तरक)
- (2) श्री के० वी० सत्यंद्रा मदन पिता श्री ृष्यामसुदर रंगाराव, काकीनाडा, इस्ट गोदावरी जिला।
 (श्रन्तरिती)

को यह स्वाना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हुं।

उक्त सम्परित के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप :---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारील से 45 दिन की अविधि मा तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वीक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (ज) इस स्वना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीय ते 45 विन के भीतर उक्त स्थावर संपत्ति में हित-बद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकोंगे।

स्थव्योकरण:--इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम के अध्याय 20-क में परिभाषित इं, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

जन्स्ची

1.00 एकर भूमि, गोदारीगूंटा, गजेटेड ग्राफिसर्स कालोनी के पीछे, एस० नं० 215 वार्ड नं० 2, ब्लाक नं० 2, काकीनाडा, रजिस्ट्रीकृत विलेख नं० 2970/82, रजिस्ट्रीकर्ना ग्रधिकारी काकीनाडा ।

> एम० जेगन मोहन, सक्षम श्रधिकारी, सहायक श्रायकर श्रायुक्त (निरीक्षण), श्रर्जन रेंज, हैदराबाद

विनांक: 8-12-1982

प्ररूप आई. टी. एन. एस. -----

बायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-घ (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) श्रर्जन रेंज, हैदराबाद

हैदराबाद, दिनांक 7 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० म्रार० ए० सी० नं० 348/82-83---यतः मुझे, एम० जेगन मोहन,

बायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमे इसके परकात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया हैं), की धारा 269 स के अधीन सक्षम प्राधिकारी को, यह विद्यास करने का कारण हैं कि स्थावर सम्परित, जिसका उचित बाजार मृत्य 25,000/ रु. से अधिक हैं

ग्रीर जिसकी सं० 22-2-67 है तथा जो चौउता गुंटूर में स्थित है (ग्रीर इससे उपाबढ़ अनुसूची में ग्रीर पूर्ण रूप से वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्त्ता ग्रधिकारी के कार्यालय, गूटूर में भारतीय रजिस्ट्रीकरण ग्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन, दिनांक ग्रीज, 1982

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के दूरयमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मूफे यह विद्वास करने के कारण है कि यथापूर्वोक्त संपत्ति का उचित बाजार मूल्य उसके दृश्यमान प्रतिफल से एसे दृश्यमान प्रतिफल का पन्त्रह प्रतिचात अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितयों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त भन्तरण लिखित में वास्तविक रूप से कथित नहीं किया गया है:---

- '(क) अन्तरण से हुइ किसी जाय की बाबत, उक्त अधिनियम को अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे बच्चने में सुविधा के लिए; और/या
- (क) एति किसी नाय या किसी धन या अन्य आस्तियों को, जिन्हें भारतीय नाय-कर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम या अन्कर अधिनियम या अन्कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना आहिए था, छिपाने में स्विधा के लिए;

अतः अब, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसर्भ में, में उक्त अधिनियम की धारा 269-म की उपधारा (1) के अधीन, निम्नलिखित व्यक्तियों, अधीत्:—

- (1) एस० नं० चलपतीराव पिता म्रापय्या, लालापेट गुंटूर (ग्रन्तरक)
 - (2) श्री चंपाला पिता मीश्रीमाल. चौन्ना, गुंटूर (श्रन्तरिती)

को यह सुचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हुं।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप :---

- (क) इस स्चना के राजपत्र में प्रकाशन की तारी इसे 45 दिन की अविध या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर स्चना की तामील से 30 दिन की अविध, जो भी अविध बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वों कर व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वार;
- (क) इ.स. सूजना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीक से 45 किन के भीतर उक्त स्थावर सम्मस्ति में हितबक्थ किसी जन्म व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पाइ लिखिल में किए जा सकींजे।

स्थव्यक्तिरणः ---इसमें त्रयुक्त कव्यों और पर्वो का, जो 'उक्त अभिनियम', के अध्याय 20-क में परिभावित हैं, वहीं कर्ष होगा, जो उस अध्याय में विया गया है।

भनुसूची

घर संपत्ति, गुंटूर नगर, लालापेट, कपेड़े का बाजार, मुनीसीपाल वार्ड नं० 11, ब्लाक गं० 24, नगर धर्वे० नं० 404, म्यूनीसीपल धर्सेसमेंट नं० 29751, घर नं० 22-2-77, रजिस्ट्रीकृत विलेख नं० 4287/82 रजिस्ट्रीकृती घ्रधिकारी गूंटूर।

एम० जेगन मोहन, सक्षम श्रधिकारी महायक श्रायकर श्रायुक्त (निरीक्षण), श्रर्जन रेंज, हैदराबाद

दिनांक: 7-12-1982

प्ररूप आई.टी एन.एस.-----

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-घ (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण)

श्रर्जन रेंज, हैदराबाद

हैवराबाद, विनांक 7 विसम्बर 1982

निर्देश सं० श्रार० ए० मी० नं० 349/82-83-यतः मुझे, एम० जेगन मोहन,

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-स के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थायर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- रा. से अधिक है

श्रौर जिसकी सं० 22-2-67 है, तथा जो चौडवा गुटूर में स्थित है (श्रौर इसमें उपाबद्ध श्रनुसूची में श्रौर पूर्ण रूप से वर्णित है) रजिस्ट्रीकर्त्ता श्रधिकारी के कार्यालय, गुंटूर में भारतीय रजिस्ट्रीकरण श्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के श्रधीन, दिनांक श्रप्रैल, 1982

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से क्षम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और म्भे यह विद्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, इसके दृश्यमान प्रतिफल से, एसे दृश्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अंतरक (अंतरकों) और अंतरिती (अन्तरितियों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया ग्या प्रतिफल निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अंतरण लिखित में बास्तविक रूप से कथित नहीं किया गया है:——

- (क) अंतरण से हुई किसी आय की वाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अंतरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए; और/या
- (ख) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को, जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धनकर अधिनियम, या धनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अंतरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था छिपाने में सुविधा के लिए;

अतः अब, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण कों, मैं, उक्त अधिनियम की धारा 269-भ की उपधारा (1) के अधीन, निम्नलिखित व्यक्तियों, अर्थात् :--- 27--416GI/82

(1) 1. श्री एस० नरेन्द्र कुमार 2 ध्रानंद पिता एस० नरेन्द्रकुमार पालक ध्रौर पिता श्री नरेन्द्र कुमार, लालापेटा, क्लाथ बाजार गृंट्र

(ग्रन्तरक)

(2) श्री चंपाला पिता मीश्रीमाल, चौवा, गुंटूर (ग्रन्तरिती)

को यह सूचना जारी करके पूर्विक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हुं।

उक्त संपरित के अर्थन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप :--

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख ते 45 दिन की अविधिया तत्सम्बन्धी व्यक्तिकों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्स व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशत की तारौं है ते 45 विन के भीतर उक्त स्थाघर सम्पत्ति में हित-बद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहम्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकेंगे।

स्पाद्धीकरण: -- इसमे प्रयुक्त शब्दों और पदो का, जो उपत अधिनियम के अध्याय 20-क में पैरभावित है, वहीं अर्थ होगा जो उसा अध्याया में दिवा गमा है।

अनुसूची

घर संपत्ति घर नं. 22-2-67, विस्तीर्ण 404-6/9, वार्ड नं० 11, ब्लाक नं० 2, सर्वे० नं० 404, रजिस्ट्रीकृत विलेख नं० 4288/82, रजिस्ट्रीकर्त्ता ग्रिधकारी गुंटूर।

> एम० जेगन मोहन, सक्षम ग्रंधिकारी सहायक ग्रायकर ग्रायुक्त (निरीक्षण), ग्रर्जन रेंज, हैदराबाद

दिनांक: 7-12-1982

मोहर ः

प्ररूप आई. टी. एन. एस. -----

क्षायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-घ (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आय्क्त (निरीक्षण)

अर्जन रेंज, हैदराबाद हैदराबाद, दिनांक 18 नवम्बर 1982

निर्वेश सं० म्रार० एस सी० नं० 350/82-83-यतः मुझे, एम० जेगन मोहन,

बायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'जक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269- का के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- रा. से अधिक है

मौर जिसकी सं० ग्रार० एस० नं० 60/2 है, तथा जो के० खंडीकमधीपाड विजयवाडा में स्थित है (ग्रीर इससे उपावद्य मनुसूची में श्रीर पूर्ण रूप से वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्ता ग्रीध-कारी के कार्यालय, विजयवाड़ा में भारतीय र्सजस्ट्रीकरण प्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के ग्रधीन, विनांक ग्रिजल, 1982

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के इश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुक्ते यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से, ऐसे दृश्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अंतरक (अंतरकों) और अन्तरिती (अन्तरितियों) के बीच अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखित में वास्तिक कप से किया गया है:---

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए; और/या
- (स) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को, जिन्हें भारतीय आय-कर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धनकर अधिनियम, या धनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था खिपाने में स्विधा के लिए;

अतः अब, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसारण मों, मीं, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग की उपधारा (1) के अधीन, निम्नलिखित व्यक्तियों, अर्थात् :-- (1) श्रीमती सरोजनी देवी बी०पति श्री बी० नागभूशनमं मागासराजापूरम, विजयवाडा

(भ्रन्तरक)

(2) वि श्रांध्रा सीमेंट, को० एम्पलाइज एंड इंडस्ट्रीयल वर्क्स को-श्रापरेटिव हाऊसिंग सोसाइटी, लि० बाई श्रध्यक्ष श्री यू०वी० जी० कृष्णा मूर्ति पिता वेंकटा सुब्बाराव विजयवाड़ा

(भ्रन्तरिती)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हुं।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन के संबंध में कोई भी आक्षेप :---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों प्रस् सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वीक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबब्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकोंगे।

स्पक्कीकरण: --इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम के अध्याय 20-क में परिभाषित है वही अर्थ होगा, जो उस अध्याय में दिया गया है।

अमुस्पी

भूमि विस्तीर्ण 5 एकड़, 39 सेंटस्, कुंडावरी खंड्रीका, पथी-पाडू पंचायतः विजयवाड़ा, तालुक रजिस्ट्रीकृत विलेख न० 4070/82, रजिस्ट्रीकर्त्ता श्रिधकारी विजयवाड़ा

> एम . जेगन मोह्न, सक्षम श्रधिकारी सहायक श्रायकर श्रायुक्त (निरीक्षण), श्रजैन रेंज, हैदराक्षाद

दिनांक: 18-11-1982

मोहरः

प्ररूप आर्इ. टी. एन. एस. -----

जायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-घ (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्याक्षय, सहायक आयकर आयक्त (निरीक्षण) अर्जन रेंज, हैदराबाद

हैक्राबाद, किनाँक 18 नवम्बर 1982

निर्देश सं० आर० ए० सी० नं० 351/82-83—यतः मुझे, एम० जेगन मोहन,

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पर्वात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/-रु. से अधिक है

भौर जिसकी सं० डी० नं० 14-37/27 है, तथा जो महाराणी-पेट वैझाग में स्थित है (ध्रीर इससे उपाबद धनुसूची में भौर पूर्ण रूप से वर्णित है), रिजस्ट्रीकर्त्ता घ्रधिकारी के कार्यालय, वैझाग में भारतीय रिजस्ट्रीकरण श्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन, दिनांक, श्रप्रैल, 1982

को पूर्वोक्त सम्मत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के स्वयमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुक्ते यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्मत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से ऐसे दृश्यमान प्रतिफल का पन्नह प्रतिक्षत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अंतरितियों) के बीच अंतरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखित में बास्तविक रूप से कथित नहीं किया गया है:---

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्त बिधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए; और/या
- (स) एंसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को, जिन्हें भारतीय आय-कर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोज-नार्थ अन्तरिती व्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था छिपाने में सुविधा के लिए;

जतः अस, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसूरण में, मैं उक्त अधिनियम की धारा 269-घ की उपभारा (1) के जभीम निम्नसिक्ति स्पक्तियों, अर्थात् ::——

(1) श्री डी॰ एन॰ शुभद्रा देवी पति डा॰ एन॰ गोविंद रायुलू, घर नं॰ 9-3-12, सेंट, जान रोड़, सिंकवरा-बाद ।

(ग्रन्तरक)

(2) श्री के॰ सुक्रामण्यप्यराराव पिता लेट नागभूमनम, वैक्राग फांऊड्रीज इस्टेट, वैक्राग ।

(भ्रन्तरिती)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हुं।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन के संबंध में कोई भी आक्षेप :---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पूर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वीकत व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (का) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीक से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबक्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकोंगे।

स्पर्धांकरण: - इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, ओ उक्त अधिनियम के अध्याय 20-क में परिभाषित है वहीं अर्थ होगा, जो उस अध्याय में विका गया है।

वन्स्ची

धर संपति डी० नं० 14-37-27 ब्लाक नं० 4, टी० एस०नं० 138, प्लाट नं० 23, महाराणीपेट वैझाग, विस्तीर्ण 393 चौ०बज० रजिस्ट्रीकृत विलेख नं० 4267/82, रजिस्ट्री-कर्त्ता ग्रिक्षिकारी वैझाग।

> एम० जेगन मोहन, सक्षम प्राधिकारी सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) श्रर्जन रेंज, हैदराबाद

दिनांक: 18-11-1982

गोहर :

प्ररूप आई. टी. एन. एस. ----

कायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-ध (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (मिरीक्षण) प्रार्जन रेंज, हैदराबाद हैदराबाद, दिनाक 18 नवस्वर 1982

निर्देश संब्ह्यारव एव सीव नंव 352/82-83--यतः मुझे, एमव जेगन मोहन,

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पहचात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है'), की धारा 269-इन के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विद्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/-रु. से अधिक हैं

भौर जिसकी सं० डी० नं० 27-16-174 है, तथा जो विजयवाड़ा में स्थित है (भौर इससे उपाबद अनुसूची में भौर पूर्ण रूप मे विणत है), रजिस्ट्रीकर्त्ता अधिकारी के कार्यालय, विजयवाडा में भारतीय रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन, दिनांक अभैल, 1982

को पूर्वों कत संपत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अंतरित की गई है और मूफ्ते यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वों क्स संपत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से, एसे दृश्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत से अधिक ही और अन्तरक (अन्तरकाँ) और अन्तरित (अन्तरितयाँ) के भीच एसे अन्तरण के लिए त्य पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्यों से उक्त अन्तरण लिखित में वास्तिवक रूप से किथित नहीं किया गया है:—

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबस, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के वायित्य में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए; और/या
- (क) एसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियाँ को जिन्हों भारतीय आय-कर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्त्रिती द्वारा प्रकट नृहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में स्विधा के लिए।

अतः अव, उक्त अधिनियमं की भारा 269-ग के अनुसरण मों, मैं उक्त अधिनियम की भारा 269-भ की उपभारा (1) के अभीन निम्नलिसित व्यक्तियों, अभीत् :---

- (1) 1. श्रीमती ए० विमला पति प्रसाद राव गुंटूर श्रीर ग्रन्थ तीन, गव्हरनपेट, विजवाड़ा, जिला कृष्णा (ग्रन्तरक)
- (2) श्री टी० बी० हनूमंतराव पिता लेट चीनारायागारू म्रलिबेगस्ट्रीट गव्हरनपेट, विजवाडा ।

(अन्तरिती)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन् के लिए कार्यवाहियां शुरु करता हुं।

उक्त सम्पत्ति के अर्थन के सम्बन्ध में कोई भी अक्षेप: --

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविध , जो भी अविध बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्विस व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति खुवारा;
- (स) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबब्ध किसी अन्य व्यक्ति ब्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकोंगे।

स्पष्टीकरण: --- इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम के अध्याय 20-क में परिभाषित ह³, वही अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनुसूची

घर संपत्ति घर नं० 27-16-174, गव्हरतपेट, मुनी-सीपल वार्ड नं० 27, रेवेन्यू वार्ड नं० 9, ब्लाक नं० 5, एन० टी० सी० नं० 226/1, श्रसेसमेट नं० 2932-ए०, रजिस्ट्रीकृत विलेख नं० 4046/82 रजिस्ट्रीकर्ता श्रधिकारी बिजयवाड़ा ।

> एम० जेगन मोहन, सक्षम प्राधिकारी सहायक श्रायकर श्रायुक्त (निरीक्षण) श्रजेन रेंज, हैदराबाद

दिनांक: 18-11-1982

प्ररूप आइ. टी. एन. एस.-----

नामकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-च (1) के अधीन सूचना

भारत सहकार

कार्यालय, सहायक भायकर भ्रायुक्त (निरीक्षण)

भ्रजीन रेंज, हैदराबाद हैदराबाद, दिनांक 18 नवम्बर 1982

निर्देश सं० भ्रार० ए० सी० नं० 353/82-83—यतः मुझे, एम० जेगन मोहन,

आयकर अधिनियम., 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया हैं), की धारा 269-स के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण हैं कि स्थावर संपित्त, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/-रु. से अधिक हैं

श्रौर जिसकी सं० डी० नं० 306/ए है, तथा जो कोरेटपाडू गूटूर में स्थित है (ग्रौर इससे उपाबद्ध श्रनुसूची में श्रौर पूर्ण रूप से वर्णित है), रिजस्ट्रीकर्ता श्रिधकारी के कार्यालय, गूटूर में भारतीय रिजस्ट्रीकरण श्रिधनियम, 1908 (1908 का 16) के श्रिधीन, दिनाक श्रुपेल, 1982

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मूक्ते यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त संपत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से, एसे दृशयमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत अधिक है और अंतरक (अंतरकों) और अंतरिती (अन्तरितियों) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रति-फम निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखित मे बास्त-विक कप से कथित नहीं किया गया है :---

- (क) संस्तरण से हुई किसी नाम की सावत उक्त अधि-निवध के जभीन कर दोने के अन्तरक के दायित्य में कभी करने या उससे वचने में सुविधा के लिए; और/वा
- (चा) एसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को, जिन्हें भारतीय आय-कर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था छिपाने में स्विभा के लिए;

अतः अवः, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनूसरण में, मैं., उक्त अधिनियम की धारा 269-घ की उपधारा (1) के अधीन, निम्नीलिखत व्यक्तियों, अर्थात्:—— (1) श्रीमती मीरा विवी पति पठान मिया, गूंचका गूंडूला गूंट्र

(भ्रन्तरक)

(2) मेसर्स जी० प्रंधामय्या एंड को० कोल एंड फर्टी-लाइजर्ज बाह मैनेजिंग पार्टनर, श्री जी० प्रंधामय्य पिता पूनय्या, गुंटुर

(अन्तरिती)

को यह स्थाना जारी करके पूर्वोक्त संपर्तित के अर्जन के लिए कार्य- वाहियां करता हूं।

उक्त सम्परित के अर्थन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप:--

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारी ह से 45 दिन की अविधिया तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की सामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति ब्यारा;
- (स) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हित- बद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा, अधोहस्ताक्षरी के पास लिसित में किए जा सकोंगे।

स्पष्टीकरणः--इसमे प्रयुक्त शब्दों और पर्दों का, जो उक्त अधिनियम के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं, वही अर्थ होगा, जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनुसूची

खुली जमीन, गूंजन्ना गूंड्ला, कोरेटपाडू, गूटूर मुनीसीपालटी, डी०नं० 306/ए विस्तीर्ण 822 चौ० गज रजिस्ट्रीकृत विलेख न० 4089/82 रजिस्ट्रीकर्त्ता ग्रधिकारी गृटर ।

> एम० जेगन मोहन, सक्षम प्राधिकारी सहायक ग्रायकर श्रायुक्त (निरीक्षण) श्रर्जन रेंज, हैदराबाद

दिनांक: 18-11-1982

प्रकर्ष काई. टी. एन. एस.------वायकर विधिनयम्, 1961 (1961 का 43) की भारा 269-व् (1) के अभीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण)

भ्रर्जन रेंज, हैक्राबाद

हैदराबाद, दिनांक 18 नथम्बर 1982

निर्देश सं अगर ० ए० सी० नं ० 354/82-83--यतः मुझें, एम० अगन मोहन,

आयकर अभिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके परचात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर संपत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- रह. से अधिक है

ग्रौर जिसकी सं० डी० नं० 306/ए है, जो कोरेटेंपाडू गूटूर में स्थित है (ग्रौर इससे उपाबद्ध अनुसूची में भौर पूर्ण रूप से वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्त्ता ग्रधिकारी के कार्यालय, गूंटूर में भारतीय रजिस्ट्रीकरण ग्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के ग्रधीन, दिनांक, भग्रैल, 1982

को पूर्वोक्त संपत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के स्थ्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मूक्ते यह विश्वास करने का कारण हो कि यथापूर्वोक्त संपत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके स्थ्यमान प्रतिफल से, एसे स्थ्यमान प्रतिफल के पन्त्रह प्रतिशत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितियों) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्निलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखित में वास्तविक रूप से कथित नहीं किया गया है:——

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की वावत उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्य में कमी करने या उससे वचने में सृविधा के लिए; और/या
- (ख) ऐसी किसी बाय या किसी धन या अन्य अस्थियों को जिन्हों भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धनकर अधिनियम, या धनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा के लिए।

अतः अब, उक्त अधिनियम की भारा 269-ग के अनुसरण कों, मैं उक्त अधिनियम की धारा 269-च की उपधारा (1) को अधीन, मिक्निसिसिस व्यक्तियों, जेनीत्:---

- (1) श्रीमती शक सीलाए विवि पति मौलासी, गूजान-गूंडला, कोरेटेंपाडू, सीवारू, गूंटूर (श्रन्सरेक)
- (2) मैसर्स जी० प्रद्रधामध्या एंड को० कोल एंड फर्टी-लाइजर्ज बाह मुनेजींग पार्टनर, श्री जी० प्रंधमय्य पिता पुत्रय्या, गृंदूर

(ग्रन्तरिती)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त संपत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हुई।

उक्त संपत्ति के अर्जन के संबंध में कोई भी आक्षेप :---

- (त) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीं से 45 दिन की अविधि या तत्संबंधी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वीकत व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन को रारिख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर संपित्त में हितबब्ध किसी अन्य व्यक्ति ब्वारा अधेहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकों।

स्पष्टिकरणः -- इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं, वही अर्थ होगा, जो उस अध्याय में विचा गया है।

अनुसूची

खुली जमीन, कोरेटेपाङू, गूंटूर, डी० नं० 306/ए विस्तीर्णं 775 चौ० गज रजिस्ट्रीकृत विलेख नं० 4090/82, रजिस्ट्री-कर्त्ता श्रिधकारी गृंटूर ।

> एम० जेगन मोहन, सक्षम प्राधिकारी सहायक आयकर आयुक्त (निरक्षिण) श्रर्जन रेंज, हदराबाद

विनांक: 18-11-1982

महिर:

प्रसूप आईं.टी.एन.एस. -------भायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-घ (1) के अधीन सूचना

कार्मालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) श्रर्जन रेंज, हैदराबाद हैदराबाद, दिनांक 18 नवम्बर 1982

निर्देश सं श्रार ए० सी० नं० 355/82-83--यतःमुझे, एम० जेगन मोहन,

आयक र अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पर्वात 'उक्तः अधिनियम' कहा गया है), की भारा 269-ख के अधीन सक्षम प्रधिकारी को, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर संपरित, जिसका उचित बाजार मृल्य 25,000/- रु. से अधिक है

ग्रौर जिसकी सं० शि० नं० 306/ए है, तथा जो कोरेटेंपाडू गूंटूर में स्थित है (श्रौर इससे उपाबद्ध श्रनुसूची में श्रौर पूर्ण रूप से विजत है), रजिस्ट्रीकर्ता श्रधिकारी के कार्यालय, गूंटूर में भारतीय रजिस्ट्रीकरण श्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के श्रधीन, दिनांक, श्रप्रैल, 1982

को पूर्वोक्त संपरित के उचित बाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुभ्ने यह विश्यस करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त संपत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से एसे दृश्यमान प्रतिफल के पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितियों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखित में वास्तिक रूप से किथत नहीं किया गया है:——

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की नाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अस्तरक के वायित्व में कमी करने या उससे अधने में सुविधा के लिए; और/या
- (स) एसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को जिन्हें भारतीय आय-कर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती बुवारा प्रकट नहीं किया गया भा या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा के लिए।

अतः अव, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण में ,मैं उक्त अधिनियम की धारा 269-थ की उपधारा (1) के अधीन, निम्निसित व्यक्तियों, अर्थात् :--

- (1) श्रीमती शक सीलार विवि पति मौलासी, गूजान-गूंड्ला कोरेटेपाडू, सीवारू, गूंटूर
 - (अन्सरक)
- (2) मैसर्स जी० प्रधामय्या एंड को० कोल एंड फर्टी-लाइजर्ज बाइ मनेजिंग पार्टनर, श्री जी० प्रधमय्यन पिता पुत्रय्या, गूंटूर ।

(अन्तरिती)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हूं।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन के संबंध में कोई आक्षोप :--

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोंक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति च्वारा;
- (ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्परित में हितबद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अक्षेहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकोंगे।

स्यव्यक्तिकरणः — इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदौं का, जो उक्त अधिनियम के अध्याय 20-क में परिभावित हैं, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में विया गया है।

ननुसुची

खुली जमीन, कोरेटेपाडू, गूंजन्ना गूंटूर, मुनीसीपलिटी डी॰ नं॰ $306/\sqrt{0}$, बिस्तीर्ण $822 \ 1/2$, चौ॰ गज रजिस्ट्रीकृत बिलेख नं॰ 4088/82, रजिस्ट्रीकर्त्ता मधिकारी गूंटूर ।

एम० जेगन मोहन, सक्षम प्राधिकारी सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) श्चर्जन रेंज, हैदराबाद

दिनांक: 18-11-1982

प्ररूप आइ. .टी. एन. एस . ------

बायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-घ (1) के अधीन स्वना

भारत सरकार

कार्यालयः, सहायक आयकर आयुक्त (निरक्षिण) अर्जन रेंज, हैंदराबाद

हैवराबाद, दिनांक 18 नवम्बर 1982

निर्देश सं० आर० ए० सी० नं० 356/82—83—यतः मुझे, एम० जेगन मोहन,

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमे इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-स के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- रु. मे अधिक है

और जिसकी सं० 12-17-21 है, तथा जो आर्यपूरम राजमुड़ी में स्थित है (और इंससे उपाबद्ध अनुसूची में और पूर्ण रूप में वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्त्ता अधिकारी के कार्यालय, राजमुंड़ी में भारतीय रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन, दिनांक, अप्रैल, 1982

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के उर्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मूक्षे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके उर्यमान प्रतिफल सं, एसे उर्यमान प्रतिफल का पन्त्रह प्रतिशत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरका) और अन्तरिती (अन्तरितियों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिक्ष कल निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखित में वास्तिवक रूप से किथत नहीं किया गया है।—

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के बायित्व में कभी करने या उससे अचने में सुविधा के लिए; और/या
- (ख) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को, जिन्हें भारतीय आय-कार अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धनकर अधिनियम, या धनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती व्वारा प्रकट नहीं किया गमा था, या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा के लिए;

(1) श्री ए० मीतामहालक्ष्मी पति शक्षाचलम, आर्यपूरम, राजमुंड़ी ।

(अन्तरक)

(2) श्री जे॰ वेंकटश्वर राव पिता शणाआवतारम, बंदाध्वारीस्ट्रीट, राजमुंड्री

(अन्तरिती)

को यह मृचना जारी करके पृवाँक्त सम्पर्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां शुरु करता हुं।

उक्त सम्परित के बर्जन के सम्बन्ध में कोई भी बाक्षेप:--

- (क) इस मूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारी हैं से 45 दिन की अविध या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविध, जो भी अविध दाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हित- अधुध किसी अन्य व्यक्ति स्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकोंगे।

स्पष्टीकरण:--इसमे प्रयुक्त शब्दों और पदो का, जो उक्त अधिनियम के अध्याय 20-क मे पारिभाषित है, वही अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनुसूची

घर नं० 12–17–21, आर्यपूरम, राजमुंड्री, विस्तीर्ण 245 चौ० गज र्राजस्ट्रीकृत विलेख नं० 2339/82, रजिस्ट्रीकर्ता अधिकारी राजमुंड्री ।

> एम० जेगन मोहन, मक्षम प्राधिकारी महायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण), अर्जन रेंज, हैदराबाद

अतः अब उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण भें, मैं, उक्त अधिनियम की धारा 269-व की उपधारा (1) के अधीन, निम्निसिखित व्यक्तियों, अर्थात् :---

दिनांक: 18-11-1982

प्ररूप आहाँ, टी. एन एस. ----- >---

आयकर भिधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-थ (1) के भ्रधीन मुचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण)

अर्जन रेंज, हैसराबाद

हैदराबाद, दिनांक 18 नवम्बर, 1982

निर्देश सं० आर० ए० सी० नं० 357/82-83---यतः मुझे, एम० जेगन मोहन,

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके परनात् 'जक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-ए के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्परित, जिसका उपित बाजार मूल्य 25,000/- रह. से अधिक है

और जिसकी सं० डी० नं० 28 है, तथा जो कोरेटेपाडू गुंटूर में स्थित है (और इससे उपाबद्ध अनुमूची में और पूर्ण रूप से वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्ता अधिकारी के कार्यालय, गुंटूर में भारतीय रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन, दिनांक अप्रैल, 1982

को पूर्वों कत सम्पत्ति के उचित बाजार मृल्य से कम के स्प्रयमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुक्ते यह विद्वास करने का कारण है कि यथापूर्वों कत सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके स्वयमान प्रतिफल से, ऐसे स्वयमान प्रतिफल का पन्सह प्रतिशत से अधिक है और अतरक (अंतरकों) और अंतरिती (अन्तरितियों) के बीच ऐसे अंतरण के लिए तय पाया मया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अंतरण लिखित में वास्तिक रूप से का थित नहीं किया गवा है:—

- (क) अंसरण से हुई किसी आय की बाबता, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के वायित्व में कभी करने या उससे बचने में सृविधा के लिए; और/या
- (ख) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य जास्तियों की, जिन्हों भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम या धनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अंतरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था छिपाने में स्विधा के लिए,

अतः अब, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण में, मैं, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग की उपधारा (1) के अधीन, निम्निसित व्यक्तियों, अर्थात्:—— 28—416 GI/82

- (1) श्री ए० सत्यनारायण पिता सीतारामय्या, और अन्य एक पीलूट्ना गूरजला नालूक, गुंटूर (अन्तरक)
- (2) श्री जी० सूर्यानारायण पिता श्री वीरय्या और अन्य एक गोटीपाडू गांव, पथीपाडू तान्लूक, गूटूर (अन्तरिती)

को यह स्थाना जारी करके पूर्वाक्त सम्पत्ति के बर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हूं।

उक्त सम्परित के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी बाक्षेप :--

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारी से 45 दिन की अवधि या तत्से म्बन्धी क्य कित याँ पर सूचना की तामील से 30 दिन की अवधि, जो भी अवधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पृथां कर क्य क्रिता में से किसी व्यक्ति दुवारा;
- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हित- अव्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा, अर्थोहस्ताक्षरी के पास सिसित में किए जा सकोंगे।

स्पष्टीकरण: -- इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधि-नियम के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनुसूची

खुली जमीन कोरेटेपाडू गूंटूर, डी० नं० 28, विस्तीर्ण 539 चौ० गज रजिस्ट्रीकृत विलेख नं० 3424/82, रजिस्ट्री-कर्त्ता अधिकारी गूटूर।

> एम० जेगन मोहन, सक्षम प्राधिकारी सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) अर्जन रेंज, हैदराबाद

दिनाक: 18-11-1982

प्ररूप आहाँ, टी. एन. एस.----

आयकःर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-घ(1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक म्रायकर भ्रायुक्त (निरीक्षण) अर्जन रेज, हैदराबाद

हैदराबाद, दिनांक 18 नवम्बर, 1982

निर्देश सं० आरं० ए० मी० नं० 358/82—83—यतः मुझे, एम० जेगन मोहन,

कायक अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके परचात 'उक्त अधिनियम' कहा गया है),, की धारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है स्थावर सम्परित, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- रु में अधिक है।

और जिसकी सं० एस० नं० 77/10 है, तथा जो वेपागुटा वैझाग में स्थित है (और इससे उपाबद्ध अनुसूची में और पूर्ण रूप से वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्त्ता अधिकारी के कार्यालय, वैझाग में भारतीय रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन, दिनाक अप्रैल, 1982

को पूर्वेषित् सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के स्थ्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मूक्षे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त संपत्ति का उचित बाजार मूल्य उसके स्थ्यमान प्रतिफल से, एसे स्थ्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिचत अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितयाँ) के बीच एसे शन्तरण के लिए तय पाणा गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखित में वास्तिधक रूप से कथित नहीं किया गया है:——

- (क) अन्तरण से हुर्इ किसी आय की बाबत, उक्त अभिनियम के अधीन कर दाने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए; और/याः
- (स) एसी किसी आय का किसी धन या अन्य आस्तियों को जिन्हों भारतीय आयकर आंधिनयम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था रा किया रूपना चाहिए था, विधान में चिए। के सिए;

अतः अब, उफ्त अधिनियम, की धारा 269-ग के अनमरण मे, में, सक्त अधिनियम की भारा 269-व की उपधारा (1) के अभीन निकासिस्ति व्यक्तियों, अर्थात् :— (1) श्री यू० लक्ष्मीपति, गजापतीनगरम, जिला विजय-नगरम

(अन्तरक)

(2) दि गोपालपटनम को-ओपरेटिय बिर्लेडग सोसाइटी लि० रजिस्टर न० 1335, गोपालापटनम, बाइ अध्यक्ष एम० चीनापारात्र पिप्ता गूरुऊलू बैझाग । (अस्तरिती)

को यह सूचना जारो करके पूर्वीकत मम्पित्त के अर्जन के लिए कार्यवृत्तिहर्या करता हुं।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन के मम्बन्ध में कोई भी माक्षीप ---

- (क) इस स्वान के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन की अविधि या तत्संबंधी व्यक्तियों पर स्वान की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी ध्यक्ति द्वारा;
- (स) इस स्मना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हित्बब्ध किसी अन्य व्यक्ति ब्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिसित में किए जा सकोंगे।

स्पष्टीकरण:--इसमे प्रयुक्त बन्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम के अध्याय 20-क में परिभाषित, हाँ, वहीं अर्थ होगा को उस अध्याय में दिया गया है।

बनुसुची

खुली जमीन एस० नं० 77/10 विस्तीर्ण 1 00 एफर विपागूंटा, वैक्षाग, रजिस्ट्रीकृत विलेख नं० 3737/82, रजिस्ट्री-कर्त्ता अधिकारी वैक्षाग।

एम० जेगन मोहन, सक्षम प्रधिकारी सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण)

र जायगर जापुरत (तिराक्षण) अर्जन रेंज, **हैदराबा**द

विनांक: 18-11-1982

प्रकप ब्राई० टी० एन० एस०--

आयकर अधिनियम 1961 (1961 का 43) की धारा 269-थ (1) के प्रधीन स्चना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयक्क (निरीक्षण)

अर्जन रेंज, हैदराबाद

हैदराबाद, विनांक 18 नवम्बर, 1982

सं० आर० ए० सी० नं० 35%/82-83--पतः मुझे, एम० जोगन मोहन,

श्रायकर प्रधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे कसमें इसके पश्चाल् 'उक्ल अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-ख के श्रधीन सक्षम प्राधिकारी को, यह विश्वास करने का कारण ह कि स्थात्रर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- ६० से श्रिषक है

और जिसकी म० एम० न० 77/10 है, तथा जो वेपागूटा वैद्याग में स्थित है (और इससे उपाबद्ध अनुसूची मे और पूर्ण रूप से विणित है), रिजस्ट्रीकर्त्ता अधिकारी के कार्यालय, वैद्याग मे भारतीय रिजस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन, अप्रैल, 1982।

को पूर्वोक्स संपत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के दश्यमान प्रतिफल के लिये अंतरित की गई है और मुभे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त मम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से, ऐसे दृश्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत श्रीक्षक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितियां) के बोज ऐसे अन्तरण के लिए तय पाया यथा प्रतिफल, निम्नलिधित उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखित में बास्तिक रूप से कथित नहीं किया गया है:—

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्त अधि-नियम के अधीन कर दोने के अंतरक के बायित्य में कमी करने या उससे जचने में सुविधा के जिए; और्यां
- (स) ऐसी किसी जाय या किसी धन या जन्य आस्तियां को, जिन्हें भारतीय जायकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपान में सुविधा के लिए;

अतः अन, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण में, मैं, उक्त अधिनियम की धारा 269-ल की उपधारा (1) कुँ अधीन, निम्नलिखित व्यक्तियमें अर्थात् :— (1) श्री पू० राजू बाबू पिता रामकृष्णामराजू, दोंडापार्थी वैझाग ।

(अन्तरक)

(2) दि गोपालपटनम को-आपरेटीव बिर्लंडग सोसाइटी लि० रजिस्टर न० 1335, गोपालापटनम, बाइ अध्यक्ष एम० चीनापाराव पिता गुरूऊलू वैझाग। (अन्तरिती)

को यद यूचना जारी करके पूर्वीका सम्पत्ति के प्रजान के लिए कार्यशाहिया करता है।

उक्त सम्पन्ति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप ;---

- (क) इस स्वान के राजपत्र में प्रकाशन की तारी व से 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों प्र स्वान की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर प्रांचत व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (स) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की सारीच स 45 विन के भीतर उक्त स्थावर संपरित में हित-बच्च किसी अन्य व्यक्ति च्वारा अभोहस्ताक्षरी के पाम त्याखत में किए जा सकता।

स्पष्टीकरणः -- इसमं प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जा उक्त अधिनियम के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं, वहीं अर्थ होगा, जो उसु अध्याय में दिया गया है।

मन्सूची

भूमि 1 एकड़, सर्वे० न० 77/10 वेपागंटा, वैझाग, रजिस्ट्रीकृत विलेख नं० 3736/82, रजिस्ट्रीकर्ता अधिकारी वैझाग।

> एम० जेगन मोहन, सक्षम प्राधिकारी सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण), अर्जन रेंज, हैदराबाद

दिनांक: 18-11-1982

मोहर्.

प्ररूप आहें. टी. एन. एस्. - - - - --

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-घ (1) के अधीन सूचना

भा<u>रत</u> सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) अर्जन रेंज, हैदराबाव

हैदराबाद, दिनांक 18 नवम्बर, 1982

निर्देश स० आर० ए० सी० नं० 360/82-83-यतः मुझे, एम० जेगन मोहन,

जायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-क के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित् बाजार मूल्य 25,000/-रा. से अधिक है

और जिसकी सं० एस० नं० 77/10 है, तथा जो वेपागूटा वैझाग में स्थित है (और इससे उपाबद्ध अनुसूची में और पूर्ण रूप से वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्सा अधिकारी के कार्यालय, वैझाग में भारतीय रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन, दिनांक अप्रैल, 1982

को पूर्वो क्स संपत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए बंतरित की गई है और मूक्ते यह विश्वास करने का कारण ही कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल सो, एसे दृश्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत से अधिक ही और अन्तरक (अन्तरका) और अन्तरिती (जन्तरितिया) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रति-फल, निम्निलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखित में वास्तिवक रूप से किथत नहीं किया गया है:——

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्स अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के वायित्व में कमी करने या उससे अजने में सुविधा के लिए; आर्/या
- (ख) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियाँ को जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रमोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा

- (1) श्री यूर्ण्याचूबाबू पिता रामकृष्णामराजू, दोडापार्थी, वैज्ञाग। (अन्तरक)
- (2) वि गोपालपटनम को-आपरेटिव बिलंडिंग सोसाउटी लि॰ रजिस्टर नं॰ 1335, गोपालापटनम, बाइ अध्यक्ष एम॰ चीनापाराव पिता गुरुऊलू वैझाग (अन्तरिती)

को यह सूचना जारों करके। पूर्वोक्त सम्मित्त के अर्जन के लिए कार्यवाहियां शुरू करता हुं।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन् के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप :----

- (क) इस सूचना के राजपत्र मों प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद मों समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वीक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (स) इस सूचना के गुजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिसित में किए जा सकेंगे।

स्पद्धीकरण: -- इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम के अध्याय 20-क में प्रिभाषित है, वही अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनुसूची

1 एकड़ भूमि, सर्वे नं० 77/10 वेपागंटा गांव, वैझाग, रजिस्ट्रीकृत विलेख नं० 3625/82, रजिस्ट्रीकर्त्ता अधिकारी वैझाग ।

> एम० जेगन मोहन, सक्षम प्राधिकारी सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण), अर्जन रेंज, हैदराबाद

अंतः अब उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसर्भ में, मैं, उक्त अधिनियम की धारा 269म की उपधार (1) के अधीन निम्नलिखित व्यक्तियों, अर्थात् :--

`'' दिनांक : 18-11-1982

प्रारूप आहे. टी. एन . एस . -------

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-व (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक भ्रायकर भ्रायुक्त (निरीक्षण)

अर्जन रेंज, हैदराबाद

हैदराबाद, दिनांक 18 नवम्बर, 1982

निर्देश स० आर० ए० सी० नं ० 361/82-83--यत: मुझे, एस० जेगन मोहन,

वायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर संपत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- रु. से अधिक है

और जिसकी सं० एस० 77/10 है, तथा जो वेपागृटा वैझाग में स्थित है (और इसमें उपाबद्ध अनुसूची में और पूर्ण रूप से विणित है), रजिस्ट्रीकर्त्ता अधिकारी के कार्यालय, वैझाग में भारतीय रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन, दिनांक अप्रैल, 1982

को पूर्वितत संपत्ति के उचित बाजार मूल्य सं कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मूक्ते यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वित्त संपत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से, एसे दृश्यमान प्रतिफल के पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरको) और अन्तरिती (अन्तरितियों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्य में उक्त अन्तरण लिखित में वास्तविक रूप से किथात नहीं किया गया है:---

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर देने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए; और/या
- (ख) एसी किसी आय या किसी धन अन्य आस्तियों को जिन्हें भारतीय आयक,र अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सूविधा के लिए।

अतः अब, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के, अनुसरण में, मैं, उक्त अधिनियम की धारा 269-घ की उपभाग (1) के अधीन, निम्निणिखित व्योक्तयों, अर्थातु :--- (1) श्री बी॰ लक्ष्मीपति पिता वेंक्टकृष्णमराजु, गुजपती-नगरम, विजयनगरमण

(अन्तरक)

(2) दि गोपालपटनम को-आपरेटिव बिर्लेडग सोसाइटी लि० रिजस्टर्ड नं० 1355/ बाद अध्यक्ष एम० चीन्नाप्पा, राव पिता गेरुकलू, गोपालपटनम, वैज्ञाग (अन्तरिती)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त संपत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हंू।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन के तम्बन्ध में कोई भी आक्षेप .---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अविधि या तत्संबंधी व्यक्तियों पूर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति बुवारा;
- (ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर संपित्त में हितबब्ध किसी अन्य स्थिक्त द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास निखित में किए जा सकरेंगे।

स्पक्टीकरणः--इसमे प्रयुक्त शब्दों और पदो का, जो उक्स अधिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं, वही अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनुसुची

खुली जमीन एस० नं० 77/10 विस्तीर्ण 1एकड़, वेपागूंटा, वैक्षाग, रजिस्ट्रीकृत विलेख नं० 3624/824 रजिस्ट्रीकर्त्ता अधिकारी वैक्षाग ।

एम० जेगन मोहन, सक्षम प्राधिकारी सहायक आयकर आयक्त (निरीक्षण) अर्जन रेंज, हैदराबाद

विनाक : 18-11-1982 मोहर: प्ररूप. आई. टी. एन. एस. -----आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-र्थ (1) के अधीन सचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) अर्जन रेंज, हैदराबाद

हैदराबाद, दिनांक 18नवम्बर, 1982

निर्देश स० आर० ए० सी० नं० 362/82-83-पतः मुझे, एम० जेगन मोहन,

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया हैं), की धारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर संपत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- रु. से अधिक हैं

और जिसकी सं डी० नं 27/ए है, तथा जो नलापाडू, गूटूर में स्थित है (और इससे उपाबद्ध अनुसूची में और पूर्ण रूप से वर्णित है), र्राजस्ट्रीकर्सा अधिकारी के कार्यालय, गूंटूर में भारतीय रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन, दिनाक अप्रैल, 1982

को पूर्वोक्स संपत्ति के उचित वाजार मूल्य से कम के स्थमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुफे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त संपत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके स्थमान प्रतिफल में, एमें स्थमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत में अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितियों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तथ पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखित में वास्तविक रूप से कथित नहीं किया वया है :---

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरल के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में स्विधा के लिए; और/या
- (स) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को जिन्हों भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उन्कत अधिनियम, या धनकर अधिनियम, या धनकर अधिनियम, या धनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिदान में स्विधा के लिए।

अत. अर , उक्त अधिनियम की धारा 269-म के अनुसरण में , मैं , उक्त अधिनियम की भारा 269-म की उपधारा (1) के अधीन , निम्नलिसित स्मिक्तमों , अर्थात :--

(1) श्री के बल्यानी पति वेंकटेश्वरा राव और अन्य एक पेसारलंका, रेपले, गूंट्र ।

(अन्सरक)

(2) श्री जे॰ पूर्णनंदा वेकटेश्वरा प्रसाद पिता श्याम सेंदरा प्रसाद, संगम जगरलामुडी, गूंटूर

(अर्न्तारती)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त संपत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हुं

उक्त संपत्ति के अर्जन के संबंध में कोई भी आक्षेप :---

- (क) इस सुषाना के राजपत्र में प्रकाशन की रारीख से 45 विन की अवधि या तत्संबंधी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अवधि, जो भी अवधि बाद में समाप्त होती हो, के भीनर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की नारीस से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर संपरित में हितबस्थ किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास निस्ति में किए जा सकरेंगे।

स्पष्टीकरणः -- इसमं प्रयुक्त शब्दों और पदो का, जो उक्त अधिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित है, बही अर्थ होगा, जो उस अध्याय मे विया गया है।

अमुस्ची

खुली जमीन नलापाडू, विस्तीर्ण 573, 1/3 घौ० गज डी०नं० 27/ए 2, रजिस्ट्रीकृत विलेख नं० 3696/82, रजिस्ट्री-कर्त्ता अधिकारी गुंटूर ।

> एम० जेगन मोहन, सक्षम प्राधिकारी सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण), अर्जन रेंज, हैंदराबाद

दिनांक : 18-11-1982

मोहर.

प्ररूप आहर्. डी. एम. एस. -----

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-च (1) के अधीन सचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक श्रायकर ग्रायुक्त (निरीक्षण) अर्जन रेंज, हैदराबाद

हैदराबाद, दिनांक 14 दिसम्बर, 1982

निर्देश सं० आर० ए० सी० नं० 3753/82-83--यतः मुझे, एम० जेगन मोहन,

आयंकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-स के अधीन सक्षम प्राधिकारी को, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/-रु. से अधिक है

और जिसकी सं० भूमि है तथा जो, निझामाबाद में स्थित है (और इससे उपाबद्ध अनुमूची में और पूर्ण रूप से वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्ता अधिकारी के कार्यालय, निझामाबाद में भारतीय रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन, दिनांक अप्रैल, 1982।

को पूर्वेक्त संपृत्ति के उचित बाजार मृत्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुभ्ने यह विष्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त संपत्ति का उचित बाजार मृत्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से एसे दृश्यमान प्रतिफल का पन्म्रह प्रतिशत अधिक है और अन्तरिक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितीयों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्निलिखित उद्बेश्य से उक्त अन्तरण निस्तित में वास्तविक रूप से कथित नहीं किया गया है:--

- (क) अन्तरण से हुई िकमी आय की वाबत, उक्स अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दाियत्व में कमी करने या उससे बचने यें सुविधा के लिए; और/या
- (स) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को, जिन्हों भारतीय आय-कर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती इवारा प्रयट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था छिपाने में स्थिधा के लिए;

अतः अब, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण में, मैं, उक्त अधिनियम की धारा 269-श की उपधारा (1) के अधीन निम्नीलिखत व्यक्तियों, अर्थात् :--- (1) श्रीपी० जीनावीरस्ना और अन्य पिता पेदा विरम्ना, गुलाब अबेदी, निजामाबाद

(अन्तरक)

(2) निजामाबाद को-आपरेटिब एप्पलाइज को-आपरेटिब हाऊसिंग सोसाइटी निजामाबाद ।

(अन्तरिती)

को यह सूचना जारी करके पूर्वीक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हुं।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप :---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वीक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वाग;
- (ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 विन के भीतर उक्त स्थावर सम्मक्ति में हितबक्ष किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकेंगे।

स्पष्टीकरण: -- इसमें प्रय्क्त शब्दों और पदों का, जो जक्त अधिनियम के अध्याग 20-क में परिभाषित हैं, वहीं अर्थ होगा, जो उस अध्याय में दिया गया है।

अन्सुची

भूमि सर्वे नं० 159, 162 और 163, एंटेस्वर निजामाबाद विस्तीर्ण 3.10 एकर रजिस्ट्रीकृत विलेख नं० 1896/82, रजिस्ट्रीकर्त्ता अधिकारी निजामाबाद ।

> एम० जेगन मोहन, सक्षम प्राधिकारी सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) अर्जन रेंज, हैदराबाद

दिनांक: 14-12-1982

प्रस्प आई.टी.एन.एस. ------ ----

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-घ (1) के अधीन सचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) अर्जन रेंज, हैदराबाद

हैदराबाद, दिनांक 14 दिसम्बर 1982

निदेश सं० आर० ए० मी० नं० 354/82—83——यतः मुझे, एम० जेगन मोहन,

आयकर अभिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके परचात् 'उक्त अभिनियम' कहा गया है), की धारा 269-स के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर संपरित, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- रु. से अधिक है

और जिसकी सं० भूमि है, तथा जो अन्तपूर्णा राइस मील, मानिक भंडार में स्थित है (और इससे उपाबद्ध अनुसूची में और पूर्ण रूप से बर्णित है), रिजस्ट्रीकर्ता अधिकारी के कार्यालय, निजामाबाद में रिजस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन दिनांक अप्रैल, 1982

को पूर्वोक्त संपत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के दश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुक्ते यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त संपत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से एसे दृश्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत अधिक है और अन्तरक (अन्तरकार) और अन्तरिती (अन्तरितिया) के बीच के एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखित में वास्तविक रूप में किथत नहीं किया गया है ---

- (क) अन्तरण संह्इं िकसी आय की बाबस, उवत अधिनियम के अधीन कर देने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में सूविधा के लिए; और/या
- (ख) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को जिन्हें भाररतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में मूबिधा के लिए।

अतः अब, उक्त अधिनियम की धारा 269-म के, अन्सरण में, मैं, उक्त अधिनियम की धारा 269-घ की उपधारा (1) के अधीन, निम्नसिखित व्यक्तियों, अर्थात् .--

(1) श्री एस० प्रभाकर रेड्डी 2 वाई० श्री निवास गौड देवी रोड निजामाबाद।

(अन्तरक)

(2) श्री इ० बाला मल्लय्या और अन्य, निवार्म। पोतीरेड्डी पेट, नालुक इबाक, मेदक।

(अन्तरिती)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त संपर्तित के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हु।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप :--

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारील से 45 दिन की अविधि या तत्संवंधी व्यक्तियाँ पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोकत व्यक्तियों में में किसी व्यक्ति द्वारा;
- (स) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख सें 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबद्ध किमी अन्य व्यक्ति द्वारा अथोहस्ताधारी के पास लिखित में किए आ सकों।

स्पष्टीकरणः--इसमे प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित हाँ, बही अर्थ हांगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनस ची

एक जी० आई० णेड और आर० सी० कंस्ट्रक्शन, अन्तपूर्णा राइम मील, एक एकर भूमि के माथ, सर्वे नं० 1655, मिकक भंडार, रजिस्ट्रीकृत बिलेख नं० 1865/82, रजिस्ट्रीकर्ता अधिकारी निजामाबाद ।

एम० जेगन मोहन, सक्षम प्राधिकारी सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) अर्जन रेंज, हैदराबाद

दिनांक: 14-12-1982

प्रकृष बाह्र . टी. एन . एस . ------

म्रायकर मिनियम, 1961 (1961 का 43) की खारा 269-म(1) के समीन सुमना

आर्त सरकार

कार्यालय,, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) अर्जन रेंज, हैदराबाद

हैंदराबाद, दिनांक 14 दिसम्बर, 1982

निर्देश सं० आर० ए० सी० नं० 355/82—83—यतः मृझे, एम० जोगन मोहुन,

शायकर बिधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके परचात 'उक्त अधिनियम' कहा गया हैं), की धारा 269-च के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विदेवास करने का कारण हैं कि स्थावर सम्पति, जिसका उचित बाजार मूल्यें 25,000/रु. से अधिक हैं

और जिसकी सं० भूमि है, तथा जो यंड्लानगृलापहली में स्थित है (और इससे उपाबड अनुसूची में और पूर्ण रूप से बणित है), रजिस्ट्रीकर्त्ता अधिकारी के कार्यालय, संगारेड्डी में भारतीय रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन, विनांक, अप्रैल, 1982

को पूर्वोक्त संपित्त के उणित बाजार मूल्य से कम के इश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुक्ते यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त संपित का उणित बाजार मूल्य, उसके दश्यमान प्रतिफल से, एसे दश्यमान प्रतिशत का पन्त्रह प्रतिशत से अधिक है और अंतरक (अंतरकों) और अंतरिती (अन्तरितियों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया प्रया प्रति-फल, निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण निवित में बास्तविक रूप से कथित नहीं किया गया है :--

- (क) अन्तरच से हुई किसी माय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दर्शियत्व में कसी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए; और/या
- (का) एसी किसी जाय या किसी धन या अन्य आस्तियों को, जिन्हों भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सृविधा के सिए;

बतः बद, उक्त मिनियम की भारा 269-ग के, अनुसरण कें, में उक्त अधिनियम की धारा 269-भ की उपधारा (1) के अधीन निम्नलिखित व्यक्तियों, अर्थातः——
29-416GI/82

- (1) श्री मीर णाहिद अली कमील और अन्य 12, 12-12-1595, अडीकमेट, हैदराबाद-500044 (अन्तरक)
- (2) दि थाना येलक्ट्रीक सप्लाइंग को० लि० बी-29-30 इंडस्ट्रीयल इस्टेट, संतनगर, हैवराबाद-18 (अन्तरिती)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्स सम्परित के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हूं।

उनत सम्पृत्ति के वर्षन के सम्बन्ध में कोई भी वाक्षेप:--

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की मामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति ब्वारा;
- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारी कर्षे 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हित अब्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा, अधोहस्ताक्षरी के पास सिवित में किए जा सकेंगे।

स्वव्यक्तिकरण—-इसमें प्रयुक्त शब्दों और पवां का, जो उक्त अधिनियम के अध्याय 20-क में परिभावित है, वही अर्थ होगा, जो उस अध्याय में विया गया है।

नन्स्ची

कृषि बंजर भूमि विस्तीर्ण 3 एकर, 19 गुंठें, इस्ला, नागूल-पस्ली, संगारेष्डी, रजिस्ट्रीकृत विलेख नं० 2084/82 रजिस्ट्रीकर्त्ता अधिकारी संगारेष्डी ।

> एम० जेगन मोहन, सक्षम प्राधिकारी सङ्गायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण), अर्जन रेंज, हैंदराबाद

दिनांक: 14-12-1982

मोहरः

प्ररूप आई. टी. एन. एस.-----

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-व (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालयः, सहायक आयंकर आयुक्त (निरीक्षण) धर्जन रेंज हैदराबाद

हैबराबाद, दिनांक 14 दिसम्बर 1982

निर्वेग सं० ग्रार० ए० सं०० नं० 356/82-83--यतः मुझे, एम० जेगन मोहन,

भ्रायकर ग्रधिनियम 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके प्रधात 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की भारा 269-स के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विष्यास करने का कारण हैं कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- रु. से अधिक हैं

ग्रौर जिसकी मं० भूमि है तथा जो इडलानाग्रपल्ली, में स्थित है (ग्रौर इससे उपाबद्ध ग्रनुसूर्य) में ग्रौर पूर्ण रूप से वर्णित है), रिजस्ट्रीकर्ता ग्रिधकारी के कार्यालय, संगारेड्डी में रिजस्ट्रीकरण ग्रिधिनियम 1908 (1908 का 16) के ग्रामीन दिनांक, ग्राप्रैल 1982।

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के खरमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुझे यह विद्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दश्यमान प्रतिफल से, ऐसे दश्यमान प्रतिफल का पंद्रह प्रतिकात से अधिक है और अंतरक (अंतरकों) और अंतरिती (अंतरितियों) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्निलिखित उद्वोदयों से उक्त अंतरण लिखित में वास्तविक रूप से किथत नहीं किया गया है:--

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की जानत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे अचने में सूविधा के लिए; और/या
- (स) ऐसी किसी आय या किसी धन या अस्य असितयों को जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा के लिए;

अतः अम, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अन्सरण म, म, इक्त अधिनियम की धारा 269-घ की उपधारा (1) के अधीन निम्नलिखित व्यक्तियों, अर्थात् :---

- (1) श्री मीए जहींद क्रमा नमील भीर क्रन्य 12 12-11-1595 श्रडीकमेट हैदराबाद-500044 (ब्रन्तरक)
- (2) दि थाना यलेकट्राक सप्लाइंग को० लि० बी० 29-30 इंडस्ट्रीयल इस्टेंट संतनगर हैदराबाध । (ग्रन्तरिती)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हुं।

जबत सम्परित के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी वाक्षेप :---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारी का से 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वीक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति ब्वारा;
- (ख) इस सूचना के राज्यत्र मों प्रकाशन की तारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति मों हितबद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित मों किए जा सकोंगे।

स्वध्यीकरणः — इसमें प्रयुक्त सब्बों और पदों का, जो उक्त अधिनियम के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं, बही अर्थ होंगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

वनसची

कृषि बंजर भूमि सर्वे नं० 135/1 स्नौर 2 विस्तीर्णे 8 एकर एड्रला नागूलापल्लो संगारेड्डी रिजस्ट्रीकृत विलेख नं० 1753/82-रिजर्स्ट्रीकर्ला प्रधिकार। संगारेड्डी ।

ए**म० जेगन मोहन** सक्तम प्राधिकारी सहायक ग्रायकर श्रायुक्त (निरीक्षण) श्रर्जन रेंज, हैदराबाद

विनांक: 14-12-1982

प्ररूप वाह .टी.एन्.एस.,---------

बायकर अधिनियस, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-व (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण)

श्रजंन रेंज , हैदराबाद

हैवराबाद, दिनाक 14 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० ग्रार० ए० सं।० नं० 357/82-83--- यतः मुझे; एम० जगन मोहन,

कायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिमका उचित बाजार मृल्य 25,000/रु. से अधिक है

ग्रीर जिसका सं० भूमि है तथा जो एंडूलानगलापल्स संगारेडुं। में स्थित है (ग्रीर इससे उपाबद्ध ग्रनुसूच। में ग्रीर पूर्ण रूप से विणित है) रिजस्ट्रें। किना प्रधिकारं: के कार्यालय संगारेड्ड में रिजस्ट्रें। करा प्रधिनियम 1908 (1908 का 16) के ग्रधान दिनांक अप्रैल 1982

को पूर्वेक्त संपीत्त के उचित बाजार मूल्य से कम के ध्रथमान प्रतिकल के लिए अन्तरित की गई है और मुक्ते यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त संपत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके ध्रथमान प्रतिकल से ऐसे द्रश्यमान प्रतिकल का पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अंतरक (अंतरकों) और अंतरिती (अन्तरितियों) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रति-कल, निम्नलिखित उद्विध्य से उक्त अन्तरण लिखित में वास्तविक रूप से किथित नहीं किया गया है :---

- (क) अन्तरण से हुई किसी काय की वास्त, उक्त अधिनियम के ब्रंधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे वचने में सृविधा के लिए; और/या
- (क) एेसी किसी माय या किसी धन या वन्य आस्तियों को, जिन्हें भारतीय आयक र अधिनियम 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धनकर अधिनियम, या धनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) अधिकार्थ अन्तिरिती व्वारा प्रकट नहीं किया क्या था या किया जाना चाहिए था खिपाने में हिवधा की सिए;

अतः जब, उक्त अधिनियम की धारा 269-म की, अन्सरण में, मैं, उक्त अधिनियम की धारा 269-घ की उपधारा (1) के अधीन, निम्निलिखित व्यक्तियों, अर्थात्:——

- (1) श्रो मं।र शाहीद ग्रला कमाल ग्रीर अन्य 12 12-12-1595; श्रश्रीकमेट हैदराबाध-500044 (ग्रन्तरक)
- (2) दि थाना इलेक्ट्रिवल सप्लाइंग को० लि० था.--29-30 इंडस्ट्रायल इस्टेट, संतनगर हैदराब।द-18 (अन्तरिता)

को यह सूचना ज़ारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के वर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हो।

उक्त सम्पत्ति के बर्जन् के सम्बन्ध में कोई भी बाक्षेप:--

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अविध या तत्संबंधी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविध, जो भी अविध बाद में समाप्त होती हो, के भीतर प्वांक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति व्यादरा;
- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रजाशन की तारीख स 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्परित में हित-बद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा, अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकोंगे।

स्पष्टीकरणः -- इसमे प्रयुक्त शब्दों और पर्दों का, जो उक्त अधि-नियम के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं, बही अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया हैं।

मन्त्रची

ब्लॉक एम० पार्ट ऑफ सर्वे नं० 135/1 और 2.4 कृषि बंजर भूमि विस्तार्ण 8 एकर एब्ला नागलपत्ली संगारेड्डी जिला, रजिस्ट्रीकृत विलेख नं० 1792/82, रजिस्ट्रीकृती प्रधिकारी संगाररेड्डी।

एम० जेगन मोहन सक्षम प्राधिकारी सहायक भ्रायकर भ्रायुक्त (निरीक्षण) श्रर्जन रेंज, हैदराबाद

दिनांक: 14-12-1982

प्रकृप माई॰ टी॰ एन॰ एस॰-----

भायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की खारा 269-ष (1) के भधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकद आयुक्त (निरीक्षण)

मर्जन रेंज, हैदराबाद

हैवराबाव, दिनांक 14 विसम्बर 1982

निर्देश सं० ग्रार० ए० सी० नं० 358/82-83-यतः मुझे, एम० जगन मोहन,

आयकर प्रधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त प्रधिनियम' कहा गया है), की प्रारा 269-ख के प्रधीन प्रमम प्राधिकारी को, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- रुपये में यधिक है और जिसका सं० भूमि है तथा जो रूद्रारम में स्थित है (ग्रीर इससे उपावद्ध मनुसूची में श्रीर पूर्ण रूप से विणत है), रजिस्ट्री-कर्सा श्रिधकारों के कार्यालय, संगारेड्डी में रजिस्ट्री-करण प्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के श्रधीन, दिनांक ग्राप्तेल, 1982

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य में क्रथ के दूश्यमान प्रतिकत के लिए प्रत्यरित की गई है और मुझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिकत्त से, ऐसे दृश्यमान प्रतिकत से, ऐसे दृश्यमान प्रतिकत का पन्द्रह प्रतिशत से प्रधिक है और प्रन्तरक (अन्तरकों) और प्रन्तरिती (अन्तरितियों) के बीच ऐसे प्रन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिकत, निम्नलिखित उद्देश्य से उका प्रस्तरण लिखित में बास्तविक क्य से कथित नहीं किया गया है:—-

- (क) प्रश्तरण से हुई किसी प्राय की बाबा उक्त प्रधि-नियम के प्रधीन कर देने के घ्रग्तरक के दायित्य मैं कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए; ग्रीर/या
- (ख) ऐसी किसी भ्राय या किसी धन या भन्य भ्रास्तियों को, जिन्हें भारतीय भ्रायकर भ्रधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त भ्रधिनियम, या भ्रनकर श्रधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनायं भ्रन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, खिपाने मैं सुविधा के लिए;

भतः सब, उबत प्रधिनियम की धारा 269-ग के भनु-सर्ण में, म. उक्त मधिनियम की धारा 269-व की उप-धारा (1) के अधीन, निम्नलिखिक व्यक्तियों, अर्थात् ः--- (1) श्री पी० रामलू झीर श्रन्य इस्माइल खान, पेट, संगारेड्डी तालुक

(ग्रन्सरक)

(2) भेसर्स बिंदूसना स्टं।ल इंडस्ट्रीं।ल लि० बी०-3 इंडस्ट्रीयल इस्टेट, संतनगर, हैवराबाद । (ग्रन्तरिती)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के झर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हूं।

उक्त सम्पत्ति के ग्रजन के सम्बन्ध में कोई भी ग्राक्षेप :---

- (क) इस सूचना के राजपल में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की भवधि या तस्संबंधी व्यक्तियों पर सूचना की तामील मे 30 दिन की भवधि, जो भी भवधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (ख) इस सूचना के राजपत में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबब किसी प्रक्ष व्यक्ति द्वारा, ग्रंशोहण्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकेंगे।

हनक्टीकरण:—इसमें प्रयुक्त शब्दों भीर पदों का, जो उक्त अधि-नियम के अध्याय 20-क में परिभाषित है, बही धर्म होगा, जो उस अध्याय में दिया गया है।

<mark>अनुसूची</mark>

भूमि सर्वे नं० 772 विस्तीर्ण 18 एकर, रुद्वारम गांव, संगारेड्डी जिला, रजिस्ट्रीकृत विशेख नं० 1796/82 र्राजस्ट्री-कर्त्ता श्रिष्ठकारी संगारेड्डी ।

> एम० जेगन मोहन, सक्षम प्राधिकारी सहायक भ्रायकर ख़ायुक्त (निरीक्षण) भ्रजैन रेंज, हैदराबाद

विनांक: 14-12-1982

प्रस्प काई.टी.एन.एस. ------

बाग्कर बिधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-ज (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यातय, सहायक जायकर आयुक्त (निरीक्षण)

मर्जन रेंज, हैदराबाद

हैवराबाद दिनांक 14 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० फ्रार० ए० सो० नं० 359/82-83--यतः मुझे, एम० जोगन मोहन,

जायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसमें दसमें परचात 'उक्त अधिनियम' कहा गया हैं), की धारा 269- के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण हैं कि स्थावर संपरित जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- रु. से अधिक हैं

भौर जिसकी सं० 3/ए है तथा जो पोत रेज्डीपरूली मे स्थित है (श्रौर इससे उपाबद्ध अनुसूची मे श्रौर पूर्ण रूप से वर्णित है) रजिस्ट्रीकर्त्ता श्रधिकारी के नार्यालय संगारेड्डी मे भारतीय रजिस्ट्राकरण श्रधिनियम 1908 (1908 का 16) के श्रधीन दिनांक श्रप्रैल 1982

को पूर्वोक्त संपत्ति के उचित नाजार मूल्य से कम के ध्रयमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुक्ते यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोंक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके द्रयमान प्रतिफल से, ऐसे द्रथमान प्रतिफल का पंचह प्रतिशत से अधिक है और अंतरक (अंतरकों) और अंतरिती (जन्तरितियों) के नीच ऐसे अन्तरण के लिए तय पाया गया इतिफस, निम्नलिचित उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखित में नास्तिक रूप से किंगत नहीं किया गया है:——

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत उक्त जीध-नियम के अधीन कर दोने के अंतरक के दायित्व में अभी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए; ब्रीर/वा
- (च) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों की, जिन्हीं भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती इवारा प्रकट नहीं किया गया वा किया आमा धाहिए था, छिपाने में सुविधा के सिए;

कतः अब, उक्त विधिनियमं की धारा 269-ग के अनुसरण में, मैं, उक्त अधिनियमं की धारा 269-म की उपधारा (1) के अधीन, निम्नीसिक्ति व्यक्तियों, अर्थात् :— (1) श्री एम० गोपाल रेड्डी पिता नक्ष्मी रेड्डी कोता मलाराम संगारेड्डी जिला मेदक ।

(ग्रन्तरक)

(2) कौशस्या इटर प्रा० लि० 1 देशसन्धू गुप्ता रोड, नई दिल्ली-110055।

(भन्तरिती)

को यह सूचना भारी करके पूर्वाक्त सम्पत्ति के वर्षव के लिए कार्यवाहिया करता हुं।

उक्त सम्पत्ति के बर्जन के संबंध में कोई भी बाक्षेप :---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 विन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 विन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होता हो, के भीतर पूर्वीक्त व्यक्तिसयों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारींच से 45-दिन के भीतर उक्त स्थाबर संपरित में हित- बद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के वास निवित में किए जा सकरी:

स्वष्टीकरणः --- इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

मन्स्ची

कृषि बंजर भृमि सर्वे नं० 3/ए पोतरेड्डो पेल्ली संगारेड्डी विस्तीर्ण 5 एकर रजिस्ट्रीकृत विलेख नं० 1849/82 रजिस्ट्री-कर्त्ती प्रधिकारी संगारेड्डी ।

एम० जेगन मोहन सक्षम प्राधिकारी सहायक झायकर भ्रायुक्त (निरीक्षण) भ्रर्जन रेंज, हैदराबाद

दिनांक: 14-12-1982

मोहर.

प्ररूप जार्द. टी. एन. एस. -----

आयकर अभिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-घ (1) के अभीन सुचना

भारत सरकार

कार्यातय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) श्रर्जन रेंज, हैदराबाद

हैदराबाद, दिनांक 14 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० ध्रार० ए० सं०० नं० 360/82-83--यतः मुझे, एम० जेगन मोहन,

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/-रु. से अधिक है

श्रीर जिसकी सं० 3/ए हैं तथा जो पोथेरेड्डर पल्ली में स्थित है (श्रीर इससे उपाबद्ध अनुसूची में और पूर्ण रूप से वर्णित है) रिजस्ट्रीकर्ता श्रधिकारी के कार्यालय संगारेड्डी में भारतीय रिजस्ट्रीकरण श्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के श्रधीन दिनांक श्रप्रैल, 1982

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के दश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मूक्ते यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दश्यमान प्रतिफल से एसे दश्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत अधिक है और अन्तरक (अन्तरको) और अन्तरिती (अंतरितियों) के बीच एसे अंतरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्निचित उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखित में वास्तविक रूप से कथित नहीं किया गया है:--

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में सूविधा के लिए; और/या
- (स) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य अस्तियों को, जिन्हें भारतीय आय-कर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोज-नार्थ अन्तरिती व्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था छिपाने में सुविधा के लिए;

अस्तः अब, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसारण में, मैं, उक्त अधिनियम की धारा 269-घ की उपधारा (1) के अधीन निम्नतिश्वित व्यक्तियों, अधीत् :--- (1) श्री एस० श्रीनिवास रेड्डी पिता नारायणा रेड्ड: भंबोल।

(घन्तरक)

(2) खोसला इंटेर० प्रा० लि० नं० 1, वेशबंधु गुप्ता रोड, नयी दिल्ली- 110055 ।

(म्रंतरिती)

को यह सूचना आरी करके पूर्वीक्त सम्पत्ति के अर्थन के लिए कार्यवाहियां करता हुं।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन के संबंध में कोई भी आक्षेप :--

- (क) इस स्चना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अविध या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविध, जो भी अविध बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (स) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबव्ध किसी अन्य व्यक्ति व्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकेंगे।

स्पट्टीकरण: -- इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अभिनयम के अध्याय 20-क में परिभाषित है वही अर्थ होगा, जो उस अध्याय में दिशा गमा है।

अनुसूची

बंजर भूमि सर्वे नं० 3/ए, विस्तीर्ण 4 एकड़, 04 गूंठे, पोथेरेड्डी पेल्ली, संगारेड्डी, रिजस्ट्रेडित विलेख नं० 1850/8/2, रिजस्ट्रीकर्ता प्रधिकारी, संगारेडडी ।

> एम० जेगन मोहन, सक्षम प्राधिकारी सहायक भ्रायकर भ्रायुक्त (निरीक्षण), भ्रजन रेंज, हैदराबाद

विनोक: 14-12-1982

मोहार :

प्रकप् बाइं. टी. एन. एस. -----

बायकर विधित्तियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-चं (1) के बधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय्, सहायक आयकर आयुक्त (निरक्षिण)

प्रजन रेंज, हैंदरायाद

हैदराबाद, दिनांक 14 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० श्रार० ए० सा० नं० 361/82-83---यतः मुझे, एम० जेगन मोहन,

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है, की भार 269-क के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- रु. से अधिक है

श्रीर जिसका सं० 3/ए है तथा जो पोट रेड्डीपल्ली में स्थित है (श्रीर इससे उपाबद्ध श्रनुसूचा में श्रीर पूर्ण रूप से विणित है). रिजिस्कट्रीर्सा श्रधिकारी के कार्यालय संगारेड्डी में रिजिस्ट्रोकरण श्रधिनियम 1908 (1908 का 16) के श्रधीन दिनांक श्रप्रैल 1982

को पूर्वोक्त संपत्ति का उचित बाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुफ्तें यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से, एसे दृश्यमान प्रतिफल का पन्तह प्रतिशत किथक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितियों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिक का निम्नितिबित उद्देश्य से उक्त बन्तरण सिस्तित में बास्तविक रूप से किथत नहीं किया गया है:---

- (क) अन्तरण से हुद्दै किसी आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर देने के अन्तरक के वायित्व में कभी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए; जौर/या
- (वा) ऐसी किसी नाय वा किसी वन वा नम्य शास्तियों की, जिन्हीं भारतीय आय-कर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या भन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती व्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिगान में स्विभा के सिए;

अत: अब, उक्त विभिनियम की भारा 269-म के अनुसरण में, मैं, उक्त अधिनियम की भारा 269-म की उपधारा (1) के अभीन, निम्नलिखित व्यक्तियों, अर्थात् :--

(1) श्रा एम० गोवाल देड्डी पिता लक्ष्मी देड्डी कोता मैलाराम, संगारेड्डी जिला मेंदक !

(ग्रन्तरक)

(2) कोशल्या •इंटर० प्रां० लि० 1, देशबंधु गुप्ता रोड, नई विल्ल:-110055।

(अन्तरिती)

को यह सूचना जारी करके पूर्वीक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हूं।

उक्त सम्परित् के वर्णन के सम्बन्ध में कोई भी वासीय उन्ह

- (क) इस स्वना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन की अंबीध या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर स्वना की तामील से 30 दिन की अंबीध, जो भी अंबीध बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वा के व्यक्तियों में सं किसी व्यक्ति देवारा;
- (च) इस स्चना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीच है 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हित- बद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकेंगे।

स्थव्योकरणः --- इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधि-नियम के अध्याय 20-कं में परिभाषित हैं, वहीं वर्ष होंगा, जो उस अध्याय में दिशा गया हैं।

STREET

बंजर भूमि विस्तीर्ण 5 एकड़ सर्वे नं० 5/ए पोटरेड्डी पेली संगारेड्डी, रजिस्ट्रीकृत विलेख नं० 1983/82 रजिस्ट्री-फर्ना प्रक्षिकारो, संगारेड्डी ।

> एम० जेगन मोहन, सक्षम प्राधिकारी सहायक श्रायकर श्रायुक्त (निरीक्षण), श्रर्जन रेंज, हैदराबाद

विनांक: 14--12--1982

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण)

म्रर्जन रेंज, हैंदराबाद हैंदराबाद, दिनांक 14 दिसम्बर 1982

निर्देश सं श्राप्त ए० सा० नं० 362/82-83---यतः मुझे, एम० जेगन मोहन,

म्रायकर प्रधिवियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इमर्में इसके पश्चात् 'उक्त ग्रिप्तिमयम' कहा गया है), की घारा 269-व के ग्रिजीन सम्राम प्राधिकारों को, यह विश्वाम करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका छिन्त बाजार मूल्य 25,000/- २० से प्रधिक है

भीर जिसकी सं० 1-1-19 है, तथा जो मूसीराबाद, हैदराबाध में स्थित है (भीर इससे उपाबद अनुसूची मे श्रीर पूर्ण रूप से बणित है), रजिस्ट्राकर्ता ग्रधिकारी के कार्यालय, हैदराबाध में भारतीय रजिस्ट्राकरण श्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के श्रधीन, दिनांक श्रप्रैल, 1982

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मृत्य से कम के ध्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मृभ्ने यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त संपत्ति का उचित बाजार मृत्य, उसके ध्यमान प्रतिफल से, ऐसे ध्यमान प्रतिफल का बन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अंतरिती (अंतरितियों) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिकित उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखित में बास्तिक रूप से कथित महीं किया गया है:—

- (क) अन्तरण से हुई किसी जाय की वाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के बायित्व में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए; आदि/या
- (ख) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों की, जिन्हें भारतीय आयंकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उत्तर अधिनियम या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, जिल्लाने में सुविधा के लिए।

- (1) श्री इफ्तखारवेग श्रीर श्रन्य, जी० ५/१० यू० मैयद शाहा नूर श्रला, 1-1-79 मूमारावाद, हैंदराबाद। (श्रन्तरक)
- (2) श्रा के० एस० ग्रार० रेमुसी केर ग्राफ ई० एल० एफ० बी० जे० चारमानारा कास रोड, हैंधराबाद। (ग्रन्सरिती)

को य**ह** भूचना जारी करके पूर्वीका सम्पत्ति के अपर्जन के लिए कार्यवाहियां करताहु।

उन्त सम्पति के प्रजैन के संबंध में कोई भी धाक्षेप:---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारी इसे 45 विन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामिल से 30 विन की अविध, जो भी अविध बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति ब्वारा;
- (क) इस स्वान के राजपत्र में प्रकाशन की तारी करें 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हित-बब्ध किसी अन्य व्यक्ति व्वारा अभोहस्ताक्षरी के पास लिकित में किए जा सकी।

स्मव्योकरणः -- इसमें प्रयुक्त सन्यों और पर्यो का, जो उक्त अधिनियम के अध्याय 20 - कमें परिभाषित है, बढ़ी अर्थ होगा, जो उस मध्याय में दिया गया है।

भग्सूची

षर नं० 1-1-79 का भाग, विस्तीर्ण 611 **चौ० गज** मुसीराबाद, रजिस्ट्रीकृत विलेख नं० 2840/82 रजिस्ट्रीकर्त्ता स्रिधकारो, हैंदराबाद।

> एम० जेगन मोहन, सक्षम प्राधिकारी सहायक झायकर घायुक्त (निर्राक्षण), प्रजन रेंज, हैदराबाद

मतः अव., उक्त अधिनियम, की धारा 269-ग के अनुसरण में, मैं उक्त अधिनियम की धारा 269-ए की उपधारा (1) अ अधीन, निम्नलिखित व्यक्तियों, अधीन .~~

विनोक: 14-12-1982

प्ररूप आई. टी. एन. एस.----

श्रायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की भारा 269-घ (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक भ्रायकर भ्रायुक्त (निरीक्षण)

श्रर्जन रेंज, हैदराबाद हदराबाद, दिनांक 14 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० श्रार० ए० सी० नं० 363/82-83--यतः मुझे, एम० जेगन मीहन,

आयकर अधिनियम्, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है।, की धारा 269-क् के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/-रा. से अधिक है

ग्रौर जिसका सं० 1-10-20 है, तथा जो ग्रशोक नगर, हैदराबाद में स्थित है (ग्रौर इससे उपाबद्ध ग्रनुसूची में भौर पूर्ण रूप से वणित है), रजिस्ट्रीकर्त्ता ग्रधिकारी के कार्यालय, हैदराबाद मे रजिस्ट्रीकरण ग्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के ग्रधीन दिनांक ग्रग्रैल. 1982

को पूर्वोक्त संपरित के उचित बाजार मूल्य से कम के दश्यमान प्रतिफल के लिए अंतरित की गई है और मूफ्ते यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य उसके दश्यमान प्रतिफल से, एसे दश्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिकृत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितियों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तथ पाया गया प्रतिफल, निम्नलिस्तित उद्विश्यों से उक्त अन्तरण लिस्ति में वास्तिवक रूप से कथित नहीं किया गया है:--

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्स अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए; और/या
- (ख) एसे किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को, जिन्हों भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अंतरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में स्विधा के लिए;

अतः अब, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण में, में, उक्त अधिनियम की धारा 269-भ की उपधारा (1) के अधीन, निम्नलिखित व्यक्तियों, अर्थात् :—— 30—416 GI/82

(1) श्राप्रेमस्य कोल पिता लेट आहण काले 6-1-40/1 ए० मा० गार्डस् हैंदराबाध ।

(भ्रन्तरक)

(2) था मनोहरलाल कपूर पिता लेट यू० ग्रार० दपूर डा० र्थामती इंदु कपूर पित मनोहरलाल वपूर, 3-6-337, बसीर बाग, हैदराबाद-500029। (श्रन्तरिती)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाही शुरू करता हुं।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन के संबंध में कोई भी आक्षेप :---

- (क) इस स्चाना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अविध या तत्संबंधी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविध, जो भी अविध बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (स) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हित- बद्ध किसी व्यक्ति द्वारा, अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकोंगे।

स्पष्टीकरण: — इसमें प्रयुक्त शब्दों और पवाँ का, जो उक्त अधिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनुसूची

घर एम० नं० 1-10-20 विस्तीर्ण 570 चौ० गज प्लाट नं० 9 भ्रशोकनगर, हैंपराबाद रजिस्ट्रीकृत विलेख नं० 2797/82 रजिस्ट्रीकर्त्ता श्रिधकारी हैंपराबाद।

> एम० जेगन मोहन, सक्षम प्राधिकारो महायक ग्रायकर श्रायुक्त (निरीक्षण) ग्रजन रेंज, हैदराबाद

विनांक: 14-12-1982

प्ररूप आई. टी. एन. एस्. - - - -

शायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 16) की भारा 269-च (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक जायकर आयुक्त (निरीक्षण) श्रंजन रेंज, हदराबाद

हैदराबाद, दिनांक 14 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० आर० ए० सी० नं० 364/82-83---यतः मुझे, एम० जेगन मोहन,

आयकर व्यथिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके परवात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह निश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/-रा. सं अधिक है

ग्रीर जिसकी सं० 1-2--597/24 है, जो दोमल गूडा रैदराबाद मे स्थित है (ग्रीर इससे उपावत श्रनुसूची मे ग्रीर पूर्ण रूप से वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्सा श्रधिकारी के कार्यालय, हैदराबाट में रजिस्ट्रीकरण ग्राधिनयम, 1908 (1908 का 16) के श्रधीन, दिनांक श्रप्रैल 1982

को पूर्वोक्त संपत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अंतरित की गई है और मूक्ते यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल को, एसे दृश्यमान प्रतिफल को पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितियों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गाया प्रतिफल, निम्निसित्त उद्देष्यों से टक्त अन्तरण निस्तित में वाम्तिक रूप से कथित नहीं किया गया है ——

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में स्विधा के लिए; और/या
- (स) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को जिन्हों भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में स्विधा के लिए।

अतः अब उक्त अधिनियम की धारा 269 ग के अन्मरण में, मैं., उक्त अधिनियम की धारा 269 म की उपधारा (1) के अधीन निम्नलिखित व्यक्तियों, अर्थात :--- (1) क्षा गोविषा नरहारी पिता जी॰ 1-2-597/24/1, दोसलगूष्टा, लावर टेंव बंड, रोड़. हैदराबाद-29।

(द्रस्तरक)

(2) श्रा जार सूर्यप्रकाणराय पिता लेट जार वेंकट शास्त्री ग्रीर श्रन्य एक 1-2-597/24/1, प्रथम तल, लोवर टेंकबंड रोड, हैंदराबाद।

(ग्रम्सरिती)

को यह मूचना जारी करके पूर्वीक्स सम्पत्ति के अर्थन के लिए कार्यवाहियां शुरू करता हूं।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप :---

- (क) इा सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अवधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अवधि, जो भी अवधि वाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वीकत व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (का) इस मूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की भीतर उक्त स्थावर सम्मत्ति में हिसबब्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधाहस्ताक्षरी वे पास लिखिल में किए जा सकोंगे।

स्पष्टीकरण: --इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम के अध्याय 20-क में प्रिभाषित है, वहीं अर्थ होगा, जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनुसूची

प्रथम तल नं० 1-2-597/24, बर्फ बाग, दोमलगूडा, हैदराबाद, विस्तीर्ण 1900 चौ० गज रजिस्ट्र-क्ट्रत विलेख नं० 2551/82 रजिस्ट्रावर्त्ति विधानारी हैदराबाद ।

> एम० जेगन मोहन, सक्षम प्राधिकारी सहायक भ्रायकर श्रायुक्त (निरीक्षण), श्रुजन रेंज, हैंदराबाद

दिनांक: 14-12-1982

प्रारूप आहें.टी.एन.एस.-----

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-घ (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण)

श्रर्जन रेंज, हैदराबाद

ह्दराबाद, दिनाक 14 दिसम्बर 1982

निर्देश मं० प्रार० ए० सा० नं० 365/82-83---यतः मुझे, एम० जोगन मोहन,

शायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसं इसमें इसके परचात 'उक्त अधिनियम' कहा गया है) की धारा 269-स के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह निश्नास करने का कारण है कि स्थावर सम्परिता, जिसका उचित बाजार मूल्य 25000/- रा. से अधिक है

स्रोर जिसका सं० ग्राफिस नं० 206 है, तथा जो कांग काझा काम्प्लेक्स एम० जो० रोड़ सिकन्दराबाद में स्थित है (स्रौर इससे उगावद श्रनुसूच। में श्रौर पूर्ण रूप से वर्णित है), रजिस्ट्रा-कर्ता प्रतिवारा के कार्यालय, सिकंदराबाद में भारतीय रजिस्ट्रा-करण श्रधितियम, 1908 (1908 का 16) के श्रधान, दिनांक स्रप्रैल, 1982

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मृत्य से कम के दश्यमान प्रात्तफल के लिए अन्तरित की गई है और मुफे यह विश्वास करन का कारण है कि यथा पूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मृत्य, उसके दश्यमान प्रतिफल से, ऐसे दश्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अंतरिती (अन्तरितियों) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रति-फल् निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखित में वास्तविक रूप से कि भित नहीं किया गया है:---

- (क) जन्तरण संहुई किसी आय की बाबस, उस्त जिथानियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दासित्व में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए; और/या
- (ण) ऐसी किसी आय या किसी भन या अन्य आस्तियों को, जिन्हें भारतीय आय-कर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उन्न अदिशियम, 21 भन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अंतरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था वा किया जाना चाहिए था, छिनाने में सूर्विशा के लिए;

कतः जब, उक्त अभिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण में, में, उक्त अधिनियम की धारा 269-ल की उपधारा (1), के अधीन निम्नलिकित व्यक्तियों अर्थात् :—

- (1) मेन्सं काजा एंड को० वाई० एस० प्रभाकर रेड्ड, 2-2-132, से 139, एम० जो० रोड, सिकंबराबाध। (ग्रन्तरक)
- (2) श्रा महेशकुमार कांतालाल कछेला और अन्य, छंदन-पुर, महाराष्ट्र ।

(भ्रन्तरिती)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्परित के अर्जन के लिए कार्यवाहिया करता हुं।

उक्त सम्परित के वर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप:--

- (क) इस स्वना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीब से 45 विन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाव में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति दुवारा;
- (स) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की धारीस से 45 दिन के भीतर उक्त स्थायर सम्पत्ति में हितबक्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास जिस्सा में किए जा सकोंगे।

स्यध्दोकरण: -- इसमें प्रयुक्त शन्यों और पर्दो का, भी उक्त अभिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में विया गया हैं।

अनुसूची

श्राफिस नं० 206 काम्रा काम्पलेक्स एम० जी० रोड़ सिकंदराबाद, रजिस्ट्राफ़्त विलेख नं० 367/82, रजिस्ट्रीकर्सा ग्रिधकारो सिकंदराबाद।

> एम० जंगन मोहन सक्षम प्राधिकारी सहायक भ्रायकर भ्रायुक्त (निराक्षण), भ्रजन रेंज, हैवराबाद

दिनाक: 14~12~1982

प्ररूप आहु . टी . एन . एस . - - - - - - -

भाष्कर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की भारा 269-ष (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) श्रर्जन रेंज, हैदराबाद

हंबराबाद, दिनांक 14 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० श्रार० ए० सी० नं० 366/82-83-यत मुझे, एम० जोगन मोहन,

जायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्च:त उक्त अधिनियम कहा गया है) की धारा 269-च के अधीन सक्षय प्राधिकारी को, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उधित बाजार मृख्य 25,000/-रु. में अधिक है

श्रौर जिसकी सं ० फ.लेट है, तथा जो श्रीनाथ काम्पलेक्स में स्थित है (श्रौर इससे उपाबद्ध श्रनुसूची में श्रौर पूर्ण रूप में वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्त्ता श्रिधकारी के कार्यालय, सिकंदराबाद में भारतीय रजिस्ट्रीकरण श्रिधिनयम, 1908 (1908,का 16) के श्रिधीन, दिनांक श्रुपैल, 1982

की पृबंक्ति सम्परित के उचित बाजार मृत्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मृक्षे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त संपरित का उचित बाजार मृत्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से, ऐसे दृश्यमान प्रतिफल का धन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितियों) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण किसार में बास्तरिक रूप से किथा नहीं किया गया है:—

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के बायित्य में कमी करने या उससे बचने में स्विधा के लिए; आर/या
- (ख) ऐसी किसी थाय या किसी थन या अन्य आस्तियों को जिन्हें भारतीय आयक्तर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, कियाने में सुविधा के लिए।

- (1) श्री सामील रहमान पिता फजलूर रहमान मं० 5', वजीर कोंडा, रोड़ नं० 14, बंजाराहीलस्, हैदराबाद। (श्रन्तरक)
- (2) श्री संजयकुमार कार्दा श्रीर श्रन्य, घर न० 13, जिला सिकंदराबाद ।

(भ्रन्तरिती)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त संपरित के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हुं।

उन्त सम्पत्ति के अर्जन के संबंध में कोई भी आक्षेप :--

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 विन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविध, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति व्वारा;
- (स) इस सूमना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन के भीतर उक्त स्थाधर सम्पत्ति में हितबद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षणी के पास लिखित में किए जा सकींगे।

स्पष्टीकरणः --इसमे प्रयुक्त शब्दो और पदो का, जो उर्क्त अधिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित है, वहीं अर्थ होगा, जो उस अध्याय में दिशा गया है।

अनुसूची

एक रहने का फ्लैट, 9 वां तल, एम० नं० 1-1-58/1, से 58/11, श्रीनाथ काम्प्लेक्स एस० डी० रोड़, सिकंदराबाद, रिजस्ट्रीकृत विलेख नं० 381/82, रिजस्ट्रीकर्त्ता श्रीधकारी सिकंदराबाद।

ाम० जेगन मोहन, सक्षम प्राधिकारी, सहायक श्रायकर ग्रायुक्त (निरीक्षण), ग्रर्जन रेंज, हैदराबाद

अतः नवं, उन्त अधिनियम की धारा 269-ग के जनुसरण कों, में उक्त अधिनियम की धारा 269-ण की उपधारा (1) को अधीन, निम्नजिलित व्यक्तियों, अर्थात् :--

विनांक: 14-12-1982

मोहरः

प्रक्षिकाई, टो. एन. एस.------

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-भ (1) के अधीन सुम्ता

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) अर्जन रेज, हैदराबाद

हैदराबाद, दिनांक 14 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० स्रार० ए० मी० न० 367/82~83—यतः मुझे. एम ० जोगन मोहन,

स्नायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके परचात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-क के अधीन सक्षम प्राधिकारी को, यह विश्वास करने का कारण हैं कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- रा. से अधिक हैं

श्रौर जिसकी मं० 1-10-247/ए है. तथा जो श्रशोकनगर, हैदराबाद में स्थित है (श्रीर इससे उपावक श्रनुसूची में श्रौर पूर्ण रूप में वर्णित है), रिजिस्ट्रीकर्ना श्रीधकारी के कार्यालय, हैदराबाद में भारतीय रिजिस्ट्रीकरण श्रीधिनियम, 1908 (1908 का 16) के श्रधीन, दिनांक श्रश्रैल, 1982

को पूर्वोक्त सम्पति के उचित बाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मूक्षे यह विश्वाम करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से, एसे दृश्यमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अंतरक (अंतरकों) और अंतरितों (अन्तरितियों) के बीच एसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्निलिखत उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखित में वास्तिक रूप से कथित नहीं किया गया है:—

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्त अभिनियम के अभीन कर दोने के अन्तरक के वायित्य में कमी करने या उससे अवने में सुविधा के लिए; और/या
- (स) ऐसी किसी बाय या किसी अन या अन्य आस्तियों को जिन्हें भारतीय आय-कर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या भनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था छिपानी में स्विधा के लिए;

जतः अबं, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अन्सरण में, में, उक्त अधिनियम, की धारा 269-घ की उपधारा (1) के मुधीन, निम्नसिक्ति क्यिक्त्यों, अर्थात् :---

- (1) श्रीमती एम० कन्याकुमारी श्रीर श्रन्य, वरदाराज-वरम, तन्कः तालूक, वेस्ट गोदावरी जिला । (श्रन्तरक)
- (2) श्री जी० विजयालक्ष्मी, 1-1-593, न्यू बाकाराम, हैदराबाद-20 ।

(ग्रन्सरिती)

को यह सूचना जारी करके पूर्विक्त सम्पन्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां शुरू करता हु।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप :--

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन की अविध मा तत्सम्बन्धी म्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की नविध, जो भी मनिभ बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त क्यिक्तयों में से किसी व्यक्ति स्वारा;
- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारिक से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबक्ष किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिस्ति में किए जा सकोंगे!

स्पव्यक्तिकरणः — इसमे प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो उक्त अधिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में विया गया हैं।

नगसची

घर नं० $1-10-247/\mathbb{C}$, प्रक्षोकनगर, हैदराबाद विस्तीर्ण 577 चौ० गज, र्राजस्ट्रीकृत विलेख न० 408/82, रजिस्ट्रीकर्ता प्रिधिकारी चीक्कडपल्ली हैदराबाद ।

एम० जेगर मोहन, सक्षम प्राधिकारी महायक श्रायकर श्रायुक्त (निरीक्षण), धर्जन रेंज, हैदराबाद

दिनांक: 14-12-1982

प्रकृष बाहु . टी. एन. एस.-----

ग्रामकर **प्रविनियम, 1961 (1961 का 43)** का धारा 269 थ (1) के **प्रधी**न सू**च**ना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक म्रायकर <mark>मायुक्त (निरीक्षण)</mark> श्रर्जन रेज, हैदराबाद

हैदराबाद, दिनांक 14 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० श्रार० ए० सी० नं० 368/82-83--यतः मुझे, एम ० जेगन मोहन,

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात (उक्त अधिनियम कहा गया है), की धारा 269-स के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्लावर सम्परित जिसका उचित बाजार मृल्य 25,000/-रापये से अधिक है

स्रौर जिसकी सं० 1-2-367/1 है, तथा जो दोमलगूडा हैदराबाद में स्थित है (धीर इससे उपाबद अनुसूची में थीर पूर्ण रूप से विणत है), रजिस्ट्रीकर्त्ता श्रिधकारी के कार्यालय, चीक्कड-पल्ली, में भारतीय रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के श्रिधीन, दिनांक श्रिप्रैल, 1982

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मृत्य से कम के ध्र्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई हैं और मूक्ते यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त संपत्ति का उचित बाजार मृत्य, उसके ध्र्यमान प्रतिफल से, ऐसे ध्र्यमान प्रतिफल का पन्त्रह प्रतिशत से अधिक हैं और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितियों) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्यों से उक्त अन्तरण लिखित में बास्तविक रूप में कथित नहीं किया गया हैं:--

- (क) अन्तरण से हुई किसी भाष की बाधत, उक्त आधे-नियम के अधीन कर देने के अन्तरक के वायित्व में कमी करने या उसने बचने ने सुविधा के लिए, भीर/या
- (ख) ऐसी किसी श्राय या किसी धन या अन्य श्रास्तियों की, जिल्हें भारतीय श्राय-कर प्रश्निनियम, 1922 (1922 का 11) या उन्त श्रिधिनियम या धन-कर प्रधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनायं प्रत्तिती जारा प्रकट नहीं किया गया था में किया जाना चाहिए था, खिया। में सुविशा के लिए;

(1) श्रीमती लीला गौरी बाजी पति एम० श्रार० बाजी, 2-2-18/48, कृष्णा वेणी, दूर्गाबाई देशमुख कालोनी, जाग श्राम्त्ररपेट, हैदराबाद-500760

(श्रन्तरक)

(2) श्रीमती प्रभा रानी पति श्री सतीण कृमार गुप्ता 3-6-108/1, हिमायतनगर, हैदराबाद । (ग्रन्तरिती)

को यह सूचना जारा करके पूर्वोक्न सम्पत्ति के धर्णन के लिए कार्यवाहियां शुरुः करता हुं।

उक्त सम्परित के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप :---

- (क) इस प्ता के राजपत में प्रकाशन की तारी आ से 45 दिन की श्रवित्र या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील पे 30 दिन की श्रविद्य, जो भी भवधि वाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वों बत क्ष्मितयों में से किसी व्यक्ति हारा;
- (ख) एर स्वता के राजपन्न में प्रकाणन की तारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबद्ध किसी ग्राम व्यक्ति द्वारा प्रधोहस्ताक्षरी के पान व्यक्ति से किए जा सकेंगे '

स्परकोत्तरण :--इसमें प्रयुक्त शन्दो और पदों का, जो उक्त सिक् नियम, के भ्रष्टयाय 20क में परिभाषित है, बही। अर्थ रोगा जो उत्त प्राप्याय में दिया गया रे।

अनुसूची

घर नं ० 1-2-367/1, गगन महेल **रोड दोमल गूंडा**। हैदराबाद, विस्तीर्ण 953. 3 चौ ० गज रजिस्ट्रीकृत विलेख नं 407/82, रजिस्ट्रीकर्ना श्रधिकारी चीकडपल्ली।

> एम० जेगन मोहन, सक्षम अधिकारी सहायक श्रायकर श्रायुक्त (निरीक्षण), श्रर्जन रेंज, हैदराबाद

मतः अध, उत्तत अधिनियम की भारा 269-ग के अनुसरण मों, मों,, उक्त अधिनियम की भारा 269-घ की उपधारा (1) के अभीन, निम्नितिसित व्यक्तियों, अर्थात् :—

दिनांक · 14-12-1982

प्ररूप भार्च. टी. एन. एस.----

आयकर अभिनियम, 1961 (1361 का 43) की धारा 269-च (1) के अभीन स्चना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण)

श्रर्जन रेंज, हैदराबाद हैदराबाद, दिनांक 14 त्रिमम्बर 1982

निर्देश सं० भ्रार० ए० सी० नं० 369/82-83--यतः मुझे एम० जेगन मोहन,

बायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिस इसमें इसके परकात् 'उन्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269- व के अधीन सक्षम प्राधिकारी को, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- क से अधिक है

श्रौर जिसकी सं० 3-6-455 है, तथा जो हिमायतनगर हवराबाद में स्थित है (श्रौर इससे उपाबद श्रनुसूची में श्रौर पूर्ण रूप से वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्ता श्रिधकारी के कार्यालय हैदराबाद में भारतीय रजिस्ट्रीकरण श्रिधनियम, 1908 (1908 का 16) के श्रधीन, दिनांक श्रुप्रैन, 1982।

को पूर्वोज्य सम्पत्ति के उचित दाजार मूल्य में कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गर्द हैं और मूझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पन्ति का उचित बाजार मृल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल सो, एसे दृश्यमान प्रतिफल का पृष्ट प्रतिश्वत से अधिक हैं और अंतरक (अंतरकों) और अंतरिती (अन्तरितयों) के बीच ऐसे अंतरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिसित उद्देश्य से उक्त अंतरण लिखित में नास्तिक रूप से कथित नहीं किया गया है —

- (क) जन्तरण से हुई किसी आय की अन्तत, उन्तत अभिनियम के अधीन कर दोने के पन्तरक के वायित्य में कमी करने या उससे बचन' में स्विधा के लिए; और/या
- (स) ऐसी किसी जाय या किसी धन या अन्य आस्तियों को, जिन्हें भारतीय सायकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या जन्म अधिनियम, या धनकर सिधिनयम, या धनकर सिधिनयम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तिरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था हिल्पान में सिविधा के लिए,

अतः अध, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग के अनुसरण में, मैं, उक्त अधिनियम की धारा 269-च की उपधारा (1) के अधीन, निम्नलिखित व्यक्तियों, अर्थातु:—

(1) श्री एम० प्रार० नरसीम्हम भागेगार, 3-6-455, हारडीकर काम, हिमायननगर, हैदराबाद ।

(अन्तरक)

(2) श्रीमती पृष्पा श्रीवास्तव 3-6-136/4/4, हिमायत-नगर, हैदराबाद-29।

(श्रन्तरिती)

को यह सूचना जारी करके पृवांक्स सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां शुरू करता हुं।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप :---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीस से 45 दिन की अविधि या तत्संबंधी व्यक्तियों पर सूचना की सामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वों क्त व्यक्तियों में से किसी स्पक्ति दशारा;
- (स) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारी ख से 45 दिन के भीतर उच्चत स्थावर सम्पत्ति में हित- बद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा, अधोहस्ताक्षरी के पास लिसिन में किए जा सकेंगे।

स्पड्टीक रणः ---इसमें प्रयुक्त फब्दों और पदों का, जो उक्त अभिनियम, के अध्याय 20-क में परिभाषित हाँ, वहीं अर्थ होंगा जो उस अध्याय में दिया गया हाँ।

ध्रमसंची

घर नं० 3-6-455, हिमायतनगर, हैदराबाट, विस्तीर्ण 266.05 चौ०गज रिजस्ट्रीकृत विलेख नं० 385/82, रिजस्ट्री-कर्ना श्रिधिकारी चीक्कडपल्ली ।

> एम० **जोगन मोह**न, सक्षम श्रधिकारी सहायक घायकर श्रायुक्त (निरीक्षण), श्रर्जन रेंज, हैदराबाद

दिनांक: 14~12-1982

प्रक्रम आई. टी. एन्. एस. ----

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269-ष (1) के अधीन सूचना

भारत सरकार

कार्यालय, महायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण)

श्रर्जन रेज, हैदराबाद

हैदराबाद, दिनांक 14 दिसम्बर 1982

निर्देश सं श्रार० ए० मी० नं ० 370/82-83-यतः मुझे, एम० जेगन मोहन,

भायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है, की धारा 269-स के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका जित्त बाजार मूल्य 25,000/-रा. से अधिक है

स्रीर जिसकी सं० 3-4-1081/1 है, तथा जो काचीगृडा हैदराबाद में स्थित है (श्रीर इससे उपाबद्ध श्रनुसूची में श्रीर पूर्ण रूप से वर्णित है), रिजस्ट्रीकर्ता ग्रिधकारी के कार्यालय, हैदराबाद में भारतीय रिजस्ट्रीकरण श्रिधनियम, 1908 (1908 का 16) के श्रिधीन, विनांक श्रील, 1982 ।

को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के दूरयमान प्रतिफल के लिए अंतरित की गई है और मुक्ते यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त संपत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दूरयमान प्रतिफल से, ऐसे दूरयमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकार) और अन्तरिती (अन्तरितियों) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्वेषयों से उक्त अन्तरण लिखित में वास्तिवक रूप से किथित नहीं किया गया है :—

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में सविधा के लिए; और/या
- (ख) ऐसी किसी बाय या किसी धन या अन्यु आस्तियों की जिन्हों भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती ब्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सविधा के लिए;

अत. अब उक्त अधिनियम की भारा 269-ग के अन्मरण में, मैं, उक्त अधिनियम की भारा 269-च की उपधारा (1) को अधीन निम्नलिखित व्यक्तियों, अर्थात :——

- (1) श्री एम० व्ही० थाँमस श्राई० पी० एस०, 27, एस० बी० श्राई० कालोनी, ग्राम्बरपेट, हैंदराबाद । (ग्रन्तरक)
- (2) 1. श्रीमती वाई० मना पति पाई० नागक्ष्वर राव ग्रीर श्रन्य एक, 16--11-741/2, मुसारामवाग हैदराबाद ।
 - श्रह्मरा बतूल पिता सैयद श्रली मोहम्मद 22-1-66 श्रलगादीर, दाऊणफा, हैवराबाद । (श्रन्तरिती)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां शुरु करता हुं।

उक्त सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध मा कोई भी आक्षेप :--

- (क) इस सूचना के राजपत्र मं प्रकाशन की लारीख सं 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (स) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारील से 45 विन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबव्ध किसी जन्य व्यक्ति इवारा अधोहस्ताक्षरी के पास निस्ति में किए जा सकेंगे।

स्पष्टीकरण: -- इसमे प्रयुक्त शब्धों और पधी का, जो उक्त अधिनियम के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया हैं।

अन्सुची

घर नं० 3-4-1081/1, बिस्तीर्ण 700 त्रौ० गज काचीगूडा, हैदराझाद, रिजस्ट्रीकृत विलेखन० 2916/82, रिजस्ट्रीकर्ता ग्रिष्टिकारी हैदराझाट।

> एम० जेगन मोहन, सक्ष्म ग्रशिकारी सहायक श्रायकर स्नायक्त (निरीक्षण) श्रर्जन रेंज, हैदराबाद

दिनांक: 14-12-1982

प्ररूप आई. टी. एन. एस. - - - --

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 16) की धारा 269-घ (1) के अधीन स्चना

भारत सरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) श्रर्जन रेंज-1, कलकत्ता

कनकत्ता, दिनांक 13 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० टी० ग्रार०-122/82-83/एस० सी०/682 श्राई० ए० सी०/श्रर्जेन रेंज-1/कलकत्ता--यतः मझे, एम० श्रहमद, भायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमे इसके परकात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है), की धारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मल्ब 25,000/-रु. से अधिक हैं श्रीर जिसकी सं० 24/2/एच०/9 और 24/2/एच०/9/1 है तथा जो ब्राइट स्ट्रीट कलकत्ता में स्थित है (ब्रौर इससे उपाबद्ध अनुभूची में फ्रीर पूर्ण रूप से वर्णित है), राजिस्ट्रीकर्सा श्रिधकारी के कार्यालय कलकत्ता में, रजिस्ट्रीकरण श्रिधनियम, 1908 (1908 का 16) के प्रधीन, दिनांक 29 प्रप्रैल, 1982 को पूर्विक्त सम्परित के उचित बाजार मुख्य से कम के दश्यमान प्रतिफल के लिए अंतरित की गई है और मुभे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वीक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मल्य, उसके रूपमान प्रतिफल से., ए से रूपमान प्रतिफल का पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितियों) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए तय पाया गाया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्यों से उक्त अन्तरण लिखित मो बास्तविक रूप से कथित नहीं किया गया है:--

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, उक्त अधिनियम के अधीन कर दोने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में सूविधा के लिए; और/या
- (ख) एसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या उक्त अधिनियम, या धनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तिरिती द्वार प्रकट नहीं किया गया था या विद्या जाना चाहिए था, छिपाने में स्विधा के लिए।

अतः अब उक्त अधिनियम की भारा 269न को अन्सरण में, में, उक्त अधिनियम की भारा 269म को उपभारा (1) के अधीन निम्मितिस्ति व्यक्तियों, अधित्:——
31--416G1/82

(1) श्री रामेश्सर दुवे ग्रौर दूसरा

(भन्तरक)

(2) श्रब्दुल्ला ग्रसारी

(अन्तरिती)

का यह स्थना आरों करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां शुरू करता हुं।

उक्त सम्पत्ति के वर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप :---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अविधिया तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधिनाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (क) इस स्वना के राजपन में प्रकाशन की तारी के से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हिसबब्ध किसी जन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी वे पास निवित में किए जा सकोंगे।

स्पद्धीकरण: -- इसमें प्रयूक्त झन्यों और पदों का, जो उक्त अभिनियम के अध्याय 20-क में प्रिभाषित ही, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

मन्स्ची

 $24/2/एच \circ/9$, भीर $24/2/एच \circ/9/1$, ब्राइट स्ट्रीट.

5के-13सीएच-25 स्केयर फीट जमीन पर मकान ।

ग्म० आहमद, मक्षम प्राधिकारी सहायक ग्रायकर ग्रायुक्त (निरीक्षण), ग्रर्जन रेंज 1, कलकत्ता

दिनांक: 13-12-1982

प्ररूप आई० टी० एन० एस०-----

भायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 289-४ (1) के भ्रधीन मुचना

भारत नरकार

कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण)

म्रर्जन रेंज जालन्धर

जालन्धर, दिनाक 10 दिसम्बर 1982

निर्देश सं० ए० पी० 3654—श्रत: मुझे जे० एल० गिरधर,

प्रायकर पणिनेयम, 1941 (1941 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उका प्रधितियम' कहा गया है); की बारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर संगन्ति जिसका उजित बाजार मूख्य 25,000/- ६० ने प्रधिक है

ग्रौर जिसकी सं० जैसा कि नीचे की श्रनुसूची में लिखा है तथा जो भटिन्डा में स्थित है (ग्रौर इससे उपाबद्ध में श्रन्-सूची में श्रौर पूर्ण रूप से वर्णित है) रिजस्ट्रीकर्ता ग्रधिकारी के कार्यालय भटिन्डा में रिजस्ट्रीकरण श्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के ग्रधीन तारीख मई 1982।

को पूर्वोक्स संपत्ति के जिन्त बाजार मूल्य से कम के बृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है भीर मूझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त संपत्ति का उजित बाजार मूल्य, उसके बृश्यमान पतिफल से, ऐसे वृश्यमान प्रतिकान का पक्सह प्रतिश्रत भाष्टिक है पौर अन्तरक (भग्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितियों) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिकान, निम्नलिजन छहेग्यों स उक्त भग्तरण लिखित में वास्तविक रूप से कथिन नहीं किया गया है:--

- (क) अन्तरण में हुई किसी आय भी बादत उक्त विधि-नियम के धर्धान कर देने के भन्तरक के दायित्व में कमी करन या दसस बचने में सुविधा के लिए; और/या
- (ख) ऐसी किसी आज या किसी धन या अण्य आस्तियों को, जिन्हें भारतीय भायकर प्रधिनियम, 1922 (1922 का 11) या खकत अधिनियम, या धन कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए वा, छिपाने में सविधा के पिए।

अतः अब, उक्त अधिनियम की धारा 269-ग को, अनुसरण में, मै, उक्त अधिनियम की धारा 269-च की उपधारा (1) के अधीन, निम्निलिखित व्यक्तियों, अर्थात् :—

(1) श्री दरबारा सिंह पृत्र श्री प्रीतम सिंह वासी भटिन्छा

(भ्रन्तरक)

(2) श्री बलदेब सिंह पुत्र श्री गुरदयाल सिंह श्री बलदेव सिंह मेहना मोहल्ला नजदीक बंगा हाउस, पुराना बम श्रड्डा भटिन्डा 2642 कोर्ट रोड नजदीक रण्जीत प्रेस भटिन्डा

(भ्रन्तरिती)

(3) जैसा नं० 2 में लिखा है

(वह व्यक्ति जिसके ग्रिधिभोग में सम्पति है)

(4) जो व्यक्ति सम्पित में रुचि रखता है (वह व्यक्ति जिसके बारे में श्रधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पित में हितवस है)

को यह सूचना जारो करके पूर्वोक्त सम्पर्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां करता हूं।

🗿 🎙 उक्त सम्पत्ति के ग्रर्जन के सम्बन्ध में कोई भाषोप :--

- अं(क) इस सूचना के राजपक्ष में प्रकाशन की तारी वा से 45 विन की अवधि या तस्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 विन की अविक्र, को भी अविक्र वाल में समान्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किमी व्यक्ति दारा;
 - (ख) इस सूचना के राजपन में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबद किसी अन्य व्यक्ति द्वारा, अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किये जा सकेंबे ।

स्वऽद्यां करण :---इसमें प्रयुक्त शब्दों और वर्गे का, जी उक्त अदि-निवम के अध्याय 20-क में परिभाषित हैं, वही प्रयो होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनुसूची

व्यक्ति तथा सम्पति जैसा कि विलेख नं० 1163 दिनांक मई 1982 को रजिस्ट्रीकर्त्ता ग्रिधिकारी भटिन्डा ने लिखा है।

> जे० एल० गिरधर सक्षम प्राधिकारी सहायक आयकर आयक्त (निरीक्षण) श्रर्जन रेज जालन्धर

तारीख: 10-12-82

सच लोक सेवा आयोग

नीटिस

मारतीय अर्थ सेवा/भारतीय सांक्यिकी सेवा परीका, 1983

र्स॰ फा॰ 12/3/82-प-I(स्वा)

नई दिल्ली, दिनांक 15 जनवरी, 1983

भारत के राजपत्न दिनांक 15 जनवरी, 1983 में गृह मंत्रालय (कार्मिक तथा प्रशासनिक सुधार विभाग) द्वारा प्रकाशित नियमो के अनुसार नीचे पैरा 2 से उल्लिखित नेवाओं के ग्रेड IV में भर्ती के लिए सच लोक सेवा आयोग द्वारा अगरतला, अहमदाबाद, ऐजल, इलाहाबाद, बेगलीर, भोपाल, बम्बई, कलकत्ता, चंडीगढ़, कोचीन, कटक, दिल्ली, दिसपुर (गोहाटी), हैवराबाद, इम्फाल, ईटानगर जयपुर, जम्मू, जोरहाट, कोहिमा, लखनऊ, मद्राम, नागपुर, पणजी (गोवा), पटना, पोर्ट ब्लेयर, शिलांग, श्रीनगर तथा त्रिवेन्द्रम में 28 जून, 1983 से सम्मिलत प्रति-योगिता परीक्षा ली जाएगी —

आयोग यदि चाहे तो उस्त परीक्षा के उपर्युक्स केन्द्रों तथा सारीक्षों में परिवर्तन कर सकता है। यदापि उम्मीदवारों की उक्त परीक्षा के लिए उनकी पसन्द के केन्द्र देने के सभी प्रयास किए जाएंगे तो भी आयोग परिस्थितियश किसी उम्मीदवार को अपनी बिबक्षा पर अलग केन्द्र दे सकता है। जिन उम्मीदवारों को उक्त परीक्षा में प्रवेश दे दिया जाता है उन्हें समय सारणी तथा परीक्षा स्थल (स्थलो) की जानकारी दे दी जाएंगी (ग्रानुबन्ध I परा III वेखिए)।

- 2. इस परीक्षा के परिणाम के आधार पर जिल वो सेवाओं के लिए भर्ती की जानी है उनके नाम तथा इन दोनो सेवाओं के ग्रेड IV में रिक्तियों की अनुमानित सख्या इस प्रकार —
 - (i) भारतीय अर्थ सेवा

40 (इससे अनुसूचित जातियों के उम्मीदवारों के लिए आरिक्षत 6 रिक्तियां तथा अनुसूचित जन-जातियों के उम्मीदवारों के लिए 3 आरिक्षित रिक्तियां सम्मिलित हैं)

(ji) भारतीय सास्त्रियकी सेवा

40 (इतमें अनुसूचित जातियो के उम्मीविधारों के लिए आरक्षित 12 रिक्तिया तथा अनुसूचित जन- जातियों के उम्मीदिवारों के लिए 6 आरक्षित रिक्तियां सम्मिसित हैं)

उपर्यक्रन रिक्ति-संख्या में परिवर्तन हो सकता है।

3. उम्मीदवार उपर्युक्त पैरा 2 में उल्लिखित सेवाओ मे से किसी एक अथवा दोनों के लिए परीक्षा में प्रवेश पाने के लिए आवेदन कर सकता है। एक बार आवेदन-पन्न भेजे जाने के बाद सामान्यत किसी प्रकार के परिवर्तन की अनुमति नहीं दी जाएगी।

यदि कोई उम्मीवशार दोनों सेवाओं के लिए परीक्षा में प्रवेश पाना जाहता है तो भी उसे एक ही आवेदन-पत्न भेजने को आवश्यकता है। भीचे पैरा 6 में उल्लिखित गृल्क भी उसे केवल एक ही बार देना होगा। उस प्रत्येक सेवा के लिए अलग-अलग नहीं जिसके लिए वह आवेदन कर रहा है।

विशेष ध्यान रें .— उसे केवल उसी सेया/उन्ही सेवाओ के लिए उम्मीदवार माना जाएगा जिसके/जिनके लिए वह आवेदन करेगा, दोनों सेवाओं के लिए आवेदन करने वाले उम्मीदवार को अपने आवेदन-पन्न में सेवाओं के संबंध में अपना वरीयता-क्रम स्पष्ट रूप से बताना चाहिए ताफि योग्यना क्रम से उसके स्थान को ध्यान में रखते हुए नियुक्ति करते समय उसकी वरीयता पर मजी-भानि विवार किया जा सके।

जिन सेवाओं के लिए उम्मीदियार विचार किए अने के इच्छुक हैं उन सेवाओं के लिए उनके द्वारा दर्भाए गए घरीयनाक्षम में परिवर्तन से संबद्ध किसी भी अनुरोध को तब तक स्थीकार नहीं किया जाएगा जब तक ऐसा अनुरोध लिखित परीक्षा के परिणामो की "रोजगार-समाचार" में प्रकाशित होने की नारीख ते 30 दिन के भीनर सघ लोक सेवा आयोग के कार्यालय मे प्राप्त नहीं हो जाता।

4. परीक्षा में प्रवेश चाहने वाले उम्मीदवारों का निर्धारित आवेवन-प्रपन्न पर सचिव, सब लोक सेवा आयाग, धौलपुर हाउरा, नई दिल्ली-(110011) को आवेदन करना चाहिए। निर्धारित आवेदन-प्रपन्न तथा परीक्षा से सम्बद्ध पूर्व विवरण दो रुपये (२० 2/-) देकर आयोग से डाक द्वारा प्राप्त किए जा सकते हैं। यह राशि सचिव, सघ लोक सेवा आयोग, धौलपुर हाउस, नई दिल्ली-(110011) को मनीआवेर द्वारा या सचिव संघ लोक सेवा आयोग को नई दिल्ली जनरल डाकघर पर देय भारतीय पोस्टल आवेर द्वारा भेजी जानी चाहिए। मनीआवेर-पोस्टल आवेर के स्थान पर चैक या करेसी नोट स्वीकार नहीं किए जाएगे। ये आवेदन-प्रपन्न आयोग के काउन्टर पर तकद भुगतान द्वारा प्राप्त किए जा सकते हैं। वो रुपये (२० 2/-) की यह राशि किसी भी हालत से वापम नहीं की जाएगी।

नोट - उम्मीदवारो को चेनावनी दी जाती है कि वे अपने आवेदन-पत्न
भारतीय अर्थ सेवा/भारतीय सांख्यिकी सेवा परीक्षा, 1983 के
लिए निर्धारित मुद्रित प्रपत्न में ही प्रस्तुत करें। भारतीय अर्थ
सेवा/भारतीय सांख्यिकी सेवा परीक्षा, 1983 के लिए
निर्धारित आवेदन-पत्नो से इतर प्रपत्नो पर प्रस्तुत आवेदन-पत्नो
पर विचार नहीं किया जाएगा।

5. भरा हुआ आवेदन पत्न आवम्यक प्रलेखों के साथ सचिव, संभ लोक सेवा आयोग, धौलपुर हाउस, नई दिल्ली-110011 की 14 मार्च, 1983 (14 मार्च, 1983 से पहले की किसी तारोख से विदेशों में तथा अंडमान एवं निकोबार द्वीप ममूह, लक्षद्वीप, असम, मेघालय, अरुणा-चल प्रवेण, मिजोरम, मणिपुर, नागालेण्ड, विदुग, मिक्किम तथा जम्मू और कम्मीर, के लहाख डिवीजन हिमाचल प्रदेण के लाशील और स्पीति जिले मे रहने वाले और जिनके आवेदन उपयुंगन में ने किसी इलाके में डाक द्वारा प्राप्त होते हैं, उन उम्मीदवारों के मामले में 28 मार्च, 1983) तक या उससे पहले डाक द्वारा अवस्य भिजवा दिया जाए या स्वय आयोग के काउंटर पर आकर जमा करा दिया जाए। निर्धारित तारीख के बाद प्राप्त होने वाले किसी भी आवेदन-पत्न पर विचार नहीं किया जाएगा।

विदेशो में या अडमान एव निकोबार द्वीपसमृह, लक्षद्वीप, असम, मेघालय, अरुणाचल प्रदेश, मिजारम, भिणपुर, नागानैण्ड, त्रिपुरा, सिक्किस और जम्मू एव कप्सीर के लहाख डिवीजन द्विमाचल प्रदेश क लाहौल और स्पीति जिले में रहने वाले उम्मीववारों से आशोग यदि वाह तो इस बात का लिखित प्रमाण प्रस्तुन करने के लिए कह भकता है कि बह 14 मार्च, 1983 से पहले की किसी तारीख में विदेशों में या अडमान एव निकोबार द्वीपसमृह, लक्षद्वीप, अरुम, मेघालय, अरुणाचल प्रदेश, मिजोरस, मणिपुर, नागालैण्ड, त्रिपुरा, सिक्किम और उम्मू एवं कक्सीर के लहाख डिवीजन हिमाचल प्रदेश के लाहौल और स्पीति जिले में रह रहा था।

टिप्पणी (i) — जो उम्मीदबार ऐस क्षेत्रो के हैं जष्टा क रहने वाले आवेदन की प्रस्तुति हेंसु अतिरिक्त समय के हकदार है उन्हें आवेदन पक्ष के समत कालम में अपने पक्षो में अतिरिक्त समय के हकदार इलाके या क्षेत्र का नाम (अर्थात् असम, मेघालय, जम्म नथा कर्णार राज्य का लद्दाख कोत्र स्पष्ट रूप से निर्दिश्ट करना चाहिए अस्यथा हो सकता है कि उन्हें अतिरिक्त समय का लाभ न

टिप्पणी (ii):---जम्मीदवारों को सलाहु वी जाती है कि वे अपने जाजे-दन-पत्नों को स्वयं सं० ली० से० आ० के काउंटर पर जमा कराएं अथवा रिजस्टर्ड ढाक द्वारा भेजे। आयोग के किसी अथ्य कर्मधारी को दिए गए आवेदन-पद्मो के लिए आयोग उत्तरदायी नहीं होगा।

6. परीक्षा में प्रवेश चाहने वाले उम्मीदवारों को भरे हुए आवेदन पक्ष के साथ आयोग को २० 48 (रुपमें अड़तालीस) [अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जातियों के मामले में २० 12 (रुपमें बाग्ह)] का शुल्क भेजना होगा जो कि सचिव, मध लोक सेवा आयोग को नई दिल्ली के प्रधान डाकघर पर देय रेखांकित भारतीय पोस्टल आईर या सचिव, संघ लोक सेवा आयोग को स्टेट बैंक आफ इंडिया की नई दिल्ली रिचत मुख्य शाखा पर देय स्टेट बैंक आफ इंडिया की किसी भी शाखा से जारी किए गए रेखांकित बैंक झाफ इंडिया की किसी भी शाखा से जारी किए गए रेखांकित बैंक झाफ इंडिया को किसी भी शाखा

विदेश में रहने वाले उम्मीदवारों को निर्धारित गुल्क भारत के उच्च आयुक्त, राजदूत या विदेश स्थित प्रतिनिधि जैसी भी स्थित हो के कार्यालय में इस अनुरोध के साथ जमा करना होगा ताकि वह "051 लोक सेवा आयोग परीक्षा गुल्क" के लेखाशीर्ष में जमा हो जाए और आवेदन-पक्ष के साथ उसकी रसीद लगाकर भेजनी आहिए।

जिन आवेदन-पत्नों में यह अपेक्षा पूरी नहीं होगी उन्हें एक दम अस्वीकार कर विया जाएगा। यह उन उम्मीदवारों पर लायू नहीं होता जो नीचे के पैराग्राफ 7 के अन्तर्गत निर्धारित गुरूक से छूट चाहते हैं।

- 7 आयोग, यदि चाहे तो, उस स्थिति में निर्धारित गुल्क से छूट वे सकता है जब वह इस बात से संतुष्ट हो कि आवेदक या तो 1 जनवरी, 1964 और 25 मार्च, 1971 के बीच की अवधि में भूतपूर्व पूर्वी पाकिस्तान (अब बंगला देश) से भारत आया हुआ वास्तविक विस्थापित ध्यक्ति है, या बर्मा से वास्तविक रूप में प्रत्यावितत मूलतः भारतीय व्यक्ति है और 1 जून, 1963 को या उसके बाद भारत आया था या बहु श्रीलका से वास्तविक रूप में प्रत्यावितत मूलतः भारतीय व्यक्ति है जो अक्तूबर, 1964 के भारत-श्रीलंका समझौते के अक्तूबर, 1964 के भारत-श्रीलंका समझौते के अक्तूबर 1 नवस्वर, 1964 को या उसके बाद भारत आया था या श्रीलका से मारत मूल का भावी प्रत्यावितत व्यक्ति है या भूतपूर्व पिचम पाकिस्तान से ऐसा वास्तविक विस्थापित व्यक्ति है जो 1 जनवरी, 1971 और 31 मार्च, 1973 के बीच की अवधि के दौरान भारत प्रव्रजन कर चुका था और निर्धारित गुल्क दे सकने की स्थिति में नहीं है।
- 8. जिस उम्मीदवार ने निर्धारित णुल्क का भुगतान कर दिया हो किन्तु जिसे आयोग द्वारा परीक्षा मे प्रवेश नहीं दिया गया हो उसे ६० 30.00 (रुपए तीस) [अनुसूचित जातियो और अनुसूचित जनजातियों के मामले में ६० 8 (रुपए आठ)] की राशि वापिस कर दी जाएगी। किन्तु गवि नियम 6 के नीचे नोट 1 की शतों के अनुसार परीक्षा में प्रवेश चाहने वाले उम्मीदवार का आवेदन-पत्न यह सूचना प्राप्त होने पर अस्थीकार कर दिया जाता है कि वह अर्हक परीक्षा में असफल रहा है अयवा वह उपर्युक्त नोट के उपबन्धों की अपेक्षाओं का अन्याया पालन नहीं कर सकेगा तो वह शुक्क वापसी का हकदार नहीं होंगा।

उपर्युक्त और नीचे पैरा 9 की व्यवस्था को छोड़कर अभ्य किसी भी स्थिति में आयोग को भुगतान किए गए शुल्क की वापसी के किसी दावे पर न तो विचार किया जाएगा और न ही शुल्क को किसी अन्य परीक्षा या चयन के लिए आरक्षित रखा जा सकेगा।

9. यदि कोई उम्मीदवार जिसने 1982 में आयोजित भा० अर्थ सेवा/भा० सां० सेवा परीक्षा दी हो इस परीक्षा में प्रवेश का इच्छुक हो तो उसे परीक्षा परिणाम या नियुक्ति प्रस्ताव की प्रतीक्षा किए बिना अपना आवेदन-पद्म इस प्रकार अवश्य प्रस्तुत कर देना चाहिए कि वह आयोग के कार्यालय में निर्धारित तारीख तक पहुच जाए। यदि वह 1982 की परीक्षा के परिणाम के आधार पर नियुक्ति हेतु अनुशसित कर दिया जाता है तो 1983 की परीक्षा हेतु उसकी उम्मीदवारी उसके अनुरोध पर रह कर दी जाएगी और उसका शुक्क लौटा दिया जाएगा अशर्त कि

उम्मीदवारी रह करने और मुक्क लौटाने का अनुरोध आयोग के कार्यालय में 1982 की श्रन्तिम परोक्षा के परिणाम रीजगार समाचार में प्रकाणित होने के 30 दिन के भीतर प्राप्त हो जाए।

- 10 उम्मीदवार को अपना आवेदन-पत्न प्रस्तुत कर देने के बाद उम्मीदवारी बापस लेने से सबद्ध उसके किसी भी अनुरोध को किसी भी परिस्थिति में स्वीकार नहीं किया जाएगा।
- 11 जैसा कि परीक्षा नियमावली के परिशिष्ट-I में जिल्लिखित परीक्षा योजना में निर्विष्ट किया गया है, कुछ विषयों के प्रश्न-पद्मी में वस्तुपरक प्रश्न पूछे जाएगे। तमूने के प्रश्न महिन वस्तुपरक परीक्षण मंबेधी स्थीरे के लिए कृपया "जम्मीदवार सूचना-विवरणिका" के अनुबन्ध II का अवलोकन करे।

आर० एम० अहलूबालिया, उप सचिव

अनुबध-I

जम्मीदवारो को अनुदेश

 उम्मीदियारों को चाहिए कि वे आवेदन-प्रपद्म भरने से पहले नोटिस और नियमावली को ध्यान से पडकर यह देख से कि वे परीक्षा में बैठने के पान्न हैं या नहीं। निर्धारित भर्तों में छूट नहीं दी जा सकती।

आवेदन-पन्न भेजने से पहले उम्मीदवार को नोटिस के पैरा । मे दिए गए केन्द्रों में से किसी एक को जहां वह परीक्षा देने का इच्छुक हो अन्तिम रूप से चुन लेना चाहिए ।

उम्मीदवारों को घ्यान रखना चाहिए कि कंन्द्र में परिवर्तन से सबझ अनुरोध को सामान्यतया स्वीकार नहीं किया जाएगा। किन्तु जब कोई उम्मीववार अपने उस केन्द्र में परिवर्तन चाहता है तो उसने उक्त परीक्षा हेतु अपने आवेदन में निर्दिष्ट किया था तो उसे सिवा, सध लोक सेबा आयोग को इस बात का पूरा औंचित्य बताते हुए एक पन्न रिजस्ट डंडाक से अवश्य भेजना चाहिए कि वह केन्द्र में परिवर्तन क्यों चाहता है। ऐसे अनुरोधों पर गुणवत्ता के आधार पर बिचार किया जाएगा किन्सु 28 मई, 1983 के बाद प्राप्त अनुरोधों को किसी भी न्यिति में स्वीकार नहीं किया जाएगा।

2. उम्मीदवार को आवेदन-प्रपन्न तथा पावती कार्ड अपने हाथ से स्याही से या बास प्वाइस्ट पैन से ही भरने चाहिए। सभी प्रविष्टियां— उत्तर शक्दों में होता/हाने चाहिए, रेखा या बिन्द, श्रादि के द्वारा नहीं अधूरा या गलन भरा हुआ आवेदन-पन्न रह किया जाएगा।

उम्मीदवार यह ध्यान रखे कि आंवदन पन्न भरमें समय उन्हें भारतीय भकों के केवल श्रंतराष्ट्रीय रूपों का ही प्रयोग करना है । चहि माध्यमिक स्कूल छोड़ने के प्रमाण-पन्न या इसके समकक्ष प्रमाण-पन्न में जन्म की सारीख़ हिन्दी अंकों में दर्ज है तो भी उम्मीदवार यह मुनिश्चित कर ले कि वे आंवेदन प्रपन्न में प्रविष्टि करते समय इसकों भारतीय अकों के केवल अंतर्राष्ट्रीय रूप में ही लिखें। वे इस बारे में विशेष सावधानी बरते कि आंवेदन पन्न में की गई प्रविष्टिया स्पष्ट और सुपाट्य हो। यवि वे प्रविष्टियां अपाट्य या भ्रामक हैं तो उनके निवंचन में होने वाली भ्रांति या मंबेह के लिए उम्मीदवार जिम्मेदार होगे।

उम्मीदवारो को ध्यान रखना नाहिए कि आयोग द्वारा आवेदन-पक्ष में उनके द्वारा की गई प्रविष्टियों को बदलने के लिए कोई पक्ष आविद स्वीकार नहीं किया जाएगा। इसलिए उन्हें आवेदन-पन्न मही रूप में भरने के लिए विशेष सावधानी बरतनी जाहिए।

मसी उम्मीक्षवारी की साहु वे पहले में सरकार। नौकरी में हो या सरकारी सीहोपिक उपक्रमी में या इसी प्रकार के अन्य संगठनों में हो या गैर सरकारी संस्थाओं में नियुक्त हो, अपने आवेदन-पत्न आयोग को सीधे भेजने चाहिए। अगर किसी उम्मीदबार ने अपना आवेदन-पत्न अपने नियोक्ता के द्वारा भेजा हो और वह सध लोक सेवा आयोग में देर से पहुंचे हो तो उस आवेदन-पत्न पर विचार नहीं किया जाएगा, भने ती वह नियोक्ता को आखिरी तारीख संपहुंचे प्रमुत्त किया हो।

जो क्यक्ति पहुले से ही सरकारी नौकरी में आकारिमक या दैनिक दर कर्मचारी से इतर स्थायी या अस्थायी हैंसियल से या वार्म प्रभारित कर्म-चारियों की हैंसियत से या लोक उधमों में सेवा करने वालो के रूप में काम कर रहे हैं उन्हें यह परिवक्त (अंडरटेकिंग) प्रस्तुल करना होगा कि उन्होंने लिखित रूप से अपने कार्यालय/विभाग के अध्यक्ष को सूचित कर दिया है कि उन्होंने इस परीक्षा के लिए अबेदन किया है।

उम्मीदवारो को ध्यान रखना स्नाहिए कि याँद आयोग को उनके नियोक्ता से उनके उक्त परीक्षा के लिए आयेदन करने/परीक्षा में बैठने से सम्बद्ध अनुमति रोकते हुए कोई पत्र मिलता है तो उनका आवेदन पत्र अस्बीकृत/उनकी उम्मीदवारी रह कर दी आएगी।

- उम्मीदनार को अपन आनेदन-पम्न के माथ निम्नलिखित प्रलेख अवश्य भेजने चाहिएं.---
 - (i) निर्धारित शुल्क के लिए रेखाकित किए गए भारतीय पास्टल आईर या बैक ड्राफ्ट अथवा शुल्क में छूट के दावे के समर्थन मे प्रमाण-पत्नों की अभित्रमाणित/प्रमाणित प्रतिलिपि (देखिए नोटिस का पैरा 6 और 7 तथा नीचे पैरा 5 और 6)
 - (ii) आयु के प्रमाण पन्न की अनुप्रमाणित/प्रमाणित/प्रतिलिपि।
 - (iii) शैक्षिक योग्यता के प्रमाण-पन्न की अनुप्रमाणित/प्रमाणित प्रतिलिपि।
 - (iv) उम्मीदबार के हाल ही के पासपोर्ट आकार (लगभग 5 से० मी० × 7 सें० मी०) के फाटा की दो एक जैसी प्रतियां।
 - (v) जहां लागू हो बहा अनुसूचित जाति/अनुसूचित जन जाति का होने के दावे के समर्थन मे प्रभाण-पत्न की अनुप्रमाणित/प्रमा-णित प्रतितिषि (देखिए नीचे पैरा ४)।
 - (vi) जहां लागू हो वहां आयु मैं छूट के दावे के समर्थन में प्रमाण-पक्र की अन्प्रमाणित/प्रमाणित प्रतिक्षिप (देखिए नीखे पैरा 5)।
 - (vii) उपस्थिति पन्नक (आयेदन-पन्न के साथ संलग्न) विधियस भरा हुआ है।
 - (viii) लगभग 11.5 मे० मी० 27 5 सें० मी० आकार के दो बिना टिकट लगे लिफाफे, जिम्म पर आपका पता लिखा हो।
 - टिप्पणी (i) .--- उम्मीदथारी की अपने आवेदन-पत्नी के साथ उपर्युक्त मद (ii), (iii), (v), और (vi) में जिल्लिखन प्रमाण-पत्नों की केवल प्रतिया ही प्रस्तुत करनी है जा सरकार के किसी राजपन्नित अधिकारी द्वारा अभिप्रमाणित हों अथवा स्वय उम्मीदवारी द्वारा मही प्रमाणित हो। जो उम्मीदबार लिखित परीक्षा के परिणाम के आधार पर व्यक्तिगत परीक्षण के लिए माक्षारकार होतु झईता प्राप्त कर लेते हैं उन्हें उपर्युक्त प्रभाण-पत्न मूल रूप में प्रस्तुत करने होगे । लिखित परीक्षा क परिणाम संभवतः अक्तूबर, 1983 में घोषित किए आएगे। उन्हें अपने मूल प्रमाण-पन्न साक्षात्कार के समय प्रस्तुत कराने के लिए तैयार रखने चाहिए। जो उम्मीदवार उस समय अपेक्षित प्रमाण-पन्न मूल रूप से प्रस्तुत नही करेंगे उनकी उम्मीदवारी रह कर दी आएगी और उनका आगे विचार किए जाने का बाबा स्थीकार नहीं होगा !
 - टिप्पणी (ii) .---आवेदन पत्नों के साथ भेजी गई सभा प्रमाण-पत्ना की अभित्रमाणिन/प्रमाणित प्रति पर उम्मीदवार को हस्ताक्षर रस्ते होगे और सारीख मी दता होगी।

- (i) से (vi) मद में उल्लिखिन प्रलेखों के विवरण पैरा 4, 5 और 6 में दिए गए हैं ---
- (i) (क) निर्वारित शुल्क के लिए रेखाकित किए गए भारतीय पोस्टल आईर —

प्रत्येक पोस्टल आर्डर अनिवार्यतः रेखांकित किया जाए तथा उस पर "सचिव, सघ लोक सेवा आयोग" को नई दिल्ली के प्रधान डाकघर पर देय लिखा जाना चाहिए।

किसी अन्य डाकघर पर देय पोस्टल आईर किसी भी स्थिति में स्वीकार नहीं फिए जाएंगे, विक्षित या कटे-फटे पोस्टल आईर भी स्वीकार नहीं किए जाएंगे।

सभी पोस्टल आईंगं पर जारी करन वाले पोस्ट मास्टर के हस्ताक्षर और जारी करने वाले डाकघर की स्पष्ट मुहर होनी चाहिए।

उम्मीदवारों को अवस्य ध्यान रखना चाहिए कि जो पोस्टल आर्डर न तो रेखोंकिन किए गए हो और न हो सचिव, संघ लीक सेवा आयोग को नई दिल्ली जनरल डाकघर पर देय किए गए हों, उन्हें भेजना सुरक्षित नहीं है।

(ख) निर्धारित शुल्क के लिए रेखाकित बैक ड्राफ्ट ---

बैक ड्राफ्ट स्टेट कैंक आफ इडिया की किसी शाखा से लिया जाना चाहिए और सजिव, मध लोक सेवा आयोग को स्टेट कैंक आफ इंडिया मुख्य शाखा, नई विल्ली में देय होना चाहिए सथा विधिवत् रेखांकित होना चाहिए।

किसी अन्य बैंक के नाम देय किए गए बैंक द्राफ्ट किसी भी हालत में स्वीकार नहीं किए जाएंगे, विरूपित या कटे-फटे ट्राफ्ट भी स्वीकार नहीं किए जाएंगे।

- टिप्पणी उम्मीववारो का अपने आवेदन-पन्न प्रस्तुत करते समय

 कैक द्रापट की पिछली ओर सिरे पर अपना नाम तथा

 पना लिखना चाहिए।पोस्टल आईरों के मामले में उम्मीद
 वारों की पोस्टल आईर के पिछली ओर इस प्रयोजन के लिए

 निर्धारित स्थान पर अपना नाम तथा पना लिखें।
- (1i) आयु का प्रमाण पत्न .— आयोग जन्म की वह तारीख स्वीकार करना है जो मैट्रिकुलेशन या माध्यमिक विद्यालय छोड़ने के प्रमाणपत्न या किसी भारतीय विश्वविद्यालय द्वारा मैट्रिकुलेशन के ममकक्ष माने गए प्रमाणपत्न या किसी विश्वविद्यालय द्वारा अनुरिक्त मैट्रिकुलेटो के रिजस्टर में वर्ज की गई हो और वह उद्धरण विश्वविद्यालय के समुचित प्राधिकारी द्वारा प्रमाणित हो। जो उम्मीदवार उच्चतर माध्यमिक परीक्षा या उमकी समकक्ष परीक्षा उत्तीर्ण कर चुका है, वह उच्चतर माध्यमिक परीक्षा या समकक्ष परीक्षा के प्रमाणपत्न की अनुप्रमाणित/प्रमाणित प्रतिलिपि प्रस्तुन कर सकता है।

आयु के सबध में कोई अन्य दस्तावंज जैसे जन्मकुंडली, शपथपन्न, नगर निगम से सेवा अभिलेख में प्राप्त जन्म सबंघी उद्धरण, तथा अन्य ऐसे ही प्रमाण स्वीकार नहीं किए आएंगे।

अनुदेशां ४ इस भाग में आए हुए "मैद्रिकुलेशन उच्चतर माध्यमिक परीक्षा प्रमाणपत्न" वाक्यांश के अन्तर्गत उपर्युक्त वैकल्पिक प्रमाणपत्न सम्मिलत हैं।

कषी-कभी मैद्रिकुलगन/उच्चतर माध्यमिक परीक्षा प्रमाण-पन्न में जन्म की तारीख नही होती या आयु के केवल पूरे वर्ष या वर्ष धौर महीने ही विए होते हैं। ऐसे मामलों में उम्मीदवारों का मैद्रिकुलेगन/उच्चतर माध्यमिक परीक्षा प्रमाण-पन्न की अभिप्रमाणित/प्रमाणिक प्रतिलिपि के अतिरिक्त उस संस्था के हैडमास्टर/प्रिमिपल से लिए गए प्रमाण-पन्न की एक अनुप्रमाणिन/प्रमाणित प्रतिलिपि केजनी चाहिए जहा से उससे मैद्रिकुलेगन/उच्चतर माध्यमिक परीक्षा उत्तीर्ण की हो। इस प्रमाण-पन्न से उस संस्था के दािष्टा। राजस्टर में दर्ज की गई उसकी जन्म की तारीख

या वास्तविक आयु लिखी होनी चाहिए। उम्मीदधारी को चेतावनी दी जाती है कि यदि आवेदन पक्ष के साथ इन अनुदेशों में यथा निर्धारित आयु का पूरा प्रमाण नहीं भेजा गया तो आवेदन पक्ष अस्वीकार किया जा सकता है।

टिप्पणी 1—जिस उम्मीदवार के पास पढ़ाई पूरी करने के बाद प्राप्त माध्यमिक विद्यालय प्रमाण-पन्न हो, उसे केवल आयु से सम्बद्ध प्रविष्टि वाले पृष्ट की अभिप्रमाणित/प्रमाणित प्रतिलिपि भेजनी चाहिए।

टिप्पणी 2 उम्मीदवार यह ध्यान में रखे कि आयोग उम्मीदवार की जन्म की उसी तारीख को स्वीकार करेगा जो कि आवेदन पक्ष प्रसुत करने की तारीख को मैद्रिकुलेगन/उच्चतर माध्यमिक परीक्षा प्रमाण पक्ष या समकक्ष के प्रमाणपत्न में वर्ज है और इसके बाद इसमें परिवर्तन के किसी अनुराध पर न तो विचार किया जाएगा और न उसे स्वीकार किया जाएगा।

टिप्पणी :-- उरमीदवार यह भी मोट घर लें कि उनके द्वारा किसी परीक्षा में प्रवेश के लिए जन्म की सारीख एक बार घोषित कर देने और आयोग द्वारा उसे अपने अभिलेख में दर्ज कर लेने के बाद उसमें बाद में या किसी परीक्षा में परिवर्तन करने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

(iii) प्रैक्षिक योग्यता का प्रमुण :-- उम्मीदवार को एक ऐसे प्रमाण- पन्न की अनुप्रमाणित/प्रमाणित प्रतिलिपि अवश्य भेजनी चाहिए जिससे इस बात का प्रमाण मिल सकें कि नियम 6 से निर्धारित योग्यताओं में से कोई एक योग्यता उसके पाम है। भेजा गया प्रमाण-पन्न उस प्राधिकारी (अर्थात् विश्वविद्यालय या किसी अन्य परीक्षा निकाय) का होना चाहिए जिसने उसे योग्यता विशेष प्रवान की हो। यदि ऐसे प्रमाण-पन्न की अनुप्रमाणित/प्रमाणित प्रतिलिपि न भेजी जाए तो उम्मीदवार को उसे न भेजने का कारण अवण्य बसाना चाहिए और अपेक्षित योग्यता से संबद्ध अपने दावे के समर्थन में किसी अन्य प्रमाण-पन्न की प्रतिलिपि भेजनी चाहिए आयोग इस साक्ष्य पर उसकी गुणवता के आधार पर विचार करेगा। किन्तु वह उसे पर्योप्त मानने के लिए बाध्य नहीं होगा।

यदि किसी उम्मीदवार द्वारा अपनी शैक्षिक योग्यताओं के समर्थन में प्रस्तुत डिग्री परीक्षा उत्तीण करने से संबद्ध विश्वविद्यालय के प्रमाण-पत्न की अनुप्रमाणित/प्रमाणित प्रतिलिपि में परीक्षा के विषय नही दिए गए हों, तो उसे विश्वविद्यालय प्रमाण-पत्न की अभिप्रमाणित/प्रमाणित प्रतिलिपि के अतिरिक्त, प्रिंमिपल/विभागाध्यक्ष से लिए गए इस आणय के प्रमाण पत्न की एक अनुप्रमाणित/प्रमाणित प्रतिलिपि अवश्य भेजनी चाहिए कि उसने नियम 6 में निर्धारित किसी एक विषय या एक से अधिक विषयों में अर्हक परीक्षा उत्तीणं की है।

नोट:—यदि कोई उम्मीदवार किसी ऐसं। परीक्षा में बैठ चुका हो जिसे उत्तीणं कर लेने पर वह इस परीक्षा में बैठने का पान हो जाता है पर अभी उसे परीक्षा के परिणाम की सूचना न मिली हो तो वह भी इस परीक्षा में प्रवेश पाने के लिए आवेदन कर सकता है। जो उम्मीदवार इस प्रकार की अहंक परीक्षा में बैठना चाहता है वह भी आवेदन कर सकता है। यदि ऐसे उम्मीदवार अन्य भर्ते पूरी करते हों, तो उन्हें परीक्षा में बैठने दिया जाएगा परन्तु परीक्षा में बैठने की यह अनुमति अशंतिम मानी आएगी और यदि वे अहंक परीक्षा में उत्तीणं होने का प्रमाण जल्दी से जल्दी और हर हालत में 30 सितम्बर, 1983 तक प्रस्तुम नहीं करने तो यह अनुमति रह की जा सकती है।

(iv) फोटो की दो प्रतियों :— उम्मीदवार के अपने हाल ही के पासपोर्ट आकार (लगभग 5 से० मी० × 7 सें० मी०) के फोटो की को एक जैसी प्रतियां अवश्य भेजनी चाहिएं। इनमें से एक प्रति आयेवन-पत्न के पहले पृष्ठ पर और दूसरी प्रति उपस्थिति पत्रक में निर्धारित स्थान पर जिपका देनी चाहिए। फोटो की प्रत्येक प्रति पर उम्मीदवार को सामने की ओर स्थाही है हस्लाझर करने चाहिएं।

्षिभेष ध्यानः :—- उम्मीवयार को चेतायनी दी जाती है कि यदि आवेदन पन्न के साथ ऊपर पैरा 3(ii), 3(iii), और 3(iv) में उल्लिखित प्रलेखों में कोई एक संलग्न न होगा और उसे न भेजने का उचित स्पष्टी-करण भी नहीं विया गया होगा तो आवेदन-पन्न अस्थीकार किया जाएगा और इस अस्थीकृति के थिरुद्ध कोई अपील नहीं सुनी जाएगी।

4. यदि कोई उम्मीदवार किसी अनुसूचित जाति या अनुसूचित जानजाति का होने का दावा करें तो उसे अपने दावे के समर्थन में उस जिले
के जिसमें उसके माता-पिना या जीवित माता या पिता आम तौर से
रहते हों, जिला अधिकारी या उप-मण्डल अधिकारी या नीचे उल्लिखित
किसी अन्य अधिकारी से जिसे संबद्ध राज्य सरकार ने यह प्रमाण-पत्र जारी
करने के लिए सक्षम अधिकारी के रूप में पद नामित किया हो, नीचे विए
गए फार्म में प्रमाण-पत्र लेकर उमकी एक अनुप्रमाणित/प्रमाणित प्रतिलिपि प्रस्तुन करनी चाहिए। यदि उम्मीदवार के माता-पिता और दोनों
की मृत्यु हो गई हो, तो यह प्रमाणपत्र उस जिले के अधिकारी से लिया
जाना चाहिए जहां उम्मीदवार अपनी शिक्षा से भिन्न किसी अन्य प्रयोजन
से आम तौर पर रहता है।

भारत सरकार के अधीन पदों पर नियुधित के लिए आवेषन करने वाले अनुसूषित जाति और अनुसूषित जन जातियों के उम्मीदवारों द्वारा प्रस्तुत किए जाने वाले प्रमाण-पत्न का फार्म:

प्रस्तुत किए जाने वाले प्रमाण-पत्न का फार्मः
प्रमाणित किया जाता है कि श्री/श्रीमती/क्रुमारी*
——————————————————————————————————————
जो गांव/कस्बा [#]
जिला/मण्डल*राज्य
संघ* राज्य क्षेत्र
के/की* निवासी है
जाति/जन*जाति के/की* जिसे निम्नलिखित के अधी
अनुसूचित जाति/जन* जानि के रूप में मान्यता दी गई है :
सविधान (अनुसूचित जाति) आदेश, 1950* ।
सविधान (अनुसूचित जन जातियां) आदेश 1950* ।
संविधान (अनुसूचित जातियां) (संघ राज्य क्षेत्र), आदेण, 1951 ।
संविधान (अनुसूचित जन जातियां) (संघ राज्य क्षेत्र) आदेश
10月1年

[अनुस्चित जातियां और अनुस्चित जन जातियां सूची (आशोधन) आवेश, 1956, बम्बई पुनर्गठन अधिनियम, 1960, पंजाबी पुनर्गठन अधिनियम, 1966, हिमाचल प्रदेश राज्य अधिनियम, 1970, और उत्तर-पूर्वी क्षेत्र (पुनर्गठन), अधिनियम, 1971 और अनुस्चित जातियां तथा अनुस्चित जन जातियां आदेश संशोधन अधिनियम, 1976 द्वारा यथा संशोधित]।

संविधान (जम्मू और काश्मीर) अनुसूचित जातियां, आदेश, 1956। संविधान (अण्डमान और निकाबार द्वीप समूह) अनुसूचित जन जातियां आदेश, 1959*और अनुसूचित जातियां और अनुसूचित जन जातियां आदेश (संशोधन) अधिनियम, 1976 द्वारा यथा संशोधित।*

संविद्यान (दादरा और नागर हवेली) अनुसूचित जातियां आदेश, 1962[‡] ।

मंतिधान (दावरा और नागर हमेली) अनुसूचित जन जातियां, आवेश 1962*।

संविधान (पांडिजेरी) अनुसूचित जातिया आदेश 1964 ।

सविधान (अनुसूचित जन जातियां) (उत्तर प्रदेश) आदेश, 1967 ।

संविधान (गोना, दमन और दियु अनुसूचित जातियां) आदेश 1968 ।

सविधान (गोआ, दमन और दियु) अनुसूचित जन जातियां आदेश,

1968 ।

सर्विधान (नागर्लैङ) अनुसूचित जन जातिया आदेश 1970 । गश्धिन (सिक्किम) अनुसूचित जाति आदेश, 1978 ।

गविधान (मिक्किम) अनुसूचिन जन जाति आदेश, 1978* ।

, , , ,	*
भौर/या उनका परिवार	आमतौर से गांव/कस्बा*
जिला/मंडल*	राज्य/
रहती* हैं।	
	हस्ताक्षर
	**पदनाम
	(कार्यालय की मोहर महित)
स्यान	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
तारी ष	
	राज्य/संच* राज्य क्षेत्र
~	

*भी शब्द लागृन हो, उन्हें क्रुपया काट दें।

टिप्पणी:—यहां प्रयुक्त "माम तौर से रहते/रहती है" शब्दों का अर्थ बही होगा जो "रिप्रेजेंटेशन आफ दि पीपुल एक्ट, 1950" की धारा 20 में है।

· मजासि/जनजाति प्रमाण पत्र जारी करने के लिए सक्षम अधिकारी।

- (i) जिला मैजिस्ट्रेट/अितरिक्त जिला मैजिस्ट्रेट/कलक्टर/डिप्टी-कमिश्नर/एडीशनल डिप्टी कमिश्नर/डिप्टी कलैक्टर/प्रथम श्रेणी का स्टाइपेंडरी मैजिस्ट्रेट/सिटी मैजिस्ट्रेट/भिष्टी किल्स्ट्रेट/भाव-डिबीअनल मैजिस्ट्रेट/ ताल्लुक मैजिस्ट्रेट/एक्जीक्यृटिव मैजिस्ट्रेट/एक्स्ट्रा असिस्टेंट कमि-श्नर ।
 - †(प्रथम श्रेणी के स्टाईपेंडरी मैं जिस्ट्रेट से कम ओहदे का नहीं।)
- (ii) चीफ प्रेसीडेंसी मैजिस्ट्रेट/एडीशनल चीफ प्रेसीडेंसी मैजिस्ट्रेट/ प्रेसीडेंसी मैजिस्ट्रेट।
- (iii) रेबेन्यू अफसर जिसका ओहवा तहसीलवार से कम न हो।
- (iv) उस इलाके का सब-डिवीजनल अफसर जहां उम्मीदवार और/ या उसका परिवार आम तौर से रहता हो।
- (v) ऐक्ष्मिनिस्ट्रेटर/एडमिनिस्ट्रेटर का समिव/डेवलपमेंट अफसर, (लक्षद्वीप)।
- 5 (i) नियम 5(ख) (ii) या 5 (ख) (iii) के अंतर्गन निर्धारित बायु सीमा में छूट का वावा करने और या उक्त नोटिस के पैराग्राफ 7 के बधीन मुल्क से छूट का वावा करने वाले भूतपूर्व पूर्वी पाकिस्तान (अब बंगला देश) से विस्थापित व्यक्ति को निम्नलिखित प्राधिकारियों में से किसी एक के लिए किए प्रमाण-पन्न की अधिप्रमाणित/प्रमाणित प्रतिलिपि यह विखलाने के लिए प्रस्तुत करनी चाहिए कि वह भूतपूर्व पूर्वी पाकिस्तान (अब बंगला देश) से आया हुआ वास्तविक विस्थापित ध्यक्ति है और 1 जनवरी, 1964 और 25 मार्थ, 1971 के बीच की अविध के दौरान प्रवजन कर मारत आया है:—
 - (1) दंडकारण्य परियोजना के ट्राजिट केन्द्रों अथवा विभिन्न राज्यों में स्थित राहत शिविरों के कैम्प कर्माईट ।
 - (2) उस क्षेत्र का जिला मैजिस्ट्रेट, जहां वह इस समय निवास कर रहा है।
 - (3) अपने-अपने जिलो मे शरणार्थी पुनर्वाम के प्रभारी अतिरिक्त जिला मैजिस्ट्रेट।
 - (4) स्वयं प्रभारित सब-डिबीजन का सब-डिबीजनल अफसर।
 - (5) उप-शरणार्थी पुनर्जास-आयृक्त, पश्चिम बंगाल/निवेशक (पुन-विस), कलकत्ता ।
- (ii) नियम 5(ख) (iv) अथवा 5(ख) (v) के अतर्गत निर्धारित आयू में छूट का दावा करने वाले और/या उक्त नोटिस के पैराग्राफ 7 के अधीन शुरूक से छुट का दावा करने वाले श्रीलंका से प्रत्यावर्तित या प्रत्यावर्तित होने वाले मूलतः भारतीय व्यक्ति को श्रीलंका में भारत के उच्च आयुक्त के कार्यात्तय से लिए गए इस आशय के प्रमाणपत्न की एक अभिप्रमाणित/ सभाणित प्रविलिपि प्रस्तुत करनी चाहिए कि वह एक धारतीय नागरिक

- है जो अक्तूबर, 1964, के भारत-श्रोलका समझौने के अधीन । नवम्बर 1964 को या उसके बाद भारत आया है या आने वाला है।
- (iii) नियम 5(ख) (vi) या 5(ख) (vii) के अंतर्गत आयू मे छूट का वावा करने नाले वियननाम से प्रत्यावित्त भारत मूनक व्यक्ति को फिलहान जिस केन्न का वह निवाली है उसके जिला मैजिस्ट्रेट ने निए गए प्रमाण-पक्ष की एक अभिप्रमाणित/प्रमाणित प्रतिनिधि यह दिखावे के लिए प्रस्तुत करनी चाहिए कि वह वियतनाम से आया हुआ वास्तविक प्रत्यावित व्यक्ति और वियतनाम से जलाई 1975 से पहले भारत नहीं आया है।
- (iv) नियम 5(ख) (viii) अथवा 5(ख) (ix) के अन्तर्गत निर्धारित आयु सीमा में छूट का वावा करने वाले और/या उमत नोटिस के पैराप्राफ 7 के अधीन शुरूक से छूट का दावा करने वाले बर्मा से प्रत्यावित मूलतः भारतीय व्यक्ति को भारतीय राजदूतावाम, रगून द्वारा दिए गए पहिचान प्रमाण-पन्न की एक अभिप्रमाणित/प्रमाणित प्रतिलिपि यह दिखाने के लिए प्रस्तुत करनी चाहिए कि वह एक भारतीय नागरिक है जो 1 जून, 1963 को या उमके बाद भारत आया है, अथवा उसे जिम क्षेत्र का बह निवासी है उसके जिला मैजिन्टेट से लिए गए प्रमाण-पन्न की अभिप्रमाणित/प्रमाणित प्रतिलिपि यह दिखलाने के लिए प्रस्तुन करनी चाहिए कि बह बर्मा से आया हुआ वास्तिवक प्रत्यावित्त व्यक्ति है और 1 जून, 1963 को या उसके बाद भारत आया है।
- (प्र) नियम 5(ख) (x) अथवा 5(ख) (xi) के अन्तर्गत आयु-सीमा में छूट चाहने वाले ऐसे उम्मीदवार को जो रक्षा सेवा में कार्य करते हुए विकलांग हुआ है महानिदेशक, पुन.स्थापन, रक्षा मंत्रालय, से निम्नलिखित निर्धारित फामं पर इस आयाय का एक प्रमाण-पत्न लेकर उसकी एक अभिप्रमाणित/प्रमाणित प्रतिलिपि प्रस्तुत करनी चाहिए कि वह रक्षा सेवा में कार्य करते हुए विदेशी शत्नु देश के साथ संघर्ष में अथवा अशांति-प्रस्त क्षेत्र में फौजी कार्यशही के दौरान विकलांग हुआ और परिणाम-स्वरूप निर्मुक्त हुआ।

ह्रस्ताक्षर	-
पदनाम	-
दिनांक	-

* जो शब्द लाग्न हो उसे क्रुपमा काट दें।

(vi) नियम 5 (क्ष) (xii) या 5 (क्ष) (xiii) के अंतर्गत आयु में छट चाहने वाले कीनिया, उगाडा तथा सयुक्त गणराज्य तंजानिया, टंगानिका और अंजीबार से प्रवजन कर आए हुए या जाम्बिया, मलावी, जेरे सथा इथियोपिया से प्रत्यावर्तित हुए उम्मीववार की उस क्षेत्र के जिला मैजिस्ट्रेट से जहां वह इस समय निवास कर रहा है लिए गए प्रमाण-पन्न की एक अधिप्रमाणित/प्रमाणित प्रतिलिपि यह विखलाने के लिए प्रस्तुत करनी चाहिए कि वह वास्सव में उपर्युक्त देशों में प्रवजन कर आया है।

जो मृतपूर्व सैनिक तथा कमीशन प्राप्त अधिकारी (आपातकालीन सेवा कमीशन प्राप्त अधिकारियों/जल्पकालीन सेवा कमीशन प्राप्त अधिकारियों/जल्पकालीन सेवा कमीशन प्राप्त अधिकारियों सिहत) नियम 5(ख) (xiv) अथवा 5(ख) (xv) की शतों के अधीन आयु सीमाओं में छृट का दावा करते हैं उन्हें संबद्ध प्राधिकारियों से निम्नलिखित निर्धारित प्रपद्ध में उन पर लागू होने वाले प्रमाण-पत्न की, एक प्रमाणित/अभिप्रमाणित प्रतिलिप प्रस्तुत करनी चाहिए।

(क) का	यें मृक	त/सेवा निकृष	कार्मिको प	र लागृ
<u></u> प्रमाणित	किया	जाता है	कि सं०—	
₹क			नाम	 ,
जिनकी जन्म	की	सारीख—		t.
-,			से	

सेना/कीसेना/वायु सेना में सेवा की है और वे निम्नलिखित में ने एक शर्त पूरी करते हैं:---

- (क) उन्होने पांच या पाच रो आंधक वर्षों तक सैनिक सेवा की है और कार्यकाल के समापन पर कदाचार या अक्षमता के कारण बर्खास्त या कार्यपृक्त होने के अलावा अन्य आधारपर कार्यम्कन हुए है।
- (ख) धे सैनिक सेवा के कारण हुई भारीरिक अपंगता या अक्षमता के कारण ————को कार्यमृक्त हुए हैं। मक्षम प्राधिकारी का

नाम तथा पदनाम

स्थाम :

तारीख:

(**ख**) सेवारत/कार्मिको पर लागू

2 उर्हें -----से कार्यमुक्त/सेवा निवृत्त होना है। उनका पांच वर्ष का कार्यकाल-----तक समाप्त होने की संभावना है।

उनके विरुद्ध कोई अनुशासनात्मक मामला लम्बित नहीं है। सक्षम प्राप्तिकारी का

नाम तथा परनाम

स्थान :

तारीखः

प्रमाण पक्ष जारी करने वाले सक्ष म प्राधिकारी निम्नलिखित है :--(क) कमीशन प्राप्त अधिकारियों (आपातकालीन कमीशन प्राप्त अधिकारियों/अल्पकालिक सेवा कमीशन प्राप्त अधिकारियों सहित) के मामले में :---

सेना -- कार्मिक सेवा निदेशालय, सेना मुख्यालय, नई दिस्ली। नौसेना -- कार्मिक सेवा निदेशालय, नौसेना मुख्यालय, नई दिल्ली। वामुसेना-- कार्मिक सेवा निदेशालय, वायु सेना मुख्यालय, नई दिल्ली।

(य) नौ सेना तथा वायु सेना के जनियर कमीशन प्राप्त अधिकारियों/ अन्य रैंकों तथा समकक्ष अधिकारियों के मामले में :--

सेना -- विभिन्न रेजिमेंटल रिकार्ड कार्यालयों द्वारा

नौसेना — नौसेना रिकार्य बम्बई।

वायु सेना वाय सेना रिकार नई दिल्ली।

- (viii) नियम 5(ख) (Xvi) या नियम 5(ख) (Xvii) के अंतर्गत आयु में छूट और/या नोटिस के पैरा 7 के अंतर्गत शुरूक में माफी चाहने वाले भूसपूर्व पश्चिम पाकिस्तान से विस्थापित व्यक्ति को निम्नलिखित मे से किसी प्राधिकारी से इस आगय के प्रमाणपत्र की एक अनुप्रमाणित/ प्रमाणित प्रति प्रस्तुत करनी चाहिए कि वह भूतपूर्व पश्चिम पाकिस्तान का चास्तविक विस्थापित व्यक्ति है जो 1 जनवंशी, 1971 और 31 मार्च, 1973 के बीच की अवधि के दौरान भारत प्रक्रजन कर कुका था:——
 - (1) विभिन्न राज्यों में ट्रांजिट केन्द्रों या राहत शिविरो के शिविर-कमोडेंट;
 - (2) उस इलाके का जिला मजिस्ट्रेट जिसमें वह फिलहाल रहता हो;
 - (3) अपने-अपने जिलो में शरणार्थी पृतर्वास के प्रभारी अतिरिक्त जिला मैजिस्टेट;

- (4) अपने प्रभारान्सर्गत सब डिवीजन के अदर सब डिवीजीनल शक्तनः
- (5) शरणार्थी पुनर्वाम का उपायुक्त ।
- 6 जो उम्मीदयार उपर पैरा 5(i), (ii), (iv) और (viii) में से किसी भी वग में संबद्ध है तथा नोटिम के पैरा 7 के अनुसार मुल्क में छूट का वावा करता है, उसकी किसी जिला अधिकारी या सरकार के राजपितत अधिकारी या संस्व सबस्य या राज्य विधान मंडल के सबस्य में, यह विख्याने के लिए कि वह निर्धारित मुल्क देने की स्थिति में नहीं है, इस आशय का एक प्रमाण-पन्न लेकर उसकी अभिप्रमाणित/प्रमाणित प्रतिलिपि प्रस्तुन करनी होगी।
- 7. जिस व्यक्ति के लिए पान्नता प्रमाण-यत्न आवश्यक हो उसे अपने लिए अभीष्ट पान्नता प्रमाण-यत्न जारी करने के लिए भारत सरकार के गृह मंत्रालय (कार्मिक तथा प्रकासनिक सुधार विभाग) को आवेदन करना चाहिए।
- उम्मीदवारों को चेतावनी दी जाती है कि वे आवेदन-पत्न भरते समय कोई झुठा क्यीरा न दें अथवा किसी महस्वपूर्ण सूचना को न छिपाएं।

उम्मीदवारों को यह भी चेतावनी दी जाती है कि वे अपने द्वारा प्रस्तुत किए गए किसी प्रलेख अथवा उसकी प्रति की किसी प्रविध्वि को किसी प्रतिष्ठि को किसी भी स्थिति में न तो ठीक करें न उनमें परिवर्तन करें और न कोई फेरबदल किए गए/झूटे प्रलेख प्रस्तुन करें। यदि ऐसे वो या इससे अधिक प्रलेखों या उनकी प्रतियों में कोई अमुद्धि अथवा विसंगित है तो विसंगित के संबन्ध में स्पष्टीकरण प्रस्तुत किया जाए।

- 9. आवेदन-पत्न देर से प्रस्तुत किए जाने पर देरी के कारण के स्प में यह तर्फ स्थीकार नहीं किया जाएगा कि आवेदन-प्रपत्न ही अमुक तारीख को भेजा गया था। आवेदन-पत्न का भेजा जाना ही स्वतः इस बात का सूचक न होगा कि आवेदन-प्रपत्न पाने वासा परीक्षा में बैठने का पान हो गया है।
- 10. आयोग के कार्यालय में प्राप्त प्रत्येक आवेदन-प्रत्न जिसमें देर से प्राप्त आवेदन पत्न भी सम्मिलित हैं की पावती दी जाती है तथा आवेदन-पत्न की प्राप्ति के प्रतीक के रूप में उम्मीदवार को आवेदन पंजी-करण संख्या मूचित कर दी जाती है यदि किसी उम्मीदवार को उक्श परीक्षा के आवेदन-पत्न प्राप्त करने के लिए निर्धारित अंतिम सारीख से एक मास के अन्दर पावती नहीं मिलती है सो उसे तत्काल आयोग से पावती हेतु सम्मकं करना चाहिए।

इस तस्य का कि उम्मीदबार को आवेदन पंजीकरण सक्या सूचित कर दी गई है अपने आप यह अर्थ नहीं है कि आवेदन-पन्न सभी प्रकार पूर्ण है और जायोग द्वारा स्वीकार कर लिया गया है।

- 11. इस परीक्षा के प्रत्येक उम्मीदबार को उसके आदेदन-पन्न के परिणाम की सूचना यथाणी घ दे दी जायेगी। किन्तु यह नहीं कहा जा सकता कि परिणाम कय सूचित किया जाएगा। यदि परीक्षा के मुक्क होने की तारीख से एक महोने पहले तक उम्मीदबार को अपने आवेदन-पन्न के परिणाम के बारे में संघ लोक सेवा आयोग से कोई सूचना न मिले को परिणाम की जानकारी के लिए उसे आयोग से तत्काल संपर्क स्थापित करना चाहिए। यदि उम्मीदवार ने ऐसा नहीं किया तो वह अपने मामले में विचार किए जाने के दावे से वंचित हो जाएगा।
- 12. संघ लोक सेवा आयोग ने "सब लोक सेवा आयोग की कस्तु-परक परीक्षाओं हेतु उम्मीदवार विवरणिका" शीषक से एक समूल्य पुस्तिका छापी है। इसका डिजाइन ऐसा है जिससे संव्लाव्हें आव्की परीक्षाओं या चयनों के भाषी उम्मीदवारों को सहायता मिल सके।

यह पुस्तिका और पिछली पांच परीक्षाओं की नियमावली तथा पारम्परिक प्रकार के प्रमन-पत्नों का उल्लेख करने वाले पैम्फ्लेटों की प्रतिया प्रकाशन, नियंत्रक, सिविल लाइन्स, देहली-110054 के पास क्रिकी के लिए सुलभ हैं और इन्हें उनसे सीधे मेल आईंट द्वारा या नकद भुगतान पर प्राप्त किया जा सकता है। इन्हें केवल नकद भुगतान पर (i) किताब महल, रिबीली िननेमा के साममे, एम्पोरिया बिल्बिंग, "सी" स्लाक बाबा खड़गिसह मार्ग, नई विल्ली-110001 और (ii) उद्योग भवन, नई विल्ली-110011 स्थित प्रकाणन शाखा का बिकी काउन्टर और (iii) गवर्नमेंट आफ इंडिया बुक विपो, 8-के० एम० राय रोड, कलकरना-1 में भी लिया जा सकता है। मैनुअल/पैम्फलेट भारत सरकार प्रकाशनों के विभिन्न मुफसिल शहरों में स्थित एजेंटों से भी उपलब्ध है।

13. आवेषन-पत्नों से संबद्ध पत्र-श्यवहार :-- आवेषन पत्नों से मम्बद्ध सभी पत्न आवि सचिव, संघ लोक सेवा आयोग, धीलपूर, हाउस, णाह्जहां रोइ, मई दिल्ली-110011 को भेजे जाएं तथा उनमें नीचे लिखा स्थीरा अनिवार्य रूप से दिया जाए:---

(i) परीक्षा का नाम

- (ii) परीक्षा का महीना और वर्ष
- (iii) उम्मीदबार की आवेदम पंजीकरण सं० रोल नम्बर अथवा जम्म की तारीख, यदि (आवेदम पंजीकरण सं० रोल नम्बर) सूचित नहीं किया गया है।
- (iv) जम्मीवकार का नाम (पूरा तथा बड़े अकारों में)
- (v) आवेदन-पत्नों में दिया गया पत्न-व्यवहार का पता

इसान हैं:—(i) जिम पत्नों आदि में यह स्थौरा नहीं होगा, संभवतः उन पर इसान नहीं दिया जाएगा।

विशेष ध्यान :—(ii) यदि भिसी उम्भीदवार से कोई पद्म/प्रेषण परीक्षा हो
णुकने के बाद प्राप्त होता है तथा उसमें उसका पूरानाम व
अनुक्रमांक नहीं है तो इस पर ध्यान न वेते हुए कोई
कार्यवाई नहीं की जाएगी।

14. पते में परिवर्तन: — उम्मीदवार को इस बात की व्यवस्था कर लेनी चाहिए कि उसके आवेदन-पत्न से उल्लिखित पते पर पर भेजे गए पत्र आदि आवश्यक होने पर, उसको बदले हुए पते पर मिल जाया करें। पते में किसी भी प्रकार का परिवर्तन होने पर आयोग को उसकी सुचना उपर्युक्त पैरा 13 में उल्लिखित क्यौरे के साथ, यथा शीझ बी जानी बाहिए। यद्यपि आयोग ऐसे परिवर्तनों पर क्यान देने का परा-पूर। प्रयत्न करता है। किन्तु इस विषय में बहु कोई जिन्मेदारी क्वीकार नहीं कर सकता।

अनुबन्ध-2 उम्भीदवारों के सूचनार्य विवरणका,

(केवल बस्तुपरक प्रथन-पन्नों पर लागू है। देखिए परिशिष्ट-I के पैरा $_2$ के नीचे नोट I_iII_i , और III_i)

(क) वस्तुपरक परीक्षण:--

आप जिस परीक्षा में बैठने वाले हैं वह "वस्तुपरक परीक्षण" होगा। इस प्रकार की परीक्षा (परीक्षण) में आपको उत्तर लिखने नहीं होंगे। प्रस्थेक प्रश्न (जिसको आगे प्रश्मीम कहा जायेगा) के लिए कई सुक्षाए गए उत्तर (जिसको आगे प्रत्युत्तर कहा जाएगा) दिए जाते हैं। उनमें से प्रस्थेक प्रश्नांश के लिए आपको एक उत्तर चुन लेना है।

इसं विवरणिका का उद्देण्य आपको इस परीक्षा के बारे में कुछ जानकारी देना है जिससे कि परीक्षा के स्वरूप से परिचित न होने के कारण आपको कोई हानि न हो।

(अ) परीक्षणका स्त्ररूप:

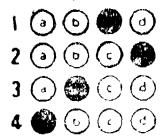
प्रका पत्न "परीक्षण पुस्तिका" के रूप में होंगे। इस पुस्तिका में कम संख्या 1,2,3—आदि के कम से प्रकाश होंगे। हर प्रकाश के नीचे ए, की, सी, डी, जिन्ह के साथ सुक्षाए गए प्रत्युत्तर लिखे होंगे। आपका काम एक सही या यदि आपको एक से अधिक प्रत्युत्तर सही लगे तो उनमें से सर्वोत्तम उत्तर का भूनाव करना होगा। (अंत में दिए गए नमूने के प्रकाश 32—416G1/82

देख को)। किसी भी स्थिति में, प्रत्येक प्रकाश के लिए आपको एक सही प्रत्युक्तर का चुनाब करना होगा। यदि आप एक से अधिक चुन लेते हैं तो आपका प्रत्युक्तर गलन माना जाएगा।

(ग) उत्तर देने भी विधिः

परीक्षा भयन में आपको अलग एक उत्तर पत्नक जिसकी (एक नमूना प्रति आपको प्रवेश-पत्नके साथ भेजी जाएगी) विधा जाएगा। आपको अपने प्रस्युत्तर इस उत्तर पत्नक में लिखने होंगे। परीक्षण पुरितका में या उत्तर पत्नक को छोड़ कर अन्य किसी कागज पर लिखे गए उत्तर नहीं जांचे जायेंगे।

उत्तर पत्रक में प्रश्नाशों की संख्याए 1 से 160 तक चार खंडों में छापी गई है। प्रत्येक प्रश्नांश के मामने ए, बी०, सी, ही चिन्ह वाले आयताकार स्थान छपे होते हैं। परीक्षण पुस्तिका के प्रत्येक प्रश्नांश को पढ लेने और यह निर्णय करने के बाद कि कौन सा प्रत्युत्तर सही या सर्वेत्तिम है आपको उस प्रत्युत्तर के अक्षार वाले आयत को पेंसिल से पूरी तरह काला बना कर उसे अंकित कर देना है, जैपा कि (आपका उत्तर दर्शान के लिए) नीचे दिखाया गया है। उत्तर पत्रक के आयत को काला बनाने के लिए स्याही का प्रयोग नहीं करना चाहिए।



यह जरूरी है कि:---

- प्रक्रांकों के उत्तरों के लिए केवल अच्छी किल्म की एच० बी० पेसिल (पैसिलें) ही लाएं और उन्हीं का प्रयोग करें।
- यलत निशान को बबलने के लिए उसे पूरा मिटाकर फिर से सही उत्तर पर निशान लगा वें। इसके लिए आप अपने साथ एक रवड़ भी लाएं।
- उत्तर पत्नक का उपयोग करते समय कोई ऐसी असावधानी न बरतें जिससे यह फट जाए या उसमें मोड़ व सिलवट आदि पड़ जाए या वह बराब हो जाए।

(भ) कुछ महत्वपूर्ण वितियम:

- आपको परीक्षा आरम्ब करने के लिए निर्धारित समय से बींस मिनट पहले परीक्षा भवन में पहुंचना होगा और पहुंचते ही अपना स्वान बहुण करना होगा।
- परीक्षण शुरू होने के 30 मिनट बाद किसी को परीक्षण में प्रवेश नहीं विमा आएगा।
- परीक्षा शुरू होने के बाद 45 मिनट तक किसी को परीक्षा भवन छोड़ने की अनुमति नहीं मिलेगी।
- 4. परीक्षा समाप्त होने के बाद, परीक्षण पुस्तिका और उत्तर पत्नक निरीक्षक/पर्यवेक्षक को सौंप दें। आपको परीक्षण पुस्तिका परीक्षा भवम से बाहर से जाने की अनुमति नहीं है। इस नियम का उल्लंबन करने पर कड़ा दंड विया जाएगा।
- 5. आपको उत्तर पद्मक पर कुछ विवरण परीक्षा भवन में भरना होगा। आपको कुछ विवरण उत्तर-पत्मक पर कूटबद्ध भी करने होंगे। इसके बारे में आपके नाम अनुवेश प्रवेश प्रमाण-पत्न के साथ भेजे जाएँगे।
- 6. परीक्षण पुस्तिका में दिए गए सभी अनुदेश आपको सावधानी में पढ़ने हैं। इन अनुदेशों का सावधानी से पालन न करने से आपके नम्बर कम हो सकते हैं। अगर उत्तर पद्मक पर कोई प्रविष्टि संविष्ध है, तो उस प्रकांश के प्रत्युत्तर के लिए आपको कोई नम्बर नहीं मिलेगा। पर्ववेक्षक के अनुदेशों का पालन करें। जब पर्यवेक्षक किसी परीक्षण या उसके किसी भाग को आरम्भ या समाप्त करने को कहें तो उनके अनुदेशों का तत्काल पालन करें।

7. आए अपना प्रवेश प्रभाण-पन्न साथ लावें, आपको अपने साथ एकः एच० बी० पेंसिल, एक रवड़, एक पेंसिल शार्पनर और नीली या काली स्याही वाली कलम भी लानी होगी। आपको सलाह दी जाती है कि आप अपने साम एक क्लिप बोर्डया कार्ड बोर्डया हार्डबोर्डभी लाएं जिस पर कुछ लिख्या न हो। आपको परीक्षा भवन में कोई खाली कागज या कागज का टुकड़ा या पैमाना या आरेखन उपकरण नहीं लाने हैं क्योंकि उसकी जरूरत नहीं होगी। मांगने पर कच्चे काम के लिए आपको एक अलग कागज दिया जाएगा। आप अच्चा काम या मुरू करने के पहले उस पर परीक्षा का नाम, अपना रोल नम्बर, और परीक्षण की तारीख लिखें और परीक्षण समाप्त होने के बाद उसे अपने उत्तर पत्नक के साथ पर्यवेक्षक को बापस कर वें।

ड विशेष अनुदेश

परीसा भवन में अपने स्थान पर बैठ जाने के बाद निरीक्षक आपकी टलर पत्रक दें। उत्तर प्रक्षक पर अपेक्षित भूचना भर दें। यह काम परा होने के बाद निरीक्षक आपको परीक्षण पुस्तिका **देंगे। परीक्षण** पुस्तिका मिलने पर आप यह अवश्य देख में कि उस पर पुस्तिका की मख्या लिखी हुई है अन्यया, उसे बदलवा लें। आपको परीक्षण पुस्तिका तब तक मोजने की अनुमति नहीं है अब तक पर्यवेक्षक ऐसा करने के लिए न कहें।

(च) कुछ उपयोगी सुझाव

यद्यपि इस परीक्षण का उद्देश्य आपकी गति की अपेक्षा गुद्धता की जांचना है, फिर भी यह जरूरी है कि आप अपने समय का यथासंजय वकता से उपयोग करें। संतुलन के साथ आप जितनी अल्बी काम कर सकते हैं, करें पर लापरवाही न हो। आप सभी प्रश्नों का उत्तर महीं वे पाने हो तो चिता न करें। आपको जो प्रश्न अस्पन्त कठिम मानुम पड़े उन पर समय व्यर्थ न करें। दूसरे प्रश्नों की भोर बढ़ और छन कठिम प्रश्नों पर बाद में विचार करें।

सभी प्रश्नांगों के अंक समान होंगे। उन सभी के उत्तर दें। आप द्वारा अंकित सही प्रत्युक्तरों की संख्या के आधार पर ही आपको अंक बिए जाएंगे। गलत उत्तरों के लिए अंक नहीं काटे जाएंगे। 🕐

(छ) परीक्षण का समापना:

जैसे ही पर्यवेक्षक आपको लिखना बंद करने को कहें, आप लिखना बंद कर दें। आप अपने स्थान पर तब तक नैठें रहें जब तक निरीक्षक आपके पास आकर आपसे सभी आवश्यक वस्तुएं ले जाएं और आपको हाल छोड़ने की अनुमति दें। आपको परीक्षण-पुस्तिका और उत्तर पत्नक तथा अच्चे कार्य का कागज परीक्षा भवन से बाहर ले जाने की अनुमति महीं है।

नमूने के प्रश्नांश (प्रश्न)

(भोट:-- *सही/सर्वोत्तम उत्तर-विकल्प को निर्विष्ट करता है) 1. सामान्य अध्ययन

बहुत ऊंचाई पर पर्वेतारोहियों के नाक तथा कान से निस्नीविद्यत मैं से किस कारण से रक्त स्नाव होता है?

- (a) रक्त का दाव वायुमंडल के दाव से कम होता है।
- (b) रक्त का वाब बायुमंडल के वाब से अधिक होता है।
 - (c) रक्त वाहिकाओं की अन्यरूपी तथा बाहरी शिराओं पर दाव समाभ होता है।
- (d) रक्त का दाब वायुमंडल के दाब के अनुस्प घटता बढ़ता है।

अरहर से फुलों का झड़ना निम्नलिखित मैं से किस एक उपाय से किया जा सकता है।

- (a) बुद्धि निमन्नक द्वारा **छि**ड्काव
- (b) दूर पूर पौषे लगाना
- (c) सही ऋतु में पौधे लगाना
- (d) थोड़े घोड़े फासले बर पीखे लगाना।

(रसायन विज्ञान)

3VO4 का एनहाश्राद्य निम्नलिखिन में से क्या होता है?

- (a) VO₃
- (b) VO₄
 - (c) V_2O_3
 - (d) V₂O₅

4. (अर्थशास्त्र)

श्रम का एकाधिकारी शोषण निम्नलिखित में से किल स्थिति में होता है ?

- (a) सीमान्त राजस्य उत्पाद से मजदूरी कम हो।
 - (b) मजदूरी तथा सीमाप्त राजस्य उत्पावन वोनो बराबर हो।
 - (c) मजदूरी सीमान्स राजस्य , उत्पाद से लिखक हो ।
 - (d) मजदूरी सीमान्त भौतिक उत्पाद के वरावर हो ।

(वैचुत् इंजीनियरी)

एक समाक्ष रेखा को अपेक्षित परावैखुतांक 9 के पैरावैखुत्त से सम्बंध रित किया गया है। मदि C मुक्त अल्तराल में सवरण क्रेग क्र्याता है लाइन में संवरण का बेग क्या होगा?

- (a) 3/C
- (b) C
- *(c) C/3
- (b) C/9

(भू-विकान)

वेसास्य में प्लेजिकोक्लेस क्या होता है?

- (a) आविगोक्लेज
- (b) सेवोबोराइट
- (c) एल्बाइट
- (d) एनायाइठ

7. (गणित)

मूल बिन्दु से गुजरने वाला और d²y --- dy ==σ समीकरण

को संगत रखने बाला वन-परिवार निम्मलिखित में से किस से निर्विष्ट है

- (a) y=ax+b
- (b) y=ax
- (c) y=ae +be-x
- *(d) y=ac —a

8. (मीतिकी)

एक आवर्श कल्मा इंजम 400° के और 300° के तापक्रम के सम्ब कार्यं करती है। इनकी क्रमता निम्नलिखित में से क्या होगी?

- (a) 3/4
- *(b) (4-3)/4
- (c) 4/(3+4)
- (d) 3/(3+4)

9. (सांच्यिकी)

सर्वि द्विपद विचर का भाष्य 5 है दी इसका प्रतरण निस्निलिखित में से क्या होगा?

- (a) 42
- *(b) 3
- (c) ∝
- (d) -5

10. (भृगोस)

वर्भा के दक्षिणी भाग की अस्यिधिक समृद्धि का कारण निम्निजिसित में से क्या है ?

- (8) यहाँ पर सानिज साधमों का विपूल मंडार है।
- *(b) वर्मा की अधिकांश नदियों का बेस्टाई भाग है।
- (c) यहां श्रेष्ठ वन संपवा है।
- (d) देश के अधिकांश तेल क्षेत्र इसी भाग में हैं।

11. भारतीय इतिहास

बाह्यणवाद के संबंध सें निम्नलिखित में से क्या सल्य नहीं है ?

- (a) बौद्धधर्मं के उत्कर्ष काल मैं भी बाह्यणबाद के अनुयायियों की संख्या बहुत अधिक थी।
- (b) ब्राह्मणवाय बहुत अधिक कर्मकांड और आडंबर से पूर्ण धर्म चाः
- (c) बाह्मणबाद के अध्युद्धम के साथ, बिल सम्बन्धी यज्ञ कर्म का महत्व कम हो गया।
- (d) व्यक्ति के जीवन-विकास की विभिन्न दशाओं को प्रकट करने के सिए धार्मिक संस्कार निर्घारित थे।

12. (वर्शन)

निम्नलिखित में से निरीश्यरवादी दशाँन समृह कौन-सा है ?

- (a) बौद्ध, त्याय, बाबौक, मीमोसा
- (b) स्याय, वैशेषिक, जैन और बौद्ध, जार्वाक
- (c) अदैत, वैदात, सांक्य, चार्वाक योग
- *(d) बौद्ध, सांख्य, मीमांसा, चार्वाक

13. (राजनीति विज्ञान)

'कृतिगक्ष प्रतिनिधान' का अर्थ निम्नलिखित में से क्या है?

- (a) व्यवसाय के आधार पर विद्वानमंद्रल में प्रतिनिधियों का निर्वाचन।
 - (b) किसी समूह या किसीं व्यावसायिक समुदाय के पक्ष का समर्थन।
 - (c) किसी रोजगार संबंधी संगठन में प्रतिनिश्चियों का चुनाव।
- (d) अनिको संबों द्वारा अप्रत्यक्ष प्रतिनिधित्व ।

14 (मनोविज्ञान)

सक्य की प्राप्ति निम्नसिखित में से किस को निर्वेखित करती है?

- (a) लक्ष्य संबंधी आवश्यकता में वृद्धि
- *(b) भाषात्मक अवस्या में न्यूनता
- (c) व्यावहारिक अधिगन
- (d) पकापात पूर्ण अधिगम

15. (समाजनास्त्र)

भारत में पंथायती राज संस्थाओं की निम्न में से कीन-सी है ?

- *(a) बाम सरकार में महिलाओं तथा कमजोर वर्जी को जीपजारिक प्रतिनिधित्व प्राप्त हुआ है।
 - (b) खुआधूत कम हुई है।
 - (C) बंचित वर्गों के लोगों की मुस्वामित्व का लाम मिला है।
 - (d) जन साधारण में शिक्षा का प्रसार हुआ है।

टिप्पची:--- उम्मीदवारों को यह ध्यान रखना चाहिए कि उपर्युक्त नभूने के प्रकाश (प्रथन) केवल उवाहरण के लिए दिए गए हैं भीर वह अकरी नहीं है कि ये इस परीक्षा की पाठ्यक्यों के ग्रनुसार हों।

ENFORCEMENT DIRECTORATE FOREIGN EXCHANGE REGULATION ACT

New Delhi-3, the 27th December 1982

No. A-11/10/82.—Shri S. S. Tripathi, Hindi Officer of Central Excise Collectorate, Kanpur, is appointed on deputation as Hindi Officer in the Headquarters, Office of this Directorate at New Delhi with effect from 1st September 1982 and until further orders.

Sd./ ILLEGIBLE

for Chief Enforcement Officer (Admn.)

MINISTRY OF HOME AFFAIRS DEPARTMENT OF PERSONNEL & A.R. CENTRAL BUREAU OF INVESTIGATION

New Delhi, the 22nd December 1982

No. A-12025/1/81-AD-V.—The Director, Central Bureau of Investigation and Inspector General of Police, Special Police Establishment hereby appoints Shri Vijai Kumar Sharma as Public Prosecutor CBI with effect from forenoon of 2nd December 1982.

R. S NAGPAL,
Administrative Officer (E)
Central Bureau of Investigation

DIRECTORATE GENERAL, CRP FORCE

New Delhi-110003, the 23rd December 1982

No. O.II-152/77-Estt.—Consequent on the expiry of his term of re-employment in the C.R.P.F. Lt. Col (Retd.) S. S. Mathur, relinquished charge of the post of Joint Assistant Director (Comm.) in the afternoon of the 14th December 1982.

A. K. SURI, Assistant Director (Estt.)

OFFICE OF THE REGISTRAR GENERAL, INDIA

New Delhi-11, the 23rd December 1982

No. 11/20/81-Ad.I.—In continuation of this office notification of even number dated 28-5-1981 the President is pleased to appoint, on deputation, Shri G. Basavanna, an officer belonging to the Karnataka Statistical service, as Assistant Director of Census Operations in the office of the Director of Census Operations, Karnataka, Bangalore, on ad-hoc basis for a further period upto 28-2-1983 or till the post is filled in, on a regular basis, whichever period is shorter.

2. The headquarters of Shri Basavanna will be at Bangalore.

The 27th December 1982

No. 10/28/81-Ad.I.—In continuation of this office notification of even number, dated 19th November 1981, the President is pleased to appoint, Dr. B. K. Roy, Assistant Registrar General (Map) in the office of the Registrar General, India, New Delhi, as Deputy Registrar General (Map) in the same Office, on a purely temporary and ad-hoc basis, for further period upto 28th February 1983, or till the post is filled in on a regular basis, whichever period is shorter.

2. The headquarters of Dr. Roy will be at New Delhi.

The 28th December 1982

No. 10/29/80-Ad. I—In continuation of this office notification of even number, dated 26-4-1982, the President is pleased to appoint on deputation, the undermentioned officials as Assistant Director (Data Processing) in the offices as mentioned against their names on a purely temporary and ad hoc basis,

for a further period up-to-the 28-2-1983 or till the posts are filled on regular basis, whichever is earlier:

Sl. No.	Name of the official	Office in which working	Prescribed head quar- ters	
1	2	3		
S/S	Shri			
1. (D. P. Ahuja	RGI, Now Delhi	New Delhi	
	S. R. Garg	-do-	New Delhi	
3. I	K. B. Rohtagi	-do-	New Delhi	
	P. N. Baweja	-do-	New Delhi	
5. I	R. N. Pongurlekar	DCO, Maharashtra	Bombay	
6.	A. V. Vallinathan	DCO, Tamil Nadu	Madras	
7.	G. D. Aggarwal	DCO, Rajasthan	Jaipur	
8.	G. D. Singla	DCO, UT Chandi- gath	Chandigarh	
9.	G. C. Mishra	DČO, Bihar	Patna	
10.	M. M. A. Beg	DCO, Uttar Pradesh	Lucknow	
11.	B. M. Patel	DCO, Gujarat	Ahmedabad	
12.	A. G. Oak	DCO, Madhya Pra- desh	Bhopal	
13. S	hri R. Y. Rayashatti -	DCO, Karnataka	Bangalore	

No. 11/2/80-Ad.1.—In continuation of this office Notification of even number, dated the 20th January 1982, the President is pleased to appoint Shri Nageshwar Prasad, an Officer belonging to the Bihar Civil Service, as Deputy Director of Census Operations in the office of the Director of Census Operations, Bihar, Patna, by transfer on deputation, on ad-hoc basis, for a further period upto the 28th February 1983 or till the post is filled in on a regular basis, whichever period is shorter.

2. The headquarters of Shri Prasad will be at Hazaribagh.

No. 11/19/81-Ad.I.—The President is pleased to repatriate Shri P. P. Mahana, an officer belonging to the Maharashtra cadre of the Indian Administrative Service, who was working as Director of Census Operations, Maharashtra, Bombay, on deputation basis to the Government of Maharashtra, Bombay, with effect from the afternoon of the 14th December 1982.

P. PADMANABHA, Registrar General, India

INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT

OFFICE OF THE COMPTROLLER AND AUDITOR GENERAL OF INDIA

New Delhi-110002, the 22nd December 1982

No. CA.I/32-74.—Additional Deputy Comptroller and Auditor General (Commercial) has permitted Shri V. Venkataraman, Audit Officer (Commercial) serving in the office of the Member, Audit Board and Ex-Officio Director of Commercial Audit, Bombay to retire voluntarly from Govt, service from 25th November 1982 under Rule 48-A C.C.S. (Pension) Rules 1972.

M. A. SOMESWARA RAO, Joint Director (Commercial)

MINISTRY OF COMMERCE

(DEPARTMENT OF TEXTILES)

OFFICE OF THE DEVELOPMENT COMMISSIONER FOR HANDLOOMS

New Delhi, the 11th December 1982

No. A-12025(ii)/3/80-Admn.II(A).—The President is pleased to appoint with effect from 20th October 1982 and

until further orders Shri Lalu Toppo, Assistant Director, Grade-II (Non-Technical), in the Weavers' Service Centre, Gauhati,

VINAY JHA,

Additional Development Commissioner (Handlooms)

DEPARTMENT OF EXPLOSIVES

Nagpur, the 7th December 1982

No. E.11(7).—In this Department's Notification No. E11 (7) dated 11-7-1969, add "EM-1 series (Class 2) Nitrate Mixture for field trial at the specified locations upto 31st October 1983" after the entry "ENERGEL".

The 20th December 1982

No. E.11(7).—In this Department's Notification No. E.11 (7), dated the 11th July, 1969, under class 3, Division 2, in the entry "NITROBLAST", for carrying outfield trials at the specified location upto 31st December 1982, the figures "31-12-1982" shall be substituted by the figures "31-12-83".

No. E.11(7).—In this Department's Notification No. E.11 (7) dated 11th July 1969 under Class 2 NITRATE MIXTURE, in the entries "SALVAGEPAK for trial manufacture and field trials at the specified locations upto 31st March 1982", the date 31st March 1982 shall be replaced by the date "31-12-1983".

CHARANJIT LAL, Chief Controller of Explosives

DIRECTORATE GENERAL OF SUPPLIES & DISPOSALS (ADMINISTRATION SECTION A-1)

New Delhi-1, the 21st December 1982

No. A-1/1(986).—The President is pleased to appoint Shri S. R. Chandrasckaran, Assistant Director of Supplies (Gr. III of Indian Supply Service, Group 'A') in the office of Director of Supplies and Disposals, Madras, to officiate as Dy. Director of Supplies (Grade II of Indian Supply Service, Group 'A') on ad-hoc basis at Headquarters office at New Delhi, with effect from the forenoon of 15th December 1982 and upto 31st December 1982 or till a regular officer becomes available whichever is earlier

2. Shri Chandrasckaran relinquished charge of the post of Asstt. Director of Supplies in the office of DS&D Madras on 6th December 1982 (AN) and assumed charge of the post of Deputy Director of Supplies in the Directorate General of Supplies and Disposals, New Delhi with effect from the forenoon of 15th December 1982.

The 22nd December 1982

No. A-1/1(1166).—Shri B. W. Shahdadpuri, a permanent Superintendent (Level II) and ad-hoc Asstt. Director (Admn.) (Gr. II) in the office of the Director of Inspection, Bombay retired from Government Service with effect from the afternoon of 30th November 1982 on attaining the age of superannuation.

No. A-1/1(1201).—The Director General of Supplies and Disposals hereby appoints Shri E. P. Saldanha, Superintendent in the office of Director of Inspection, Bombay to officiate on purely local ad-hoc basis as Assistant Director (Admn.) (Gr. II) in the same office with effect from the forenoon of 4th December 1982 vice Shri B. W. Shahdadpuri, Asst. Director (Admn.) (Gr. II) retired from Government service w.e.f. 30th November 1982 (AN) on attaining the age of superannuation.

(ADMINISTRATION BRANCH-6)

The 23rd December 1982

No. A-17011/213/82-A6.—The Director General of Supplies and Disposals has appointed Shri C. Unnikrishman, Examiner of Stores (Assaving) in the Janshedpur Inspection Circle to officiate as Assistant Inspecting Officer (Met Chem) on ad-hoc basis in the same Inspectorate with effect from the foreneon of 29th November 1982 and until further orders

S. BALASUBRAMANIAN, Dy. Director (Administration)

ISPAT AUR KHAN MANTRALAYA (KHAN VIBHAG)

GEOLOGICAL SURVEY OF INDIA

Calcutta-16, the 20th December 1982

No. 9074B/A-19012(1-KSG)/81/19A.—Smi. K. S. Godhavari is appointed as an Assistant Geologist in the Geological Survey of India on an inltial pay of Rs. 650/-, per month in the scale of pay of Rs. 650-30-740-35-810-EB-35-880-40-1000-EB-40-1200/- in an officiating capacity with effect from the forenoon of the 4th October 1982 until further orders.

No. 9087B/A-19012(1-DS)/81/19A.—Shri D. Sundaravanam, STA (Geol.), GSI is appointed as an Assistant Geologist in the Geological Survey of India on an initial pay of Rs. 650/- per month in the scale of pay of Rs. 650-30-740-35-810-EB-35-880-40-1000-EB-40-1200/- in an officiating capacity with effect from the forenoon of the 10th September, 1982 until further orders.

S. K. MUKHERJEE, Director General

DIRECTORATE GENERAL OF HEALTH SERVICES New Delhi, the 22nd December 1982

No. A-32013/1/80-(HQ)Adum.I.—The President is pleased to appoint Shri M. G. Oswal to the post of Deputy Assistant Director General (Research) at the Central Health Education Bureau on a purely ad-hoc basis with effect from the 5th June 1981 to 4th December 1982.

T. C. JAIN, Dy. Director Admn. (O&M)

MINISTRY OF RURAL DEVELOPMENT DIRECTORATE OF MARKETING AND INSPECTION

Faridabad, the 20th December 1982

No. A-39013/1/81-A.III.—The resignation tendered by Shri A. K. Garg from the post of Assistant Marketing Officer in this Directorate has been accepted w.e.f. 26th April 1982 (A.N.).

G R. BHATIA,

Jt, Agricultural Marketing Adviser to the Government of India

BHABHA ATOMIC RESEARCH CENTRE PERSONNEL DIVISION

Bombay-400 085, the 15th December 1982

No. Ref. PA/79(4)/80-R-III.—Controller, Bhabha Atomic Research Centre appoints Shri Govindaswamy Dakshina Moorthy, Assistant Security Officer (SG) to officiate as Security Officer (Rs. 650—960) in this Research Centre on an ad-hoc basis for the period from 25th October 1982 (FN) to 26th November 1982 (AN).

B. C. PAL, Dy. Establishment Officer

DEPARTMENT OF ATOMIC ENERGY DIRECTORATE OF ESTATE MANAGEMENT

Bombay-400094, the 15th December 1982

ORDER

No. 20/280/72-Adm.—WHEREAS Shri R. S. Balmiki, Helper 'A' (Safaiwala) in the Workcharged Establishment of the Directorate of Estate Management has remained absent from duty unauthorisedly with effect from 11th May 1979.

AND WHEREAS vide Memorandum' No. 10/280/72-Adm. dated January 15, 1980 sent by Registered A/D' the said Shri R. S. Balmiki was informed of the proposal to hold an enquiry and was given an opportunity to make representations if any, within 10 days of the receipt of the said memorandum.

AND WHEREAS the said Shri Balmiki received the said memorandum on 22-1-80 but failed to submit any representation.

AND WHEREAS it was proposed to hold an enquiry against the said Shri Balmiki and the following communications sent by registered post to the last known address of the said Shri Balmiki were returned undelivered by the postal authorities with the remark "that the addressee has left/not found"

- (i) Letter No. AMA/DEP/INQ/1|DEM|8011 dated 15-9-1980 directing Shri Balmiki to attend the enquiry on 29-9-80.
- (ii) Letter No. AMA/DEP/INQ/1|DEM|4469 dated 20-4-1981 directing Shri Balmiki to attend the enquiry on 4-5-1981.
- (iii) Letter No. AMA/DEP/INK/II/5062, dated 8-5-81 directing Shri Balmiki to attend the enquiry on 20-5-1981.
- (iv) Letter No. P/11167, dated 13-8-1982 directing Shri Balmiki to attend the enquiry on 30-8-82.

AND WHEREAS the said Shri Balmiki has continued to remain absent from duty and failed to inform the Directorate of Estate Management of his whereabouts.

AND WHEREAS the said Shri Balmiki has been guilty of remaining absent and voluntarily abandoning the service.

AND WHEREAS because of his abandoning the service without keeping the Directorate of Estate Management informed of his present whereabouts, the undersigned is satisfied that it is not reasonably practicable to hold an enquiry.

AND NOW THEREFORE the undersigned hereby imposes the penalty of dismissal from service on the said Shri Balmiki with immediate effect.

H. V. AWATRAMANI Administrative Officer

Shri R. S. Balmiki Vill. Kedawa, Poet. Binoli Taluka: Sardana Dist.: Meerut, U.P. Shri R. S. Balmiki Chambur Glass Factory Pestam Sagar, Rajakunju Road, Manohar Hair Cutting, Bombay-89.

POWER PROJECTS ENGINEERING DIVISION

Bombay-5, the 7th December 1982

No. PPED/3(283)/82-Estt.I/16565.—Director, Power Projects Engineering Division, Bombay hereby appoints Shri D. L. Gavankar, a permanent Upper Division Clerk and officiating Assistant Accounts officer in the same Division in a temporary capacity on an ad-hoc basis with effect from the forenoon of July 12, 1982 to the afternoon of August 20, 1982 vice Shri V. B. Vyapari, Assistant Accounts Officer promoted as Accounts Officer II.

R. V. BAJPUR, General Administrative Officer

NUCLEAR FUEL COMPLEX

Hyderabad-500762, the 16th December 1982

No. NFC:PAR:1603/8845.—Chief Executive Nuclear Fuel Complex appoints the undermentioned Scientific Assistants (C) and D/man(C) to officiate as Scientific Officers in the grade of (SB)with effect from September 1, 1982 on initia/pay shown against their names in the scale of pay of Rs. 650-30-

740-35-810-EB-35-880-40-1000-R.B.-40-1200 in Nuclear Fuel Complex in a temporary capacity until further orders.

SI. No.	Name and prosent Desi	gnation	Pay promotion to the grade of SB
1.	2	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	
1.	Shri N. M. Saraf	(D/man 'C')	Rs. 960/-
2.	Shri D. Umamaheswara Rao	(SA 'C')	Rs. 810/-
3.	Shri Viswanatham	•	Rs. 775/-
4.	Shri D. Kanthachary	(SA 'C')	Rs. 775/-
	Shri T. Chandramouliah	(SA 'C')	Rs. 740/-
6.	Shri D. Chennakrishna Roddy	(SA 'C')	Rs. 740-

G. G. KULKARNI Manager, Personnel & Admn.

REACTOR RESEARCH CENTRE

Kalpakkam, the 15th December 1982

No. RRC/A 32023/1/77|R|16601.—The Director, Reactor Research Centre hereby appoints Shri Vadivel Vembian, a permanent Upper Division Clerk of Madras Atomic Power Project and officiating Selection Grade Clerk of Reactor Research Centre, in an officiating capacity on an ad hoc basis as Assistant Administrative Officer in the same Centre for the period 1-12-1982 to 31-12-1982 vice Shri A. Sethumadhavan, Assistant Administrative Officer, proceeded on leave.

S. PADMANABHAN Administrative Officer

DEPARTMENT OF SPACE SHAR CENTRE

Nellore, the 2nd December 1982

No. SCF: P & GA: Estt. 1.72.—The Director, SHAR Centre is pleased to appoint on Promotion the following personnel to the posts noted against each in the SHAR Centre, Sriharikota in an officiating capacity with effect from dates noted against them.

Name	Promoted to the post of	Date from which promoted
1	2	3
S/Shri		
P. Kesava Rao	Asstt, Admn. Officer	14-10-82
B. Subramaneswara Rao	Asstt. Purchase Officer	14-10-82
K. Vijaya Kumar	Asstt. Stores Officer	15-10-82

W. VISWANADHAM Head, Personnel & Genl. Admn. Division for Director

MINISTRY OF CIVIL AVIATION

INDIA METEOROLOGICAL DEPARTMENT

New Delhi-3, the 21st December 1982.

No. A.32013(DDGM)/1/80-E.I.—The President has been pleased to appoint Dr. B. N. Dutta, Director, India Meteorological Department, to officiate as Deputy Director General of Meteorology in the same Department, with effect from 5th October 1982 till 31st December 1982 or till Dr. R. P. Sarker, Deputy Director General of Meteorology, reverts from deputation ex-India whichever is earlier.

S. K. DAS.

Additional Director General of Meteorology (I)

OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL OF CIVIL AVIATION

New Delhi, the 14th December 1982

No. A.32013/12/82-EI.—In supersession of this Office Notification No. A.32013/12/82-EI, dated the 14th May 1982 the President is pleased to appoint Shri Kuldip Singh, Senior Technical Assistant (Aeronautics) to the grade of Scientific Officer on an ad hoc basis for a period from 11th May 1982 to 29th July 1982.

No. A-38013/1/82-EA.—Shri L. B. Timmins, Deputy Director, Office of the Regional Director, Bombay retired from Government services on the 30th November 1982 on attaining the age of superannuation.

No. A-38013/1/82-EA.—Shri G. C. Lohar, Regional Controller of Aerodromes, Office of the Regional Director, Calcutta retired from Government services on the 30th November 1982 on attaining the age of superannuation.

No. A-38013/1/82-EA.—Shri G. K. Gharat, Aerodrome Officer, Office of the Regional Director, Bombay retired from Government services on the 30th November 1982 on attaining the age of superannuation.

O. P. JAIN,

Assistant Director of Administration

New Delhi, the 22nd December 1982

No. A.3214/1/80-ES.—The Director General of Civil Aviation is pleased to allow the continuance of ad-hoc appointment of Shri D. S. Dhurve, Store Assistant, to the post of Store Officer (Group 'B' post) for a further period of six months with effect from 10th October 1982 or till the post is filled up on regular basis, whichever is earlier, on usual terms and conditions.

J. C. GARG,

Assistant Director of Administration

OVERSEAS COMMUNICATIONS SERVICE

Bombay, the 18th December 1982

No. 1/335/82-EST.—The Director General, Overseas Communications Service, hereby appoints Shri Jagga Ram, as Assistant Engineer, in a temporary capacity, in the Switching Complex, Bombay, with effect from the forenoon of the 13th December 1982, and until further orders.

P. K. G. NAYAR Director (Admn.) for Director General

CENTRAL WATER COMMISSION

New Delhi, the 21st December 1982

No. 19012/1(15)/82-Estt.I.—Chairman, C.W.C. hereby appoints Shri Harbhajan Singh, Technical Asstt. (Library)/Librarian. Grade H CWC to officiate as Chief Librarian in Central Water Commission in the scale of pay of Rs. 650—30-740-35-810-EB-35-880-40-1000-EB-40-1200. on a purely ad hoc basis for a period of 6 months w.e.f. 14th December 1982 (F.N.).

K. L. BHANDULA, Under Secy. for Chairman, C.W.C.

New Delhi, the 21st December 1982

No. A-19012/1023/82-Estt.V.—Chairman, Central Water Commission hereby appoints Shri Gangadhar Ray, Supervisor to officiate in the grade of Extra Assistant Director/Assistant Engineer (Engg.) on a purely temporary and ad-hoc basis in the scale of pay Rs. 650-30-740-35-810-EB-35-880-40-1000-EB-40-1200 for a period of one year or till the post is filled

on regular basis, whichever is earlier with effect from the forenoon of 25th October 1982.

A. BHATTACHARYA.
Under Secy.
Central Water Commission

CENTRAL ELECTRICITY AUTHORITY

New Delhi-110066, the 20th December 1982

No. 2/45/82-Adm.I(B).—The Chairman, Central Electricity Authority, hereby appoints Shri R. K. Nayyar II to the grade of Extra Assistant Director/Assistant Engineer of the Central Power Engineering (Group B) Service in the Central Electricity Authority, in an officiating capacity with effect from the forenoon of 13th November 1982.

S. BISWAS, Under Secy. (P)

OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL OF WORKS CENTRAL PUBLIC WORKS DEPARTMENT

New Delhi, the 21st December 1982

No. 35/1/81-ECIX.—The President is pleased to appoint Shri T. S. Rehsi a nominee of the U.P.S.C. against the temporary post of Deputy Architect (G.C.S. Group 'A') in the Cenral Public Works Department on a pay of Rs. 700/- P.M. in the scale of Rs. 700-40-900-EB-40-1100-50-1300 (plus usual allowances) with effect from 15-10-1982 on the usual terms and conditions.

- 2. The pay of Shri Rehsi will be fixed according to the rules.
- 3. Shri Rehsi is placed on probation for a period of two years with effect from the date of his appointment.

A. K. NARANG, Dy. Director of Administration

MINISTRY OF LAW, JUSTICE AND COMPANY AFFAIRS

(DEPARTMENT OF COMPANY AFFAIRS)
COMPANY LAW BOARD

OFFICE OF THE REGISTRAR OF COMPANIES

In the matter of Companies Act 1 of 1956

and

In the matter of Ganges Tea Co. (P) Limited
Calcutta, the 17th December 1982

No. L/24861-H/D/1935.—Notice is hereby given pursuant to Section 445(2) of the Companies Act 1 of 1956 that an order for winding up of the above-named company was made by the Hon'ble High Court. Calcutta or 23-7-1979 and the Official Liquidator/Court Liquidator, High Court. Calcutta has been appointed the Official Liquidator.

In the matter of Companies Act 1 of 1956 and

In the matter of M/s M.M.P. Lines Private Limited

Calcutta the 17th December 1982

No. L/28655-H/D/2030.—Notice is hereby given pursuant to Section 445(2) of the Companies Act 1 of 1956 that an order for winding up of the above-named company was made by the Hon'ble High Court, Calcutta or ——and the Official Liquidator/Court Liquidator. High Court. Calcutta has been appointed the Official Liquidator.

Sd./- ILLEGIBLE
Asstt. Registrar of Companies
West Bengal, Calcutta

In the matter of Companies Act 1 of 1956

In the matter of Futcomux (India) Private Limited Calcutta the 17th December 1982

No. L/30269-H/D/2029.—Notice is hereby given pursuant to Section 445(2) of the Companies Act 1 of 1956 that an order for winding up of the above-named company was made by the Hon'ble High Court, Calcutta on 1-9-1982 and the Official Liquidator /Court Liquidator, High Court, Calcutta has been appointed the Official Liquidator.

ILLEGIBLE
Asstt. Registrar of Companies
West Bengal, Calcutta

In the matter of the Companies Act, 1956 and of M/s Dhing Farmers Association Private Limited

Shillong, the 20th December 1982

No. 1018/560/(5)/3548.—Notice is hereby given pursuant to Sub-section (5) of Section 560 of the Companies Act, 1956, that the name of M/s Dhing Farmers Association, Private Limited has this day been struck off the Register and the said company is dissolved.

S. R. ROM, Registrar of Companies, Assam, Meghalaya, Manipur, Tripura, Nagaland, Arunachal Pradesh and Mizoram, Shillong

FORM ITNS -- -

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOMETAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSTT. COMMISSIONER OF INCOME-TAX.

ACQUISITION RANGE JALANDHAR

Jalandhar, the 10th December 1982

Rcf. No. A.P. No./3654.—Whereas, I J. L. GIRDHAR,

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing

No. As per Schedule situated at Bhatinda,

(and more fully described in the Schedule annexed hereto) has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the Office of the Registering Officer at Bhatinda in May 1982,

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer and/or.
- (b) facilitating the concealment of any Income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) of the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, 1 hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesnid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—
33—416GI/82 (1) Shri Daibard Singh S o Shir Pritam Singh R o Bhatinda.

(Transferor)

(2) Shri Baldev Singh S/o Shri Gurdial Singh C/o Shri Baldev Singh, Mehna Mohalla near Banga House, Old Bus Stand, Bhatinda. Now 2642 Court Road, Near Ranjit Press, Bhatinda.

(Transferee)

(3) As per Sr. No. 2 above.

(Person in occupation of the property)

(4) Any other person interested in the property. (Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned :-

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons. whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immov-able property, within 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning is given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property and persons as mentioned in the Registration sale deed No. 1163 of May 1982 of the Registering Authority,

Inspecting Assist

Date: 10-12-1982

FORM ITNS----

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE JALANDHAR

Jalandhar, the 10th December 1982

Ref. No. A.P. No/3655.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR,

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs, 25,000/-and bearing

No. As per Schedule situated at Bhatinda, (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Bhatinda in May 1982,

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the sald Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269-C of the said ct, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aid property by the issue of this notice under subn (1) of Section 269D of the said Act, to the follow-namely:—

- (1) Shri Darbara Singh S/o Shri Pritam Singh R/o Bhatinda.
 - (Transferor)
- (2) Shrimati Amarjit Kaur D/o Shri Suraj Ball C/o Shri Baldev Singh, Mehna Mohalla near Banga House, Old Bus Stand, Bhatinda, Now 2642, Court Road, Near Ranjit Press, Bhatinda.
 (Transferee)

(3) As per Sr. No. 2 above.

(Person in occupation of the property)

(4) Any other person interested in the property.

(Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:---

- (a) by any of the aforesald persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official' Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property and persons as mentioned in the Registration sale deed No. 1164 of May 1982 of the Registering Authority, Bhatinda.

J. L. GIRDHAR
Competent Authority
Inspecting Asstt. Commissioner of Income-tax
Acquisition Range, Jalandhar

Date: 10-12-1982

Scal:

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE JALANDHAR

Jalandhar, the 10th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3656.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR,

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing

No. As per Scheme situated at Gurdwala Chowk Mansa, (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Mansa in April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

(1) Shri Lekh Raj S/o Shri Sain Dass Guardian of minors. Rajinder Kumar, Jog Raj, Raghu Nandan Dass SS/o Shri Lekh Raj R/o Gurdwara Chowk, Mansa.

(Transferor)

- (2) Shri Tarsem Chand S/o Shri Kulwant Rai C/o M/s Kisan Sales Agency, Gurdwara Chowk, Mansa.
- (3) As per Sr. No. 2 above. (Transferee)

(Person in occupation of the property)
(4) Any other person interested in the property.

(Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:---

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 15 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property and persons as mentioned in the Registeration sale deed No. 73 of April 1982 of the Registering Authority, Mansa.

J. L. GIRDHAR
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax
Acquisition Range, Jalandhar

Date: 10-12-1982

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE JALANDHAR

Islandhar, the 10th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3657.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR,

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000/-and bearing

No. As per Schedule situated at Talwandi Sabo (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Talwandi Sabo in May 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability
 of the transferor to pay tax under the said Act,
 in respect of any income arising from the transfer;
 and/or
- (b) facilitating the concealment of any income of any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

- (1) Shri Jagrup Singh S/o Shri Ranjit Singh, R/o Talwandi Sabo. (Transferor)
- (2) Shri Gurdev Singh S/o Shri Jangir Singh R/o Moga Mehla Singh. (Transferee)
- (3) As per Sr. No. 2 above.

(Person in occupation of the property)

(4) Any other person interested in the property.

(Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the sald property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires late;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property and persons as mentioned in the Registeration sale deed No. 442 of May 1982 of the Registering Authority, Talwardi Sabo.

J. L. GIRDHAR
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range, Jalandhar

Date: 10-12-1982

Scal:

FORM I.T.N.S .-

NOTICE UNDER SECTION 269D (1) OF THE INCOME-TAX ACT. 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME TAX ACQUISITION RANGE JALANDHAR

Jalandhai, the 10th December 1982

Ref. No. A.P. No/3658.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR,

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to see the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000/and bearing

No. As per Schedule situated at Talwandi Sabo. (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908)) in the office of the Registering Officer at Talwandi sabo in May 1982,

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/ or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

- (1) Shri Gurdial Singh S/o Shri Gajjan Singh R/o Talwandi Sabo.
 - (Transferor)
- (2) Shri Surjit Singh S/o Partap Singh R/o Talwandi Sabo.

(Transferce)

- (3) As per Sr No. 2 above,
 - (Person in occupation of the property)
- (4) Any other person interested in the property.

 (Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property and persons as mentioned in the Registeration sale deed No. 649 of May 1982 of the Registering Authority, Talwandi Sabo.

J. L. GIRDHAR
Competent Authority
Inspecting Asstt, Commissioner of Income-tax
Acquisition Range, Jalandhar

Date: 10-12-1982

FORM I.T.N.3.-

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX, ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSTT. COMMISSIONER OF INCOME TAX,

ACQUISITION RANGE JALANDHAR

Jalandhar, the 10th December 1982

Ref. No. A.P. No/3659 —Whereas, J. J. L. GIRDHAR,

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/and bearng

No. As per Schedule situated at Bhatinda,

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Bhatinda in April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds, the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of .—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferer to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferre for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

New, therefore, in pursuance of Section 269-C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aferesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

- (1) Shrimati Gurmeet Kaur D/o Gurnam Singh, and Smt. Jasvir Kaur R/o Vill. Burj Mehma.

 (Transferor)
- (2) Shri Jagjit Signh S/o Shri Inder Singh and Smt. Niranjan Kaur D/o Shri Amar Singh R/o Bhatinda. (Transferce)
- (3) As per Sr. No. 2 above.

(Person in occupation of the property)

(4) Any other person interested in the property.

(Person whom the undersigned knows to be

interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

FAPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property and persons as mentioned in the Registeration sale deed No. 166 of April 1982 of the Registering Authority, Bhatinda.

J. L. GIRDHAR
Competent Authority
Inspecting Asstt. Commissioner of Income-tax
Acquisition Range, Jalandha

Date : 10-12-1982 Seal :

FORM I.T.N.S .--

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX, ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSTT. COMMISSIONER
OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE JALANDHAR

Jalandhar, the 10th December 1982

Ref. No. A.P. No/3660.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR.

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961, (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing

No. As per Schedule situated at Bhatinda,

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Bhatinda in April 1982,

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability
 of the transferor to pay tax under the said act, in
 respect of any income arising from the transfer;
 and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been er which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesald property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act to the following persons, namely:—

(1) Shri Dr. Siri Paul S/o Atma Ram, Dr. Ramesh W/o Dr. Siri Paul, Radhey Sham S/o Mangat Rai, Asha Rani W/o Sadhu Ram R/o Bhatinda C/o Dr Siri Paul. Hospital Bazar, Bhatinda.

(Transferor)

(2) Shrimati Surjit Kaur W/o Shri Sukhdarshan Singh, Mohinder Kaur W/o Gurmail Singh, R/o Ram Pura Phool C/o Shri Sukhdarshan Singh Security Officer, Tharmal Plant, Bhatinda.

(Transferce)

(3) As per Sr. No. 2 above.

(Person in occupation of the property)

(4) Any other person interested in the property.

(Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property and persons as mentioned in the Registeration sale deed No. 578 of April 1982 of the Registering Authority, Bhatinda.

J. L. GIRDHAR
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range, Jalandhar

Date: 10-12-1982

FORM J.T.N.S .-

NOTICE UNDER SECTION 269D (1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE JALANDHAR

Jalandhar, the 10th December 1982

Ref. No. A.P. No/3661 —Whereas, I., J. L. GIRDHAR,

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing

No. As per Schedule situated at Bhatinda,

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Bhatinda in April 1982,

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922), or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesand property by the issue of this notice under subsection (I) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

- (1) Shri Di. Siri Paul S/o Atma Ram, Dr. Ramesh W/o Dr. Siri Paul, Manju W/o Raj Gopal, Radhey Sham S/o Mangat Rai, Asha Rani W/o Shri Sadhu Ram C/o Dr. Siri Paul, Hospital, Bazar, Bhatinda.

 (Transfero)
- (2) Shrimati Surjit Kaur W/o Shri Sukhdarshan Singh, Mohinder Kaur W/o Shri Gurmail Singh, R/o Ram Pura Phool C/o Shri Sukhdarshan Singh, Security Officer, Thermal Plant, Bhatinda.

(Transferce)

(3) As per Sr. No. 2 above.

(Person in occupation of the property)

(4) Any other person interested in the property.

(Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesald persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein 2s are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property and persons as mentioned in the Registeration sale deed No. 579 of April 1982 of the Registering Authority. Bhatinda

J L. GIRDHAR
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax
Acquisition Range, Jalandhar

Date: 10-12-1982

FORM I.T.N.S -

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOMETAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE JALANDHAR

Jalandhar, the 10th December 1982

Ref. No. A.P. No/3662.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR,

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/and bearing

No. As per Schedule situated at Bhatinda,

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Bhatinda in April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property, and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability or the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of Section 269D of the said Act, in the following persons, namely:—34—416GI/82

- (1) Shri Dr Siri Paul S/o Atma Ram Dr. Ramesh W/o Dı. Sirı Paul, Manu W/o Raj Gopal, Radhey Sham S/o Mangat Rai, Asha, Rani W/o Sadhu Ram C/o Dr Sirı Poul, Hospital Bazar, Bhatinda.
- (2) Shrimati Surjit Kaui W/o Shri Sukhdarshan Singh, Mohinder Kaur W/o Gurmail Singh, R/o Ram Pura Phool, C/o Shri Sukhdarshan Singh, Security Officer, Thermal Plant, Bhatinda.

(Transferee)

(3) As per Sr. No. 2 above.

(Person in occupation of the property)

(4) Any other person interested in the property.

(Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be under in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immevable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter

THE SCHEDULE

Property and persons as mentioned in the Registration sale deed No. 586 of April 1982 of the Registering Authority, Bhatinda.

J. L. GIRDHAR
Competent Authority,
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range, Jalandhar

Date: 10-12-1982

Scal:

FORM 1.T.N.S.———

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE **JALANDHAR**

Jalandhar, the 10th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3663.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR,

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25.000/and bearing

No. As per Schedule situated at Bhatinda,

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Bhatinda in April 1982,

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property, and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :-

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferes for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wonlth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:-

- (1) Shri Dr. Siri Paul S/o Atma Ram, Dr. Ramesh W/o Dr. Siri Paul, Manju W/o Raj Gopal, Radhey Sham S/o Mangat Rai, Asha Rani W/o Shri Sadhu Ram C/o Dr. Siri Paul, Hospital Bazar, Bhatinda, (Transferor)
- (2) Shrimati Surjit Kaur W/o Shri Sukhdarshan Singh, Mohinder Kaur W/o Gurmail Singh, R/o Ram Pura Phool, C/o Shri Sukhdarshan Singh, Security Officer, Thermal Plant, Bhatinda.

(Transferec)

(3) As per Sr. No. 2 above.

(Person in occupation of the proper(4)
(4) Any other person interested in the property. (Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned :-

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons; whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation: - The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property and persons as mentioned in the Registration sale sale deed No. 587 of April 1982 of the Registering Authority, Bhatiatla.

> J. L. GIRDHAR Competent Authority, Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax, Acquisition Range, Jalandhar

Date: 10-12-1982

FORM I.T.N.S.

NOTICE UNDER SECTION 269D (1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSIT. COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE JALANDHAR

Jalandhar, the 10th December 1982

Ref. No. A.P. No/3664.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR,

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/-and bearing

No. As per Schedule situated at Bhatinda,

(and more fully described in the schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the registering Officer at Bhatinda in April 1982,

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys of other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C, of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

 Shri Narinder Singh S/o Gurmukh Singh, R/o Bhatinda.

(Transferor)

(2) Shri Ujjagar Singh S/o Shri Sampura Singh R/o Bhatinda.

(Transferee)

(3) As per Sr. No. 2 above.

(Person in occupation of the property

(4) Any other person interested in the property.

(Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publications of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property and persons as mentioned in the Registration sale deed No. 482 of April 1982 of the Registering Authority, Bhatinda.

J. L. GIRDHAR
Competent Authority,
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range, Julandhar

Date: 10-12-1982

NOTICE UNDER SECTION 269-D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE JALANDHAR

Jalandhar, the 10th December 1982

Ref. No. A.P. No/3665.—Whereas, I J. L. GIRDHAR,

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 x43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/-and bearing

No. As per Schedule situated at Bhatinda, (and more fully described in the schedule annexed hereto) has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Bhatinda in April 1982,

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

(a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or

(b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

(1) Shri Narinder Singh S/o Gurmukh Singh, R/o Bhatinda.

(Transferor)

(2) Shri Kewal Krishan S/o Shri Jai Paul Kalra, Bhatinda and Shri Mangat Rai S/o Shri Parma Nand Sukheja R/o Muktsar. (Transferee)

(3) As per Sr. No. 2 above.

(Person in occupation of the property)

(4) Any other person interested in the property.

(Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette of a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein are defined in Chapter XXA of the said Acreshall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property and persons as mentioned in the Registration sale deed No. 525 of April 1982 of the Registering Authority, Bhatinda.

J. L. GIRDHAR
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income tax
Acquisition Range, Jalandhar

Date: 10-12-1982

Scal :

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSTT. COMMISSIONER OF INCOME-TAX,

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 10th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3666.—Wherea, I, J. L. GIRDHAR,

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason

to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and

bearing No. As per schedulcle situated at Basti Pir Dad Khan, Jalandhar

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering

Officer at Jalandhar in April 1982

for an apparent consideration which is less than the

tan market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer, and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

(1) Sh. Mohan Singh S/o Sh. Achhar Singh through Smt. Swaran Kaur General Attorney.

(Transferor)

(2) Sh. Ajit Singh S/o Inder Singh R/o V. Ramidi Distt. Kapurthala and Harjit Singh S/o Raja Singh V. Verandli Distt. Hoshiarpur.

(Transferce)

(3) As S. No. 2 above.

(Person in occupation of the property)
(4) Any other person interested in the property.

(Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act shall have the same meaning as given in that Chapter

THE SCHFDULE

Property and persons as mentioned in the Registration sale deed No. 285 of April, 82 of the Registering Authority, Jalandhar.

J. L. GIRDHAR,
Competent Authority
Inspecting Asstt. Commissioner of Income-tax
Acquisition Range, Jalandhar.

Date: 10-12-82

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOMB-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME-TAX ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 10th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3667.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR,

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tux Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/-and bearing

No. As per Schedule situated at Jalandhar

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Jalandhar in April, 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income acising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

 Sh. Pushap Raj Bakshi
 S/o Ghansham Dass R/o W.G. 136, Opposite Civil Hospital, Jalandhar.

(Transferor)

- (2) Sh. Harjinder Singh Balraj Singh Ss/o Ajit Singh and Smt. Tarsem Kaur W/o Harjinder Singh and Smt. Balminder Kaur W/o Balraj Singh R/o V. & P.O. Sarin Teh. Jalandhar. (Transferee)
- (3) As S. No. 2 above and M/s. Resham Studio & M/s. Narain Leather Store, BXIII/1/1/5, New Vijay Nagar, Islandhen
- Jalandhar.

 (4) Any other person interested in the property).

 (Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned...

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons. whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said learnovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION: —The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property & Persons as mentioned in the registration sale deed No. 22 of April, 82 of the Registering Authority, Jalandhar.

J. L. GIRDHAR,
Competent Authority,
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range, Jalandhar.

Date: 10-12-82

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 10th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3668.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR,

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing

No. as per Schedule situated at Jalandhar

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Jalandhar in April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

 Sh. Pushap Raj Bakshi S/o Ghansham Dass R/o W.G. 136, Opposite Civil Hospital, Jalandhar. (Transferor)

(2) Sh. Harinder Singh Balraj Singh Ss/o Ajit Singh & Smt. Tarseem Kaur W/o Harjinder Singh and Smt. Balwinder Kaur W/o Balraj Singh R/o V. & P.O. Sarin Teh. Jalandhar. (Transferce)

(3) As S. No. 2 above and M/s Resham Studio and M/s Narain Leather Store, BXIII/1/15 New Vijay Nagar, Jalandhar.

(Person in occupation of the property)

(4) Any other person interested in the property.

(Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property & Persons as mentioned in the registration sale deed No. 116 of April, 82 of the Registering Authority, Jalandhar.

J. L. GIRDHAR,
Competent Authority,
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range, Jalandhar.

Now, therefore, in pursuance of Section. 269C of the said Act. I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act to the following persons, namely:—

Date: 10-12-82

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 CF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME TAX

ACOUISITION RANGE, JALANDHAR

falandhai the 10th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3669.-Whereas, I, J. L GIRDHAR,

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs 25,000/and bearng

No as per schedule situated at Jalandhar

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transforred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering officer at Jalandhar in April 82

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :--

- (a) facilitating the reduction of evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer, and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act 1922 (11 of 1922) or the said Act or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of Section 269D of the said Act to the following persons, namely :-

11) So Pushap Pay Balchi Gharsha 12. b. W.C. in Opposite

(Transferor)

(2) So Bujurda Smith Bran Singr Ss, o Apt Singh & Smt. Parseem Kaur W/o Harjinder Singh and Smt what was a regular hand k/o v & P.O

(Transferce)

(3) As S No. 2 above and M/s Resham Studio and M/s S No. 2 above and M/s Resham Studio and M/s New Vijay Nagar, Jalandhar.

if ron in occupation of the property) (4) Any other person interested in the property. Per cu whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned .-

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the survice of the conthe respective persons whichever period expires later.
- (b) by any other person interested in the said immovable property, with 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION: -- The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter

THE SCHEDULF

Property & Persons as mentioned in the registration sale deed No 140 of April, 82 of the Registering Authority, Jalandhar.

> I I GIRDHAR. Competent Authority, Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax, Acquittor Range, Jalandhar

Date · 10 12-8?

Seal ·

FORM I.T N.S -

NOTICE UNDER SECTION 269D (1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhai, the 10th December 1982

Ref. No. A.P. No 3670.--Whereas, I, J. L. GIRDHAR,

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the said Act) have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/and bearing No.

as per Schedule situated at Dhogri

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the Office of the Registering Officer at Jalandhar in April 82

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability
 of the transferor to pay tax under the said Act,
 in respect of any income arising from the transfer;
 and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the Act, to the following persons, namely:—

35-416GI/82

(1) Sh. Kashmir Singh S/o Manna Singh R/o V. Dhogri Teh. Jalandhar.

(Transferor)

(2) Sh Guiteg Singh S/o Bhoga Singh guardian of Tejinder Pal Singh R/o 81-Garden Colony, Model Town, Jalandhai.

(Transferee)

(3) As S, No. 2 above.

(Person in occupation of the property)

(4) Any other person interested in the proeprty.

(Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned-

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property & Persons as mentioned in the registration sale deed No. 112 of April, 82 of the Registering Authority, Jalandhar.

J. L. GIRDHAR, Competent Authority Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax, Acquisition Range, Jalandhur

Date: 10-12-82

Seal;

FORM I.T.N.S.--

NOTICE UNDER SECTION 269D (1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME-TAX,

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR Jalandhar, the 10th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3671,-Whereas, I, J. L. GIRDHAR,

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/and bearing
No. as per Schedule situated at Dhogri

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Jalandhar on April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :---

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transfer to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income any moneys or other assets which have been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the anforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely :---

(1) Sh. Prem Singh S/o Sh. Manna Singh R/o V. Dhogri Teh. Jalandhar.

(Transferor)

- (2) Sh. Gurteg Singh S/o Bhoga Singh Guardian of Onkar Singh R/o 81-Garden Colony, Model Town, Jalandhar, (Transferce)
- (3) As S. No. 2 above.

(Person in occupation of the property)

(4) Any other.

(Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:-

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION: - The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property & Persons as mentioned in the registeration sale deed No. 113 of April, 82 of the Registering Authority, Jalandhar.

> J. L. GIRDHAR, Competent Authority, Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax, Acquisition Range, Jalandhar.

Date: 10-12-82 Seal:

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COM-MISSIONER OF INCOME-TAX, ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar the 10th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3672,—Whereas, I, J. L. GIRDHAR,

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000/-and bearing No.

as per Schedule situated at Dhogri

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering officer at Jalandhar on April 82

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property, and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, of the following persons, namely:—

- (1) Sh. Prem Singh S/o Manna Singh R/o V. Dhogri Teh, Jalandhar. (Transferor)
- (2) Sh. Gurteg Singh S/o Bhoga Singh Guardian of Onkar Singh R/o 81-Garden Colony, Model Town, Jalandhar.

(Transferee)

- (3) As S. No. 2 above. (Person in occupation of the property)
- (4) Any other.

(Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this Notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property & Persons as mentioned in the registeration sale deed No. 154 of April, 82 of the Registering Authority, Jalandhar.

J. L. GIRDHAR, Competent Authority Inspecting Asstt. Commissioner of Income-tax Acquisition Range, Jalandhar.

Date: 10-12-82

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME TAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar the 10th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3673.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR,

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the Immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/-and bearing No.

As per Schedule situated at Dhogri

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Jalandhar in April 82

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and than the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other essets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 9157);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

- (1) Sh. Prem Singh S/o
 Manna Singh R o V. Dhogri Teh. Jalandhar.
 (Transferor)
- (2) Sh. Gurteg Singh S/o Bhoga Singh R/o 81-Garden Colony, Model Town, Jalandhar.

(Transferee)

- (3) As S. No. 2 above.
 (Person in occupation of the property)
- (4) Any other.

(Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property & Persons as mentioned in the registeration sale deed No. 155 of April, 82 of the Registering Authority, Jalandhar.

J. L. GIRDHAR, Competent Authority Inspecting Asstt. Commissioner of Income-tax Acquisition Range, Jalandhar.

Date: 10-12-82

FORM LT.N.S.--

NOTICE UNDER SECTION 269-D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

#OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandbar the 10th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3674.—Whereas, I, I. L. GIRDHAR.

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding 7°Rs. 25,000 and bearing No.

As per Schedule situated at Dhogri (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Jalandhar in April 82

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefore by more than afteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Inome-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act to the following persons, namely:—

- (1) Sh. Prem Singh S/o Manna Singh R/o V. Dhogri Teh. Jalandhar, (Transferor)
- (2) Sh. Gurteg Singh S/o Bhoga Singh R/o 81-Garden Colony, Model Town, Jalandhar, (Transferee)
- (3) As S. No. 2 above.
 (Person in occupation of the property)
- (4) Any other.

(Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 39 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property & Persons as mentioned in the registeration sale deed No. 257 of April, 82 of the Registering Authority, Jalandhar.

J. L. GIRDHAR,
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range, Jalandhar.

Date: 10-12-82

FORM TINS...

NOTICE UNDER SECTION 269D'1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIUNER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar the 10th December 1982

Ref. No A.P. No. 3675.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR,

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have leason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs 25,000/- and bearing

No. as per Schedule situated at Dhogri
(and more fully described in the Schedule annexed
hereto), has been transferred under the Registration Act,
1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at
Jalandhar in April 82
for an apparent consideration

which is less than the fair market value of the aforesaid property, and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income, or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferce for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the Issue of this notice under sub section (1) of Section 269D of the said Act to the following persons, namely:—

(1) Sh. Prem Singh S/o Menna Singh R/o V. Dhogri Teh. Jalandhar. (Transferor)

(2) Sh Gurteg Singh S/o Bhoga Singh R/o 81-Garden Colony, Model Town, Jalandhar.
(Transferee)

(3) As S. No. 2 above.

(Person in occupation of the property)

(4) Any other.

(Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

TMS SCHEDULE

Property & Persons as mentioned in the registeration sale deed No. 258 of April, 82 of the Registering Authority, Jalandhar.

J. L. GIRDHAR, Competent Authority Inspecting Assets, Commissioner of Income-tax Acquisition Range, Jalandhar.

Date: 10-12-82

Scal:

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOMETAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar the 10th December 1982

Ref. No. AP. No. 3676.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR, being the competent authority under Section 269D of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) hereinafter referred to as the said Act, have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/and bearing

Schedule situated at Dhogri No. as per (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Jalandhar on April 82

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe, that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of-

(a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer; and/or

(b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue for this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act to the following persons, namely:-

(1) Sh. Piem Singh S/o Manna Singh R/o V. Dhogu feh Jalandhar.

(Transferoi)

- (2) Sh. Gurmeet Singh legal Guardian of Gurnam Singh Onkar Singh S5/0 Guiteg Singh R/0 81-Garden Colony, Model Town, Jalandhar.
 - (Transferee)
- (3) As S. No. 2 above.

(Person in occupation of the property)

(4) Any other.

(Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:-

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later:
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION: -The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property & Persons as mentioned in the registeration sale deed No 561 of April, 1982 of the Registering Authority, Jalandhar,

> J. L. GIRDHAR, Competent Authority Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax Acquisition Range, Jalandhar.

Date: 10-12-82

(Transferee)

FORM ITNS-

NOTICE UNDER SECTION 269D (1) OF THE INCOMETAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar the 10th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3677.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR,

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000-and bearing No.

As per schedule situated at Model Town, Jalandhar (and more fully described in the schedule annexed pereto) has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at

Jalandhar in April 1982 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :—

(a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer: and/or

(b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act or the Wealth-tax Act 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of Secion 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

(1) Sh. Manmohan Singh Rana S/o Gulab Singh R/o 568, Model Town, Jalandhar

an Singh & Mohan Singh

to be interested in the property)

(2) Sh. Sohan Singh & Mohan Singh Ss/o Kewal Singh R/o 404-R, Model Town, Jalendhar.

(3) As S. No. 2 above.
(Person in occupation of the property)

(4) Any other.

(Person whom the undersigned knows

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned---

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice of the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the sald immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property & Persons as mentioned in the registeration sale deed No. 546 of April, 82 of the Registering Authority, Jalandhar.

J. L. GIRDHAR.

Competent Authority
Inspecting Asstt. Commissioner of Income-tax
Acquisition Range, Jalandhar.

Date: 10-12-82

FORM HINS--- ..

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 10th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3678.—Whereas, I,

J. 1 GIRDHAR,

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing No.

As per Schedule situated at Punj Peer, Jalandhai (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Jalandhar on April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the afore-aid property, and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefore by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the tiability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and /or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

36-416GI/82

(1) Sh. Herbhajan Singh S/o Mohinder Singh through Sh. Mohinder Singh S/o Jagar Singh R o 31-Chalwey Road, East Stough Berk Shire, England.

(Transferor)

(2) Smt. Harmderjit Kaui W/o Sh. Sukhwant Singh C/o Bawa Hospital, Punj Peer, Jalandhar

(Transferce)

(3) As S. No. 2 above.

(Person in occuration of the property)

(4) Any other,

(Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazet'e or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property 1 4th share of BV-1140 situated in Punj Pcci. Jalandhai and persons as mentioned in the registration sale deed No 663 of April. 82 of the Registering Authority Jalandhai

J. L. GIRDHAR
Competent Authority
Inspecting Asstt. Commissioner of Income-tax
Acquisition Range, Jalandhan.

Date: 10-12-82

Seal

FORM I.T.N.S .--

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSTT. COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 10th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3679.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR,

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing

No. as per Schedule situated at Panj Peer, Jalandhar (and more fully described in the schedule annexed hereto) has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Jalandhar on 1982, April

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

(1) Sh. Jagjit Singh S/o Mohinder Singh through Sh. Mohinder Singh S/o Jagar Singh R/o 31-Chalwey Road, East Stough Berk Shire, England.

(Transferor)

- (2) Dr. Gurwant Singh S/o Dr. Harbhajan Singh C/o Bawa Hospital, Punj Peer, Jalandhar.
 (Transferee)
- (3) As S. No. 2 above.
 (Person in occupation of the property)
- (4) Any other person interested in the property,
 (Person whom the undersigned knows to be
 interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned :--

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter,

THE SCHEDULE

1/4th Property No. BV-1140 situated in Punj Peer, Jalandhar & persons as mentioned in the registration sale deed No. 704 of April, 82 of the Registering Authority, Jalandhar.

J. L. GIRDHAR, Competent Authority Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax Acquisition Runge, Jalandhar.

Date: 10-12-82

Scal:

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME-TAX,

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jajandhar, the 10th December 1982

Rei No AP No 3680—Whereas, I, J L GIRDHAR,

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have leason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding R 25,000/- and bearing

No as per Schedule situated at Janj Peer Jalandhar (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Jalandhar in April 82

tot an apparent consideration which is less than the fait market value of the aforesaid property, and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesald property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

- Sh Makhan Singh S/o Mohinder Singh through Sh Mohinder Singh S/o Jagar Singh R o 31-Chalwey Rond, East Stough Berk Shire, England
- (2) Sh Sukhwant Singh S/o Di Harbhajan Singh C/o Bawa Hospital, Panj Pecr, Jalandhai (Tiansfeice)
- (3) As S No 2 above (Person in occupation of the property)
- (4) Any other person interested in the property
 (Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (n) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons whichever period expires later,
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION :—The terms and expressions used herein are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter

THE SCHEDULE

1/4th property No. BV-1140 situated in Punj, Pr. Jalandhai & Persons as mentioned in the registration sale deed No. 831 of May, 1982 of the Registering Authority, Jalandhar

J. L. GIRDHAR
Competent Authority
Inspecting Assit. Commissioner of Income-tax
Acquisition Range, Jalandhai

Date 10-12 82 Seal:

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR.

Jalandhar, the 10th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3681.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR, being the Competent Authority under Section 2698 of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the Immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/-and bearing No.

As per schedule situated at Punj Pir, Jalandhai (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act,

1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Jalandhar on May, 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys of other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pulsuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under Section (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

(1) Shri Surinder Singh S/o Mohinder Singh through Sh. Mohinder Singh S/o Jagar Singh r/o 31-Chalwey Road, East Stough Berk Shire, England.

(Transferor)

- (2) Smt. Amarjit Kaur W/o Dr. Gurwant Singh C/o Bawa Hospital, Punj Pir, Jalandhar.
- (3) As S. No. 2 above (Person in occupation of the property)
- (4) Any other person interested in the property. (Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein us are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

1/4 property No. BV-1140 situated in Punj Pir, Jalandhar & Persons as mentioned in the registration sale deed No. 914 of May, 82 of the Registering Authority, Jalandhar.

J. L. GIRDHAR, Competent Authority Inspecting Assistant Commissioner of Income-Tax Acquisition Range, Jalandhar.

Date: 10-12-82.

FORM ITNS----

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR Jalandhar, the 10th December 1982

Ref. No. AP. No. 3682,—Whereas, I, J. L. GIRDHAR, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing

as per schedule situated at Moga Mehla Singh

said instrument of transfer with the object of-

and/or

as per senedule situated at Moga Mehla Singh (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Moga on April, 1982 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property, and I have reason to believe that the fair market value of the apparent of a foresaid the apparent consideration. of the property as aforesaid exceeds the apparent considera-tion therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the

(a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer;

(b) facilitating the concealment of any income or any moneys of other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore in pursuance of Section 2690 of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the atoresaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely :-

(1) Shri Mukhtiar Singh S/o Nathu Singh r/o Bibi Ji Gurdwara Wali Sarak, Moga Mehla Singh, Moga.

(Transferor) (2) Shri Amar Singh, Gurcharan Singh Ss/o Hakam Singh 1/0 Dhui Kot Teh. Moga.

(Transferce) (3) As S. No. 2 above. (Person in occupation of the

property)

"(4) Any other person interested in the property. (Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, it any to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned.

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION .— The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property & Persons as mentioned in the registration sale deed No 245 of April, 82 of the Registering Authority, Moga.

> J. L. GIRDHAR. Competent Authority Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax Acquisition Range, Jalandhar.

Date: 10-12-82.

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOMETAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSTT. COMMISSIONER OF INCOME-TAX,

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR.

Jalandhar, the 10th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3683.—Wheeras, I. J. L. GIRDHAR, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hercinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable p operty, having a fair market value exceeding Rs. 25.000/- and bearing No.

immovable p operty, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing No. as per schedule situated at Moga Mehla Singh (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering officer at Moga on April 1982

of 1908) in the office of the Registering officer at Moga on April, 1982 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property, and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer; and
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the ludian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

- (1) Shri Hari Singh S/o Krishan Singh r/o Mohalla Sodian, Moga Mehla Singh, Moga. (Transferor)
- (2) Shri Makand Lal S/O Lal Chand etc. R/O Basti Ali Pur, Moga.

property)

- (Transferce) (3) As s. No. 2 above. (Person in occupation of the
- property)
 (4) Any other person interested in the property. (Person whom the undersigned knows to be interested in the

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter,

THE SCHEDULE

Property & Persons as mentioned in the registration sale deed No. 167 of April, 82 of the Registering Authority, Moga.

J. L. GIRDHAR,
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range, Jalandhar.

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

Date: 10-12-82.

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOMETAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSTT, COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR,

Jalandhar, the 10th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3684.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), bave reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/-and bearing No.

as per schedule situated at Moga Mehla Singh (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Moga on April, 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

(a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and

(b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) of the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

 Shri Wazir Singh S/O Gurdit Singh r/o Moga Mehla Singh near GT Road, Basti Gobind Garh, Moga.

(Transferor)

(2) Shri Nirmal Singh, Manjit Singh Ss/O Sucha Singh and Kewal Singh S/O Amarjit Singh r/o V. Lohara Teh. Moga.

(Transferec)

- *(3) As s. No. 2 above. (Person in occupation of the property)
- *(4) Any other person interested in the property. (Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning is given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property & Persons as mentioned in the registration sale deed No. 136 of April, 82 of the Registering Authority, Moga.

J. L. GIRDHAR.
Competent Authority
Inspecting Assistant
Commissioner of Income-Tax
Acquisition Range, Jalandhar.

Date: 10-12-82

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSTT. COMMISSIONER OF INCOME TAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR.

Jalandhar, the 10th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3685.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'sald Act'), have reason to believe that the Immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing No.

as per schedule situated at Moga Mehla Singh (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Moga on April, 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesald property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act to the following persons of mely:—

 Shri Mukhtiar Singh S/o Natha Singh r/o Bibi Ji Gurdwara Wali Sarak, Moga Mehla Singh, Moga.

(Transferor)

(2) Shrimati Saroj Rani W/o Pawan Kumar S/o Jagdish Rai R/o Mrhna Tch. Moga.

(Transferee)

- *(3) As s. No. 2 above. (Person in occupation of the property)
- "(4) Any other person interested in the property. (Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of the notice in the Official Gazette.

FXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property & Pers as mentioned in the registration sale deed No. 447 of April, 82 of the Registering Authority, Moga.

J. L. GIRDHAR,
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-Tax,
Acquisition Range, Jalandhar.

Date: 10-12-82.

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSTT. COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR.

Jalandhar, the 10th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3686.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR, being the Competent Authority under section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/and bearing No.

as per schedule situated at Moga Mehla Singh

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Moga on April, 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or;
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which eught to be disclosed by the transferre for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922), or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—
37—416G1/82

 Shri Mukhtiar Singh S/o Natha Singh r/o Bibi Ji Gurdwara Wali Sarak, Moga Mehla Singh, Moga.

(Transferor)

(2) Shrimati Tarsem Rani W/o Mangat Ram s/o Labh Singh r/o V. Nathuwala Jadid, Teh. Moga.

(Transferce)

*(3) As s. no. 2 above. (Person in occupation of the property)

"(4) Any other person interested in the property. (Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property & Persons as mentioned in the registeration sale deed No. 449 of April, 82 of the Registering Authority, Moga.

J. L. GIRDHAR, Competent Authority Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax, Acquisition Range, Jalandhar.

Date: 10-12-82,

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR.

Jalandhar, the 10th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3687.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/-and bearing No.

as per schedule situated at Moga Mehla Singh

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer Moga on Apřil, 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

- Shri Mukhtiar Singh S/o Natha Singh r/o Bibi Ji Gurdwara Wali Sarak, Moga Mehla Singh, Moga.
- (2) Shri Ranjodh Singh S/o Atma Singh r/o V, Lale Teh. Moga.

(Transferce)

- *(3) As s. no. 2 above, (Person in occupation of the
- *(4) Any other person interested in the property. (Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property & Persons as mentioned in the registeration sale deed No. 55 of April, 82 of the Registering Authority, Moga.

J. L. GIRDHAR,
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax
Acquisition Range, Jalandhar.

Date: 10-12-82.

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 10th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3688.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing No.

as per schedule situated at Moga Mehla Singh (and more fully described in the schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the Office of the Registering Officer at Moga on April, 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

 Shri Mukhtiar Singh S/o Natha Singh r/o Bibi Ji Gurdwara Road, Moga Mehla Singh, Moga.

(Transferor)

(2) Smt. Satinder Kaur w 'o Ranjodh Singh r/o V. Lalle Tehsil Ferozepur.

(Person in occupation of the property).

(3) As s. no. 2 above.

(property)

(4) Any other person interested in the property.

(Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:--

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property & Persons as mentioned in the registration sale deed No. 56 of April, 82 of the Registering Authority, Moga.

J. L. GIRDHAR,
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax
Acquisition Range, Jalandhar.

Date: 10-12-82.

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOMETAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR.

Jalandhar, the 10th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3689.—Wheeras, I, J. L. GIRDHAR, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act') have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000/-and bearing

as per schedule

situated at Moga Hehla Singh

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the Office of the Registering Officer at

Moga in April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property, and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

- Shri Balwant Singh s/o Hira Singh and Gurdev Singh, Harbans Singh Ss/o Jagir Singh R/O Moga Mandi, Moga.
- (2) Shri Satish Kumar S/o Suraj Parkash r/o Moga Mandi, Moga.

(Transferee)

- (3) As s. no. 2 above. (Person in occupation of the property)
- (4) Any other person interested in the property.

 (Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a persod of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property & Persons as mentioned in the registeration sale deed No. 169 of April, 82 of the Registering Authority, Moga.

J. L. GIRDHAR,
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax
Acquisition Range, Jalandhar.

Date: 10-12-82.

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR.

Jalandhar, the 10th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3690.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing No.

As per Scheduled situated at V. Gill Patti, Bhatinda (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Bhatinda in April, 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :-

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:-

(1) Shrī Jeon Singh S/o Sh. Chuhria Singh Vill. Gill Patti.

(Transferor)

- (2) Shri Balwinder Singh & Sarbjit Singh s/o Gurdev Singh, and Satnam Singh & Nachhattar Singh Ss/o Sh. Partap Singh, Bhatinda.
- (Transferee) (3) As s. no. 2 above. (Person in occupation of the
- property) (4) Any other person interested in the property

(Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned :-

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons. whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION: --- The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

deed No. 111 of April, 1982 of the Registering Authority, Property and persons as mentioned in the Registration sale Bhatinda.

> J. L. GIRDHAR, Competent Authority Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax Acquisition Range, Jalandhar.

Date: 10-12-82.

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 10th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3691.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing No. As per Schedule situated at V. Gill Patti (and more fully described in the Scheduled annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Bhatinda in April 1982 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

(a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or

(b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act to the following persons, namely:—

(1) Shri Ram Kumar S/o Suraj Bhan Bhatinda.
(Transferor)

(2) 1. Shri Kishan Kumar S/o Ved Parkash; 2. Sneh Lata w/o Sohan Lal; 3. Ashok Kumar S/o Sh. Des Raj C/o M/s. Ballori Ram Sohan Lal, Cloth Merchants, Sadar Bazar, Bhatinda.

(Transferce)

(3) As per Sr. No. 2 above.
(Person in occupation of property)

(4) Any other person interested in the property.

(Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property and persons as mentioned in the Registration sale deed No. 1-43 of April, 1982 of the Registering Authority, Bhatinda.

J. L. GİRDHAR
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range
Jalandhar

Date: 10-12-1982

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME TAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 10th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3692,-Whereas, I, J. L. GIRDHAR being the Competent Authority under Section 269B of the Income Tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act') have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing No. As per Schedule situated at V. Gill Patti

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Bhatinda on April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid

property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of;-

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act. I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely :--

- (1) Shri Ram Kumar S/o Suraj Bhan, Bhatinda. (Transferor)
- (2) 1. Krishan Kumar S/o Ved Parkash; 2. Sneh Lata w/o Sohan Lal; 3. Ashok Kumar S/o Des Raj R 'o C/o M/s. Ballori Ram Sohan Lal, Cloth Merchants, Sedar Bazar, Bhatinda.

(Transferce)

- (3) As per Sr. No. 2 above. (Person in occupation of property)
- (4) Any other person interested in the property. (Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned :--

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION: -The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as gives in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property and persons as mentioned in the Registration sale deed No. 146 of April, 1982 of the Registering Authority, Bhatinda.

> J. L. GIRDHAR Competent Authority Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax Acquisition Range Jalandhar

Date: 10-12-82

NOTICE UNDER SECTION 269-D (1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 10th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3693.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing No.

As per Schedule situated at Dabwali Road, Bhatinda (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registring Officer at Bhatinda on April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than affect per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/er
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act. 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

(1) Shri Balwant Singh S/o Sh. Labh Singh, Municipal Committee, Bhatinda.

(Transferor)

- (2) Shri Ajaib Singh S/o Sh. Sher Singh, Vill. Jodhpur Romana,
 - (Transferee)
 - (3) As per Sr. No. 2 above.

 (Person in occupation of property)
- (4) Any other person interested in the property.

 (Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION: —The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property and persons as mentioned in the Registration sale deed No. 147 of April, 1982 of the Registering Authority, Bhatinda.

J. L. GIRDHAR
Competent Authority
Inspecting Asstt. Commissioner of Income-tax
Acquisition Range
Jalandhar

Date: 10-12-82

FORM ITNS ----

NOTICE UNDER SECTION 269D (1) OF THE INCOME-TAX, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACOUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 10th December 1982

Ref. No. A.P. No 3694.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/and beating No.

As per Schedule situated at Biliwala Road, Chowk, Bhatinda (and more fully described in the Schedule annexed bereto) has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Bhatinda on April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :----

- (b) facilitating the concealment of any income or any of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—38—416GI/82

- (1) Shii Ram Dass S/o Sh. Chanan Ram C/o M/s.
 Paras Ram Hukam Chand Sadar Bazar, Bhatinda
 (Transferor)
- (2) Shri Chet Singh S/o Sh. Bakhtaui Singh, B.K O., Mehna Moh. Bhatinda, Madhu w/o Jagdish Rai R o Bank Street, Bhatinda, Sushma Rani D/o Ramesh Chand C/o Paras Ram Hukam Chand, Sadar Bazar, Bhatinda.

(Transferee)

- (3) As per Sr. No. 2 above. (Person in occupation of property)
- (4) Any other person interested in the property.

 (Person whom the undersigned knows
 to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:---

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULF

Property and persons as mentioned in the Registration sale deed No. 219 of April, 1982 of the Registering Authority, Bhatunda.

J. L. GIRDHAR
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tag
Acquisition Range
Jalandhar

Date: 10-12-82

Seal;

FORM I.T.N.S.-

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOMETAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-

SIONER OF INCOME TAX ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 10th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3695.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000/-and bearing No.

As per Schedule situated at Gill Patti, Bhatinda (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Bhatinda on April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesald property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the Hability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act. to the following persons, namely:—

(1) Shri Mal Singh S/o Sh. Sher Singh, Vill. Gill Patti, Bhatinda.

(Transferor)

- (2) 1. Shri Narinder Singh S/o Sh. Nihal Singh, Shukuntla Devi w/o Narinder Singh and Raj Kumar S/o Banarsi Dass, Vill. Patti Gill now Bhatinda.

 (Transferee)
- (3) As per Sr. No. 2 above.
 (Person in occupation of property)
- (4) Any other person interested in the property.

 (Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expire later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in the Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property and persons as mentioned in the Registration sale deed No. 296 of April, 1982 of the Registering Authority. Bhatinda

J. L. GIRDHAR
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax
Acquisition Range
Jalandhar

Date: 10-12-82

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX

ACOUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 10th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3696.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act' have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing As per Schedule situated at Bhatinda

(and more fully described in the Schedule annexed hereto). has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Bhatinda on April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :-

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transfer to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and /or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this Notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely :-

- (1) Shri Bhagwan Singh S/o Sh. Vir Singh, Bhatinda Mukhtiar-a-am of Karnail Singh R/o V. Patti Gill. (Transferor)
- (2) Shri Gurmail Singh S/o Sh. Singh, V. Bishan Sheikhu Teh. Talwandi Sabo.

(Transferee)

- (3) As per Sr. No. 2 above. (Person in occupation of the property)
- (4) Any other person interested in the property. (Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned-

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immov able property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION: -The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act. shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property and persons as mentioned in the Registration cale deed No. 351 of April, 1982 of the Registering Authority,

> J. L. GIRDHAR Competent Authority Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax, Acquisition Range Jalandhar

Date: 10-12-82

Soal:

FORM 1.T.N.S .--

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION KANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 10th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3697.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR. being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961, (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act') have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000 and bearing No. As per Schedule situated at Multaine Road, Bhatinda (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Bhatinda on April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922), or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act. I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the Act, to the following persons, namely:—

(1) Shri Chothbo Ram S/o Hira Mal, Hira Chowk, Sirki Bazar, Bhatinda.

(Transferor)

_____ __ MG__ VME__ __ _______

(2) S/Sh. Lal Singh S/o Mal Singh, 2. Rajiv Kumar S/o Ayudhia Parshad, 3. Pardeep Goel S/o Mool Raj, 4. Krishna Bansal W o Chander Parkash, 5. Om Parkash S/o Devki Nandan, 6. Moorti Devi W/o Parkash Chand, 7. Chintamani S/o Sh. Udat Narain, 8. Krishan Kumai S/o Chiranji Lal, 9. Shashi Aggarwal W/o Anil Kumar, Rs/o Bhatinda, 10. Gurcharan Singh and Kapoor Singh SS/o Kirpal Singh R/o V. Bhaini.

(Transferee)

(3) As per Sr. No. 2 above

(Person in occupation of property)

(4) Any other person interested in the property.

(Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property and persons as mentioned in the Registration sale deed No. 360 of April, 1982 of the Registering Authority, Bhatinda.

J. L. GIRDHAR
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range
Inlandbar

Date: 10-12-82

FORM I.T.N.S.-

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSIT. COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 10th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3698.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR, being the competent authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing

As per Schedule situated at Bibiwah Chowk, Bhatinda (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Bhatinda on April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under Subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

(1) Shri Darshan Kumar S/o Sh. Jamna Dass, Bhatinda. (Transferor)

(2) 1. Shri Rakesh S/o Sat Dev and 2. Smt, Kamini W/o Sh. Chander R/o Faridkot.

(Transferee)

(3) As per Sr. No. 2 above.

(Person in occupation of the property)

(4) Any other person interested in the property.

(Person whom the undersigned knows to be in the property)

Objections, if any to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property and persons as mentioned in the Registration sale deed No. 463 of April, 1982 of the Registering Authority, Bhatinda.

J. L. GIRDHAR
Competent Authority,
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range
Jalandhar

Date: 10-12-1982

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA OFFICE OF THE INSPECTING ASSTT. COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR Jalandhar, the 10th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3699.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing

As per schedule situated at Bhatinda

(and more fully described in the Schedule annexed herete), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering officer at Bhatinda on April, 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer, and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been of which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act. or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

- (1) Shri Sukhdev Singh S/o Sh, Basant Singh, Bhatinda.
 (Transferor)
- (2) Shri Mohinder Singh S/o Sh. Ranjit Singh R/o Dehlwan Distt. Sangrur,

(Transferee)

(3) As per Sr. No. 2 above.

(4) Any other person interested in the property.

(Person whom the undersigned knows to be

in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immevable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property and persons as mentioned in the Registration sale deed No. 702 of April, 1982 of the Registering Authority, Bhatinda.

J. L. GIRDHAR
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range
Jalandha

Date: 10-12-1982.

FORM I.T.N.S .---

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 10th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3700.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/-and bearing No.

As per schedule situated at Bhatinda

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Bhatinda on April, 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property, and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration thereof by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferse for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

- (1) Shri Sukhdev Singh S/o Sh, Basant Singh, Bhatinda.
 (Transferor)
- (2) Shri Jagwinder Singh S/o Sh. Ranjit Singh R/o Dehlwan Distt. Sangrur.

 (Transferee)
- (3) As per Sr. No. 2 above.

(Person in occupation of the property)

(4) Any other person interested in the property.

(Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned—

- (a) by any of the aforesald persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property and persons as mentioned in the Registration sale deed No. 703 of April, 1982 of the Registering Authority, Bhatinda.

J. L. GIRDHAR
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range
Jalandhar

Date: 10-12-1982.

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME-TAX,

ACQUISITION RANGE, AMRITSAR Jalandhar, the 15th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3738.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing

No. As per schedule situated at Bhatinda (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Bhatinda on April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

(a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or

(b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely

(1) Shri Gurdlal Singh S/o Indei Singh, Bhatinda

(Transferor)
(2) Shri Kaur Chand S/o Bhagwan Dass, Bhatinda.
(Transferee)

(3) as s No. 2_above.

(Person in occupation of the property)

(4) Any other person interested in the Property.

(Person whom the undersigned knows

erson whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned :---

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property and persons as mentioned in the Registeration sale deed No. 251 of April, 1982 of the Registering Authority, Bhatinda.

J. L. GIRDHAR
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax
Acquisition Range, Jalandhar.

Date 15-12-1982

FORM ITNS----

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSTT. COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 10th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3702.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/and bearing

No. As per Schedule situated at V. Gill Patti, Bhatinda (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Bhatinda on April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :-

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);
- Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely :-

39-416GI/82

(1) Shri Mohinder Singh S/o Sh. Nahar Singh R/o Gill Patti, Bhatinda.

(Transferor)

(2) Shri Jagmir Singh S/o Sh. Jugraj Singh, Bhatinda

(Transferee)

(3) As per Sr. No. 2 above

(4) Any other person interested in the property

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned-

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION: -The terms and expressions used herein, as are defined in Chapter XXA of the said Act shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property and persons as mentioned in the Registeration sale deed No. 752 of April, 1982 of the Registering Authority, Rhatinda.

> J. L. GIRDHAR Competent Authority Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax Acquisition Range, Jalandhar

Date: 10-12-1982

FORM NO. I.T.N.S .-

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSTT. COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 10th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3703.—Whereas, 1 J. L. GIRDHAR being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/-and bearing

No. As per Schedule situated at V. Gill Patti, Bhatinda (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering officer at

at Bhatinda on April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transferer and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act. I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

(1) Shmt. Gurdial Kaur Wd/o Sh. Nahar Singh, V. Gill Patti.

(Transferor)

- (2) Smt. Angraj Kaur W/o Sh. Jugvaj Singh, Bhatinda. (Transferee)
- (3) As per Sr. No. 2 above
- (4) Any other person interested in the property

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned; :—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property and prsons as mentioned in the Registeration sale deed No. 753 of April, 1982 of the Registering Authority, Bhatinda.

J. L. GIRDHAR
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-Tax
Acquisition Range, Jalandhar.

Date: 10-12-1982

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE ()F THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 10th December 1982

Ref. No. A. P. No. 3704.—Whereas, I. J. L. GIRDHAR.

being the Competent Authority under Section 269D of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the said Act), have reason to believe that the Im-(hereinafter referred movable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing

No. As per Schedule situated at V. Gill Patti (and more fully described in the Scheduled annexed hereto) has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the Office of the Registering Officer at at Bhatinda on April, 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property, and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer: and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);
- . Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-

section (1) of Section 269D of the said Act, to the following

persons, namely :---

(1) Shri Ramji Lal, Sh. Sant Ram Ss/o Sh. Roshan Chand R/o Vill. Gill Patti.

(Transferor)

(2) Shri Mange Ram S/o Sh. Bhagat Ram R/o Raman Mandi, Sh. Tarlok Chand S/o Barnarsi Dass, Jalan-dhar, Surinder Kumar S/o Sh. Sohan Lal, Bhatinda, Jagan Nath S/o Gondi Ram C/o J. K. Khurana, Advocate Distt, Court, hBatinda.

(3) As per Sr. No. 2 above

(4) Any other person interested in the property

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned-

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person, interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property and persons as mentioned in the Registeration sale deed No. 775 of April, 1982 of the Registering Authority. hBatinda.

> J. L. GIRDHAR Competent Authority Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax. Acquisition Range, Jalandhar

Date: 10-12-1982

Soal:

FORM ITNS-

NOTICE UNDER SECTION 269-D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSTT. COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 10th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3705,--Whereas, I. J. L. GIRDHAR, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000/and bearing

No. as per schedule situated at Jaitu

(and more fully described in the Scheduled annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at

Jaitu on April, 1982.

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of-

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under Sub-section (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely :--

- Shri Suresh Kumar, Shri Vijay Kumar Ss/o Shri Madan I.al S/o Shri Hukam Chand, R/o Jaitu.
 - 2. Smt. Santi Devi Wd/o Shri Madan Lal, R/o Jaitu.
 - 3. Smt. Darshna Devi W/o Sh. Lajpat Rai S/o Sh. Kaur Sain, R/o Dhuri.
 - Smt. Raj Kumari W/o Prem Chand S/o Shri Moti Ram, R/o Barnala.

 - Smt. Vinod Kumari W/o Shri Raj Kumar S/o Shri Raghbir Chand, R/o Dhabwali Distt. Hissar.
 Smt. Rekha Rani W/o Shri Vijay Kumar S/o Shri Mangal Sain, R/o Rampura Phul.
 Smt. Nirmal Lata W/o Shri B. K. Garg of Assam,

(Transferor)

(2) Shri Jagdish Chand S/o Shri Mussadi Lal, C/o Janta Cloth House, New Market, Jaitu. (Transferee)

R/o Jaitu.

- (3) As S. No. 2 above. (Person in occupation of the property)
- (4) Any other person interested in the property. (Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned :-

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expire later.
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in this Official Gazette.

EXPLANATION: -The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act. shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property two Shops with Chabara and person as mentioned in the registration sale deed No. 130 of April, 1982 of the Registering Authority, Jaitu.

> J. L. GIRDHAR Competent Authority Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax Acquisition Range, Jalandhar

Date: 10-12-1982

FORM ITNS----

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME TAX,

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR Jalandhar, the 10th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3706.—Whereas. I. J. L. GIRDHAR, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing

No. as per schedule situated at Muktsar,

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Muktsar on April, 1982.

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property, and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferre for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269°C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of said Act, to the following persons, namely:—

(1) Shri Labh Singh, Shri Atma Singh & Shri Sohan Singh Ss /o Shri Lal Singh, R /o V. Udhey Karan Teh. Muktsar.

(Transferor)

(2) Shri Surjit Singh S/o Shri Avtar Singh, R/o Chak Paliwala Teh. Fazilka.

(Transferce)

(3) As S. No. 2 above.

(Person in occupation of the property).

(4) Any other person interested in the property.
(Person whom the undersigned knows to be interested in the property).

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property and persons as mentioned in the registration sale deed No. 10 of April, 1982 of the Registering Authority, Muktsar.

J. L. GIRDHAR
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax
Acquisition Range, Jalandhar

Date: 10-12-1982

NOTICE UNDER SECTION 269D (1) OF THE INCOME TAX ACT 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME TAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 10th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3708.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), (hereinafter referred to as the said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing

No. as per schedule situated at Muktsar. (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at

Muktsar on April, 1982, for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property, and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen apparent consideration therefor by more than fifteen percent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :-

(1) Smt. Chand Kaur and Jagir Kaur Ds/o Shri Kala Singh S/o Shri Hari Singh, R/o Malout Road, Muktsar.

(Transferor)

(2) Shri Balraj Singh S/o Shri Gurbakhsh Singh, R/o V. Nandgarh Teh. Muktsar,

(Transferce)

- (3) As S. No. 2 above. (Person in occupation of the property).
- (4) Any other person interested in the property. (Person whom the undersigned knows to be interested in the property).

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the mid immovable property, within 45 days from the date of publica-tion of this notice in the Official Gazette.

Explanation:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning so given in that Chapter.

(a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and /or

THE SCHEDULE

Property and persons as mentioned in the registration sale deed No. 197 of April, 1982 of the Registering Authority, Muktsar.

(b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957):

> J. L. GIRDHAR Competent Authority Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax Acquisition Range, Jalandhar

Now therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act to the following persons, namely :-

Date: 10-12-1982

FORM I.T.N.S.---

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSTT. COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 10th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3709.—Whereas, I. J. 1... GIRDHAR, being the Competent Authority under section 269B of the income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/and bearing

No. as per schedule situated at Muktsar,

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Muktsar on April, 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property, and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facultating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act. 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act to the following persons, namely:—

(1) Shri Ujagar Singh S/o Shri Gurmakh Singh aud Shri Jhanda S/o Shri Ujagar Singh, R/o V. Muktsar.

(Transferor)

(2) Shri Nachhatar Singh, Shri Sinder Singh and Shri Avtar Singh Ss/o Shri Kainail Singh, r/o near Chhota Talab, Muktsar.

(Transferce)

- (3) As S. No. 2 above.

 (Person in occupation of the property)
- (4) Any other person interested in the property.
 (Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property and persons as mentioned in the registration sale deed No. 194 of April, 1982 of the Registering Authority, Muktsar.

J. L. GIRDHAR
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax
Acquisition Range, Jalandhar

Date: 10-12-1982

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 10th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3710.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR, being the Competent Authority under Section 269B of the income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing

No. as per schedule situated at Muktsar,

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at

Muktsar on April, 1982,

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of ;--

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely :-

- (1) Shri Hargobin Singh and Shri Karnail Singh Se/o Shri Gulab Singh, R/o V. Janisar Teh, Muktsar. (Transferor)
- (2) Shii Vinod Kumar and Shri Narinder Kumar Sa/o Shri Nathu Ram, R/o Dhanoo Singh Street, Muktsar,
- (3) As S. No. 2 above.

(Person in occupation of the property).

(4) Any other person interested in the property. (Person whom the undersigned knows to be interested in the property).

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned :-

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation:-The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property and persons as mentioned in the registration sale deed No. 89 of April, 1982 of the Registering Authority, Muktsar.

> J. L. GIRDHAR Competent Authority Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax Acquisition Range, Jalandhar

Date: 10-12-1982 Seal:

FORM ITNS

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 10th December 1982

Ref. No. A.P. No 3711.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR, being the competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000 and bearing No. as per schedule situated at Muktsar,

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Muktsar on April, 1982,

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property, and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :-

(a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or

(b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferce for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957).

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, remely :--40-416GI/82

- (1) Shri Jugiai Singh and Shri Gurdial Singh Se/o Shri Gulab Singh, R/o V. Janisar Teh. Muktsar.
- (2) Shri Narınder Kumar and Shri Vinod Kumar Ss/o Shri Natu Ram, R/o Street Dhanoo Singh, Muktsar. (Transferee)
- (3) As S. No. 2 above. (Person in occupation of the property)
- (4) Any other person interested in the property. (Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned—

- (a) by any of the aforesald persons within a period of 45 days from the date of publications of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION: - The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property and persons as mentioned in the registration sale deed No 88 of April, 1982 of the Registering Authority, Mukteer.

> J. L. GIRDHAR Competent Authority Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax Acquisition Range, Jalandhar

Date : 10-12-1982 Seal :

BUTTER OF THE SECTION WERE AND ASSESSED WINDOWS TO SECTION OF THE
FORM ITNS-

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOMETAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 10th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3712.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (bereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing

No. as per schedule situated at Muktsar,

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Muktsar on April, 1982.

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and for
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

- (1) Shri Ajaib Singh & Shri Angrej Singh Ss/o Shri Hargobind Singh and Shri Buta Singh, Shri Gurdev Singh urf Shri Baldev Singh and Shri Hakam Singh & Shri Naib Singh S/o Shri Jugraj Singh and Smt. Nand Kaur Mother of Shri Deputy Singh and Shri Sukhdev Singh S/o Shri Gurdial Singh,

 R/o V, Janisar, Teh Muktsar.
- (2) Shri Narinder Kumar and Shri Vinod Kumar Ss/o Nathu Ram, R/o Dhanoo Singh Street, Muktsar.

(3) As S. No. 2 above,

(Transferee)

(Person in occupation of the p roperty)

(4) Any other person interested in the property.

(Person whom the undersigned knows to be interest-

ed in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION: —The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property and persons as mentioned in the registration sale deed No. 87 of April, 1982 of the Registering Authority, Muktsar.

J. L. GIRDHAR Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax
Acquisition Range, Jalandhar

Date: 10-12-1982

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME TAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 10th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3713.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing No.

as per schedule situated at Muktsar, (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at

Muktsar on April, 1982, for an apparent consideration

which is less than the fair market value of the aforesaid property, and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent considera-tion therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:

(a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or

(b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

Shri Ajaib Singh & Shri Angrej Singh Ss/o Shri Hargobind Singh and Shri Buta Singh, Shri Gurdev Singh urf Shri Baldev Singh and Shri Hakam Singh & Shri Naib Singh S/o Shri Jugraj Singh and Smt. Nand Kaur Mother of Shri Deputy Singh and Shri Sukhdev Singh S/o Shri Gurdial Singh, R/o V. Janisar, Tch. Muktsar.

(Transferor)

- (2) Shri Ashok Kumar, Shri Ravinder Kumar Ss/o Shri Nathu Ram. R/o Dhanoo Singh Street, Muktsar.
- (Transferee) (3) As S. No. 2 above.
- (Person in occupation of the property) (4) Any other person interested in the property. (Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned :-

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property and persons as mentioned in the registration sale deed No. 74 of April, 1982 of the Registering Authority, Muktsar.

> J. L. GIRDHAR Competent Authority Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax Acquisition Range, Jaiandnar

Date: 10-12-1982

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME TAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 10th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3714.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing

No. as per schedule situated at Muktsar,

(and more fully described in the schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Muktsar on April, 1982,

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent

consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act. I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

(1) Shri Ajaib Singh & Shri Angrej Singh Ss/o Shri Hargobind Singh and Shri Buta Singh, Shri Guidev Singh urf Shri Baldev Singh and Shri Hakam Singh & Shri Naib Singh S/o Shri Jugraj Singh and Smt. Nand Kaur Mother of Shri Deputy Singh and Shri Sukhdev Singh S/o Shri Gurdial Singh, R/o V. Janisar, Teh. Muktsar,

(Transferor)

(2) Shri Ashok Kumar, Shri Ravinder Kumar Ss/o Shri Nathu Ram, R/o Dhanoo Singh Street, Muktsar,

(Transferee)

- (3) As S. No. 2 above.

 (Person in occupation of the property)
- (4) Any other person interested in the property.

 (Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property and persons as mentioned in the registration sale deed No. 86 of April, 1982 of the Registering Authority, Muktsar.

J. L. GIRDHAR
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax
Acquisition Range, Jalandhar

Date : 10-12-1982

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME TAX
ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 10th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3715.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing

No. as per schedule situated at V. Malout, (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Malout on April, 1982.

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the sald Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

 Shri Jagrai Singh S/o Shii Arjan Singh. R/o V. Malout Teh. Malout.

(Transferor)

(2) Shri Rakesh Kumar S/o Shri Parshotam Lal. R o Harji Ram Mandi, Malout.

(Transferce)

- (3) As S. No. 2 above.
- (Person in occupation of the property).
- (4) Any other person interested in the property.
 (Person whom the undersigned knows to be interested in the property).

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Properly and persons as mentioned in the registration sale deed No. 246 of April, 1982 of the Registering Authority, Malout.

J. L. GIRDHAR
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax
Acquisition Range, Jalandhar

Date: 10-12-1982

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME TAX ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 10th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3716.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing

No. as per schedule situated at V. Malout, (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Malout on April, 1982,

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :--

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:--

- (1) Shri Buta Singh S/o Shri Sher Singh through Shri Gittan Singh S/o Shri Buta Singh Mukhtiara-am, R/o V. Malout Teh. Melout.
- (Transferor) (2) Smt. Saroi Miglani W/o Dr. Abnash Miglani, R/o Ward No. 9, Abohar.

(Transferee)

(3) As S. No. 2 above. (Person in occupation of the property). (4) Any other person interested in the property.
(Person whom the undersigned knows to be interest-

ed in the property).

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made writing to the undersigned:-

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons. whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION: -- The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property and persons as mentioned in the registration sale deed No. 234 of April, 1982 of the Registering Authority, Malout.

> J. L. GIRDHAR Competent Authority Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax Acquisition Range, Jalandhar.

Date: 10-12-1982

FORM I.T.N.S.~

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME TAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 10th December 1982

Ref. No. A.P. 3717.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR,

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), (hereinafter referred to as the 'Said Act') have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/-and bearing No. as per schedule situated at V. Malout, (and more fully described in the Schedule seneral bursts)

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the

Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at

Malout on April, 1982

for an apparent consideration

which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen percent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/er
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I, hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

- Shri Sushil Kuman S/o Shri Kundan Lal through Shri Kundan Lal Mukhtiar-ai-am S/o Shri Lal Chand,
 R/o V. Malout Teh. Malout,
- (2) Shri Darshan Singh R/o V. Malout.
- (2) Shir Daishan Shigh R/O V. Malout.

(Transferee)

(3) As S. No. 2 above.

(Person in occupation of the property).

(4) Any other person interested in the property. (Person whom the undersigned knows to be interested in the property).

Objections, if any to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property and persons as mentioned in the registration sale deed No. 171 of April, 1982 of the Registering Authority, Malout.

J. L. GIRDHAR
Competent Authority,
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range, Jalandhar

Date: 10-12-1982

FORM ITNS----

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME TAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 10th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3718.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing

No. as per schedule situated at V. Malout,

(and more fully described in the Schedule annexed hereto). transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Malout on April, 1982,

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :--

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957)

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely :---

(1) Shri Jagdish Rai, Shri Nand Lal, Shri Mohan Lul Ss/o Shri Hakam Ram, R/o Ward No, 3, Abohar.

(Transferor)

- (2) Shii Nand Ram S. o Shii Bhagwan Ram, R/o Harii Ram Mandi, Malout.
 - (Transferce)
- (3) As S. No. 2 above, (Person in occupation of the property).
- (4) Any other person interested in the property. (Person whom the undersigned knows to be interested in the property).

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned :-

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazetta

EXPLANATION: -The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property and persons as mentioned in the registration sale deed No. 156 of April, 1982 of the Registering Authority, Malout.

> J. L. GIRDHAR Competent Authority Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax Acquisition Range, Jalandhar

Date: 10-12-1982

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME TAX

ACQUISITION RANGF, JALANDHAR

Jalandhar, the 10th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3719.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/-and bearing

No. as per schedule situated at V. Malout,

(and more fully described in the Schedule annexed hereto) has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the Office of the Registering Officer at Malout on April, 1982,

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :—

(a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said act, in respect of any income arising from the transfer; and/or

(b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act. 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act. 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

(1) Shri Jugrai Singh S/o Shri Arjan Singh,

R/o V Malout Teh. Malout.

(Transferor)

(2) Shri Ashok Kumai S/o Shri Amai Nath, R/o V Malout Leh Malout.

(Transferce)

- (3) As S. No. 2 above. (Person in occupation of the property)
- (4) Any other person interested in the property (Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned ---

- (1) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property and persons as mentioned in the registration sale deed No. 54 of April, 1982 of the Registering Authority, Malout.

J. L. GIRDHAR
Competent Authority,
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range, Jalandhar

Date: 10-12-1982

Seal:

41-416G182

IORM NO ITNS---

NOTICH UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOMETAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME TAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 10th December 1982

Ref No AP No 3720—Wherens I, J L GIRDHAR, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs 25,000 and bearing No as per schedule situated at V Malout (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property, and have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of —

Malout on April 1982,

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other asset, which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under Subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

- (1) Shii Koomiii Lal S/o Shii Dirbai Chan K/o V Milout Teh Muktsai
- (2) Shii Suriit Singh, Shii Sajan Singh, Sukhmandai Singh Ss/o Shri Bagha Singh, R/o V Malout Teh Muktsar

(Transferce)

- (3) As S No 2 above (Person in occupation of the property)
- (4) Any other person interested in the property (Person whom the undersigned knows to be interest ed in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned :-

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation — The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the sume meaning as given in that Chapter

THE SCHEDULE

Property and persons as mentioned in the registration sale deed No 297 of April 1982 of the Registering Authority, Malout

J. L. GIRDHAR
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax
Acquisition Range, Jalandhai

Date 10-12-1982 Seal .

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOMETAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME TAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 10th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3721.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing No. as per schedule situated at V. Malout (and more fully described in the Schedule approach bereto).

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Malout on April, 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property, and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fiften per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferre for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons namely:

Smt. Santo
 Wd/ Shri Sewa Singh
 R/o V. Malout Teh. Muktsar.

(Transferor)

 S/Shri Jaspjal Singh, Gurpal Singh Sa/o Shri Chuhar Singh R/o V. Virk Khera, Th. Muktsar.

(Transferce)

(3) As S. No. 2 above. (Person in occupation of the property)

(4) Any other person interested in the property.

(Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULF

Property & Persons as mentioned in the Registeration sale deed No 78 of April, 1982 of the Registering Authority, Malout.

J. L. GIRDHAR
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range, Jalandhar

Date: 10-12-1982

FORM J.T.N.S.---

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME TAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 10th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3722.—Whereas. J, J. L. GIRDHAR being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/-and bearing

No. as per schedule situated at V. Malout

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Malout on April, 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer, and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiatt proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act to the following persons, namely:—

Smt. Santo
 Wd/ Shrl Sewa Singh
 R/o V. Malout Teh. Muktsar.

(Transferor)

(2) Smt. Chand Kaur W/o Shri Bhag Singh R/o V. Aspal Teh. Malout.

(Transferee)

- (3) As S. No. 2 above.

 (Person in occupation of the property)
- (4) Any other person interested in the property.

 (Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property & Persons as mentioned in the Registeration sale deed No. 80 of April, 82 of the Registering Authority, Malout.

J. L. GIRDHAR
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range, Jalandhar

Date: 10-12-1982

FORM ITNS -----

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX, ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICH OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 10th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3723.—Whereas, I, J. I. GIRDHAR being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act), have rea on to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000 and bearing No. as per schedule situated at Jalandhar

tand more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Jalandhar on April, 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (th) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act. or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957):

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act. I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-Section (1) of Section 269D of the Act, to the following persons, namely:—

 Shri Gurcharan Singh S/o Shri Jaawant Singh R/o 13 Guru Nanak Pura, (Guru Teg Bahadur Nagar), Jalandhar.

(Transferor)

(2) Shri Ajit Singh S/o Shri Kharak Singh R/o V. & P.O. Palahi, Teh. Phagwara. (Transferee)

(3) As S. No. 2 above.

(Person in occupation of the property)

(4) Any other person interested in the property.

(Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property & Persons as mentioned in the registeration sale deed No. 314 of April, 1982 of the Registering Authority, Jalandhar.

J. I. GIRDHAR
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax
Acquisition Range, Jalandhar

Date: 10-12-1982

FORM ITNS----

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 10th December 1982

Ref. No. AP. No. 3724.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing

No. as per schedule situated at Jalandhar

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Jalandhar on April, 1982

which is less than the fair market value of the aforesaid property, and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability
 of the transferor to pay tax under the said Act, in
 respect of any income arising from the transfer;
 and/or
- •b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (I) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

Shri Ujjagar Singh
 Sho Shri Sant Singh
 R/o V. Lahewali Teh. Jalandhur.

(Transferor)

(2) Shri Bakshish Singh S/o Shri Mangat Ram and Smt. Karam Kaur W/o Bakshish Singh R/o House No. 5, Gutu Nanak Nagar, Jalandhar.

(3) As S. No. 2 above.

(Person in occupation of the property)
(Transferce)

(4) Any other person interested in the property.

(Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette of a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property & Persons as mentioned in the registeration sale deed No. 66 of April, 1982 of the Registering Authority, Jalandhar.

J. L. GIRDHAR
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax
Acquisition Range, Jalandhar

Date: 10-12-1982

FORM ITNS----

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-FAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME-TAX,

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 10th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3725.—Whereas, I, J.L. GIRDHAR being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000/and bearing

No. as per schedule situated at Jalandhar

(and more fully described in the Schedule annexed hereto) has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Jalandhar on April, 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transfered for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now therefore, in pursuan e of Section 269-C of the said Act. I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely: —

 Śhri Mulákh Raj S/o Shri Nanak Chand R/o BVII-759, Mandi Fanton Ganj, Jalandhar.

(Transferee)

(2) Shri Kunj Lal S/o Shri Sham Dass R/o BVII-759, Mandi Fanton Ganj, Jalandhar,

(Transferor)

(3) As S. No. 2 above.

(Person in occupation of the property)

(4) Any other person interested in the property.

(Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

FYPIANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, and shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property 1/2 Shop No. BVII-759 situated in Mandi Fanton Ganj, Jalandhar & Persons as mentioned in the Registeration sale deed No. 214 of April, 1982 of the Registering Authority, Jalandhar.

J. L. GIRDHAR
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax
Acquisition Range, Jalandhar

Date: 10-12-1982

NOTICF UNDER SECTION 269(1) OF THE INCOMF-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME-TAX ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 14th December 1982

Ref. No A.P. No 3726.—Whereas, I, J. J... GIRDHAR being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing

No. as per schedule situated at Jalandhar (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Jalandhar on April, 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act to the following persons, namely:—

(1) Shri Ram Lal S/o Shii Karam Chand R/o E.Q. 391, Bazar Pir Bodla, Jalandhar.

(Transferor)

(2) Shri Subhash Chander S/o Shri Daria Ditta, R/o E.K. 153, Mohalla Mufftian, Jalandhar.

(Transferce)

(3 As S No. 2 above.

(Person in occupation of the property)

(4) Any other person interested in the property.

(Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said in movable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

The SCHEDULE

Property 1/2 House No. E.Q. 391 situated at Jalandhar & persons as mentioned in the registeration sale deed No. 74 of April, 1982 of the Registering Authority, Jalandhar.

J. L. GIRDHAR
Competent Authority,
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range, Jalandhar

Date: 14-12-1982

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 14th December 1982

Ref. No A.P. No. 3727.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing

No. as per schedule situated at Jalandhar (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the Office of the Registering Officer at Jalandbar on April, 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen perd cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- ((a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons namely:--

42-416GI/82

Shri Ram Lal
 S/O Shri Karam Chand
 R/O E.Q. 391, Bazar Pir Bodia,
 Jalandhar.

(Transferor)

Shri Surinder Kumar
 S/o Shri Daria Ditta,
 R/o E.Q 153, Mohalla Mufftian,
 Jalandhar.

(Transferce)

(3 As S. No. 2 above.

(Person in occupation of the property)

(4) Any other person interested in the property.

(Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons whichever period expires later.
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property 1/2 House No. E.Q. 391 situated at Jalandhar & Persons as mentioned in the Registeration sale deed No. 310 of April, 1982 of the Registering Authority, Jalandhar.

J. L. GIRDHAR
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range, Jalandhar

Date: 14-12-1982

Scal ;

FORM I.T.N.S.

NOTICE UNDER SECTION 269D (1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 14th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3728.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR being the competent authority under Section 269B of the Income-tax Act. 1961, (43 of 1961) (hereinafter referred to as the said Act) have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000|- and bearing No. as per schedule situated at Kapurthala (and more fully described in the schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Kapurthala on April, 1982 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of

transfer with the object of :-

(a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said act, in respect of any income arising from the transfer; and/or

(b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been of which ought to be disclosed by transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922), or this Act, or the Wealth-tax Act 1957 (27 of 1957);

 Shri Bashambar Dass S/o Shri Banarsi Dass R/o Kapurthala.
 C/o M/s Jagjit Industrial Corporation, Kapurthala.

(2) Shri Chandhu Lal S/o Shri Krishan Lal, R/o Kapurthala (Transferor)
(Transferee)

(3 As S. No. 2 above.

(Person in occupation of the property)

(4) Any other person interested in the property.

(Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION: —The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Land, Building and machinery situated at Kapurthala as mentioned in the Registeration sale deed No. 247 of April 1982 of the Registering Authority, Kapurthala.

J. L. GIRDHAR
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax
Acquisition Range, Jalandhar

Now, therefore, in pursuance of Section 259C of the said Act. I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the Act, to the following persons, namely:—

Date: 14-12-1982

Seal

FORM I.T.N.S .-

NOTICI UNDIR SECTION 269D(1) OF THE INCOME-1 AV ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVI RNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSTT COMMISSIONER OF INCOMETAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 14th December 1982

Ref No AP No 3729—Whereas, I, J L GIRDHAR being the Competent Authority under Section 269B of the Income-ax Act 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the said Act), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs 25,000 - and bearing No as per schedule situated at Jalandhar (and more fully decribed in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Legistration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Jalandhar on April, 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of —

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any mecome or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-text. Act. 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-text Act. 1957 (27 of 1957),

Now ther fore in pulsuance of Section 269C of the said Act, I hereby unit its proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act to the following persons namely —

 Shri Gurmukh Singh S/o Shri Thakur Singh R/o V Mithapur Teb. Jalandhar.

(Transferor)

(2) Kumarı Nımrıt Paul, Samrit Pal Ds/o Shri Kawarıt Singh Ro 9, Guru Nanak Nagar, Jalandhar.

(Transferee)

- (3 As S No. 2 above (Person in occupation of the property)
- (4) Any other person interested in the property
 (Person whom the undersigned knows
 to be interested in the property)

Objections if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned .—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later,
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette

EXPLANATION —The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter

THE SCHEDULE

Property & Persons as mentioned in the registeration sale deed No 121 of April, 1982 of the registering authority, Jalandhar

J L GIRDHAR
Comp tent Authority
Inspecting Assistant Commissions: of Income-tax
Acquisition Range, Jalandhar

Date 14-12 1982 Seal

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 14th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3730.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR being the Competent Authority under section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable, property having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing No.

No. as per schedule situated at Jalandhar

(and more fully described in the schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Jalandhar on April, 1982

which is less than the fair market value of the aforesaid property, and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and for
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys of other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act 1957 (27 of 1957):

Now therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

 Shri Jawala Singh S/o Shri Dasondha Singh & Shri Ujagar Singh S/o Shri Chanan Singh R/o V. Lama Pind Chak Hussuina, Teh. Jalandhar.

(Transferor)

(2) S/Shri Santokh Singh Avtar Singh Ss/o Shrl Shiv Singh and Shri Piara Singh S/o Shri Mota Singh R/o 9, Hargobind Pura, Jalandhar.

(Transferee)

- (3) As S. No. 2 above. (Person in occupation of the property)
- (4) Any other person interested in the property.

 (Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property & Persons as mentioned in the registeration sale deed No. 141 of April, 1982 of the Registering Authority, Jalandhar.

J. L. GIRDHAR
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax.
Acquisition Range, Jalandhar

Date: 14-12-1982

FORM I.T.N.S.

NOTICE UNDER SECTION 269D (1) OF THE INCOMETAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTAN1 COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACQUISTION RANGE, JALANDHAR.

Jalandhar, the 14th December 1982

Ref. No. A. P. No. 3731.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR.

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing

No. as per schedule situated at Mithapur

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Ac⁺, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Jalandhar on April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

(a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or

(b) facilitating the concentment of any income or any moneys or other assets which have not been of which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

 Shri Makhan Singh, Amar Singh, Aala Singh & Sadhu Singh & Smt. Amar Kaur D/o Surain Singh r/o V. Mithapur.

(Transferor)

(2) Shri Rachpal Singh
 S/o Lal Singh
 S /o Charat Singh,
 1/o Model Town, Jalandhar,

(Transferce)

(3) as s. No. 2 above.

(Person in occupation of the property)

(4) Any other person interested in the Property.

(Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be unade in writing to the undersigned .--

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property & Persons as mentioned in the registeration sale deed No 185 of April, 1982 of the Registering Authority, falandhar.

J. L. GIRDHAR
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax
Acquisition Range, Jalandhar.

Date: 14-12-1982.

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPICTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME TAX,

ACQUISTION RANGE, JALANDHAR.

Jalandhar, the 14th December 1982

Ref. No. A. P. No., 3732.—Whereas, J. J. L. GIRDHAR.

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act') have reason to believe

that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing

No. as per schedule situated at Jaswant Nagar Garha (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer Jalandbar on April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesald property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

- (1) Shii Rajesh Dewan S/o Dewan Chand, Civil Lines, Jalandhar. (Transferor)
- (2) Shri Darshan Singh S/o Mohan Singh R/o V. Pasala Tch. Jalandhar and Smt. Harbhajan Kaur W/o Tarsem Singh.

(3) as s. No. 2 above.

(Person in occupation of the property)

(4) Any other person interested in the Property.

(Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned '---

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property & Persons as mentioned in the registeration sale deed No. 293 of April, 1982 of the Registering Authority, Jalandhar.

J. L. GIRDHAR
Competent Authority
Inspecting Assit. Commissioner of Income-Tax
Acquisition Range, Jalandhar.

Date 1 14-12-1982.

Seul:

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME TAX ACT, 1961 (43 of 1961)

COVERNMENT OF INDIA

OF INCOME-TAX

ACQUISTION RANGE, JALANDHAR.

Jalandhar, the 14th December 1982

Ref. No. A. P. No /3733.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR.

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing No.

No. as per schedule situated at I ama Pind Chak Hussaina (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Jalandhai on April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act. I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

- (1) Shii Jawala Singh, Udhan Singh Ss/o Dasondha Singh and Ujsgar Singh, Pakhai Singh Ss/o Chanan Singh R/o V Lama Pind Chack Hussaina, Teh. Jalandhar
- (2) Shri Sadhu Ram S/o Gurdit Ram and Balwant Singh S/o Bhan Singh and Charan Singh S/o Balwant Singh R/o V. Ajit Nagar, Jalandhai.

(Transferee)

(3) as s No 2 above.

(Person in occupation of the property)

(4) Any other person interested in the Property.

(Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property & Persons as mentioned in the registeration sale deed No. 300 of April, 1982 of the Registering Authority, Jalandhar

J. L. GIRDHAR
Competent Authority,
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range, Jalandhar.

Date: 14-12-1982.

NOTICE UNDER SECTION 26°D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME TAX

ACOUISTION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 14th December 1982

Ref No. A. P No /3734 -- Whereas, I, J L GIRDHAR

being the Competent Authority under Section 269-B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs 25,000/- and bearing

No as per schedule situated at V Kingra

(and more fully described in the Schedule annexed hereto) has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer Jalandhar on April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen percent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :-

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C, of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the follow ing persons, namely :---

- (1) Shii Amar Singh S/o Kartar Singh through General Attorney Joginder Singh near Sasta Iron Store, Nakodar Road, Jalandhar.
- (Transferor) (2) Shri Ramindei Singh S/o Lal Singh and Sawaran Kaui W/o Jagminder Singh r/o 23-L, Model Town, Jalandhai.

(Transfer**c**e)

(3) as s. No 2 above.

(Person in occupation of the property)
(4) Any other person interested in the Property.

(Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned :-

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons whichever period expires later;
- (b) by any other persons interested in the said immovable property within 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter

THE SCHEDULE

Property & Persons as mentioned in the registeration sale deed No 541 of April, 1982 of the Registering Authority, Jalandhar

> J. L GIRDHAR Competent Authority Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax Acquisition Range, Jalandhar.

Date: 14-12-1982.

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX ACQUISTION RANGE, JALANDHAR.

Jalandhar, the 14th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3725.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/and bearing

No. as per schedule situated at Chak Hussaina Jalandhar. (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act,

1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at at Jalandhar on April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen percent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of-

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer and/or:
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act. 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-Tax Act, 1957 (27 of 1957).

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely :-43-416GI/82

(1) Shri Piara Singh S/o Phuman Singh r/o Lama Pind Chak Hussaina, Teh. Jalandhar.

(Transferor)

(2) Shri Surinder Kumari W/o Kuldip Ram r/o Suchi Pind, Teh. Jalandhar.

(Transferce)

(3) as s. No. 2 above.

(Person in occupation of the property)
(4) Any other person interested in the Property.

(Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned :--

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from respective persons, the service of notice on the whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION: -The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

The SCHEDULE

Property & Persons as mentioned in the registeration sale deed No. 644 of April, 1982 of the Registering Authority, Jalandhar.

> J. L. GIRDHAR Competent Authority Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax Acquisition Range, Jalandhar.

Date: 3-12-1982

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOMETAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX,

ACQUISTION RANGE, JALANDHAR.

Jalandhar, the 14th December 1982

Ref. No. A. P. No./3736.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR.

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereniafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000/-and bearing No.

No. as per schedule situated at V. Chak Hussaina (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at at Jalandhar on April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957).

Now, therefore, in pursuance of Section 269°C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

- (1) Shri Phuman Singh S/o Hukam Singh r/o V. Chak Hussaina Teh. Jalandhar.
- (2) Shri Parshotam Lal S/o Ram Parkash r/o V. Suchhi Pind. Teh, Jalandhar.
- (3) as s. No. 2 above.

(Transferee)

to be interested in the property)

(4) Any other person interested in the Property.

(Person whom the undersigned knows

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property & Persons as mentioned in the registeration sale deed No. 645 of April, 1982 of the Registering Authority, Jalandhar.

J. L. GIRDHAR
Competent Authority,
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range, Jalandhar.

Date: 14-12-1982.

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOMETAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSTT. COMMISSIONER OF INCOME-TAX,

ACQUISTION RANGE, JALANDHAR.

Jalandhar, the 15th December 1982

Ref. No. A. P. No./3737.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR.

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act') have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/-and bearing No.

as pepr schedule situated at Bhatinda

(and more fully described in the Schedule

annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Bhatinda on April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property, and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:——

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922), or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

 Shri Sadhu Singh, Mitheo Singh and Gurdev Singh Urf. Sukhdev Singh Ss/o Puran Singh, Bhatinda.
 (Transferor)

(2) Shri Gulab Singh S/o Sh. Ganda Singh R/o Vill. Jodhpur Romana,

(Transferce)

(3) As s. No. 2 above.

(Person in occupation of the property)

(4) Any other person interested in the Property.

(Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property and persons as mentioned in the Registration deed No. 257 of April, 1982 of the Registering Authority, Bhatinda.

J. L. GIRDHAR
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range, Jalandhar.

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

Date: 15-12-1982

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

Harmail Singh S/o Sh. Nahar Singh R/o Gill Patti.

(Transferor)

(2) Shri Naib Singh S/o Jugraj Singh Bhatinda (3) As per Sr. No. 2 above

(Transferee)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSTT. COMMISSIONER OF INCOME TAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 10th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3701.—Whereas, I J. L. GJRDHAR being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961, (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said' Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000 and bearing No.As per Schedule situated at V. Gill Patti, Bhatinda

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering officer at at Bhatinda on April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :-

(a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said act, in respect of any income arising from the transfer; and/or

b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I heraby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:-

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned :--

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION: -The terms and expressions meed herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property and persons as mentioned in the Registeration sale deed No. 751 of April 1982 of the Registering authority, Rhatinda.

> J. L. GIRDHAR Competent Authority
> Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax Acquisition Range, Jalandhar

Date: 10-12-1982

FRM ITNS----

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACQUISTION RANGE, JALANDHAR.

Jalandhar, the 15th December 1982

Ref. No. A. P. No. 3739.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR.

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing

No. As per schedule situated at Bhatinda

(and more fully described in the Schedule annexed hereto) has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Bhatinda on April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the oforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-Section (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

(1) Shri Bhagwan Singh S/o Sh. Madan Singh Mukhtiar-am of Sh. Bhupinder Singh, Kothi Amar Pura, Bhatinda of G. N. D. T. P. Colony, Bhatinda.

(Transferor)

(2) Shri Gurprit Singh S/o Sh. Kartar Singh Teacher ,G.H.S. Jaitu, Smt. Harmanjit Kaur D/o Pritam Singh Brar R/o Harino Teh. & Distt. Faridkot and Sukhdeep Kaur D/o Sukhdev Singh Vill. Nathpura Teh. Nathana

(3) us s. No. 2 above. (Transferee)

- (Person in occupation of the property)
 (4) Any other person interested in the Property.

 (Person whom the undersigned knows to be interested in the property)
- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given at that Chapter.

THE SCHEDULE

Property and persons as mentioned in the Registeration sale deed No. 235 of April, 1982 of the Registering Authority, Bhatinda.

J. L. GIRDHAR
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range, Jalandhar.

Date: 15-12-1982

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX.

ACQUISTION RANGE, JALANDHAR.

Calcutta, the 15th December 1982

Ref. No. A. P. No. 3740.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR.

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act') have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing No. No. As per schedule situated at Bhatinda

(and more fully described in the Schedule annexed herete), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Jalandhar on April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property, and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent considera-tion therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269-C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:

(1) Shri Bhagwan Singh S/o Madan Singh Mukhtiaram of Narinder Sigh, Son, Kothi Amar Pura, Near Thermal Colony, Bhatinda.

(Transferor)

- (2) The Akal Sahai Co-operative House Building Society Ltd. Bhatinda through its Secretary and Vice President Sh. Baldev Singh Moga Distt. Food Laboratory, Old Civil Hospital, Bhatinda. (Transferce)
- (3) As per Sr. No. 2 above.

(Person of occupation of the Property)

(4) Any other person interested in the Property.

(Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter,

THE SCHEDULE

Property and persons as mentioned in the Registeration sale deed No. 181 of April, 1982 of the Registering Authority, Bhatinda.

> J. L. GIRDHAR Competent Authority Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax, Acquisition Range, Jalandhar.

Date: 15-12-1982

FORM NO. I.T.N.S.-

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSIT. COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 15th December 1982

Ref. No. AP 3741.—Whereas, I J. L. GIRDHAR being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/-and bearing

As per Schedule situated at Bhatinda

(and more fully described in the Schedule annexed hereto) has been transferred under the Registration Act 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Bhatinda in April 1982,

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

- (1) Shri Bhagwan Singh S/o Madan Singh Mukhtiar-am of Narinder Singh Son., Kothi Amarpura Near Thermal Colony, Bhatinda. (Transferor)
- (2) The Akal Sahai Co-operative House Building Society Ltd., Bhatinda through its Secretary & Vice President Shri Baldev Singh Moga Distt. Food Laboratory, Old Civil Hospital, (Transferee)
- (3) As per Sr. No. 2 above.

 (Person in occupation of the property)
- (4) Any other person interested in the property.

 (Person whome the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property and persons as mentioned in the Registration sale deed No. 478 of April, 1982 of the Registering Authority, Bhatinda.

J. L. GIRDHAR Competent Authority, Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax, Acquisition Range, Jalandhar

Date: 15-12-1982

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSIT. COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 15th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3742.—Whereas, I J. L. GIRDHAR being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/and bearing No.

As per Schedule situated at Bhatinda

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908 in the office of the registering officer at Bhatinda in April 1982,

for an apparent consideration

which is less than the fair market value of the aforesaid property, and I have reason to believe that the fair market value of the property, as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :---

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act. I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely :---

(1) Surjit Singh S/o Nihal Singh, Chand Sar Basti, Bhatinda.

(Transferor)

(2) Shri Subhash Chand S/o Chiranji Lal, Rampura Phool.

(Transferee)

(3) As per Sr. No. 2 above.

(4) Any other person in occupation of the property) (Person whome the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned :--

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gezette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION: -The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property and persons as mentioned in the Registeration sale deed No. 315 of April, 1982 of the Registering Authority, Bhatinda.

> J. L. GIRDHAR, Competent Authority, Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax Acquisition Range, Jalandhar.

Date: 15-12-1982

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 15th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3743.—Whereas, I J. L. GIRDHAR being the Competent Authority under Section 269D of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing

No. as per schedule situated at Bhatinda (and more fully described in the schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act. 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Bhatinda on April, 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act. 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act. 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesai pdroperty by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—44—416GI/82

(1) Shii Boota Singh S/o Aijan Singh R/o Chand Sar Basti, Bhatinda.

(Transferor)

(2) Shri Megh Raj Aggarwal S/o Daulat Ram, Civil Court, Bhatinda. Sh. Chiranji Lal S/o Bansi Ram, Advocate, Bhatinda.

(Transferee)

(3) As per Sr. No. 2 above.

(Person in occupation of the property)

(4) Any other person interested in the property.

(Person whome the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPIANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property and persons as mentioned in the Registeration cale deed No. 322 of April, 1982 of the Registering Authority, Bhatinda.

J. L. GIRDHAR
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax
Acquisition Range, Jalandhar

Date: 15-12-1987

FORM (TNS- ---

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME-TAX ACQUISITION RANGE, JAI ANDHAR

Jalandhar, the 15th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3744.—Whereas, 1 J. L. GIRDHAR being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000/-and bearing

No. as per schedule situated at Bhatinda (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Bhatinda in April 1982,

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the hability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer, and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferce for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act to the following persons, namely:—

(1) Shu Anglej Singh S/o Aljan Singh Chandsar Basti, Bhatinda.

(Transferor)

(2) Shri Tarsem Lal, Mahesh Kumar & Subhash Chandei Ss/o Madan Gopal, Bhatinda. Bhag Singh, Shiviaj Singh Ss/o Natha Singh Vill. Poohla Teh. Nathana, Sukinder Kaur W/o Boota Singh, Guiusar Distt. Bhatinda.

(Transferee)

- (3) As per Sr. No. 2 above.
 (Person in occupation of the property)
- (4) Any other person interested in the property.

 (Person whome the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned;—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act. shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property and persons as mentioned in the registeration sale deed No. 325 of April, 1982 of the Registering Authority, Bhatinda.

J. L. GIRDHAR
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range, Jalandha

Date: 15-12-1982

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX,

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 15th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3745.—Whereas, I J. L. GIRDHAR

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinatter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing

No. as per schedule situated at Bhatinda

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Bhatinda in April 1982,

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen percent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer, and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (1) of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

 Shii Om Parkash Garg S/o Des Raj C/o Kailash Cotton Factory, Haji Rattan, Bhatinda.

(Transferor)

(2) Shrimati Raman Bala W/o Suresh Kumar R/o Rampura Phool.

(Transferce)

(3) As per S1. No. 2 above.

(Person in occupation of the property)

(4) Any other person interested in the property.

(Person whome the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter,

THE SCHEDULE

Property and persons as mentioned in the Registraion sale deed No. 342 of April, 1982 of the Registering Authority, Bhatinda.

J. L. GIRDHAR,
Competent Authority.
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax
Acquisition Range, Jalandhar.

Date: 15-12-1982

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME TAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 15th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3746,—Whereas, I J. L. GIRDHAR being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing No.

As per Schedule situated at Bhatinda

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Bhatinda in April 1982,

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than infecen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :-

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957):

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this noice under subsection (1) of Section 269D of the said Act to the following persons, namely:---

(1) Shi Om Parkash Garg S/o Des Raj C/o Kailash Cotton Factory, Haji Rattan, Bhatinda.

(Transferor)

(2) Smt. Raman Bala W/o Suresh Kumar R/o Rampura Phool.

(Transferee)

(3) As pci Sr. No. 2 above.

(Person in occupation of the property)

(4) Any other person interested in the property.

(Person whome the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned :--

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette,

EXPLANATION: -The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property and persons as mentioned in the Registeration sale deed No. 408 of April, 1982 of the Registering Authority, Bhatinda.

> J. L. GIRDHAR Competent Authority Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax Acquisition Range, Jalandhar

Date: 15-12-1982

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOMETAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OF FICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME TAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhai, the 15th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3747.—Whereas, I J. L. GIRDHAR being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter reterred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing No.

As por Schedule situated at Bhatinda

(and more fully described in the Schedule annexed hereto). has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Bhatinda in April 1982,

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 ed 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

(1) Shri Vijay Kumai S/o Sh. Hans Raj, Karyana Dealer, near Old Police Station, Bhatinda.

(Transferor)

(2) Shi Ranbir Singh S/o Sh. Tara Singh Surjit Kaur W/o Ranbir Singh, Manjit Singh, Raghubir Singh, Kiranjit Kaur W/o Manjit Singh C/o Vijay Kumar, Karyana Dealer, Near Old Police, Station, Bhatinda.

(Transferce)

(3) As per Sr. No. 2 above.

(Person in occupation of the property)

(4) Any other person interested in the property.

(Person whome the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property and persons as mentioned in the Registeration sale deed No. 353 of April, 1982 of the Registering Authority, Bhatinda.

J. L. GIRDHAR
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range, Jalandhar

Date: 15-12-1982

Seel .

interested in the property)

FORM ITNS-

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSIT. COMMISSIONER OF INCOME-TAX,

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 15th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3748.—Whereas, I. J. L. GIRDHAR being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act') have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing No.

As per Schedule situated at Bhatinda

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Bhatinda in April 1982,

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

 Shri Vijay Kumar S/o Sh. Hans Raj, Mukhtiar-a-am of Smt. Raj Rani his sister, Karyana Dealer, near Old Sadar Thana, Bhatinda.

(Transfero)

(2) Shri Raghubii Singh S/o Sh. Norata Singh,
Boota Singh S/o Bakhtaur Singh,
Sh. Harchand Singh S/o Gurnam Singh Rachhpal
Kaur W/o Harchand C/o Dr. Pirthi Singh,
Horticultural Deptt. Dabwali Road,
Bhatinda.

(3) As per Sr. No. 2 above. (Transferce)

(4) Any other person interested in the property.

(Person whome the undersigned knows to be

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days, from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovble property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property and persons as mentioned in the Registeration sale deed No. 354 of April, 1982 of the Registering Authority, Bhatinda.

J. L. GIRDHAR
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range, Jalandha

Date: 15-12-1982

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 15th December 1982

Ref. No. A.P. 3749.—Whereas, I J. L. GIRDHAR being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs, 25,000/- and bearing No.

As per Schedule situated at Bhatinda

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering officer at Bhatinda in April 1982,

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

in w, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act to the following persons, namely:—

(1) Shri Baboo Ram S/o Sh. Chet Ram R/o Ban Bamboo Shop, Sirki Bazar, Bhatinda.

(Transferor)

- (2) Shri Shamsher Singh Joginder Singh,
 Balwant Singh & Pirthi Singh Ss/o Puran Singh,
 Devinder Singh, Swaranjit Singh Ss/o
 Shamsher Singh C/o Dr. Pirthi Singh,
 Horticulture Deptt. Dabwali Road, Bhatinda.
 (Transferee)
- (3) As per Sr. No. 2 above.

(Person in occupation of the property)

(4) Any other person interested in the property.

(Person whome the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned :---

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property and persons as mentioned in the Registration sale deed No. 355 of April, 1982 of the Registering Authority, Bhatinda.

J. L. GIRDHAR
Competent Authority,
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range, Jalandhar

Date: 15-12-1982

FORM I.T.N.S.-

NOTICE UNDER SECTION 269D (1) OF THE INCOMETAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMEN'T OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 15th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3750.—Whereas, J. J. L. GJRDHAR being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing

No, as per schedule situated at Bhatinda

(and more fully described in the Schedule annexed hereto) has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the Office of the Registering Officer at Bhatinda in April 1982,

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :-

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) of the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:-

(1) Shrimati Dwarki Devi Wd/o Sh. Hans Raj C/o Vijay Kumar, Karyana Dealer, Opp. Old Police Station, Bhatinda.

(Transfero

(2) Shri Raj Pal Singh, Prithpal Singh Ss/o Joginder Singh, Manjit Singh, Norata Singh, Surinder Kaul W/o Manjit Singh C/o Dr. Pirthi Singh, Horticultural Deptt., Dabwali Road, Bhatinda.

(Transferee)

(3) As per Sr. No. 2 above.

(Person in occupation of the property)

(4) Any other person interested in the property. (Person whome the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned :-

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later:
- (b) by any other person interested in the said Immovable property, within 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION: -The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning is given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property and persons as mentioned in the Registration sale deed No. 356 of April, 82 of the Registering Authority. Bhatinda.

> J. L. GIRDHAR Competent Authority Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax Acquisition Range, Jalandhar

Date: 15-12-1982

FORM ITNS----

NOTICE UNDER SECTION 269-D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME-TAX,

ACQUISITION RANGE JALANDHAR

Jalandhar, the 15th December 1982

Ref. No. A.P. No/3751.—Whereas, I J. L. GIRDHAR

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act') have reason to believe

that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing

No. As per Schedule situated at Bhatinda,

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Bhatinda in April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and for
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957):

Now therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesald property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—
45—416GI/82

(1) Shri Pawar Kumar S/o Hans Raj C/o Vijay Kumar, Karyana Dealer. Opp Old Police Station, Bhatinda. (Transferor)

(2) Shri Jasvir Singh, Amtik Singh Ss/o Ranvir Singh, Joginder Singh S/o Chanan Singh, Satwant Kaur W/o Joginder Singh C/o Dr. Pirthi Singh, Harticulture Deptt. Dabwali Road, Bhatinda.

(Transferee)

(3) As per Sr. No. 2 above,

(Person in occupation of the property)

(4) Any other person interested in the property.

(Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

The SCHEDULE

Property and persons as mentioned in the Registeration sale deed No. 357 of April 1982 of the Registering Authority, Bhatinda.

J. L. GIRDHAR
Competent Authority
Inspecting Asstt. Commissioner of Income-tax
Acquisition Range, Jalandhar

Date: 15-12-1982

FORM I.T.N.S.-

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOMETAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE JALANDHAR

Jalandhar, the 15th December 1982

Ref. No. A.P. No/3752.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing

No. As per Schedule situated at Bhatinda, (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the Office of the Registering Officer at Bhatinda in April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :-

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act. in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the Issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely :-

- (1) Shri Har Ominder Singh Urf. Harvinder Singh S/o Sunder Singh VIII. Tungwali (Transferor)
- (2) Shi Het Ram \$\sqrt{9}\sqrt{0}\ Shri Nand Ram Vill. Dhunike, Moti Singh \$\sqrt{0}\ Vir Singh, Gurdial Singh \$\sqrt{0}\ O\ Inder Singh Bhatinda.
- (3) As per Sr. No. 2 above. (Person in occupation of the property)
- (4) Any other person interested in the property. (Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned :-

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons. whichever period expires later.
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION: -- The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning is given in that Chapter,

THE SCHEDULE

Property and persons as mentioned in the Registration sale deed No. 480 of April 1982 of the Registering Authority, Bhatinda

> J. L. GIRDHAR Competent Authority Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax Acquisition Range, Jalandhar

Date : 15-12-1982

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSTT. COMMISSIONER OF INCOME-TAX,

ACQUISITION RANGE JALANDHAR

Jalandhar, the 15th December 1982

Ref. No. A.P. No/3753.—Whereas, I J. L. GIRDHAR

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value

exceeding Rs. 25,000/- and bearing

No. As per Schedule situated at Bhatinda.

(and more fully described in the Schedule annexed hereto) has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the Office of the Registering Officer at Bhatinda in April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer: and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) of the said Act, or the Waelth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

(1) Shri Sukhminder Singh S/o Shri Ajaib Singh, R/o Sant Pura Road, near Radha Swami (Beas) Sat Sang Bhawan Bhatinda.

(Transferor)

(2) The Bank Staff Co-operative House Building Society Ltd., Bhatinda through its active members:—1. President: Shri G. S. Sawhney, United India Ins. Cov., The Mall, Bhatinda. 2. Vice President: Shri Jai Paul Garg, Union Bank of India Dharam Pura, Bazar Branch, Patiala.

(Transferec)

(3) As per Sr. No. 2 above.
(Person in occupation of the property)

(4) Any other person interested in the property.

(Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned :---

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Guzette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later.
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

The SCHEDULE

Property and persons as mentioned in the Registration sale deed No. 754 of April 1982 of the Registering Authority, Bhatinda.

J. L. GIRDHAR
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range, Jalandhar

Date : 15-12-1982

FORM I.T.N.S .-

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME-TAX,

ACQUISITION RANGE JALANDHAR

Jalandhar, the 15th December 1982

Ref. No. A.P. No/3754.—Whereas, I J. L. GIRDHAR

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25000/and bearing

No. As per Schedule situated at Bhatinda,

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at

Bhatinda in April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, is respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferree for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

- (1) Shri Opinder Singh S/o Pohla Singh Vill. Jodhpur Romana Teh. & Distt. Bhatinda.

 (Transferor)
- (2) The Bank Staff Co-operative House Building Society Ltd., Bhatinda through its Secretary Shri Jai Paul Garg, Union Bank of India, Dharampura Bazar, Patiala and President Shri G. S. Sawhney, United India Insurance Coy., The Mall, Bhatinda. (Transferee)
- (3) As per Sr. No. 2 above.
 (Person in occupation of the property)
- (4) Any other person interested in the property.

 (Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of the notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property and persons as mentioned in the Registration sale deed No. 755 of April 1982 of the Registering Authority, Bhatinda.

J. L. GIRDHAR
Competent Authority,
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range, Jalandhar

Date : 15-12-1982

NOTICE UNDER SECTION 269(1) OF THE INCOMETAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE **JALANDHAR**

Jalandhar, the 15th December 1982

Ref. No. A.P. No/3755.-Whereas, I J. L. GIRDHAR

being the competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000/and bearing

No. As per Schedule situated at Bhatinda,

(and more fully described in the Schedule annexed hereto). has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the Office of the Registering Officer at Bhatinda in April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property, and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the ap arent consideration therefor more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :-

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act. 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persors, namely:-

- (1) Shrimati Amarwati D/o Shri Hans Raj Bhatinda C/o Vijay Karyana Store, Bhatinda.
- (Transferor) (2) Shri Jasbir Singh, Bhagwant Singh SS/o Kartar Singh, Smt. Harinder Kaur W/o Shri Amarjit and Kirpal Singh S/o Karam Singh R/o Bhatinda.
- (3) As per Sr. No. 2 above. (Person in occupation of the property)
- (4) Any other person interested in the property. (Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned :---

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons. whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION: -- The terms and expressions and herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall be the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property and persons as mentioned in the Registration sale deed No. 416 of April 1982 of the Registering Authority, Bhatinda.

> J. L. GIRDHAR Competent Authority Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax, Acquisition Range, Jalandhar

Date : 15-12-1982 Seal :

FORM I.T.N.S.--

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSSTANT COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE JALANDHAR

Jalandhar, the 15th December 1982

Ref. No. A.P. No/3756.—Whereus, I J. L. GIRDHAR

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing

No. As per Schedule situated at Bhatinda,

(and more fully described in the Schedule annexed hereto) has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Bhatinda in April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property, and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act. 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

- (1) Shri Babu Ram S/o Chet Ram, Bhatinda.
 (Transferor)
- (2) Shri Baljit Singh, Harjit Singh SS/o Balwant Singh, Amarjit Singh, Avtar Singh SS/o Joginder Singh, Govinder Kaur W/o Pirthi Singh, Bhatinda. (Transferee)
- (3) As per Sr. No. 2 above.
 (Person in occupation of the property)
- (4) Any other person interested in the property.

 (Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Offic. Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property and persons us mentioned in the Registration sale deed No. 417 of April 1982 of the Registering Authority, Bhatinda.

J. L. GIRDHAR
Competent Authority,
Inspecting Assistant Commissioner of Income Tax
Acquisition Range, Jalandhar

Date: 15-12-1982

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOMF-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS

SIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE JALANDHAR

Jalandhar, the 15th December 1982

Ref. No. A.P. No/3757.—Whereas, I J. L. GIRDHAR

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing

No. As per Schedule situated at Bhatinda,

(and more fully described in the Schedule annexed hereto) has been transferred under the Registration Act (1908 16 of 1908) in the office of the registering officer at Bhatinda in April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property, and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :-

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act. in respect of any income arising from the transfer; and /or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act to the following persons, namely :--

(1) Shri Kaka Singh S/o Bhag Singh Mukhtiaran Tehsil Singh S/o Kaka Singh R/o Bhatinda.

- (2) Shri Prem Kumar S. o Baij Nath, Mukand Lal S/o Nathu Ram, Amar Kumar S/o Ramail Dass, Smt. Krishna Devi W/o Birbal Dass R/o Bhatinda. (Transferce)
- (3) As per Sr. No. 2 above. (Person in occupation of the property)
- (4) Any other person interested in the property. (Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned :-

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later:
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION: -The terms and expression used herein as are defined in Chapter XXA of the sold Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property and persons as mentioned in the Registration sale deed No. 633 of April 1982 of the Registering Authority, Rhatinda .

> J. L. GIRDHAR Competent Authority Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax. Acquisition Range, Jalandhar

Date : 15-12-1982 Scal

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSTT. COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE JALANDHAR

Jalandhar, the 15th December 1982

Ref. No. A.P. No/3758.—Whereas, U. J. L. GIRDHAR

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000/-and bearing

No. Block No. 16 situated at Adalaj (and more fully described in the Schedule

annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the Office of the registering Officer at Bhatinda in April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer; and/er
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act I hemby initiate proceedings for the acquisition of the atoresaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to following person, namely:—

(1) Shri Chand Singh S/o Dasonda Singh

Vill Ramsara Teb Talwandi Sabo.

(1) Shii Angici Singh, Baldev Singh, SS, o Shri Jalour Singh C/o Guru Nanak Cold Storage and Ice Factory, Barnala Road, Tinkoni, Bhatinda.

(Transferee)

(3) As per Sr. No. 2 above.

(Person in occupation of the property)

(4) Any other person interested in the property.

(Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property and persons as mentioned in the Registration sale deed No. 189 of April 1982 of the Registering Authority, Bhatinda.

J. L. GIRDHAR
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range, Jalandhar

Date: 15-12-1982

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE JAI ANDHAR

Julandhar the 15th December 1982

Ref No \P No 3759—Whereas, I J L GIRDHAR

being the Competent Authority under Section 269B of the Income tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs 25,000/- and bearing

No As per Schedule situated at Bhatinda (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Bhatinda in April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesald property, and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of—

(a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer and/or

(b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957),

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act. I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of Section 269D of the said Act. to the following persons namely — 46—416GI/82

- (1) Shri Chothu Ram S/o Shri Hira Mal Karyana Shop Chowk Hira Wala Near Sirki Bazar, Bhatinda (Transferor)
- (2) Smt Shashi Aggarwal W/o Anil Kumar, Jagrion, Gurcharan Singh Kapur Singh SS/o Kirpal Singh Vill Bhaini Lal Singh S/o Mal Singh, Rajiv Kumar, Paideep Goel S/o Mool Raj Krishna Bansal W/o Chandei Parkash, Om Parkash S/o Devki Nandan, Krishan Kumai S/o Charani Lal R/o Bhatinda (Transferce)

(3) As per St. No. 2 above (Person in occupation of the property)

(4) Any other person interested in the property
(Person whom the understanted knows to be
interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned —

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later,
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazete

EXPLANATION — The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter

THE SCHEDULE

Property and persons as mentioned in the Registration sale deed No 359 of April 1982 of the Registering Authority, Bhatinda

J. L. GIRDHAR,
Competent Authority.
Inspecting Assit Commissioner of Income-Tax
Acquisition Range, Jalandhar.

Date 15-12-1982 Seal .

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE JALANDHAR

Jalandhar, the 14th December 1982

Ref. No. AP. No. 3760.—Whereas, I J. L. GIRDHAR

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000|-

No. As per Schedule situated at Bhatinda,

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at

Delhi in April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for each transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :-

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice unde sub-section (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:-

(1) Shrimati Shanti Devi W/o Shri Laxmi Narain r/o E-41, South Extension, Part-I, New Delhi.

(Transferor)

- (2) M/s Modern Publishers Adda Hoshiarpur, Jalandhar through Shri Ashok Kumar Malhotra Proprietor. (Transferee)
- (3) As per Sr. No. 2 above. (Person in occupation of the property)
- (4) Any other person interested in the property. (Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned :-

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION: -The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property land behind P. K. Industries situated in Jalandhar and persons as mentioned in the Registration sale deed No. 575 of April 1982 of the Registering Authority, Delhi.

> J. L. GIRDHAR. Competent Authority, Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax Acquisition Range, Jalandhar.

Date: 14-12-1982 Scal:

NOTICE UNDER SECTION 269-D (1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE JALANDHAR

Jalandhar, the 14th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3761,—Whereas, I J. L. GIRDHAR

being the competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing No.

No. As per Schedule situated at Jalandhar,

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the Office of the Registering Officer at Delhi in April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property, and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferre for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

 Shrimati Shanti Devi W/o Laxmi Narain r/o E-41, South Extension Part-I, New Delhi.

(Transferor)

- (2) M/s Malhotra Book Depot, Adda Hoshiarpur, Jalandhar through Partner Shri Ashok Kumar Malhotra S/o Balbir Singh Malhotra r/o 194-C, Shanker Bhawan, Fateh Pura, Jalandhar (Transferee)
- (3) As per Sr. No. 2 above.

(Person in occupation of the property)

(4) Any other person interested in the property.

(Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Cazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property land situated behind P. K. Industries, Jalandhar and persons as mentioned in the registration sale deed No. 576 of April 1982 of the Registering Auhority, Delhi.

J. L. GIRDHAR
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-Tax
Acquisition Range, Jalandhar

Date: 14-12-1982

Scal:

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME TAX,

ACQUISITION RANGE

Jalandhar, the 14th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3762.—Whereas, I J. L. GIRDHAR

being the Competent Authority under Section 269C of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing No.

As per Schedule situated at Jalandhar

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at

Delhi in April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

- Shrimati Shanti Devi W/o
 Laxmi Narain and Madan Mohan Thaper S/o
 Dewan D. S. Thaper Mukhtiar-ai-Am of Smt.
 Rai Kumari D/o Shri Laxmi Narain r/o E-41,
 South Extension, Part-I, New Delhi.
 (Transferors)
- (2) Shri Ashok Kumar Malhotra S/o Shri Balbir Singh Malhotra r/o 194-C, Shanker Bhawan, Fatehpur, Jalandhar.

(Transferee)

- (3) As per Sr. No. 2 above.
 (Person in occupation of the property)
- (4) Any other person interested in the property.

 (Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property land situated behind P. K. Industries, Jalandhar and persons as mentioned in the registration sale deed No. 577 of April 1982 of the Registering Authority, Delhi.

J. L. GIRDHAR
Competent Authority
Insepcting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range, Jalandhar

Date: 14-12-1982

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS SIONER OF INCOME TAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhai, the 14th December 1982

Ref No AP No 3763 —Whereas, I 1 L GIRDHAR,

being the Competent Authority under Section 269B of the Income tax Act 1961 (43 of 1961), (hereinafter referred to as the 'said Act), have reason to believe that the immovable property, laving a fair market value exceeding Rs 25,000/and bearing

∴s per Schedule situated at Jalandhai

(in I more fully described in the Schedule

annexed hereto), has been transferred under the Registration Act 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering officei Delhi in April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property, and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of-

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely -

(1) Kum Raj Kumari D/o Laxmi Narain Through Shri Madan Mohan Thaper S/o Dewan D S Thaper R/o E-41, South Extension, Part-I. New Delhi

((Transferor)

((2) Smt Satish Bala Malhotra W/o Shri Ashok Kumar Malhotra R/o 194-C, Shanker Bhawan, Fatehpur, Jalandhar

(Transferee)

(3) As S No 2 above. (Person in occupation of the Property)

()) Any other person interested in the property). (Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned-

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons whichever period expired later,
- (b) by any other person interested in the said immevable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the official Gazette.

EXPLANATION -The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property land situated behind P K Industries, Jalandhar and persons as mentioned in the registration sale deed No. 578 of April, 1982 of the Registering Authority, Delhi

> J L GIRDHAR Competent Authority Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax, Acquisition Range, Jalandhar

Date 14-12-1982 Seal:

FORM ITNS ---

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSIT, COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 14th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3764.—Whereas, I. J. L. GIRDHAR,

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing

As per Schedule situated at Jalandhar

(and more fully described in the Schedule annexed hereto) has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at

Delhi in August, 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability
 of the transferor to pay tax under the said Act, in
 respect of any income arising from the transfer;
 and/or
- (b) facilitaiting the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferse for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) of the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

 Kum. Raj Kumari D/o Laxmi Narain Through Shri Madan Mohan Thaper S/o Dewan D. S. Thaper R/o E-41, South Extension, Part-I, New Delhi.

((Transferor)

((2) Smt. Satish Bala Malhotra W/o Shri Ashok Kumar Malhotra R/o 194-C, Shanker Bhawan, Fatehpura, Jalandhar.

(Transferce)

(3) As S. No. 2 above.

(Person in occupation of the Property)

(4) Any other person interested in the Property,

(Person whom the undersigned knows
to be interested in the property)

Objections, if any, to the asquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said managerable property, within 45 days from the data of the publication of this notice in the Official Guzatte.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning is given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property land situated behind P. K. Industries, Jalandhar and persons as mentioned in the registration sale deed No. 1312 of August, 1982 of the Registering Authority, Delhi.

J. L. GIRDHAR
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range, Jalandhar

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

Date: 14-12-1982

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSTT. COMMISSIONER OF INCOME TAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 14th December 1982

Ref. No. AP No. 3765.--Whereas, I,

J. L. GIRDHAR,

being the Competent Authority under Section 269-B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the said Act), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000|-and bearing No.

As per Schedule

situated at Jalandhar

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer

at Delhi on August 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the !lab.litv of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the sald Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

 Kum. Raj Kumar D/o Laxmi Narain Through Shri Madan Mohan Thaper S/o Dewan D. S. Thaper R/o E-41, South Extension, Part-I, New Delhi.

((Transferor)

(2) M/s. Modern Publishers, Adda Hoshiarpur, Jalandhar Through Shri Ashok Kumar Malhotra.

(Transferee)

(3) As S. No. 2 above.

(Person in occupation of the Property)

()) Any other person interested in the property).

(Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 36 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property land situated behind P. K. Industries, Jalandhar and persons as mentioned in the registration sale deed No. 1313 of August, 1982 of the Registering Authority, Delhi.

J. L. GIRDHAR
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range, Jalandhar

Date: 14-12-1982

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 of 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSTT. COMMISSIONER OF INCOME-TAX,

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 14th December 1982

Ref. No. AP. No. 3766,—Whereas, I, J. L. GIRDHAR,

being the Competent authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/and bearing No.

AS Per Schedule situated at Jalandhar

(and more fully described in the Scheduled annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of of 1908) in the office of the Registering Officer at Delhi in August, 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Incometax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

(1) Shanti Devi W/o Laxmi Naiain Through Shri Madan Mohan S/o Dewan D. S. Thaper R/o F-41, South Extension, Part-I, New Delhi.

(Transferor)

(2) Malhotra Book Depot Through Shri Ashok Kumar Partner R/o Adda Hoshiurpur, Jalandhar

(Transferee)

(3) As S. No. 2 above,

(Person in occupation of the Property)

(4) Any other person interested in the Property.

(Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the atoresaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said mumovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property land situated behind P. K. Industries, Jalandhar and persons as mentioned in the registration sale deed No. 1314 of August, 1982 of the Registering Authority, Delhi.

J. L. GIRDHAR
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range, Jalandhar

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act. I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act to the following persons, namely:—

Date: 14-12-1982

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSIT. COMMISSIONER OF INCOME TAX

ACQUISITION RANGE, JAI ANDHAR

Islandhat, the 14th December 1982

Ref. No AP No 3767.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR,

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/-and bearing

AS Per Schedule

situated at Jalandhar

(and more fully described in the schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the Office of the Registering Officer

at Delhi in August, 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property, and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration thereof by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act. 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269-C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act to the following persons namely. — 47—416GI/82

 Shanti Devi W/o Laxmi Narain Thiough Shri Madan Mohan Thaper S/o Dewan D. S. Thaper R/o E-41, South Extension, Part-I, New Delhi

(Transferut)

(2) Shri Ashok Kumar Malhotra S/o Balbir Singh R/o 194-B, Shankei Bhawan, Fatehpur, Jalandhai

(Transferee)

(3) As S No. 2 above.

(Person in occupation of the Property)

(4) Any other person interested in the property.

(Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property land situated behind P. K. Industries, Jalandhar and persons as mentioned in the registration sale deed No. 1315 of August, 1982 of the Registering Authority, Delhi.

J. L. GIRDHAR
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range, Ialandhar

Date , 14-12-1982 Seal :

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX,

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 14th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3768.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR,

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing No.

AS Per Schedule

situated at Moga Jit Singh

(and more fully described in the Schedule annexed

hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering officer at Moga in April 1982

for an apparent consideration

which is less than the fair market value of the aforesaid property, and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tay Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

 Shri Kehar Singh S/o Balaka Singh R/o Moga Jit Singh, Near City Police Station, Moga Mehla Singh, Moga.

(Transferor)

(2) Shri Baldev Singh S/o Harbans Singh, R/o Moga Ajit Singh, Agwar Hakam Ka, Moga.

(Transferee)

(3) As S. No. 2 above.

(Person in occupation of the Property)

(4) Any other person interested in the property.

(Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property and Persons as mentioned in the Registration sale deed No. 42 of April, 1982 of the Registering Authority, Moga.

J. L. GIRDHAR
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range, Jalandhar

Date: 14-12-1982

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OI FICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 14th December 1982

Ref. No. AP No. 3769.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR,

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing No.

As per Schedule

situated at Moga Mehla Singh

and more fully described in the Schedule annexed hereto) has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in office of the Registering Officer at Moga in April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property, and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration that that the consideration for such transfer as agreed to between the

parties has not been truly stated in the said instrument of

transfer with the object of :-

(a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer and/or

(b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act,1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act to the following persons, namely:—

 Shri Hari Singh S/o Kishan Singh R/o Moga Mehla Singh, Moga.

(Transferor)

(2) Dr. Arora Udhey Udyog Society, Moga.

(Transferee)

(3) As S. No. 2 above.

(Person in occupation of the Property)

(4) Any other person interested in the property.

(Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publications of this notice in the Official Gazette or a perios of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property and Persons as mentioned in the registration sale deed No. 84 of April, 1982 of the Registering Authority, Moga.

J. L. GIRDHAR
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range, Jalandhar

Date: 14-12-1982

FORM I.T.N.S.-

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT

COMMISSIONER OF INCOME TAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 14th December 1982

Ref. No. P. No. 3770.—Whereas, I, J. I. GIRDHAR,

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing No.

As per Schedule

situated at Moga Mehla Singh

and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Moga in April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

New, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

 Shri Mukhtiar Singh S/o Natha Singh R/o Moga Mehla Singh, Near Bibi Ji Wala Gurdwara, Moga.

(Transferor)

 Shri Baldev Singh S/o Kartar Singh R/o V. Chand Nawun, Teh. Moga.

(Transferee)

(3) As S. No. 2 above.
(Person in occupation of the Property)

(4) Any other person interested in the property.

(Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property and Persons as mentioned in the registration sale deed No 104 of April, 1982 of the Registering Authority, Moga.

J. L. GIRDHAR
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range, Jalandhar

Date: 14-12-1982

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 14th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3771.-Whereas, I,

J. L. GIRDHAR,

being the Competent Authority under section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the said Act) have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/and bearing No.

As pr Schedule

situated at Moga Mehla Singh

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registeration Act, 1908) (16 of 1908) in the Office of the registering Officer at

Moga in April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and 1 have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the transferor(s) and transferee(s) has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :-

(a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transferor; and/or

(b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act. 1 hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:-

((1) Shii Joginder Singh S/o Phuman Singh R/o Moga Mehla Singh, Moga.

(Transferor)

(2) Smt. Kamla Rani W/o Khushal Chand and Varinder Kumar S/o Ram Lal R/o Nanak Nagri, Moga Mehla Singh, Moga.

(Transferee)

(3) \s S. No. 2 above. (Person in occupation of the Property)

(4) Any other person interested in the property. (Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:-

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION: -The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property and Persons as mentioned in the registration sale deed No. 317 of April, 1982 of the Registering Authority, Moga.

> J. L. GIRDHAR Competent Authority Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax, Acquisition Range, Jalandhar

Date: 14-12-1982

FORM ITNS----

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSTT. COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR Jalandhar, the 14th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3772.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR,

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/-and bearing No.

As per Schedule

situated at Moga Mehla Singh

(and more fully described in the schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Moga in April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefore by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of—

- (a) facilitating the reduction of evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any money or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now therefore, in pursuance of Section 169C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act to the following persons, namely:—

 Shri Hari Singh S/o Kishan Singh R/o Moga Mehla Singh, Moga.

(Transferor)

(2) Shr Gurcharan Singh and Harnam Singh Ss/o Tara Singh R/o V. Gohal Teh. Sangrur.

(Transferee)

(3) As S. No. 2 above. (Person in occupation of the Property)

(4) Any other person interested in the property.

(Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property and Persons as mentioned in the registration sale deed No. 227 of April, 1982 of the Registering Authority, Moga.

J. L. GIRDHAR
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range, Jalandhar

Date: 14-12-1982

FORM I.T.N.S.

NOTICE UNDER SECTION 269D (1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 14th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3773.—Whereas, I, J. L. GJRDHAR,

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing

No. as per Schedule

situated at Moga Mehla Singh

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the Office of the Registering Officer at

Moga in April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and or
- (b) facilitating the concealment of any mome or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

 Shri Har, Singh S/o Kishan Singh R/o Moga M bla Singh, Moga.

(Tiansfero,)

(2) Smt. Gurnam Keur W/o Kirral Stogh and Jaswinder Kaur W/o Har n ler Singh R/o Mogo Mehla Singh, Moga.

(Transferee)

(3) As S. No. 2 above.

(Person in occupation of the Property)

(4) Any other person interested in the property.

(Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of Notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property and Persons as mentioned in the registration sale deed No. 275 of April, 1982 of the Registering Authority, Moga.

J. L. GIRDHAR
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissions one of Income-tax
Acquisition Range, Jalandhar

Date: 14-12-1982

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME TAX,

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 14th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3774 - Whereas, I, J. L. GIRDHAR, being the Competent Authority under Section 269B of the the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing

No. as per schedule situated at Kot Kapura (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908) (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Faridkot in April, 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property, and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefore by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of-

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:-

- (1) Shri Ka tar Singh Slo Partap Singh rlo Sikhanwala Road, Kotkapura.
- (Transferor) (2) Shii Malkiat Singh Slo Hazur Singh, Prem Chand, Slo Ramji Daes and Gurmail Singh Slo Kartar Singh and Sardul Singh Slo Harchand Singh and Dalip Singh Slo Bachhittar Singh rlo Kotkapura. (Transferce)
- *(3) As S No. 2 above (Person in occupation of the property)
 J. L. GIRDHAR,
 (Person whom the undersigned knows to be

interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned :-

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons. whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property & Persons as mentioned in the registration sale deed No. 118 of April. 1982 of the Registering Authority, Faridkot

> J L GIRDHAR Competent Authority Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax Acquisition Range, Jalandhar

Date · 14-12-1982

Scal:

NOTICE UNDER SECTION 269D (1) OF THE INCOME TAX ACT 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 14th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3775.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing

No. as per schedule situated at Kotkapura

((and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the Office of the Registering Officer at Faridkot in April, 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of-

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer. and for
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

New, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely :- 48—416GI/82

(1) Shri Gurdev Singh, Baldev Singh and Ranjit Singh Ssjo Kehar Singh ijo V Surga Puri, (Kotkapura). (Transferor)

(2) Shri Nachhitter Singh So Mohinder Singh roo V. Surgapuri (Kotkapura).

(Transferce)

*(3) As S. No. 2 above.

*(3) As S. No. 2 above.

(Person in occupation of the property)

*(4) Any other person interested in the property.

(Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned :-

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property & Persons as mentioned in the registration sale deed No. 157 of April, 1982 of the Registering Authority, Faridkot.

> J. L. GIRDHAR Competent Authority Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax Acquisition Range, Jalandhar

Date: 14-12-1982

FORM I.T.N.S.-

NOTICE UNDER SECTION 269D (1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 14th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3776.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/and bearing No.

as per schedule situated at Kotkapura

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the occ of the Registering Officer at Faridkot in April, 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :--

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:-

- (1) Shri Gurdev Singh, Baldev Singh and Ranjit Singh Ss/o Kehar Singh
 1/o V. Surgapuri (Kotkapura).
- (Transferor) (2) Shri Kuldeep Singh So Mohinder Singh of V. Surga Puri (Kotkapura). (Transferce)

*(3) As S. No. 2 above.

*(3) As S. No. 2 above.

(Person in occupation of the property)

*(4) Any other person interested in the property.

(Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned :-

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION: -The terms and expressions used herein are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given that Chapter.

(THE SCHEDULE)

Property & persons as mentioned in the registration sale need No. 158 of April, 1982 of the Registering Authority, Faridkot.

> J. L. GIRDHAR Competent Authority Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax Acquisition Range, Jalandhar

Date: 14-12-1982

FORM I.T.N.S.-

- (1) Shri Chanan Singh So Dhian Singh ro V. Khote Mauran, Teh. Kotkapura.
 - (Transferor) Shri Karnail Singh Son Gurdit Singh V. Moga Road, Kotkapura, Teh. Faridkot.

(Transferee)

NOTICE UNDER SECTION 269D (1) OF THE INCOMF-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

"(3) As S. No. 2 above.

(Person in occupation of the property) *(4) Any other person interested in the property.

(Person whom the undersigned knows to be

interested in the property)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX,

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 14th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3777.—Whereas, 1, J. L. GIRDHAR, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding

Rs. 25,000/- and bearing

No. as per schedule situated at Kotkapura

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the Office of the Registering Officer at Faridkot in April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property, and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :-

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer: and/or
- (b) facilitating the concealment of any income c: any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax, Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act. or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957):

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned-

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immov able property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION: - The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chanter.

THE SCHEDULE

Property & persons as mentioned in the registration sale deed No. 389 of April, 1982 of the Registering Authority, Faridkot.

J. L. GIRDHAR Competent Authority Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax Acquisition Range, Jalandhar

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:---

Date: 14-12-1982

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME TAX,

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 14th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3778.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR. being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act') have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000 / and bearing

No. as per schedule at Dilkusha Market Jalandhar (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Jalandhar in April, 1982

for an apparent consideration

which is less than the fair market value of the aforesaid property, and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than lifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of-

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer, and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely :--

- (1) Shri Swaran Singh Johal So Labh Singh ro Civil Lines, Jalandhar.
- (Transferor) (2) Shrimati Harnam Kaur W/o Jawala Singh
- *(3) As S. No. 2 above.
- (Person in occupation of the property)

 *(4) Any other person interested in the property.

 (Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, which were region are interesting to the contraction of the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the official Gazette.

EXPLANATION: -- The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property 1|5 Shop No. 8-E situated at Dilkusha Market, Jalandhar & persons as mentioned in the registration sale deed No. 133 of April, 1982 of the Registering Authority, Jalandhar.

> J. L. GIRDHAR Competent Authority Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax Acquisition Range, Jalandhar

Date: 14-12-1982

Scal :

NOTICE UNDER SECTION 269D (1) OF THE INCOME TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME-TAX,

ACQUISITION RANGE JALANDHAR

Jalandhar, the 14th December 1982

Ref No AP No 3779—Whereas, I, J L GIRDHAR, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the ('said Act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs 25,000/- and bearing

No as per schedule situated at Jalandhar

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908), in the office of the Registering Officer at Jalandhar in April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of —

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer, and/or
- (b) facilitating of concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferce for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now therefore in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act. to the following persons, namely:—

- (1) Bir Singh Soo Shanker Singh roo 74, Garden Colony, Jalandhar (Transferor)
- (2) Smt Harnam Kaur W/o Jawala Singh, r/o V Wadala Kalan, Teh Jalandhar

(Transferee)

(3) As S No 2 above

(Person in occupation of the property)

(4) Any other person interested in the property
(Person whom the undersigned knows to be
interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned —

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immov able property, within 45 days from the date of the publication of the notice in the Official Gazette

Explanation —The terms and expressions used herein as are defined in ChapterXXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter

THE SCHEDULE

Property 1 5 shop No 8-E situated at Dilkusha Market, Jalandhai & Persons as mentioned in the registration sale deed No 134 of April, 1982 of the Registering Authority, Jalandhar

J L GIRDHAR
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax
Acquisition Range Jalandhai

Date 14 12-1982 Seal

FORM I.T.N.S.-

NOTICE UNDER SECTION 269D (1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX,

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 14th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3780.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/and bearing

No. as per schedule situated at Jalandhar (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the Office of the Registering Officer at Jalandhar in April, 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :---

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the nansferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the follow ing persons, namely :-

- (1) Shri Jagir Singh S/o Partap Singh, r/o V. Garha, Jalandhar.
- (Transferor) (2) Shri Harnam Kaur Wo Jawala Singh ro Wadla Kalan Teh. Jalandhar.

(Transferce)

*(3) As S. No. 2 above.

(Person in occupation of the property) "(4) Any other person interested in the property.

(Person whom the undersigned knows to be

interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned :--

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation:-The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter,

THE SCHEDULE

Property 1|5 shop No. 8-E situated in Dilkusha Market, Jalandhar & persons as mentioned in the registration sale deed No. 135 of April, 1982 of the Registering Authority, Valandhar.

> J. L. GIRDHAR Competent Authority Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax Acquisition Range, Jalandhar

Date: 14-12-1982

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME TAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhai, the 14th December 1982

Ref No AP No 3781.—Whereas, I, J L GIRDHAR, being the competent authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the said Act) have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs 25,000/- and bearing No as per Schedule situated at Jalandhar (and more fully described in the Schedule annexed hereto) has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Jalandhar in April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesald property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of '—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferce for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act. I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely —

(1) Shri Naumhal Singh S/o Gurpal Singh, R/o V Garha, Jalandhar

(Transferor)

- (2) Shrimati Harnam Kaui W/o Jawala Singh, R/o V Wadala Kalun Teh Jalandbar (Transferee)
- (3) As S No 2 above

(Person in occupation of the property)

(4) Any other person interested in the property

(Person whom the undersigned knows
to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned :---

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette

EXPLANATION — The terms and express ons used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter

THE SCHEDULE

Property 1/5 Shop No 8-F in Dilkusha Market, Jalandhar & Persons as mentioned in the registration sale deed No. 136 of April, 1982 of the Registering Authority, Jalandhar

J L GIRDHAR
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax
Acquisition Range, Jalandhar

Date 14-12-1982 Seal

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME-TAX.

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 14th December 1982

Ref. No. AP No. 3782.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR, being the Competent Authority under Section 269D of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing No. as per Schedule situated at Jalandhar

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the Office of the Registering Officer at Jalandhar in 1982 April

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) factitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferre for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 296C, of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

(1) Shri Karam Singh Mann S/o Basant Singh R/o Janta Colony, Jalandhar.

(Transferor

(2) Shrimati Harnam Knur W/o Jawala Singh R/o V. Wadala Kalan, Teh. Jalandhar. (Transferee)

(3) As S. No. 2 ubove.

(Person in occupation of the property)

(4) Any other person interested in the property.

(Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned :--

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property 1/5 shop No. 8-E, situated in Dilkusha Market, Jalandhur & Persons as mentioned in the Registration sale deed No. 137 of April, 1982 of the Registering Authority, Jalandhar.

J. L. GIRDHAR
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range, Jalandhar.

Date: 14-12-1982

Scal:

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAY ACT 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhai the 14th December 1982

Ref No AP/3783 to 3785—Where is I, J I GIRDHAR being the Competent Authority under Section 269-B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs 25,000 - and bearing

No as per Schedule situated at Jalandhai (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Jalandhar in April, 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property, and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of '—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer, and/or
- b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the traisferce for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth tax Act, 1957 (27 of 1957)

Now, therefore in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-Section (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons namely:—49—416GI/82

P. o. 111 Green Pub. Islambar

R o 111 Green Park Talandhar
(2) Shrimati Udham Kani Wd/o Santokh Singh
R/o V Ambala Jattan Distr Hoshi rriji

R/o V Ambala Jattan Distt Hoshurpui

(3) As S No 2 above
& Mohinder Singh S/o Raja Singh
Sh Jagdish Singh S/o Sh Hari Singh o Jalandhai
(Person in occupation of the property)

(4) Any other person interested in the property

(Person whom the undersigned knows
to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette

EXPLANATION.—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter

THE SCHEDULE

Property Kothi No. 111 situated in Green Park Jalandhar & Persons as mentioned in the registration deeds No. 453 of April, 1982, 1232 of May, 1982 and 1834 of June, 1982 (1/3rd share vide each deed) of the Registering Authority Jalandhai

I I GIRDHAR
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tar
Acquisition Range, Jalandhar.

Date 15-12-1982

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME-TAX.

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jolandhar, the 15th December 1982

Ref. No. A. P. No. 3786.—Whereas, f, J. L. GIRDHAR, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs, 25,000/- and bearing No.

As per Schedule situated at Bhatinda

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Bhatinda on April 1982,

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth tax Act, 1957 (27 of 1957).

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

(1) Shri Surjit Singh S/o Ninar Singh, Chandsar Basti, Bhatinda,

(2) Shri Subhash Chand S/o Sh. Charanji Lal

R/o Hampura Phool.

(3) As S. No. 2 ubove.

(Person in occupation of the property)
(4) Any other person interested in the property.

(Person whom the undersigned knows

to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned :—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—I'he terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property and persons as mentioned in the Registration sale deed No. 315 of April, 1982 of the Registering Authority, Bhatinda.

J. L. GIRDHAR
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range, Jalandhar.

Date: 15-12-1982

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, JAI ANDHAR

Jalandhai, the 15th December 1982

Ref. No AP No 3787 - Whereas, I, I I GIRDHAR, being the Competent Authority under Section 296B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing

No As per Schedule situated at Bhatinda

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Bhatında on April 1982

for an apparent consideration

which is less than the fair market value of the aforesaid property, and have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of-

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising form the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth to Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely -

- (1) Smt Jangir Kaui W/o Sh Waryam Singh, Bhatında.
- Shri Guichet Singh S/o Sh. Jallour Singh C/o Gurunanak Cold Storage (P) Ltd, Bhatinda.

No 2 above (3) A_S per S

(Person in occupation of the property) (4) Any other person interested in the property
(Person whom the undersigned knows

to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned :-

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons. whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANAT ON: - The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property and persons as mentioned in the Registration sale deed No. 320 of April, 1982 of the Registering Authority, Bhatinda.

> J. L. GIRDHAR Competent Authority Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax Acquisition Range, Jalandhar

Date : 15-12-1982

Scal :

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONI'R OF INCOMETAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Julandhar, the 15th December 1982

Ref. No. A. P. No. 3788.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing No.

As per Schedule situated at Bhatinda

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1980) in the office of the Registering Officer at Bhatinda on April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of-

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269°C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act to the following persons, namely:—

(1) Shri Gulab Singh S/o Sh. Ganda Singh Vill. Jodhpur Romana.

(2) Shri Gurdarshan Singh S/o Kuldip Singh, Mohinder Kaur W/o Gurdarshan Singh, Balbir Singh S/o Jugraj Singh, Dharam Kaur W/o Jiwan Das, Kewal Krishan S/o Brij Lal, Jaspal, Bharat Bhushan S/o Manohar Lal, Urmala Rani W/o Prem Kumar

Rs/o V. Ballianwali.
(3) As per S. No. 2 above.

(Person in occupation of the property)

(4) Any other person interested in the property.

(Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned :—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION: —The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act.

shall have the same meaning as given in that Chapter

THE SCHEDULE

Property and persons as mentioned in the Registration sale deed No. 259 of April, 1982 of the Registering Authority, Bhatinda.

J. L. GIRDHAR
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range, Jalandbar

Date: 15-12-1982

Scal:

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSTT COMMISSIONER OF INCOME TAX

ACQUISITION RANGE, FALANDHAR

Julandhar the 15th December 1982

Rei No AP/3789 Wholeis I, I I GIRDHAR, being the competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the said 'Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/ and bearing

No As per Schedule situated at Phagwara

(and more fully described in the schedule annexed hereto) has been transferred

under the Registration Act 1908 (16 of 1908) in the Office of the Registering Officer at

Phagwara in April, 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforcsaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :--

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer, and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) of the said Act of the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957),

(1) Shri Suiinder Singh 5/0 Udham Singh Baramzara, Teh. Nawanshahar.

(2) Shri Joga Singh S/o Sh I achhman Singh,

Vill Manak, Teh Phagwara
(3) As 5 No 2 tabove

(Person in occupation of the property) (4) Any other person interested in the property (Person whom the undersigned knows

to be interested in the property)

Objections if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned .-

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later,
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette

EXPLANATION -- The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter

THE SCHEDULL

Property and persons as menuioned in the Registration sale deed No 108 of April, 1982 of the Registering Authority, Phagwara

> J L GIRDHAR Competent Authority Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax, Acquisition Range, Jalandhar

Now, therefore in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the afrocaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of Section 269D of the said Act, to the following per ons namely -

15 12-1982 Date

Scal

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOMETAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

ASSISTANT COMMIS-OFFICE OF THE INSPECTING SIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Julandhar, the 15th December 1982

Rfe. No. AP/3791 to 3793.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing
No. As per Schedule situated at Jalaudhar (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act. 1908. (16 has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer

at Jalandhar in April, 1982 at Jalandhar in April, 1982 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property, and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:— Shri Om Parkash S/o Mool Chand and Shamoon Devi Wd/o Mool Chand R/o near Rly. Phatak, Raman Mandi, Jalandhar Cantt.

(Transferor)

- (2) Shri Deepak Seth S/o Ram Labhaya and Smt. Shukla Seth W/o Ram Lobhaya R/o W. A. 96, Bazar Sheikhan, Jalandhar. (Transferee)
- (3) As per Sr. No. 2 above.

(Person in occupation of the property)

(4) Any other person interested in the property.

(Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act. shall have the same meaning as given in that Chapter.

(a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transfero rto pay tax under the esaid Act in respect of any income arising from the transfer: and for

(b) facilitating th econcealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

THE SCHEDULE

Property Shop-cum-Flat No. 8 situated in New Jawahar Nagar, Jalandhar & Persons as mentioned in registration sale deed Nos. 159, 439 and 712 of dated April 1982 (1/3 share vice each deed) of the Registering Authority, Jalandhar.

> J. I. GIRDHAR Competent Authority, Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax. Acquisition Range, Jalandhar.

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of his notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely :--

Date: 15-12-1982

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 15th December 1982

Ref. No. AP No. 3794.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tnx Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing No. As per Shedule situated at Islandhar (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act. 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer

at Jalandhar in April 1982, for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property, and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect to any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

 Shi Manohar Lal, Sham Ial & Sudershan I al Urf Darshan Lal R/o N. A. 310, Gopal Nagar, Jaiandhar

(Transferor)

- (2) Shri Kasturi Lal S/o Raja Ram R/o N. A. 1310 Gopal Nagar, Jalandhar. (Transferee)
- (3) As S. No. 2 tabove.

(Person in occupation of the property)

(4) Any other person interested in the property.

(Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property and Persons as mentioned in the registration sale deed No. 436 of April, 1982 of the Registering Authority, Jalandhar.

J. I. CARDHAR
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-Tax
Acquisition Range, Jalandhar.

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

Date: 15-12-1982

(Transferor)

FORM ITNS---

NOTICF UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhar, the 15th December 1982

Ref. No. A.P. No. 3796.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR, being the Competent Authority under Section 269B of the Income tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/-and bearing

No. as per Schedule situated at Kot Kapura (and more fully described in the Schedule annexed hereto) has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Faridkot on April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction of evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and los
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act to the following persons namely;—

- (1) Shrimati Birgla Sarin W/o Rojindo Lumat Roo Muktsui Road, Kot Kapura.
- (2) Shri Sandeep Kumur S/o Dharam Bir R/o near Old Bus Stand, Kot Karura.
- (3) As S. No. 2 above.
- (Person in occupation of the property)
 (4) Any other person interested in the property.
 - (Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned —

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property and Persons as mentioned in the registration sale deed No. 43 of April, 1982 of the Registering Authority. Paridkot.

J. I. GIRDHAR
Competent Authority,
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range, Jalandhar.

Date: 15-12-1982

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961) GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, JALANDHAR

Jalandhai, the 16th December 1982

Ref. No A.P. No. 3797.—Whereas, I, J. L. GIRDHAR, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/-and bearing

No. as per Schedule situated at Kot Kepura

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Faridkot on April 1982,

for an apparent consideration which is less than the foir market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer;
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, 1 hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

50-416GI/82

(1) Shrimati Bimla Sarin W/o Rajinder Kumai R/o Muktsar Road, Kot Kapuia.

(Transferores)

(2) Shrimati Murti Devi W/o Dharam Vir R 'o Muktshr Road Kot Kapura.

(Transferee)

- (3) As S. No. 2 tabove. (Person in occupation of the property)
- (4) Any other person interested in the property.

 (Person whom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property & Persons as mentioned in the registeration sale deed No. 75 of April, 1982 of the Registering Authority, Faridket

J. L. GIRDHAR
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax.
Acquisition Range, Jalandhar.

Date: 16-12-1982

Soul :

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSTT. COMMISSIONER OF INCOME-TAX,

ACQUISITION RANGE-II, MADRAS

Modras-600 006, the 7th December 1982

Ref. No. 12057.—Whereas, I, R. P. PILLAI,

being the Competent Authority under Section 269-B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act') have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25000/-and bearing No. S. No. 771/4, Kalapatti situated at Coimbatore TK

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering

Officer at Gandhipuram (Doc. 1543 '82) in April 1982 for an apparent consideration

which is less than the fair market value of the aforesaid property, and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the axid Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesald property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

Ramaswamy Gounder
 K. R. Subramaniam, K. R. Shanmugham,
 R. Sundaram, R. Marudhachalam, M. Ramakrishnan
 Karupparayampalayam, Kalapatti,
 Coimbatoic.

(Transferor)

(2) P. V. Rajan, S/o P. Veerappanaicker, Pallapattiyur, Erumurpatti, Karur Tk

(Transferce)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein at are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Land at S No. 771/4, Kalapatti, Colmbatore (Doc. 1543/82).

R. P. PILLAI,
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range-II, Madras.

Date: 7-12-82

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME TAX

ACQUISITION RANGE-II, MADRAS

Madras-600 006, the 8th December 1982

Ref. No. 12035.—Whereas, I,

R. P. PILLAI,

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and

bearing No. 73, Ponnurangam Road, West, RS situated at Puram, Coimbatore

(and more fully described in the Schedule annexed hereto) has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of

1908) in the office of the Registering

Officer at Coimbatore (Doc. 1820/82) in April 82

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability
 of the transferor to pay tax under the said Act, in
 respect of any income arising from the transfer;
 and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) of the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

 Navayava Rao, 28/73, West Ponnurangam Road, RS puram, Coimbatore.

(Transferor)

(2) V. S. Padmanabhan, Rep. by Power Agent, R. V. Subramania No. 2, Raja St., Komarapalayam, Erode,

(Transferce)

Objections, if any to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning is given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Land and building at 73, West Ponnurangam Road, RS puram, Coimbatore.
(Doc. 1820/82).

said Act, or the Wealth-tax Act,

R. P. PILLAI,

Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range-II, Madras.

Now, therefore, in pursuance of Section 269°C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269°D of the said Act, to the following persons, namely:—

Date: 8-12-82

seal :

FORM ITNS----

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOMETAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSTT. COMMISSIONER
OF INCOME-TAX.

ACQUISITION RANGE-II, MADRAS

Madras-600 006, the 7th December 1982

Ref. No. 12034.—Whereas, I, R. P. PILLAI,

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/-and bearing No.

bearing No. 28/35, Ponnurangam St., West, situated at RS puram, Coimbatore.

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering

Officer at Coimbatore (Doc. 1822/82) in April 82

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability
 of the transferor to pay tax under the said Act, in
 respect of any income arising from the transfer;
 and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

- Krishnamurthy,
 Rep. by Power Agent, M. Narasimhan,
 Plot No. 413, 24th Cross, 9th Main,
 Banarashankari 1 Stage, Bangalore-70.
 - (Transferor)
- (2) Arun Kumar, Sureshchandra Bafna 28/35, Ponnurangam St., West RS puram, Coimbatore.

(Transferee)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Land and building at 28/35, West Ponnurangam Road, Coimbatore. (Doc. 1822/82).

R. P. PILLAI,
Competent Authority,
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range-II, Madras.

Date: 7-12-82

FORM I.T.N.S.-

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

(1) P. Lakshmi, Karunaiammal Rangasamudiam, Sathiyamangalam, Periyar Dt.

(Transferor)

K. V. Nallaswamy
 S/o Velappa Gounder
 Kemmiyampatti, Pattalurganj Village,
 Bhavani, Periyar.

(Transferce)

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE-II, MADRAS

Madras-600006, the 7th December 1982

Ref. No. 13020.—Whereas, I, R. P. PILLAI,

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing

No. S. 99/54, 99/64, 98/1P, 98/2P situated at 98 1, Arakkankottai

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the registering officer at Thukkanaickenpalayam (Doc. 206/82) in April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of—

(a) facilitating the reduction on evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or

(b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act. I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

FXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Land at S. No. 99 '54, 99/64, 98/1P, 98/2P 98/1, Arakkankottai. (Doc. 206/82).

R. P. PILLAI,
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax
Acquisition Range-II, Madras.

Date: 7-12-82

FORM I.T.N.S .--

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME TAX

ACQUISITION RANGE-II, MADRAS

Madras-600 006, the 7th December 1982

Ref. No. 12046.—Whereas, I, R. P. PILLAI,

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961, (43 of 1961) hereinafter referred to as the said Act) have reason to believe

that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000% and bearing
No. S. No. 482/1, 2, 3, 482/4, 488/2, 3, 4
situated at Kesarimangalam

(and more fully described in the Schedule annexed hereto) has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at

Bhavani (Doc. 759/82) in April 82

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than filteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with obect of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys of other assets which have not been or which ought to be disclosed by transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922), or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

(1) P. K. Jagannathan Puliampatti, Pulla goundanpatti Agraharam, Sangagiri, Salem Dt.

(Transferor)

(2) The Lakshmi Mills Co. 348, Avanashi Road, Pappanaickenpalayam, Coimbatore-37.

(Transferee)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Lend at S. No. 482/1, 2, 3, 4, 488/2, 3, 4 Kesarimangalam, Bhavani Tk. (Doc. 759/82).

R. P. PILLAI, Competent Authority, Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax, Acquisition Range-II, Madras.

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:-

Date: 7-12-82

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

, , , == ...,

GOVERNMENT OF INDIA OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT

COMMISSIONER OF INCOME TAX, ACQUISITION RANGE-II, MADRAS

Madras-600 006, the 7th December 1982

Ref. No. 9750.—Whereas, I, R. P. PILLAI,

being the Competent Authority under Section 269B of the income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding

Rs. 25,000/- and bearing No.

TS 1683/1A, Manjakuppam, Cuddalore

situated at Manjakuppam

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the Office of the Registering Officer at Cuddalore (Doc. 391/82 in April 82

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property, and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteeen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with he object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the hability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purpose of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269-C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

(1) Chitra Ammal, 21C, Kizh Bazaar St., Chidambaram.

(Transferor)

(2) V. S. Ingadeesan, 26A, Nethaji Road, Manjakuppam, Cuddalore-1.

(Transferec)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersinged:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Land, Building, Machinery etc. at TS No. 1683/1A. Manjakuppam, Cuddalore. (Doc. 391/82).

R. P. PILLAI,
Competent Authority,
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range-II, Madras.

Date: 7-12-82

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOMETAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

(2) SAR Somasundaram SAR Murugappan, 79 Arulagam Kutchen Road, Tiruchengode Salem Dt

(1) R Gopalakrishnan S/o Romaswamy Iyer,

(Transferee)

(Transferor)

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONFR OF INCOME-TAX.

ACQUISITION RANGE II, MADRAS

Madras-600 006 the 7th December 1982

Ref No 12055—Wherens, I, R P PILLAI,

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/-bearing No 88B, Gandhlpuram 2nd St,

situated at Coimbatore

(and more fully described in the Schedule annexed hereto) has been transferred under the

Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the registering

Officer at Gandhipuram (Doc 1622/82) in April 82

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration thereof for more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction of evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act 1957 (27 of 1957),

Now therefore in pursuance of Section 269C of the said Act I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons namely '—

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned—

88B 2nd St, Gandhipuiam, Coimbatoie-12

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons whichever period exputes later,
- (b) by any other person, interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION —The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said. Act, shall have the same meaning as given in that Chapter

THE SCHEDULE

Land and building at 88B, Gandhipuram 2nd St, Coimbatore (Doc 1622/82)

R P PILLAI,
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range-II, Madias

Date 7-12 82, Seal

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOMETAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE-II, MADRAS-600 006

Madras-600 006, the 7th December 1982

Ref. No. 9749.—Whereas, J. R. P. PILLAI, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax. Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing No. TS 1683/1N Angalamman Koil St., situated at Manjakuppain, Cuddalore

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Cuddalore (Doc. 397/82) in April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

(a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said act, in respect of any income arising from the transfer; and/or

(b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been of which ought to be disclosed by the transferree for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tay Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—
51—416GI/82

(1) Shri P. Rajalakshmi Ammal 42, Angalamman Koil St., Cuddalore-1.

(Transferoi)

(2) S. Lokanathan Chettiar 31A 2, Bashiyam Chetty St., Cuddalore-1.

(Transferce)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Land and building, machineries at TS 1683/1N, Angalamman Koil St., (Doc. 397/82).

R. P. PILLAI Competent Authority Inspecting Assistant Commissioner of Income-tay Acquisition Range-II Madras-600 006

Date: 7-12-82

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE

INCOMF-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE-II. MADRAS-600 006

Madras 600 006, the 9th December 1982

Ref. No. 17173.—Whereas, I, R. P. PILLAI, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing No. 40, Ormes Road, Madras-10 situated at Ormes Road (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Puraawalkam (Doc. 625/82) in April 1982 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property, and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

(1) C. Chennakesavalu Chetty
C. Bagyalakshmi
No. 40, Ormer Road Madras-10.

(Transferor)

(2) Huadevi Chouraria, 32, Nyniappa Naicken St., Mudras-3.

(Transferees)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter

THE SCHEDULE

Land and building at 40, Ormes Rend, Madras-10 (Doc. 625/82).

R. P. PILLAI
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax.
Acquisition Ronge-II
Madras-600006.

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:

Date: 9-12-82

(1) Shii N. R. Janaki Ammal, 47, Luz Avenue, Madras-4

(Transferor)

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961) (2) Shri M S S. Raman, 15, Audiappa Mudali St., First Floor, Flowers Road, Madras-84 (Transferee)

GOVERNMENT OF INDIA

Objections if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX

(a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;

ACOUISITION RANGE-II, MADRAS-600 006

(b) by any other person, interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

Madras-600 000, the 9th December 1982

EXPLANATION —The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

Ref No 17136—Whereas, I R. P. PILLAt being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing No

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at T Nagar (Doc. 827 82) on April 1982 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to

TS 6637, Neclakanta Mehta St., situated at Madras-17

for an apparent consideration which is less than the tair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) faciliating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer and/or
- (h) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

THE SCHEDULE

Land and Building at TS 6637, Neelakanto Mehta St., Madros-17 (Doc. 827/82)

R. P. PILLAI,
Competent Authority,
Inspecting Assistant Commissioner of Income-taxAcquisition Range-II
Madras-600 006

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

Date : 9-12-82

(Transferor)

FORM 1.T.N.S.--

NOTICE UNDER SECTION 269D (1) OF THE INCOME TAX ACT 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE-II, MADRAS-600 006

Madras-600 006, the 9th December 1982

Ref. No. 17160.—Whereas, I, R. P. PILLAI, being the competent authority, under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing Flat No. 5, 31, First Main Road, situated at C.I.T. Nagar.

Madras-35
(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908

(16 of 1908) in the office of the Registering officer at Madras South (Doc. 1344/82) in April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act. 1 hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

- R. Susila, M/s. General Supplies Agency, Rose House, Lal Paranbil, Vellai Kinar, Alleppey-688 001.
- (2) K. R. Upadhyaya, 6, North Road, West CIT Nagar, Madras-35. (Transferee)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Flut at No. 5, 31, First Main Road, CIT Nagar, Madras-35. (Doc. 1344/82).

R. P. PILLAI
Competent Authority,
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax
Acquisition Range-II
Madras-600 006

Date : 9-12-82

FORM I.T.N.S.

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME TAX ACT 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE-II, MADRAS-600 006

Madras-600 006, the 8th December 1982

Ref. No. 12017.—Whereas, I, R. P. PILLAI, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the Immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25.000/- and bearing No. Kaliyapuram S. No. 967/2, 968 situated at Kaliyapuram (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at

Anamalai (Doc. 447/82) in April 1982 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property, and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

- (1) Shri A. Doralawamy, A. D. Veluswamy and another, Akilandapuram Pollachi.
- (Transferor)
 (2) Shri Nachammal, Nallappan and another.
 (Transferee)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person, interested in the said immovable property, within 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Land at S. No. 967/2 and 968, Kaliyapuram (Doc. 447/82).

R. P. FILLAI
Competent Authority,
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax
Acquisition Range-II
Madras-600 006

Date : 8-12-82

(1) Shri P. Alfred, No. 110/2, Nungambakkam High Road, Madras-34.

(Transferor)

(2) M/s. Sreedharan Co., 152, Greames Road, Madras-6.

(Transferee)

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOMETAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSIT. COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACOUISITION RANGE-II, MADRAS-600 006

Madras-600 006, the 7th December 1982

Ref. No. 17147.—Whereas, I, R. P. PILLAI, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25000/- and bearing No. 146, Greames Road, Madras-6, situated at Greames (and more fully described in the Schedule annexed hereto). has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at T. Nagar (Doc. 513 82) on April 1982 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property, and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

(a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer; and/or

THE SCHEDULE

Land and building at 146, Greams Road, Madras-6 (Doc. 513/82).

(b) facilitating the conceatment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

R. P. PILLAI,
Competent Authority
Inspecting Assistant
Commissioner of Income-tax
Acquisition Range-II
Mad1as-600 006

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

Date : 7-12 82 Seal :

Seal

FORM ITNS----

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE-II, MADRAS-600 006

Madras-600 006, the 8th December 1982

Rcf. No. 17130 - Whereas, I, R P. PILLAI, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,00/- and bearing No. 20. II Main Road, Gandhinagar, situated at Madras-20 (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the Office of the Registering Officer at Stadapet (Doc. 1369/82) m April 1982 for an apparent consideration which is less than the fair matket value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :--

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) fac.litating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act. I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely;

(1) Shri N. R. Surendra, NSG Prayanna 20, II Moin Road Gandhinagai, Madras 20

(Transferor)

 (2) D. Gayathii
 A. Habibullah Avenue, Anderson Road, Madras-6

(Fransferee)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the sald immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Land at 20, II Main Road, Gandhinagar, Madras-20 (Doc. 1369/82)

R. P. PH.LAI
Competent Authority
Inspecting Asstt. Commissioner of Income-tax
Acquisition Range-II
Madras-600 006

Date 8-12-82 Scal

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME. TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX,

ACQUISITION RANGE-II, MADRAS-600 006

Madrus-600 006, the 8th December 1982

Ref. No. 12022.--Whereas, I, R. P. PILLAI, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value

exceeding Rs. 25,000/- and bearing No. RS 522 and 533/3, Ooty, situated at

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Ooty (Doc. 242/82) in April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fiften percent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :--

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tex under the said act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely .--

(1) Shri T. K. Rajagopal Edulice St., Ooty Nilgiris.

(Transferor).

(2) Osman Ali Khan Javed Pasha, 102, Harrington St., Chetput, Madras.

(Transferce)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned :--

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immov able property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION: --- The expressions terms used and herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in the Chapter.

THE SCHEDULE

Land at TS 522 and 533 3, Ooty (Doc. 242/82)

R. P. PILLAI Competent Authority Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax, Acquisition Range-II Madras

Date: 8-12-82

Seal;

FORM NO. I.T.N.S.—

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOMETAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSTT. COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE-II. MADRAS-600006

Madras-600006, the 10th December 1982

Ref. No. 17284.-Whereas, J R. P. PILLAI being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- an dbearing No. 624, Mount Road, Madras-6 situated at Mount Road (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act. 1908 (16 of 1903) in the office of the Registering Officer at Madras North (Doc. 1266/82) in April 1982 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as afore-

said exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument

of transfer with the object of:-

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1927);

Now, therefore, in pursuance of section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely :-52-416GI/82

(1) Shri N. M. Mohammed Saheed Middle St., Punganur, Tanjore Dt.

(Transferor)

(2) Shri Mohammed Rizvan Rep. by Zahira Bigum, Middle St., Punganur, Tanjore.

(Transferee)

Objections, if any to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned :--

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons. whichever period expires later.
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION: - The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Land and building (1/6th share) 624, Mount Road, Madras-6 (Doc. 1266 82).

R. P. PILLAL Competent Authority Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax Acquisition Range-II Madras-600 006

Date: 10-12-82

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE-II, MADRAS-600 006 Madras-600 006, the 8th December 1982

Ref. No. 17141.—Whereas, I, R. P. PILLAI, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing

No. RS 133, Nageswara Iyer Road, situated at Nungambakkam Madras-34

Namakkal Taluk, Salem, Dist. (Doc. No. 483/82)

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at

T. Nagar, Madras (Doc. 596/82) in April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property, and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

(1) Mrs. Annapurni Ammal 17, Thiruvengadaswamy St., RA puram, Madras-28.

(Transferor)

(2) The Child Trust Medical Research
Foundation Society
II Floor, Dhun Buildings, 827, Anna Salai,
Madras-2.

(Transferce)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Land at RS No. 133, Nageswara Iyer Road, Madras-34. (Doc. 596/82).

R. P. PILLAI
Competent Authority
Inspecting Assistant
Commissioner of Income-tax
Acquisition Range-II
Madras-600 006

Date: 8-12-82

Seat :

FORM I.T.N.S.-

NOTICE UNDER SECTION 269D (1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSTT. COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE-II, MADRAS-600 006

Madras-600 006, the 8th December 1982

Ref. No. 12031.—Whereas, I, R. P. PILLAI, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act') have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing No. Krishnarayapuram, Coimbatore, situated & Krishnarayapuram, (and more fully described in the Schedule annexed hereto) has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Coimbatore (Doc. 1973/82) in April 1982 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesald property, and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesald

exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that

the consideration for such transfer as agreed to between the

parties has not been truly stated in the said instrument of

transfer with the object of :--

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

 Shri G. Govindaswamy Naidu, Govinda Nilayam, Peelamedu, Coimbatore-641 004.

(Transferor)

(2) S. N. R. Sons Charitable Trust
Sarojini Naidu Road, Coimbatore-641 044.

(Transferee)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the some meaning as given up that Chapter.

THE SCHEDULE

Land at Krishnarayapuram, Coimbutore (Doc. 1973/32).

R. P. PILLAI
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range-II
Madras-600 006

Date: 8-12-82

FORM I.T.N.S.-

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961) (1) Shri C. S. Krishnamurthy, 9, Dr. Radhakrishna Road, Coimbatore.

(Transferor)

(2) M/s. S. Peru Naidu & Co. Coimbatore.

(Transferce)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX ACQUISITION RANGE-II, MADRAS-600 006

Madras-600 006, the 7th December 1982

Ref. No. 12073.—Whereas, I, R. P. PILLAI, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing No.

TS 11/12952A1, situated at Coimbatore

(and more fully described in the schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Gandhipuram ((Doc. 1427/82 in April 1982 for an apparent consideration which is less than the fair

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any money or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act. I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned :--

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Land at TS 11/1295/2A1 Coimbatore (Doc. 1427/82).

R. P. PILLAI
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax
Acquisition Range-II
Madras-600 006

Date: 7-12-1982

FORM NO, I.T.N.S.-

NOTICE UNDER SECTION 269D (I) OF THE INCOME-TAX, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME TAX

ACQUISITION RANGE-IJ, MADRAS-600 006

Madras-600 006, the 9th December 1982

Ref. No. 17139.-Whereas, I, R. P. PILI AI, being the Competen Authority under section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinatfer referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/and bearing No.

22, situated at North Crescent Road, Madras-17 (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act. 1908 (16 of 1908) in the Office of the Registering Officer at

T. Nagar (Doc. 773/82) in April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instruments of transfer with the object of :--

(a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the sald Act, in respect of any income arising from the transfer; and /or

(b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) on the said Act or the Wealth Tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act to the following persons, namely :---

Shri Shyamala Basha, 3, Leith Castle North St., Madras-28.

(Transferor)

(2) Shri T. Prabeaskumar Reddy, 5, Wallace Garden III St., Madras-600 006.

(Transferec)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned-

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION: - The terms and expressions used herein are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Land and building at 22, North Crescent Road, Madras-17 (Doc. 773 /82).

> R. P. PILLAI Competent Authority Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax Acquisition Range-II Madras-600 006

Date: 9-12-82

FORM ITNS----

 Shri Jethanand Dowlatram
 Pachaiappan College Hostel Road, Chetput, Madras-31.

(Transferor)

(2) M/s. Kumararaja Enterprises
121, Madhavaram High Road, Perambur
Madras-11,

(Transferce)

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOMETAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE-II, MADRAS-600 006

Madras-600 006, the 6th December 1982

Ref. No. 17150 .-- Whereas, I, R. P. PILLAI, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing No. TS No. 54/1 and 58, situated at West Mambalam, (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at T. Nagar (Doc. 906/82) in April 1982 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property, and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefore by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :-

(a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer;

and/or

(b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferes for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned :--

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Land at TS. No. 54/1 and 58, West Nambalam (Doc. 906/82).

R. P. PILLAI
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax
Acquisition Range-II
Madras-600 006

New, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of his notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

Date: 6-12-82

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

Shri S. Kanthimathi Ammal, E. Kannappan, Sami Tchari St., Pudupakkam, Madras-14. (Transferor)

(2) S. R. Krishnamurthy, 19, Tippu Saheb St., Madras-2.

(Transferee)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSIT. COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE-II, MADRAS-600 006

Madras-600 006, the 3rd December 1982

Ref. No. 17142.—Whereas, I. R. P. PILLAI, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act')

have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing No. 10, Kolamani Amman Koil St., situated at Kandapillai Chavadi North T. Nagar, Madras-17,

(and more fully described in the Schedule annexed hereto) has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the Office of the Registering Officer at T. Nagar, Madras (Doc. 563/82) in April 1982,

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evesion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferce for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the sald Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Land and building at No. 10, Kolamani Amman Koil St., Kandapillai Chavadi North T. Nagar, Madras-17. (Doc. 563/82)

R. P. PILLAI
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range-II, Madras-600 006

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act. I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

Date: 3-12-1982

NUTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOMETAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

(1) R. Santhanam, 3H, North, St., Sriram Nagar, Madras-18. (Transferor)

(2) S. A. Easwari, 29/8, Eldams Road, Madras-18.

(Transferee)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACOUISITION RANGE-II, MADRAS-600 006

Madras-600 006, the 6th December 1982

Ref. No. 17190.—Whereas, I, R. P. PILLAI, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing

No. Flat No. 2, 162, Mowbrays Road, situated at Madras-18, (and more fully described in the Schedule annexed bereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1108) in the office of the Registering Officer at Mylapore (Doc. 613/82) on April 1982

for an apparent consideration

which is less than the fair market value of the aforesaid property, and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of—

(a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or

(b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned :—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Flat 2, 162, Mowbrays Road, Madras-18, (Doc. 613/82)

R. P. PILLA1
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range-II, Madras-600 006

Date: 6-12-1982

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE-II, MADRAS-600 006

Madras-600 006, the 7th December 1982

Ref. No. 17192 -- Whereas, I, R. P. PILLAI, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing No.

S. No. 330, Kadayankuppam situated at Madhavaram, Thiruvotrivur.

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at

Thiruvotriyur (Doc. 1143/82) on April 1982, for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of-

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act. 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely :--53—416GI/82

(1) 1. A, V. Pattammal,
2. A, V. Shanmugham,
3. Δ. V. Damodaran,

Sarojini Parthasarathy,

 Lalitha Ananda Subramaniam, Usha Raj Kumar 74, Gowdiya Mutt Road, Madras-14.

(Transferor)

(2) Nazi Munnisa, 33, Mandapam Road, Kilpauk, Madras-10.

(Transferce)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned :-

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION: -- The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Land at S. No. 330, Kadayankuppam Madhavaram, Thiruvotriyur. (Doc. 1143/82)

> R. P. PILLAI Competent Authority, Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax. Acquisition Range-II, Madras-600 006

Date: 7-12-1982

of -

FORM ATMS++-

--(1) ZETN MA: Oompany.

AA 153, Anna Nagar, Madias 102

(Tiansferor)

(2) D. M. Enterprises, 114(C) 114 High Madras 1

(Transferee)

NOTICE UNDER SECTION 269D: (1) OP:THE INCOMETAX ACT, 1961 (43 OF 1961);

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME, TAX.

ACOUISITION RANGE II, MADRAS-600 006

Madian-600,006 there With Deposition: 1982

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act') have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs, 25,000/- and bearing No. 52. Sterling Road, Madras 34, situated at T. Nagar, (Die 871/82) (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908, (16 of 1908) in the Office of the Registering Officer at T. Nagar, (Doc 871/82) on April 1382, for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property, and J. have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per-

cent of such apparen consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957)

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act I hereby imitate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the period of 30 days from the service of notice on the respective persons, which exer period expires, later,
- (b) hathany, other person, interested, up when said immovable property, within 45 days from the industrial file, publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation in The sterms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter,

THE SCHEDULL

Land and building at 52, Steiling Road Madras-34 (Doc. 871/82)

R P PILLAI
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax
Acquisition Range-II Madias-600 006

Date 7-12-1982 Seal .

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSTT. COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE-II, MADRAS-600 006

Madras-600 006, the 7th December 1982 ...

Ref. No. 17153.—Whereus, I. R. P. PILLAI, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act') have reason to believe that the homovable property, having a fair market value exceeding."

Rs. 25,000/- and bearing

No. 3, Giri Rood, Madvay-17, situated at T. Nagar (Doc. 909/82)

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at

T. Nagar, (Doc. 909 \$2) on April 1982,

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tox under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income tax. Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax. Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

- (1) K. P. Rad & others, 314/9A, Main Road, 7th Block West Jayanagar, Bangalore-82.
- (2) G. K. Sathyanarayana and S. Prasad, 45! G. N. Chetty Road, Madras-17.

(Transferce)

(Transferor)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (#) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Land and building at No. 3, Giri Read. Madras-17, (Doc. 909/82)

R. P. PILLAI
Competent Authority
Inspecting Assit. Commissioner of Income-Tax
Acquisition Range-II, Madras-600 006

Date : '7-12-1982 | Seal :

(1) Padma Srmivasan, 194 Block III Yayan igar, Bangalore-560 011 (Transferor)

(2) R Santhanam 43 46, Greames Road Madras 6

(Transferez)

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE-II MADRAS 600 006

Madras-600 006 the 10th December 1982

Ref No 17132—Whereas I R P PILLAI being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs 25,000/-and bearing

No 13 8th Cross St. Shistri Nagai situated at Madras-20, (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act. 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering officer at Saidapet (Doc. 1319-82) on April 1982 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the

parties has not been truly stated in the said instrument of

transfer with the object of -

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferre for the purposes of the Indian Income tar Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957).

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of Section 269D of the said Act to the following persons namely—

Objections if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned :--

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, which ever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette, and/or

1 XPLANATION.—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Land and building at 13 8th Cross St Shastri Nagal, Madras-20 (Doc 1319/82)

R P PILLAI
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax
Acquisition Range II Madras 600 006

Date 10 12 1982 Seal

N. M. Ramachandran,
 and 26, Saravana Mudali St., Madras-17.
 (Transferor)

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961) (2) Mrs. Padmasany Parthasarathy. 29, Sarayana Mudali St., Madras-17.

may be made in writing to the undersigned :-

whichever period expires later;

(Transferce)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE-II. MADRAS-600 006

Madras-600 006, the 7th December 1982

Ref. No. 17140. Whereas, I, R. P. PILLAI, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing

No. 29, Saravana Madali St., situated at Madras-17, (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1903 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at

T. Nagar, (Doc 615 82) on April 1982,

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of

- (a) facilitating the reduction of evasion of the liability
 of the transferor to pay tax under the said Act
 in respect of any income arising from the transfer;
 and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any money, or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

(a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons,

Objections, if any, to the acquisition of the said property

(b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

FXPLANATION: —The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Land and building at 29, Saravana Mudali St., Madras-17, (Doc. 615/82)

R. P. PILI AT Competent Authority Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax Acquisition Range-II, Madras-600 006

Now, therefore in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons namely:—

Date: 7-12-1982

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOMETAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOMETA ACQUISITION RANGE II, MILDRAS 600006

Madras-600 006, the 3rd Dec mbc/ 1982

Ref. No. 17177 - Whereas, I, R P PILLAI, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/and bearing

No. 11, situated at Mangesh St., Modic, 17

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at

T. Nagar, (Doc. 603, 755, 757, 758, 759, 761, 762/82) on April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen percent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:-

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this none under subsection (1) of Section 269D of the court the follow me prisons, namely :-

(1) Vidhya Pictures, 3/4. Whannels Road Madras-2

(Fransferor)

(2) K R Latthambal,

K: Sudhan, k Chate

K. Lalaha

K. Radha,

K. Shanthi. 18, Lakshminarasimhan St., Madias-17. (Transfeice) K. Shanthi.

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:-

- (a) by any at the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

I-YPI ANATION .- The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Land at No 11 Vange 1 St Plade 1-17 (Doc 603 755 756 75/ 75°, 759, 761 762 82)

> R. P. PILLAT Competent Authority Inspectar Assistant Commissioner of Income-tax Acquisition Range-II. Madras-600 006

D 3-12 1/32 Se il :

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

(1) Vidhya Pictures, 3/4. Whannels Road, Madras-2.

(Transferor)

(2) R. Kumer, 5, Mangesh St., (Upstairs), Madras-17. (Transferoe)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSIT. COMMISSIONER OF INCOMETAX

'ACCORDING OF ANDE-IN

MADR 45-600 006

to borray, Madran-6400 906 ribe 3rd Decembor 1982 c, amount to room of the roo

morRefulNo: 471177-Whereasoff, R. P. PILLAI.

Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/-

and bearing and the training state of the Schodule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at

T. Nagai (Doc 749,82) on April 1982, for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to abchieve that the fair market value of the property is differential according the fair market value of the property is differential according the fair market will be found that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes, of the Ladian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the soid Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957),

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice as the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichevel period expires later;
- "(b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the sald Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

I and at No. 11, Mangesh St., Madras-17. (Doc. 749/82)

R. P. (PR) 4 (Compared Anthority Compared Anthority (State Committee) of Encomposition

Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

R. P. PILLAI
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax
Acquisition Range-11, Madras-600 006

Date: 3-12-1982

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961) (1) Vanajakshi Kothandapani,
 Ramani, Rajamani K. Kalavathy.
 9, Mohammed Hussain Lane, Madras-2.

(Transferor)

(2) Sabosh, Sudhir Batia, 18, Thandavarayan St., Madras-600 014, (Transferee)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME-TAX
ACQUISITION RANGE-II.
MADRAS-600 006

Madras-600 006, the 9th December 1982

Ref. No. 17285.—Whereas I, R. P. PILLAI, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing

Rs. 25,000/- and bearing
No. 26, situated at Natasingapuram St., Madras-600 002, (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908), in the office of the Registering Officer at Mudras North (Doc. 1296/82) on April 1982 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of

transfer with the object of :-

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said Immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Land and building at 26, Narasingapuram St., Madras-600 002, (Doc. 1296/82)

R. P. PILL 41
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax
Acquisition Range-II, Madras-600 006

Date: 9-12-1982

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOMETAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX, ACQUISITION RANGE-II, MADRAS-600 006

Madras-600 006, the 3rd December 1982

Ref. No. 17177.—Whereas, I, R. P. PHLI AI, being the Competent authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/-and bearing

No. 11, situated at Mangesh St., Madras 17, (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at

T. Nagar, Madras-17, (Doc. 756/82) on April 1982 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said restrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:

54-416GI/82

(1) Vidhya Pictures, 3/4, Whannels Road, Madras-2

(Transferor)

(2) S. Lakshmi, 38, Robertson Road, Coimbatore.

(Transferee)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned-

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later:
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Land at No. 11. Mangesh St., Madras-17. (Doc. 756/82)

R. P. PILLAI
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax
Acquisition Range-II, Madras-600 006

Date: 3-12-1982

(1) Vidhya Pictures. 3/4, Whannels Road, Madras-2.

(Transferor)

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

(2) Smt. Vidhya W/o Shri Scetharaman, Alagappa College Engineering Campus, Karaikudi, (Transferee)

GOVERNMENT OF INDIA

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME-TAX,
ACQUISITION RANGE-JI
MADRAS-600 006

(a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;

Madras-600 006, the 3rd December 1982

(b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

Ref. No. 17177.—Whereas, I. R. P. PILLAI, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing

FYPL MATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

No. 11, situated at Mangesh St., Madras-17, (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Madras-17, on April, 1982

for an apparent consideration

which is less than the fair market value of the aforesaid property, and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any money, or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferec for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

THE SCHEDULE

I and at 11, Mangesh St., Madras-17. (Doc. 760/82)

R. P. PILLAI
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax
Acquisition Range-II Madras-600 006

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

Date: 3-12-1982

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

75, Santhapet, Gudiyatham, N.A. Dt.

(1) Shri S. Ramakrishnan, Shri R. Manoharan.

(Transferor)

(2) Shri Mahaveerchand,

10, Muthial Naicken St., Madras-7.

(Transferee)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX ACQUISITION RANGE-II.

MADRAS-600 006

Madras-600 006, the 7th December 1982

Ref. No. 17171.—Whereas, I, R. P. PILLAI, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing No.

S. No. 1526, 1527, situated at Brick Kiln Road, Madras-7, (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at

Purasawalkam on April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen percent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :-

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act. 1922 (11 of 1922) or the said Act or the Wealth-tax Act, 1957 (22 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely :--

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned-

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of the notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons. whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION s:- The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Land in TS. No. 1526 and 1527, Brick Kiln Road, Madras-7.

(Doc. 656/82)

R. P. PILLAI Competent Authority Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax Acquisition Range-II, Madras-600 006

Date: 7-12-1982

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOMF-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE II MADRAS-600 006

Madias 600 006 the 7th December 1982

Ref No 17171—Whereas, I, R P PILLAI, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs 25,000/- and bearing No

S. No 1526, 1527, situated at Brick Kiln Road, Madias-7 (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Purasawalkam (Doc 655/82) on April 1982

for an apparent consideration which is

less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefore by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of —

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer, and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act to the following persons namely—

(1) Shri S. Ramakrishnan, Shi R. Manoharan, 10 Muthial Naicken St., Madras 7

(Transferor)

(2) Shii I onchand Jain 54 Santhapet, Gudiyatham, N.A. Dt

(Transferce)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned —

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later,
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Land at S No 1526, 1527, Buck Kiln Road, Madias-7. (Doc 655/82)

R P. PILLAT
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax
Acquisition Range-II, Madras 600 006

Date 7 12-1982

Seal

NOTICE UNDER SUCTION 269D(1) OF THE INCOMETAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE-II, MADRAS-600 006

Madras-600 006, the 7th December 1982

Ref. No 17171.—Whereas I, R. P. PILLAI. being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing No. S. No. 1526, 1527, situated at Brick Kiln Road, Madras-7, (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Purasawalkam (Doc. 654/82) on April 1982 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property, and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of .--

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

 Shri S. Ramakrishnan, Shri R. Manoharan,
 Muthial Naicken St., Madras-7.

(Transferor)

Santha Devi,
 Badri Garden St., Madras-3.

(Transferee)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be mad; in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Land at S. No. 1526, 1527, Brick Kiln Road, Madras-7.

(Doc. 654/82)

R. P. PILLAI
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax
Acquisition Range-II, Madras-600 006

Date: 7-12-1982

(Transferor)

FORM 1TNS---

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME-TAX ACQUISITION RANGE-II, MADRAS-600 006

Madras-600 006, the 7th December 1982

Ref. No. 17171.--Whereas J, R. P. PILLAI, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the said Act) have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing No. S. No. 1526, 1527, situated at Brick Kiln Road, Madras-7. (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 cf 1908) in the Office of the Registering Officer at Purasawalkam Doc. 653, 82 on April 1982 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :-

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

(1) Shri S. Ramakrishnan, Shri R. Manoharan, 10, Muthial Naicken St., Madras-7.

(2) P. S. Champalal, 5, Hanumantharayan West St., Madras-3. (Transferce)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:---

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the sald Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Land at S. No. 1526, 1527, Brick Kiln Road, Madras-7.

(Doc. 653/82)

R. P. PILLAI
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax
Acquisition Range-II, Madras-600 006

Date: 7-12-1982

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME-TAX,

ACQUISITION RANGE-II. MADRAS-600 006

Madras-600 006, the 7th December 1982

Ref. No. 12066.-Whereas T, R. P. PILLAI, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing No. S. No. 272, situated at Souripalayam (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Coimbatore (Doc. 1565/82) in April 1982 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property, and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :-

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and for
- (b) facilitating the concealment of any income of any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957).

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely :---

- (1) D. Venugopal, Rose Cottage, Avanashi Road, Coimbatore. (Transferor)
- (2) K. Kalanjiyadevi, D/o Komaraswamy Gounder, Vadavalli, Coimbatore Tc.

(Transferee)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned :--

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later.
- (b) by any other person interested in the said immovvable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

FAPIANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given that Chapter.

THE SCHEDULF

Land at S. No 272, Souripalayam. (Doc. 1565/82)

> R. P. PILLAI Competent Authority Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax Acquisition Range-II. Madags-600 006

Date : 7-12-1982 Seal :

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX ACQUISITION RANGE-II, MADRAS-600 006

Madras-600 006, the 7th December 1982

Ref. No. 12066.—Whereas I, R. P. PILLAI, being the competent authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing

S. No. 172, situated at Souripalayam,

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer Coimbatore (Doc. 1564/82) on April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property, and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :-

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957).

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesald property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely :-

- (1) D. Venugopal. Rose Cottage, Avanashi Road, Coimbatore. (Transferor)
- (2) D. Sundarabai D/o Shri Daivasigamani, L.I. Housing Unit, Kotindampalayam, Coimbatore. (Transferce)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned :-

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immevable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning . given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Land at S. No. 272, Souripalayam. (Doc. 1564/82)

> R. P. PILLAI Competent Authority Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax Acquisition Range-II, Madras-600 006

Date : 7-12-1982

a <u>landa tatta a landa tata</u> a a ay jay <u>landa tata y</u> y y yana a ay

FORM ITNS-

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-FAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME-TAX.

ACQUISITION RANGF-II, MADRAS-600 006.

Madras-600 006, the 7th December 1982

Ref. No. 12066.—Whereas, I, R. P. PILLAI, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'),

have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000f- and bearing No. S. No. 272, Souripalayam situated at

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), in been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Coimbatore (Doc. 1563/82) on April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property, and I have reason to believe that the fair market value of the property, as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than lifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer, and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957).

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the iforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following regions namely:——55—416GI/82

 D. Venugopal, Rose Cottage, Avanashi Road, Coimbatore

(Iransferor)

(2) T. Saiadabai, Srinivasa Nagar, Kainam Subiamania Iyer St., 49, Coimbatore.

(Transferee)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned—

- (a) by any of the aforesald persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used horein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Land at S. No. 272, Souripalayam. (Doc. 1563/82)

R. P. PILLAI,
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range-II, Mad1as-600 006.

Date: 7-12-82

FORM ITNS ----

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE-II, MADRAS-600 006.

Madras-600 006, the 7th December 1982

Ref. No. 12066.—Whereas, I, R. P. PILLAI, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing No. S. No. 272, Souripalayam situated at (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Coimbatore (Doc. 1562/82) on April 1982 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reasons to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefore by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :---

- (a) facilitating the reduction or evasion of the Hability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1927);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

 D. Venugopal, Rose Cottage, Avanashi Road, Colmbatore.

(Transferor)

(2) A. Mathammal, 310, Koundampalayam Housing Unit, Colmbatore.

(Transferee)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION S:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Land at S. No. 272, Souripalayam. (Doc. 1562/82)

R. P. PILLAI,
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range-II, Madras-600 006.

Date: 7-12-82.

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE-II, MADRAS-600 006.

Madras-600 006, the 7th December 1982

Ref. No. 12066.—Whereas, I, R. P. PILLAI, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/-and bearing No.

S. No. 272, Souripalayam situated at (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Coimbatore (Doc. 1557/82) on April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market aluve of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen percent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—-

 D. Venugopal, Rose Cottage, Avanashi Road, Coimbatore.

(Transferor)

(2) M. Kittuswamy, Marudappa Gounder Nallampalayam, Ganapathy, Coimbatore-6. (Transferee)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Land at S. No. 272, Souripalayam. (Doc. 1557/82)

R. P. PILLAI,
Competent Authority,
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range-II, Madras-600 006.

Date: 7-12-82.

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SJONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE-II. MADRAS-600 006.

Madras-600 006, the 7th December 1982

Ref. No. 12066.-Whereas, I, R. P. PJLLAI, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing No. S. No. 272, Souripalayam situated at

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at

Coimbatore (Doc 1558/82 on April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property, and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transferas agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :-

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely : --

(1) D. Venugopal, Rose Cottage, Avanashi Road, Coimbatore.

(Transferor)

(2) A Ayyaswamy, S/o Anthoni Piliai, CPS Colony, Koundapalayam, Coimbatore-30.

(Transferce)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned :---

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said uninovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION.—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act shall have the same meaning as given in that Chapter

THE SCHEDULE

Land at S. No. 272, Souripalayam. (Doc, 1558/82)

> R. P. PILLAI, Competent Authority Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax, Acquisition Range-II, Madras-600 006.

Date 7-12-82 Scal.

FORM ITNS-----

NOTICE UNDER SECTION 269D (1) OF THE INCOME-TAX ACT 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT
COMMISSIONER OF INCOME-TAX
ACQUISITION RANGE II, MADRAS-600 006

Madras 600 006, the 7th December 1982

Rei No 12066—Whereas, I R P PILLAI, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/-and bearing No

S No 272, situated at Souripalayam (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer Combatore (Doc 1559-82) on April 1982 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the afore ad property, and I have reason to believe that the fur market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than infeen per cent of such apparent consideration and that theoretical for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of —

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) of the said Act or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:--

 D Venugopal, Rose Cottage, Avanashi Road, Combatore

(Transferor)

(2) C. Paulraj, J. Karnam Subiamania Iyei St., Srinivasanagai, Koundampalayam, Coimbatore-36

(Transferee)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned —

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette

EXPLANATION --The terms and expressions used below as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter

THE SCHEDULL

Land at S. No. 272, Souripalayam (Doc. 1559/82)

R P. PILLAI, Competent Authority, Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax, Acquisition Range II, Madras-600 006

Date 7-12 82 Seal

FORM I.T.N.S.

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

D. Venugopal, Rose Cottage, Avanashi Road, Coimbatore.

(Transferor)

(2) V. Balakrishnan S/o Velayudha Perual, Koundampalayam, Housing Unit L1, Coimbatore-30.

(Transferee)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSTT. COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE-II, MADRAS-600 006.

Madras-600 006, the 7th December 1982

Ref. No. 12066.—Whereas, I, R. P. PILLAI, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/-and bearing No.

S. No. 272, situated at Souripalayam (and more fully described in the schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Coimbatore (Doc. 1560/82) on April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object:

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesald persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Land at S. No. 272, Souripalayam. (Doc. 1560/82)

R. P. PILLAI, Competent Authority Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax Acquisition Range-II, Madras-600 006.

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection ((1) of Section 269D of the said Act, to the following ing persons, namely:—

Date: 7-12-82.

FORM I.T.N.S.

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOMETAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE-II, MADRAS-600 006.

Madras-600 006, the 7th December 1982

Ref. No. 12071—Whereas, I. R. P. PILLAI, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property baving a fair market value exceeding Rs. 25,000/-and bearing No.

S. No. 272 situated at Souripalayam

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Coimbatore (Doc. 1561/82) on April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the foresaid property and

I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent or such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer, and for
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

 D. Venugopal. Rose Cottage, Avanashi Road, Coimbatore.

(Transferor)

(2) D. Krishnavalli, 3/0, Housing Unit, Koundampalayam, Coimbatore.

(Transferee)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:----

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Land at S. No. 272, Souripalayam. (Doc. 1561/82)

R. P. PILLAI.
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range-II, Madras-600 006.

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under the subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persions, namely:—

Date: 7-12-82.

FORM PTNS-

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE-II, MADRAS-600 006,

Madras-600 006, the 7th December 1982

Ref. No. 12071 -- Whereas, I, R. P. PILLAI, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing No. S. No. 266, situated at Souripalayam (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registering Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Coimbatore (Doc. 1723/82) on April 1982 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property, and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :-

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concentment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957):

Now, therefore, in pursuance of Section 269-C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

(1) D. Venusopal, Rose Cottage Avanashi Road, Colmbatore,

(Transferor)

 A. Ayyaswamy, S'o Andoni Pillai, CPS Colony, Koundampalayam, Coimbatore-30.

(Transferee)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Land at S. No. 266, Souripalayam. (Doc.1723'82)

R. P. PILLAI,
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax
Acquisition Range-II, Madras-600 006.

Date: 7-12-1982 Seal:

FORM I.T.N.S.

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE !NCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

D. Venugopal, Rose Cottage, Avanashi Road, Coimbatore.

(Transferor)

 K. Kalanjiyadevi, D/o Komaraswamy Gounder, Vadavalli, Coimbatore.

(Transferee)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX

> ACQUISITION RANGF-II, MADRAS-600 006, Madras-600 006, the 7th December 1982

Ref. No. 12071.—Whereas, I, R. P. PILLAI, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act', have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing No.

S. No. 267, situated at Souripalayam (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908 in the office of the Registering Officer at Coimbatore (Doc. 1722/82) on April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration more than fifteen per cent of such apparent and that the consideration for such transfer as agreed to between the partice has not been truly stated in the said

(a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or

(b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Land at S. No. 267, Souripalayam. (Doc. 1722/82)

R. P. PILLAI,
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range-II, Madras-600 006.

Date: 7-12-82.

Scal:

56-416GI/82

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOMETAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSTT. COMMISSIONER OF INCOME TAX

ACQUISITION RANGF-II, MADRAS-600 006.

Madras-600 006, the 7th December 1982

Ref. No. 12071.—Whereas, I, R. P. PILLAI, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/-and bearing No.

S. No. 268, situated at Souripalayam

(and more fully described in the Schedule annexed hereto) has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the Office of the Registering Officer at

Coimbatore (Doc. 1721/82) on April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen percent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (n) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269D of the sald Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

(1) D. Venugopal, Rose Cottage, Avanashi Road, Coimbatore.

(Transferor)

(2) M. Kittuswamy S/o Marudappa Gounder Nallampalayam, Ganapathy Coimbatore-6

(Transferee)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the sald immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Land at S. No. 268, Souripalayam, (Doc. 1721/82)

R. P. PILLAI,
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax
Acquisition Range-II, Madras-600 006.

Date: 7-12-82.

FORM LT.N.S.-

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

D. Venugopal, Rose Cottage, Avanashi Road, Coimbatore.

(Transferor)

 V. Balakrishnan, LI Housing Unit, Koundampalayam, Coimbatore.

(Transferee)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSTT. COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE-II, MADRAS-600 006.

Madras-600 006, the 7th December 1982

Ref. No. 12071.—Whereas, I, R. P. PILLAI,

being the competent authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961, (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act', have reason to believe that the immovable property having a fair market value

exceeding Rs. 25,000/- and bearing No.

S. No. 266, situated at Souripalayam

(and more fully described in the schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at

Coimbatore (Doc. 1720/82) on April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability
 of the transferor to pay tax under the said act, in
 respect of any income arising from the transfer;
 and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922), or this Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Land at S. No. 266, Souripalayam. (Doc. 1720/82)

R. P. PILLAI,
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range-II, Madras-600 006.

New, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

Date: 7-12-82,

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME-TAX,

ACQUISITION RANGE-II, MADRAS-600 006.

Madras-600 006, the 7th December 1982

Ref. No. 12071.—Whereas, I, R. P. PILLAI, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing No.

S. No. 266, Souripalayam situated at

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Coimbatore (Doc. 1719/82) on April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market

value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferree for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the sald Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

 D. Venugopal, Rose Cottage, Avanashi Road, Coimbatore.

(Transferor)

D. Sundarabai,
 Housing Unit, Koundampalayam,
 Coimbatore,

(Transferee)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the eaid immevable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Land at S. No. 266, Souripalayam. (Doc. 1719/82)

R. P. PILLAI, Competent Authority Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax, Acquisition Range-II, Madras-600 006.

Date: 7-12-82.

FORM ITNS----

(1) D. Venugopal, Rose Cottage, Avanashi Road, Coimbatore,

(Transferor)

(2) A. Mathammal, 310, Housing Unit, Koundampalayam, Coimbatore Tk.

(Transferee)

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOMETAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE-II, MADRAS-600 006.

Madras-600 006, the 7th December 1982

Ref. No. 12071.—Whereas, I, R. P. PILLAJ, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/and bearing No.

S. No. 266, situated at Souripalayam (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908), in the office of the Registering Officer at Coimbatore (Doc. 1718/82) on April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :--

- (b) facilitating the concealment of any income as any of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferce for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:--

- (a), by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette for a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION: -- The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chanter.

THE SCHEDULE

Land at S. No. 266, Souripalayam, (Doc. 1718/82)

> R. P. PILLAI, Competent Authority, Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax, Acquisition Range-II, Madras-600 006.

Date: 7-12-82. Soal:

Now, therefore, in pursuance of Section 269C, of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of the notice under sub-section (1) of section 269D of the said Act, to the following persons, namely:-

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACOUISITION RANGE-IJ, MADRAS-600 006.

Madras-600 006, the 7th December 1982

Ref. No. 12071.—Whereas, I, R. P. PILLAI, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'snid Act'), have reason to believe that the Immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000 - and bearing No.

S. No. 266, situated at Souripalayam (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Coimbatore (Doc. 1717 82) on April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property, and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection ((1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

 D. Venugopal, Rose Cottage, Avanashi Road, Coimbatore.

(Transferor)

 T. Krishnavalli, 310, Housing Unit, Koundampalayam, Coimbatore-30.

(Transferee)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Land at S. No. 266, Souripalayam, (Doc. 1717/82)

R. P. PILLAI,
Competent Authority,
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range-II, Madras-600 006.

Date: 7-12-82. Seal:

FORM I.T.N.S.———

NOTICE UNDER SECTION 269D (1) OF THE INCOMF-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE-II, MADRAS-600 006,

Madras-600 006, the 7th December 1982

Ref. No. 12071—Whereas, I, R. P. PILLAI, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000/-and bearing No.

S. No. 266, situated at Souripalayam (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the Office of the Registering Officer at Coimbatone (Doc. 1716/82) on April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer, and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

 D Venugopal, Rose Cottage, Avanashi Road, Coimbatore.

(2) T. Saradabar, 49, Kurnam Subramania Iyer St., Sunivasanagar, Koundampalayam, Coimbatore,

(Transferee)

(Transferor)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:---

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Land at S. No. 266, Souripalayam, (Doc 1716/82)

R. P. PILLAI,
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range-II, Madras-600 006.

Date: 7-12-82.

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOMETAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSTT. COMMISSIONER OF INCOME TAX.

ACQUISITION RANGE-II, MADRAS-600 006.

Madras-600 006, the 7th December 1982

Ref. No. 12071.—Whereas, I, R. P. PILLAI, being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000/-and bearing No.

S. No. 266, situated at Souripalayam

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering officer at Coimbatore (Doc. 1715/82) on April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the ebject of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269°C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesald property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

 D. Venugopal, Rose Cottage, Avanashi Road, Coimbatore,

(Transferor)

C. Paulraj,
 49, Karnam Subramania Iyer St.,
 Srinivasanagar, Koundampalayam,
 Coimbatore-30.

(Transferee)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaing as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Land at S. No. 266, Souripalayam, Coimbatore, (Doc. 1715/82)

R. P. PILLAI,
Competent Authority,
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range-II, Madras-600 006.

Date: 7-12-82,

Scal:

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-STONER OF INCOME-TAX.

ACQUISITION RANGE, HYDERAB AD (A.P.)

Hyderabad, the 8th December 1982

Ref. No. 339/82-83—Whereas, I, M. JEGAN MOHAN. being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961, (43 of 1961) (hereinafter referred to as the said Act), have reason to believe that the immovable property having a fair market value

exceeding Rs 25,000 - and bearing No. 90/1 and 90/2 situated at Somavarap du, Haru (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at

Eluru on April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act. I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (:) of Section 269D of the said Act, to the following person, namely .—

57—416 GI/82

(1) Shr. B. Kondamma, W/o, Venkator, mana, Fluru (Transferor)

(2) The Fluir Co-op Building So icty Itd., W. G. 5. Colony, Scheme Represented by its Tres dent Eluru.

(Transferee)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Vacant land at Somavar ipodu of Eluru in R.S. No. 901/! and 90/2, 1-14-1/2 Cents, registered with S.R.O., Fluru vide document N_2 , 2271/82.

M. If GAN MON A Competent Authority, Inspecting Assistant Commissioner of Income-tex Acquisition Range, Hydenbad (AP)

Date . 8-12-1982 Seal:

FORM ITNS...

(1) Shri K Subbarao, S/o Bangarayya Eluru

(Transferor

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME TAX ACT, 1961 (43 OF 1961) (2) The Huru Co op Building Society 14d W G 5 Colony Scheme represented by its President Huru

(Transferee)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS SIONER OF INCOME TAX

ACQUISITION RANGE HYDERABAD (AP)

Hyderabad the 8th Decemb / 1982

Ref No RAC No 340/82-83 —Whereas I M JEG \N MOHAN,

being the Competent Authority under Section 269B of the Income tax Act, 1961 (43 of 1961) thereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs 25000 and bearing No

90/1 situated at Somavarapadu Fluru

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the Office of the Registering Officer at Ehii u on April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of —

- (a) facilitating the reduction or evasion of the hability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act or the Wealth-tax Act 1957 (27 of 1957)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned .---

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette

FXPIANATION —The terms and expressions used herein essare defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter

THE SCHFDULE

Vacant land at Somavarappadu of Fluru in R S No 90/1 172 Cents registered with SRO Fluru vide document No 2224/82

M JEGAN MOHAN
Competent Authority,
Inspecting Assistant Commissioner of Income tax
Acquisition Range Hyderabad (AP)

Now, therefore in pursuance of Section 269C of the said Act. I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely—

Date 8 12 1982 Seal

FORM I.T.N.S.—

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME-TAX,

ACQUISITION RANGE, HYDERABAD (A.P.)

Hyderabad, the 8th December 1982

Ref. No. RAC No. 341/82-83.—Whereas, I, M. JECIAN MOHAN.

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act') have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing

No. R. S. No. 64 situated at Somavarapaddu, Fluru (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Eluru on April 1982

for an apparent consideration which is less than the four market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the hability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income of any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection ((1) of Section 269D of the said Act, to the following ing persons, namely:—

- (1) Shri P. Ranganayakulu, S/o Lakxhmanna Eluru.
 (Transferor)
- (2) The Lluru Co-op, Building Society Ltd., W. G. 5, Colony Scheme Represented by its President Eluru. (Transferee)

Objections if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period et 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXFLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Vacant land at Somavarapudu, of Eluru in R. S. No. 64 1-20 Cents registered with S.R.O., Fluru, vide document No. 2139/82

M. JEGAN MOHAN
Competent Authority
Inspecting Asstt. Commissioner of Income-tax
Acquisition Range, Hyderabad (A.P.)

Date: 8-12-1982

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

(1) Shrimati K. Mabalaxmi, W/o Venkateswara Rao, Eluru.

(Transferor)

(2) The Eluru Co-op. Building Society Ltd., W. G. 5, Eluru.

(Transferee)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, HYDERABAD (A.P.)

Hyderabad, the 8th December 1982

Ref. No. RAC No. 342/82-83.—Whereas, I, M. JEGAN MOHAN.

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000/and bearing

No. R. S. 89/1 & 2 situated at Somuvarappadu, Eluru (and more fully described in the schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Eluru on April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property, and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than influent percent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the Hability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transferand/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269 D of the said Act, to the following persons, namely:—

Objections, if any, to the acquisition of the said property, may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

The SCHEDULE

Vacant land at Somavarappa lu of Fluru in R.S. No. 89/1 and 89/2, 1-10-1/2 Cents registered with S.R.O., Eluru vide document No. 2110/82.

M. JEGAN MOHAN
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range, Hyderabad (A.P.)

Date: 8-12-1982

FORM I.T.N.S .-

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

(1) 1. Shri S. Ramarao, S/o Gopalam 2. Shri Gopalakrishna, S/o Ramarao, Tanuku. (Transferor)

(2) Shri M. Kameswara Rao, S/o Mrutyunjayudu. Tanuku.

(Transferee)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX

ACOUISITION RANGE, HYELRABAD (AP)

Hydetabad (A.P.), the 8th December 1982

Ref. No. RAC. No. 343/82-83.--Whereas, I, M. JEGAN MOHAN,

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/and bearing

No. D-3162 situated at Tanuku

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at

Tanuku on April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair murl ct value of the aforesaid property, and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration thereof by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION: -The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

House property at door No. 3162 in 199-1/2 Cents at Tanuku, registered with S.R.O., Tanuku, vide document No. 963/82.

M. JEGAN MOHAN
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range, Hyderabad (A.P.)

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

Date: 8-12-1982

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME TAX

ACQUISITION RANGE HYDFRAB \D (AP)

Hyderabad (AP) the 8th December 1982

Ref No RAC No 344/82 83 —Whereas I, M JFGAN MOHAN.

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000/-and bearing No

RS 6/1 situated at Tadepalligudem

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Tadepalligudem on Aul 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer, and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957),

Now, therefore, in pursuance of Section 269°C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269°D of the said Act, to the following persons, namely —

- Shri P Venkateswara Rao, S/o Narusayya,
 Shri P Hemasundara Vara Prasad Rao, S/o
 Venkateswara Rao Residents of 10th Ward,
 Tadepalligudem
 - (Transferoi)
- (2) Shii P Satya Admarayana 5/o Venkata Subbarao 10th Ward, Jadepalligudem

(Transferee)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expire later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation:—The terms and expressions used herein as are defined in the Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Vacant site at Tadepalligudem in R S No 6/1, 525 sq yds registered with SRO, Tadepalligudem vide document No 1486/82

M JEGAN MOHAN
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax
Acquisition Range Hyderabad (AP)

Date 8-12-1982 Seal

FORM I.T.N.S.-

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSIT. COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, HYDERABAD (A.P.)

Hyderabad (A.P.), the 8th December 1982

Ref. No. RAC. No. 345/82-83 - Whereas, I. M. IFGAN MOHAN

being the competent authority under

Section 269B of the Income-tax Act. 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing

S. No. 215 situated at Kakinada

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at

Kakinada on April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :-

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 195? (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under Subsectoin (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely :-

- (1) Shri M. Vamace Krishna M/G Father Sri Venkatesh S/o Sii Sarvarayudu, Kakinada E. G. Dt.
- (Transferoi) (2) Shri K. Satyendra Madan 8/0 Syamasundara Rangarao, Kakinada F.G. Dt.

(Transferec)

Objections, if any to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned :-

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days rrom the service of notice on the respective persons, whichever period expires jater;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:-The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the mid Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

1 acr land at Godarygunta, behind Gazetted Officer's Colony, S. No. 215, Ward No. 2, Block No. 2 Kakinada, registered with S.R.O., Kakinada, vide document No. 2983/82.

M. JEGAN MOHAN Competent Authority, Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax. Acquisition Range, Hyderabad (A.P.)

Date: 8-12-1982

FORM I.T.N.S.---

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, HYDERABAD (A.P.)

Hyderabad (A.P.), the 8th December 1982

Ref. No. RAC. No. 346/82-83.—Whereas, I, M. JEGAN MOHAN.

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961, (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act') have reason to believe

that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000 and bearing S. No. 215 situated at Godarygunta, Kakinada

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Kekinada on April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :-

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said act, in respect of any income arising from the transfer; and /or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922), or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the Act, to the following persons, namely :---

- (1) Shri M. Vamseekrishna M/G. Father Sri Venkatech S/o Sri Saryaradu, Kakinada E.G. Dt.
- (Transferor) (2) Shri K Venkata Satyendra Madan S/o Sri Syama Sundara Rangarao, Kakinada, Γ.G. Dt. (Transferee)

Objections, if any, to the acquisition of the said property

may be made in writing to the undersigned :-

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION: -- The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

1-00 Acr, land at Godarygenta, behind Gazetted Officers' Colony, S. No. 215, Ward No. 2, Block No. 2 Kakinada, registered with S.R.O. Kakinada, vide document No. 297/82.

M. JEGAN MOHAN Competent Authority Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax, Acquisition Range, Hyderabad (A.P.)

Date: 8-12-1982 Seal:

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOMETAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX,

ACQUISITION RANGF, HYDLRABAD (AP.) Hyderabad (AP.) the 8th December 1982

Ref. No RAC No 347/82-83—Whereas, I, M. JFGAN MOHAN

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing

S. No. 215 situated at Godarygunta, Kakinada

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Kakinada on April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—
58-416GI/82

(1) M. Vamseekrishna M/G, Father Sri Venkatesh S/o Sarvarayudu, Kakinada, E.G. Dt (Transferor)

(2) Shir K Venkata Satyendra Madan S/o Sri Syamasundara Rangurao, Kakinada, E.G Dt. (Transferee)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned :-

- (a) by any of the aforcsaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION .-- The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

1-00 Acr., and at Godaygunta, behind Gazetted Officers' Colony, S. No 215, Ward No. 2, Block No 2 Kakinada, registered with SRO, K; vide document No. 2970/82

M. JEGAN MOHAN
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax
Acquisition Range, Hyderabad (A.P.)

Date: 8-12-1982

(1) Shri S. Chalapathirao, S/o Appaiah, Lalapet, Guntur.

(Transferor)

NOTICE UNDER SECTION 269D (I) OF THE INCOMETAX, 1961 (43 OF 1961)

(2) Shri Champalal S/o Misrimal Guntur.
(Transferee)

GOVERNMENT OF INDIA

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, HYDERABAD (A.P.)

Hyderabad (A.P.), the 7th December 1982

Ref. No. RAC. No. 348/82-83.—Whereas, I, M. JEGAN MOHAN,

being the Competent Authority under Section 269B of the income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/-and bearing

No. 22-2-67 situated at Guntur

(and more fully described in the Schedule annexed hereto) has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at

Guntur on April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than filteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

House property at Guntur Town, Lalapeta, Cloth Bazar, Municipal Ward, No. 11, Block No. 2, Town Survey No. 404 Municipal Assessment No. 29751 D. No. 22-2-67 registered with S.R.O., Guntur vide document No. 4287/82.

M. JEGAN MOHAN
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax
Acquisition Range, Hyderabad (A.P.)

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act. 1 hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

Date: 7-12-1982

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA OFFICE OF THE INSPECTING ASSIT. COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, HYDERABAD (A.P.) Hyderabad (A.P.), the 7th December 1982

Ref. No. RAC. No. 349/82-83.--Whereas, I, M. JEGAN MOHAN.

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing No. 22-2-67 situated at Guntur

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering officer at Guntur on April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :-

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer, and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys, or other assets which have not been of which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:---

- (1) 1. Shri S. Naiendi "umar, 2. Apon logo & Natondrakumar, M. Gw. rojan Fasher Sti statendra-kumar, Lalageta, Cloth Bazat, Cuntur. (Transferor)
- (2) Shri Champalal S/o Misrimal, Guntur, (Transferee)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned: ...

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the official Gazette.

EXPLANATION: -The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

House Property at D. No. 22-2-67 in 404-6/9 sq. yds., registered with S.R.O. Guntur vide document No. 4288/82 Ward No. 11, Block No. 2, S. No. 404.

> M. JEGAN MOHAN Competent Authority Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax, Acquisition Range, Hyderabad (A.P.)

Date: 7-12-1982

(Transferee)

FORM ITNS

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, HYDFRABAD (AP)

Hyderabad (AP) the 8th November 1982

Ref No RAC No 350/82-83 -- Whereas, I, M JEGAN MOHAN.

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act' have reason to believe that the immovable property having a fail market value exceeding Rs 25 000/ and bearing
No RS No 60/2 situated at Khandriaka of Pathipadu
Vijayawada

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Vijayawada on April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of '-

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transfer to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and /or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957),

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this Notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely -

Smt Sarojini Devi B W/o Sri B Nagabhushanam Mogalrajapulum, Vijayawada (Transferor)

(2) The Andhra Cement Co, Employees and Industrial Workers Co-op Housing Society, Ltd., R/P by its President Srt A V G Kushna Murthy, S/o Venkata Subbarao, Vijayawada

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned-

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immov able property, within 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette

1 XPLANATION -The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Land measuring Ac 5-39 Cents at Kundavari Khandijka of Pathipadu Panchayat, of Viayawada Tq , registered with SRO Vijayawada vide document No 4070/82

M JEGAN MOHAN Competent Authority Inspecting Assistant Commissioner of Income tax Acquisition Range, Hyderabad (AP)

18-11-1982 Date Seal

FORM ITNS----

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSTT. COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, HYDERABAD (A.P.).

Hyderabad, the 18th November 1982

Ref. No. RAC No. 351/82-83.--Whereas, I, M. JEGAN MOHAN,

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/and bearing

No. D. No. 14-37-27 situated at Maharanipet Vizag (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Vizag in April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen percent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act. I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

- Dr. N. Subhabra Devi, W/o Dr. N. Govinda Rayulu, D. No. 9-3-12, St., John Road, Secunderabad
- (2) Shri K. Subrahmanyeswara Rao, S/o Late Nagabhushanam Vizag Foundaries, Industrial Estate Vizag.

(Transferee)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

House property at D. No. 14-37-27, Block No. 4, T.S. No. 138, Plot No. 23 Maharanipet, Vizag, area in 393 sq. yds. registered with S.R.O. Vizag, vide document No. 4267/82.

M. JEGAN MOHAN
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax
Acquisition Range. Hyderabad (A.P.)

Date: 18-11-1982

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX,

ACOUISITION RANGE, HYDERABAD (A.P.)

Hyderabad, the 18th November 1982

Ref .No. RAC. No. 352/82-83.—Whereas, I, M. JEGAN MOHAN.

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereniafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000/and bearing

No. D. No. 27-16 174 situated at Vijayawada (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at at Vijayawada on April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:-

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and /or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957).

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely :-

- (1) 1. Smt. A. Vimala, W/o Prasadarao Guntur, 2. Sarada W/o B. Narasintharao, Vijayawada, 3. Jayaprada W/o Balkrishna 4. K. Savitri, W/o Ramachandrarao, Hyderabad, 1-3-4 Governorpet, Vijayawada, Krishna Dt.

(Transferor) (2) Shri T. V. Hanumantha Rao, S/o Late Chinata-mayyagaru Alibeg St., Government, Vinyawada. (Transferee)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned :-

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazetto.

. Explanation:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

House property at D. No. 27-16-174 Governorpet, Municipal Ward No. 27, Revenue Ward No. 9, Block No. 5, NTC No. 226/1, assessment No. 2932-A registered with S.R.O., Vijayawada, vide document No. 4046/82.

M. JEGAN MOHAN Competent Authority, Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax, Acquisition Range, Hyderabad (A.P.)

Date: 18-11-1982

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, HYDERABAD (A.P.)

Hyderabad, the 18th November 1982

Ref. No. RAC. 353/82-83.—Whereas, I. M. JEGAN MOHAN.

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing No.

D. No. 306/A situated at Koretapadu Guntur (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering officer at Guntur in April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269°C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act to the following persons, namely:—

- (1) Smt. Meera Bechi W/o Pathan Miya Gujjan Gundla, Guntur.
- (Transferor)

 (2) M/s. G. Parandhamayya & Co., Coal & Fertilizers R/p. by its M/p. Sri G. Paradhamayya S/o Punnaiah, Guntur.

(Transferee)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned :---

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Vacant site situated at Gajjana Gundla Koretepadu of Guntur, Municipality D. No. 306/A 822 sq. yds., registered with S.R.O. Guntur, vide document No. 4089/82.

M. JEGAN MOHAN
Competent Authority,
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range, Hyderabad (A.P.)

Date: 18-11-1982

NOTICE UNDER SECTION 269(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

(1) Smt Shark Silar Beebi W/o Moulali, Gujjanagundla Koretepadu, Sivaru, Guntui (Transferor)

(2) M s (r Patandhamayya & Co, Coal & Fertilizers R/P by its M/p Sn G Parandhamayya S o Punnayya Guntur.

(Transferee.)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME TAX
ACQUISITION RANGF, HYDERABAD (A.P.)

Hyderabad, the 18th November 1982

Ref. No RAC No 354/82-83.—Whereas, I, M. JEGAN MOHAN,

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs 25,000/- and bearing

No. D. No. 306/A situated at

Koretepadu Guntur

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at

Guntur in April 82

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 36 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

The SCHEDULE

Vacant site at Koictepadu of Guntui D No 306/A area of 775 sq. yds icgistered with S.R.O., Guntur, vide document No. 4090/82

M JEGAN MOHAN,
Competent Authority,
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range, Hyderabad (A P.)

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act to the following persons, namely:—

Date · 18-11-1982

Scal

NOTICE UNDER SECTION 269-D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

Sivara, Guntur.

(Transferor)

(2) M/s G. Parandhamayya & Co., R/p by its M/p. Sri G. Parandhamayya Guntur. (Transferee)

(1) Smt. Shaik Silar Beebi W/o Srl Shaik Moulali Gujjana Gundla, Koretepadu,

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX,

ACQUISITION RANGE, HYDERABAD (A.P.)

Hyderabad, the 18th November 1982

Ref. No. RAC No. 355/82-83.—Whereas, I, M. JEGAN MOHAN,

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act') have reason to believe

that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing No. D. No. 306/A situated at Koretepadu Guntur

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Guntur in Apirl 82

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :-

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and /or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferce for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesald property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:-

59-416GI/82

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned :--

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION: -- The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

The SCHEDULE

Vacant site situated at Koretepadu Gujjana Gundla Guntur Municipality in D. No. 306/A, 822 1/2 Sq. yds. registered with S.R.O., Guntur vide document No. 4088/82.

M. JEGAN MOHAN, Competent Authority Inspecting Asstt, Commissioner of Income-tax Acquisition Range, Hyderabad (A.P.)

Date: 18-11-1982

FORM I.T.N.S .-

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

(1) A. Scethamahalakahmi, W/o Seshachalam, Aryapuram, Rajahmundry.

(Transferor)

(2) J. Venkateswara Rao, S/o Seshavataram Bandaruvari Street, Rajanmundry.

(Transferee)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME TAX

ACQUISITION RANGE, HYDERABAD (A.P.)

Hyderabad, the 18th November 1982

Ref. No. RAC 356/82-83.—Whereas, I, M. JEGAN MOHAN,

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/-and bearing No. 12-17, 21 situated at Aryapuram Rajahmundry

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at

Rajahmundry in April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

(a) facilitating the reduction or evacion of the Hability
of the transferor to pay tax under the said Act in
respect of any income arising from the transfer;
and for

(b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferoe for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269°C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269°D of the said Act, to the following persons, namely:—

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

D. No. 12.17.21 at Aryapuram Rajahmundry, area of 245 sq. yds, registered with S.R.O., Rajahmundry, vide document No. 2339/82.

M. JEGAN MOHAN,
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range, Hyderabad (A.P.)

Date: 18-11-1982

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME TAX

ACQUISITION RANGE, HYDERABAD (A.P.)

Hyderabad, the 18th November 1982

Ref. No. RAC 357/82-83.—Whereas, I, M. JEGAN MOHAN,

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/and bearing No. D. No. 28 situated at Koretepadu Guntur Koretepadu Guntur

(and more fully described in the Schedule annexed hereto) has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the Office of the Registering Officer at Guntur in April 82

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the hability of the transferor to pay tax under the said act, in respect of any income arising from the transfer; and/er
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferree for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Ast, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

1. A Satyanarayana S/o Seetharamayya,
 2. A. Sitaramapresad S/o Satyanarayana
 R/o Pillutla Gurajala Tq., Guntur,

(Transferor)

(2) 1. Sri G. Suryanarayana S/o Sri Veeralah, 2. M. Pitchniah S/o Sri Subbalah, R/o Gottipadu, village, Pathipadu Tq.

(Transferee)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:---

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Vacant site in Koretepadu of Guntur Municipality D. No. 28, area of 539 sq. yds. registered with S.R.O., Guntur, vide document No. 3424/82.

M. JEGAN MOHAN,
Competent Authority,
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range, Hyderabad (A.P.)

Date: 18-11-1982

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

JFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, HYDERABAD (A.P.)

Hyderabad, the 18th November 1982

Ref. No. RAC 358/82-83.-Whereas, I, M. JEGAN MOHAN,

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing

No. S. No. 77/10 situated at Vepagunta Vizag

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1903) in the office of the Registering Officer at Vizag in April 82 for an apparent consideration

which is less than the fair market value of the aforesaid property, and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of-

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act. I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (I) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:

- Laxmipathi, Gajapathinagaram Vizianagaram Dt
- (Transferor) (2) The Gopalapatnam Co-op. Building Society Ltd., Regd. No. B. 1335 Gopalapatnam R/p by its President M. Chinnaapparao, S/o Guruvulu Vizag.

(Transferee)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned :-

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION: -The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Vacant land in S. No. 77/10, Ac. 1-00 Cents in Vepagunta village, of Vizag, registered with S.R.O., Vizag, vide document No. 3737/82.

M. JEGAN MOHAN, Competent Authority Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax Acquisition Range, Hyderabad (A.P.)

Date: 18-11-1982

FORM LTNS ---

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX, ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT GOMMIS-SIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, HYDERABAD (A.P.)

Hyderabad, the 18th November 1982

Ref. No. RAC 359/82-83.—Whereas, I, M. JEGAN MOHAN,

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000 and bearing No. S. No. 77/10 situated at Vepagunta Vizag

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Vizag in April 82

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or.
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957):

Now, therefore, in pursuance of Section 269°C of the said Act, I hereby initiate preceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-Section (1) of Section 269°D of the Act, to the following persons, namely:—

 Sri U. Rejubabu, S/o Ramakrishnamreju, Dondaparthi Vizag.

(Transferor)

(2) The Gopalapatnam Co-op. Building Society Ltd., Regd. B. 1335 R/by its President Sri M. China Apparao, S/o Guruvulu, Gopalapatnam, Vizag.

(Transferee)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Land of 1-00 cr. in S. No. 77/10, Vepagunta, village Vizag, registered with S.R.O., Vizag, vide document No. 3736/82.

M. JEGAN MOHAN.
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax
Acquisition Range, Hyderabad (A.P.)

Date: 18-11-1982

FORM ITNS ...

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME TAX

ACQUISITION RANGE, HYDERABAD (A.P.)

Hyderabad, the 18th November 1982

Rcf. No. RAC 360/82-83,—Whereas, I, M. JEGAN MOHAN,

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value

exceeding Rs. 25,000/- and bearing

S. No. 77/10 situated at Vepagunta Vizag

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Vizag in April 82

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property, and have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer; and/er
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under Subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

- (1) U. Rajubabu, S/o Ramakrishnamraju, Dondaparthi, Vizag
- (Transferor)

 (2) The Gopalapatnam Co-op. Building Society Ltd., Regd., B.1335 R/p. by its President M. Chinna Apparao, S/o Guruvulu, Gopalapatnam Vizag.

 (Transferee)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Land of 1-00 Acr in S. No. 77/10 in Vepagunta village Vizag, registered with S.R.O., Vizag, vide document No. 3625/82.

M. JEGAN MOHAN,
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax
Acquisition Range, Hyderabad (A.P.)

Date: 18-11-1982

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME TAX,

ACQUISITION RANGE, HYDERABAD (A.P.)

Hyderabad, the 18th November 1982

Ref. No. RAC 361/82-83.—Whereas, I. M. JEGAN MOHAN,

being the Competent Authority under
Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961)
(hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to
believe that the immovable property, having a fair market
value exceeding Rs. 25,000/- and bearing
S. No. 77/10 situated at Vepagunta Vizag

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Vizag in April 82

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property, and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fiften per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/er
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

(1) V. Lazmicathi S/o Venkatakrishnamraju, Gajapathinagaram, Vizianagaram.

(Transferor)

(2) The Gopalapatnam Co-op. Building Society, Ltd., regd. No. B. 1355 R/by its President M. Chinna Appa Rao, S/o Guruvulu Gopalapatnam Vizag.

(Transferee)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein at are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Vacant land in S. No. 77/10, measuring Ac-1-00 cents in Vepagunta of Vizag, registered with S.R.O., Vizag, vide document No. 3624/82,

M. JEGAN MOHAN,
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range, Hyderabad (A.P.)

Date: 18-11-1982

FORM I.T.N.S .---

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, HYDERABAD (A.P.)

Hyderabad, the 18th November 1982

Ref. No. RAC No. 362/82-83.—Whereas, 1, M. JEGAN MOHAN,

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing

No. D. No. 27/A2 situated at

Nallapadu Guntur

(and more fully described in the Schedule annexed hereto) has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Guntur on April 82

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property, and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of ;—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferer to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferoe for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act. 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

- K. Kalyani W/o Venkateswara Rao,
 M. Laxmirajyani, W/o V. Narasayya, Pesarianka,
 Repalle, Guntur.
 - (Transferor)
- I. Poornananda Venkateswara Piasad, S/o Syama Sundara Prasad, Sagam Jagarlamudi, Guntur.

(Transferee)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Vacant land situated at Nallopadu of Guntur area of 573 1/3 sq. yds., in D. No. 27/A2, registered with S.R.O. Guntur vide document No. 3696/82.

M. JEGAN MOHAN,
Competent Authority,
Inspecting Assistant Commissioner of Income Tax
Acquisition Range, Hyderabad (A P.)

Date: 18-11-1982,

FORM JINS----

(1) Bantu Chinna Vetanna S/o Pedda Veeranna and others Gulab Abadi Nizamabad.

(Transferor)

(2) The Nizamubad co-operative Employees co-operative Housing Society Nizamubad,

(Transferee)

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSTT. COMMISSIONER OF INCOME-TAX,

ACQUISITION RANGE, HYDERABAD (A.P.)

Hyderabad, the 14th December 1982

Ref. No. RAC 353/82-83—Whereas, I, M. JFGAN MOHAN,

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value

exceeding Rs. 25,000/- and bearing No. Land situated at Nizamabad

(and more fully described in the Schedule annexed hereto) has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the Office of the Registering Officer at Nizamabad in April 82

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act. in respect of any income arising from the transfer: and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) of the said Act, or the Waelth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269°C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—60—416GI/r82

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned :---

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later.
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter

The SCHEDULE

Land in Survey No 159, 162, 163 at Kanteswar Nizamabad area 3-16 Ac registered with Sub-Registrar Nizamabad vide Doc. No. 1896/82.

M. JEGAN MOHAN.
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range, Hyderabad (A.P.)

Date: 14-12-82

FORM I.T.N.S,---

(1) 1. S. Prabhakar Reddy 2, Y. Srinivas Goud Devi Road, Nizamabad.

(Transferor)

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOMETAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

(2) Sri E. Bala Mallaiah and Other R/o Pothireddypet Tq., Dubbak Medak Dt.

(Transferce)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, HYDERABAD (A.P.)

Hyderabad, the 14th December 1982

Ref. No. RAC 354/82-83.—Whereas, I, M. JEGAN MOHAN,

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the Immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing

No. Land situated at

Annapurana Rice Mill Manikbhandar (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the Office of the Registering Officer at Nizamabad in April 82

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :-

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned :-

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later.
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION: -The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning is given in that Chapter.

THE SCHEDULE

One G.I. Shed and R.C. construction for Annapurna Rice Mill along with one acre of land out of S. No. 655 of Manikbhandar registered by the S.R.O. Nizamabad vide document No. 1865/82,

> M. JEGAN MOHAN, Competent Authority Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax Acquisition Range, Hyderabad (A.P.)

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:-

Date: 14-12-82

NOTICE UNDER SECTION 269(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, HYDERABAD (A.P.)

Hyderabad, the 14th December 1982

Rcf. No. RAC No. 355/82-83.—Whereas, I, M. JEGAN MOHAN,

being the competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000/-and bearing

No. Land situated at Eadula Nagulapalli

(and more fully described in the Schedule annexed hereto). has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the Office of the Registering Officer at Sangareddy in April 82

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property, and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act. 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

- (1) Mr. Mir Zahid Ali Kamil and 12 Others, 12-12-1595, Adikmet, Hyderabad-500 044.
 - (Transferor)
- (2) The Thana Electric Supplying Co. Ltd. B-29-30 Industrial Estate, Sanatnagar, Hyderabad-18.

(Transferce)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions and herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall be the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Agricultural dry land admeasuring 3 acres 19 guntas in Eadula Nagulapalli village, Sangareddy registered by the S.R.O., Sangareddy vide document No. 2084/82.

M. JEGAN MOHAN,
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range, Hyderabad (A.P.)

Date: 14-12-82

FORM I.T.N.S.-

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX,

ACQUISITION RANGE, HYDERABAD (A.P.)

Hyderabad, the 14th December 1982

Ref. No. RAC No. 356/82-83.—Whereas, I, M. JEGAN MOHAN,

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25000/and bearing

No. Land situated at Eadula Nagulapalli

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at

Sangareddy in April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferree for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

- Mr. Mir Zahid Ali kamil and 12 Others,
 12-11-1595, Λdikmet, Hyderabad-500 044.
 (Transferor)
- (2) The Thana Electric Supplying Co. Ltd. B29-30, Industrial Estate, Sanatnagar, Hyderabad.

(Transferee)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of the notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Agricultural dry land S. No. 135/1 & 2 measuring 8 acres in Eadula Nagulapalli village, Sangareddy registered by the S.R.O., Sangareddy vide document No. 1753/82.

M. IEGAN MOHAN,
Competent Authority,
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range, Hyderabad (A.P.)

Date: 14-12-82

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

(1) Mr Mir Zahid Ali Kamil and 13 others 12-11 1595 Acikmet Hyderabad 500044

(Transferor)

(2) The Thana Flectric Supply Co Ltd B 29 30 Industrial Estate Sanathnagai Hyderabad-18

(Transferee)

GOVERNMENT OF INDIA
OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS

SIONER OF INCOME-JAX ACQUISITION RANGE, HYDERABAD (AP)

Hyderabad, the 14th December 1982

Ref No RAC No 357/82 63—Whereas, I, M JEGAN MOHAN,

I come the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs 25,000/ and bearing

No Land situited at

Sangareddy

(and more fully described in the Schedule annexed hereto) has been transferred under the Registration Act (1908–16 of 1908) in the office of the registering officer at Sangareddy in April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property, and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957).

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act to the following persons, namely —

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned —

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION —The terms and expression used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter

THE SCHEDULE

Block M' Part of Survey No 135/1&2 Agricultural Dry land Measuring 8 Acres in Eadula Nagulapalli village San gareddy Dt registered with Sub-Registrar Sangareddy vide Doc No 1792/82

M JEGAN MOHAN,
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range, Hyderabad (AP)

Date 14-11 82 Seal :

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSTT. COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, HYDERABAD (A.P.)

Hyderabad, the 14th December 1982

Rcf. No. RAC 358/82-83.—Whereas, I, M. JEGAN MOHAN,

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000/-and bearing

No. Land situated at

Rudraram village

(and more fully described in the Schedule

annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the Office of the registering Officer at Sangareddy in April 82

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferre for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to following persons, namely:—

(1) Pirlamala Ramloo & others Ismailkhan pet Sangareddy taluk.

(Transferor)

(2) M/s Bindusana Steel Industries Ltd. B-3 Industrial estate Sanathnagar Hyderabad.

(Transferce)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Land survey No. 771 area 18 Acres at Rudraram village Sangareddy Dt. registered with Sub-Registrar Sangareddy vide Doc. No. 1796/82.

M. JEGAN MOHAN, Competent Authority Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax, Acquisition Range, Hyderabad (A.P.)

Date: 14-12-1982

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

Sri M. Gopal Reddy s/o Laxma Reddy R/o Pothamylaram, Sangareddy, Medak Dt.

(Transferor)

(2) Khosla Indair Private Ltd., No. I Deshbandhu Gupta Road, New Delhi-110055.

(Transferee)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, HYDERABAD (A.P.)

Hyderabad, the 14th December 1982

Ref. No. RAC. No. 359/82-83.—Whereas, I, M. JEGAN MOHAN,

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing No.

S. No. 3/A situated at Pothereddypalli

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at

Sangareddy in April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) faciliating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferre for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Objections if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from this service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person, interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION: —The terms and expressions used herein 28 are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Agricultural dry land bearing S. No. 3/A at Pothereddypalle, Sangareddy admeasuring 5 acres registered by the S.R.O. Sangareddy vide document No. 1849/82.

M. JEGAN MOHAN
Competent Authority,
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range, Hyderabad (A.P.)

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

Date: 14-12-82

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME TAX

ACQUISITION RANGE, HYDERABAD (A.P.)

Hyderabad, the 14th December 1982

Ref. No. RAC. No. 360/82-83.—Whereas, I, M. JEGAN MOHAN,

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing No.

3/A situated at Pothereddypalli

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Sangareddy in April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesald property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer;
 and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act. or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957):

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this noice under subsection (1) of Section 269D of the said Act to the following persons. namely:—

- Sri S. Srinivas Reddy s/o Narayana Reddy, R/o Andole.
- (2) Khosla Indair Private Ltd., No. I Deshbandhu Gupta Road, New Delhi-110055.

(Transferee)

(Transferor)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Dry land bearing S. No. admeasuring 4 acres 04 guntas at Pothereddypally, Sangareddy registered by the S.R.O., Sangareddy vide document No. 1850/82.

M. JEGAN MOHAN
. Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax
Acquisition Range, Hyderabad (A.P.)

Date: 14-12-1982

(1) Sri M. Gopal Reddy s/o Laxma Reddy R/o Pashamylaram

(Transferor)

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

(2) Khosla Indair Private Ltd., Deshbandhu Gupta Road, New Delhi-110055.

(Transferee)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME TAX

ACQUISITION RANGE, HYDERABAD (A.P.)

Hyderabad, the 14th December 1982

Ref. No. RAC No. 361/82-83 —Whereas, I, M. JEGAN MOHAN

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding

as the said Act.), have reason to believe that the himovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing No.

S. No. 3/A situated at Pothereddypalle (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at

Sangareddy in April 1982 for an apparent consideration

which is less than the fair market value of the aforesaid property, and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen her cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

(a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or

(b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957); Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Dry land admeasuring 5 acres S. No. 5/A, at Pothereddy Pally Sangareddy registered by the S.R.O., Sangareddy vide document No. 1983/82,

M. JEGAN MOHAN
Competent Authority
Inspeting Assistant Commissioner of Income-lax
Acquisition Range, Hyderabad (A.P.).

Date: 14-12-1982

Seal:

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

61-416GI/82

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOMETAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

 Shri Iftekhar Balg & others GpA Syed Shah Noor Ali 1-1-79 Musheerabad, Hyderabad.

(2) Sri K. S. R. Murthy, C/o ELFAB's Charminar Cross Roads. Hyderabad. (Transferor)

(Transferee)

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME-TAX.

ACQUISITION RANGE, HYDERABAD (A.P.)

Hyderabad, the 14th December 1982

Ref. No. RAC. No. 362/82-83.—Whereas, I, JEGAN MOHAN,

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- an bearing No.

1-1-79 situated at Musheerabad, Hyderabad (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Hyderabad in April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen percent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act. I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPI ANATION: —The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Portion of H.No. 1-1-79 admeasuring 611 sq. yards situated at Musheerabad registered with Sub-Registrar Hyderabad vide Doc. No. 2840/82.

M. JEGAN MOHAN
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax
Acquisition Range, Hyderabad (A.P.)

Date: 14-12-1982

FORM I.T.N.S .--

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME TAX

ACQUISITION RANGE, HYDERABAD (A.P.)

Hyderabad, the 14th December 1982

Ref. No. RAC. 363/82-83.—Whereas, I, M. JEGAN MOHAN,

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), (hereinafter referred to as the 'Said Act') have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/and bearing No.

1-10-20 situated at Ashoknagar, Hyderabad

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the

Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at

Hyderabad on April 1982

for an apparent consideration

which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen percent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of-

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/er
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

New, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Ast, I, hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely :-

- (1) Premayya Kale S/o Late Arun Kale (6-1-40/1 A.C. Guards, Hyderabad.
- (2) Manoharlal Kapoor S/o Late A. R. Kapoor Dr. Mrs. Indu Kapoor W/o Manoharlal Kapoor 3-6-337 Bashir Bagh, Hyderabad-500029.

(Transferee)

(Transferor)

Objections, if any to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned :-

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION: -The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

House M. No. 1-10-20 area 570 square yards at Plot No. 9 Ashoknagar Hyderabad registered with Sub-Registrar vide Doc. No. 2797/82.

> M. JEGAN MOHAN Competent Authority, Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax, Acquisition Range, Hyderabad (A.P.).

Date: 14-12-1982

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, HYDERABAD (A.P.)

Hyderabad, the 14th December 1982

Ref. No. RAC 364/82-83.—Whereas, J, M. JEGAN MOHAN.

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000/-and bearing No.

1-2-597/24 situated at Domalguda Hyderabad (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Hyderabad in April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferer to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269-C of the said Act, I hereby indiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-Section (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

 Sri Govinda Narahari S/o G. Rangaiah 1-2-597/24/i Domalguda Lower Tank Bund Road, Hyderabad-29.

(Transferor)

 Sri Godepalli Surya Prakash Rao S/o Late G. Venkata Shastry
 Sri Rajiv Prakash S/o G. S. Prakash 1-2-597/24/1 1st Floor, Lower Tank Bund Road, Hyderabad-500029.

(Transferee)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:---

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

First floor No. 1-2-597/24 at Baraf Bagh Domalguda, Hyderabad area 1900 sq. it. registered with Sub-Registrar Hyderabad vide Doc No. 2551/82.

M. JEGAN MOHAN
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range, Hvdetabad (A.P.)

Date: 14-12-1982

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOMETAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSTT. COMMISSIONER OF INCOME-TAX,

> ACOUISITION RANGE. HYDERABAD (A.P.)

Hyderabad, the 14th December 1982

Ref. No. RAC. No. 365/82-83,—Whereas, I, M. JEGAN MOHAN,

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovproperty, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing

206 in Kabra Complex situated at M.G. Road, Secunderabad (and more fully described in the Schedule annexed hereto) has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the Office of the Registering Officer at

Secunderabad on April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of: -

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer and/or.
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) of the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsecuon (1) of Section 269D of the said Act, to the

following persons, namely :-

 M/s. Kabra & Co., Rep. by Shri S. Prabhakar Reddy, 2-2-132 to 139, M. G. Road, Secunderabad.

(Transferor)

((2) Sri Mahesh Kumar Kantilal Kachela & Others, Tilak Ground, Chandnapur, Maharashtra.

(Transferce)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned :-

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette.

EXPIANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning is given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Office No. 206 in Kabra Complex M. No. 2-2-132 to 135 at M.G. Road, Secunderabad, registered vide document No. 367/82 by the S.R.O., Secunderabad.

M. JEGAN MOHAN Competent Authority Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax Acquisition Range, Hyderabad (A.P.)

Date : 14-12-1982 Seal :

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

GOVERNMENT OF INDIA

SIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE,
HYDERABAD (A.P.)

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-

Hyderabad, the 14th December 1982

Ref. No. RAC. No. 366/82-83.—Whereas, I, M. JEGAN MOHAN,

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing No.

Flat situated at Srinath Complex

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Secunderabad on April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property, and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferer to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/er
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

New, therefore, in pursuance of Section 269°C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection ((1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

 Sri Kamil Rehman, S/o Fazlur Rehman, No. 5, Vazir Konda, Road No. 14, Banjara Hills, Hyderabad.

(Transferor) Sri Sanjay Kumar Karda and Others,

 Sri Sanjay Kumar Karda and Others, H. No. 13, Jeera, Secunderabad.

(Transferee)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION: —The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

A residential flat in 9th floor in M. No. 1-1-58/1 to 58/11 at Srinath Complex, S.D. Road, Secunderabad registered by the S.R.O., Secunderabad vide document No. 381/82.

M. JEGAN MOHAN
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range, Hyderabad (A.P.)

Date: 14-12-1982

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, HYDERABAD (A.P.)

Hyderabad, the 14th December 1982

Ref. No. RAC, No. 367/82-83.—Whereas, I, M. JEGAN MOHAN,

being the Competent Authority under Section 269-B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing No.

1-10-274/A situated at Ashoknagar, Hyderabad (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Chikkadpally on April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property, and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than lifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-Section (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

((1) Smt. M. Kanya Kumari and Others, Varadarajavaram, Tanuku Taluk, W.G. Dt.

(Transferor)

(2) Smt. G. Vijaya Laxmi, 1-1-593, New Bakaram, Hyderabad-20.

(Transferee)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned.—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (h) by any other person interested in the said immevable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

House No. 1-10-247/A, Ashoknagar, Hyderabad land area 577 sq. yards registered by the S.R.O., Chikkadpally Hyderabad vide document No. 408/82.

M. JEGAN MOHAN
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range, Hyderabad (A.P.)

Date: 14-12-1982

FORM ITNS- ----

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME-TAX,

ACQUISITION RANGE, HYDERABAD (A.P.)

Hyderabad, the 14th December 1982

Ref. No. RAC 368/82-83.—Whereas, I, M. JEGAN MOHAN,

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe

that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing No. 1-2-367/1 situated at Domalguda, Hyderabad

(and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Chikadpally on April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fiften percent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said act, in respect of any income arising from the transfer; and/er
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269°C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely.—

Smt, Leela Gowri Baji
 W/o R. R. Baji,
 2 2-18 48 Krishnaveni Durgabai Deshmukh Colony,
 Bagh Amberpet,
 Hyderabad-500760.

(Transferor)

 Smt. Prabha Rani W/o Sri Satish Kumar Gupta, 3-6-108/1 Himayathnagar, Hyderabad.

(Transferee)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazotte or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later:
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in the Chapter.

THE SCHEDULE

H. No 1-2-367/1 Gaganmahal Road Domalguda, Hyderabad area 953.3 sq. yards registered with Sub-Registrar Chikadpally vide Doc 407/82.

M. JEGAN MOHAN
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range, Hyderabad (A.P.)

Date : 14-12-1982

FORM I.T.N.S.-

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSTT. COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE, HYDERABAD (A.P.)

Hyderabad, the 14th December 1982

Rcf. No. RAC. 369/82-83.—Whereas, I, M. JEGAN MOHAN,

being the competent authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961, (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act', have reason to believe

that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing No.

3-6-455 situated at Himayathnagar, Hyderabad

transfer with the object of :-

(and more fully described in the schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Chikadpally on April 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability
 of the transferor to pay tax under the said act, in
 respect of any income arising from the transfer;
 and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by transferoe for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922), or this Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said sct, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—
62—416GI/82

(1) Shri M. R. Narasimham Iyangar, 3-6-455 Hardikar Bagh, Hmayathnagar, Hyderabad.

(Transferor)

(2) Smt. Pashpa Srivastav, 3-6-136/4/4 Himayathnagar, Hyderabad.

(Transferee)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned :---

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

H. No. 3-6-455 Himayathnagar Hyderabad area 266.05 sq. yards registered with Sub-Registrar Chikadpally vide Doc. No. 385/82.

M. JEGAN MOHAN
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax,
Acquisition Range, Hyderabad (A.P.)

Date : 14-12-1982

FORM ITNS----

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMIS-SIONER OF INCOME-TAX.

ACQUISITION RANGE, HYDERABAD (A.P.)

Hyderabad, the 14th December 1982

Ref. No. RAC. 370/82-83.—Whereas, I, M. JEGAN MOHAN,

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing No.

3-4-1081/1 situated at Kachiguda, Hyderabad (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Hyderabad in Apjril 1982

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :-

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth tax Act, 1957 (27 of 1957).

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:-

(1) M. V. Thomas IPS, 27 S.B.I. Colony, Amberpet, Hyderabad.

(Transferor)

(2) 1. Smt. Y. Mani W/o Y. Nageswar Rao, 16-11-741/2 Mosarambagh, Hyderabad.

2. Ch. Premalata W/o Ch. Koteswar Rao, 16-11-741/2 Mosarambagh, Hyderabad.

3. Azra Batul D/o Sd. Ali Mohmmed, 22-1-66 Algadir, Darushafa, Hyderabad-500024.

(Transferee)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned :--

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

EXPLANATION: -The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

H. No. 3-4-1081/1 area 700 sql yards at Kachiguda, Hyderabad, registered with Sub-Registrar Hyderabad vide Doc. No. 2916/82.

> M. JEGAN MOHAN Competent Authority Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax, Acquisition Range, Hyderabad (A.P.)

Date : 14-12-1982 Seal ·

NOTICE UNDER SECTION 269D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

(1) Rameswar Doobey & Ors.

(Transferor)

(2) Abdullah Answari.

(Transferee)

(3) Vendee.

(Persons in occupation of the property)

GOVERNMENT OF INDIA

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME-TAX

ACQUISITION RANGE-I, CALCUTTA

Calcutta, the 13th December 1982

Ref. No. FR-122/82-83/SI.682/IAC/ACQN.R-J/Cal.—Whereas, I, M. JEGAN MOHAN,

being the Competent Authority under Section 269B of the Income-tax, Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said act'), have reason to believe

that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing No. 24/2/H/9 and 24/2/H/9/1 situated at Bright Street, Calcut(a

24/2/H/9 and 24/2/H/9/1 situated at Bright Street, Calcuta (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of

1908) in the office of the Registering Officer at R.A. Calcuttta on 29-4-82

for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than lifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability
 of the transferor to pay tax under the said act, in
 respect of any income arising from the transfer;
 and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under subsection (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the official Gazette.

EXPLANATION:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Premises No. 24/2/H/9 and 24/2/H/9/1 Bright Street Calcutta on land measuring 5ka-13ch-25 sq. ft. Registered before the Registrar of Assurances, Calcutta vide deed No. 3673 on 29-4-82.

M. AHMED
Competent Authority
Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax
Acquisiton Range-I, Calcutta
54 Rafi Ahmed Kdwai Road, Calcutta-700016.

Date: 13-12-82

UNION PUBLIC SERVICE COMMISSION

NOTICE

INDIAN ECONOMIC SERVICE/INDIAN STATISTICAL SERVICE EXAMINATION, 1983

F. 12/3/82-EI(B)

New Delhi, the 15th January 1983

A combined competitive examination for recruitment to Grade IV of the Services mentioned in para 2 below will be held by the Union Public Service Commission at AGARTALA, AHMEDABAD, AIZAWI., ALLAHABAD, BANGALORE, BHOPAL, BOMBAY, CALCUTTA, CHANDIGARH, COCHIN, CUTTACK, DELHI, DISPUR (GAUHATI), HYDERABAD, IMPHAL, ITANAGAR, JAIPUR, JAMMU, JORHAT, KOHIMA, LUCKNOW, MADRAS, NAGPUR, PANAJI (GOA), PATNA, PORI BLAIR, SHILLONG, SIMLA, SRINAGAR AND TRIVANDRUM commencing on the 28th June, 1983 in accordance with the Rules published by the Ministry of Home Affairs (Department of Personnel and Administrative Reforms) in the Gazette of India, dated the 15th January, 1983.

THE CENTRES AND THE DATES OF HOLDING THE EXAMINATION AS MENTIONED ABOVE ARE LIABLE TO BE CHANGED AT THE DISCRETION OF THE COMMISSION. WHILE EVERY EFFORT WILL BE MADE TO ALLOT THE CANDIDATES TO THE CENTRE OF THEIR CHOICE FOR EXAMINATION, THE COMMISSION MAY, AT THEIR DISCRETION, ALLOT A DIFFERENT CENTRE TO A CANDIDATE, WHEN CIRCUMSTANCES SO WARRANT. CANDIDATES ADMITTED TO THE EXAMINATION WILL BE INFORMED OF THE TIME TABLE AND PLACE OR PLACES OF EXAMINATION (See Annexure I, para 11).

2. The services to which recrultment is to be made on the results of this examination and the approximate number of vacancies in Grade IV of the Services are given below:

(i) Indian Economic Service

40 (Includes 6 vacancies reserved for S. C, and 3 reserved for S. T. candidates)

(ii) Indian Statistical Sorvice

40 (Includes 12 vacancies reserved for S. C. and 6 reserved for S. T. candidates)

The number of vacancies mentioned above are liable to alteration.

3. A candidate may apply for admission to the examination in respect of any one or both the Services, mentioned in para 2 above. Once an application has been made, no change will ordinarily be allowed.

If a candidate wishes to be admitted for both the Services, he need send in only one application. He will be required to pay the fee mentioned in para 6 below once only and will not be required to pay separate fee for each of the Services for which he applies.

N.B.—A candidate will be considered only for the Service(s) for which he applies. A candidate who applies for both the Services should specify clearly in his application the order of his preference for the Services, so that having regard to his rank in the order of merit due consi-

deration can be given to his preference when making appointments.

No request for alteration in the preferences indicated by candidates in respect of Services for which they desire to be considered, would be entertained unless the request for such alteration is received in the office of the Union Public Service Commission within 30 days of the date of publication of the results of the written examination in the 'Employment News'.

4. A candidate seeking admission to the examination must apply to the Secretary, Union Public Service Commission, Dholpur House, New Delhi (110011), on the prescribed form of application. The prescribed form of application and full particulars of the examination are obtainable from the Commission by post on payment of Rs. 2.00 (Rupees two) which should be remitted to the Secretary, Union Public Service Commission, Dholpur House, New Delhi-110011, by Money Order or by Indian Postal Order payable to the Secretary, Union Public Service Commission at New Delhi, General Post Office. Cheques or currency notes will not be accepted in lieu of Money Orders/Postal Orders. The form can also be obtained on cash payment at the counter in the Commission's Office. This amount of Rs. 2.00 (Rupees two) will in no case be refunded.

NOTE.—CANDIDATES ARE WARNED THAT THEY MUST SUBMIT THEIR APPLICATIONS ON THE PRINT-ED FORM PRESCRIBED FOR THE INDIAN ECONOMIC SERVICE/INDIAN STATISTICAL SERVICE EXAMINATION 1983. APPLICATION ON FORMS OTHER THAN THE ONE PRESCRIBED FOR THE INDIAN ECONOMIC SERVICE/INDIAN STATISTICAL SERVICE EXAMINATION, 1983 WILL NOT BE ENTERTAINED.

5. The completed application form must reach the Secretary, Union Public Service Commission, Dholpur House, New Delhi-110011 by post or by personal delivery at the counter on or before the 14th March 1983 (28th March 1983 in the case of candidates residing in Assam, Meghalaya, Arunachal Pradesh, Mizoram, Manipur, Nagaland, Tripura, Sikkim, Ladakh Division of J&K State, Lahaul & Spiti District of Himachal Pradesh, Andaman and Nicobar Islands or Lakshadweep and for candidates residing abroad from a date prior to 14th March, 1983 and whose applications are received by post from one of the areas mentioned above) accompanied by necessary documents. No application received after the prescribed date will be considered.

A candidate residing in Assam, Meghalaya, Arunachal Pradesh, Mizoram, Manipur, Nagaland, Tripura, Sikkim, Ladakh Division of J&K State, Lahaul & Spiti District of Himachal Pradesh, Andaman and Nicobar Islands or Lakshadweep and a candidate residing abroad may at the discretion of the Commission be required to furnish documentary evidence to show that he was residing in Assam, Meghalaya, Arunachal Pradesh, Mizoram, Manipur, Nagaland, Tripura, Sikkim, Ladakh Division of J&K State, Lahaul & Spiti District of Himachal Pradesh. Andaman and Nicobar Islands or Lakshadweep or abroad from a date prior to 14th March, 1983.

Note (i):—Candidates who are from areas entitled to additional time—for submission of applications should also clearly indicate in their addresses in the relevant Column of the application the name of the particular area or region entitled to additional time, (e.g. Assam, Meghalaya, Ladakh Division of J&K State, etc.) otherwise they may not get the benefit of additional time.

Note (n):—Candidates are advised to deliver their applications by hand at the UPSC counter or send it by Registered Post. The Commission will not be responsible for the applications delivered to any other functionary of the Commission.

6. Candidates seeking admission to the examination must pay to the Commission with the completed application form a fee of Rs. 48.00 (Rupees forty eight) [Rs. 12.00 (Rupees twelve) in the case of candidates belonging to the Scheduled Castes and the Scheduled Tribes] through crossed Indian Postal Orders payable to the Secretary, Union Public Service Commission at the New Delhi General Post Office or crossed Bank Draft from any branch of the State Bank of India payable to the Secretary, Union Public Service Commission at the State Bank of India, Main Branch, New Delhi.

Candidates residing abroad should deposit the prescribed fee in the office of India's High Commissioner, Ambassador or Representative abroad, as the case may be, for credit to account head "051—Public Service Commission—Examination Fees" and attach the receipt with the application.

APPLICATIONS NOT COMPLYING WITH THE ABOVE REQUIREMENT WILL BE SUMMARILY REJECTED. THIS DOES NOT APPLY TO THE CANDIDATES WHO ARE SEEKING REMISSION OF THE PRESCRIBED FEE UNDER PARAGRAPH 7 BELOW.

- 7. The Commission may at their discretion remit the prescribed fee where they are satisfied that the applicant is a bona fide displaced person from erstwhile East Pakistan (now Bangladesh) and had migrated to India during the period between 1st January 1964 and 25th March 1971, or is a bona fide repatriate of Indian origin from Burma and has migrated to India on or after 1st June, 1963, or is a bona fide repatriate of Indian origin from Sri Lanka and has migrated to India on o after 1st November, 1964, or is a prospective repatriate of Indian origin from Sri Lanka under the Indo-Ceylon Agreement of October, 1964, or is a bona fide displaced person from erstwhile West Pakistan and had migrated to India during the period between 1st January, 1971 and 31st March, 1973 and is not in a position to pay the prescribed fee.
- 8. A refund of Rs. 30.00 (Rupees thirty), [Rs. 8.00 (Rupees eight) in the case of candidates belonging to Scheduled Castes and Scheduled Iribes] will be made to a candidate who has paid the prescribed fee and is not admitted to the examination by the Commission. If however, the application of a candidate seeking admission to the examination in terms of Note 1 below rule 6 is rejected on receipt of information that he has failed in the qualifying examination or will otherwise be unable to comply with the requirements of the provisions of the aforesaid Note, he will not be entitled to a refund of fee.

No cialm for a refund of the fee paid to the Commission will be entertained except as provided above and in para 9 below nor can the fee be held in reserve for any other examination or selection.

9. If any candidate who took the IES/ISS Examination held in 1982 wishes to apply for admission to this examination he must submit his application so as to reach the Commission's office by the prescribed date without waiting for the results or an offer of appointment. If he is recommended for appointment on the results of the 1982 examination his candidature for the 1983 examination will be cancelled on request and the fee refunded to him, provided that the request for cancellation of candidature and refund of fee is received in the Commission's office within 30 days from the date of publication of the final result of the 1982 examination in the Employment News.

- 10. NO REQUEST FOR WITHDRAWAL OF CANDIDATURE RECEIVED FROM A CANDIDATE AFTER HE HAS SUBMITTED HIS APPLICATION WILL BE ENTERTAINED UNDER ANY CIRCUMSTANCES.
- 11. The question papers in some of the subjects as indicated in the scheme of examination of Appendix I to the Rules will consist of objective type questions. For details pertaining to objective type Tests including sample questions, reference may be made to "Candidates' Information Manual" at Annexure II.

R. S. AHLUWALIA, Deputy Secretary.

ANNEXURE---I

INSTRUCTIONS TO CANDIDATES

Before filling in the application form the candidates should consult the Notice and the Rules carefully to see if they are chigible. The conditions prescribed cannot be relaxed.

BEFORE SUBMITTING THE APPLICATION THE CANDIDATE MUST SELECT FINALLY FROM AMONG THE CENTRES GIVEN IN PARAGRAPH 1 OF THE NOTICE, THE PLACE AT WHICH HE WISHES TO APPEAR FOR THE EXAMINATION.

Candidates should note that no request for change of centre will normally be granted. When a candidate, however, desires a change in centre, from the one he had indicated in his application form for the Examination, he must send a letter addressed to the Secretary, Union Public Service Commission by registered post, giving full justification as to why he desires a change in centre. Such requests will be considered on merits but requests received after 28th May, 1983, will not be entertained under any circumstances.

2. The application form, and the acknowledgement card must be completed in the candidate's own handwriting in ink or with ball point pen. All entries/answers should be in words and not by dashes or dots. An application which is incomplete or is wrongly filled in, will be rejected.

Candidates should note that only International form of Indian numerals are to be used while filling up the application form. Even if the date of birth in the SSLC or its equivalent certificate has been recorded in Hindi numerals, the candidate should ensure that while entering it in the Application Form, he uses International form of Indian numerals only. They should take special care that the entries made in the application form should be clear and legible. In case there are any illegible or misleading entries, the candidates will be responsible for the confusion and the ambiguity caused in interpreting such entries.

Candidates should further note that no correspondence will be entertained by the Commission from them to change any of the entries made in the application form. They should, therefore, take special care to fill up the application form correctly.

All candidates, whether already in Government Service of in Government owned industrial undertakings or other similar organisations or in private employment, should submit their applications direct to the Commission. If any candidate forwards, his application through his employer and it reaches the Union Public Service Commission late the applications, even if submitted to the employer before the closing date, will not be considered.

Persons already in Government Service whether in a permanent or temporary capacity or as workcharged employees other than casual or daily rated employees or those serving under Public Enterprises are, however, required to submit an undertaking that they have informed in writing their Head of Office/Department that they have applied for the Examination.

Candidates should note that in case of a communication is received from their employers by the Commission withholding permission to the candidates' applying for/appearing at the examination, their application shall be rejected/candidature shall be cancelled.

- 3. A candidate must send the following documents with his application:—
 - (i) CROSSED Indian Postal Orders or Bank Draft for the prescribed fee or attested certified copy of certificate in support of claim for the remission (See paras 6 and 7 of Notice and paras 5 and 6 below).
 - (ii) Attested/certified copy of Certificate of Age.
 - (iii) Attested Cortified copy of Certificate of Educational qualification.
 - (iv) Two identical copies of recent passport size (5 cm. x 7 cm. approx.) photograph of the candidate.
 - (v) Attested Certified copy of certificate in support of claim to belong to Scheduled Caste Scheduled Tribe, were applicable (See para 4 below).
 - (vi) Attested Certified copy of certificate in support of claim for age concession, where applicable (See para 5 below).
 - (vii) Attendance Sheet (attached with the application form) duly filled in.
 - (viii) Two self-addressed unstamped envelopes of size approximately 11.5 cms. x 27.5 cms.

Note (i) .—CANDIDATES ARE REQUESTED TO SUBMIT ALONG WITH THEIR APPLICATIONS ONLY COPIES OF CERTIFICATES MENTIONED IN ITEMS (ii), (v) & (vi) ABCVE ATTESTED BY A GAZETTED OFFICER OF GOVERNMENT OR CERTIFIED BY CANDIDATES THEMSELVES AS CORRECT, CANDIDATES WHO QUALIFY FOR THE VIVA VOCE ON THE RESULTS OF THE WRITTEN PART OF THE CAMBINATION WILL BE REQUIRED TO SUBMIT THE ORIGINALS OF THE CERTIFICATES MENTIONED ABOVE. THE RESULTS OF THE WRITTEN EXAMINATION ARE LIKELY TO BE DECLARED IN THE MONTH OF OCTOBER, 1983. THEY SHOULD KEEP THE ORIGINALS OF THE CERTIFICATES IN READINESS FOR SUBMISSION AT THE TIME OF VIVA VOCE. THE CANDIDATURE OF CANDIDATES, WHO FAIL TO SUBMIT THE REQUIRED CERTIFICATES IN ORIGINAL AT THAT TIME, WILL BE CANCELLED AND THE CANDIDATES WILL HAVE NO CLAIM FOR FURTHER CONSIDERATION.

Note (ii) Candidates are further required to sign the attested|certified copies of all the certificates sent along with application form and also to put the date.

Details of the documents mentioned in items (i) to (vi) are given below and in paras 4, 5 and 6:—

(i) (a) CROSSED Indian Postal Orders for prescribed fee-

Each Postal Order should invariably be crossed and completed as follows:—

"Pay to the Secretary, Union Public Service Commission at New Delhi General Post Office."

In no case will Postal Orders payable at any other Post Office be accepted. Defaced or mutilated Postal Orders with also not be accepted.

All Postal Orders should bear the signature of the issuing Post Master and a clear stamp of the issuing Post Office.

Candidates must note that it is not safe to send Postal Orders which are neither crossed nor made payable to the Secretary. Union Public Service Commission at New Delhi General Post Office.

(b) CROSSED Bank Draft for the prescribed fee-

Bank Draft should be obtained from any branch of the State Bank of India and drawn in favour of Secretary, Union Public Service Commission payable at the State Bank of India, Main Branch, New Delhi and should be duly crossed.

In no case will Bank Draft drawn on any other Bank be accepted. Defaced or mutilated Bank Drafts will also not be accepted.

Note:—Candidates should write their name and address on the reverse of the Bank Draft at the top at the time of submission of their applications. In the case of Postal Orders the name and address should be written by the candidates on the reverse of the Postal Order at the space provided for the purpose.

(ii) Certificate of age.—The date of birth accepted by the Commission is that entered in the Matriculation or Secondary School Leaving Certificate or in a certificate recognised by an Indian University as equivalent to Matriculation or in an extract from a Register of Matriculates maintained by a University, which extract must be certified by the proper authority of the University. A candidate who has the Higher Secondary Examination or an equivalent examination may submit attested/certified copy of the Higher Secondary Examination Certificate or an equivalent certificate.

No other document relating to age like horoscopes, affl-davits, birth extracts from Municipal Corporation, service records and the like will be accepted.

The expression Matriculation/Higher Secondary Examination certificate in this part of the instruction includes the alternative certificates mentioned above.

Sometimes the Matriculation/Higher Secondary Examination Certificate does not show the date of birth or only shows the age by completed years or completed years and months. In such cases a candidate must send in addition to the attested/certified copy of the Matriculation/Higher Secondary Examination Certificate, an attested/certified copy of a certificate from the Headmaster/Principal of the Institution from where he passed the Matriculation/Higher

Secondary Examination showing the date of his birth or his exact age as recorded in the Admission Register of the Institution.

Candidates are warned that unless complete proof of age as laid down in these instructions is sent with an application, the application will be rejected.

- NOTE 1.—A CANDIDATE WHO HOLDS A COM-PLETED SECONDARY SCHOOL CERTIFI-CATE NEED SUBMIT ONLY AN ATTEST-ED/CERTIFIED COPY OF THE PAGE CON-TAINING ENTRIES RELATING TO AGE.
- NOTE 2.—CANDIDATES SHOULD NOTE THAT ONLY
 THE DATE OF BIRTH AS RECORDED IN
 THE MATRICULATION/HIGHER SECONDARY EXAMINATION CERTIFICATE OR
 AN EQUIVALENT CERTIFICATE ON THE
 DATE OF SUBMISSION OF APPLICATION
 WILL BE ACCEPTED BY THE COMMISSION
 AND NO SUBSEQUENT REQUEST FOR ITS
 CHANGE WILL BE CONSIDERED OR GRANTED.
- NOTE 3.—CANDIDATES SHOULD ALSO NOTE THAT ONCE A DATE OF BIRTH HAS BEEN CLAIMED BY THEM AND ENTERED IN THE RECORDS OF THE COMMISSION FOR THE PURPOSE OF ADMISSION TO AN EXAMINATION. NO CHANGE WILL BE ALLOWED SUBSEQUENTLY OR AT A SUBSEQUENT BY AMINATION SUBSEQUENT EXAMINATION.
- (iii) Certificate of Educational Qualifications.—A candidate must submit an attested/certified copy of a certificate showing that he has one of the qualifications prescribed in Rule 6. The certificate submitted must be one issued by the authority (i.e. University or other examining body) awarding the particular qualification. If an attested/certified copy of such a certificate is not submitted the candidate must explain its absence and submit such other evidence, as he can, to support his claim to the requisite qualifications. The Com-mission will consider this evidence on its merits but do not The Combind themselves to accept it as sufficient.

If the attested/certified copy of the University Certificate of passing the degree/examination submitted by a candidate in support of his educational qualifications does not indicate the subjects of the examination an attested /certified copy of a certificate from the Principal/Head of Department showing that he has passed the qualifying examination with one or more of the subjects specified in Rule 6 must be submitted. in addition to the attested/certified copy of the University

Note.—A candidate who has appeared at an examination the passing of which would render him eligible to appear at this examination but has not been informed of the result may apply for admission to the examination. A candidate who intends to appear at such a qualifying examination may also apply. Such candidates will be admitted to the examination, if otherwise eligible, but their admission would be deemed to be provisional and subject to cancellation if they do not produce proof of baying passed the examination of the produce and subject to cancellation if they do not produce proof of having passed the examination as soon as possible and in any case not later than 30th September,

- (iv) Two copies of Photograph.-A candidate must submit two identical copies of his recent passport size (5 cm. × 7 cm. approximately) photograph, one of which should be pasted on the first page of the application form and the other copy on the Attendance Sheet in the space provided therein. Each copy of the photograph should be signed in ink on the front by the candidate.
- N.B.—Candidates are warned that if an application is not accompants I with any one of the documents mentioned under

paragraph 3(ii), 3(iii) and 3(iv) above without a reasonable explanation for its absence having been given the application will be rejected and no appeal against its rejection will be entertained.

4. A candidate who claims to belong to one of the Scheduled Castes or Scheduled Tribes should submit in support of his claim an attested/certified copy of a certificate in the form given below from the District Officer or the Sub-Divisional Officer or any other officer, as indicated below, of the district in which his parents (or surviving parent) ordi-narily reside, who has been designated by the State Government concerned as competent to issue such a certificate, if both his parents are dead, the officer signing the certificate should be of the district in which the candidate himself ordinarily resides otherwise than for the purpose of his own education.

The form of certificate to be produced by Scheduled Castes and Scheduled Tribes candidates applying for appointment to posts under the Government of India.

of the State/Union Tribe* under :-the Constitution (Scheduled Castes) Order, 1950*. the Constitution (Scheduled Tribes) Order, 1950*. the Constitution (Scheduled Tribes) (Union Territories) Order, 1951*. the Constitution (Scheduled Tribes) (Union Territories) Order, 1951*. [as amended by the Scheduled Castos and Scheduled Tribes Lists (Modification) Order, 1956, the Bombay Reorganisation Act, 1960, the Puniab Reorganisation Act, 1966, the State of Himachal Pradesh Act, 1970, the North Eastern Areas (Reorganisation) Act, 1971 and the Scheduled Castes and Scheduled Tribes Orders (Amendment) Act, 1976.]

the Constitution (Jamunu and Kashmir) Scheduled Castes Order, 1956*

the Constitution (Andarvan and Nicobar Islands) Scheduled Tribes Order, 1959 as a nended by the Scheduled Castes and Scheduled Tribes Orders (Amendment) Act, 1976*

the Constitution (Dadra and Nagar Haveli) Scheduled Castes Order, 1962*

the Constitution (Dadra and Nagar Haveli) Scheduled Tribes Order, 1962*

the Constitution (Pondicherry) Scheduled Castes Order. 1964* the Constitution (Scheduled Tribes) (Uttar Pradesh) Order, 1967*

the Constitution (Goa, Daman and Diu) Scheduled Castes Order, 1968*

the Constitution (Goa, Daman and Diu) Scheduled Tribes Order, 1968*

the Constitution (Nagaland) Scheduled Tribes Order, 1970*

the Constitution (Sikkim) Scheduled Castes Order, 1978*

the Constitution (Sikkim) Scheduled Tribes Order, 1978*

1422	THE GAZETTE OF INDIA JANUA		
his/her*	Shrimati/Kumari* and/or* family ordinatily testde(s) in village/town* of District/Division* of the	migrated to India on or after 1st November, 1964 or is to migrate to India under the Indo-Ceylon Agreement of October, 1964.	
	Signature		
	**Designation(with seal of Office)	(in) A repatriate of Indian origin who has migrated from Vietnam claiming age concession under Rule 5(b)(vi) or 5(b)(vii) should produce an attested/certified copy of a certificate from the District Magistrate of the area in which he may	
Place		for the time being be resident to show that he is a bona fide	
Detc		repatriate from Vietnam and has migrated to India from Vietnam not earlier than July, 1975.	
	State/Union Territory		
*Please delete the words which are not applicable.		(iv) A repatriate of Indian origin from Burma claiming age concession under Rule 5(b) (viii) or 5(b) (ix) and/or	
t	he term "ordinarily reside(s)" used here will have he same meaning as in Section 20 of the Represen- ation of the People Act, 1950.	remission of fee under paragraph 7 of the Notice should produce an attested/certified copy of the identity certificate issued to him by the Embassy of India, Rangoon, to show that he is an Indian citizen who has migrated to India on or after 1st June, 1963, or an attested/certified copy of a certi-	
**Officers competent to issue Caste/Tribe Certificates.		ficate from the District Magistrate of the area in which he may be resident to show that he is a bona fide repatriate from Burma and has migrated to India on or after 1st June	
p S	District Magistrate/Additional District Magistrate/Collector/Deputy Commissioner/Additional Deputy Commissioner Deputy Collector/1st Class Stipendiary Magistrate/City Magistrate/†Sub-Divisional Magistrate/Taluka Magistrate/Exeutive	1963. (v) A candidate disabled while in the Defence Services	
N †	Magistrate/Extra Assistant Commissioner. (not below the rank of 1st Class Stipendiary Magistrate).	claiming age concession under Rule 5(b)(x) or 5(b)(xi) should produce an attested/certified copy of a certificate, in the form prescribed below from the Director General Resettlement, Ministry of Defence, to show that he was disabled while in the Defence Services, in operations during hostilities	
	Chief Presidency Magistrate/Additional Chief Presidency Magistrate/Presidency Magistrate.	with any foreign country or in a disturbed area, and released as a consequence thereof.	
(iii) F	Revenue Officers not below the rank of Tehsildar,	•	
	Sub-Divisional Officer of the area where the candi- late and/or his family normally resides.	The form of certificate to be produced by the candidate.	
i lo	Administrator/Secretary to Administrator/Deve- opment Officer (Lakshadweep).	Certified that Rank No.—Shri—of Unit——was disabled while in the Defence Services in operations during hostilities with a foreign country/in a disturbed area* and was released as a result of such disability.	
(now Bang (ii) or 5(1	displaced person from erstwhile East Pakistan la Desh) claiming age concession under Rule 5(b) (iii) and/or remission of fee under paragraph 7	Signature	
	tice should produce an attested/certified copy of a from one of the following authorities to show	Designation	
Pakistan	a bona fide displaced person from erstwhile East (now Bangla Desh) and had migrated to India period between 1st January, 1964 and 25th March.	Date	
1971	1 Machon State	40.44	
(1) C	Camp Commandant of the Transit Centres of the	*Strike out whichever is not applicable.	
D	Dandakaranya Project or of Relief Camps in arious states;	(vi) A candidate who has migrated from Kenya, Uganda and the United Republic of Tanzania (formerly Tanganyika	
	District Magistrate of the Area in which he may, or the time being be resident;	and Zanzibar) or who is a repatriate of Indian origin from Zambia, Malawi, Zaire and Ethiopia claiming age concession under Rule 5(b)(xii) or 5(b)(xiii) should produce an	
	dditional District Magistrates in charge of Refugee chabilitation in their respective districts;	attested/certified copy of a certificate from the District Magistrate of the area in which he may, for the time being, be resident to show that he is a bona fide migrant from the countries mentioned above.	
	nb-Divisional Officer, within the Sub-Division in is charge;		
(5) D B	reputy Refugee Rehabilitation Commissioner, West engal/Director (Rehabilitation) in Calcutta.	(vii) Ex-servicemen and Commissioned Officers including ECOs/SSCOs claiming age concession in terms of Rule 5(b)(xiv) or 5(b)(xv) should produce an attested/certifled copy of the certificate, as applicable to them, in the form prescribed below from the authorities concerned	
origin from 5(b)(iv)	repatriate or a prospective repatriate of Indian n Sri Lanka claiming age concession under Rule or 5(b)(v) and/or remission of fee under para-	(A) Applicable for Released/Retired Personnel.	
conv of a	f the Notice should produce an attested/certified certificate from the High Commission for India ka to show that he is an Indian citizen who has	It is certified that No	

he fulfils ONE of the following conditions:—

- (a) Has rendered five or more years military service and has been released on completion of assignment otherwise than by way of dismissal or discharge on account of miscondact or inefficiency.
- (b) Has been released on account of physical disability attributable to military service or on invalidment

Name and Designation of the Competent Authority

Station

Date

(B) Application for serving personnel.

- - 3. No disciplinary case is pending against him.

Name and Designation of the Competent Authority SEAL

Station

Date

Authorities who are competent to issue certificates are as follows:—

(a) In case of Commissioned Officers including ECOs/ SSCOs.

Army—Directorate of Personnel Services, Army Hqrs. New Delhi.

Navy—Directorate of Personnel Services, Naval Hgrs, New Delhi.

Air Force—Directorate of Personnel Services, Air Hgrs. New Delhi,

(b) In case of ICOs/ORs and equivalent of the Navy and Air Force.

Army—By various Regimental Record Offices, Navy—Naval Records, Bombay. Air Force—Air Force Records, New Delhi,

- (viii) A displaced person from erstwhile West Pakistan Claiming age concession under Rule 5(b) (xvi) or 5(b) (xvii) and/or remission of fee under paragraph 7 of the Notce should produce an attested/certified copy of a certificate from one of the following authorities to show that he is a bona fide displaced person from erstwhile West Pakistan and had migrated to India during the period between 1st January, 1971 and 31st March, 1973:—
 - (1) Camp Commandant of the Transit Centres or of Relief Camps in various States;
 - District Magistrate of the Area in which he may, for the time being, be resident;
 - (3) Additional District Magistrates in charge of Refugee Rehabilitation in their respective districts;
 - (4) Sub-Divisional Officer, within the Sub-Division, in his charge;
 - (5) Deputy Refugee Rehabilitation Commissioner.

- 6. A candidate belonging to any of the categories referred to in para 5(i), (ii), (iv) and (vili) above and seeking remission of the fee under paragraph 7 of the Notice should also produce an attested/certified copy of a certificate from a District Officer or a Gazetted Officer of Government or a Member of the Parliament or State Legislature to show that he is not in a position to pay the prescribed fee.
- 7. A person in whose case a certificate of eligibility is required may be admitted to the Examination but the offer of appointment shall be given only after the necessary eligibility certificate is issued to him by the Government of India, Ministry of Home Affairs (Department of Personnel and Administrative Reforms).
- 8. Candidates are warned that they should not furnish any particulars, that are false or suppress any material information in filing in the application form.

Candidates are also warned that they should in no case correct or after or otherwise tamper with any entry in a document or its copy submitted by them nor should they submit a tampered/fabricated document. If there is any inaccuracy or any desirropancy between two or more such documents or its copies an explanation regarding the discrepency may be submitted.

- 9. The fact that an application form has been supplied on a certain date, will not be accepted as an excuse for the late submission of an application. The supply of an application form does not ipso facto mak the receiver eligible for admission to the examination.
- 10. Every application including late one, received in the Commission's Office is acknowledged and application Registration number is issued to the candidate in token of receipt of his application. If a candidate does not receive at acknowledgement of his application within a month from the last date prescribed for receipt of applications for the examination, he should at once contact the Commission for the acknowledgement.

The fact that the Application Registration number has been issued to the candidate does not, ipso-facto mean that the application is complete in all respects and has been accepted by the Commission.

- 11. Every candidate for this examination will be informed at the earliest possible date of the result of his application. It is not however, possible to say when the result will be communicated. But if a candidate does not receive from the Union Public Service Commission a communication regarding the result of his application one month before the commencement of the examination, he should at once contact the Commission for the result. Failure to comply with this provision will deprive the candidate of any claim to consideration.
- 12. The Union Public Service Commission have brought out a priced publication entitled "Candidates" Manual for U.P.S.C. Objective Type Examination". This publication is designed to be of assistance to prospective candidates of U.P.S.C. Examinations or Selections.

This publication as also the copies of pamphlets containing rules and conventional type question papers of the five preceding examinations are on sale with Controller of Publications. Civil Lines, Delhi-110054 and may be obtained

from him direct by Mail Orders or on cash payment. These can also be obtained only against cash payment from (i) the Kitab Mahal, Opposite Rivoli Cinema, Emporia Bullding, 'C' Block, Baba Kharag Singh Marg, New Delhi,110001 and (ii) Sale counter of the Publications Branch at Udyog Bhavan, New Delhi-110011 and (iii) The Government of India Book Depot, 8, K. S. Roy Road, Calcutta-1. The Manual/pamphlets are also obtainable from the agents for the Government of India Publications at various mofussil towns.

- 13. Communications regarding applications.—ALL COMMUNICATIONS IN RESPECT OF AN APPLICATION SHOULD BE ADDRESSED TO THE SECRETARY, UNION PUBLIC SERVICE COMMISSION, DHOLPUR HOUSE, SHAHJAHAN ROAD, NEW DELHI (110011), AND SHOULD INVARIABLY CONTAIN THE FOLLOWING PARTICULARS:—
 - 1. NAME OF EXAMINATION.
 - 2. MONTH AND YEAR OF EXAMINATION.
 - 3. APPLICATION REGISTRATION NO./ROLL NUMBER OR THE DATE OF BIRTH OF CANDIDATE IF THE APPLICATION REGISTRATION NO./ROLL NUMBER HAS NOT BEEN COMMUNICATED.
 - 4. NAME OF CANDIDATE (IN FULL AND IN BLOCK CAPITALS).
 - 5. POSTAL ADDRESS AS GIVEN IN APPLICATION.

N.B. (1)—COMMUNICATIONS NOT CONTAINING THE ABOVE PARTICULARS MAY NOT BE ATTENDED TO.

N.B. (ii)—IF A LETTER/COMMUNICATION IS RECEIVED FROM A CANDIDATE AFTER AN EXAMINATION HAS BEEN HELD AND DOES NOT GIVE HIS FULL NAME AND ROLL NUMBER, IT WILL BE IGNORED AND NO ACTION WILL BE TAKEN THEREON.

14. Change in Address.—A CANDIDATE MUST SEE THAT COMMUNICATIONS SENT TO HIM AT THE ADDRESS STATED IN HIS APPLICATION ARE REDIRECTED, IF NECESSARY. CHANGE IN ADDRESS SHOULD BE COMMUNICATED TO THE COMMISSION AT THE EARLIEST OPPORTUNITY GIVING THE PARTICULARS MENTIONED IN PARAGRAPH 13 ABOVE. ALTHOUGH THE COMMISSION MAKE EVERY EFFORT TO TAKE ACCOUNT OF SUCH CHANGES THEY CAN NOT ACCEPT ANY RESPONSIBILITY IN THE MATTER.

ANNEXURE-II

CANDIDATES INFORMATION MANUAL

(Applicable only for Objective type papers, cf Notes I, II &

III below Para 2 of Appendix I)

A. OBJECTIVE TEST

Your examination will be what is called an 'OBJECTIVE TEST'. In this kind of examination (test) you do not write answers. For each question (hereinafter referred to as item) several suggested answers (hereinafter referred to as responses) are given. You have to choose one answer to each item.

This Manual is intended to give you some information about the examination so that you do not suffer due to unfamiliarity with the type of examination.

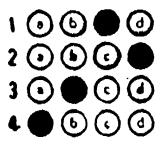
B. NATURE OF THE TEST

The question paper will be in the form of a TEST BOOK-LET. The booklet will contain items bearing numbers 1, 2, 3,... etc. Under each item will be given suggested answers marked a, b, c, d. Your task will be to choose the correct or if you think there are more than one correct, then the best answer. (See "sample items" at the end). In any case, in each item you have to select only one answer; if you select more than one, your response will be considered wrong.

C. METHOD OF ANSWERING

A separate ANSWER SHEET (a specimen copy of which will be supplied to you along with the Admission Certificate) will be provided to you in the examination hall. You have to mark your response on the answer sheet. Response marked on the Test Booklets or in any paper other than the Answer Sheet will not be examined.

In the Answer Sheet, number of items from 1 to 160 have been printed in four 'Parts'. Against each item rectangular spaces marked, a, b, c, d are printed. After you have read each item in the Test Booklet and decided which of the given answer is correct or the best, you have to mark the rectangle containing the letter of the selected answer by blackening it completely with pencil as shown below (to indictae your response). Ink should not be used in blackening the rectangles on the Answer Sheet.



IT IS IMPORTANT THAT-

- 1. You should bring and use only good quality HB pencil(s) for answering the items,
- 2. To change a wrong marking, erase it completely and re-mark the new choice. For this purpose, you must bring along with you an eraser also.
- 3. Do not handle your Answer Sheet in such a manner as to mutilate or fold or wrinkle or spoil it.

D. SOME IMPORTANT REGULATIONS

- 1. You are required to enter the examination hall twenty minutes before the prescribed time for commencement of the examination and get seated immediately.
- 2. Nobody will be admitted to the test 30 minutes after the commencement of the test.
- 3. No candidate will be allowed to leave the examination hall until 45 minutes have elapsed after the commencement of the examination.
- 4. After finishing the examination, submit the Test Booklet and the Answer Sheet to the Invigilator/Supervisor. YOU ARE NOT PERMITTED TO TAKE THE TEST BOOKLET OUT OF THE EXAMINATION HALL. YOU WILL BE SEVERELY PENALISED IF YOU VIOLATE THIS RULE.
- 5. You will be required to fill in some particulars on the Answer Sheet in the examination hall. You will also be required to encode some particulars on Answer Sheet. Instructions about this will be sent to you along with your Admission Certificate.
- 6. You are required to read carefully all instructions given in the Test-Booklet. You may lose marks if you do not follow the instructions maticulously. If any entry in the Answer Sheet is ambiguous you will get no credit for that item response. Follow the instructions given by the Supervisor. When the Supervisor asks you to start or stop a test or part of a test, you must follow his instructions immediately.

7. Bring your Admission Certificate with you. You should also bring a HB pencil, an eraser, a pencil sharpener, and a pen containing blue or black ink. You are advised also to bring with you a clip-board or a hard-board or a cardboard on which nothing should be written. You are not allowed to bring any scrap (rough) paper, or scales or drawing instrument into the examination hall as they are not needed. Separate sheets for rough work will be provided to you on demand. You should write the name of the examination, your Roll No. and the date of the test on it before doing your rough work and return it to the supervisor along with your Answer Sheet at the end of the test.

THE GAZETTE OF INDIA,

E. SPECIAL INSTRUCTIONS

After you have taken your seat in the hall, the invigilator will give you the Answer Sheet. Fill up the required information on the Answer Sheet. After you have done this, the invigilator will give you the Test Booklet, on receipt of which you must ensure that it contains the booklet number, otherwise get it changed. You are not allowed to so the do so to do so.

F. SOME USEFUL HINTS

Although the test stresses accuracy more than speed, it is important for you to use your time as efficiently as possible. Work steadily and as rapidly as you can, without becoming careless. Do not worry if you cannot answer all the questions are the questions. tions. Do not waste time on questions which are too diffi-cult for you. Go on to the other questions and come back to the difficult ones later.

All items carry equal marks. Attempt all of them. Your score will depend only on the number of correct responses indicated by you. There will be no negative marking.

G. CONCLUSION ON TEST

Stop writing as soon as the Supervisor asks you to stop. Remain in your seat and wait till the invigilator collects all the necessary materials from you and permits you to leave the Hall. You are NOT allowed to take the Test Booklet, the answer sheet and the sheet for rough work out of the Examination Hall.

SAMPLE TIEMS (QUESTIONS)

(Note: -- *denotes the correct/best answer-option)

1. (General Studies)

Bleeding of the nose and the ears is experienced at high altitudes by mountain climbers because:

- (a) the pressure of the blood is less than the atmospheric pressure.
- *(b) the pressure of the blood is more than the atmespheric pressure.
- (c) the blood vessels are subjected to equal pressures on the inner and outer walls.
- (d) the pressure of the blood fluctuates relative to the atmospheric pressure.

2. (English)

(Vocabulary—Synonyms)

There was a record turnout of voters at the municipal elec-

- (a) exactly known
- (b) only those registered
 - (c) very large
 - *(d) largest se for.

3. (Agriculture)

In Arhar, flower drops can be reduced by one of the measures indicated below:

- *(a) spraying with growth regulators.
- (b) planting wider apart.
- (c) planting in the correct season.
- (d) planting with close spacing.

4. (Chemistry)

The anhydride of H. VO, is

- (a) VO
- (b) VO_k
- (c) V₂O
- * (d) V₁O₁

(Economics)

Monopolistic exploitation of labour occurs when

- (a) wage is less than marginal revenue product.
- (b) both wage and marginal revenue preduct are equal.
- (c) wage is more than the marginal revenue product.
- (d) wage is equal to marginal physical product.

■ 6. (Electrical Engineering)

permi-A coaxial line is filled with a dielectric of relative tivity 9. If C denotes the velocity of propagation in space, the velocity of propagation in the line will be

- (a) 3C
- (b) C
- *(c) C/3
 - (d) C/9

7. (Geology)

Plagioclase in a basalt is

- (a) Oligoclase
- *(b) Labradorite
- (c) Albite
- (d) Anorthite

8. (Mathematics)

The family of curves passing through the origin and satisfying the equation

$$\frac{d^2y}{dx^2} - \frac{dy}{dx} = 0 \text{ is given by}$$

- (a) y = ax + b
- (b) y = ax
- (c) y = aox + be-x
- +(d) y = aex a

9. (Physics)

An ideal heat engine works between tomperatures 460°K and 300° K. Its efficiency, is:

- (a) 3/4
- *(b) (4---3)/4
- (c) 4/(3+4)
- (d) 3/(3+4)

10. (Statistics)

The mean of a binomial variate is 5. The variance can be:

- (a) 4^2
- *(b) 3
- (c) ∝ (d) – 5
- 11. (Geography)

The Southern part of Burma is most prosperous because

- (a) it has vast deposits of mineral resources.
- (b) it is the deltaic part of most of the rivers of Burma.
- (c) it has excellent forest resources.
- (d) most of the oil resources are found in this part of the country.

12. (Indian History)

Which of the following is NOT true of Brahmanism?

- (a) Brahmanism always claimed a very large following even in the heyday of Buddhism.
- (b) Brahmanism was a highly formalised and pretentions religion.
- *(c) With the rise of Brahmanism, the Vedic sacrificial fire was relegated to the background.
- (d) Sacraments were prescribed to mark the various stages in the growth of an individual.

13. (Philosophy)

Identify the atheistic group of philosophical systems in the following:

- (a) Buddhism, Nyāya, Cārvākā Mimāmsā.
- (b) Nyāya, Vaisosika, Jainism and Buddhism, Cārvāka.
- (c) Advaita, Vedanta, Sāmkhya, Cārvāka Yoga.
- *(d) Buddhism, Sāmkhya, Mimāmsā, Cārvāka.

14. (Political Science)

'Functional representation' means:

- *(a) election of representatives to the legislature on the basis of vocation.
- (b) pleading the cause of a group or a professional association.
- (c) election of representatives in vocational organiza-
- (d) indirect representation through Trade Unions.

15. (Psychology)

Obtaining a goal leads to:

- (a) increase in the need related to the goal
- *(b) reduction of the drive state.
- (c) instrumental learning.
- (d) discrimination learning.

16. (Sociology)

Panchayati Raj institutions in India have brought about one of the following:

- *(a) formal representation of women and weaker sections in village government.
 - (b) untouchability has decreased.
- (c) land-ownership has spread to deprived classes.
- (d) education has spread to the masses.

Note: Candidates should note that the above sample items (questions) have been given merely to serve as examples and are not necessarily in keeping with the syllabus for this examination.